मौत और क़ब्र के ह़ालात व वाक़िआ़त का तफ़्सीली बयान

SHARHUSSUDOOR-MUTARJAM (HINDI)

शर्हुस्सुदूर (मुतर्जम)

मुअल्लिफ़

इमाम जलालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सुयूत़ी शाफ़ेई عليه رحمة الله الكافي

(अल मुतवफ़्फ़ा 911 हिजरी)

(دعوتِ اسلامی)
(شعبہ تراجم کتب)

इजमाली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा
किताब को पढ़ने की निय्यतें	04
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआ़रुफ़ (अज़ अमीरे अह्ले सुन्नत مُدَّظِلُّہ)	05
अल मदीनतुल इल्मिय्या और शर्हुस्सुदूर	06
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	07
पहले इसे पढ़ लीजिये !	33
ख़ुत़बतुल किताब	39
बाब नम्बर 1 : मौत की पैदाइश	40
बाब नम्बर 2 : माली या जिस्मानी मुसीबत की बिना पर मौत की तमन्ना और दुआ़ करने की मुमानअ़त का बयान	41
बाब नम्बर 3 : इत़ाअ़ते इलाही में लम्बी ज़िन्दगी गुज़ारने की फ़ज़ीलत का बयान	43
बाब नम्बर 4 : दीन में फ़ितने के ख़ौफ़ से मौत की तमन्ना और दुआ़ के जवाज़ का बयान	45
बाब नम्बर 5 : मौत की फ़ज़ीलत का बयान	52
बाब नम्बर 6 : मौत की याद और इस की तय्यारी का बयान	64
बाब नम्बर 7 : मौत की याद में मददगार चीज़ों का बयान	72
बाब नम्बर 8 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न और ख़ौफ़ रखने का बयान	73
बाब नम्बर 9 : मौत के डराने वाले क़ासिदों का बयान	77
बाब नम्बर 10 : हुस्ने ख़ातिमा की अ़लामात का बयान	78
बाब नम्बर 11 : ह़ालते नज़्अ़ और इस की शिद्दत का बयान	80
बाब नम्बर 12 : मरज़े मौत, ब वक़्ते मौत और बा'दे मौत मरने वाले के पास कहे जाने वाले कलिमात और पढ़ी जाने वाली दुआ़ओं और सूरतों का बयान	95
बाब नम्बर 13 : मलकुल मौत और इन के मददगारों का बयान	103
बाब नम्बर 14 : हर बरस उ़म्रें ख़त्म होने का बयान	124
बाब नम्बर 15 : मय्यित के पास मलाइका वग़ैरा के आने, मरने वाले का मुख़्तलिफ़ चीज़ें देखने नीज़ ब वक़्ते मौत मोमिन को ख़ुश ख़बरी देने और काफ़िर को डराने वाली चीज़ों का बयान	126
ज़िम्नी फ़स्ल : तौबा के मुतअ़ल्लिक़	179

बाब नम्बर 16 : अरवाह़ का नई रूह़ से मिलने और उस के पास जम्अ़ हो कर सुवालात करने का बयान	181
बाब नम्बर 17 : मुर्दे का ग़ुस्साल को पहचानने और लोगों की गुफ़्त्गू सुनने का बयान	187
बाब नम्बर 18 : जनाज़े में फ़िरिश्तों के चलने और गुफ़्त्गू करने का बयान	192
बाब नम्बर 19 : वफ़ाते मोमिन पर ज़मीनो आस्मान के रोने का बयान	193
बाब नम्बर 20 : जिस मिट्टी से तख़्लीक़ हुई वहीं दफ़्न होने का बयान	196
बाब नम्बर 21 : ब वक़्ते तदफ़ीन पढ़ी जाने वाली दुआ़ओं का बयान	203
बाब नम्बर 22 : क़ब्र के हर एक को दबाने का बयान	208
बाब नम्बर 23 : क़ब्र का मुर्दों को ख़ित़ाब करने का बयान	216
बाब नम्बर 24 : फ़ितनए क़ब्र और फ़िरिश्तों के सुवालात का बयान	223
चन्द फ़वाइद का बयान	258
बाब नम्बर 25 : सुवालाते क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहने वालों का बयान	266
बाब नम्बर 26 : क़ब्र की घबराहट और मोमिन पर इस की आसानी व कुशादगी का बयान	276
बाब नम्बर 27 : आख़िरत के पहले अ़द्ल का बयान	283
बाब नम्बर 28 : बन्दे पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सब से ज़ियादा रह़्म का बयान	283
बाब नम्बर 29 : मोमिन को क़ब्र में मिलने वाले पहले तोह़्फ़े का बयान	283
बाब नम्बर 30 : मोमिन को मिलने वाली पहली जज़ा का बयान	284
बाब नम्बर 31 : मुख़्तलिफ़ उमूर के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे नबविय्या का बयान	284
बाब नम्बर 32 : क़ब्र में ह़िसाबो किताब का बयान	288
बाब नम्बर 33 : क़त्ले उ़स्माने ग़नी को मह़बूब रखने वाले का बयान	288
बाब नम्बर 34 : अ़ज़ाबे क़ब्र का बयान	289
बाब नम्बर 35 : अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दिलाने वाली चीज़ों का बयान	321
बाब नम्बर 36 : क़ब्रों में मुर्दों के उन्स, नमाज़, तिलावत, इन्आ़मात व लिबास और दीगर अह़वाल का बयान	328
बाब नम्बर 37 : शहीद के फ़ज़ाइल का बयान	349
बाब नम्बर 38 : ज़ियारते कुबूर और मुर्दों का ज़ाइरीन को देखने और पहचानने का बयान	351
बाब नम्बर 39 : अरवाह़ के ठिकानों का बयान	394
बाब नम्बर 40 : मुर्दे पर रोज़ाना ठिकाना पेश किये जाने का बयान	445

बाब नम्बर 41 : मुर्दों पर ज़िन्दों के आ'माल पेश होने का बयान	447
बाब नम्बर 42 : रूह़ को मक़ामे इ़ज़्ज़त से रोकने वाली चीज़ों का बयान	451
बाब नम्बर 43 : वसिय्यत का बयान	453
बाब नम्बर 44 : ख़्वाब में ज़िन्दों और मुर्दों की रूहों की मुलाक़ात का बयान	455
फ़स्ल : नींद में ज़िन्दा की रूह़ निकलने, जहां रब तआ़ला चाहे सैर करने और रूहों वग़ैरा से मुलाक़ात करने का सुबूत	461
बाब नम्बर 45 : ख़्वाब में मुर्दों को देख कर उन का ह़ाल पूछने और मुर्दों का उन्हें ख़बर देने का बयान	464
बाब नम्बर 46 : ज़िन्दों की बातों से मय्यित को तक्लीफ़ पहुंचने और उसे बुरा कहने की मुमानअ़त का बयान	505
बाब नम्बर 47 : मय्यित को नौह़ा से पहुंचने वाली तक्लीफ़ का बयान	506
बाब नम्बर 48 : हर तक्लीफ़ देह बात से मय्यित को अज़िय्यत पहुंचने का बयान	511
बाब नम्बर 49 : किरामन कातिबीन का क़ब्रे मोमिन पर ठहरने का बयान	512
बाब नम्बर 50 : मय्यित को क़ब्र में नफ़्अ़ देने वाली चीज़ों का बयान	513
बाब नम्बर 51 : मय्यित या क़ब्र के पास तिलावते क़ुरआन करने का बयान	528
बाब नम्बर 52 : मौत के अच्छे औक़ात का बयान	534
बाब नम्बर 53 : मौत के बा'द बन्दे को जल्दी जन्नत में पहुंचाने वाले आ'माल का बयान	535
बाब नम्बर 54 : अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام और उन से मुल्ह़िक़ अफ़राद के सिवा दीगर मय्यितों के बदबूदार होने और जिस्म ख़राब होने का बयान	536
ख़ातिमा : रूह़ से तअ़ल्लुक़ रखने वाले फ़वाइद	541
तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	557
माख़ज़ो मराजेअ़	572
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब का तआ़रुफ़	579

मह़ब्बते इलाही पाने का नुस्ख़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : अगर तुम चाहते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम से मह़ब्बत फ़रमाए तो दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करो।

(ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الزھد فی الدنیا، ۴/ ۴۲۳، حدیث: ۴۱۰۲، بتغیر)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"मौत और क़ब्र को याद रख" के 17 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "17 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (معجم کبیر، یحیی بن قیس، ج۶، ص۱۸۵، حدیث:۵۹۴۲)

दो मदनी फूल

.....बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

.....जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व सलात और तअ़व्वुज़ व तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़्ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा) ﴾2﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾3﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा ﴾4﴿ कुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾5﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और जहां जहां किसी सह़ाबी या बुज़ुर्ग का नाम आएगा वहां رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ पढ़ूंगा ﴾6﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इल्म ह़ासिल करूंगा ﴾7﴿ इस किताब का मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले सवाब करूंगा। ﴾8﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगा। ﴾9﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) "याद दाश्त" वाले सफ़्ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। ﴾10﴿ औलिया की सिफ़ात को अपनाऊंगा। ﴾11﴿ अपनी इस्लाह़ के लिये इस किताब के ज़रीए़ इल्म ह़ासिल करूंगा। ﴾12﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾13﴿ इस ह़दीसे पाक "تَهَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। ﴾موطا امام مالک ج۲ص ۴۰۷ حدیث ۱۷۳۱﴿ पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा। ﴾14﴿ इस किताब के मुत़ालए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगा। ﴾15﴿ अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुवे **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर किया करूंगा और हर मदनी (इस्लामी) माह की 10 तारीख़ तक अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दिया करूंगा। ﴾16﴿ आ़शिक़ाने रसूल के **मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र किया करूंगा। ﴾17﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्तलअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दिद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** کَثَّرَہُمُ اللہُ تَعَالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब

﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए । اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 **हिजरी**

अल मदीनतुल इल्मिय्या और शर्हुस्सुदूर

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى की कमो बेश हर तस्नीफ़ अपने मौज़ूअ़ के ए'तिबार से कसीर मा'लूमात पर मुश्तमिल है । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه किताब के उ़नवान का पूरा पूरा ह़क़ अदा फ़रमाते हैं । ''شَرْحُ الصُّدُوْر بِشَرْحِ حَالِ الْمَوْتٰى وَالْقُبُوْر'' भी आप की ऐसी तस्नीफ़ है जिस में मौत और बरज़ख़ से जुड़े ह़ालात को बड़ी तफ़्सील के साथ बयान फ़रमाया है । अल मदीनतुल इल्मिय्या के मदनी उ़लमा की काविशों से किताब का ख़ूब सूरत तर्जमा आप के हाथों में है । तर्जमा अ़वाम के लिये किया गया है लिहाज़ा कोशिश की गई है कि हर उस बात की रिआ़यत की जाए जो एक कम पढ़े लिखे इस्लामी भाई के लिये ज़रूरी होती है । इस तर्जमे में दर्जे ज़ैल बातों का एहतिमाम किया गया है :

﴾1﴿.....किताब की इफ़ादियत व अहम्मिय्यत उस के मौज़ूअ़ और मुसन्निफ़ से वाज़ेह़ होती है इस लिये शुरूअ़ में **''पहले इसे पढ़ लीजिये''** के उ़न्वान से पेशे लफ़्ज़ में किताब और इस के मौज़ूअ़ पर रौशनी डाली गई है और फिर मुसन्निफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का तआ़रुफ़ क़दरे तफ़्सील के साथ पेश किया गया है । किताब और इस के मुसन्निफ़ से वाक़िफ़िय्यत व आगाही के लिये इन दोनों का मुत़ालआ़ बेह़द मुफ़ीद रहेगा ।

﴾2﴿.....रिवायात व वाक़िआ़त की असनाद ह़ज़्फ़ कर दी हैं, ज़रूरत के चन्द मक़ामात के इ़लावा सिर्फ़ अस्ल रावी (जैसे सह़ाबी या ताबेई़) से तर्जमे का आग़ाज़ किया गया है ताकि मुत़ालआ़ करने वाला आ़म इस्लामी भाई उक्ताहट का शिकार न हो ।

﴾3﴿.....अ़ल्लामा सुयूती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को सिर्फ़ अह़ादीसे मुबारका दो लाख याद थीं, अस्लाफ़ के दीगर वाक़िआ़त और अक़्वाल व अह़वाल तो शुमार से बाहर हैं । येही वज्ह है कि आप अपनी किताबों में किसी ह़दीस, क़ौल या वाक़िए़ को कई कई ह़वालों से बयान करते हैं, शर्हुस्सुदूर में भी ऐसा ही है लिहाज़ा तर्जमे में त़वालत से बचने के लिये ज़िक्रकर्दा ह़वालों में से एक या दो की तख़रीज दी गई ।

﴾4﴿.....बा'ज़ मक़ामात पर मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة ने अल्फ़ाज़ के लुग़वी मआ़नी बयान किये हैं और कहीं कहीं असनाद पर कलाम भी फ़रमाया है, तर्जमे में दिये गए लुग़वी मआ़नी की रिआ़यत की गई है मगर लुग़वी अबह़ास का तर्जमा नहीं किया । यूं ही असनाद पर किये गए कलाम का तर्जमा भी तर्क कर दिया है । उ़लमा व मुह़क़्क़िक़ीन अस्ल किताब की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं ।

﴾5﴿.....''शर्हुस्सुदूर'' के मुख़्तलिफ़ नुस्ख़ों में जहां कहीं इख़्तिलाफ़ था या इ़बारत में कुछ कमी बेशी थी या कोई इश्काल था वहां अस्ल माख़ज़ और दीगर कुतुब से रुजूअ़ कर के तर्जमा किया गया है ।

तआ़रुफ़े मुसन्निफ़

नाम व नसब और विलादते बा सआ़दत

नवीं सदी के मुजद्दिद, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस, इमामे अजल्ल, शैख़ुल इस्लाम अ़ल्लामा सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का नाम व नसब यूं है : **अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र** कमालुद्दीन बिन नासिरुद्दीन मुह़म्मद बिन अबू बक्र साबिक़ुद्दीन बिन फ़ख़रुद्दीन उ़स्मान बिन नासिरुद्दीन मुह़म्मद बिन सैफ़ुद्दीन ख़िज़्र बिन नजमुद्दीन अय्यूब बिन नासिरुद्दीन मुह़म्मद बिन हम्मामुद्दीन अल हम्माम त़ूलूनी सुयूत़ी ख़ुज़ैरी शाफ़ेई (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تعالٰی) क़ाहिरा की मस्जिदे जामेअ़ इब्ने त़ूलून के पड़ोस में रहने या वहां दर्से ह़दीस देने के सबब आप को ''त़ूलूनी'' कहा जाता है। आबाओ अज्दाद ''उस्यूत़'' नामी शहर में रहते थे इस लिये ''सुयूत़ी'' और ''उस्यूत़ी'' कहलाए, आबाओ अज्दाद में सब से पहले उस्यूत़ शहर में आप के जद्दे आ'ला ''**हम्मामुद्दीन**'' ने रिहाइश इख़्तियार की। इस से क़ब्ल येह ख़ानदान बग़दाद में ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मज़ार शरीफ़ के क़रीब वाक़ेअ़ मह़ल्ला ख़ुज़ैरिया में रहता था। इमाम सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने शहर उस्यूत़ नहीं देखा था अलबत्ता आप ने इस शहर की तारीख़ पर ''اَلْمَضْبُوْطُ فِیْ اَخْبَارِ السُّيُوْطِ'' के नाम से एक किताब लिखी है। ''**ख़ुज़ैरी**'' निस्बत के ह़वाले से ख़ुद फ़रमाते हैं कि किताबों में ''ख़ुज़ैरिया'' बग़दाद के एक मह़ल्ले को कहा गया है और मुझे एक क़ाबिले ए'तिमाद शख़्स ने बताया कि उस ने मेरे वालिदे माजिद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه से सुना कि ''उन के जद्दे आ'ला अ़जमी थे या मशरिक़ से आए थे।'' मुमकिन है कि येह निस्बत मज़्कूरा मह़ल्ले की त़रफ़ हो। फ़िक़्ह में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی के मुक़ल्लिद होने के सबब ''**शाफ़ेई**'' हैं। आप बरोज़ इतवार यकुम रजबुल मुरज्जब 849 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 3 अक्तूबर 1445 ईसवी को बा'द अज़ मग़रिब मिस्र के शहर क़ाहिरा में पैदा हुवे।[1]

अल्क़ाबात व कुन्यत

आप का मश्हूर लक़ब ''**जलालुद्दीन**'' है जो वालिद साहिब की त़रफ़ से अ़त़ा हुवा था। एक लक़ब ''**इब्नुल कुतुब**'' भी है, इस लक़ब की वज्ह बड़ी दिलचस्प है कि आप अभी शिकमे मादर ही में थे कि एक दिन वालिदे माजिद ने आप की वालिदए मोह़तरमा को कोई किताब लाने का

---

1 ...حسن المحاضرة، ۱/۲۸۸، الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص۲۹، ۸۱، التحدث بنعمة اللّٰہ، ص۵، ۲

कहा, किताब लेने गईं तो वहीं, दर्दे जेह (ज़चगी का दर्द) शुरूअ़ हुवा और किताबों के दरमियान आप की विलादत हो गई, इसी मुनासबत से आप को **इब्नुल कुतुब** कहा गया। आप की कुन्यत "**अबुल फ़ज़्ल**" है जो आप के शैख़ क़ाज़ियुल कुज़्ज़ा इज़्ज़ुद्दीन अह़मद बिन इब्राहीम किनानी ह़म्बली عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने अ़ता फ़रमाई, वाक़िआ़ येह है कि आप इन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे तो इन्हों ने दरयाफ़्त किया : तुम्हारी कुन्यत क्या है ? आप ने कहा : मेरी कोई कुन्यत नहीं। उन्हों ने फ़रमाया : तुम्हारी कुन्यत **अबुल फ़ज़्ल** है और अपने हाथ से लिख कर दी।(1)

कुछ आबाओ अज्दाद के बारे में

आप के जद्दे आ'ला हम्मामुद्दीन अह्ले त़रीक़त और मशाइख़े त़रीक़त से साहिबे हाल बुज़ुर्ग थे, येह ह़ज के लिये गए और जब एह़राम बांध कर "لَبَّیْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّیْكَ" कहा तो ग़ैब से आवाज़ सुनी "لَبَّیْكَ وَسَعْدَیْكَ"। इन का मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार मिस्र के शहर सुयूत़ में वाक़ेअ़ है जहां लोग इन के मज़ार की ज़ियारत करते और बरकतें ह़ासिल करते हैं। इन के इ़लावा दीगर आबाओ अज्दाद मुअ़ज़्ज़ज़ीन शहर थे और ज़ियादा तर हुकूमती ओ़ह्दों पर फ़ाइज़ रहे, बा'ज़ ने तिजारत भी की और कोई बहुत मालदार था और जो ताजिर थे उन्हों ने उस्यूत़ में एक मद्रसा बनाया और उस पर कई जागीरें वक़्फ़ कीं, अलबत्ता इ़ल्मे दीन की सह़ीह़ मा'नों में ख़िदमत आप के वालिदे माजिद के ह़िस्से में आई। इमाम सुयूत़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे आबाओ अज्दाद में से इ़ल्म की ख़िदमत का ह़क़ अदा करने वाले सिर्फ़ मेरे वालिदे माजिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हैं।(2)

आप के वालिदे माजिद पाबन्दी से क़ुरआने पाक की तिलावत किया करते थे और हर जुमुआ़ को क़ुरआने मजीद का ख़त्म फ़रमाया करते थे और मद्रसए शैख़ूनिय्या में फ़िक़्ह के मुदर्रिस, जामेअ़ इब्ने तूलून में ख़त़ीब और अ़ब्बासी ख़लीफ़ा सालेह़ मुस्तकफ़ी बिल्लाह के इमामे मस्जिद थे जो इन का बहुत ही अदबो एह़तिराम करता था।(3) एक मरतबा बादशाह मुल्के ज़ाहिर चक़मक़ ने ख़लीफ़ा मुस्तकफ़ी बिल्लाह के ज़रीए़ आप से दियारे मिस्र का मुफ़्ती बनने की दरख़्वास्त की तो

---

❶...التوبر السافر، ص٩٠

❷...حسن المحاضرة،١/٢٨٨، التحدث بنعمة الله، ص٥،٧

❸...تاریخ الخلفاء، ص٥١٢، الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجهوده فی الحدیث وعلومه، ٧٦، حسن المحاضرة،١/٣٧٠

आप ने मा'ज़िरत कर ली । ख़लीफ़ा मुस्तकफ़ी बिल्लाह की वफ़ात के 40 रोज़ बा'द 5 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 855 हिजरी को पीर की रात अज़ाने इशा के वक़्त आप के वालिदे माजिद का इन्तिक़ाल हुवा । अ़ल्लामा सुयूती عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : क़िब्ला वालिद साहिब चन्द दिन ज़ातुल जम्ब के मरज़ में मुब्तला रहे और शहादत की मौत से सरफ़राज़ हुवे ।(1) वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कमालुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن को विसाल के बा'द उन के परवरदा हज़रते मुवक्क़िउ़ल हकम अ़ज़ीज़ तूलूनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने ख़्वाब में देख कर कहा : मेरे सरदार ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में आप पर तंगी इस लिये फ़रमाई ताकि आख़िरत में आप पर वुस्अ़त फ़रमाए । वालिद साहिब ने फ़रमाया : ऐसा ही हुवा है ।(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । आमीन

इ़ल्मी ज़िन्दगी

इब्तिदाई हालात

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی अभी पांच साल ही के थे कि वालिदे माजिद का साया सर से उठ गया । वालिदे माजिद ने अपने फ़रज़न्दे दिलबन्द की परवरिश व निगहदाश्त के लिये कई लोगों को वसिय्यतें की थीं जिन में से एक साह़िबे शरीअ़तो त़रीक़त इमामे अजल्ल मुहक़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ शैख़ कमालुद्दीन बिन हम्माम ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی हैं । इन्हों ने "मद्रसए शैख़ूनिय्या" से आप का वज़ीफ़ा जारी कराया और अपनी निगहदाश्त में रखा और आप की ता'लीम पर ख़ास तवज्जोह दी ।(3)

मजज़ूब बुज़ुर्ग की दुआ़

अ़ल्लामा सुयूती عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : वालिद साहिब की ह़यात में मुझे मजज़ूब बुज़ुर्ग

1.....पस्लियों की अन्दरूनी सत्ह़ पर मन्ढी, झली के मुतवर्रम होने से पैदा होने वाला मरज़ **ज़ातुल जम्ब** कहलाता है इसे उर्दू में "निमोनिया" कहते हैं । ह़दीस शरीफ़ में आया है اَلْمَیِّتُ مِنْ ذَاتِ الْجَنْبِ شَهِیْدٌ "या'नी **ज़ातुल जम्ब** की बीमारी से मरने वाला शहीद है ।" (مجمع الزوائد،۵۵/۳،حدیث:۳۸۸۰)

2...بغية الوعاة،۲۲۷/۱، التحدث بنعمة الله،ص١١

3...الكواكب السائرة،۲۲۷/۱،رقم۲۶۱:عبد الرحمن بن ابوبكر الاسيوطي

हज़रते शैख़ मुहम्मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ले जाया गया, वोह अकाबिर औलियाए किराम में से थे और मश्हदे नफ़ीसी के क़रीब रिहाइश पज़ीर थे, उन्हों ने मेरे लिये बरकत की दुआ फ़रमाई।[1]

ता'लीमी सफ़र का आग़ाज़

आप के वालिदे माजिद आप को उस उम्र से उ़लमा व मशाइख़ की बारगाह में ले जाया करते थे जिस में बच्चे इल्मी इस्तिफ़ादा की सलाहिय्यत भी नहीं रखता। अ़ल्लामा अ़ब्दुल क़ादिर ऐ़दरूस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : वालिदे गिरामी आप को तीन साल की उ़म्र में शैख़ुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने हजर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر की ख़िदमत में ले गए।[2] आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की उ़म्र अभी आठ साल पूरी न हुई थी कि कुरआने मजीद हिफ़्ज़ कर लिया फिर छोटी सी उ़म्र में ही "عُمْدَةُ الْاَحْكَام" और "مِنْهَاجُ الْبَيْضَاوِی" "اَلْمِنْهَاجِ لِلنَّوَوِی"، "اَلْفِيَّةُ ابْنِ مَالِك" किताबें ज़बानी याद कर लीं और नामवर असातिज़ा व शुयूख़े अ़स्र को सुना कर इजाज़त हासिल की। फ़िक़्ह व नह़्व की ता'लीम आप ने मुख़्तलिफ़ मशाइख़ से हासिल की और इल्मुल फ़राइज़ अ़ल्लामा शैख़ शहाबुद्दीन शारेमसाही عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی से हासिल किया जिन की उ़म्र 100 साल से मुतजाविज़ हो चुकी थी।[3] इल्मे मन्तिक़ की कुछ किताबें पढ़ीं फिर इस से ए'राज़ कर लिया, ख़ुद फ़रमाते हैं : "इब्तिदाअन मैं ने इल्मे मन्तिक़ का कुछ इल्म हासिल किया फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे दिल में इस की नफ़रत डाल दी और इस के बदले मुझे इल्मे ह़दीस अ़त़ा कर दिया जो कि अशरफ़ुल उ़लूम है।"[4]

फ़िक़्ह की बाक़ाइदा ता'लीम के लिये शैख़ुल इस्लाम इल्मुद्दीन बुल्क़ैनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی की ख़िदमत में हाज़िर हुवे और इन के इन्तिक़ाल तक इन से इल्मे फ़िक़्ह की तह़सील करते रहे और इन के इन्तिक़ाल के बा'द इन के साहिबज़ादे से फ़िक़्हे शाफ़ेई की मुख़्तलिफ़ किताबों के अस्बाक़ पढ़े। 876 हिजरी में इन्हों ने आप को तदरीस व इफ़्ता की इजाज़त अ़त़ा की। 898 हिजरी में जब इन का भी इन्तिक़ाल हो गया तो आप अ़ल्लामा शैख़ुल इस्लाम शरफ़ुद्दीन मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की

---

1 ...حسن المحاضرة، ۱/۲۸۸

2 ... النور السافر، ص۹۱

3 ...حسن المحاضرة، ۱/۲۸۸

4 ...حسن المحاضرة، ۱/۲۹۰

ख़िदमत में हाज़िर हुवे और इन से "मिन्हाज" और "शर्हे लहजा" के कुछ अस्बाक़ और "तफ़्सीरे बैज़ावी" पढ़ी। फिर आप शैख़ अ़ल्लामा इमाम तक़ियुद्दीन शिब्ली ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی के पास हाज़िर हुवे और चार साल उन की ख़िदमत में रह कर ह़दीस वग़ैरा की ता'लीम हासिल की।(1)

उस्ताद का ए'तिमाद

"हुसनुल मुहाज़रह" में अपने उस्ताद साहिब का एक वाक़िआ़ नक़्ल करते हैं कि "अ़ल्लामा तक़ियुद्दीन शिब्ली عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی ने शिफ़ा शरीफ़ के हाशिये में वाक़िअ़ए मे'राज में ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल जुमरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मरवी रिवायत का माख़ज़ "सुनने इब्ने माजा" को ज़िक्र किया लेकिन मैं ने बार बार सुनने इब्ने माजा को देखा मगर येह ह़दीस न मिली और फिर मैं ने "مُعْجَمُ الصَّحَابَۃِ لِابْنِ قَانِع" को देखा तो उस में मुझे येह ह़दीस मिल गई। मैं अपने शैख़ अ़ल्लामा शिब्ली عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی के पास हाज़िर हुवा और उन से येह मुआ़मला अ़र्ज़ किया तो उन्हों ने सिर्फ़ मुझ से सुन कर अपने नुस्ख़े से इब्ने माजा का लफ़्ज़ काट कर इब्ने क़ानेअ़ लिख दिया। इस बात से मेरे दिल में शैख़ की अ़ज़मत मज़ीद बढ़ गई और मैं ने ख़ुद को ह़क़ीर समझा, मैं ने अ़र्ज़ की : आप तह़क़ीक़ के लिये थोड़ा रुक भी सकते थे। इरशाद फ़रमाया : मैं ने अपने लिखे हुवे अल्फ़ाज़ "इब्ने माजा" को तब्दील करने में एक वाज़ेह़ दलील की पैरवी की है। अ़ल्लामा सुयूत़ी फ़रमाते हैं : मैं शैख़ के विसाल तक उन के साथ रहा।"(2)

अ़ल्लामा शैख़ जलालुद्दीन महि़ल्ली عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में दो साल तक हफ़्ते में दो बार हाज़िरी देते रहे और उन की तफ़्सीर जो "**जलालैन**" के नाम से मश्हूर हुई उस की तक्मील फ़रमाई।(3)

शैख़ अ़ल्लामा मुहि़य्युद्दीन काफ़यजी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमत में 14 साल तक हाज़िरी दी और उन से तफ़्सील, उसूल, उ़लूमे अ़रबिय्या और मआ़नी वग़ैरा का इल्म हासिल किया और उन के इलावा अ़ल्लामा शैख़ सैफ़ुद्दीन ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُاللّٰہِ الْغَنِی की मजलिसे दर्स में भी हाज़िरी दी और उन से "तफ़्सीरे कशाफ़", "तौज़ीह़ मअ़ हाशिया" तल्ख़ीसुल मुफ़्ताह़ और

1 ...حسن المحاضرۃ، ۱/ ۲۸۹

2 ...حسن المحاضرۃ، ۱/ ۲۸۹

3 ...الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص ۱۱۷

"अ़जुद" वग़ैरा के अस्बाक़ पढ़े। तह़सीले इ़ल्म के लिये आप ने शाम, ह़िजाज़, यमन, हिन्द और मग़रिबी मुमालिक का भी सफ़र इख़्तियार किया।[1]

दो लाख अह़ादीस के ह़ाफ़िज़

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे दो लाख अह़ादीस याद हैं अगर मुझे इस से ज़ियादा अह़ादीस मिलतीं तो मैं उन्हें भी याद कर लेता।[2] ह़ज के लिये ह़ाज़िर हुवे तो ज़म ज़म शरीफ़ पी कर येह दुआ़ मांगी : "इलाही ! मुझे फ़िक़्ह में सिराजुद्दीन बुल्क़ैनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی का और ह़दीस में इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का मर्तबा ह़ासिल हो जाए।"[3] इस दुआ़ की क़बूलिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से लगा सकते हैं कि ख़ुद "حُسْنُ الْمُحَاضَرَة" में फ़रमाते हैं : "मुझे सात उ़लूम में कामिल महारत अ़त़ा हुई : (1) तफ़्सीर (2) ह़दीस (3) फ़िक़्ह (4) नह़्व (5) मआ़नी (6) बयान (7) बदीअ़। मैं ने इन उ़लूम को अ़रब और बुलग़ा के त़रीक़े पर अपनाया और फ़लासफ़ा और अ़जमियों के त़रीक़े से ख़ुद को दूर रखा और फ़िक़्ह के इ़लावा इन उ़लूम में जो दस्तरस मुझे ह़ासिल हुई दीगर अफ़राद तो दूर रहे मेरे शुयूख़ में से भी कोई इस तक नहीं पहुंचा। अलबत्ता फ़िक़्ह के मुतअ़ल्लिक़ मैं येह नहीं कह सकता क्यूंकि इस में मेरे शैख़ (इ़ल्मुद्दीन बुल्क़ैनी) ज़ियादा वसीउ़न्नज़र और बसीरत व क़ुदरत रखते हैं। मज़्कूरा सात उ़लूम के सिवा उसूले फ़िक़्ह, इ़ल्मे जदल, सर्फ़, इन्शाअ, इ़ल्मे क़िराअत और तिब्ब को मैं ने किसी उस्ताद से नहीं पढ़ा।"[4]

एक मक़ाम पर यूं तह़दीसे ने'मत फ़रमाया : इस वक़्त मशरिक़ से ले कर मग़रिब तक रूए ज़मीन में कोई शख़्स ऐसा नहीं है जो ह़दीस और अ़रबिय्यत में मुझ से ज़ियादा इ़ल्म रखता हो बजुज़ ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام किसी क़ुत़ुब या किसी वली के, वोह मुस्तसना हैं।[5]

असातिज़ा के अस्माए गिरामी

आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने शुयूख़ (असातिज़ा) की ता'दाद के बारे में लिखते हैं कि जिन से मैं ने सुना और जिन्हों ने मुझे इजाज़त दी और जिन्हों ने मुझे एक शे'र भी सिखाया था, उन

1...حسن المحاضرة، ۱/ ۲۸۹، ۲۹۰

2...الكواكب السائرة، ۱/ ۲۲۹، رقم: ۴۶۱، عبد الرحمن بن ابی بكر الاسيوطی

3...حسن المحاضرة، ۱/ ۲۹۰

4...حسن المحاضرة، ۱/ ۲۹۰

5...محدثین عظام، حیات وخدمات، ص ۶۰۵

की ता'दाद 600 तक पहुंचती है।[1] और ख़ास शुयूख़ की ता'दाद 150 है। उन में से चन्द असातिज़ा के नाम दर्जे ज़ैल हैं :

(1)...अ़ल्लामा मुहम्मद बिन सा'द शम्सुद्दीन ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى मुतवफ़्फ़ा 867 हिजरी (2)...क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ा शैख़ुल इस्लाम इल्मुद्दीन बुल्क़ैनी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मुतवफ़्फ़ा 868 हिजरी (3)...शैख़ुल इस्लाम अबू ज़करिय्या यह्या बिन मुहम्मद मनावी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मुतवफ़्फ़ा 871 हिजरी (अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى के जद्दे अमजद) (4)...अ़ल्लामा अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुहम्मद तक़ियुद्दीन शुमुन्नी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى मुतवफ़्फ़ा 872 हिजरी (5)...अ़ल्लामा मुह़क़्क़िक़ मुहिय्युद्दीन काफ़यजी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى मुतवफ़्फ़ा 879 हिजरी (6) मुह़क़्क़िक़े दियारे मिस्र अ़ल्लामा सैफ़ुद्दीन ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى मुतवफ़्फ़ा 881 हिजरी (7)...अ़ल्लामा अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अह़मद जलालुद्दीन महि़ल्ली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मुतवफ़्फ़ा 864 हिजरी (8)...अ़ल्लामा क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ा इज़्ज़ुद्दीन किनानी ह़म्बली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मुतवफ़्फ़ा 876 हिजरी (9)...शम्सुद्दीन सीरामी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى मुतवफ़्फ़ा 866 हिजरी।

नामवर तलामिज़ा

आप के तलामिज़ा की फ़ेहरिस्त भी बहुत त़वील है जिन में से बा'ज़ मश्हूर तलामिज़ा के नाम येह हैं : (1)...मुसन्निफ़े सुबुलुल हुदा वर्रशाद इमाम ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस मुहम्मद बिन यूसुफ़ शामी सालिह़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मुतवफ़्फ़ा 942 हिजरी (2)...इमामे क़िराअत अ़ल्लामा सिराजुद्दीन उ़मर बिन क़ासिम नश्शार शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मुतवफ़्फ़ा 938 हिजरी (3)...शैख़े फ़ाज़िल अ़ल्लामा शरफ़ुद्दीन क़ासिम बिन उ़मर मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मुतवफ़्फ़ा 927 हिजरी (4)...अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर बिन मुहम्मद शाज़िली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मुतवफ़्फ़ा 935 हिजरी (5)...इमाम अ़ल्लामा सय्यिद जमालुद्दीन यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह हुसैनी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मुतवफ़्फ़ा 958 हिजरी (6)...अ़ल्लामा शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान अ़लक़मी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मुतवफ़्फ़ा 963 हिजरी (7)...शैख़ुल ह़दीस अ़ल्लामा शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अ़ली दावूदी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى मुतवफ़्फ़ा 945 हिजरी।

1...التحدث بنعمة الله، ص ٤٣

तदरीसी ख़िदमात

867 हिजरी में आप मद्रसा शैख़ूनिय्या में अपने वालिद की जगह फ़िक़्ह के मुदर्रिस मुक़र्रर हुवे और तक़र्रुरी के इस मौक़अ़ पर आप के उस्ताद शैखुल इस्लाम इ़ल्मुद्दीन बुल्क़ैनी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْغَنِى भी तशरीफ़ लाए ।(1)

871 हिजरी में आप ने फ़तवा नवेसी शुरूअ़ की और देखते ही देखते आप के फ़तावा मशरिक़ो मग़रिब और अ़रबो अ़जम में मश्हूर हो गए । "اَلتَّحَدُّثُ بِنِعْمَةِ الله" में अपने फ़तावा के मुतअ़ल्लिक़ ज़िक्र करते हैं : "मैं ने इतने फ़तावा दिये हैं कि इन की सहीह़ ता'दाद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही जानता है । जिन मसाइल में मुझ से मेरे हम अ़स्र उ़लमा ने इख़्तिलाफ़े राए किया, उन में से हर मस्अले पर मैं ने अलग अलग किताबें लिखीं और मेरी ऐसी तस्नीफ़ात की ता'दाद 50 से ज़ाइद है और इस वक़्त मेरे फ़तावा की तीन जिल्दें हैं ।(2)

872 हिजरी में आप ने जामेअ़ तूलूनी में ह़दीस शरीफ़ का इम्ला कराना शुरूअ़ किया जहां आप से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ह़दीसे पाक का इम्ला कराया करते थे जिन के इन्तिक़ाल के बा'द 20 बरस तक येह सिलसिला मौक़ूफ़ रहा जिसे आप ने दोबारा ज़िन्दा किया ।(3)

877 हिजरी में आप मद्रसए शैख़ूनिया में शैखुल ह़दीस के मन्सब पर फ़ाइज़ हुवे ।(4)

891 हिजरी में आप को ख़ानक़ाहे बीबरसिय्या में शैखुस्सूफ़िया का मन्सब मिला और 906 हिजरी तक आप इस मन्सब पर फ़ाइज़ रहे ।(5)

---

❶...الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص۱۲۱

❷...التحدث بنعمۃ اللہ، ص۹۰، الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص۱۲۳

❸...التحدث بنعمۃ اللہ، ص۸۸

❹...التحدث بنعمۃ اللہ، ص۹۰

❺...الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص۱۲۵،۱۲٦

अख़्लाक़ो मनाक़िब

सुन्नतों को ज़िन्दा किया

शैख़ुल इस्लाम अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर और अच्छी सिफ़ात के ह़ामिल थे। सुन्नते रसूल पर मज़बूती से अ़मल पैरा होते और उन सुन्नतों को भी अपनाते जिन से अ़वाम तो अ़वाम ख़वास भी एक अ़र्से से दूर रहे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने त़यालिसा[1] (या'नी सर और कांधे ढांपने वाली चादर) ओढ़ने की सुन्नत को ज़िन्दा किया और इस बारे में एक किताब बनाम "اَلْاَحَادِيْثُ الْحِسَانِ فِىْ فَضْلِ الطَّيْلَسَان" तह़रीर की और अपने शागिर्दों को इस सुन्नत के अपनाने पर उभारा।

इसी त़रह़ आप ने सुन्नत पर अ़मल पैरा होते हुवे बद मज़हबों से किनारा कशी इख़्तियार की और इस बारे में एक किताब "اَلزَّجْرُ بِالْهَجْر" लिखी और इस किताब के लिखने की वज्ह येह तह़रीर फ़रमाई कि "हमारे ज़माने में लोग बद मज़हबों से मेल जोल बहुत ज़ियादा रखते हैं।"

बादशाहों को अम्र बिल मा'रूफ़

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मनाक़िब में से येह भी है कि आप اَمْر بِالْمَعْرُوْف وَنَهِى عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने) के मुआ़मले में किसी का ख़ौफ़ न करते और न रो'बे शाही को ख़ात़िर में लाते। इस ह़वाले से आप के वाक़िआ़त मश्हूर हैं यहां तक कि एक हुक्मरान ने आप को क़त्ल की भी धमकी दी मगर फिर भी आप ने اَمْر بِالْمَعْرُوْف وَنَهِى عَنِ الْمُنْكَر का फ़रीज़ा न छोड़ा। सुल्त़ान अशरफ़ ग़ौरी को अपने एक फ़तवे में औक़ाफ़ की बैअ़ से रोका नीज़ अपने ज़माने के मुख़्तलिफ़ ज़ालिमाना टेक्सों की हु़र्मत का फ़तवा दिया और सुल्त़ान को इस से मन्अ़ किया। बिलादे तकरूर के हुक्मरानों की त़रफ़ एक मक्तूब लिखा और उन्हें उन के शहरों में फैली हुई बुराइयों को रोकने का कहा। यूंही अम्र बिल मा'रूफ़ के सिलसिले में सुल्त़ान क़ाइतबाई की त़रफ़ भी एक मक्तूब रवाना किया।[2]

---

1 .....त़यालिसा जम्अ़ है त़ैलिसान की जो मुअ़र्रब है तालिसान का। तालिसान वोह ख़ास रूमाल (चादर) है जिस से सर और कांधा ढाका जाता है या कोई और ख़ास लिबास। त़ैलिसान पहनने से मुमानअ़त भी आई है और हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस का पहनना भी साबित है, जब तक येह यहूद का निशाने ख़ास रहा ममनूअ़ रहा, जब इस का रवाज आ़म हो गया तब हुज़ूर ने पहना तमाम लिबासों का येह ही ह़ाल कि जो कुफ़्फ़ार की अ़लामत हों उन से बचे और जब अ़लामत न रहें मुश्तरक बन जावें तो जाइज़ हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/300)

2 ...الامام الحافظ جلال الدين سيوطى وجهوده فى الحديث وعلومه، ص ٨٨

मसाइबो आलाम पर सब्र

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के अख़्लाक़ो मनाक़िब में से येह भी है कि आप ने मसाइबो आलाम और तकालीफ़ पर बहुत ज़ियादा सब्र किया। पहले खुद यतीम हो गए और फिर अपनी ज़िन्दगी में तमाम अह्लो इयाल की मौत का ग़म बरदाश्त किया। खुद इरशाद फ़रमाते हैं : मेरे अक्सर भाई और औलाद शहादत की मौत मरे हैं, कोई ताऊन से कोई नफ़ास से कोई ज़ातुल जम्ब (निमोनिया) के मरज़ से और मुझे भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से शहादत की उम्मीद है।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि आप को येह सआदत मिल गई होगी क्यूंकि इन्तिक़ाल से पहले आप के बाएं हाथ में शदीद वरम आ गया था और सात दिन तक इसी मरज़ में मुब्तला रह कर विसाल फ़रमाया और ह़दीस शरीफ़ में है : مَنْ مَاتَ مَرِیْضًا مَاتَ شَھِیْدًا या'नी जो बीमारी की ह़ालत में मरा वोह शहीद है।(2)

फिर येही नहीं बल्कि मुख़ालिफ़ीन व ह़ासिदीन की त़रफ़ से आप को बहुत ज़ियादा तकालीफ़ दी गईं मगर आप ने सब्रो रज़ा का दामन न छोड़ा ह़त्ता कि सलात़ीन व उमरा की त़रफ़ से आप पर दबाव भी डाला गया लेकिन इस के बा वुजूद भी आप ने अपने मुख़ालिफ़ीन व ह़ासिदीन को बुरा भला न कहा चुनान्चे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के शागिर्द अ़ल्लामा अ़ब्दुल क़ादिर शाज़िली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हमारे शैख़ ने बहुत तकालीफ़ उठाईं लेकिन इस के बा वुजूद कभी मैं ने उन को तक्लीफ़ देने वाले ह़ासिदीन पर बद दुआ करते और उन्हें बुरा भला कहते नहीं सुना बल्कि आप येह कहते : حَسْبُنَا اللّٰہُ وَنِعْمَ الْوَکِیْل या'नी हमारे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही काफ़ी है और वोह क्या ही अच्छा कारसाज़ है।"(3)

मसाइब को ने'मत शुमार करते

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जुहला और ह़ासिदीन की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ को अपने ऊपर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत शुमार करते चुनान्चे, खुद फ़रमाते हैं : "एक जमाअ़त मेरी अ़दावत और तक्लीफ़ पर कमरबस्ता है और मैं इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ने'मत शुमार करता हूं ताकि मुझे भी अम्बिया व मुर्सलीन عَلَیْہِمُ السَّلَام के उस्वए ह़सना से कुछ ह़िस्सा मिले।"(4)

---

1 ...التحدث بنعمة الله، ص۱۰

2 ...ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء في من مات مريضًا، ۲/۲۷۷، حديث: ۱۶۱۵

3 ...الامام الحافظ جلال الدين سيوطي وجهوده في الحديث وعلومه، ص۸۹، ۹۰

4 ...الامام الحافظ جلال الدين سيوطي وجهوده في الحديث وعلومه، ص۹۰

मुख़ालिफ़ीन को मुआ़फ़ कर दिया

इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی बयान करते हैं कि मुझे जामेअ़ अज़्हर के नेक ख़त़ीब शैख़ शुऐ़ब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बताया कि मैं इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی के विसाल के वक़्त उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, मैं ने उन के पाउं को बोसा दे कर उन अह्ले इ़ल्म को मुआ़फ़ करने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जिन्हों ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को अज़िय्यत पहुंचाई थी तो इरशाद फ़रमाया : मेरे भाई ! मैं ने तो उन्हें उसी वक़्त मुआ़फ़ कर दिया था जब उन्हों ने मेरी ह़क़ तलफ़ी की थी और मैं ने उन के रद में जो कुछ लिखा है वोह सिर्फ़ इस लिये ताकि वोह किसी और मुसलमान की इ़ज़्ज़तदरी पर जुरअत न करें।(1)

इ़ज़्ज़ते उ़लमा की ह़िफ़ाज़त

इमाम जामेअ़ ग़म्री ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अमीनुद्दीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن से मन्क़ूल है कि मैं ने अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی को मरज़ुल मौत में येह फ़रमाते सुना : गवाह हो जाओ ! मैं ने उन सब लोगों को मुआ़फ़ कर दिया जिन के मुतअ़ल्लिक़ मुझे येह ख़बर मिली है कि वोह मेरी इ़ज़्ज़त के दरपे हुवे हैं अलबत्ता मैं उन लोगों को ज़रूर मुआ़फ़ नहीं करता जिन्हों ने उ़लमा की इ़ज़्ज़त पर हाथ डाला है।(2)

सलफ़े सालिह़ीन का दिफ़ाअ़

अ़ल्लामा सुयूत़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने सलफ़े सालिह़ीन पर होने वाले ए'तिराज़ात का भी भरपूर दिफ़ाअ़ फ़रमाया जैसा कि आप के ज़माने में बा'ज़ अह्ले इ़ल्म ने हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی की एक इ़बारत को ग़लत़ क़रार दिया और उसे फ़लासिफ़ा की पैरवी कहा तो आप ने उन के रद में "تَشْدِیْدُ الْاَرْکَان" के नाम से एक रिसाला लिखा जिस में आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی की इ़बारत को दुरुस्त क़रार दिया और उस को फ़लासिफ़ा की पैरवी कहने का रद किया।(3)

---

❶...جامع کرامات اولیاء، ۲/۱۵۶

❷...الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص۸۸

❸...الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص۱۳۴

हज़रते सय्यिदुना इमामुल मुकाशिफ़ीन शैख़े अक्बर मुहिय्युद्दीन इब्ने अ़रबी और सुल्ता़नुल आ़शिक़ीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन फ़ारिज़ (رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیْہِمَا) के मुतअ़ल्लिक़ बा'ज़ लोगों ने ए'तिराज़ात किये और उन्हें बुरा भला कहा तो आप ने उन दोनों का दिफ़ाअ़ करते हुवे उन दोनों शख़्सिय्यात के मुतअ़ल्लिक़ दो किताबें लिखीं एक "تَنْبِيْهُ الْغَبِی بِتَبْرِئَةِ ابْنِ الْعَرَبِی" और दूसरी "قَمْعُ الْمُعَارِضِ فِیْ نُصْرَةِ ابْنِ الْفَارِض" के नाम से और इन में उन हज़रात पर होने वाले ए'तिराज़ात के जवाबात दिये और हज़रते सय्यिदुना मुहिय्युद्दीन इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : मेरे नज़्दीक सब से बेहतर बात येह है कि इन की विलायत का ए'तिक़ाद रखा जाए और इन की किताबें पुख़्ता इल्म वालों के इलावा किसी को पढ़ना रवा नहीं।(1)

वालिदैने करीमैन का ईमान

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदैने करीमैन के ईमान और इन के आख़िरत में नजात याफ़्ता होने के मुतअ़ल्लिक़ छे रसाइल तस्नीफ़ किये :

(۱)...التعظیم والمنة فی انّ والدی النبی فی الجنة (۲)...مسالك الحنفاق والدی المصطفٰی

(۳)...الدرالمنیفة فی الأباء الشریفة (۴)...سبل النجاة (۵)...نشر العلمین المنیفین فی احیاء الابوین الشریفین

(۶)...المقامة السندسیة فی نجاة والدی خیر البریة۔(2)

इन रसाइल में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कुरआने करीम और अहादीसे करीमा से हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदैने करीमैन का ईमान साबित किया और हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदैने करीमैन तक तमाम आबाओ अज्दाद को मुवह्हिद (या'नी ख़ुदा को एक मानने वाले) क़रार दिया है नीज़ इस हवाले से जो ए'तिराज़ात हुवे आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उन के बहुत ज़बरदस्त जवाबात दिये।(3)

---

1 ...الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجهوده فی الحدیث وعلومه، ص ۱۳۹

2 ...الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجهوده فی الحدیث وعلومه، ص ۱۴۰

3 .....सय्यिदी आ'ला हज़रत इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने भी हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वालिदैने करीमैन के ईमान के मुतअ़ल्लिक़ एक रिसाला "شُمُوْلُ الْاِسْلَام لِاُصُوْلِ الرَّسُوْلِ الْكِرَام" तस्नीफ़ फ़रमाया है जो फ़तावा रज़विय्या तीसवीं जिल्द में अपने फ़ुयूज़ो बरकात लुटा रहा है।

बैअ़त व इरादत

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ सिलसिलए शाज़िलिय्या में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़े कामिल मुह़म्मद बिन उ़मर शाज़िली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی से बैअ़त हुवे और अ़ल्लामा शैख़ कमालुद्दीन इब्ने इमामुल मालिकिय्या मुह़म्मद बिन मुह़म्मद शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی से ख़िर्क़ए तसव्वुफ़ पहना जिन्हों ने आप को का'बए मुशर्रफ़ा के सामने ज़िक्र की तल्क़ीन की और ख़िर्क़ए तसव्वुफ़ को आगे देने की इजाज़त दी।[(1)]

दरजए इजतिहाद पर फ़ाइज़ होना

आप رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपनी किताब "حُسْنُ الْمُحَاضَرَہ" में खुद को मिस्र के अइम्मए मुज्तहिदीन में शुमार किया है[(2)] और अपनी किताब "اَلتَّحَدُّث بِنِعْمَۃِ الله" में अपने दा'वए इजतिहाद की वज़ाह़त करते हुवे फ़रमाते हैं : जब मैं मर्तबए तरजीह़ को पहुंचा तो फ़तवा देने में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नववी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی की तरजीह़ से बाहर नहीं निकला और मर्तबए इजतिहाद पर पहुंचने के बा वुजूद फ़तवा देने में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی के मज़हब से बाहर नहीं निकला।[(3)] और एक जगह अपने दा'वए इजतिहाद के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : "मैं ने अपने इजतिहाद का दा'वा बत़ौरे फ़ख़्र नहीं किया बल्कि तह़दीसे ने'मत और शुक्रे इलाही के लिये किया है।"[(4)]

मुजद्दिद होने की उम्मीदे वासिक़

जिस त़रह़ आप ने अपने मुज्तहिद होने का ज़िक्र किया यूंही आप ने बजा त़ौर पर अपने मुजद्दिद होने की उम्मीदे वासिक़ ज़ाहिर फ़रमाई चुनान्चे, आप ने अपनी किताब "اَلتَّحَدُّث بِنِعْمَۃِ الله" में खुद को नवीं सदी हिजरी का मुजद्दिद इन अल्फ़ाज़ के साथ कहा कि "मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल से उम्मीदे वासिक़ है कि वोह मुझे इस सदी का मुजद्दिद होने की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाए। और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कुछ दुश्वार नहीं।[(5)]

---

❶...الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص۱۲۰، ۱۲۲

❷...حسن المحاضرة، ۱/۲۸۸

❸...التحدث بنعمة الله، ص۹۰

❹...حسن المحاضرة، ۱/۲۹۰

❺...التحدث بنعمة الله، ص۲۲۷

एक मक़ाम पर फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى को अपने मुजद्दिद होने का ख़याल था इसी त़रह़ मुझ को भी उम्मीद है कि मैं नवीं सदी का मुजद्दिद होऊंगा इस लिये कि मैं फ़ज़्लो कमाल में मुन्फ़रिद हूं, इल्मे उसूले लुग़त को मैं ने ईजाद किया। मेरे उ़लूम और तस्नीफ़ात सारे आ़लम में पहुंच गईं। शाम, रूम, अ़जम, ह़िजाज़, ह़बशा और तकरूर हर जगह मेरे उ़लूम और मुसन्नफ़ात की रसाई है, इन कमालात में मेरा कोई शरीक नहीं।[1] ख़ातिमतुल मुह़क़्क़िक़ीन अ़ल्लामा अ़ली क़ारी, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान और अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़य्य लखनवी رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰى भी इन्हें नवीं सदी हिजरी का मुजद्दिद क़रार देते हैं।[2]

फ़न्ने ह़दीस में महारत

इमाम सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ह़दीस शरीफ़ के फ़न में ख़ुसूसी महारत रखते थे जिस पर आप की किताबें शाहिदे अ़द्ल हैं। आप रावियों की छान फटक, ह़दीस के मरातिब का तअ़य्युन और तुरुक़े ह़दीस से आगाही में अपनी मिसाल आप हैं। बा'ज़ उ़लमा ने जिन अह़ादीसे करीमा को मौज़ूअ़ (या'नी घड़ी हुई ह़दीसें) क़रार दे दिया था आप ने उन पर तह़क़ीक़ कर के उन्हें मौज़ूअ़ होने के दरजे से निकाल लिया। बक़ौल अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى अपने ज़माने में रावियों, मतन, सनद और इस्तिम्बात़े अह़काम के लिह़ाज़ से इल्मे ह़दीस और उसूले ह़दीस को सब से बढ़ कर जानने वाले थे।[3]

फ़न्ने ह़दीस में आप की बे मिस्ल महारत का एक वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने बहुत सी ऐसी ह़दीसों का हुक्म वाज़ेह़ किया जिन के बारे में मा'लूम न था कि किस ने उन की तख़रीज की है? और उन का मर्तबा क्या है? पस आप ने उन की तख़रीज फ़रमाई और ह़सन, ज़ईफ़ वग़ैरा होने के लिह़ाज़ से उन का मर्तबा बयान फ़रमाया। एक बार शैख़ुल इस्लाम तक़िय्युद्दीन औजाक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने ऐसी ही कुछ ह़दीसें रावियों में रद्दो बदल कर के ब ग़रज़े इम्तिह़ान इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى

1...محدثین عظام، حیات وخدمات ۶۰۷

2...مرقاۃ، ۱/۵۰۷، حاشیۃ اعلی حضرت علی المقاصد الحسنۃ، ص۲، التعلیق الممجد علی موطأ محمد، ۱/۱۰۲

3...فہرس الفہارس، ۲/۱۰۱۱، رقم: ۵۷۵، السیوطی

के पास भेजीं तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उन ह़दीसों को उन के उसूल और मरातिब के साथ बयान कर के वापस भेज दिया तो ह़ज़रते शैख़ुल इस्लाम चल कर आप के पास आए और आप के हाथ को बोसा दे कर फ़रमाया : ब ख़ुदा ! मेरे तो ह़ाशियए ख़याल में भी न था कि आप इन में से कुछ जानते होंगे, एक अ़र्से से जो मुझ से आप की बुराई सरज़द हुई है आप उसे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये।(1)

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ह़दीस दानी के बहुत सारे शवाहिद हैं। एक दलील येह भी है कि मशहूर ह़दीस طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ "या'नी इल्म ह़ासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है" को अक्सर मुह़द्दिसीन ने ज़ईफ़ क़रार दिया तो आप ने अपनी फ़न्ने ह़दीस में ख़ुदादाद सलाह़िय्यत की बिना पर इस ह़दीस शरीफ़ की तस्ह़ीह़ फ़रमाई या'नी इसे "ह़दीसे सह़ीह़" साबित किया। इरशाद फ़रमाते हैं : मेरे नज़दीक येह ह़दीस मर्तबए सिह़्ह़त को पहुंची हुई है क्यूंकि मुझे इस ह़दीस के 50 तुरुक़ से वाक़िफ़िय्यत है जिन को मैं ने अपनी एक तालीफ़ में यक्जा कर दिया है।(2)

तस्नीफ़ो तालीफ़

पहली तस्नीफ़

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने 866 हिजरी में तस्नीफ़ो तालीफ़ का आग़ाज़ फ़रमाया और पहली किताब "شَرْحُ الْاِسْتِعَاذَةِ وَالْبَسْمَلَة" लिखी। आप के उस्ताद शैख़ुल इस्लाम अ़ल्लामा इल्मुद्दीन बुल्क़ैनी عَلَیْهِ رَحمَةُاللهِ الْغَنِی ने इस किताब को देखा तो इसे पसन्द फ़रमाया और इस पर तक़रीज़ लिखी।(3)

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने "حُسْنُ الْمُحَاضَرَة" में अपनी 300 कुतुब का ज़िक्र किया है(4) जब कि अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ऐदरूस رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه का बयान है कि अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْهِ رَحمَةُاللهِ الْقَوِی ने जिन किताबों से रुजूअ़ किया या दरयाबुर्द कर दिया, इन के इलावा आप की तसानीफ़ की ता'दाद 600 तक पहुंचती है।(5)

---

❶...فهرس الفهارس،٢/١٠١١،رقم:٥٧٥،السيوطي

❷...حاشية تبييض الصحيفة بمناقب أبي حنيفة،ص٢٥

❸...حسن المحاضرة،١/٢٨٨...التحدث بنعمة الله،ص١٣٧

❹...حسن المحاضرة،١/٢٨٩

❺...النور السافر،ص٩١

मशरिक़ो मग़रिब में शोहरत

आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की अक्सर तसानीफ़ आप की ज़िन्दगी ही में हिजाज़, शाम, रूम, हिन्द, यमन और मग़रिब तक शोहरत हासिल कर चुकी थीं। आप फ़रमाते हैं : 875 हिजरी में मेरी किताबें दुन्या के अत़राफ़ो अक्नाफ़ में पहुंचना शुरूअ़ हो गई थीं, मेरे एक शागिर्द ने मुझे बताया कि उस ने मेरे मुतअ़ल्लिक़ एक ख़्वाब देखा और जामेए़ अ़म्र में लोगों को वा'ज़ो नसीहत करने वाले हज़रते शैख़ सालेह मुहिब्बुद्दीन फ़य्यूमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से वोह ख़्वाब बयान किया तो उन्हों ने येह ता'बीर इरशाद फ़रमाई : जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की किताबें उन के विसाल से पहले पहले मशरिक़ो मग़रिब में फैल जाएंगी।(1) आप तस्नीफ़ो तालीफ़ की रफ़्तार में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक बड़ी निशानी थे चुनान्चे, आप के शागिर्द अ़ल्लामा शम्सुद्दीन दावूदी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने उस्ताज़े मोह़तरम को देखा है कि आप एक दिन में तीन तीन कापियां लिखते थे और इस के साथ साथ ह़दीस शरीफ़ का इम्ला कराते और सुवालात के जवाबात भी इरशाद फ़रमाते थे।(2) आप की 18 किताबें ऐसी हैं जिन के मुतअ़ल्लिक़ आप ने फ़रमाया : मेरे इ़ल्म के मुत़ाबिक़ इन जैसी किताबें दुन्या में किसी ने नहीं लिखीं और मौजूदा दौर में भी कोई ऐसी किताब नहीं लिख सकता।"(3) आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की कुछ तसानीफ़ दर्जे ज़ैल हैं।

किताबों के नाम

तफ़्सीर व उ़लूमे क़ुरआन :-

الاتقان فی علوم القراٰن، الدر المنثور فی التفسیر الماثور، ترجمان القراٰن فی التفسیر،

اسرار التنزیل یسمی قطف الازھار فی کشف الاسرار، لباب النقول فی اسباب النزول، مفحمات الاقران

فی مبھمات القراٰن، المھذب فیما وقع فی القراٰن من المعرب، الاکلیل فی استنباط التنزیل، تکملۃ تفسیر

الشیخ جلال الدین المحلی، التحبیر فی علوم التفسیر، حاشیۃ علی تفسیر البیضاوی، تناسق الدرر فی

تناسب السور، مراصد المطالع فی تناسب المقاطع والمطالع، مجمع البحرین ومطلع البدرین فی التفسیر،

مفاتیح الغیب فی التفسیر، شرح الاستعاذۃ والبسملۃ، شرح الشاطبیۃ، الالفیۃ فی القراءات العشر۔

---

1 ... التحدث بنعمة الله، ص ۱۵۵

2 ... الکواکب السائرة، ۱/۲۲۸، ۲۲۹، رقم: ۴۶۱، عبد الرحمن بن ابی بکر الاسیوطی

3 ... التحدث بنعمة الله، ص ۱۰۵

हदीस व उसूले हदीस : التوشیح علی الجامع الصحیح، الدیباج علی صحیح مسلم بن الحجاج، مرقاۃ الصعود الی سنن ابی داود، شرح ابن ماجه، تدریب الراوی فی شرح تقریب النووی، شرح الفیة العراق، التهذیب فی الزوائد علی التقریب، عین الاصابة فی معرفة الصحابة، کشف التلبیس عن قلب اهل التدلیس، توضیح المدرك فی تصحیح المستدرك، اللآلی المصنوعة فی الاحادیث الموضوعة، النکت البدیعات علی موضوعات، الذیل علی القول المسدد، القول الحسن فی الذب عن السنن، لب اللباب فی تحریر الانساب، تقریب العزیب، المدرج الی المدرج، تحفة النابه بتلخیص المتشابه، الروض المکلل والورد المعلل فی المصطلح، منتهی الأمال فی شرح حدیث انما الاعمال، المعجزات والخصائص النبویة، شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور، ما وراء الواعون فی اخبار الطاعون، فضل موت الاولاد، خصائص یوم الجمعة، تمهید الفرش فی الخصال الموجبة لظل العرش، بزوغ الهلال فی الخصال الموجبة للظلال، مفتاح الجنة فی الاعتصام بالسنة، القول المختار فی الماثور من الدعوات والاذکار، اذکار الاذکار، الطب النبوی، کشف الصلصلة عن وصف الزلزلة، الفوائد الکامنة فی ایمان السیدۃ آمنة ویسمی ایضًا التعظیم والمنة فی ان ابوی النبی صلی الله علیه وسلم فی الجنة، المسلسلات الکبری، جیاد المسلسلات، ابواب السعادۃ فی اسباب الشهادۃ، اخبار الملائکة، الثغور الباسمة فی مناقب السیدۃ آمنة، مناهل الصفا فی تخریج احادیث الشفا۔

फ़िक़्ह व इल्मे फ़राइज़ :-

الازهار الغضة فی حواشی الروضة، الحواشی الصغری، مختصر الروضة یسمی القنیة، مختصر التنبیه یسمی الوافی، شرح التنبیه، نظم الروضة یسمی الخلاصة، شرحه یسمی رفع الخصاصة، الورقات المقدمة، شرح الروض، حاشیة علی القطعة للاسنوی، العذب المسلسل فی تصحیح الخلاف المرسل، الینبوع فیما زاد علی الروضة من الفروع، مختصر الخادم یسمی تصحین الخادم، تشنیف الاسماع بمسائل الاجماع، شرح التدریب، الکافی، زوائد المهذب علی الوافی، الجامع فی الفرائض، شرح الرحبیّة فی الفرائض۔

उ़लूमे अ़रबिय्या : الفریدۃ فی النحو والتصریف والخط، الفتح القریب علی مغنی اللبیب، شرح شواھد المغنی، جمع الجوامع وشرحہ ھمع الھوامع، شرح الملحۃ، مختصر الملحۃ، مختصر الالفیۃ ودقائقھا، الاخبار المرویۃ فی سبب وضع العربیۃ، المصاعد العلیۃ فی القواعد النحویۃ، الاقتراح فی اصول النحو وجدلہ، رفع السنۃ فی نصب الزنۃ، الشمعۃ المضیئۃ، شرح کافیۃ ابن مالک، در التاج فی اعراب مشکل المنھاج، مسالۃ ضربی زیداً قائماً، السلسلۃ الموشحۃ، الشھد، شذ العرف فی اثبات المعنی للحرف، التوشیح علی التوضیح، السیف الصقیل فی حواشی ابن عقیل، حاشیۃ علی شرح الشذور، شرح القصیدۃ الکافیۃ فی التصریف، قطر الندا فی ورود الھمزۃ للندا، شرح تصریف العزی، شرح ضروری التصریف لابن مالک، تعریف الاعجم بحروف المعجم، نکت علی شرح الشواھد للعینی۔

उसूलो बयान :- شرح لمعۃ الاشراق فی الاشتقاق، الکوکب الساطع فی نظم جمع الجوامع، شرح الکوکب الوقاد فی الاعتقاد، نکت علی التلخیص یسمی الافصاح، عقود الجمان فی المعانی والبیان، شرح ابیات تلخیص المفتاح، مختصرہ، نکت علی حاشیۃ المطول لابن الفنری، حاشیۃ علی المختصر، البدیعیۃ، الجمع والتفریق فی الانواع البدیعیۃ۔

तसव्वुफ़ो त़रीक़त : تایید الحقیقۃ العلیۃ وتشیید الطریقۃ الشاذلیۃ، تشیید الارکان فی لیس فی الامکان ابدع مما کان، درج المعالی فی نصرۃ الغزالی علی المنکر المتغالی، الخبر الدال علی وجود القطب والاوتاد والنجباء والابدال، مختصر الاحیاء، المعانی الدقیقۃ فی ادراک الحقیقۃ۔

तारीख़ो अदब : طبقات الحفاظ، طبقات النحاۃ، طبقات شعراء العرب، تاریخ الخلفاء، تاریخ مصر، تاریخ سیوط، ترجمۃ النووی، ترجمۃ البلقینی، الملتقط من الدرر الکامنۃ، تاریخ العمر، رفع الباس عن بنی العباس، درر الکلم وغرر الحکم، دیوان خطب، دیوان شعر، المقامات، الرحلۃ الفیومیۃ، الرحلۃ المکیۃ، الرحلۃ الدمیاطیۃ، الرسائل الی معرفۃ الاوائل، مختصر معجم البلدان، یاقوت الشماریخ فی علم التاریخ، الجمانۃ، رسالۃ فی تفسیر الفاظ متداولۃ، مقاطع الحجاز، نور الحدیقۃ من نظم القول، المجمل فی الرد علی المھمل، المنی فی الکنی، فضل الشتاء، مختصر تھذیب الاسماء للنووی، الاجوبۃ الزکیۃ عن الالغاز السبکیۃ، رفع شان الحبشان، احاسن الاقباس فی محاسن الاقتباس، تحفۃ المذاکر فی المنتقی من تاریخ ابن عساکر، شرح بانت سعاد، تحفۃ الظرفاء باسماء الخلفاء، قصیدۃ رائیۃ، مختصر شفاء الغلیل فی ذم الصاحب والخلیل[1]۔

---

[1]... حسن المحاضرۃ، ۱/ ۲۹۱، ۲۹۴

बारगाहे रिसालत में मक्बूलिय्यत

“शैख़ुल हदीस” का लक़ब अ़ता हुवा

इमाम जलालुद्दीन सुयूती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो मैं ने ह़दीस में अपनी किताब “جَمْعُ الْجَوَامِع” का ज़िक्र किया और अ़र्ज़ की : क्या मैं इस में से कुछ आप के सामने पढ़ूं ? इरशाद फ़रमाया : सुनाओ शैख़ुल ह़दीस। फ़रमाते हैं : आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुझे शैख़ुल ह़दीस कहना येह ऐसी बिशारत है जो मेरे नज़दीक दुन्या व माफ़ीहा से बड़ी है।[1]

जन्नती होने की बिशारत

इमाम जलालुद्दीन सुयूती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى के शागिर्दे रशीद अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर शाज़िली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى अपने उस्ताद से नक़्ल करते हैं कि उन्हों ने मुझे बताया : मैं ने जागते हुवे रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तो आप ने मुझे “ऐ शैख़ुल ह़दीस” कह कर पुकारा। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मैं अह्ले जन्नत से हूं ? इरशाद फ़रमाया : हां। मैं ने अ़र्ज़ की : क्या बिग़ैर किसी इ़ताब के ? इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे लिये ऐसा ही है।”[2]

बेदारी में 75 मरतबा ज़ियारते रसूल

अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर शाज़िली عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : मैं ने अपने उस्ताद से अ़र्ज़ की : आप को बेदारी में कितनी बार ज़ियारत नसीब हुई है ? फ़रमाया : 70 से ज़ियादा मरतबा।[3]

---

1 ...النور السافر، ص ٩١

2 ...الكواكب السائرة، ١/٢٢٩، رقم: ٤٦١، عبد الرحمن بن ابي بكر الاسيوطي

3 ...الكواكب السائرة، ١/٢٢٩، رقم: ٤٦١، عبد الرحمن بن ابي بكر الاسيوطي

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ख़ातिमे हुफ़्फ़ाज़िल ह़दीस इमामे जलील जलालुल मिल्लत वद्दीन सुयूत़ी قدس سره العزيز 75 बार बेदारी में जमाले जहां आराए हुज़ूरे पुरनूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बहरा वर हुवे। बिलमुशाफ़ा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तह़क़ीक़ाते ह़दीस की दौलत पाई। बहुत अह़ादीस की, कि त़रीक़ए मुह़द्दिसीन पर ज़ईफ़ ठहर चुकी थीं तस्ह़ीह़ फ़रमाई जिस का बयान आ़रिफ़े रब्बानी इमामुल अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي की मीज़ानुश्शरीअ़तिल कुब्रा में है।(1)

अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی बयान करते हैं कि अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के पास एक शख़्स ने ख़त़ लिखा कि सुल्त़ान क़ाइतबाई से मेरी सिफ़ारिश कर दीजिये तो आप ने जवाब में उस को लिखा : ऐ मेरे भाई ! मैं इस वक़्त तक बेदारी की ह़ालत में 75 मरतबा रसूले पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो चुका हूं। अगर मुझे ख़ौफ़ न होता कि हुक्काम से मुलाक़ात के सबब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मह़रूम हो जाऊंगा तो तेरी सिफ़ारिश के लिये सुल्त़ान के पास ज़रूर जाता।(2)

कश्फ़ व करामात

चन्द लम्हों में मक्कए मुअ़ज़्ज़मा

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के ख़ादिमे ख़ास ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली ह़ब्बाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب बयान करते हैं कि एक रोज़ क़ैलूला के वक़्त जब कि आप मिस्र के अ़लाक़े क़राफ़ा में शैख़ अ़ब्दुल्लाह जुयूशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی की ख़ानक़ाह में मौजूद थे, फ़रमाया : अगर तुम मेरे मरने से पहले इस राज़ को ज़ाहिर न करो तो आज अ़स्र की नमाज़ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में पढ़ने का इरादा है। मैं ने अ़र्ज़ की : ठीक है। आप ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया : आंखें बन्द कर लो। मैं ने आंखें बन्द कर लीं तो आप ने मेरा हाथ पकड़ कर तक़रीबन 27 क़दम चल कर फ़रमाया : अब आंखें खोल दो। आंखें खोलीं तो हम बाबे मुअ़ल्ला पर थे और

---

(1) ... فتاوی رضویہ، ۵/ ۴۹۳ بحوالہ میزان الکبری للشعرانی، فصل فی استحالۃ خروج شیء من اقوال المجتھدین عن الشریعۃ، ۱/ ۵۵

(2) ... میزان الکبری للشعرانی، فصل فی استحالۃ خروج شیء من اقوال المجتھدین عن الشریعۃ ۱/ ۵۵

हम ने वहां उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़्यान बिन उ़यैना (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) वग़ैरा के मज़ारात की ज़ियारत की फिर हम ह़रम में दाख़िल हुवे, त़वाफ़ किया, ज़म ज़म शरीफ़ पिया और मक़ामे इब्राहीम के पीछे बैठ गए ह़त्ता कि हम ने वहां अ़स्र की नमाज़ अदा की फिर आप ने मुझ से फ़रमाया : येह तअ़ज्जुब न करो कि हमारे लिये ज़मीन समेट दी गई बल्कि येह तअ़ज्जुब करो कि यहां मिस्र के बहुत से मुजाविर मौजूद हैं मगर उन्हों ने हमें पहचाना नहीं । फिर फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो साथ चलो वरना ह़ाजियों के साथ आ जाना । मैं ने अ़र्ज़ की : मैं आप के साथ ही चलूंगा । हम बाबे मुअ़ल्ला तक गए फिर आप ने मुझ से फ़रमाया : आंखें बन्द कर लो । मैं ने अपनी आंखें बन्द कर लीं तो वोह मुझे सात क़दम ले कर तेज़ चले और कहा : अपनी आंखें खोल लो । मैं ने आंखें खोलीं तो हम ख़ानक़ाहे जुयूशी के क़रीब मौजूद थे ।(1)

गुस्ताख़ों का बुरा अन्जाम

जिस दौरान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ख़ानक़ाहे बीबरसिय्या में शैख़ुस्सूफ़िया के मन्सब पर फ़ाइज़ थे तो वहां लोगों को माले वक़्फ़ में ग़ैर शरई उमूर का मुर्तकिब देखा, लिहाज़ा आप ने उन्हें अम्र बिल मा'रूफ़ किया और इन बातों से रोका तो उन्हों ने नाराज़ हो कर यकबारगी आप पर ह़म्ला कर दिया, आप को ज़दो कोब किया और कपड़ों समेत वुज़ू की जगह फैंक दिया । इस वाक़िए़ के बा'द आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने शैख़ुस्सूफ़िया के मन्सब से ख़ुद को अ़लाह़िदा कर के मिस्र में न रहने का ह़ल्फ़ उठा लिया और तादमे ह़यात मिक़्यासुन्नील के रौज़े में इक़ामत इख़्तियार कर ली । वक़्ते विसाल जब जामेअ़ अज़्हर के नेक ख़त़ीब शैख़ शुऐ़ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने तक्लीफ़ देने वालों को मुआ़फ़ करने के मुतअ़ल्लिक़ अ़ल्लामा सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى से अ़र्ज़ की तो फ़रमाया : मेरे भाई ! मैं ने तो उन्हें उसी वक़्त मुआ़फ़ कर दिया था जब उन्हों ने मेरी ह़क़ तलफ़ी की थी ।

अ़ल्लामा शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के मुआ़फ़ करने के बा वुजूद आप को तक्लीफ़ व अज़िय्यत पहुंचाने वाले क़ाबिले नफ़रत बन गए, लोग उन से बदज़न हो

---

(1)...الكواكب السائرة، ۱/ ۲۲۹، رقم: ۴۶۱، عبد الرحمن بن ابي بكر الاسيوطي، شذرات الذهب، ۸/ ۸۹

गए, उन्हें अपने इ़ल्म से नफ़्अ़ उठाना नसीब न हुवा, बा'ज़ ह़राम खाने में मुब्तला हुवे और बा'ज़ उ़लमा व औलिया की तरदीद जैसे बुरे फे़'ल में गिरिफ़्तार हुवे यहां तक कि उन पर बद बख़्ती की अ़लामतें ज़ाहिर हो गईं। मैं ने उन में से एक शख़्स को देखा जिस ने खुद इक़रार किया था कि मैं ने अपनी चप्पल शैख़ के कन्धे पर मारी थी। देखा कि उस का ह़ाल बहुत बुरा है और ग़ुर्बतो इफ़्लास के बा वुजूद नफ़्सानी ख़्वाहिशात से मग़लूब हो कर ह़राम खाने में पड़ा हुवा है। वोह इस ताक में लगा रहता कि किसी के पास मुर्ग़, चावल, शकर या शहद वग़ैरा नज़र आ जाए। चुनान्चे, जब किसी ऐसे को देखता तो उस से कहता : येह मेरे हाथ बेच दो। फिर उसे अपने घर ले जाता और खा पी कर छुप जाता और सामान का मालिक काफ़ी देर इन्तिज़ार करता और थक हार कर चला जाता और यूं क़ियामत के लिये अपने ज़िम्मे में लोगों का ह़क़ बढ़ाता रहता। जब येह मरा तो कोई भी इस के जनाज़े के साथ न गया।"[1]

मुस्तक़्बिल की ख़बरें

इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی बयान करते हैं : एक शख़्स ने मुझे येह वाक़िआ़ सुनाया कि जब हम इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی को तक्लीफ़ पहुंचाने से बेबस हो गए तो हम दस आदमी इकठ्ठे हो कर आप के पास आए और कहा : हम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस्तिख़ारा किया है कि हम आप से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करेंगे हो सकता है हमें भी कोई भलाई ह़ासिल हो जाए। हम एक साल तक आप से इ़ल्मे दीन ह़ासिल करते रहे मगर आप हम से मोह़तात़ ही रहते। साल गुज़रने के बा'द कुछ लोगों ने आप को सताया तो हम आप की हिमायत में खड़े हो गए और हम ने आप से शदीद मह़ब्बत का इज़्हार किया जिस के सबब आप का हमारी त़रफ़ झुकाव हो गया। एक दिन हम ने आप से अ़र्ज़ की : सय्यिदी ! بِحَمْدِ اللّٰه आप साह़िबे कश्फ़ हैं। हमारा मक़्सद येह है कि आप हमें मुल्क के वाली वारिसों के बारे में कुछ बताएं ताकि हम मुन्किरीन और आप के मुख़ालिफ़ीन पर गिरिफ़्त करें, हो सकता है कि वोह भी हमारी त़रह़ तौबा कर लें और अपनी इस्लाह़ कर लें फिर उन्हें भलाई ह़ासिल हो जाए। येह सुन कर शैख़ कुछ देर ख़ामोश रहे फिर फ़रमाया : "सुल्त़ाने मिस्र जाने बिलात़ की 17 जमादिल ऊला इतवार के दिन गर्दन उड़ा दी जाएगी और इस

[1]...لواقح الانوار القدسية فی بيان العهود المحمدية، ص٣٠٣، الامام الحافظ جلال الدين سيوطی وجهوده فی الحديث وعلومه، ص١٦٦

के बा'द फुलां शख़्स सल्त़नत का वाली होगा।" लोगों ने इस बारे में तह़रीर ले कर जाने बिलात़ तक पहुंचा दी और मिस्र में येह बात फैल गई जिस से ममलुकत में कोहराम बपा हो गया। जाने बिलात़ कहने लगा : शैख़ को पकड़ कर मेरे पास लाओ इस से पहले कि कोई मुझे क़त्ल करे मैं उन्हें क़त्ल कर दूंगा। चुनान्चे, जाने बिलात़ के सिपाही आप की तलाश में निकले। आप 47 रोज़ रू पोश रहे ह़त्ता कि आप की पेशीनगोई के मुत़ाबिक़ सुल्त़ान जाने बिलात़ की गर्दन उड़ा दी गई और इसी त़रह़ हुवा जैसा आप ने बताया था।(1)

इमाम जामेअ़ ग़मरी ह़ज़रते शैख़ अमीनुद्दीन عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِیْن बयान करते हैं कि मुझे इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने ख़बर दी कि इब्ने उ़स्मान (या'नी सुल्त़ान सलीमे अव्वल उ़स्मानी) मरने से पहले मिस्र में ज़रूर दाख़िल होगा और येह कि वोह 923 हिजरी की इब्तिदाई तारीख़ों में दाख़िल होगा और आप ने इस के इलावा भी बहुत से कामों का वक़्ते मुक़र्रर बताया और फिर वैसा ही वुक़ूअ़ पज़ीर हुवा जैसा कि आप ने ख़बर दी थी।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : अगर आप की कोई करामत न भी होती तो तक़्दीर पर ईमान रखने वाले के लिये आप की कसीर तह़क़ीक़ी व तदक़ीक़ी किताबें ही आप की अ़ज़मत पर गवाह हैं।(3)

ता'रीफ़ी कलिमात

﴾1﴿.....क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ा शैख़ुल इस्लाम इल्मुद्दीन बुल्क़ैनी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی (मुतवफ़्फ़ा 868 हिजरी) ने इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی की ज़मानए त़ालिबे इल्मी में लिखी हुई दो किताबें "شَرْحُ الِاسْتِعَاذَةِ وَالْبَسْمَلَة" और "شَرْحُ الْحَيْعَلَةِ وَالْحَوْقَلَة" देखीं तो उन की ता'रीफ़ फ़रमाई और उन पर तक़रीज़ भी लिखी जिस का ख़ुलासा येह है : "मैं ने इन दो किताबों को कसीर फ़वाइद पर मुश्तमिल पाया और इन्हें अच्छी बातों और ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ से मुज़य्यन देखा, ह़क़ येह है कि येह दोनों किताबें ह़ज़रते मुसन्निफ़ की फ़ज़ीलत को उजागर कर रही हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुसन्निफ़ की कोशिश क़बूल फ़रमाए।"(4)

---

1 ...جامع کرامات اولیاء، ۲/ ۱۵۶

2 ...الکواکب السائرۃ، ۱/ ۲۳۰، رقم: ۴۶۱، عبد الرحمن بن ابی بکر الاسیوطی

3 ...جامع کرامات اولیاء، ۲/ ۱۵۷

4 ...التحدث بنعمة اللہ، ص ۱۳۷

﴾2﴿.....इमाम सुयूती के उस्ताद अ़ल्लामा अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मुह़म्मद तक़िय्युद्दीन शुमुन्नी ह़नफ़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡغَنِی (मुतवफ़्फ़ा 872 हिजरी) ने कई मरतबा तह़रीरी और ज़बानी त़ौर पर अपने क़ाबिले फ़ख़्र शागिर्द इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡقَوِی के उ़लूम में मुक़द्दम होने का इज़्हार फ़रमाया और आप की अ़ज़मत को सराहा ।[1]

﴾3﴿.....इमाम नजमुद्दीन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़्ज़ी शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِی (मुतवफ़्फ़ा 1061 हिजरी) इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡقَوِی का तआ़रुफ़ कराते हुवे फ़रमाते हैं : ''आप बड़े आ़लिम, इमाम, मुह़क़्क़िक़, ह़ाफ़िज़े ह़दीस और शैख़ुल इस्लाम हैं और आप की तसानीफ़ नफ़्अ़ बख़्श हैं ।''[2]

﴾4﴿.....शैख़ुस्सूफ़िया अ़ल्लामा अ़ब्दुल क़ादिर ऐ़दरूस हिन्दी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 978 हिजरी) इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡقَوِی के तआ़रुफ़ में फ़रमाते हैं : आप साह़िबे करामात हैं और बा'दे वफ़ात आप की बहुत सी करामात ज़ाहिर हुईं, आप ने 70 से ज़ाइद मरतबा बेदारी में हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार किया, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आप पर रह़मत हो ।[3]

﴾5﴿.....उ़म्दतुल मुह़क़्क़िक़ीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली क़ारी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡبَارِی (मुतवफ़्फ़ा 1014 हिजरी) फ़रमाते हैं : इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡقَوِی हमारे मशाइख़ के शैख़ हैं जिन्हों ने तफ़्सीरे मासूर को ज़िन्दा किया और तमाम मुतफ़र्रिक़ अह़ादीस को अपनी किताब जामेउ़ल अह़ादीस में जम्अ़ किया और कोई ऐसा फ़न न छोड़ा जिस में मतन या शर्ह़ न लिखी हो बल्कि बा'ज़ चीज़ें तो आप ने ख़ुद ईजाद कीं लिहाज़ा आप इस बात के मुस्तह़िक़ हैं कि आप अपने ज़माने के मुजद्दिद हों जैसा कि आप ने ख़ुद मुजद्दिद होने का दा'वा किया । आप का येह दा'वा मक़्बूलो मन्ज़ूर है और येही मेरे नज़्दीक अज़्हर है ।[4]

﴾6–7﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने इ़म्माद ह़म्बली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَلِی (मुतवफ़्फ़ा 1089 हिजरी) और फिर अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوۡرَانِی (मुतवफ़्फ़ा 971 हिजरी) ने फ़रमाया : अ़ल्लामा सुयूत़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُاللّٰهِ الۡقَوِی अपने ज़माने में रावियों, मतन, सनद और इस्तिम्बाते़ अह़काम के लिह़ाज़ से इ़ल्मे ह़दीस और उसूले ह़दीस को सब से बढ़ कर जानने वाले थे ।[5]

---

1 ...التحدث بنعمة الله، ص ٢٣٦

2 ... الكواكب السائرة، ١/٢٢٧ ملتقطاً

3 ...النور السافر، ص ٩١ دار صادر بيروت

4 ...مرقاة، ١/٥٠٧، تحت الحديث: ٢٣٧

5 ...شذرات الذهب، ٨/٨٨، فهرس الفهارس، ٢/١٠١١، رقم: ٥٧٥، السيوطی

﴾8﴿.....सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा 1340 हिजरी) ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی के लिये "फ़तावा रज़विय्या शरीफ़" में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर जो अल्क़ाबात व दुआइय्या कलिमात इस्ति'माल फ़रमाए हैं वोह येह हैं : इमामे जलील, इमामे अजल्ल, इमामे अजल्ल व अकरम, इमामे मुह़क़्क़िक़, इमामुल उम्मह, ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ वल मुह़द्दिसीन, ख़ातिमतुल हुफ़्फ़ाज़िल मुह़क़्क़िक़ीन, हाफ़िज़ुश्शरक़ वल ग़रब, जलालुल मिल्लत वद्दीन, जलालुल मिल्लत वल ह़क़, जलालुल मिल्लत वश्शरए वद्दीन, अल मौला, मौलाना, आ़लिम, आ'लम, अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सुयूत़ी قُدِّسَ سِرُّهٗ، قُدِّسَ سِرُّهُ الْمَكِيْن فَاللّٰهُ يُجْزِيْهِ الْجَزَاءَ الْجَمِيْل (अल्लाह तआ़ला उन को अज्रे जमील अ़त़ा फ़रमाए) ।"[1]

﴾9﴿.....ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़य्य लखनवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (मुतवफ़्फ़ा 1304 हिजरी) फ़रमाते हैं : मैं ने ख़ातिमुल हुफ़्फ़ाज़ अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की कसीर किताबों का मुत़ालआ़ किया तो उन्हें नादिर फ़वाइद और आ़लीशान निकात पर मुश्तमिल पाया, उन की तमाम तसानीफ़ उन के तबह़्हुर, वुस्अ़ते नज़र और दिक़्क़ते फ़िक्र की गवाही देती हैं। ह़क़ येह है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को नवीं सदी का मुजद्दिद शुमार किया जाए।[2]

﴾10﴿.....सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत के अ़रब शरीफ़ में ख़लीफ़ा सय्यिद मुह़म्मद अ़ब्दुल ह़य्य बिन अ़ब्दुल कबीर कत्तानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی (मुतवफ़्फ़ा 1382 हिजरी) फ़रमाते हैं : अ़ल्लामा सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی आख़िरी ज़माने में अह़ादीस व आसार को याद करने, मुख़्तलिफ़ उ़लूमो फ़ुनून पर मुत्त़लअ़ होने और कसरते तालीफ़ के लिह़ाज़ से इस्लामी नवादिरात में से हैं।[3]

गोशा नशीनी व विसाले बा कमाल

वफ़ात से एक अ़र्से क़ब्ल आप ने दर्सो तदरीस और फ़तवा नवेसी से किनारा कशी इख़्तियार कर ली और आख़िरी वक़्त गोशा नशीनी में इ़बादत व रियाज़त और तस्नीफ़ो तालीफ़ करते गुज़ारा। इस दौरान हुक्काम आप की ज़ियारत के लिये आते और बेश क़ीमत तह़ाइफ़ पेश करते लेकिन आप क़बूल न फ़रमाते। एक मरतबा सुल्त़ान अशरफ़ ग़ौरी ने आप की ख़िदमत में एक ग़ुलाम और एक हज़ार दीनार भेजे तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने दीनार वापस कर दिये और ग़ुलाम को आज़ाद कर के रौज़ए

1.....फ़तावा रज़विय्या, 9/233, 705, फ़तावा रज़विय्या, 21/456, फ़तावा रज़विय्या, 30/253, 269

2...التعلیق الممجد علی موطأ محمد، ۱/۱۰۲

3...فهرس الفهارس، ۲/۱۰۱۱، رقم: ۵۷۵، السیوطی

रसूल का ख़ादिम बना दिया। फिर क़ासिद के हाथ सुल्तान को पैग़ाम भेजा कि आइन्दा कोई हदया हमारे पास न आए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हमें इन तहाइफ़ व हदाया से मुस्तग़नी कर दिया है।(1)

सफ़रे आख़िरत

पैकरे इल्मो अ़मल ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى ने सात दिन तक बाईं कलाई के वरम में मुब्तला रह कर बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक 19 जुमादल ऊला 911 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 17 अक्तूबर 1505 ईसवी को दरयाए नील के किनारे वाक़ेअ़ रौज़तुल मिक़्यास में इन्तिक़ाल फ़रमाया और क़ाहिरा में बाबे क़राफ़ा के क़रीब आप की तदफ़ीन हुई। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की क़मीस मुबारक और प्याला शरीफ़ ग़ुस्ल देने वाले ने ले लिया और उस से किसी ने ह़ुसूले बरकत के लिये वोह क़मीस पांच दीनार में ख़रीद ली और एक दूसरे शख़्स ने तबर्रुक के लिये तीन दीनार में प्याला ख़रीद लिया।(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर करोड़ों रह़मतें हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

…

बेटे को नसीह़त

ह़िक्मत व दानाई के पैकर ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे को येह नसीह़त फ़रमाई : "बेटा ! तौबा में ताख़ीर न करना क्यूंकि मौत अचानक आती है।" (اِحیاءُ العُلوم (مترجم)،۴/ ۳۸)

1...الکواکب السائرۃ،۱/ ۲۲۹

2...الکواکب السائرۃ،۱/ ۲۳۱، الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ،۸۲

पहले इसे पढ़ लीजिये !

इन्सान के लिये पांच आ़लम है : आ़लमे अरवाह़, आ़लमे दुन्या, आ़लमे बरज़ख़, आ़लमे ह़श्र और आ़लमे आख़िरत (जन्नत और जहन्नम) । इन्सान के एक आ़लम से दूसरे आ़लम में मुन्तक़िल होने के अस्बाब मुक़र्रर हैं। आ़लमे अरवाह़ से आ़लमे दुन्या में आने का सबब वालिदैन, आ़लमे दुन्या से आ़लमे बरज़ख़ में जाने का सबब मौत, आ़लमे बरज़ख़ से आ़लमे ह़श्र में पहुंचने का सबब सूरे इसराफ़ील और आ़लमे ह़श्र से आ़लमे आख़िरत में मुन्तक़िल होने का सबब **ईमान या कुफ़्र** है। इन पांच में से "**बरज़ख़**" ऐसा आ़लम है जिस से पहले भी दो और बा'द में भी दो आ़लम हैं, यहां से इस की अहम्मिय्यत का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है जैसा कि बीच वाली होने के सबब **नमाज़े अ़स्र** की अहम्मिय्यत है। मरने के बा'द से मह़शर में उठने तक दरमियान का अ़र्सा बरज़ख़ कहलाता है और इन्सान को इस आ़लम में मौत ही पहुंचाती है, दुन्या में हर ह़क़ीक़त का किसी न किसी ने इन्कार किया है मगर मौत ऐसी ह़क़ीक़त है जिस का आज तक कोई इन्कार नहीं कर सका क्यूंकि मौत से किसी त़रह़ छुटकारा मुमकिन नहीं, सफ़र चाहे कितना ही त़वील हो मन्ज़िल एक दिन आ ही जाती है और सफ़रे ज़िन्दगी की मन्ज़िल "मौत" है। येह किसी को मुआ़फ़ नहीं करती, न ग़रीब की मुफ़्लिसी पर इसे रह़म आता है न अमीर की दौलत इसे ख़रीद सकती है और न ही त़ाक़तवर की त़ाक़त इस का रास्ता रोक सकती है। बड़े बड़े मालदारों को, ख़ुदाई के दा'वेदारों को, फ़िरऔ़न, क़ारून और शद्दाद जैसे ग़ुरूरो तकब्बुर के पहाड़ों को भी इस ने तख़्त नशीं से ख़ाक नशीं कर दिया, अलग़रज़ ! मौत से बचने की कोई सूरत नहीं। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِیْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِیْكُمْ (پ۲۸، الجمعۃ:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह मौत जिस से तुम भागते हो वोह तो ज़रूर तुम्हें मिलनी है।

नीज़ इरशाद फ़रमाता है :

اَیْنَ مَا تَكُوْنُوْا یُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَ لَوْ كُنْتُمْ فِیْ بُرُوْجٍ مُّشَیَّدَةٍؕ (پ۵، النساء:۷۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम जहां कहीं हो मौत तुम्हें आ लेगी अगर्चे मज़बूत़ क़ल्ओ़ं में हो।

जिस ने ज़िन्दगी का लुत़्फ़ उठाया उसे मौत का मज़ा भी चखना है, जो यहां आया है उसे एक दिन यहां से कूच भी करना है और जिस ने इस आ़लमे रंगो बू का नज़ारा किया है उसे मौत का मन्ज़र

भी देखना है क्यूंकि मौत एक जाम है जिसे हर ज़ी रूह़ ने पीना है और एक दरवाज़ा है जिस से हर ज़िन्दा को गुज़रना है। इरशादे बारी तआ़ला है :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ (پ١٧، الانبیاء:٣٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हर जान को मौत का मज़ा चखना है।*

मौत किसी भी जगह, किसी भी वक़्त और किसी भी ह़ालत में आ सकती है और ह़क़ीक़त येह है कि कोई तदबीर, त़रीक़ा, दवा और दुआ़ मौत से छुटकारा नहीं दिला सकती तो एक मुसलमान को मौत से डर कर भागने के बजाए हर वक़्त हर जगह और हर ह़ालत में इस के लिये तय्यार रहना चाहिये और वक़्त आने पर ह़ाल येह हो कि جَاءَ الْحَبِیْبُ عَلٰی فَاقَتِہٖ "या'नी मह़बूब बड़े इन्तिज़ार के बा'द आया" कहते हुवे ख़ुशी ख़ुशी मौत को गले से लगा ले। मौत की तय्यारी येह है कि बन्दा अपनी चन्द रोज़ा ज़िन्दगी को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और उस के मह़बूबे करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों के इत्तिबाअ़ में गुज़ारे। चुनान्चे,

अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : مَنِ ارْتَقَبَ الْمَوْتَ سَارَعَ فِی الْخَیْرَاتِ "या'नी जो मौत को पेशे नज़र रखता है वोह नेक कामों में जल्दी करता।"(1)

एक बार किसी ने इमामे अह्ले सुन्नत, सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن से अ़र्ज़ की : एक मरतबा (आप की जानिब से) इरशादे आ़ली हुवा था कि "मरने के लिये ख़ुशी से तय्यार रहे।" ह़ुज़ूर ! जो मुजरिम (या'नी गुनहगार) है वोह कैसे ख़ुश हो सकता है ? तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इरशाद फ़रमाया : गुनाह छोड़े, तौबा करे और ख़ुशी से मौत के लिये तय्यार रहे, येह मत़लब नहीं कि गुनाह करता रहे और मौत के लिये ख़ुश रहे ! येह कैसे हो सकता है ?(2)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जनाज़ों पर जनाज़े उठते देखने के बा वुजूद आज हमारी नेकियों से ग़फ़्लत, ख़ौफ़े ख़ुदा से मह़रूमी और फ़िक्रे आख़िरत से बे तवज्जोगी अपनी इन्तिहा को पहुंच रही है, हम दुन्या की आराइश व ज़ेबाइश में इस क़दर खोए हुवे हैं कि उमन्डती हुई अमवात हम पर कोई असर नहीं करतीं और हमें मौत से ज़रा भी नसीह़त ह़ासिल नहीं होती ह़ालांकि मौत का प्याला बड़ा ही तल्ख़ और कड़वा है, मौत सच्चा और अटल वा'दा है, मौत लज़्ज़तों को ग़ारत कर देती है, मौत आरज़ूओं की जड़ काट कर रख देती है और बिल आख़िर इन्सान को इस वसीओ़ अ़रीज़ दुन्या से

---

1 ...شعب الایمان، ٧/٣٧١، حدیث:١٠٦٢٣

2 .....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 370

उठा कर क़ब्र की तंगो तारीक कोठड़ी में पहुंचा देती है। एक त़रफ़ हमारी येह ग़फ़्लत है और दूसरी जानिब हमारे अस्लाफ़ का क़ौलो अ़मल है, वोह मौत से मुतअ़ल्लिक़ क्या ज़ेहन रखते, किस अन्दाज़ से मौत को याद करते और इस के लिये तय्यार रहते। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुतवक्किल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मुबारक अंगूठी पर येह इ़बारत कन्दा (नक़्श) थी : كَفٰی بِالْمَوْتِ وَاعِظًا يَا عُمَرُ "या'नी ऐ उ़मर ! नसीह़त के लिये मौत ही काफ़ी है।"(1)

मौत और क़ब्र को हमा वक़्त पेशे नज़र रखने के ह़वाले से सय्यिदी व मुर्शिदी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सीरत भी हमें अस्लाफ़ की याद दिलाती और मौत के लिये तय्यार रहने का जज़्बा बढ़ाती है। बयान हो या तह़रीर या फिर उ़मूमी गुफ़्तगू मौत का तज़्किरा जारी रहता है। क़ब्र की पहली रात, क़ब्र का इम्तिह़ान, मुर्दे के सदमे, मुर्दे की बे बसी, ग़फ़्लत, वीरान मह़ल और क़ब्र वालों की 25 ह़िकायात वग़ैरा आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ऐसे रसाइल व बयानात हैं जो मौत और क़ब्रो ह़श्र की याद दिलाते और फ़िक्रे आख़िरत पैदा करते हैं और अब तो कमो बेश आप की हर छोटी बड़ी तह़रीर में लफ़्ज़ "अल मौत" ज़रूर लिखा होता है जो एक त़रफ़ मौत की याद है तो दूसरी त़रफ़ एक ख़ामोश मुबल्लिग़।

मौत के बा'द क़ब्र का दुश्वार तरीन और कठिन मर्ह़ला है, इसी को **आ़लमे बरज़ख़** कहते हैं। इस नाज़ुक मर्ह़ले के तअ़ल्लुक़ से ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और सलफ़े सालिह़ीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के ख़ौफ़ो ख़शिय्यत की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हम ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह एक जनाज़े में शरीक थे तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्र के किनारे बैठ गए और इतना रोए कि मिट्टी भीग गई। फिर इरशाद फ़रमाया : इस के लिये तय्यारी करो।(2)

---

1 ...كنز العمال، كتاب الفضائل، ٦/٢٦٢، حديث: ٣٥٨١٣

2 ...ابن ماجه، ٤/٤٦٦، حديث: ٤١٩٠

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : مَنْ دَخَلَ الْقَبْرَ بِلَا زَادٍ فَكَاَنَّمَا رَكِبَ الْبَحْرَ بِلَا سَفِيْنَةٍ "या'नी जो शख़्स क़ब्र में तोशा (नेक आ'माल) के बिग़ैर दाख़िल हुवा उस की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जो समन्दर में कश्ती के बिग़ैर दाख़िल हो जाए ।"(1)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी क़ब्र पर तशरीफ़ लाते तो इस क़दर आंसू बहाते कि आप की दाढ़ी मुबारक तर हो जाती । अ़र्ज़ की गई : जन्नत व दोज़ख़ का तज़्किरा करते वक़्त आप नहीं रोते मगर क़ब्र पर बहुत रोते हैं इस की वज्ह क्या है ? फ़रमाया : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है कि आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल क़ब्र है, अगर क़ब्र वाले ने इस से नजात पाई तो बा'द का मुआ़मला इस से आसान है और अगर इस से नजात न पाई तो बा'द का मुआ़मला ज़ियादा सख़्त है ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّزَّاق का बयान है कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र बिन फ़ौरक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुवा, मुझे देख कर आप की आंखों से आंसू जारी हो गए । मैं ने कहा : اِنْ شَآءَ اللہُ تَعَالٰی یُعَافِیْكَ وَیَشْفِیْكَ "या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो वोह आप को आ़फ़िय्यत व शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाएगा ।" आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : तुम्हारा क्या ख़याल है कि मैं मौत से डर रहा हूं ? नहीं बल्कि मैं तो मौत के बा'द के अह़वाल से ख़ौफ़ज़दा हूं ।(3)

साह़िबे ख़ौफ़ो ख़शिय्यत, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

हाए ग़ाफ़िल वोह क्या जगह है जहां पांच जाते हैं चार फिरते हैं(4)
अन्धेरा घर, अकेली जां, दम घुटता, दिल उकताता खुदा को याद कर प्यारे वोह साअ़त आने वाली है(5)

---

1 ...المنبهات على الاستعداد ليوم المعاد، ص ٣

2 ...ابن ماجه، ٤/٥٠٠، حديث: ٤٢٦٧

3 ...رسالة قشيرية، باب الخوف، ص ١٦٤

4 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 100

5 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 182

मौत और बरज़ख़ के साथ बेहद व बे शुमार अह़वाल जुड़े हुवे हैं। चुनान्चे, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : हर शख़्स की उ़म्र मुक़र्रर है न इस से घटे, न बढ़े। जब वोह उ़म्र पूरी हो जाती है तो मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उस की जान निकाल लेते हैं, मौत के वक़्त मरने वाले के दाहिने, बाएं जहां तक नज़र जाती है फ़िरिश्ते ही फ़िरिश्ते दिखाई देते हैं। मुसलमान के पास रह़मत के फ़िरिश्ते, काफ़िर के पास अ़ज़ाब के। मुसलमानों की रूह़ को फ़िरिश्ते इ़ज़्ज़त के साथ ले जाते हैं और काफ़िरों की रूह़ को फ़िरिश्ते ह़क़ारत के साथ ले जाते हैं। रूह़ों के रहने के लिये मक़ामात मुक़र्रर हैं, नेकों के लिये अ़लाह़िदा और बदों के लिये अ़लाह़िदा। मगर वोह कहीं हो, जिस्म से उन का तअ़ल्लुक़ बाक़ी रहता है। इस की ईज़ा से उन को तक्लीफ़ होती है। क़ब्र पर आने वाले को देखते हैं, उस की आवाज़ सुनते हैं।[(1)]

पेशे नज़र किताब मुजद्दिदे वक़्त, इमामे अजल्ल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی (मुतवफ़्फ़ा 911 हिजरी) की मश्हूरे ज़माना किताब "شَرْحُ الصُّدُوْر بِشَرْحِ حَالِ الْمَوْتٰی وَالْقُبُوْر" (मत़बूआ़ : मर्कज़े अह्ले सुन्नत बरकाते रज़ा, गुजरात, हिन्द, शव्वालुल मुकर्रम 1423 हिजरी मुत़ाबिक़ 2003 ईसवी) का तर्जमा है। तर्जमा करने की सआ़दत "**दा'वते इस्लामी**" की इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" के शो'बे "तराजिमे कुतुब (अ़रबी से उर्दू)" के ह़िस्से में आई। किताब पर तर्जमा व तक़ाबुल, नज़रे सानी व तफ़्तीश और तख़रीज व प्रुफ़ रीडिंग वग़ैरा कामों के लिये 4 इस्लामी भाइयों ने ख़ूब कोशिश फ़रमाई है : (1) **अबू ह़सनैन मुह़म्मद आ़रिफ़ मुह़म्मद अल क़ादिरी** (2) **मुह़म्मद अमजद ख़ान अ़त्तारी मदनी** (3) **अबू वासिफ़ मुह़म्मद आसिफ़ इक़्बाल अ़त्तारी मदनी** (4) **अबू मुह़म्मद मुह़म्मद इमरान इलाही अ़त्तारी मदनी** سَلَّمَهُمُ الْغَنِی, किताब के तर्जमे की शरई तफ़्तीश "दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत" के नाइब मुफ़्ती ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद ह़स्सान अ़त्तारी मदनी زِیْدَعِلْمُهٗ ने फ़रमाई है। इस किताबे मुस्तत़ाब में मौत, रूह़, क़ब्र और क़ब्र वालों के तफ़्सीली अह़वाल बयान फ़रमाए गए हैं, मज़ामीन तरतीब वार यूं हैं : मौत की तक्लीफ़, मौत की तमन्ना व दुआ़ के अह़काम, नेकियों भरी त़वील ज़िन्दगी, मौत की फ़ज़ीलत, मौत की याद और इस की तय्यारी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न और ख़ौफ़े ख़ुदा, मौत के क़ासिद, हुस्ने ख़ातिमा की अ़लामात, नज़्अ़ और इस की सख़्ती, मरने वाले के पास कहे जाने वाले कलिमात, दुआ़एं और सूरतें, ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام और इन

1... کتاب العقائد، ص ۲۴

के मददगार फ़िरिश्ते, ब वक़्ते मौत खुश ख़बरी या बुरी ख़बर, तौबा, अरवाह़ से मुलाक़ात और सुवाल जवाब, मय्यित का लोगों की बातें सुनना और उन्हें पहचानना, जनाज़े में फ़िरिश्तों की हाज़िरी और गुफ़्तगू, वफ़ाते मोमिन पर ज़मीनो आस्मान का रोना, अपनी तख़्लीक़ वाली मिट्टी में तदफ़ीन, दफ़्नाते वक़्त की दुआएं, क़ब्र का दबाना, क़ब्र की मुर्दों से गुफ़्तगू, क़ब्र का फ़ितना और सुवालात, सुवालाते क़ब्र से अमान, मोमिन पर क़ब्र की कुशादगी, क़ब्र में पहला तोहफ़ा, मोमिन की पहली जज़ा, क़ब्र में ह़िसाब किताब, क़ब्र का अ़ज़ाब, अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दिलाने वाली चीज़ें, क़ब्र में उन्सिय्यत, नमाज़ व तिलावत, इन्आ़मात व लिबास और दीगर अह़वाल, शहीद के फ़ज़ाइल, ज़ियारते क़ुबूर, मुर्दों का ज़ाइरीन को देखना पहचानना, अरवाह़ के ठिकाने, रोज़ अपना ठिकाना देखना, ज़िन्दों के आ'माल से आगाही, रूह़ को मक़ामे इ़ज़्ज़त से रोकने वाली चीज़ें, वसिय्यत करना, ख़्वाब में ज़िन्दा व मुर्दा की रूहों की बाहमी मुलाक़ात, नींद में रूह़ निकलना और सैर करना, ख़्वाब में मुर्दों का ह़ाल पूछना, मुर्दों का ख़बरें देना, मय्यित को तक्लीफ़ पहुंचाने वाली बातें, मुर्दों को बुरा कहने की मुमानअ़त, मय्यित को नौह़ा से तक्लीफ़ पहुंचना, क़ब्रे मोमिन पर किरामन कातिबीन का ठहरना, क़ब्र में नफ़्अ़ देने वाली चीज़ें, मय्यित या क़ब्र के पास तिलावते कुरआन, मौत के अच्छे औक़ात, मुर्दे को जल्द जन्नत में ले जाने वाले आ'माल, ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और इन से मुतअ़ल्लिक़ा अफ़राद के सिवा दीगर मय्यितों का बदबूदार और जिस्म ख़राब होना वग़ैरा।

आइये ! अपनी मौत को याद रखने और क़ब्र के इम्तिहान की तय्यारी करने के लिये इस किताब का तवज्जोह के साथ मुत़ालआ़ करते हैं ताकि नज़्अ़ की सख़्तियों और रूह़ निकलने में आसानी हो, मुन्कर नकीर के सुवालात की सख़्ती और क़ब्र की गर्मी से ह़िफ़ाज़त हो और हमारी मौत क़ाबिले रश्क और लह़द जन्नत का बाग़ बन जाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के तुफ़ैल जां कनी के वक़्त हमारी ज़बान पर कलिमए त़य्यिब "لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه" को जारी फ़रमाए, हमारी क़ब्र को नूर वाले आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़े रौशन से मुनव्वर कर दे और हमें क़ब्र की वह़शत व तंगी से मह़फ़ूज़ रखे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब (मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

ख़ुत़बतुल किताब

तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने जिसे चाहा ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार किया और जिस की मुलाक़ात पसन्द फ़रमाई उसे आ'ला इ़ल्लिय्यीन की त़रफ़ बुलन्द किया और उस से गुनाहों के सारे बोझ उतार दिये, मैं लिबासे ख़ुलूस में मल्बूस हो कर गवाही देता हूं कि ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर के सिवा कोई लाइक़े इ़बादत नहीं और मैं गवाही देता हूं कि बेशक हमारे सरदार अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूले बरह़क़ हैं जो बुज़ुर्ग तरीन दीन के साथ भेजे गए और मुअ़ज़्ज़ज़ तरीन दोस्ती के साथ सरफ़राज़ किये गए उन पर और उन की औलाद व अस्ह़ाब पर जो जलीलुल क़द्र सरदाराने उम्मत हैं, दुरूदो सलाम हो।

येह वोह शाफ़ी किताब है जिस का मौज़ूअ़ इ़ल्मे बरज़ख़ है और लोगों को बड़ी शिद्दत से इस का इन्तिज़ार था, मैं इस में दर्जे ज़ैल चीज़ों का ज़िक्र करूंगा :

मौत और इस की फ़ज़ीलत व कैफ़िय्यत, मलकुत मौत और इन के मुआ़विनीन का ह़ाल, वक़्ते नज़्अ़ मय्यित के अह़वाल, जिस्म से जुदाई के बा'द रूह़ की ह़ालत, बारगाहे इलाही में रूह़ का ह़ाज़िर होना, रूह़ का दीगर अरवाह़ के साथ जम्अ़ होना, रूह़ का ठिकाना, क़ब्र की ह़ालत, उस की तंगी, आज़्माइश और अ़ज़ाब का बयान और उन सब चीज़ों का तफ़्सीली तज़्किरा जो मरज़ुल मौत से ले कर सूर फूंकने तक बन्दे के लिये नफ़्अ़ बख़्श हैं।

ह़वाले के त़ौर पर अइम्मए ह़दीस पर ए'तिमाद करते हुवे कुतुबे ह़दीस से मरफ़ूअ़ अह़ादीस और मौक़ूफ़ व मक़्तूअ़ आसार पेश करूंगा। नीज़ अ़ल्लामा क़ुरत़ुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की किताब "اَلتَّذْكِرَةُ فِیْ اَحْوَالِ الْمَوْتٰی وَاُمُوْرِ الْاٰخِرَةِ" में इस उ़न्वान से जो कुछ मौजूद है वोह पूरी तन्क़ीह़ व तख़रीज के साथ मअ़ इज़ाफ़ा नक़्ल करूंगा। मैं इस मजमूए़ का नाम "شَرْحُ الصُّدُوْرِ بِشَرْحِ حَالِ الْمَوْتٰی وَالْقُبُوْرِ" रखता हूं और अगर उ़म्र ने वफ़ा की तो इस के साथ एक ऐसा बाब शामिल करूंगा जिस में अ़लामाते क़ियामत का ज़िक्र हो और दूसरा वोह बाब जिस में मौत के बा'द उठने, क़ियामत बरपा होने और जन्नत व दोज़ख़ का तफ़्सीली बयान हो[1]

ख़ुदावन्दे करीम अपने फ़ज़्लो करम से इसे पायए तक्मील तक पहुंचाए। (आमीन)

1.....ह़ज़रते मुसन्निफ़ अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی ने जिन दो अबवाब के इज़ाफ़े का इरादा किया था उसे "اَلْبُدُوْرُ السَّافِرَةُ فِیْ اُمُوْرِ الْاٰخِرَةِ" नामी किताब लिख कर पूरा फ़रमाया जिस में अ़लामाते क़ियामत, मौत के बा'द उठने, क़ियामत बरपा होने और जन्नत व दोज़ख़ का तफ़्सीली बयान है।

बरज़ख़ क्या है ?

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَمِنْ وَّرَآىِٕهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ۝۱۰۰

(پ۱۸،المؤمنون:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन के आगे एक आड़ है उस दिन तक जिस में उठाए जाएंगे।

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : इस में मरने से ले कर दोबारा उठने तक का दरमियानी ज़माना मुराद है।

• • • • • •

बाब नम्बर 1

मौत की पैदाइश

हज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی बयान करते हैं कि "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और उन की औलाद को तख़्लीक़ फ़रमाया तो फ़िरिश्ते अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : मौला ! ज़मीन इन की गुन्जाइश नहीं रखती। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : मैं इन के लिये मौत पैदा करने वाला हूं। फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की : तब तो इन के लिये ज़िन्दगी बे रौनक़ हो जाएगी। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : मैं उम्मीद को पैदा कर दूंगा।(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : जब हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ज़मीन पर उतारे गए तो रब عَزَّوَجَلَّ ने उन से इरशाद फ़रमाया : वीरान हो जाने के लिये ता'मीर करो और फ़ना होने के लिये जनते रहो।(2)

• • • • • •

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام الحسن البصری، ۸/۲۵۸، حدیث:۳۶

2 ...الزھد لابن المبارک، باب النھی عن طول الامل، ص۸۷، حدیث:۲۵۸

बाब नम्बर 2 माली या जिस्मानी मुसीबत की बिना पर मौत की तमन्ना और दुआ करने की मुमानअ़त का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई शख़्स मुसीबत आने पर मौत की तमन्ना न करे और अगर तमन्ना करनी ही हो तो यूं कहे : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब तक मेरे लिये ज़िन्दगी बेहतर है मुझे ज़िन्दा रख और जब मेरे लिये मौत बेहतर हो, मुझे मौत दे देना।(1)

मोमिन की भलाई

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई भी मौत की तमन्ना न करे और न वक़्त से पहले मरने की दुआ़ करे क्यूंकि जब कोई शख़्स मर जाता है तो उस के आ'माल का सिलसिला मुन्क़त़अ़ हो जाता है और मोमिन के लिये लम्बी उ़म्र होना भलाई है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूर मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई भी मौत की तमन्ना न करे, क्यूंकि अगर वोह नेकूकार है तो लम्बी ज़िन्दगी जीने में नेकियां ज़ियादा होंगी और अगर बदकार है तो हो सकता है नेकूकारी की त़रफ़ लौट जाए।(3)

खु़श बख़्ती की बात

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हु़ज़ूर जाने आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मौत की ख़्वाहिश मत करो क्यूंकि आख़िरत की हौलनाकी सख़्त तरीन है और येह ख़ुश बख़्ती की बात है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी को लम्बी उ़म्र अ़त़ा फ़रमाए यहां तक कि उसे तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा दे।(4)

---

1 ...مسلم، کتاب الذکر و الدعاء، باب کراھیۃ تمنی الموت لضر نزل بہ، ص ۱۴۴۰، حدیث: ۲۶۸۰

2 ...مسلم، کتاب الذکر و الدعاء، باب کراھیۃ تمنی الموت لضر نزل بہ، ص ۱۴۴۱، حدیث: ۲۶۸۲، بتغیر

3 ...بخاری، کتاب المرضی، باب تمنی المریض الموت، ۴/ ۱۳، حدیث: ۵۶۷۳

4 ...مسند امام احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، ۵/ ۸۷، حدیث: ۱۴۵۷۰، بتغیر قلیل

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : अगर मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें मौत की तमन्ना करने से मन्अ़ न किया होता तो हम ज़रूर मौत की तमन्ना करते।[1]

हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन अबू ह़ाज़िम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : हम हज़रते सय्यिदुना ख़ब्बाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़यादत के लिये ह़ाज़िर हुवे, आप को (जंग में ज़ख़्मी होने के सबब) सात जगहों से दाग़ा गया था, आप फ़रमाने लगे : अगर सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें मौत की दुआ़ मांगने से मन्अ़ न किया होता तो मैं ज़रूर मरने की दुआ़ करता।[2]

हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मौत की तमन्ना की जिसे हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सुन रहे थे, आप ने इरशाद फ़रमाया : तुम हरगिज़ मौत की तमन्ना न करो क्यूंकि अगर तुम जन्नती हो तो जीना बेहतर है और अगर जहन्नमी हो तो फिर उस की त़रफ़ जल्दी कैसी ?[3]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदां, रह़मते आ़लमिय्यां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई भी मौत की तमन्ना न करे क्यूंकि वोह नहीं जानता कि उस ने अपने लिये आगे क्या भेज रखा है।[4]

ज़िन्दगी बेहतर है

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चची उम्मुल फ़ज़्ल बयान करती हैं कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ लाए तो आप के चचा हज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बीमारी की तक्लीफ़ की वज्ह से मौत की तमन्ना की तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : चचा जान ! मौत की तमन्ना हरगिज़ न करें, अगर आप नेकूकार हैं तो ज़िन्दा रहना और अपनी नेकियों में

---

1 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی النھی عن تمنی للموت، ۲/۲۹۰، حدیث: ۹۷۲

2 ...بخاری، کتاب المرضی، باب تمنی المریض الموت، ۴/۱۳، حدیث: ۵۶۷۲

3 ...کنز العمال، کتاب الموت، الباب الاول، ۱۵/ ۲۳۶، حدیث: ۴۲۱۴۱

4 ...تاریخ بغداد، رقم: ۳۱۵۳، ابراھیم بن عبد اللہ مخزومی، ۶/ ۱۲۴

इज़ाफ़ा करते रहना आप के लिये बेहतर है और अगर गुनाहगार हैं तो जीना और नेकियों की त़रफ़ रुजूअ़ कर लेना बेहतर है, अल ग़रज़ मौत की तमन्ना हरगिज़ मत करें।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई भी मौत आने से पहले उस की तमन्ना न करे और न ही उस की दुआ़ करे मगर येह कि उसे अपने अ़मल पर भरोसा हो।(2)

बाब नम्बर 3

इताअ़ते इलाही में लम्बी ज़िन्दगी गुज़ारने की फ़ज़ीलत का बयान

बेहतरीन और बदतरीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! बेहतरीन शख़्स कौन है ? इरशाद फ़रमाया : जो लम्बी उ़म्र पाए और अच्छे अ़मल करता रहे। उस ने फिर अ़र्ज़ की : बदतरीन शख़्स कौन है ? इरशाद फ़रमाया : जो लम्बी उ़म्र पाए और गुनाहों में मश्ग़ूल रहे।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से बेहतर वोह लोग हैं जो लम्बी उ़म्र पाएं और अच्छे आ'माल करें।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में बेहतर वोह लोग हैं जो लम्बी उ़म्र पाएं और अच्छे आ'माल करें।(5)

1 ...مسند امام احمد، حدیث ام الفضل، ۱۰/۲۵۶، حدیث:۲۶۹۳۸، معجم کبیر، ۲۸/۲۵، حدیث:۴۴

2 ...مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۱۹۵، ۲۶۳، حدیث:۸۱۹۶، ۸۶۱۵

3 ...ترمذی، کتاب الزھد، باب ۲۲، ۴/۱۴۸، حدیث:۲۳۳۷

4 ...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، باب خیارکم اطولکم اعمارا، ۱/۶۵۷، حدیث:۱۲۹۵

5 ...مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۲۰، حدیث:۷۲۱۶

हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें बेहतरीन शख़्स की ख़बर न दूं ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : क्यूं नहीं या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इरशाद फ़रमाया : जो इस्लाम में लम्बी उ़म्र पाए और राहे रास्त पर रहे।(1)

हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरदारे दो जहां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमान की उ़म्र लम्बी होती है तो उस के लिये बेहतर होती है।(2)

शहीद से पहले जन्नत में जाने वाला

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि क़बीलए क़ुज़ाआ़ के दो शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर ईमान लाए, उन में एक राहे ख़ुदा में लड़ते हुवे शहीद हो गया और दूसरा साल भर ज़िन्दा रह कर फ़ौत हुवा। हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं ने बा'द में मरने वाले को शहीद से पहले जन्नत में दाख़िल होते देखा तो मुझे तअ़ज्जुब हुवा, चुनान्चे, मैं ने सुब्ह़ होते ही येह माजरा बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ कर दिया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या वोह शख़्स जो साल भर ज़िन्दा रहा उस ने शहीद के बा'द एक रमज़ान के रोज़े न रखे और छे हज़ार रक्अ़ात नमाज़ न पढ़ी और इतनी इतनी सुन्नतें ज़ाइद न पढ़ीं थीं ?(3)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक अफ़्ज़ल कौन ?

हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे इस्लाम में ज़ियादा उ़म्र दी जाए उस की तस्बीह़, तक्बीर और कलिमे की वज्ह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उस मोमिन से अफ़्ज़ल कोई नहीं।(4)

---

1 ...مجمع الزوائد، کتاب التوبۃ، باب فیمن طال عمرہ من المسلمین، ۳۳۸/۱۰، حدیث: ۱۷۵۵۰

2 ...معجم کبیر، ۵۷/۱۸، حدیث: ۱۰۴

3 ...مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۲۲۹/۳، حدیث: ۸۳۰۷، ۸۳۰۸

4 ...مسند امام احمد، مسند ابی محمد طلحۃ، ۳۴۳/۱، حدیث: ۱۴۰۱

मोमिन की ग़नीमत

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : फ़राइज़ और नमाज़ों की अदाएगी और हस्बे तौफ़ीक़ ज़िक्रुल्लाह करने की बदौलत मोमिन की हर दिन की ज़िन्दगी ग़नीमत है।[1]

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अबू अब्ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि जब मोमिन मरता है तो दुन्या में लौटने की ख़्वाहिश करता है, सिर्फ़ इस लिये कि वोह एक मरतबा तक्बीर या तस्बीह़ या कलिमा कह सके।[2]

बाब नम्बर 4

दीन में फ़ित्ने के ख़ौफ़ से मौत की तमन्ना और दुआ के जवाज़ का बयान

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ियामत से पहले वोह ज़माना आएगा कि कोई शख़्स किसी क़ब्र के पास से गुज़रेगा तो तमन्ना करेगा कि काश ! इस क़ब्र वाले की जगह मैं होता।[3]

दुआए मुस्त़फ़ा

हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ की : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاكِيْنِ وَاِذَا اَرَدْتَ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً فَاقْبِضْنِیْ اِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ "या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से अच्छे काम करने, बुरे कामों से मह़फ़ूज़ रहने और मिस्कीनों से मह़ब्बत करने का सुवाल करता हूं और जब तू अपने बन्दों को आज़माइश में डालने का इरादा फ़रमाए तो मुझे अपनी त़रफ़ बे आज़माए बुला लेना।"[4]

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، سعید بن جبیر، ۴/۳۱۰، رقم: ۵۶۲۵

2 ...تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۳۲۴، رقم: ۹۳۱، بطریق بن برید بن مسلم

3 ...موطا امام مالک، کتاب الجنائز، باب جامع الجنائز، ۱/۲۲۴، حدیث: ۵۸۱، دون قولہ: کنت

4 ...موطا امام مالک، کتاب القرآن، باب العمل فی الدعاء، ۱/۲۰۵، حدیث: ۵۱۷، مسند بزار، مسند ثوبان، ۱۰/۱۰۹، حدیث: ۴۱۷۲

दुआए फ़ारूक़ी

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने यूं दुआ़ फ़रमाई : ऐ मौला ! मेरी त़ाक़त कमज़ोर पड़ गई, उ़म्र बढ़ गई, मेरी रुइय्यत मुन्तशिर हो गई, पस तू इस ह़ाल में मुझे मौत देना कि न मैं (आ'माले सालेह़ा को) ज़ाएअ़ करने वाला होऊं न कोताही करने वाला।[1] (रावी कहते हैं :) अभी एक महीना भी न गुज़रा था कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस दुन्या से रुख़्सत हो गए।

छे चीज़ें

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़लैम किन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى कहते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्स ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ[2] के साथ मकान की छत पर मौजूद था, उन्हों ने लोगों को मरज़े त़ाऊ़न से भागते देखा तो तीन मरतबा फ़रमाया : ऐ त़ाऊ़न ! मुझे गिरिफ़्तार कर ले। मैं ने कहा : "ह़ज़रत ! ऐसा क्यूं फ़रमा रहे हैं ? क्या ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह इरशाद नहीं फ़रमाया कि तुम में से कोई भी मौत की तमन्ना न करे क्यूंकि इस की वज्ह से अ़मल मुन्क़त़अ़ हो जाता है और बन्दा दोबारा लौट नहीं सकता कि अ़मल करे।" ह़ज़रते अ़ब्स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मुझ से कहने लगे : तुम ने सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान नहीं सुना कि "तुम छे चीज़ों से पहले पहले मर जाने को तरजीह़ दो : (1) बेवुक़ूफ़ों की ह़ुकूमत से पहले (2) सिपाहियों की कसरत से पहले (3) क़ाज़ियों के बिक जाने से पहले (4) ख़ूने मुस्लिम की ना क़द्री से पहले (5) रिश्तेदारी काटने से पहले और (6) क़ुरआने करीम को गा कर पढ़ने वालों के ज़ुहूर से पहले कि वोह किसी शख़्स को आगे बढ़ाएंगे ताकि उन्हें गा कर क़ुरआन सुनाए अगर्चे वोह उन में सब से कम फ़हम हो।"[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम बिन अ़म्र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ऐ त़ाऊ़न ! मुझे पकड़ ले। किसी ने उन से अ़र्ज़ की : आप ऐसा क्यूं कहते हैं ? जब कि मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इरशाद सुन रखा है कि "तुम में से कोई भी हरगिज़ मौत की तमन्ना न करे।" उन्हों ने फ़रमाया : जो तुम

---

1 ...موطاامام مالک، کتاب الحدود، باب ماجاء فی الرجم، ۲/۳۴۴، حدیث: ۱۵۸۵

2 .....मतन में इस मक़ाम पर "अबू अ़ब्स ग़िफ़ारी" मज़कूर है जब कि दीगर कुतुब में "अ़ब्स ग़िफ़ारी" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

3 ...مسند امام احمد، مسند الکوفیین، ۵/۴۲۸، حدیث: ۱۶۰۴۰

ने सुन रखा है वोह मैं ने भी सुना हुवा है लेकिन मैं छे चीज़ों के वाक़ेअ़ होने से पहले मरना पसन्द करता हूं : (1) क़ाज़ियों के बिक जाने (2) सिपाहियों की कसरत (3) बच्चों की हुकूमत (4) ख़ूनरेज़ी (5) रिश्तेदारी काटने और (6) आख़िरी ज़माने में ज़ाहिर होने वाले उन क़ारियों से पहले जो क़ुरआने करीम को गा कर पढ़ेंगे ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन अबू फ़ज़ाला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने मौत का तज़्किरा कुछ यूं किया गोया आप मौत की तमन्ना कर रहें हैं । आप के एक रफ़ीक़ ने अ़र्ज़ की : आप हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान के बा'द मौत की तमन्ना कैसे कर सकते हैं कि "किसी के लिये भी मौत की तमन्ना करना जाइज़ नहीं चाहे गुनाहगार हो या नेकूकार क्यूंकि नेकूकार नेकियों में इज़ाफ़ा करेगा और गुनाहगार के नेकियों की त़रफ़ रुजूअ़ करने की उम्मीद है ।" आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मैं मौत की तमन्ना कैसे न करूं ह़ालांकि मैं डरता हूं कि कहीं वोह ज़माना मुझे घेर न ले जिस में गुनाह को हल्का जाना जाए, क़ाज़ी बिक जाएं, रिश्तेदारी ख़त्म कर दी जाए, सिपाहियों की कसरत हो और क़ुरआने पाक को गा कर पढ़ने वाले पैदा हो जाएं ।[2]

मौत की तमन्ना कब जाइज़ है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़बसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से कोई भी मौत की तमन्ना न करे सिवाए उस शख़्स के जिसे अपने अ़मल पर यक़ीन हो, जब तुम इस्लाम में छे बातें देखो तो मौत की तमन्ना करना और अगर तुम्हारी जान तुम्हारे क़ब्ज़े में हो तो उसे छोड़ देना (वोह छे बातें येह हैं) (1) ख़ून का ज़ाएअ़ होना (2) बच्चों की हुकूमत (3) सिपाहियों की कसरत (4) बे वुक़ूफ़ों की हुक्मरानी (5) क़ाज़ियों का बिक जाना और (6) उन लोगों का पैदा होना जो क़ुरआने पाक को गा कर पढ़ेंगे ।[3]

ख़ुरूजे दज्जाल और मोमिन की पसन्दीदा चीज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि आक़ाए दो

1...مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، باب ذکر بعض آثار القیامة، ۴/۵۵۳، حدیث: ۵۹۲۷

2...طبقات ابن سعد، ۴/۲۵۱، رقم: ۵۲۰، ابو هریرة

3...مجمع الزاوائد، کتاب التوبة، باب تمنی الموت لمن وثق...الخ، ۱۰/۳۴۴، حدیث: ۱۷۵۶۹

जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब दज्जाल निकलेगा तो मोमिन के नज़्दीक मर जाने से ज़ियादा पसन्दीदा कोई चीज़ न होगी ।(1)

सुर्ख़ सोने से ज़ियादा महबूब

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने फ़रमाया : लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा जिस में उस ज़माने के उ़लमा के नज़्दीक मौत सुर्ख़ सोने से ज़ियादा महबूब होगी ।(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़न क़रीब मर्दे मोमिन के नज़्दीक मौत शहद मिले ठन्डे पानी से ज़ियादा पसन्दीदा होगी ।(3)

काश ! इस की जगह मैं होता

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : लोगों पर एक ऐसा ज़माना ज़रूर आएगा कि जनाज़ा गुज़रेगा तो आदमी कहेगा : काश ! इस की जगह मैं होता ।(4)

हज़रते सय्यिदुना अबू सलमह बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बीमार हुवे तो मैं उन की इयादत के लिये ह़ाज़िर हुवा और वहां येह दुआ़ की : या इलाही ! अबू हुरैरा को शिफ़ा अ़ता फ़रमा । आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : बारी तआ़ला ! इस दुआ़ को क़बूल न फ़रमा । फिर फ़रमाने लगे : अबू सलमह ! लोगों पर ऐसा ज़माना आने वाला है कि मौत उन्हें सुर्ख़ सोने से ज़ियादा पसन्द होगी । ऐ अबू सलमह ! तुम्हारी ज़िन्दगी रही तो ख़ुद देख लोगे कि आदमी क़ब्र के पास आएगा तो तमन्ना करेगा : काश ! इस की जगह मैं होता ।(5)

हज़रते सय्यिदुना मुर्रह हम्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपने और अपने घरवालों के लिये मौत की तमन्ना की तो उन से अ़र्ज़

❶...حلیۃ الاولیاء، سفیان الثوری، ۷/۱۳۷، حدیث: ۹۹۲۸

❷...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۵/۳۷۰، حدیث: ۲۸۸، عن ابی ھریرۃ، بتغیر

❸...مرقاۃ المفاتیح، کتاب الفتن، باب اشراط الساعۃ، ۹/ ۳۳۹، تحت الحدیث: ۵۴۴۵، فیہ: اخرج ابو نعیم عن ابی ھریرۃ

❹...التذکرۃ للقرطبی، باب امور تکون بین یدی الساعۃ، ص ۵۸۴

❺...طبقات ابن سعد، ابو ھریرۃ، ۴/۲۵۲، رقم: ۵۲۰

की गई : घरवालों के लिये तमन्नाए मौत के साथ साथ आप ने अपनी ज़ात के लिये मौत की तमन्ना क्यूं की ? इरशाद फ़रमाया : अगर मुझे येह मा'लूम होता कि तुम लोग अपनी इसी मौजूदा हालत पर बाक़ी रहोगे तो मैं मज़ीद 20 साल तुम लोगों में ज़िन्दा रहने की तमन्ना करता ।(1)

चिड़या के मर जाने से ज़ियादा महबूब

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक दिन साइबान के नीचे अपने अहलो इ़याल के हमराह जल्वा गर थे, उस वक़्त आप के निकाह़ में अच्छे ख़ानदान की दो ह़सीनो जमील औ़रतें थीं और उन दोनों से आप के ख़ूब सूरत बच्चे भी थे, इतने में एक चिड़या आप के उपर चहचहाने लगी, उसी दौरान उस ने आप पर बीट कर दी, आप उसे अपने हाथ से साफ़ करते हुवे फ़रमाने लगे : अ़ब्दुल्लाह और उस के घरवालों का मर जाना मुझे इस चिड़या के मर जाने से ज़ियादा मह़बूब है ।(2)

हज़रते सय्यिदुना क़ैस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के बच्चे उन के सामने खेल रहे थे उन्हें देख कर आप फ़रमाने लगे : इन बच्चों का मर जाना मेरे लिये भंवरे (काले कीड़े) से भी कम हैसिय्यत रखता है ।(3)

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ऐ लोगो ! तुम्हारे शहर में एक इ़बादत गुज़ार शख़्स था, वोह मस्जिद से निकला और अपना पाउं सुवारी की रिकाब में रखा तो उस के पास हज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाए तो उस शख़्स ने कहा : ख़ुश आमदीद ! मुझे तो आप से मिलने का बहुत शौक़ था पस मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली ।(4)

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان ने फ़रमाया : मुझे इस बात से हरगिज़ ख़ुशी न होगी कि ख़ुश्की या तरी का कोई जानदार मेरी त़रफ़ से मर जाए । अगर मौत कोई ऐसी मुक़र्ररा अ़लामत होती जिस की त़रफ़ लोग दौड़ लगाते तो मुझ से आगे कोई न निकल सकता सिवाए उस शख़्स के जो मुझ से त़ाक़तवर होता ।(5)

---

1 ...شرح السنة، كتاب الجنائز، باب كراهية تمنى الموت، ۳/۱۹۷، تحت الحديث: ۱۴۴۰

2 ...حلية الاولياء، عبد الله بن مسعود، ۱/۱۸۲، رقم: ۴۲۴

3 ...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب العيال، باب الاغتباط بقلة العيال، ۸/۱۰۲، حديث: ۴۴۰

4 ...اتحاف السادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده، ۱۴/۱۴، فيه: روى المروزى عن الحسن

5 ...طبقات ابن سعد، رقم: ۳۸۵۴، خالد بن معدان الكلاعى، ۷/۳۱۲

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर मौत किसी मक़ाम पर रखी होती तो मैं उस तक पहुंचने वाला पहला शख़्स होता।(1)

नफ़्स का शर

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दु रब्बिह बिन सालेह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه हज़रते सय्यिदुना मक्हूल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मरज़े विसाल में उन की इयादत के लिये गए तो उन से कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को आ़फ़िय्यत दे। हज़रते सय्यिदुना मक्हूल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه कहने लगे : हरगिज़ नहीं, जिस ज़ात से आ़फ़िय्यत की उम्मीद है उस की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाना इन्सानी शयातीन, इब्लीस और उस के लश्कर के साथ रहने से बेहतर है।(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू मुस्हिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक शख़्स को हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ तनूख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی से कहते सुना : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को लम्बी उ़म्र दे। येह सुन कर आप गुस्से में आ गए और फ़रमाने लगे : नहीं, बल्कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे जल्द अपनी रह़मत की त़रफ़ बुला ले।(3)

हज़रते सय्यिदुना उ़बैदा बिन मुहाजिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر ने फ़रमाया : अगर येह कहा जाए कि जो उस सामने वाली लकड़ी को छूएगा वोह मर जाएगा तो मैं फ़ौरन खड़ा हो कर उस को छू लूंगा।(4)

दुन्या और शैत़ान

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह सुनाबिह़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : दुन्या फ़ितना व आज़्माइश की त़रफ़ बुलाती है और शैत़ान बुराई की त़रफ़, लिहाज़ा इन दोनों के साथ रहने के बजाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करना बेहतर है।(5)

---

1 ...حلية الاولياء، خالد بن معدان، ۵/۲۳۹، رقم: ۶۹۶۱
2 ...حلية الاولياء، مكحول الشامى، ۵/۲۰۲، رقم: ۶۸۲۶
3 ...تاريخ ابن عساكر، رقم: ۲۵۱۴، سعيد بن عبد العزيز، ۲۱/۲۰۸
4 ...حلية الاولياء، عبيد بن مهاجر، ۵/۱۸۳، رقم: ۶۷۶۹
5 ...حلية الاولياء، ابو عبد الله الصنابحى، ۵/۱۴۸، حديث: ۶۶۴۵

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मौत की तमन्ना न करते और फ़रमाते : मैं रोज़ाना इतनी इतनी नमाज़ पढ़ता हूं। हत्ता कि यज़ीद बिन अबू मुस्लिम ने आप को बुला कर आप पर सख़्तियां कीं तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे नेकों के साथ मिला दे और मुझे बुरों के साथ बाक़ी न रख।(1)

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा सुग़रा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا फ़रमाती हैं : जब किसी शख़्स का इन्तिक़ाल नेक हालत पर होता तो मेरे शौहर हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मय्यित से फ़रमाते : तुझे मुबारक हो। काश ! तेरी जगह मैं होता। इस तमन्ना पर उन की बीवी ने ए'तिराज़ किया तो उन्हों ने फ़रमाया : ऐ नासमझ औ़रत ! क्या तुम नहीं जानतीं कि ''कोई शख़्स हा़लते ईमान में सुब्ह़ करता है मगर शाम को मुनाफ़िक़ हो जाता है, उस का ईमान सल्ब कर लिया जाता है और उसे ख़बर भी नहीं होती। इसी लिये मैं नमाज़–रोज़े में गुज़रने वाली इस ज़िन्दगी के मुक़ाबले में उस मरने वाले पर रश्क करता हूं।''(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मुझे इस से कोई ख़ुशी नहीं होगी कि कोई जान हत्ता कि एक मख्खी मेरी मौत का बदला बन जाए।(3)

भलाई से ख़ाली ज़माना

हज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ब ख़ुदा ! मुझे अपनी जान से ज़ियादा किसी जान का निकलना पसन्द नहीं हत्ता कि उस उड़ने वाली मख्खी की जान निकलना भी। लोगों ने घबरा कर पूछा : क्यूं ? फ़रमाया : डरता हूं कि कहीं ऐसा ज़माना न पाऊं जिस में भलाई का हुक्म न दे सकूं और बुराई से न रोक सकूं, क्यूंकि ऐसे ज़माने में कोई भलाई नहीं।(4)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से एक शख़्स गुज़रा तो आप ने पूछा : भाई ! कहां जा रहे हो ? उस ने कहा : बाज़ार जा रहा हूं। आप ने फ़रमाया : भाई ! अगर वापस आते हुवे मेरे लिये मौत ख़रीद कर ला सको तो ज़रूर लाना।(5)

1 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۵۴۰۹، عمرو بن میمون، ۴۲۱/۴۶، سیر اعلام النبلاء، رقم: ۴۲۵، عمرو بن میمون الاودی، ۱۷۴/۵

2 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۲۲۱۵، ریاح بن الفرج، ۲۷۳/۱۸

3 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابن زبیر، ۲۰۶/۸، حدیث: ۱۰

4 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۷۹۱۸، نفیع بن الحارث، ۲۱۵/۶۲، موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۳۳۷/۵، حدیث: ۱۳۵

5 ...الزھد لھناد، باب من یستحب الموت وقلۃ المال والولد، ۳۰۷/۱، حدیث: ۵۴۴

रफ़ाईल फ़िरिश्ता

हज़रते सय्यिदुना उर्वा बिन रुवैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रिवायत करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इरबाज़ बिन सारिया رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बड़ी उम्र के सहाबी थे, मौत को पसन्द करते और येह दुआ मांगा करते थे : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्र लम्बी हो गई और हड्डी कमज़ोर हो गई अब मुझे मौत दे दे। ख़ुद फ़रमाते हैं : एक दिन मैं जामेअ़ मस्जिद दिमश्क़ में नमाज़ के बा'द मौत की दुआ मांग रहा था कि सब्ज़ लिबास में मल्बूस एक ख़ूब सूरत नौजवान ने आ कर पूछा : येह तुम क्या दुआ कर रहे हो ? मैं ने कहा : भतीजे ! तुम ही बताओ इस के इलावा क्या दुआ करूं ? तो उस ने जवाब दिया कि यूं कहो : "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अच्छे आ'माल की तौफ़ीक़ दे और लम्बी उम्र इनायत फ़रमा।" मैं ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़म फ़रमाए, तुम कौन हो ? उस ने कहा : मैं रफ़ाईल (फ़िरिश्ता) हूं जो मोमिनीन के सीनों से ग़म मिटाता है। फ़रमाते हैं : फिर मैं ने ग़ौर से देखा तो वहां कोई न था।(1)

बाब नम्बर 5 मौत की फ़ज़ीलत का बयान

मौत की ह़क़ीक़त

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : मौत बिल्कुल बे नामो निशान होने और मिट जाने का नाम नहीं बल्कि बदन के साथ रूह़ के तअ़ल्लुक़ का ख़त्म हो जाना, रूह़ व बदन के दरमियान जुदाई और एक घर (दुन्या) से दूसरे घर (बरज़ख़) में मुन्तक़िल होने का नाम मौत है।

हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد ने अपने वा'ज़ में फ़रमाया : ऐ हमेशा बाक़ी रहने वालो ! तुम ख़त्म हो जाने के लिये पैदा नहीं किये गए, तुम हमेशगी के लिये पैदा किये गए हो और तुम्हें एक घर से दूसरे घर मुन्तक़िल किया जाएगा।(2)

1...معجم كبير، عرباض بن سارية، ۱۸/۲۴۵، حديث: ۶۱۲، بياثيل بدله رفائيل
تاريخ ابن عساكر، رقم: ۴۶۷۸، عرباض بن سارية، ۴۰/۱۸۱، بتائيل بدله رفائيل

2...حلية الاولياء، بلال بن سعد، ۵/۲۶۱، رقم: ۷۰۵۵

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز ने फ़रमाया : तुम हमेशगी के लिये पैदा किये गए हो, मह्ज़ एक घर (दुन्या) से दूसरे घर (बरज़ख़) की त़रफ़ मुन्तक़िल किये जाते हो ।(1)

मोमिन का तोह़फ़ा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि पैग़म्बरे अम्नो अमान, रह़मते इन्सो जान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : تُحْفَۃُ الْمُؤْمِنِ الْمَوْتُ या'नी मौत मोमिन के लिये तोह़फ़ा है ।(2)

ख़ुश्बूदार फूल

हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : اَلْمَوْتُ رَیْحَانَۃُ الْمُؤْمِنِ या'नी मौत मोमिन के लिये ख़ुश्बूदार फूल है ।(3)

बदन की हलाकत

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मौत ग़नीमत, गुनाह मुसीबत, मोह़ताजी राह़त, मालदारी अ़ज़ाब, अ़क़्ल ख़ुदाई तोह़फ़ा, जहालत गुमराही, फ़रमां बरदारी आंखों की ठन्डक, ख़ौफ़े ख़ुदा से रोना जहन्नम से नजात, बेजा हंसना बदन की हलाकत है और गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस ने गुनाह किया ही नहीं ।(4)

इब्ने आदम की दो ना पसन्दीदा चीज़ें

हज़रते सय्यिदुना मह़मूद बिन लबीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इब्ने आदम दो चीज़ों को ना पसन्द करता है :

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، ۵/۳۲۱، رقم: ۷۲۴۸

2 ...شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، فصل فی ذکر ما فی الاوجاع، ۷/۱۷۱، حدیث: ۹۸۸۴

3 ...فردوس الاخبار، باب المیم، ۲/۳۶۳، حدیث: ۶۹۸۲

4 ...شعب الایمان، باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ، ۵/۳۸۸، حدیث: ۷۰۴۰

(1) मौत, हालांकि मौत उस के लिये फ़ितने से बेहतर है

(2) माल की कमी, हालांकि माल की कमी के सबब कल क़ियामत में हिसाब में कमी होगी।[1]

हज़रते सय्यिदुना जुरआ बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शाफ़ेए महशर, साक़िये कौसर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन्सान जीने को पसन्द करता है हालांकि मरना बेहतर है और माल की कसरत को पसन्द करता है हालांकि माल की क़िल्लत उस के हिसाब में कमी है।[2]

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो आप ने इरशाद फ़रमाया مُسْتَرِیْحٌ وَّمُسْتَرَاحٌ مِّنْہُ या'नी राहत पाने वाला है या उस से राहत पाई गई। सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस से क्या मुराद है ? इरशाद फ़रमाया : बन्दए मोमिन तकालीफ़े दुन्या से राहत पा कर रहमते ख़ुदा की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाता है और गुनाहगार व बदकार से अ़लाक़े, लोग, दरख़्त और जानवर राहत पा जाते हैं।[3]

यज़ीद बिन अबू ज़ियाद का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अबू जुहैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो उसे देख कर फ़रमाया : इस ने लोगों से राहत पाई या फिर लोगों ने इस से राहत पाई।[4]

काफ़िर की जन्नत और मोमिन का क़ैदख़ाना

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और क़हत़ है पस जब वोह दुन्या से जुदा होता है तो क़ैद और क़हत़ से नजात पा जाता है।[5]

---

1 ...مسند امام احمد، حدیث محمود بن لبید، ۹/۱۵۹، حدیث: ۲۳۶۸۶

2 ...شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ۷/۳۵۶، حدیث: ۱۰۵۷۰

3 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی مستریح ومستراح منہ، ص ۴۷۴، حدیث: ۹۵۰

4 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابن زبیر، ۸/۲۰۶، حدیث: ۱۲

5 ...مسند امام احمد، مسند عبد اللّٰہ بن عمرو بن العاص، ۲/۶۳۵، حدیث: ۶۸۷۲

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : दुन्या काफ़िर के लिये जन्नत और मोमिन के लिये क़ैदख़ाना है, मोमिन की रूह़ जब बदन से ख़ारिज हो कर दुन्या से निकलती है तो उस की मिसाल क़ैद से आज़ाद होने वाले उस शख़्स की त़रह़ है जिसे रिहा कर दिया गया हो लिहाज़ा अब वोह ज़मीन में घूमता फिरता है।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : दुन्या मोमिन का क़ैदख़ाना और काफ़िर की जन्नत है, पस जब मोमिन मरता है तो उस का रास्ता ख़ाली कर दिया जाता है और वोह जन्नत में जहां चाहे सैर करता है।(2)

मोमिन का क़ैदख़ाना, जाए अम्न और ठिकाना

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मुअ़ल्लिमे काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना, क़ब्र जाए अम्न और जन्नत उस का ठिकाना है। ऐ अबू ज़र ! दुन्या काफ़िर की जन्नत, क़ब्र उस के लिये अ़ज़ाब की जगह और जहन्नम उस का ठिकाना है।(3)

हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो जान भी रूए ज़मीन पर मरती है उस के लिये उस के रब के हां भलाई है, वोह वापस नहीं आना चाहती ख़्वाह उस को दुन्या और उस के तमाम ख़ज़ाने ही क्यूं न दे दिये जाएं सिवाए शहीद के क्यूंकि उस ने अपने रब के हां जो अज्रो सवाब देखा उस की ख़ातिर वोह येह पसन्द करता है कि वापस दुन्या में आए और दोबारा शहीद किया जाए।(4)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : दुन्या की सफ़ाई चली गई अब सिर्फ़ गदला पन बाक़ी है, लिहाज़ा अब हर मुसलमान के लिये मौत तोह़्फ़ा है।(5)

---

1 ...الزهد لابن المبارک، باب فی طلب الحلال، ص۲۱۱، حدیث:۵۹۷

2 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام عبد الله بن عمرو، ۸/۱۸۹، حدیث:۱۰
الزهد لابی داود، اخبار عبد اللّٰه بن عمرو، ص۲۵۷، حدیث:۳۰۱

3 ...حلیة الاولیاء، مالک بن انس، ۶/۳۸۹، حدیث:۹۰۳۷

4 ...معجم الاوسط، ۱/۱۲۵، حدیث:۳۹۹، مجمع الزوائد، کتاب الجهاد، باب فی ارواح الشهداء، ۵/۵۴۲، حدیث:۹۵۴۴

5 ...معجم کبیر، ۹/۱۵۴، حدیث:۸۷۷۴

तीन ना पसन्दीदा मगर बेहतरीन चीजें

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तीन ना पसन्दीदा चीजें बहुत ख़ूब हैं : (1) मौत (2) मोह़ताजी और (3) बीमारी ।(1)

हज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मोमिन के दीन को क़ब्र का गढ़ा ही बचा सकता है ।(2)

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मौत से बेहतर किसी भी ग़ाइब का मोमिन इन्तिज़ार नहीं करता ।(3)

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन मिग़्वल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि सब से पहली चीज़ जिस से मोमिन को ख़ुशी नसीब होगी वोह मौत है क्यूंकि उस वक़्त वोह बारगाहे इलाही से मिलने वाले इ़ज़्ज़तो सवाब को देखेगा ।(4)

मोमिन के लिये सब से बड़ी राहत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : لَيْسَ لِلْمُؤْمِنِ رَاحَةٌ دُوْنَ لِقَاءِ اللهِ या'नी मोमिन के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात से बढ़ कर कोई राह़त नहीं ।(5)

मौत मोमिन व काफ़िर हर एक के लिये बेहतर है

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हर मोमिन के लिये मौत बेहतर है और हर काफ़िर के लिये भी मौत बेहतर है तो कौन है जो मेरी तस्दीक़ न करे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मोमिनों के लिये फ़रमाया :

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾ (پ۴، اٰل عمرٰن:۱۹۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो **अल्लाह** के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला ।*

---

1 ...الزهد لابن المبارک، باب عن النهی عن طول الامل، ص۸۸، حدیث: ۲۶۲، قول ابی الدرداء

2 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام طاوس، ۸/۲۷۲، حدیث: ۲

3 ...الزهد لابن المبارک، باب ذکر الموت، ص۹۲، حدیث: ۲۷۳

4 ...کشف الخفاء، ۱/۲۶۶، تحت الحدیث: ۹۴۶

5 ...الزهد لابن المبارک، باب التحضیض علی طاعة اللّٰه، ص۷، حدیث: ۱۷

और कुफ़्फ़ार के लिये फ़रमाया :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْۤا اِثْمًا ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۷۸﴾

(پ۴، اٰلِ عمرٰن:۱۷۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वोह जो हम उन्हें ढील देते हैं कुछ उन के लिये भला है हम तो इसी लिये उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह में बढ़ें और उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।[1]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : हर नेक और काफ़िर जान के लिये ज़िन्दगी से मौत बेहतर है, क्यूंकि अगर वोह नेक है तो रब तआ़ला का फ़रमान है :

وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿۱۹۸﴾

(پ۴، اٰلِ عمرٰن:۱۹۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला।

और अगर काफ़िर है तो येह वईद है :

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ اِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْۤا اِثْمًا ۚ وَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۱۷۸﴾

(پ۴، اٰلِ عمرٰن:۱۷۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ काफ़िर इस गुमान में न रहें कि वोह जो हम उन्हें ढील देते हैं कुछ उन के लिये भला है हम तो इसी लिये उन्हें ढील देते हैं कि और गुनाह में बढ़ें और उन के लिये ज़िल्लत का अ़ज़ाब है।[2]

मौत, मोहताजी और बीमारी

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम मरने के लिये जनते हो, वीरान होने के लिये ता'मीर करते हो, फ़ना होने वाली (दुन्या) पर लालच करते हो और बाक़ी रहने वाली (आख़िरत) को छोड़े हुवे हो, मगर तीन ना पसन्दीदा चीज़ें बहुत बेहतरीन हैं : (1) मौत (2) मोहताजी और (3) बीमारी।[3]

---

❶...تفسیر طبری، اٰل عمران، تحت الآیۃ:۱۹۸، ۳/۵۵۸، حدیث:۸۳۷۵

❷...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابن مسعود، ۸/۱۲۲، حدیث:۵۷

❸...الزھد لابن المبارک، باب عن النھی عن طول الامل، ص۸۸، حدیث:۲۶۲

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : याद रखो ! तीन ना पसन्दीदा चीज़ें बहुत बेहतरीन हैं : (1) मौत (2) मोह़ताजी और (3) बीमारी ।(1)

जा'फ़र अह़मर का क़ौल है कि जिस के लिये मरने में बेहतरी नहीं उस के लिये जीने में भी बेहतरी नहीं ।(2)

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की तीन मह़बूब चीज़ें

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं फ़क़्र को अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में आ़जिज़ी के लिये पसन्द करता हूं, मौत को अपने रब तआ़ला की मुलाक़ात के लिये मह़बूब रखता हूं और बीमारी को गुनाहों का कफ़्फ़ारा होने की वज्ह से पसन्द करता हूं ।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से अ़र्ज़ की गई : आप अपने दोस्त के लिये क्या पसन्द करते हैं ? फ़रमाया : मौत । लोगों ने अ़र्ज़ की : अगर वोह न मरे तो ? फ़रमाया : उस का माल और औलाद कम हो जाए ।(4)

हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं अपने दोस्त के लिये माल के कम होने और मौत के जल्दी आने की तमन्ना करता हूं ।(5)

दोस्त का सब से अच्छा तोह़्फ़ा

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे अपने दोस्त की त़रफ़ से सलाम से अच्छा कोई तोह़्फ़ा पहुंचा न उस की जानिब से उस की मौत से अच्छी ख़बर आई ।(6)

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ तैमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल आ'ला तैमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی से अ़र्ज़ की गई : आप अपने और अपने घर में जिस से मह़ब्बत करते हैं उस के लिये क्या पसन्द करते हैं ? फ़रमाया : मौत ।(7)

---

1 ...الزھد للامام احمد، فی فضل ابی ھریرۃ، ص۱۷۸، رقم: ۸۴۷، دون قولہ: المرض

2 ...اتحاف السادۃ المتقین، کتاب ذکر الموت ومابعدہ، الباب الاول، ۱۴/ ۲۶، بحوالہ ابن ابی الدنیا

3 ...طبقات ابن سعد، رقم: ۳۶۹۷، ابو الدرداء واسمہ عویمر، ۷/ ۲۷۵

4 ...الزھد للامام احمد، زھد ابی الدرداء، ص۱۶۳، رقم: ۷۴۸

5 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام عبادۃ بن الصامت، ۸/ ۲۰۲، حدیث: ۳

6 ...الزھد للامام احمد، زھد ابی الدرداء، ص۱۶۴، رقم: ۷۵۵

7 ...اتحاف السادۃ المتقین، کتاب ذکر الموت ومابعدہ، الباب الاول، ۱۴/ ۲۷، بحوالہ ابن ابی الدنیا

हज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं दुआ़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जो लोग मुझे रसूले बरह़क़ मानते हैं उन के नज़्दीक मौत को मह़बूब बना दे ।(1)

मलकुल मौत बारगाहे ख़लील में

हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام जब हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमते सरापा अ़ज़मत में रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये ह़ाज़िर हुवे तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने उन से फ़रमाया : तुम ने कभी किसी दोस्त को दोस्त की रूह़ क़ब्ज़ करते देखा है ? येह सुन कर मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में पलट गए । ख़ुदाए रह़मान جَلَّ جَلَالُہٗ ने इरशाद फ़रमाया : तुम जा कर उन से कहो : क्या कोई दोस्त अपने दोस्त की मुलाक़ात को ना पसन्द करता है ? जब मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने आ कर येह पैग़ाम सुनाया तो हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : फ़ौरन मेरी रूह़ क़ब्ज़ कर लो ।(2)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : अगर तुम मेरी वसिय्यत याद रखो तो तुम्हें मौत से ज़ियादा हरगिज़ कोई चीज़ पसन्द न हो ।(3)

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जब हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन्हों ने फ़रमाया : मौत बड़े इन्तिज़ार के बा'द आई, इस पर ग़म करने वाला फ़लाह़ नहीं पाएगा ।(4)

हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने फ़रमाया : मौत की तमन्ना तीन क़िस्म के अफ़राद ही कर सकते हैं : (1) जिन को मौत के बा'द के ह़ालात का पता न हो

---

1 ...معجم کبیر، ۳/۲۹۷، حدیث: ۳۴۵۷

2 ...حلیۃ الاولیاء، احمد بن ابی الحواری، ۱۰/۷، رقم: ۱۴۲۹۳

3 ...معجم صغیر، ۲/۳۲، حدیث: ۸۵۷

4 ...حلیۃ الاولیاء، حذیفۃ بن الیمان، ۱/۳۵۲، رقم: ۹۲۱

(2) खुदा तआला की मुक़र्रर शुदा तक़्दीर से भागने वाला और (3) वोह खुश नसीब जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात का मुश्ताक़ हो ।[1]

मौत एक पुल है

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना ह़य्यान बिन अस्वद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد ने फ़रमाया : मौत एक पुल है जो दोस्त को दोस्त तक पहुंचाता है ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان ने फ़रमाया : जज़्ब व शौक़ की निशानी येह है कि आराम व ऐ़श के बा वुजूद मौत मह़बूब हो ।[3]

एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया : दीदारे इलाही के मुश्ताक़ों को जब मौत आती है तो विसाले मह़बूब को आंखों के सामने देख कर वोह मौत को शहद से भी ज़ियादा मीठा मह़सूस करते हैं ।[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने फ़रमाया : शौक़ सब से बुलन्द मक़ाम और बड़ा दरजा रखता है, जब कोई बन्दा उस मक़ाम पर फ़ाइज़ होता है तो वोह मौत की ताख़ीर को बुरा समझता है क्यूंकि वोह दीदारे इलाही का मुश्ताक़ और मुलाक़ाते इलाही का त़लबगार होता है ।[5]

अस्लाफ़ की चार उ़म्दा ख़स्लतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्बा ख़ौलानी[6] رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ को बताया गया कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मलिक त़ाऊ़न से भाग गया है तो आप ने "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْن" पढ़ा और फ़रमाया : मैं ने सोचा भी नहीं था कि ऐसे ज़माने तक ज़िन्दा रहूंगा जिस में ऐसी बात सुननी पड़ेगी, मैं तुम्हें गुज़रे हुवे तुम्हारे मुसलमान भाइयों की बातें बताता हूं : पहली बात तो येह है कि उन्हें खुदा तआला की मुलाक़ात शहद से भी ज़ियादा मीठी लगती थी, दूसरी येह कि वोह दुश्मनों से नहीं डरते थे ख़्वाह

1 ...التذکرۃ للقرطبی، باب النھی عن تمنی الموت...الخ، ص ۹
2 ...التذکرۃ للقرطبی، باب النھی عن تمنی الموت...الخ، ص ۱۰
3 ...رسالۃ قشیریۃ، باب الشوق، ص ۳۵۸
4 ...رسالۃ قشیریۃ، باب الشوق، ص ۳۶۰
5 ...شعب الایمان، باب فی محبۃ اللہ، ۱/ ۳۷۹، حدیث: ۴۵۸

6 .....मतन में इस मक़ाम पर "उ़त्बा ख़ौलानी" मज़कूर है जब कि दीगर कुतुब में "अबू अ़म्बा ख़ौलानी" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है ।

वोह ज़ियादा हों या कम, तीसरी येह कि वोह दुन्या की मोह्ताजी से नहीं डरते थे, उन्हें यक़ीन था कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें ज़रूर रिज़्क़ अ़ता फ़रमाएगा और चौथी येह कि जब मरज़े ताऊ़न फैलता था तो वोह भागते न थे बल्कि हर खुदाई फ़ैसले को जानो दिल से क़बूल कर लेते थे।(1)

क्या आप जन्नत को पसन्द करते हैं ?

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दे रब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه(2) ने हज़रते सय्यिदुना मक्हूल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा : क्या आप जन्नत को पसन्द करते हैं ? तो आप ने जवाब दिया : भला कौन है जो जन्नत को पसन्द न करता हो ? येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दे रब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : फिर मौत से मह़ब्बत करें क्यूंकि आप जन्नत को मरे बिग़ैर हरगिज़ नहीं देख सकते।(3)

मौत को इख़्तियार करूंगा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन यज़ीद बिन जाबिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَادِر फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू ज़करिय्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते थे : अगर मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त में 100 साल ज़िन्दा रहने और आज ही के दिन मरने का इख़्तियार दिया जाए तो मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ, उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और नेक बन्दों से मुलाक़ात के शौक़ में मौत को इख़्तियार करूंगा।(4)

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अबुल ह़वारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह नबाजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی को कहते सुना कि अगर दुन्या की इब्तिदा ही से मुझे दुन्या की ऐसी ह़लाल ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने का इख़्तियार दिया जाता जिन के बारे में बरोज़े क़ियामत सुवाल भी नहीं होगा और अभी मरने का इख़्तियार दिया जाता तो मैं अभी मरना क़बूल करता। क्या तुम उस (या'नी रब तआ़ला) की मुलाक़ात पसन्द नहीं करोगे जिस की फ़रमां बरदारी करते हो।(5)

1....الزہد لابن المبارک، باب ہوان الدنیا علی اللّٰہ، ص ۱۸۴، حدیث: ۵۲۴

2.....मतन में इस मक़ाम पर "इब्ने अ़ब्दे रब्बिह" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "अबू अ़ब्दे रब" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

3....حلیۃ الاولیاء، مکحول الشامی، ۵/۲۰۲، رقم: ۷۸۲۷

4....حلیۃ الاولیاء، عبد اللّٰہ بن ابی زکریا، ۵/۱۷۲، رقم: ۷۴۳۳

5....حلیۃ الاولیاء، سعید بن یزید، ۹/۳۲۳، رقم: ۱۴۰۱۹، بتغیر قلیل

मोमिन के गुनाहों का कफ़्फ़ारा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْمَوْتُ كَفَّارَةٌ لِّكُلِّ مُسْلِمٍ या'नी मौत हर मोमिन के लिये (गुनाहों का) कफ़्फ़ारा है।(1)

शर्हे हदीस

हज़रते सय्यिदुना इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने फ़रमाया : इस की वज्ह हालते नज़्अ़ में मुसलमान को पहुंचने वाली तकालीफ़ व मसाइब हैं(2) क्यूंकि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अगर मोमिन को कांटा या इस से भी कम तर चीज़ की तक्लीफ़ पहुंच जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के सबब उस के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाता है(3) तो अब मौत की तकालीफ़ के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है जिस का एक झटका तल्वार के 300 वार से ज़ियादा तक्लीफ़ देह होगा।

क़ाबिले रश्क कौन ?

हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मुझे उस मोमिन से बढ़ कर कभी किसी पर रश्क नहीं आया जो अपनी क़ब्र में अ़ज़ाबे इलाही से मामून और दुन्यावी तकालीफ़ से राहत में है।(4)

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू बक्र इब्ने अबी शैबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत में है कि "मोमिन के लिये क़ब्र से बेहतर कोई चीज़ नहीं क्यूंकि वोह वहां दुन्या के ग़मों से राहत पाता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से महफ़ूज़ होता है।"(5)

सब से बड़ी व अच्छी ने'मत

हज़रते सय्यिदुना हैसम बिन मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِق ने फ़रमाया : हम हज़रते सय्यिदुना ऐफ़अ़ बिन अ़ब्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ(6) के पास बातों में मशग़ूल थे, हज़रते सय्यिदुना अ़तिय्या

1...شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، فصل فی ذکر ما فی الاوجاع، ۷/۱۷۱، حدیث:۹۸۸۶

2...التذکرۃ للقرطبی، باب الموت کفارۃ لکل مسلم، ص۳۱

3...بخاری، کتاب المرضی، باب اشد الناس بلاء...الخ، ۴/۵، حدیث:۵۶۴۸

4...الزھد لابن المبارک، باب ذکر الموت، ص۹۲، حدیث:۲۷۴

5...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام مسروق، ۸/۲۱۱، حدیث:۱

6.....मतन में इस मक़ाम पर "ऐफ़अ़ बिन अ़ब्देह" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "ऐफ़अ़ बिन अ़ब्द" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

मज़्बूह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه[1] तशरीफ़ फ़रमा थे, दौराने गुफ़्तगू ने'मतों का ज़िक्र चला, लोगों ने पूछा : सब से बड़ी ने'मत वाला कौन है ? बा'ज़ ने कहा : फ़ुलां और बा'ज़ ने कहा : फ़ुलां । येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना ऐफ़अ़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कहा : ऐ अ़तिय्या ! आप क्या कहते हैं ? फ़रमाया : सब से अच्छी ने'मत वाला वोह जिस्म है जो क़ब्र में हो और अ़ज़ाबे क़ब्र से बच जाए ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़ारिब बिन दस्सार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : क्या तुम्हें मौत पसन्द है ? मैं ने कहा : नहीं । तो फ़रमाने लगे : ऐ बन्दए ख़ुदा ! मौत नाक़िस बन्दे को ना पसन्द होती है ।[3] एक रिवायत में है कि आप ने फ़रमाया : येह तुम्हारे अन्दर बहुत बड़ी ख़ामी है ।[4]

सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ'वर सुलमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى की मजलिस में कहा : ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर ने ऐसी कोई चीज़ पैदा नहीं फ़रमाई जो मुझे मौत से ज़ियादा मह़बूब हो । येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल आ'वर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर मैं भी तुम्हारी त़रह़ हो जाऊं तो येह मेरे नज़्दीक सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर है ।[5]

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मोमिन के लिये मौत दुन्या की तकालीफ़ से राह़त है अगर्चे मौत ख़ुद दर्द व तकालीफ़ वाली है ।[6]

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ज़ियाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَّاد ने कहा : एक दाना का क़ौल है कि "अ़क़्ल मन्द को मौत आ जाना, ग़ाफ़िल आ़लिम की लग़्ज़िश से ज़ियादा हल्का है ।"

---

1 .....मतन में इस मक़ाम पर "अबू अ़तिय्या मज़्बूह़" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "अ़तिय्या मज़्बूह़" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है ।

2 ...الزهد لابن المبارک، باب ذکر الموت، ص ۹۳، حدیث: ۲۷۵

3 ...الزهد لابن المبارک، باب فی طلب الحلال، ص ۲۱۲، حدیث: ۲۰۰

4 ...حلیة الاولیاء، خیثمة بن عبد الرحمن، ۴/۱۲۳، رقم: ۴۹۸۴

5 ...الزهد لابن المبارک، باب فی طلب الحلال، ص ۲۱۲، حدیث: ۲۰۱

6 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۲۸۸۵، صفوان بن سلیم، ۲۴/۱۳۳، دون قوله: کرب

इबादत गुज़ार का चैन

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं कि कहा जाता था : اَلْمَوْتُ رَاحَةُ الْعَابِدِ "या'नी मौत इबादत गुज़ार का चैन है।"(1)

बाब नम्बर 6 मौत की याद और इस की तय्यारी का बयान

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَكْثِرُوْا ذِكْرَ هَاذِمِ اللَّذَّاتِ الْمَوْتَ या'नी लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली मौत को कसरत से याद किया करो।(2)

फ़राख़ी की ज़िन्दगी गुज़ारना चाहो तो......!

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली (या'नी मौत) को कसरत से याद किया करो क्यूंकि जिस ने भी इसे तंगदस्ती में याद किया उस ने इस पर ज़िन्दगी फ़राख़ कर दी और फ़राख़ी में याद किया तो इस पर ज़िन्दगी तंग कर दी।(3)

ज़ियादा अक़्ल मन्द मोमिन कौन ?

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : कौन से मोमिन अ़क़्ल मन्द हैं ? इरशाद फ़रमाया : मौत को कसरत से याद करने और मौत के बा'द के लिये अच्छी तय्यारी करने वाले, येही लोग ज़ियादा समझदार हैं।(4)

1...كشف الخفاء، ص۲۲۶، تحت الحديث: ۹۳۶

2...ترمذی، كتاب الزهد، باب ماجاء فی ذكر الموت، ۱۳۸/۴، حديث: ۲۳۱۴

3...مسند بزار، مسند ابی حمزة، ۳۵۲/۱۳، حديث: ۶۹۸۷

4...ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر الموت، ۴۹۶/۴، حديث: ۴۲۵۹

आ़जिज़ व बेबस कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि आक़ाए दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दाना व अ़क़्ल मन्द वोह है जो अपने नफ़्स को मुत़ीअ़ व ताबे'दार बनाए और मौत के बा'द के लिये अ़मल करे और आ़जिज़ व बेबस वोह है जो नफ़्सानी ख़्वाहिश की पैरवी करे और फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर उम्मीद भी रखे ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मौत को कसरत से याद किया करो क्यूंकि वोह गुनाहों को ज़ाइल करती और दुन्या से बे रग़बती पैदा करती है, अगर तुम मौत को मालदारी में याद करोगे तो येह उसे ख़त्म कर देगी और अगर तंगदस्ती में याद करोगे तो येह तुम्हें तुम्हारी ज़िन्दगी पर राज़ी रखेगी ।(2)

लज़्ज़तों को गदला करने वाली

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक ऐसी मजलिस पर गुज़र हुवा जिस में हंसी की आवाज़ बुलन्द हो रही थी । इरशाद फ़रमाया : अपनी मजलिस में लज़्ज़तों को गदला करने वाली को मिला लो । अ़र्ज़ की गई : लज़्ज़तों को गदला करने वाली क्या है ? इरशाद फ़रमाया : मौत ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : हमें एक बुज़ुर्ग ने येह बात बताई कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को वसिय्यत की, कि ''तुम मौत को कसरत से याद किया करो वोह तुम्हें दूसरे ग़मों से आज़ाद कर देगी ।''(4)

सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की तरबिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद सुलमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی से रिवायत है कि हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब सह़ाबा में कुछ ग़फ़्लत मह़सूस करते तो उन्हें बुलन्द आवाज़ से मुख़ात़ब कर के फ़रमाते : तुम्हें मौत ज़रूर आएगी जो ख़ुश बख़्ती लाएगी या बदबख़्ती ।(5)

---

1 ...ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ۲۵، ۴/۲۰۸، حدیث:۲۴۶۷

2 ...ذکر الموت لابن ابی الدنیا، باب ذکر الموت و الاستعداد لہ، ص۸۱، حدیث:۱۴۸

3 ...ذکر الموت لابن ابی الدنیا، باب ذکر الموت و الاستعداد لہ، ص۵۵، حدیث:۹۵

4 ...المطالب العالیہ، کتاب الرقاق، باب ذکر الموت، ۷/۵۷۶، حدیث:۳۱۴۷

5 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب قصر الامل، ۳/۳۳۰، حدیث:۱۱۷

हज़रते सय्यिदुना वज़ीन बिन अ़ता رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों को मौत से ग़ाफ़िल देखते तो दरवाज़े पर तशरीफ़ ला कर उस का पट पकड़ते और तीन मरतबा हिलाते फिर फ़रमाते : ऐ लोगो ! ऐ मुसलमानो ! तुम्हारे पास यक़ीनी मौत आएगी वोह अपने साथ वोह कुछ लाएगी जो उसे लाना हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जन्नती दोस्तों जिन्हों ने जन्नत में रग़बत रखी और उस की कोशिश की उन के लिये राह़त व फ़रह़त और कसीर बरकत लाएगी, ख़बरदार ! हर कोशिश करने वाले के लिये एक इन्तिहा है और हर कोशिश करने वाले की इन्तिहा मौत है, पस कोई पहले जाता है और कोई बा'द में ।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार बिन यासिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : كَفٰى بِالْمَوْتِ وَاعِظًا या'नी नसीह़त के लिये मौत काफ़ी है ।"(2)

हर दिन रात मौत को 20 मरतबा याद करने की फ़ज़ीलत

बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या किसी को शुहदा के साथ भी उठाया जाएगा ? इरशाद फ़रमाया : हां, उस को जो दिन रात में 20 मरतबा मौत को याद करता हो ।(3)

एक आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ (پ۲۹، الملک:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *(वोह जिस ने) मौत और ज़िन्दगी पैदा की, कि तुम्हारी जांच हो तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है ।*

सुद्दी ने इस की तफ़्सीर में कहा : तुम में से कौन मौत को याद रखता है, इस के लिये बढ़ चढ़ कर तय्यारी करता है और शदीद ख़ौफ़ व डर रखता है ।(4)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने साबित رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बारगाहे रिसालत में एक शख़्स का

1...شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ۷/۳۵۲، حدیث:۱۰۵۲۹

2...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب الیقین، ۱/۳۵، حدیث:۳۱

3...التذکرۃ للقرطبی، باب ذکر الموت وفضلہ، ص ۱۲

4...شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، فصل فی الزھد، ۷/۴۰۸، حدیث:۱۰۷۸۸

ज़िक्र हुवा तो उस की ता'रीफ़ की गई, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह मौत को कैसे याद करता है ? अ़र्ज़ की गई : उस से कभी मौत का तज़्किरा सुना नहीं गया । इरशाद फ़रमाया : फिर तो वोह ऐसा नहीं जैसा तुम कह रहे हो ।[1]

मौत को याद रखने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इसी की मिस्ल मन्क़ूल है और बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : जो मौत को कसरत से याद करता है वोह तीन बातों के ज़रीए इ़ज़्ज़त पाता है : (1) तौबा की जल्द तौफ़ीक़ (2) दिल की क़नाअ़त और (3) इ़बादत में चुस्ती और जिस ने मौत को भुला दिया वोह तीन बातों में गिरिफ़्तार किया जाएगा : (1) तौबा की ताख़ीर (2) ब क़दरे ज़रूरत रिज़्क़ पर राज़ी न होना और (3) इ़बादत में सुस्ती ।[2]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल आ'ला तैमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی ने फ़रमाया : दो चीज़ों ने मेरे लिये दुन्या की लज़्ज़त ख़त्म कर दी है : (1) मौत की याद और (2) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़े होने ने ।[3]

दो चादरें और ख़ुश्बू

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا (پ۲۰، القصص:۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और दुन्या में अपना हिस्सा न भूल ।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस से मुराद कफ़न है । येह एक नसीह़त है जो इस फ़रमाने इलाही से शुरूअ़ होती है :

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۷۷﴾ (پ۲۰، القصص:۷۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो माल तुझे* ***अल्लाह*** *ने दिया है उस से आख़िरत का घर तलब कर और दुन्या में अपना हिस्सा न भूल और एह़सान कर जैसा* ***अल्लाह*** *ने तुझ पर एह़सान किया और ज़मीन में फ़साद न चाह बेशक* ***अल्लाह*** *फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता ।*

1...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب ماذکر عن نبینا فی الزھد، ۱۲۹/۸، حدیث:۲۷

2...التذکرة للقرطبی، باب ذکر الموت وفضله، ص ۱۴

3...حلیة الاولیاء، عبد الاعلی التیمی، ۱۰۲/۵، حدیث:۶۴۸۵

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे जितनी दुन्या दी है उस से जन्नत त़लब कर इस त़रह़ कि इस दुन्या को उस काम में ख़र्च कर जो जन्नत की त़रफ़ ले जाने वाला हो और येह मत भूल कि तू ने अपना सारा माल छोड़ जाना है सिवाए अपने ह़िस्से के और वोह कफ़न है, ऐसा ही एक शाइ़र ने भी कहा है :

نَصِيْبُكَ مِمَّا تَجْمَعُ الدَّهْرَ كُلَّهُ   رِدَاءَانِ تُلْوٰى فِيْهِمَا وَحُنُوْطٌ

तर्जमा : तेरी सारी ज़िन्दगी की कमाई में से तुझे लपेटी जाने वाली कफ़न की दो चादरें और ख़ुश्बू ही तेरा ह़िस्सा है।(1)

मौत को ना पसन्द रखने की वज्ह

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वज्ह है कि मैं मौत को पसन्द नहीं करता। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तेरे पास माल है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : इसे आगे भेजो क्यूंकि मोमिन का दिल अपने माल से जुड़ा रहता है और जब वोह उसे आगे भेज देता है तो उस से मिलना पसन्द करता है और अगर पीछे छोड़े रखे तो दिल भी उस के साथ पीछे रहना पसन्द करता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : नसीह़त असर अंगेज़ है और ग़फ़्लत जल्द छा जाने वाली है अलबत्ता मौत नसीह़त के लिये और ज़माना जुदाई डालने को काफ़ी है, आज हम घरों में हैं और कल क़ब्रों में होंगे।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना रजा बिन ह़ैवत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ ने फ़रमाया : बन्दा जब भी मौत को कसरत से याद करता है तो ख़ुशी और ह़सद को छोड़ देता है।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : जो मौत को ब कसरत याद करता है उस का ह़सद और उस की ख़ुशी कम हो जाती है।(5)

---

1 ...التذکرۃ للقرطبی، باب ذکر الموت وفضلہ، ص ۱۴

2 ...حلیۃ الاولیاء، عبد اللّٰہ بن عبید بن عمیر، ۳/۴۱۱، حدیث: ۴۴۵۰، ۴۴۵۱

3 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۵۴۶۴، عویمر بن زید، ۴۷/۱۹۴

4 ...الزھد للامام احمد، زھد عبید بن عمیر، ص ۳۸۵، الرقم: ۲۳۰۹

5 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی الدرداء، ۸/۱۶۷، حدیث: ۴

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत के लिये मौत ही काफ़ी है।[1]

हज़रते सय्यिदुना त़ारिक़ मुह़ारिबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : हुज़ूर सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे इरशाद फ़रमाया : اِسْتَعِدَّ لِلْمَوْتِ قَبْلَ الْمَوْتِ "या'नी मरने से पहले मौत की तय्यारी करो।"[2]

हज़रते सय्यिदुना औ़न बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स मौत को कमाह़क़्क़ुहू पहचान लेता है वोह आने वाले कल को अपनी ज़िन्दगी शुमार नहीं करता, कितने ही ऐसे हैं जिन्हों ने दिन का इस्तिक़्बाल किया मगर दिन पूरा न कर सके और कितने ही कल की तय्यारी करने वाले कल को न पहुंच सके, अगर तुम मौत और उस की मसाफ़त पर ग़ौर करो तो ज़रूर लम्बी उम्मीदों और उन के धोकों से नफ़रत करोगे।[3]

हज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : देखो कि जिस चीज़ को तुम कल आख़िरत में अपने साथ रखना पसन्द करते हो उसे आज ही आगे भेज दो और जिसे साथ रखना तुम्हें पसन्द नहीं उसे आज ही छोड़ दो।[4]

हज़रते सय्यिदुना अबू ह़ाज़िम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जिस अ़मल की वज्ह से तुझे मौत ना पसन्द हो उसे छोड़ दे फिर येह बात तुझे हरगिज़ तक्लीफ़ न देगी कि तू कब मरता है।[5]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز ने फ़रमाया : जो मौत को अपने दिल के क़रीब कर लेता है वोह अपने पास मौजूद माल को कसीर समझता है।[6]

फ़ानी चीज़ बुरी और बाक़ी महबूब

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन नूह़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते

1...شعب الایمان، باب فی الزھد وقصر الامل، ۷/۳۵۳، حدیث:۱۰۵۵۵

2...معجم کبیر، ۸/۳۱۴، حدیث:۸۱۷۴

3...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب عون بن عبد اللّٰہ، ۸/۲۲۳، حدیث:۵

4...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام الحسن البصری، ۸/۲۶۲، حدیث:۷۳

5...تاریخ ابن عساکر، رقم:۲۶۱۳، سلمۃ بن دینار، ۲۲/۴۷

6...حلیۃ الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، ۵/۳۴۹، رقم:۷۳۵۲

सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْعَزِیْز ने अपने घरवालों में से किसी को लिखा : अगर तुम दिन रात मौत को याद रखो तो हर फ़ानी चीज़ तुम्हें बुरी लगेगी और हर बाक़ी चीज़ से प्यार हो जाएगा।(1)

दिल की तवंगरी

हज़रते सय्यिदुना मुजम्मेअ़ तैमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی ने फ़रमाया : मौत की याद दिल की तवंगरी है।(2)

हज़रते सय्यिदुना शुमैत़ बिन अ़ज्लान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया : जो शख़्स मौत को हमेशा पेशे नज़र रखता है उसे दुन्या की तंगी व कुशादगी की कोई परवा नहीं होती।(3)

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : जो मौत को पहचान लेता है उस पर दुन्या के ग़म व मसाइब आसान हो जाते हैं।(4)

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : जिस ने मौत की याद दिल में बसा ली उस के नज़्दीक दुन्या हेच हो जाएगी और दुन्या की सारी मुसीबतें उस पर आसान होंगी।(5)

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जिस ने मौत की घड़ी को याद रखा।(6)

हज़रते मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : एक दाना का क़ौल है कि "दिलों में मौत की याद होना अ़मल को ज़िन्दगी देने के लिये काफ़ी है।"

क़सावते क़ल्बी कैसे दूर हो ?

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : एक ख़ातून ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में दिल की सख़्ती की शिकायत

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، عمر بن عبد العزیز، ۵/۲۹۹، رقم: ۷۱۸۵

2 ...حلیۃ الاولیاء، مجمع بن صمغان، ۵/۱۰۴، رقم: ۶۴۹۱

3 ...حلیۃ الاولیاء، شمیط بن عجلان، ۳/۱۵۳، رقم: ۳۵۱۷

4 ...حلیۃ الاولیاء، تکملۃ کعب الاحبار، ۶/۴۳، حدیث: ۷۷۲۷

5 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الموت والاستعداد لہ، ۵/۴۳۲، حدیث: ۱۲۹

6 ...حلیۃ الاولیاء، ثابت بنانی، ۲/۳۷۰، رقم: ۲۶۰۳، عن ثابت البنانی

की तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : मौत को कसरत से याद करो तुम्हारा दिल नर्म हो जाएगा।(1)

सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ऐ इब्ने आदम ! मरने के बा'द ही तुझे हक़ीक़ते हाल मा'लूम होगी।(2)

आ'माल का सन्दूक़

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : दुन्या आ'माल का सन्दूक़ है और हक़ीक़ते हाल तुझे मौत के बा'द ही मा'लूम होगी।(3)

अफ़्ज़ल इबादत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर सरवरे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या से बे रग़बती का अफ़्ज़ल त़रीक़ा मौत की याद है और अफ़्ज़ल इबादत आख़िरत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करना है, जिसे मौत की याद ने थका दिया वोह अपनी क़ब्र को जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ पाएगा।(4)

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : اَلنَّاسُ نِیَامٌ فَاِذَا مَاتُوْا انْتَبَہُوْا या'नी लोग सो रहे हैं जब मरेंगे तो जाग जाएंगे।(5)

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबुल फ़ज़्ल इराक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَاقِی ने इसी बात को शे'र की सूरत में बयान फ़रमाया है :

اِنَّمَا النَّاسُ نِیَامٌ مَّنْ یَّمُتْ   مِنْهُمْ اَزَالَ الْمَوْتُ عَنْهُ وَسَنَهُ

तर्जमा : बेशक लोग सो रहे हैं उन में से जो मर जाता है मौत उस की नींद दूर कर देती है।

हर मरने वाला पछताता है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर मरने वाला पछताता है। सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان ने

---

(1)...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ما یعین علی ذکر الموت، ۵/۴۴۲، حدیث:۱۵۶

(2)...تاریخ ابن عساکر، رقم:۲۶۱۳، سلمة بن دینار، ۲۲/۷۰

(3)...المجالسة وجواهر العلم، ۱/۱۵۰، رقم ۲۷۸

(4)...فردوس الاخبار، ۱/۲۰۸، حدیث:۱۴۴۵

(5)...مقاصد حسنة، ص۴۵۰، حدیث:۱۲۴۰

अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! उस का पछतावा क्या है ? इरशाद फ़रमाया : अगर वोह नेकूकार हो तो इस पर पछताता है कि ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां क्यूं न कीं और अगर बदकार हो तो शर्मिन्दा होता है कि बुराइयों से किनारा क्यूं न किया ?(1)

बाब नम्बर 7 मौत की याद में मददगार चीज़ों का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : زُوْرُوا الْقُبُوْرَ فَاِنَّھَا تُذَکِّرُ الْمَوْتَ या'नी क़ब्रों की ज़ियारत किया करो क्यूंकि वोह मौत की याद दिलाती हैं ।(2)

क़ब्रों की ज़ियारत आख़िरत की याद

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी कि सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :
کُنْتُ نَھَیْتُکُمْ عَنْ زِیَارَۃِ الْقُبُوْرِ فَزُوْرُوْھَا فَاِنَّھَا تُزَھِّدُ فِی الدُّنْیَا وَتُذَکِّرُ الْاٰخِرَۃَ या'नी पहले मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ़ किया था पस क़ब्रों की ज़ियारत किया करो क्यूंकि येह दुन्या से बे रग़बती पैदा करती और आख़िरत की याद दिलाती हैं ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से रोका था पस तुम उन की ज़ियारत किया करो क्यूंकि उन में नसीह़त है ।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से रोका था, सुनो ! तुम क़ब्रों

1...ترمذی، کتاب الزھد، باب ۵۹، ۴/۱۸۱، حدیث: ۲۴۱۱

2...مسلم، کتاب الجنائز، باب استئذان النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم ربہ...الخ، ص ۴۸۶، حدیث: ۹۷۶

3...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی زیارۃ القبور، ۲/۲۵۲، حدیث: ۱۵۷۱

4...مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴/۷۶، حدیث: ۱۱۳۲۹

की ज़ियारत किया करो क्यूंकि येह दिल को नर्म करती, आंखों से आंसू निकालती और आख़िरत की याद दिलाती हैं और कोई फ़ोहूश गोई मत किया करो ।[1]

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से रोका था पस तुम उन की ज़ियारत किया करो, उन की ज़ियारत तुम्हारी भलाई में इज़ाफ़ा करेगी ।[2]

बेहतरीन नसीहत

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो उन के ज़रीए तुम्हें आख़िरत की याद आएगी और मुर्दों को ग़ुस्ल दिया करो क्यूंकि बे जान जिस्म को छूना बेहतरीन नसीहत है और मुसलमानों के जनाज़े पढ़ा करो कि येह तुम्हें ग़मगीन रखेंगे और ग़मगीन शख़्स रहमते इलाही के साए में होगा जो हर नेकूकार के लिये फैला होगा ।[3]

बाब नम्बर 8 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न और ख़ौफ़ रखने का बयान

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने सरकारे दो आ़लम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को विसाले (ज़ाहिरी) से तीन दिन क़ब्ल येह फ़रमाते सुना : لَا يَمُوْتَنَّ اَحَدُكُمْ اِلَّا وَهُوَ يُحْسِنُ الظَّنَّ بِاللّٰهِ "या'नी तुम में से हर शख़्स इस हाल में दुन्या से जाए कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से नेक गुमान रखता हो ।"[4]

इसी रिवायत को हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबी दुन्या رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इज़ाफ़े के साथ नक़्ल फ़रमाया कि एक क़ौम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ बुरे गुमान का इरादा किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन से फ़रमाया :

---

1 ...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، باب زیارۃ النبی قبر امہ، ۱/۷۱۰، حدیث: ۱۴۳۳

2 ...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، باب زیارۃ النبی قبر امہ، ۱/۷۱۰، حدیث: ۱۴۳۱

3 ...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، باب الحزین فی ظل اللّٰہ، ۱/۷۱۱، حدیث: ۱۴۳۵

4 ...مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمھا، باب الامر بحسن الظن باللّٰہ، ص۱۵۳۸، حدیث: ۲۸۷۷

ذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِیْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ (پ۲۴، حٰمٓ السجدۃ:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह है तुम्हारा वोह गुमान जो तुम ने अपने रब के साथ किया और उस ने तुम्हें हलाक कर दिया तो अब रह गए हारे हुओं में।*[1]

ख़ौफ़ और उम्मीद

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक जवान के आख़िरी वक़्त में उस के सिरहाने तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : "खुद को कैसा पाते हो ?" उस ने अ़र्ज़ की : "रह़मते इलाही से पुर उम्मीद हूं लेकिन गुनाहों की वज्ह से ख़ौफ़ज़दा भी हूं। इरशाद फ़रमाया : इस मौक़अ़ पर अगर बन्दे के दिल में येह दोनों बातें जम्अ़ हो जाएं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस की उम्मीद के मुताबिक़ अ़ता फ़रमाता है और जिस से बन्दा ख़ौफ़ज़दा था उस से ह़िफ़ाज़त भी फ़रमाता है।[2]

दो अम्न और दो ख़ौफ़

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान करते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मैं अपने बन्दे पर दो ख़ौफ़ जम्अ़ न करूंगा और न ही उस पर दो अम्न जम्अ़ करूंगा। जो मुझ से दुन्या में ख़ौफ़ रखेगा मैं उसे आख़िरत में अम्न अ़ता फ़रमाऊंगा और जो दुन्या में मुझ से बे ख़ौफ़ रहा मैं उसे आख़िरत में ख़ौफ़ज़दा कर दूंगा।[3]

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : जब तुम किसी को क़रीबुल मर्ग देखो तो उसे खुशी की ख़बर दो ताकि वोह अपने रब तआ़ला से अच्छा गुमान रखते हुवे मिले और ज़िन्दगी में उसे अपने रब عَزَّوَجَلَّ से डराओ।[4]

जन्नत की क़ीमत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के

1...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب حسن الظن باللہ، ۱/۵۰، حدیث: ۴

2...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ۱۱، ۲/۲۹۶، حدیث: ۹۸۵

3...الزھد لابن مبارک، باب ما جاء فی الخشوع والخوف، ص ۵۰، حدیث: ۱۵۷، بتقدم وتاخر

4...الزھد لابن مبارک، باب بشری المؤمن عند الموت، ص ۱۴۸، حدیث: ۴۴۱

प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से हर शख़्स अपने परवरदगार عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखते हुवे मरे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न जन्नत की क़ीमत है।(1)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इस बात को पसन्द रखते थे कि वोह बन्दे को हालते नज़्अ़ में उस के अच्छे आ'माल याद दिलाएं ताकि वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखे।(2)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : उस ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! जो भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वैसा ही नवाज़ता है।(3)

हज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه बयान करते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :) मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक़ उस के साथ मुआ़मला करता हूं अब वोह जो चाहे गुमान रखे।(4)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मैं अपने बन्दे के गुमान के मुताबिक़ उस के साथ मुआ़मला करता हूं अब वोह जो चाहे गुमान रखे, अगर अच्छा रखे तो उस के लिये अच्छा और अगर बुरा रखे तो उस के लिये बुरा है।(5)

रब तआ़ला से हुस्ने ज़न का इनआ़म

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हमारे आक़ा व मौला صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें बता दूं कि कल क़ियामत में मोमिनीन को सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क्या फ़रमाएगा और मोमिनीन सब से पहले अपने

---

(1)...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۱۴۷۲، الحسن بن ھانی، ۴۰۹/۱۳

(2)...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب حسن الظن باللّٰہ، ۶۱/۱، حدیث: ۳۰

(3)...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب حسن الظن باللّٰہ، ۹۳/۱، حدیث: ۸۲

(4)...مسند امام احمد، حدیث واثلۃ بن الاسقع، ۴۲۱/۵، حدیث: ۱۶۰۱۶

(5)...مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳۴۴/۳، حدیث: ۹۰۸۷

रब عَزَّوَجَلَّ से क्या कहेंगे ? हम ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये । इरशाद फ़रमाया : रब तआ़ला मोमिनीन से इरशाद फ़रमाएगा : क्या तुम ने मुझ से मिलने को पसन्द किया ? वोह अ़र्ज़ करेंगे : ऐ हमारे रब ! हां । रब तआ़ला पूछेगा : क्यूं ? अ़र्ज़ करेंगे : हमें तेरे अ़फ़्वो दर गुज़र की उम्मीद थी । रब तआ़ला इरशाद फ़रमाएगा : तुम्हारे लिये मेरी बख़्शिश वाजिब हो गई ।(1)

हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन मुस्लिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक बन्दे की सब से ज़ियादा मह़बूब सिफ़त येह है कि बन्दा उस की मुलाक़ात को पसन्द करे ।(2)

मां से बढ़ कर मेहरबान

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दोस्त हज़रते सय्यिदुना अबू ग़ालिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं शाम गया तो क़बीलए क़ैस के एक मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स के पास ठहरा, उस का एक ना फ़रमान भतीजा था, वोह अपने भतीजे को बहुत समझाता, मारता, नेकी का हुक्म देता, बुराई से मन्अ़ करता लेकिन वोह न मानता, वोह लड़का बीमार हो गया, उस ने अपने चचा जान को बुलवाया लेकिन चचा ने जाने से इन्कार कर दिया मगर मैं उसे मजबूर कर के उस के पास ले गया, जैसे ही हम वहां पहुंचे तो उस ने भतीजे को इस त़रह़ बुरा भला कहना शुरूअ़ कर दिया कि ऐ दुश्मने ख़ुदा ! क्या तू ऐसा ऐसा नहीं और तू ने येह येह करतूत नहीं किये ? लड़के ने कहा : चचा जान ! येह तो बताइये अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरी मां के ह़वाले कर दे तो वोह मेरे साथ क्या सुलूक करेगी ? चचा कहने लगा : वोह तो तुझे यक़ीनन जन्नत में भेज देगी । नौजवान कहने लगा : ब ख़ुदा ! मेरा रब عَزَّوَجَلَّ ज़रूर बिज़्ज़रूर मुझ पर मेरी मां से ज़ियादा मेहरबान है । फिर उस का इन्तिक़ाल हो गया और चचा ने उसे दफ़्ना दिया । जब उस की क़ब्र पर ईंटें रखी जा रही थीं तो एक ईंट क़ब्र में गिर गई, चचा छलांग लगा कर पीछे हट गया, मैं ने कहा : ख़ैरिय्यत तो है ? कहने लगा : इस की क़ब्र नूर से मा'मूर और ता ह़द्दे निगाह कुशादा कर दी गई है ।(3)

---

1 ...مسند امام احمد، حدیث معاذ بن جبل، ۸/۲۴۸، حدیث:۲۲۱۳۳

2 ...الزہد لابن مبارک، باب الذی یجزع من الموت، ص ۹۴، حدیث:۲۷۹

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۵/۳۰۷، حدیث:۱۹

شعب الایمان، باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ، ۵/۴۱۷، حدیث:۷۱۱۵

हज़रते सय्यिदुना हुमैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा एक बिगड़ा हुवा भांजा था, वोह बीमार हो गया तो मेरी बहन ने मुझे बुलवाया, जब मैं वहां पहुंचा तो उस की मां (या'नी मेरी बहन) उस के सिरहाने बैठी रो रही थी, मेरा भांजा मुझ से पूछने लगा : मामूं जान ! येह क्यूं रो रही हैं ? मैं ने कहा : तुम नहीं जानते येह क्यूं रो रही हैं ? वोह बोला : क्या मेरी मां मुझ पर मेहरबान नहीं है ? मैं ने कहा : क्यूं नहीं । तो मेरा भांजा बोला : ख़ुदाए करीम मुझ पर मेरी मां से ज़ियादा रह़्मो करम फ़रमाने वाला है । फिर जब वोह मर गया तो हम ने उसे मिल कर क़ब्र में उतारा, ईंटें सीधी करते हुवे क़ब्र में अचानक नज़र पड़ी तो वोह ता ह़द्दे निगाह कुशादा कर दी गई थी, मैं ने अपने साथ वाले से कहा : क्या तुम भी वोही देख रहे हो जो मैं देख रहा हूं ? उन्हों ने कहा : हां, आप को ख़ुश ख़बरी हो । बस मैं समझ गया कि येह उसी बात की बरकत है जो उस ने मरने से पहले कही थी ।(1)

बाब नम्बर 9

मौत के डराने वाले क़ासिदों का बयान

मरवी है कि एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : तुम्हारा कोई क़ासिद नहीं है जिस को अपने आने से पहले भेज दिया करो ताकि लोग मौत से डर जाएं ? हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : ब ख़ुदा ! मेरे पास कसीर क़ासिद हैं मसलन : बीमारियां, बालों की सफ़ेदी, बुढ़ापा, देखने-सुनने में फ़र्क़ आ जाना, जब कोई इन में से किसी में मुब्तला हो कर नसीह़त नहीं पकड़ता और न ही तौबा करता है तो मैं उस की रूह़ क़ब्ज़ करते वक़्त उसे पुकार कर कहता हूं : क्या मैं ने यके बा'द दीगरे तेरे पास क़ासिद और डराने वाले नहीं भेजे ? बस अब मैं आख़िरी क़ासिद हूं मेरे बा'द कोई क़ासिद नहीं और मैं आख़िरी डराने वाला हूं मेरे बा'द कोई डराने वाला नहीं ।(2)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : जब आदमी किसी बीमारी में मुब्तला होता है तो हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का क़ासिद उस के पास होता है ह़त्ता कि जब वोह मरज़ुल मौत में मुब्तला होता है तो हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुद उस

1...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۳۰۸/۵، حدیث: ۲۰

2...التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی رسل ملک الموت، ص ۴۴

के पास तशरीफ़ ला कर फ़रमाते हैं : तुम्हारे पास पै दर पै क़ासिद और डराने वाले आते रहे लेकिन तुम ने उन की कोई परवा न की, अब तुम्हारे पास ऐसा क़ासिद आया है जो दुन्या से तुम्हारा नामो निशान मिटा देगा।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के उ़ज़्र को क़बूल नहीं फ़रमाता जिस की वोह उ़म्र दराज़ कर दे यहां तक कि वोह 60 साल तक जा पहुंचे।(2)

•••❀•••

बाब नम्बर 10

हुस्ने ख़ातिमा की अ़लामात का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दे से महब्बत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस से काम ले लेता है। अ़र्ज़ की गई : वोह कैसे काम ले लेता है? इरशाद फ़रमाया : वोह बन्दे को मरने से पहले अच्छे अ़मल की तौफ़ीक़ दे देता है।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन ह़मिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब ख़ुदा तआ़ला किसी बन्दे से प्यार करता है तो उसे मीठा बना देता है। अ़र्ज़ की गई : कैसे मीठा बनाता है? इरशाद फ़रमाया : उसे मौत से पहले अ़मले सालेह़ की तौफ़ीक़ बख़्श देता है ह़त्ता कि उस के पड़ोसी उस से राज़ी हो जाते हैं।(4)

तक़्दीर का लिखा हो कर रहता है

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि रब तआ़ला जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उस के मरने से एक साल पहले

---

❶...حلیۃ الاولیاء، مجاھد بن جبر، ۳/۳۳۳، حدیث: ۴۱۴۲، دون قولہ: نذیر بعد نذیر

❷...بخاری، کتاب الرقاق، باب من بلغ ستین سنۃ...الخ، ۴/۲۲۴، حدیث: ۶۴۱۹

❸...ترمذی، کتاب القدر، باب ما جاء ان اللہ کتب کتابا لاھل الجنۃ...الخ، ۴/۵۲، حدیث: ۲۱۴۹

❹...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، باب خیارکم اطولکم اعمارا احسنکم عملا، ۱/۲۵۸، حدیث: ۱۲۹۸

एक फ़िरिश्ता उस पर मुक़र्रर कर देता है जो उसे राहे रास्त पर लगाता रहता है ह़त्ता कि वोह शख़्स भलाई पर मर जाता है, लोग उस के बारे में कहते हैं : फ़ुलां बन्दे ने भलाई पर मौत पाई। जब ऐसा बन्दा मरने लगता है तो अपने उख़रवी इन्आ़मात देख कर उस की रूह़ निकलने में जल्दी करती है पस उस वक़्त वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को मह़बूब रखता है और **अल्लाह** तआ़ला उस की मुलाक़ात पसन्द फ़रमाता है और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से किसी के लिये बुराई मुक़द्दर हो चुकी होती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मरने से एक साल पहले उस पर एक शैत़ान मुसल्लत़ कर देता है जो उसे मुसलसल गुमराह करता और भटकाता रहता है यहां तक कि वोह बदतरीन ह़ालत में मर जाता है। जब वोह मौत के वक़्त अपने लिये तय्यार अ़ज़ाब देखता है तो उस की रूह़ उसे ना पसन्द करते हुवे लोट-पोट होने लगती है, उस वक़्त वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को ना पसन्द करता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात को ना पसन्द रखता है।(1)

साहि़बुल इफ़्साह़ ने इस ह़दीस की वज़ाह़त में फ़रमाया : मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का रूह़ को पुकारना आ़म है, सांप को उस के बिल में भी आप की पुकार पहुंचती है, आप की पुकार के वक़्त दो जिस्मों से एक साथ रूह़ का निकलना ऐसा ही है गोया एक ही रूह़ को निकाल रहे हों, मोमिन की रूह़ निकलने में जल्दी करती है जब कि काफ़िर की रूह़ वापस जिस्म में पलटने की कोशिश करती है।

फ़ाएदा : बुरे ख़ातिमे के अस्बाब

बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : बुरे ख़ातिमे के चार अस्बाब हैं : (1) नमाज़ में सुस्ती करना (2) शराब पीना (3) वालिदैन की ना फ़रमानी करना और (4) मुसलमानों को तक्लीफ़ पहुंचाना।

शिफ़ा ह़ासिल हो

يَاسَلَامُ 111 बार पढ़ कर बीमार पर दम करने से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा ह़ासिल होगी। (मदनी पंज सूरह, स. 247)

1...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب علامة خاتمة الخير، ۵/۴۴۳، حديث:۱۵۷

बाब नम्बर 11 हालते नज़्अ़ और इस की शिद्दत का बयान

हालते नज़्अ़ के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने बारी तआ़ला

《1》

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ؕ (پ٢٦،ق:١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ।*

《2》

وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ بَاسِطُوْۤا اَیْدِیْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْیَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَیْرَ الْحَقِّ وَ كُنْتُمْ عَنْ اٰیٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۹۳﴾ (پ٨،الانعام:٩٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और कभी तुम देखो जिस वक़्त ज़ालिम मौत की सख़्तियों में हैं और फ़िरिश्ते हाथ फैलाए हुवे हैं कि निकालो अपनी जानें आज तुम्हें ख़्वारी का अ़ज़ाब दिया जाएगा बदला उस का कि* ***अल्लाह*** *पर झूट लगाते थे और उस की आयतों से तकब्बुर करते।*

《3》

فَلَوْ لَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿۸۳﴾ ۙ (پ٢٧،الواقعة:٨٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर क्यूं न हो कि जब जान गले तक पहुंचे।*

《4》

كَلَّاۤ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِیَ ﴿۲۶﴾ ۙ وَ قِیْلَ مَنْ ٚ رَاقٍ ﴿۲۷﴾ ۙ وَّ ظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿۲۸﴾ ۙ وَ الْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿۲۹﴾ ۙ

(پ٢٩،القيامة:٢٦تا٢٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हां हां जब जान गले को पहुंच जाएगी और लोग कहेंगे कि है कोई जो झाड़ फूंक करे और वोह समझ लेगा कि येह जुदाई की घड़ी है और पिन्डली से पिन्डली लिपट जाएगी।*

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़रमाती हैं कि ब वक़्ते विसाल सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने एक प्याला पानी का था, जिस में दस्ते मुबारक डाल कर अपने चेहरए अक़्दस पर मस करते और पढ़ते : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِنَّ لِلْمَوْتِ سَكَرَاتٍ या'नी

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, बेशक मौत के लिये सख़्तियां हैं।"[1]

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर मौत की शिद्दत देखने के बा'द मैं किसी के आसानी से मर जाने पर रश्क नहीं करती[2]।[3]

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द किसी की भी शिद्दते मौत को ना पसन्द नहीं करती।[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मौत की तक्लीफ़ का मुशाहदा करते वक़्त इरशाद फ़रमाया : अगर इब्ने आदम सिर्फ़ मौत ही के लिये अ़मल करे तो यक़ीनन इसे उसी के लिये अ़मल करना चाहिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान ह़नफ़ी और ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन या'क़ूब ह़नफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام के पास खुश ख़बरी देने वाला फ़िरिश्ता आया तो उस ने कहा : मैं आज आप के पास सिर्फ़ इस लिये आया हूं कि खुदाए बुज़ुर्ग व बरतर आप पर मौत की सख़्ती आसान फ़रमा दे।[5]

मोमिन के गुनाह का कफ़्फ़ारा और काफ़िर की नेकी का बदला

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि हु़ज़ूर रह़मते दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन की जान पसीने की त़रह़ बह कर निकलती है और काफ़िर की जान ऐसे निकलती है जैसे गधे की जान निकलती है। मोमिन कोई गुनाह करता है तो ब वक़्ते मौत उस पर सख़्ती की जाती है ताकि उस गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाए

1 ...بخاری، کتاب الرقاق، باب سکرات الموت، ۴/۲۵۰، حدیث: ۶۵۱۰

2 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی التشدید عند الموت، ۲/۲۹۵، حدیث: ۹۸۱

3 .....ह़दीस का मत़लब येह है कि पहले मैं किसी की जां कनी आसान देखती तो रश्क करती और चाहती थी कि मेरी मौत भी ऐसी ही आसान हो, समझती थी कि आसानिये नज़्अ़ मरने वाले की नेकी व मक़्बूलिय्यत की अ़लामत है, मगर जब हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शिद्दते नज़्अ़ देखी तो येह ख़याल व रश्क दोनों जाते रहे समझ गई कि सख़्तिये जां कनी अच्छी चीज़ है बुरी नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/421)

4 ...بخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی صلی اللہ علیہ وسلم ووفاتہ، ۳/۱۵۶، حدیث: ۴۴۴۶

5 ...تفسیر ابن ابی حاتم، سورۂ یوسف، تحت الآیۃ: ۹۶، الجزء۷، ص۲۱۹۹، حدیث: ۱۱۹۷۹

और काफ़िर ज़िन्दगी में नेकी करता है तो ब वक़्ते मौत उस पर आसानी की जाती है ताकि नेकी का बदला (दुन्या में ही) हो जाए।(1)

हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मैं किसी बन्दे पर रह्म फ़रमाने का इरादा करूं तो उस बन्दे को उस वक़्त तक मौत नहीं देता जब तक उसे उस की हर बुराई का बदला न दे दूं कभी बीमारी, कभी घरेलू मुसीबत और कभी मुआ़शी तंगी के ज़रीए, यहां तक कि ज़र्रात के वज़्न का भी पूरा बदला देता हूं फिर भी अगर उस पर कुछ गुनाह बाक़ी हो तो ब वक़्ते मौत सख़्ती करता हूं ह़त्ता कि वोह मुझ तक इस ह़ाल में पहुंचता है जैसा कि उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था। मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं जिस बन्दे को अ़ज़ाब देने का इरादा रखता हूं उस को उस की हर नेकी का पूरा पूरा बदला दे देता हूं, कभी जिस्मानी सिह़ह़त, कभी रिज़्क़ की वुस्अ़त, कभी अह्लो इयाल की ख़ुशह़ाली और कभी इत़्मीनाने क़ल्बी की सूरत में ह़त्ता कि ज़र्रात बराबर नेकी का भी, फिर भी अगर कुछ नेकी रह जाए तो ब वक़्ते मौत उस पर आसानी कर देता हूं यहां तक कि वोह मुझ तक इस ह़ाल में पहुंचता है कि उस के पल्ले कोई नेकी नहीं होती जिस की वज्ह से दोज़ख़ से बच सके।(2)

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : जब मोमिन पर कोई ऐसा गुनाह बच जाता है जिस के बदले नेक अ़मल नहीं होता तो उस पर मौत की सख़्तियां की जाती हैं ताकि येह सख़्तियां उस गुनाह का बदल हो जाएं और मोमिन की तकालीफ़ जन्नत में उस के दरजात हैं, जब कि काफ़िर दुन्या में कोई नेक अ़मल करे तो उस पर मौत आसान कर दी जाती है ताकि उसे उस की नेकी का अज्र दुन्या ही में पूरा पूरा मिल जाए फिर यक़ीनन उसे दोज़ख़ की त़रफ़ जाना है।(3)

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन को हर चीज़ में अज्र दिया जाता है ह़त्ता कि मौत के वक़्त होने वाली घुटन में भी।

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْمُؤْمِنُ یَمُوْتُ بِعَرَقِ الْجَبِیْنِ या'नी मोमिन पेशानी के पसीने के साथ मरता है।(4)

---

1 ...معجم کبیر، ۷۹/۱۰، حدیث: ۱۰۰۱۵

2 ...التذکرۃ للقرطبی، باب الموت کفارۃ لکل مسلم، ص ۳۱

3 ...التذکرۃ للقرطبی، باب الموت کفارۃ لکل مسلم، ص ۳۲

4 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ۱۰، ۲/۲۹۵، حدیث: ۹۸۴

रहमते इलाही और अ़ज़ाबे इलाही की अ़लामात

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं : मैं ने रहमते कौनैन, शाहे दारैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : मरने वाले की तीन बातें देखो : अगर उस की पेशानी पर पसीना आ जाए, आंखों में आंसू भर आएं और नथने फूलें तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत है जो इस पर नाज़िल हो रही है और अगर जवान ऊंट के गला घुटने की सी आवाज़ निकले, रंग फीका पड़ जाए और मुंह से झाग निकलने लगे तो येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का अ़ज़ाब है जिस में वोह मुब्तला है।(1)

मौत के वक़्त पसीना आने का सबब

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मोमिन पर उस की कुछ ख़ताएं बाक़ी रह जाएं तो मौत के वक़्त इन का बदला दिया जाता है इसी वज्ह से उस की पेशानी पर पसीना नुमूदार होता है।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने चचाज़ाद भाई के आख़िरी वक़्त में उन के पास गए तो उन की पेशानी पर हाथ फेरा, देखा तो पसीना निकल रहा था, आप ने اَللّٰہُ اَکْبَر की सदा बुलन्द की और कहने लगे : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझे हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह ह़दीसे पाक बयान की है कि "मोमिन को पेशानी के पसीने के साथ मौत आती है, जिस मोमिन के गुनाह बाक़ी हों दुन्या ही में उसे उन का बदला दे दिया जाता है फिर भी अगर कुछ बच जाए तो वक़्ते मर्ग उस गुनाह के बदले उस पर शिद्दत कर दी जाती है।"(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मुझे गधे की मौत मरना पसन्द नहीं।(4)

मोमिन व काफ़िर की मौत

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने भतीजे की मौत के वक़्त उन के पास गए तो

---

1 ...نوادر الاصول، الاصل السادس والثمانون، ۱/۳۷۲، حدیث:۵۴۳

2 ...نوادر الاصول، الاصل السادس والثمانون، ۱/۳۷۳، حدیث:۵۴۴

3 ...شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، ۷/۲۵۴، حدیث:۱۰۲۱۵

4 ...شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، ۷/۲۵۴، حدیث:۱۰۲۱۵

देखा भतीजे की पेशानी से पसीना निकल रहा है, आप मुस्कुरा दिये, किसी ने पूछा : किस वज्ह से मुस्कुराए ? फ़रमाने लगे : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते सुना है कि "मोमिन की रूह़ (पसीने की सूरत में) बह कर निकलती है और काफ़िर या फ़ाजिर की रूह़ उस के जबड़ों से गधे के मरने की त़रह़ निकलती है, मोमिन ने कोई गुनाह किया हो तो मौत के वक़्त उस पर सख़्ती की जाती है ताकि वोह गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाए और काफ़िर या फ़ाजिर ने कोई नेकी की हो तो मौत के वक़्त उस पर आसानी की जाती है ताकि उस का बदला यहीं मिल जाए।"[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्क़मा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना अस्वद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد को वसिय्यत फ़रमाई कि वक़्ते नज़्अ़ मेरे पास रहना और मुझे لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की तल्क़ीन करते रहना और अगर मेरी पेशानी पर पसीना देखो तो मुझे ख़ुश ख़बरी देना।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : बुज़ुर्गाने दीन मरने वाले की पेशानी के पसीने को पसन्द करते थे।[2] उ़लमाए किराम ने फ़रमाया : पेशानी पर पसीना आ जाना अपने रब عَزَّوَجَلَّ से ह़या की वज्ह से है कि बन्दे ने उस की ना फ़रमानियां की थीं, क्यूंकि उस का निचला धड़ तो बे जान हो चुका और ऊपरी धड़ में ही ज़िन्दगी की कुछ रमक़ और ह़रकत बाक़ी रह गई और चूंकि ह़या आंखों में होती है और काफ़िर इन सब (या'नी अपनी ना फ़रमानियों को देखने) से अन्धा होता है जब कि गुनाहगार मुसलमान जो अ़ज़ाब में मुब्तला हो उस पर भी येह अ़लामात ज़ाहिर नहीं होतीं क्यूंकि वोह अपने ऊपर नाज़िल होने वाले अ़ज़ाब की वज्ह से इस ह़ालत से ग़ाफ़िल होता है।[3]

मौत की गर्मी व तक्लीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बनी इस्राईल की बातें किया करो क्यूंकि उन के बहुत अ़जीब वाक़िआ़त हैं, फिर ख़ुद ही हमें एक वाक़िआ़ बयान फ़रमाने लगे कि "बनी इस्राईल की एक जमाअ़त क़ब्रिस्तान गई तो मश्वरा किया कि क्यूं न हम दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करें कि वोह हमारे लिये किसी मुर्दा को ज़िन्दा कर दे ताकि हम उस

1... شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، ۷/۲۵۵، حدیث: ۱۰۲۱۶

2... مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، باب فی الرجل یرشح جبینہ عند موتہ، ۳/۲۴۸، حدیث: ۱

3... التذکرۃ للقرطبی، باب المؤمن یموت بعرق الجبین، ص ۲۲

से मौत के बारे में पूछ सकें। चुनान्चे, उन्हों ने ऐसा किया तो अचानक उन के सामने एक काले रंग वाला शख़्स नुमूदार हुवा जिस की पेशानी पर सजदों के निशान थे, उस ने कहा : तुम लोग मुझ से क्या चाहते हो ? मुझे मरे 100 साल हो चुके हैं मगर आज भी मौत की गर्मी मुझ से दूर नहीं हुई लिहाज़ा तुम दुआ़ करो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे मेरी पहली ह़ालत पर लौटा दे।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ह़बीब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُجِيْب फ़रमाते हैं : बनी इस्राईल के दो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करते रहे यहां तक कि थक गए और कहने लगे : हम क़ब्रिस्तान चलते हैं और वहीं अपना पड़ाव कर लेते हैं, शायद वहीं मौत आ जाए। चुनान्चे, वोह क़ब्रिस्तान के पास रहने लगे और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने लगे, अचानक उन के सामने एक मुर्दा ज़ाहिर हुवा और कहने लगा : मुझे मरे हुवे 80 साल हो चुके हैं मगर अब भी मौत की तक्लीफ़ मह़सूस करता हूं।

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : मुर्दा जब तक क़ब्र में रहता है मौत की तक्लीफ़ उस से जुदा नहीं होती, येह मोमिन को पेश आने वाली सब से सख़्त और काफ़िर को पहुंचने वाली सब से आसान तक्लीफ़ है।(2)

मौत की सख़्ती

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : हमें येह बात पहुंची है कि मोमिन मौत की सख़्ती क़ब्र से उठने तक पाएगा।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मौत की तक्लीफ़ और उस की शिद्दत को बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया : मौत की सख़्ती तल्वार के 300 वार के बराबर है।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक बिन ह़ुमरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मौत के बारे में सुवाल किया गया तो इरशाद फ़रमाया : मौत का सब से हल्का झटका तल्वार की 100 ज़र्बों के बराबर है।(5)

1...مسند عبد بن حمید، مسند جابر بن عبد اللہ، ص۳۴۹، حدیث: ۱۱۵۶، بتغیرٍ قلیلٍ

2...حلیۃ الاولیاء، تکملۃ کعب الاحبار، ۶/۴۳، رقم: ۷۷۳۰

3...اھوال القبور، فصل المیت یجد الم الموت مادام فی قبرہ، ص۱۱۹

4...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللہ، ۵/۴۵۳، حدیث: ۱۹۲

5...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللہ، ۵/۴۵۳، حدیث: ۱۹۳

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام का रूह क़ब्ज़ करना तल्वार के हज़ार वार से ज़ियादा तक्लीफ़ देह है।"(1)

बिस्तर पर मौत आने से ज़ियादा आसान

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! तल्वार की हज़ार ज़र्बें बिस्तर पर मौत आने से ज़ियादा आसान हैं।(2)

मौत को कैसा पाया ?

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से पूछा गया : आप ने मौत को कैसा पाया ? जवाब दिया : उस शाख़ की मानिन्द जिस के साथ बहुत से कांटे हों और उसे मेरे पेट में दाख़िल कर दिया गया हो और हर कांटे के साथ मेरी आंतें उलझ गई हों फिर उसे खींच कर मेरे पेट से निकाला गया हो। फ़रमाया गया : यक़ीनन हम ने आप पर नर्मी की है।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام से पूछा गया : आप ने मौत के ज़ाएक़े को कैसा पाया ? कहा : उस कांटे दार शाख़ की मानिन्द जिसे रूई में डाल कर दबा कर खींचा जाए। (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! यक़ीनन हम ने आप पर नर्मी की है।(4)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू मुलैका رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात की तो आप से पूछा गया : आप ने मौत को कैसा पाया ? अ़र्ज़ की : गोया कि वोह एक झिल्ली थी जिसे खींचा गया। इरशाद हुवा : यक़ीनन हम ने आप पर मौत को आसान कर दिया।(5)

---

1 ...تاریخ بغداد، رقم: ۱۲۵۹، محمد بن منصور بن حیان، ۴/۱۲

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللّٰہ، ۵/۴۵۱، حدیث: ۱۸۷

3 ...کتاب العظمۃ، باب صفۃ ملک الموت، ص ۱۲۹، حدیث: ۴۷۶

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللّٰہ، ۵/۴۴۶، حدیث: ۱۷۱

5 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللّٰہ، ۵/۴۴۷، حدیث: ۱۷۴

ज़िन्दा चिड़या की मानिन्द

मरवी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की मुबारक रूह़ बारगाहे इलाही में पहुंची तो रब तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मूसा ! आप ने मौत की तक्लीफ़ को कैसा पाया ? अ़र्ज़ की : "मैं ने खुद को उस ज़िन्दा चिड़या की त़रह़ पाया जिसे खोलते तेल की कढ़ाई में डाल दिया गया और वोह न मरती हो कि आराम पाए और न उस से निकल पाती हो कि उड़ जाए।" एक रिवायत में है कि "मैं ने खुद को उस ज़िन्दा बकरी की त़रह़ पाया क़साई जिस की खाल उतार रहा हो।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ब वक़्ते मौत फ़िरिश्ते बन्दे को घेर कर रोक लेते हैं अगर ऐसा न होता तो वोह मौत की सख़्तियों की वज्ह से ज़रूर जंगलों और सह़राओं में भागता फिरता।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया : क्या वज्ह है कि मय्यित की रूह़ निकाली जाती है और वोह साकित रहता है ह़ालांकि इन्सान तो एक डंक लगने से ही बे क़रार हो जाता है ? फ़रमाया : फ़िरिश्ते उसे बांध देते हैं।(3)

मौत की आसान तर तक्लीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना शहर बिन ह़ौशब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मौत और उस की सख़्तियों के बारे में सुवाल किया गया तो इरशाद फ़रमाया : मौत की आसान तर तक्लीफ़ उस कांटेदार शाख़ की त़रह़ है जो ऊन में हो पस जब उस शाख़ को खींचा जाएगा उस के साथ ऊन ज़रूर आएगी।(4)

मौत का एक क़त़रा

ह़ज़रते सय्यिदुना मैसरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "अगर मौत की तक्लीफ़

---

1 ...التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء ان الموت سکرات...الخ، ص ۲۴

2 ...التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء ان الموت سکرات...الخ، ص ۲۴

3 ...کتاب العظمۃ، باب صفۃ ملک الموت، ص ۱۵۷، حدیث: ۴۳۸

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللّٰہ، ۵/۴۵۳، حدیث: ۱۹۴

का एक क़तरा भी आस्मान व ज़मीन वालों पर डाल दिया जाए तो सभी मर जाएं जब कि मह़शर की एक घड़ी की तक्लीफ़ इस तक्लीफ़ से 70 गुना ज़ियादा होगी।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन बुहै़र رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ(2) बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उन के बेटे ने अ़र्ज़ की : बाबा जान ! आप फ़रमाया करते थे कि काश ! मैं किसी दानिशमन्द शख़्स को उस के आ़लमे नज़्अ़ में मिलूं ताकि वोह मुझे मौत के ह़ालात बयान करे और अब आप ही इस ह़ालत में हैं तो अब आप मुझे मौत की कैफ़िय्यत बयान फ़रमा दीजिये। फ़रमाया : बेटा ! ख़ुदा की क़सम ! ऐसा मह़सूस होता है गोया मेरे दोनों पहलू एक तख़्त पर हैं और मैं सूई के नाके से सांस ले रहा हूं और एक कांटेदार शाख़ मेरे क़दमों की त़रफ़ से सर की जानिब खींची जा रही है।(3)

भारी भरकम पहाड़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़वाना बिन ह़कम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते थे : तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जिसे मौत आ रही हो और उस की अ़क़्ल भी उस के साथ हो तो फिर वोह कैसे उस की कैफ़िय्यत को बयान नहीं कर सकता। चुनान्चे, जब ख़ुद आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ पर नज़्अ़ का वक़्त आया तो आप के साह़िबज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : बाबा जान ! आप फ़रमाया करते थे कि तअ़ज्जुब है उस शख़्स पर जिसे मौत आ रही हो और उस की अ़क़्ल भी उस के साथ हो तो फिर वोह कैसे उस की कैफ़िय्यत को बयान नहीं कर सकता ? लिहाज़ा मुझे मौत की कैफ़िय्यत बयान कीजिये। आप ने फ़रमाया : बेटा ! मौत की तक्लीफ़ बयान से बाहर है अलबत्ता मैं तुम्हें कुछ बयान किये देता हूं : मैं ने उसे यूं पाया जैसे मेरे कांधों पर भारी भरकम पहाड़ रख दिया गया हो और गोया मेरे पेट में कांटेदार शाख़ पैवस्त कर दी गई हो और मैं सूई के नाके से सांस ले रहा हूं।(4)

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللہ، ۵/۴۵۲، حدیث:۱۹۰

2 .....मतन में इस मक़ाम पर "मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन यसाफ़" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन बुहै़र" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۵/۳۲۹، حدیث:۱۰۳

4 ...طبقات ابن سعد، رقم:۴۴۶، عمرو بن العاص، ۴/۱۹۲

कसीर कांटों वाली शाख़

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू मुलैका رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار से फ़रमाया : मुझे मौत के बारे में बताइये। आप ने अ़र्ज़ की : अमीरुल मोमिनीन ! वोह कांटों से भरपूर दरख़्त की मानिन्द है जो कि इन्सान के पेट में पैवस्त है और कोई भी ऐसी रग और जोड़ नहीं जिस में कांटा न हो और एक मज़्बूत बाज़ूओं वाला शख़्स उसे खींच रहा है।(1)

इब्ने अबी शैबा की रिवायत में है कि "गोया कसीर कांटों वाली शाख़ आदमी के पेट में पैवस्त कर दी गई है और हर कांटे से आंतें उलझ चुकी है फिर एक शख़्स ने शदीद झटके से उसे खींचा है पस जो बाहर आना था वोह आ गया और जो बाक़ी रहना था बाक़ी रहा।"(2)

दुन्या व आख़िरत की शदीद तरीन हौलनाकी

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मौत मोमिनीन पर दुन्या व आख़िरत की शदीद तरीन हौलनाकी है, मौत आरों के चीरने, क़ैंचियों के काटने और हांडियों में उबालने से बढ़ कर है, अगर कोई मुर्दा ज़िन्दा हो कर लोगों को मौत की सख़्तियां बता देता तो लोग ज़िन्दगी से नफ़्अ़ उठाते न नींद की लज़्ज़त पाते।(3)

मोमिन की आख़िरी और काफ़िर की पहली तक्लीफ़

हज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मौत तल्वार के वार, आरों के चीरने और हांडियों में उबालने से सख़्त तर है, अगर मय्यित की रगों में से एक रग का दर्द तमाम ज़मीन वालों में बांट दिया जाए तो सब तक्लीफ़ में मुब्तला हो जाएं, मौत काफ़िर की पहली और मोमिन की आख़िरी तक्लीफ़ है।(4)

---

1 ...حلية الاولياء، تكملة كعب الاحبار، ٦/٤٣، حديث: ٧٧٢٨

2 ...مصنف ابن ابي شيبة، كتاب الزهد، باب ما قالوا في البكاء من خشية الله، ٨/٣١٢، حديث: ١٢٢

3 ...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب الخوف من الله، ٥/٤٤٦، حديث: ١٧٠

4 ...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب الخوف من الله، ٥/٤٥٠، حديث: ١٨٢

हर बुर्दबार मर्द व औ़रत हैरत में मुब्तला है

ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें इरशाद फ़रमाया : तुम अपने मुर्दों के पास ह़ाज़िर रहो और उन को لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की तल्क़ीन किया करो और जन्नत की बिशारत दिया करो क्यूंकि इस अखाड़े में हर बुर्दबार मर्द व औ़रत ह़ैरत में मुब्तला होता है। उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! मौत के फ़िरिश्ते को देखना तल्वार के हज़ार वार से सख़्त तर है। उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! जब कोई मरता है तो उस की हर हर रग अलग अलग तक्लीफ़ में मुब्तला होती है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना तुअ़मा बिन ग़ैलान जो'फ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुआ़ की :

اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ تَاْخُذُ الرُّوْحَ مِنْ بَیْنِ الْعَصَبِ وَالْقَصَبِ وَالْاَنَامِلِ، اَللّٰھُمَّ فَاَعِنِّیْ عَلَی الْمَوْتِ وَھَوِّنْہُ عَلَیَّ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू पठ्ठों, रगों और पोरों के दरमियान से रूह़ निकालता है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मौत पर मेरी मदद फ़रमा और उसे मुझ पर आसान फ़रमा।(2)

तल्वार के हज़ार वार से ज़ियादा सख़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار रिवायत करते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मौत के फ़िरिश्ते का मुआ़मला तल्वार के हज़ार वार से ज़ियादा शदीद है और कोई भी मोमिन जब मरता है तो उस की हर रग अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा तक्लीफ़ में मुब्तला होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन (शैत़ान) उस वक़्त बन्दे के क़रीब तर होता है।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक मरीज़ की इ़यादत की तो इरशाद फ़रमाया : उस की हर रग तक्लीफ़ में मुब्तला थी, उस के पास उस के रब की त़रफ़ से एक आने वाले ने आ कर खुश ख़बरी दी कि इस के बा'द कोई तक्लीफ़ नहीं।

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، مکحول الشامی، ۵/۲۱۱، حدیث: ۶۸۲۸

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللہ، ۵/۴۵۲، حدیث: ۱۸۹

3 ...حلیۃ الاولیاء، عبد العزیز بن ابی داود، ۸/۲۱۸، حدیث: ۱۱۹۳۴

सवाब की उम्मीद और अ़ज़ाब का ख़ौफ़

एक मरतबा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने एक बीमार सहाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के पास तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : ख़ुद को किस ह़ाल में पाते हो ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं ख़ुद को सवाब की उम्मीद और अ़ज़ाब का ख़ौफ़ रखने वाला पाता हूं । आक़ाए नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! उस वक़्त जिस शख़्स में येह दोनों बातें पाई जाएंगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस की उम्मीद के मुताबिक़ देगा और जिस से ख़ौफ़ रखेगा ख़ुदा तआ़ला उस से बे ख़ौफ़ कर देगा ।(1)

मोमिन की आख़िरी और सब से शदीद तक्लीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : आख़िरी तक्लीफ़ जो बन्दए मोमिन को पहुंचती है वोह मौत है ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز ने फ़रमाया : मुझे येह पसन्द नहीं कि मुझ पर मौत की सख़्तियां आसान हो जाएं क्यूंकि येह आख़िरी तकालीफ़ हैं जिन के बदले मुसलमान को सवाब दिया जाता है ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : जब से इन्सान पैदा हुवा है उस वक़्त से उस ने कभी मौत से बड़ी तक्लीफ़ का सामना नहीं किया ।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : उमूरे आख़िरत में से सब से शदीद मौत है ।

मरज़े मौत की दवा

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से दरयाफ़्त किया कि वोह कौन सा मरज़ है जो ला इ़लाज

1...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المرض والکفارات، ۴/۲۵۳، حدیث:۱۰۸
2...مسند امام احمد، مسند عبد اللّٰہ بن العباس، ۱/۴۷۹، حدیث:۱۹۴۲
3...شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، ۷/۲۵۵، حدیث:۱۰۲۱۷
4...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللّٰہ، ۵/۴۵۱، حدیث:۱۸۸

है ? फ़रमाया : मौत । ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने फ़रमाया : मौत एक मरज़ है जिस की दवा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है ।[1]

आ'ज़ाए बदन की गुफ़्त्गू

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब बन्दे पर मौत और उस की सख़्तियां त़ारी होती हैं तो आ'ज़ाए बदन एक दूसरे से कहते हैं : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ تُفَارِقُنِیْ وَاُفَارِقُكَ اِلٰی يَوْمِ الْقِيَامَةِ या'नी तुझ पर सलामती हो तू मुझ से और मैं तुझ से क़ियामत तक के लिये जुदा हो रहा हूं ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इन्सान को ह़ालते मौत में सब से ज़ियादा तक्लीफ़ उस वक़्त होती है जब उस की रूह़ ह़ल्क़ तक पहुंचती है, उस वक़्त वोह बेचैन हो जाता है और उस की नाक ऊपर को उठ जाती है ।[3]

अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं शहीद की येह खुसूसिय्यत है मौत की जो तक्लीफ़ ग़ैर शहीद पाता है वोह येह नहीं पाता ।

शहीद और मौत की तक्लीफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : शहीद मौत की इतनी ही तक्लीफ़ पाता है जितनी तुम में से किसी को चुटकी भरने से होती है ।[4]

मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन का'ब क़ुरज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि सब से आख़िर में मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام वफ़ात पाएंगे, उन से फ़रमाया जाएगा : ऐ मलकुल

1 ...حلية الاولياء، تكملة كعب الاحبار، ٦/٤٣، رقم: ٧٧٣١

2 ...رسالة قشيرية، باب احوالهم عند الخروج من الدنيا، ص ٣٣٤

3 ...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب الخوف من الله، ٥/٤٥١، حديث: ١٨٤

4 ...معجم الاوسط، ١/٩٣، حديث: ٢٨٠

मौत ! मर जाइये तो उस वक़्त वोह ऐसी चीख़ मारेंगे जिसे ज़मीन और आस्मानों की मख़्लूक़ सुन ले तो ख़ौफ़ से सब का दम निकल जाए फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام वफ़ात पा जाएंगे ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ियाद नुमैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं ने एक किताब में पढ़ा कि मलकुल मौत पर मौत की सख़्ती सारी मख़्लूक़ की सख़्ती से ज़ियादा होगी ।(2)

तम्बीह : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर मौत की सख़्ती के दो फ़ाएदे

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی ने फ़रमाया : ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام पर मौत की सख़्ती के दो फ़ाएदे हैं :

पहला फ़ाएदा : इस में उन के फ़ज़ाइल की तक्मील और दरजात की बुलन्दी है । येह सख़्ती किसी क़िस्म का नक़्स है न अ़ज़ाब बल्कि येह ऐसा ही है जैसा कि ह़दीस में आया है कि सब से बढ़ कर आज़माइशें नबियों को हुई फिर इन के बा'द जो मर्तबे वाले हैं और फिर दरजा ब दरजा ।

दूसरा फ़ाएदा : मख़्लूक़ मौत की तक्लीफ़ का अन्दाज़ा लगा सके और येह एक बातिनी चीज़ है, बा'ज़ औक़ात इन्सान किसी को मरते देखता है तो उस पर किसी क़िस्म की ह़रकत और रंज नज़र न आने की सूरत में गुमान करता है कि उस की रूह़ आसानी से निकल रही है लिहाज़ा वोह मौत के मुआ़मले को आसान समझता है और येह नहीं जान पाता कि मय्यित पर क्या गुज़र रही है, लिहाज़ा जब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام ने बा वुजूद मुक़र्रबे बारगाहे इलाही होने के अपने मुतअ़ल्लिक़ मौत की सख़्ती को बयान किया तो उम्मत के गुनाहगारों के लिये येह चीज़ बाइसे तसल्ली हो गई । अलबत्ता कुफ़्फ़ार के हाथों शहीद होने वाले पर येह तकालीफ़ नाज़िल नहीं होतीं ।(3)

फ़वाइद : नज़्अ़ में आसानी

उ़लमाए किराम की एक जमाअ़त ने बयान किया कि मिस्वाक का इस्ति'माल नज़्अ़ में आसानी पैदा करता है और इस पर उन्हों ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा

(1) ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللہ، ۵/ ۴۴۵، حدیث: ۱۶۷
(2) ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللہ، ۵/ ۴۴۶، حدیث: ۱۶۸
(3) ...التذکرة للقرطبی، باب ماجاء ان الموت سکرات...الخ، ص ۲۷، ۲۸، ملخصًا

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की इस ह़दीस को दलील बनाया है कि वक़्ते विसाल सरकारे नामदार, रसूलों के सालार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिस्वाक इस्ति'माल की थी।[(1)]

ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَیْہِ رَحمۃُ الرَّحْمٰن ने फ़रमाया : तुम हमेशा किसी न किसी नेक अ़मल को याद रखो कि येह ब वक़्ते मौत मुर्दे पर आसानी का बाइ़स है या फिर मरने वाला अपने उस नेक अ़मल को याद करे जो उस ने आगे भेजा है।[(2)]

चितकब्रा मेंढा और घोड़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

اَلَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوۃَ (پ۲۹، الملک:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : اَلْحَیٰوۃ से ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام का घोड़ा और اَلْمَوْت से चितकब्रा मेंढा मुराद है।[(3)]

मुक़ातिल और कल्बी कहते हैं : मौत को एक मेंढे की शक्ल में पैदा किया गया वोह जिस चीज़ पर गुज़र जाए तो वोह मर जाती है और ह़यात को घोड़े की शक्ल में पैदा किया गया है वोह जिस चीज़ पर गुज़र जाए वोह ज़िन्दा हो जाती है।[(4)]

चार बाज़ूओं वाला चितकब्रा मेंढा

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर ने मौत को चितकब्रे मेंढे की शक्ल में पैदा किया, उस के चार बाज़ू हैं एक अ़र्श के नीचे, दूसरा तह़तस्सरा में, तीसरा मग़रिब और चौथा मशरिक़ में, उस से कहा गया : हो जा तो वोह हो गया। फिर हुक्म हुवा : ज़ाहिर हो जा तो वोह ब सूरते मौत ह़ज़रते सय्यिदुना इज़्राईल عَلَیْہِ السَّلَام के सामने ज़ाहिर हो गया।[(5)]

---

1 ...بخاری، کتاب المغازی، باب مرض النبی صلی اللہ علیہ وسلم ووفاتہ، ۳/۱۵۷، حدیث:۴۴۴۹

2 ...تاریخ ابن عساکر، رقم:۷۸۰۶، میمون بن مہران، ۶۱/۳۵۴

3 ...تفسیر ابن ابی حاتم، پ۳۰، الملک، تحت الآیۃ:۲، ۱۰/۳۳۶۳

4 ...فتح الباری، کتاب الرقاق، باب صفۃ الجنۃ والنار، ۱۱/۳۵۸، تحت الحدیث:۶۵۴۸

5 ...کتاب العظمۃ، باب صفۃ ملک الموت، ص۱۵۷، حدیث:۴۴۱، ملتقطاً

इन आसार से मा'लूम होता है कि मौत एक जिस्म है जो मेंढे की शक्ल में है, वोह कोई सिफ़त नहीं है और इस की मज़ीद वज़ाहत सहीहैन की इस रिवायत से होती है कि "क़ियामत में मौत को चितकब्रे मेंढे की शक्ल में ला कर जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान खड़ा कर दिया जाएगा, फिर (मख़्लूक़ से) पूछा जाएगा : क्या तुम इसे पहचानते हो ? लोग कहेंगे : हां येह मौत है। क्यूंकि हर एक उसे देख चुका होगा। फिर उसे ज़ब्ह कर दिया जाएगा।"(1)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी रिवायत में है : "मौत को बकरी की त़रह ज़ब्ह कर दिया जाएगा।"(2)

क्या मौत बुरी है ?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मौत के अचानक आ जाने के बारे में पूछा कि क्या येह बुरी है ? तो आप ने फ़रमाया : क्यूंकर बुरी है, मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मौत मोमिन के लिये राहत और गुनाहगार के लिये अफ़्सोस नाक पकड़ है।(3)

...

बाब नम्बर 12

मरज़े मौत, ब वक़्ते मौत और बा'दे मौत मरने वाले के पास कहे जाने वाले कलिमात और पढ़ी जाने वाली दुआ़ओं और सूरतों का बयान

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे नामदार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस मरने वाले के सिरहाने सूरए यासीन शरीफ़ तिलावत की जाती है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर आसानी फ़रमाता है।(4)

1 ...مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها، باب النار یدخلها الجبارون، ص۱۵۲۶، حدیث:۲۸۴۹

2 ...مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالک، ۳/۷۱، حدیث:۲۸۹۱

3 ...شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، ۷/۲۵۵، حدیث:۱۰۲۱۸

4 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب مایقال عند الموت...الخ، ۵/۴۵۴، حدیث:۱۹۵

हज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया अपने मुर्दों के पास सूरए यासीन पढ़ो ।[1]

हज़रते सय्यिदुना इब्ने हि़ब्बान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : मुराद येह है कि जो बन्दा मरने लगे उस के पास पढ़ो क्यूंकि मुर्दे पर नहीं पढ़ा जाता ।[2]

मरने वाले के पास सूरए रअ़्द पढ़ने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन ज़ैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मरने वाले के पास सूरए रअ़्द का पढ़ना मुस्तह़ब है क्यूंकि इस से मय्यित पर तख़्फ़ीफ़ होती है और रूह़ का निकलना आसान हो जाता है ।

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में मरने वाले के पास येह कहा जाता था : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़ुलां बिन फ़ुलां की मग़्फ़िरत फ़रमा, इस की क़ब्र को ठन्डी और वसीअ़ कर दे, मरने के बा'द इसे चैन अ़ता फ़रमा, प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का क़ुर्ब नसीब कर, इसे दोस्त रख और इस की रूह़ को नेकों की अरवाह़ की त़रफ़ बुलन्द फ़रमा, हमें इस के साथ ऐसे घर में जम्अ़ फ़रमा जिस में सिह़्ह़त बाक़ी रहे, दुख और थकावट दूर हो । नीज़ बारगाहे रिसालत में मुसलसल दुरूद पढ़ा जाता, यहां तक कि उस की रूह़ क़ब्ज़ हो जाती ।[3]

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : अन्सारी सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان मरने वाले के पास सूरए बक़रह पढ़ते थे ।[4]

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

وَمَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجۡعَلۡ لَّہٗ مَخۡرَجًا ۙ﴿۲﴾

(پ۲۸،الطلاق:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा ।*

---

1 ...ابو داود، کتاب الجنائز، باب القراءۃ عند المیت، ۳/۲۵۶، حدیث:۳۱۲۱

2 ...الاحسان، کتاب الجنائز، فصل فی المحتضر، ۵/۳، تحت الحدیث:۲۹۹۱، بتغیر

3 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند المریض اذا حضر، ۳/۱۲۳، حدیث:۲

4 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند المریض اذا حضر، ۳/۱۲۳، حدیث:۲

की तफ़्सीर में फ़रमाते है : या'नी दुन्यावी शुब्हात से, मौत की सख़्ती से और बरोज़े क़ियामत हिसाब किताब के लिये खड़े होने से नजात की राह निकाल देगा।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَقِّنُوْا مَوْتَاكُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا الله या'नी अपने मुर्दों को لَا اِلٰهَ اِلَّا الله की तल्क़ीन करो।(2)

सय्यिदुना इब्ने ह़िब्बान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : मुराद येह है कि जब बन्दा ह़ालते नज़्अ़ में हो तो उसे तल्क़ीन करो।(3)

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मुबश्शिरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ كَانَ اٰخِرُ كَلَامِهٖ لَا اِلٰهَ اِلَّا الله دَخَلَ الْجَنَّة या'नी जिस का आख़िरी कलाम لَا اِلٰهَ اِلَّا الله होगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।(4)

बच्चों की तरबिय्यत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने बच्चों को सब से पहले لَا اِلٰهَ اِلَّا الله बोलना सिखाओ और उन्हें मौत के वक़्त भी لَا اِلٰهَ اِلَّا الله की तल्क़ीन करो क्यूंकि जिस का पहला और आख़िरी कलाम لَا اِلٰهَ اِلَّا الله हो और फिर वोह हज़ार बरस भी ज़िन्दगी गुज़ारे तो उस से एक गुनाह के बारे में भी नहीं पूछा जाएगा।(5)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "जब मरीज़ पर मरज़ शदीद हो जाए तो उस को कलिमए त़य्यिबा ज़बरदस्ती न पढ़ाओ बल्कि उसे तल्क़ीन करो (या'नी उस के पास पढ़ते रहो) क्यूंकि कभी किसी मुनाफ़िक़ का ख़ातिमा कलिमए त़य्यिबा पर नहीं हुवा।"(6)

---

1 ...حلية الاولياء، قتادة بن دعامة، ۲/۳۸۷، حديث: ۲۶۲۴

2 ...مسلم، كتاب الجنائز، باب تلقين الموتى، ص ۴۵۶، حديث: ۹۱۶

3 ...الاحسان، كتاب الجنائز، فصل فى المحتضر، ۵/۳، تحت الحديث: ۲۹۹۱

4 ...ابو داود، كتاب الجنائز، باب فى التلقين، ۳/۲۵۵، حديث: ۳۱۱۶

5 ...شعب الايمان، باب فى حقوق الاولاد والاهلين، ۶/۳۹۷، حديث: ۸۶۴۹

6 ...تلخيص الحبير، كتاب الجنائز، ۲/۲۴۱، تحت الحديث: ۷۳۰

मां की ना फ़रमानी का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू औफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : एक आदमी बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : यहां एक नौजवान की मौत का वक़्त क़रीब है उसे कलिमा पढ़ने का कहा गया लेकिन वोह नहीं पढ़ पा रहा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : क्या वोह अपनी ज़िन्दगी में कलिमा नहीं पढ़ता था ? लोगों ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं, ज़रूर पढ़ता था। इरशाद फ़रमाया : तो फिर किस चीज़ ने उसे वक़्ते मर्ग कलिमा पढ़ने से रोक दिया ? फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस नौजवान के पास तशरीफ़ ले गए और इरशाद फ़रमाया : नौजवान لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहो। उस ने अ़र्ज़ की : मैं येह नहीं कह पा रहा। इरशाद फ़रमाया : क्यूं ? अ़र्ज़ की : मैं मां का ना फ़रमान रहा हूं। आप ने पूछा : मां ज़िन्दा है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां। (चुनान्चे, उस की वालिदा को बारगाहे नबवी में हाज़िर किया गया) आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस से फ़रमाया : येह तुम्हारा बेटा है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : अगर एक ज़बरदस्त आग जलाई जाए और तुम से कहा जाए कि अगर तुम राज़ी न हुई तो इस नौजवान को आग में डाल देंगे तो तुम क्या करोगी ? वोह अ़र्ज़ गुज़ार हुई : फिर तो मैं इसे मुआ़फ़ कर दूंगी। इरशाद फ़रमाया : फिर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और हमें गवाह बना कर कहो कि तुम इस से राज़ी हो। उस ने अ़र्ज़ की : मैं अपने बेटे से राज़ी हूं। फिर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस नौजवान से फ़रमाया : لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहो। उस ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ कहा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द इन अल्फ़ाज़ के साथ बयान की : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَنْقَذَہٗ بِیْ مِنَ النَّارِ या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस ख़ुदा के लिये हैं जिस ने मेरे तुफ़ैल इसे जहन्नम से बचा लिया।(1)

बुरी सोहबत का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान मुह़ारिबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : एक आदमी को वक़्ते वफ़ात कलिमा पढ़ने की तल्क़ीन की गई तो उस ने कहा : मैं नहीं पढ़ सकता क्यूंकि मेरी निशस्त व बरख़ास्त ऐसे बुरे लोगों के साथ थी जो मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र व ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को बुरा भला कहने का कहते थे।(2)

---

❶...شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/۱۹۷، حدیث: ۷۸۹۲

❷...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۳۳۹۸، عبد اللہ ویقال عتیق بن عثمان، ۳۰/۴۰۳

नज़्ए रूह में आसानी

हज़रते सय्यिदुना त़लह़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बयान करते हैं : हम ने हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : मैं एक ऐसा कलिमा जानता हूं कि जब मरने वाला इसे पढ़ ले तो उस की रूह़ उस के जिस्म से निहायत सुकून से जुदा होती है और कल क़ियामत में उस के लिये नूर होगा और वोह कलिमा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ है।

एक रिवायत के अल्फ़ाज़ यूं हैं कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे खुशह़ाल कर देगा और उस के रंग को रौशन फ़रमा देगा और वोह बन्दा वोह कुछ देखेगा जो उसे खुश कर दे (वोह कलिमा) لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ है।"(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने क़ब्ज़े रूह़ के वक़्त एक शख़्स के आ'ज़ा चीर कर देखे लेकिन कोई नेक अ़मल न पाया फिर उस का दिल चीर कर देखा तो उस में भी कोई भलाई न पाई, फिर जबड़े चीरे तो उस की ज़बान की नोक तालू से चिमटी हुई पाई गोया वोह لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कह रहा था बस इस कलिमए तौह़ीद की बदौलत उस की मग़्फ़िरत कर दी गई।(2)

हज़रते सय्यिदुना फ़र्क़द सबख़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : जब बन्दे की मौत का वक़्त आता है तो बाईं जानिब वाला फ़िरिश्ता दाईं जानिब वाले से कहता है : नर्मी कर। दाईं जानिब वाला कहता है : नहीं करूंगा, हो सकता है येह (सख़्ती देख कर) कलिमए त़य्यिबा पढ़ ले तो मैं उसे लिख लूं।(3)

जहन्नम की आग कभी न जलाए

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि जिस ने वक़्ते वफ़ात येह कलिमात कह लिये आग उसे कभी न जलाएगी : لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْم या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत

---

1 ...مسند ابی یعلی، مسند طلحة بن عبید اللہ، ۱/ ۲۷۸، ۲۸۲، حدیث: ۲۳۶، ۲۵۱

2 ...شعب الایمان، باب فی عیادة المریض، ۶/ ۵۴۵، حدیث: ۹۲۳۵

3 ...حلیة الاولیاء، فرقد السبخی، ۳/ ۵۵، حدیث: ۳۱۴۶

के लाइक़ नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है और नेकी की क़ुव्वत और गुनाहों से बचने की त़ाक़त बुलन्द अ़ज़्मत वाले रब عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है।(1)

इस्मे आ'ज़म

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इस्मे आ'ज़म न बताऊं, ह़ज़रते यूनुस عَلَیْہِ السَّلَام की येह दुआ़ : "لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَکَ اِنِّیْ کُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ"(2) इस्मे आ'ज़म है जिस शख़्स ने मरज़े वफ़ात में इसे 40 मरतबा पढ़ लिया और फिर इसी में वफ़ात पा गया तो उसे शहीद का अज्र दिया जाएगा और सिह़्ह़त याब हो गया तो ऐसा हुवा कि गुनाहों से भी पाक साफ़ हो चुका होगा।(3)

अ़ज़ाबे जहन्नम से नजात की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा ! क्या तुम्हें ऐसी सच्ची बात न बताऊं जिस को बन्दा अपने मरज़े वफ़ात के आग़ाज़ पर पढ़ ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से नजात अ़त़ा फ़रमा देता है। मैं ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ज़रूर बताइये। इरशाद फ़रमाया :

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ وَھُوَ حَیٌّ لَّا یَمُوْتُ وَسُبْحٰنَ اللہِ رَبِّ الْعِبَادِ وَالْبِلَادِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ حَمْدًا کَثِیْرًا طَیِّبًا مُّبَارَکًا فِیْہِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ وَّاللہُ اَکْبَرُ کِبْرِیَآءُہٗ وَجَلَالُہٗ وَقُدْرَتُہٗ بِکُلِّ مَکَانٍ اَللّٰھُمَّ اِنْ کُنْتَ اَمْرَضْتَنِیْ لِتَقْبِضَ رُوْحِیْ فِیْ مَرَضِیْ ھٰذَا فَاجْعَلْ رُوْحِیْ فِیْ اَرْوَاحِ مَنْ سَبَقَتْ لَھُمْ مِنْکَ الْحُسْنٰی وَاَعِذْنِیْ مِنَ النَّارِ کَمَا اَعَذْتَ اُولٰٓئِکَ الَّذِیْنَ سَبَقَتْ لَھُمْ مِنْکَ الْحُسْنٰی

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई लाइक़े इ़बादत नहीं जो ज़िन्दा करता और मारता है और वोह खुद ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर नक़्स व ऐ़ब से पाक, बन्दों और शहरों का मालिक है, हर ह़ाल में पाकीज़ा, बरकत वाली और बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है उस की किब्रियाई, अ़ज़्मत व जलालत और क़ुदरत हर जगह है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू ने मुझे इस मरज़ में मेरी रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये मुब्तला किया है

1....معجم اوسط، ۲/۱۸۴، حدیث:۲۹۵۸

2.....तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई मा'बूद नहीं सिवा तेरे पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बेजा हुवा। (پ۱۷، الانبیاء:۸۷)

3....مستدرک حاکم، کتاب الدعاء والتکبیر، باب ایما مسلم دعا بدعوة...الخ، ۲/۱۸۳، حدیث:۱۹۰۸

तो मेरी रूह को उन लोगों की अरवाह में शामिल फ़रमा जिन के लिये तेरी त़रफ़ से भलाई का वा'दा हो चुका और मुझे जहन्नम से पनाह दे जिस त़रह तू ने उन को पनाह दी जिन के लिये तेरी त़रफ़ से भलाई का वा'दा हो चुका। (ऐ अबू हुरैरा) अगर तुम ऐसे मरज़ में इन्तिक़ाल कर गए तो रिज़ाए इलाही और जन्नत तुम्हारा मुक़द्दर होगा और **अगर तुम ने गुनाह किये होंगे तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें मुआ़फ़ फ़रमा देगा।**(1)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से चन्द कलिमात सुने हैं, जो शख़्स वक़्ते वफ़ात येह कलिमात पढ़ ले दाख़िले जन्नत होगा, तीन मरतबा لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْم तीन मरतबा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن और تَبَارَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ يُحْيِيْ وَ يُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْر।(2)

मोमिन की रूह निकलने की ह़ालत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मोमिन बन्दा मेरे नज़दीक हर लिह़ाज़ से ख़ैर पर है, वोह मेरी ह़म्द में मश्ग़ूल होता है और मैं उस के पहलूओं से उस की रूह क़ब्ज़ कर लेता हूं।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन की रूह इस ह़ाल में उस के पहलूओं से निकलती है कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द कर रहा होता है।(4)

किसी की रूह निकल रही हो तो येह कहो

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تعالى عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : मैं उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के पास बैठी थी, किसी ने आ कर बताया कि फ़ुलां

(1)...الکامل لابن عدی، رقم: ۱۲۶۲، عامر بن عبد اللہ، ۶/ ۱۵۸، موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المرض والکفارات، ۴/ ۲۷۰، حدیث: ۱۵۹

(2)...کنز العمال، کتاب الصحبۃ من قسم الاقوال، الباب الرابع، ۹/ ۴۱، حدیث: ۲۵۱۵۴، بحوالہ ابن عساکر

(3)...مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/ ۲۴۵، حدیث: ۸۵۰۰

(4)...مسند امام احمد، مسند عبد اللّٰہ بن العباس، ۱/ ۵۷۵، حدیث: ۲۴۱۲

शख़्स मरने वाला है । आप ने फ़रमाया : जाओ और जब उस की रूह निकलने लगे तो तुम यूं कहना : سَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ[1]

नज़र रूह का तआक़ुब करती है

हज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वक़्ते वफ़ात हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन के पास तशरीफ़ लाए, रूह क़ब्ज़ होने के बा'द उन की आंखें खुली रह गईं तो आप ने अपना हाथ मुबारक बढ़ा कर उन्हें बन्द कर दिया, तमाम घरवाले रोने लगे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें तसल्ली देते हुवे इरशाद फ़रमाया : जब रूह निकलती है तो नज़र उस का पीछा करती है और मलाइका मौजूद होते हैं, अहले ख़ाना जो भी कहें मलाइका उस पर आमीन कहते हैं । फिर बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अबू सलमा का दरजा बुलन्द फ़रमा कर इसे हिदायत याफ़्ता लोगों में पहुंचा दे और इन बाक़ी रहने वालों में इस का सह़ीह़ जानशीन मुक़र्रर फ़रमा और इसे और हमें क़ियामत में बख़्श दे ।[2]

हज़रते सय्यिदुना शद्दाद बिन औस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम मय्यित के पास मौजूद हो तो उस की आंखें बन्द कर दो क्यूंकि निगाह रूह का तआक़ुब करती है और अच्छी बात करो क्यूंकि अहले ख़ाना की बातों पर फ़िरिश्ते आमीन कहते हैं ।[3]

मर्तबए शहादत

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने मुझ से फ़रमाया : बिग़ैर वुज़ू के हरगिज़ न सोना क्यूंकि अरवाह़ जिस ह़ालत में जिस्म से जुदा होती हैं उसी ह़ालत में उठाई जाएंगी ।[4]

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस की रूह ब ह़ालते वुज़ू

1 ...التذکرۃ للقرطبی، باب منہ وما یقال عند التمغیض، ص۳۸
2 ...مسند بزار، حدیث ابی بکرۃ، ۹/۱۲۰، حدیث:۳۶۶۹
3 ...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، باب تغمیض بصر المیت، ۱/۶۷۵، حدیث:۱۳۴۱
4 ...مصنف عبد الرزاق، کتاب الجامع، باب ذکر اللّٰہ فی المضاجع، ۱۰/۹۴، حدیث:۲۰۰۱۳

क़ब्ज़ की गई उसे मर्तबए शहादत अ़ता किया गया ।[1]

मुर्दे की आंखें बन्द करते वक़्त की दुआ़

हज़रते सय्यिदुना बकर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब तुम मुर्दे की आंखें बन्द करो तो यूं कहो : بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰه या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम के साथ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मिल्लत पर ।[2]

• • • • • •

बाब नम्बर 13 मलकुल मौत और इन के मददगारों का बयान

दो फ़रामीने बारी तआ़ला

﴿1﴾

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ (پ۲۱، السجدۃ:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता है मौत का फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है ।

﴿2﴾

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿۶۱﴾ (پ۷، الانعام:۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : यहां तक कि जब तुम में से किसी को मौत आती है हमारे फ़िरिश्ते उस की रूह क़ब्ज़ करते हैं और वोह क़ुसूर नहीं करते ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا (پ۷، الانعام:۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हमारे फ़िरिश्ते उस की रूह क़ब्ज़ करते हैं ।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस से मुराद वोह फ़िरिश्ते हैं जो मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام के मददगार हैं ।[3]

---

1 ...معجم صغیر، جزء۲، ص۳۲، حدیث:۸۵۷

2 ...سنن کبری للبیهقی، کتاب الجنائز، باب مایستحب من اغماض عینیه، ۳/۵۴۰، حدیث:۶۶۰۹

3 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام ابن عباس، ۸/۱۹۷، حدیث:۱۳

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने भी येही तफ़्सीर करते हुवे मज़ीद फ़रमाया कि फिर इन के बा'द मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ख़ुद रूह़ क़ब्ज़ करते हैं।(1)

अफ़्सर और मा तह़्त

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : जो फ़िरिश्ते आदमियों को मौत देने आते हैं वोही उन के औक़ाते मौत भी लिखते हैं और जब किसी को वफ़ात दे देते हैं तो उसे मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के ह़वाले कर देते हैं। मलकुल मौत गोया अफ़्सर हैं और मा तह़्त फ़िरिश्ते उन्हें अरवाह़ सिपुर्द करते हैं।(2)

तख़्लीक़े आदम और मलकुल मौत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जब ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की तख़्लीक़ का इरादा फ़रमाया तो ह़ामिलाने अ़र्श में से एक फ़िरिश्ते को ज़मीन की मिट्टी लाने का हुक्म दिया, जब फ़िरिश्ता मिट्टी लेने नीचे उतरा तो ज़मीन ने अ़र्ज़ की : जिस ने तुझे भेजा है मैं उसी का वासित़ा देती हूं आज मुझ से कुछ मत ले कि कल वोह आग का ह़िस्सा बन जाएगा, फ़िरिश्ता उसे छोड़ कर बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर हुवा तो रब्बुल इ़ज़्ज़त جَلَّ جَلَالُه ने इरशाद फ़रमाया : तुझे मेरा हुक्म पूरा करने से किस चीज़ ने रोका ? फ़िरिश्ते ने अ़र्ज़ की : ज़मीन ने तेरा वासित़ा दिया तो मुझे येह मुआ़मला बहुत बड़ा मा'लूम हुवा कि मैं उस काम को करने से न रुकूं जिस में मुझे तेरा वासित़ा दिया गया हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक और फ़िरिश्ते को भेज दिया, उस के साथ भी येह मुआ़मला पेश आया ह़त्ता कि रब तआ़ला ने यके बा'द दीगरे तमाम ह़ामिलाने अ़र्श फ़िरिश्तों को भेजा बिल आख़िर जब मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा तो ज़मीन ने उन से भी वोही कुछ कहा जो तमाम फ़िरिश्तों से कहा था। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : जिस ने मुझे भेजा है वोह तुझ से ज़ियादा फ़रमां बरदारी का ह़क़दार है। चुनान्चे, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने पूरी ज़मीन से अच्छी बुरी मिट्टी ली और बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में ह़ाज़िर कर दी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उस पर जन्नत का पानी डाला तो वोह सियाह गारा बन गई फिर उस से ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तख़्लीक़ फ़रमाई।

---

1 ... كتاب العظمة، باب صفة ملک الموت، ص١٢٥، حديث:٤٥٦

2 ... كتاب العظمة، باب صفة ملک الموت، ص١٢٧، حديث:٤٧٠

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى से भी इसी की मिस्ल मरवी है, इन्हों ने पहले भेजे जाने वाले फ़िरिश्ते का नाम इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام और दूसरे का मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام बयान किया है जब कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द और बा'ज़ दीगर सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की रिवायत में पहले का नाम जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام और दूसरे का मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام बताया गया है।(1)

हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : पहले फ़िरिश्ते जिब्रील और दूसरे मीकाईल (عليهما السلام) थे(2) और आख़िरी के बारे में फ़रमाया : उन को मलकुल मौत कहा जाता है और मौत का मुआ़मला उन्ही के सिपुर्द है।(3)

चार मुक़र्रब फ़िरिश्ते और इन की ज़िम्मेदारियां

हज़रते सय्यिदुना इब्ने साबित رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : निज़ामे काइनात की तदबीर इन चार फ़िरिश्तों के सिपुर्द की गई है हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल, हज़रते सय्यिदुना मीकाईल, हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील और हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत (عَلَيْهِمُ السَّلَام) जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام लश्करों और हवाओं पर मुक़र्रर हैं, मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام बारिश बरसाने और नबातात उगाने पर मुक़र्रर हैं, मलकुल मौत या'नी इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام अरवाह़ क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर हैं और इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام इन तीनों फ़िरिश्तों तक अह़कामे इलाही पहुंचाते हैं।(4)

मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की रफ़्तार

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया : क्या मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام तने तन्हा अरवाह़ क़ब्ज़ करते हैं ? तो आप ने जवाब दिया : रूह़ों का मुआ़मला उन के सिपुर्द है और दीगर कई फ़िरिश्ते इस काम पर उन के मददगार हैं और वोह खुद सब फ़िरिश्तों के क़ाइद हैं,

1...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۵۷۸، آدم نبی اللہ، ۷/۳۷۷

2...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۵۷۸، آدم نبی اللہ، ۷/۳۷۸

3...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۵۷۸، آدم نبی اللہ، ۷/۳۷۹

4...شعب الایمان، باب فی الایمان بالملائکة، ۱/۱۷۷، حدیث: ۱۵۸

کتاب العظمة، باب ذکر میکائیل، ص ۱۳۴، حدیث: ۳۷۸

मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام मशरिक़ से मग़रिब तक एक क़दम में पहुंच जाते हैं। अ़र्ज़ की गई : मोमिनीन की रूहें कहां होती हैं ? फ़रमाया : सिदरह के पास।[1]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ﴿۵﴾ (پ۳۰، النّٰزعٰت:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर काम की तदबीर करें।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस से मुराद वोह फ़िरिश्ते हैं जो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के साथ होते हैं और अरवाह़ क़ब्ज़ करने के वक़्त मुर्दों के पास जाते हैं, कोई रूह़ ले कर ऊपर चढ़ता है, कोई दुआ़ पर आमीन कहता है, कोई (मुसलमान) मय्यित के लिये इस्तिग़फ़ार करता रहता है ह़त्ता कि नमाज़े जनाज़ा के बा'द उसे क़ब्र में उतार दिया जाए।[2]

हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿۲۷﴾ (پ۲۹، القيامة:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और लोग कहेंगे कि है कोई झाड़ फूंक करे।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस से मुराद मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के मुआ़विन फ़िरिश्ते हैं जो एक दूसरे से कहते हैं : इस शख़्स की रूह़ क़दम के तलवे से निकलने की जगह (या'नी नाक) तक कौन चढ़ाएगा ?[3]

येह मोमिन है इस पर नर्मी कर

हज़रते सय्यिदुना ख़ज़रज अन्सारी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को एक क़रीबुल मर्ग अन्सारी सह़ाबी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के पास देखा, आप मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को देख कर फ़रमा रहे थे : ऐ मलकुल मौत ! मेरे सह़ाबी के साथ नर्मी करो क्यूंकि येह मोमिन है। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप की आंखें ठन्डी हों और क़ल्बे मुक़द्दस खुश व ख़ुर्रम हो, मैं तो हर मोमिन पर नर्मी ही करता हूं, या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं जब आदमी की रूह़ क़ब्ज़ कर लेता हूं तो चीख़ने वाले चीख़ते हैं मैं रूह़ ले कर खड़ा हो जाता हूं और कहता हूं : येह चीख़ना चिल्लाना कैसा ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हम ने इस पर ज़ुल्म नहीं

---

1 ...كتاب العظمة، باب صفة ملك الموت، ص١٥٥، حديث:٤٣٣

2 ...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب ملك الموت واعوانه، ٥/٤٦٣، حديث:٢٢٦

3 ...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب ملك الموت واعوانه، ٥/٤٦٣، حديث:٢٢٧

किया, न इसे वक़्त से पहले मौत दी और हम ने इसे मौत दे कर कोई गुनाह भी नहीं किया, अगर तुम लोग खुदा عَزَّوَجَلَّ के किये पर राज़ी रहे तो अज्र पाओगे, अगर नाराज़ी का इज़्हार किया तो गुनाहगार होगे और हमें तो तुम्हारे पास बार बार आना है, इस लिये तुम डरते रहो, ख़ैमों वाले हों या कच्चे मकानों वाले, नेक हों या बद, पहाड़ी अ़लाक़ों वाले हों या मैदानी अ़लाक़ों वाले, मैं हर दिन रात उन्हें ग़ौर से देखता हूं यहां तक कि मैं उन के छोटे बड़ों को उन से भी ज़ियादा पहचानता हूं, ब खुदा ! अगर मैं मच्छर की जान लेना चाहूं तो जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हुक्म न दे मैं नहीं ले सकता।(1)

पाबन्दे नमाज़ और मलकुल मौत

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام नमाज़े पंजगाना के वक़्त ग़ौर से देखते हैं और जब मौत का वक़्त आता है तो जो पांचों नमाज़ों की पाबन्दी करने वाला होता है मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस के क़रीब हो जाते हैं और शैतान उस से दूर हो जाता है और इस इन्तिहाई कठिन वक़्त में मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उसे कलिमए तृय्यिबा की तल्क़ीन करते हैं।(2)

हर दिन हर घर में तीन मरतबा नज़र

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام हर दिन हर घर में तीन मरतबा ग़ौर से देखते हैं, इन में से जिन का रिज़्क़ पूरा हो चुका हो उस की रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं, जब रूह क़ब्ज़ होती है तो बन्दे के अहले ख़ाना रोना धोना शुरूअ़ कर देते हैं, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام दरवाज़े के पट पकड़ कर खड़े हो जाते हैं और फ़रमाते हैं : मैं ने तुम्हारा कोई क़ुसूर नहीं किया, मैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मुक़र्रर हूं, ब खुदा ! न मैं ने इस का रिज़्क़ खाया, न इस की उ़म्र घटाई और न ही वक़्ते मुक़र्रर में कोई कमी की है मुझे तो तुम्हारे पास बार बार आना है यहां तक कि तुम में से कोई भी न बचेगा।(3)

---

1 ...معجم كبير، ۴/۲۲۰،حديث:۴۱۸۸

2 ...معجم كبير، ۴/۲۲۰،حديث:۴۱۸۸، معرفة الصحابة لابی نعيم، رقم:۸۶۷، خزرج، ۲/۲۳۱،حديث:۲۵۷۲

3 ...موسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب ملك الموت واعوانه، ۵/۴۶۰،حديث:۲۱۹

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : अगर लोग मौत के फ़िरिश्ते का मक़ाम देख लें और उस का कलाम सुन लें तो मय्यित को भूल कर खुद पर रोना शुरूअ़ कर दें।[1]

हज़रते सय्यिदुना सलम बिन अ़तिय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अपने एक दोस्त की मरज़े वफ़ात में उस की इयादत को गए तो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को मुख़ात़ब कर के कहा : ऐ मलकुल मौत ! इस पर नर्मी करना क्यूंकि येह मोमिन है। बीमार दोस्त ने कहा : मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमा रहे हैं : मैं हर मोमिन पर नर्मी ही करता हूं।[2]

सख़ावत की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना मा'यूफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना हकम बिन मुत़्त़लिब बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की वफ़ात के वक़्त उन के क़रीब था, वोह तक्लीफ़ के आ़लम में थे एक शख़्स ने उन की तक्लीफ़ देख कर कहा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन पर आसानी फ़रमा क्यूंकि येह बहुत सख़ी थे। वोह हज़रत की ता'रीफ़ करने लगा। आप को कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो पूछा : वोह शख़्स कौन है ? बताया गया कि फ़ुलां है। फिर उस को मुख़ात़ब कर के फ़रमाने लगे : मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام तुम से फ़रमा रहे हैं : मैं हर सख़ी मोमिन पर नर्मी ही करता हूं। इतना कहा और इन्तिक़ाल फ़रमा गए।[3]

सय्यिदुना इब्राहीम और मलकुल मौत (عليهما السلام)

हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने घर में तशरीफ़ फ़रमा थे कि अचानक एक ख़ूब सूरत जवान अन्दर आया। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ऐ बन्दए ख़ुदा ! तुझे किस ने मेरे घर में आने दिया ? उस ने कहा : ख़ुद घरवाले ने। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : बेशक घरवाला इस का ह़क़दार है पर तुम हो कौन ? उस ने अ़र्ज़ की : मौत का फ़िरिश्ता। इरशाद फ़रमाया : मुझे तुम्हारी चन्द अ़लामतें बताई गई थीं मगर तुम में एक भी नज़र नहीं आ रही, लिहाज़ा पीठ फेरो। चुनान्चे, फ़िरिश्ते ने पीठ फेरी तो उस के आगे पीछे आंखें थीं और जिस्म का हर बाल नोक दार

1 ...احياء العلوم، كتاب ذكر الموت، باب بيان الحسرة...الخ، ٥/ ٢١٥

2 ...اتحاف الخيرة المهرة، كتاب الجنائز، باب عيادة المريض وفضلها، ٣/ ١٧١، حديث: ٢٣٦٧

3 ...موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب مكارم الاخلاق، باب الجود واعطاء السائل، ٣/ ٥٣١، حديث: ٣٨٢

तीर की त़रह़ खड़ा था, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने येह देख कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगी और इरशाद फ़रमाया : अपनी पहली शक्ल में आ जाओ, येह सुन कर मौत के फ़िरिश्ते ने कहा : ऐ इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ! जब ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ मुझे अपने उस बन्दे की त़रफ़ भेजता है जिस की मुलाक़ात को वोह पसन्द करता है तो उस ख़ूब सूरत शक्ल में भेजता है जिस में आप ने मुझे पहले देखा है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने घर में एक शख़्स को देखा तो पूछा : तुम कौन हो ? उस ने कहा : मैं मलकुल मौत हूं। आप ने इरशाद फ़रमाया : अगर तुम सच्चे हो तो मुझे कोई निशानी दिखाओ ताकि मैं तुम्हारी बात मान सकूं। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : आप अपना चेहरा फेर लीजिये, आप ने चेहरा फेर लिया फिर मुड़ कर देखा तो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की वोह सूरत देखी जिस पर वोह मोमिनीन की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं या'नी ऐसी नूरानिय्यत और ख़ूब सूरती जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही जानता है। उन्हों ने फिर कहा : अपना चेहरा फेर लीजिये। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने चेहरा फेर लिया फिर मुड़ कर देखा तो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की वोह सूरत देखी जिस पर वोह कुफ़्फ़ार और फ़ुज्जार की रूह़ निकालते हैं, आप عَلَيْهِ السَّلَام शदीद ख़ौफ़ज़दा हो गए ह़त्ता कि आप का जोड़ जोड़ हिलने लगा और आप ने अपना पेट ज़मीन से यूं मिला दिया गोया अभी रूह़ परवाज़ कर जाएगी।(2)

येही काफ़ी है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को ख़लील बनाया तो मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने रब عَزَّوَجَلَّ से इजाज़त चाही कि वोह येह ख़ुश ख़बरी इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को दे दें तो रब तआ़ला ने इजाज़त दे दी। चुनान्चे, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने आप की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर ख़ुश ख़बरी दी तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द की फिर इरशाद फ़रमाया : ऐ मलकुल मौत ! मुझे दिखाओ कि तुम किस शक्ल में कुफ़्फ़ार की रूह़ क़ब्ज़ करते हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : हु़ज़ूर ! आप इस की ताब नहीं ला सकेंगे। इरशाद फ़रमाया : क्यूं नहीं (तुम दिखाओ)।

---

1 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللّٰہ، ۵/ ۴۴۷، حدیث: ۱۷۴

2 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانہ، ۵/ ۴۶۸، حدیث: ۲۴۳، عن کعب الاحبار

उन्हों ने अ़र्ज़ की : अपना चेहरा फेर लीजिये । जब आप عَلَيْهِ السَّلَام ने चेहरा फेर कर दोबारा देखा तो एक इन्तिहाई काला शख़्स है जिस का सर आस्मान को छू रहा है और मुंह से शो'ले निकल रहे हैं और उस के जिस्म पर जितने भी बाल हैं सब इन्सानी सूरत में हैं और उन के भी मूंहों और कानों से आग लपटें मार रही है । येह देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام पर ग़शी त़ारी हो गई जब इफ़ाक़ा हुवा तो देखा मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام अपनी पहली सूरत पर थे । फ़रमाने लगे : ऐ मलकुल मौत ! अगर काफ़िर को सब रंजो ग़म और तक्लीफ़ से क़त़्ए नज़र मह़्ज़ तुम्हारी येह ख़ौफ़नाक शक्ल ही दिखा दी जाए तो उस के लिये काफ़ी है । अब वोह सूरत दिखाओ जिस में मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ करते हो । उस ने अ़र्ज़ की : ज़रा रुख़ दूसरी त़रफ़ कीजिये, आप عَلَيْهِ السَّلَام ने चेहरा फेर कर जब दोबारा देखा तो एक ह़सीनो जमील नौजवान खड़ा है और उस का जिस्म सफ़ेद कपड़ों में मल्बूस ख़ुश्बू से महक रहा है । येह देख कर फ़रमाने लगे : ऐ मलकुल मौत ! अगर मोमिन ब वक़्ते वफ़ात दीगर ए'ज़ाज़ो इकराम से क़त़्ए नज़र सिर्फ़ तुम्हारी येह सूरत ही देख ले तो यक़ीनन येह उसे काफ़ी है ।(1)

मलकुल मौत का इ़ल्म व मुशाहदा

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : सारी ज़मीन मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के लिये त़श्त की मिस्ल कर दी गई कि जहां से चाहें उठा लें और उन के लिये कुछ मददगार फ़िरिश्ते बना दिये गए हैं जो अरवाह़ क़ब्ज़ करते हैं फिर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उन से ले लेते हैं ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम बिन उ़तैबा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के सामने दुन्या ऐसे है जैसे किसी शख़्स के सामने त़श्त होता है ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अश्अ़स बिन जाबिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه(4) फ़रमाते हैं : मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام जिन का नाम इ़ज़्राईल है इन की दो आंखें चेहरे पर हैं और दो गुद्दी की जानिब । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने इन से पूछा : एक जान मशरिक़ में और एक मग़रिब में हो, ज़मीन

---

1 ...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب ملك الموت وأعوانه، ۵/۴۶۷، حديث: ۲۴۲

2 ...تفسير طبری، سورة الانعام، تحت الآية: ۶۱، ۵/۲۱۵، الرقم: ۱۳۳۳۷

3 ...كتاب العظمة، باب صفة ملك الموت، ص ۱۶۷، حديث: ۴۷۱

4 .....मतन में इस मक़ाम पर "अश्अ़स बिन सुलैम" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "अश्अ़स बिन जाबिर" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है ।

पर वबा फैली हो और दो लश्कर आपस में जंग कर रहे हों तो उस वक़्त आप रूह़ कैसे क़ब्ज़ करते हैं ? अ़र्ज़ की : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से अरवाह़ को बुलाता हूं तो वोह मेरी दो उंगलियों के दरमियान आ जाती हैं। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अश्अ़स رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : सारी ज़मीन ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام के लिये त़श्त की मानिन्द कर दी गई है वोह जहां से चाहते हैं उठा लेते हैं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कम बिन उ़तैबा رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब عَلَیْہِ السَّلَام ने मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाया : क्या हर जानदार की रूह़ तुम क़ब्ज़ करते हो ? अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : येह कैसे जब कि इस वक़्त तुम मेरे पास हो और मख़्लूक़ जहां में फैली हुई है ? अ़र्ज़ की : मेरे लिये सारी दुन्या उस त़श्त की मिस्ल मुसख़्ख़र कर दी गई है जो आप में से किसी के सामने रखा हो तो वोह जहां से जो चाहे खाए दुन्या मेरे लिये ऐसे ही है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़ैस अज़्दी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से पूछा गया : आप अरवाह़ कैसे क़ब्ज़ करते हैं ? फ़रमाया : मैं उन्हें बुलाता हूं तो वोह मेरे पास आ जाती हैं।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام बैठे हुवे हैं और सारी दुन्या उन के दोनों घुटनों के आगे मौजूद है और वोह लोह़ (तख़्ती) जिस में इन्सानों की उ़म्रें दर्ज हैं वोह उन के क़ब्ज़े में है, मुआ़विन फ़िरिश्ते सामने खड़े हैं, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام नज़र जमाए उस तख़्ती को देख रहे हैं जैसे ही किसी बन्दे का वक़्त पूरा होता है वोह फ़रमाते हैं : उस की रूह़ क़ब्ज़ कर लो।(4)

मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुदरत व त़ाक़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से पूछा गया : दो शख़्स हैं, एक मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में दोनों को एक साथ ऐसे मौत आती है जैसे दोनों पलकें साथ झपकती हैं तो मलकुल मौत को दोनों पर कैसे क़ुदरत है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام की क़ुदरत मशरिक़ो मग़रिब में, अन्धेरे व रौशनी में और ख़ुश्की व तरी में रहने वालों

1...كتاب العظمة، باب صفة ملك الموت، ص١٢٠، حديث: ٤٣٥

2...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب ملك الموت واعوانه، ٤٦٩/٥، حديث: ٢٤٦

3...المجالسة وجواهر العلم، الجزء الخامس، ٢٨٤/١، حديث: ٧٠٤

4...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب ملك الموت واعوانه، ٤٦٩/٥، حديث: ٢٤٨

पर ऐसे है जैसे किसी शख़्स के सामने दस्तर ख़्वान बिछा हो और वोह जहां से जो चाहे ले ले।[1]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ही हर जान की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं और जो कुछ ज़मीन में है उस पर उन्हें ऐसा तसल्लुत़ दिया गया है, जैसे तुम में से कोई अपनी हथेली में मौजूद चीज़ पर मुसल्लत़ होता है, उन के साथ रह़मत के फ़िरिश्तों से कुछ फ़िरिश्ते और अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों से कुछ फ़िरिश्ते होते हैं, जब वोह कोई नेक रूह़ क़ब्ज़ करते हैं तो उसे रह़मत के फ़िरिश्तों के ह़वाले कर देते हैं और जब कोई ख़बीस रूह़ क़ब्ज़ करते हैं तो उसे अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों के सिपुर्द कर देते हैं।[2]

हज़रते सय्यिदुना अबुल मुसन्ना ह़िम्सी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : दुन्या का आसान व सख़्त मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام के रानों के सामने है और उन के साथ रह़मत व अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते हैं, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام रूहें क़ब्ज़ कर के मलाइकए रह़मत और मलाइकए अ़ज़ाब के ह़वाले कर देते हैं। अ़र्ज़ की गई : जब घुमसान की जंग हो और तल्वार बिजली की मानिन्द चल रही हो तो ? फ़रमाया : वोह रूहों को बुलाते हैं तो वोह ह़ाज़िर हो जाती हैं।[3]

हज़रते सय्यिदुना ज़ुहैर बिन मुह़म्मद رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : मौत का फ़िरिश्ता तो एक है ह़ालांकि मशरिक़ो मग़रिब से दो गुरौह आपस में जंग करते हैं तो उन में एक साथ कई हलाकतें होती हैं ! आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मलकुल मौत के लिये दुन्या को समेट दिया है ह़त्ता कि उसे ऐसे कर दिया है जैसे तुम में से किसी के सामने त़श्त हो तो भला उस में से कोई शै उस से दूर हो सकती है ?[4]

हज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام के दोस्त थे एक दिन आप के पास आए तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने पूछा : आख़िर येह क्या मुआ़मला है कि तुम एक घर में आते हो तो तमाम अहले ख़ाना की रूह़ क़ब्ज़ कर लेते हो जब कि उन के पड़ोस में किसी एक की जान भी नहीं लेते ? मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने कहा : मुझे ज़ाती त़ौर पर किसी के मारने का इ़ल्म नहीं होता मैं तो अ़र्श के नीचे होता हूं वहां मुझे

1...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانہ، ۵/۴۶۴، حدیث:۲۳۴

2...درمنثور، سورۃ السجدۃ، تحت الآیۃ:۱۱، ۶/ ۵۴۱

3...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانہ، ۵/۴۶۳، حدیث:۲۲۵

4...درمنثور، سورۃ السجدۃ، تحت الآیۃ:۱۱، ۶/ ۵۴۰

मरने वालों के नामों की फ़ेहरिस्त दे दी जाती है।[1]

मलकुल मौत और सुलैमान عليهما السلام का हमनशीं

हज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार में आए तो आप के हम नशीनों में से एक शख़्स को टिकटिकी बांध कर देखने लगे, जब वापस हुवे तो उस शख़्स ने बारगाहे सुलैमानी में अ़र्ज़ की : हुज़ूर येह कौन थे ? फ़रमाया : येह मौत का फ़िरिश्ता था। उस ने अ़र्ज़ की : वोह तो मुझे ऐसे देख रहे थे जैसे मेरी रूह क़ब्ज़ करना चाहते हैं। आप ने फ़रमाया : तुम्हारा क्या इरादा है ? उस ने अ़र्ज़ की : आप मुझे हवा पर सुवार फ़रमा दें ताकि वोह मुझे हिन्दुस्तान पहुंचा दे। आप ने हवा को बुला कर उसे उस पर सुवार कर दिया और हवा ने उस शख़्स को हिन्द की सर ज़मीन पर पहुंचा दिया। जब दोबारा मलकुल मौत, हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार में हाज़िर हुवे तो आप ने इरशाद फ़रमाया : तुम मेरे एक हम नशीन को घूर क्यूं रहे थे ? अ़र्ज़ की : मैं मुतअ़ज्जिब हो रहा था कि मुझे उस की रूह हिन्द में क़ब्ज़ करने का हुक्म दिया गया है जब कि वोह आप के पास बैठा हुवा था।[2]

हज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाया : जब तुम मेरी रूह क़ब्ज़ करने आओ तो मुझे पहले से इस की ख़बर दे देना। अ़र्ज़ की : मैं आप से ज़ियादा इस बात को नहीं जानता। बस एक रुक़्आ़ मेरी त़रफ़ गिराया जाता है जिस में मरने वालों के नाम होते हैं।[3]

सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام का विसाल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : एक फ़िरिश्ते ने रब عَزَّوَجَلَّ से हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में हाज़िरी की इजाज़त चाही। चुनान्चे, उस ने ज़मीन पर आ कर हज़रत को सलाम किया, हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हारा मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से भी कोई वासित़ा है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां वोह फ़िरिश्तों में मेरे भाई हैं। आप ने इरशाद फ़रमाया : तुम उन से मुझे कोई नफ़्अ़ दिलवा सकते हो ? उस ने अ़र्ज़ की : अगर आप येह चाहें कि कोई चीज़ अपने वक़्त से आगे पीछे हो जाए तो येह नहीं

1...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام سلیمان بن داود، ۸/۱۱۷، حدیث:۲

2...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام سلیمان بن داود، ۸/۱۱۸، حدیث:۳

3...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۲۶۶۲، سلیمان بن داود نبی اللہ، ۲۲/۲۹۵

हो सकता अलबत्ता मैं उन से येह कह सकता हूं कि ब वक़्ते वफ़ात आप पर नर्मी करें, फिर कहने लगा : मेरे परों पर सुवार हो जाइये। आप عَلَيْهِ السَّلَام उस के परों पर सुवार हो गए और वोह आप को आस्मानों की त़रफ़ ले गया, वहां दोनों फ़िरिश्तों की मुलाक़ात हुई तो उस फ़िरिश्ते ने मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से गुज़ारिश की मुझे आप से एक काम है। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मुझे तुम्हारी ग़रज़ मा'लूम है, तुम ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में मुझ से बात करना चाहते हो, लेकिन उन का नाम ज़िन्दों से मिट चुका है और उन की ज़िन्दगी का आधा लम्ह़ा ही बाक़ी है। चुनान्चे, उस फ़िरिश्ते के परों में ही ह़ज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام विसाल फ़रमा गए[(1)],[(2)]

---

1 ...زاد المسير، سورۃ مريم، تحت الاية: ۵۷، ۵/ ۲۴۲

2 .....चार नबी ज़िन्दा हैं कि उन को वा'दए इलाहिया आया ही नहीं इन चारों में से दो आस्मान पर हैं और दो ज़मीन पर। ख़िज़्र व इल्यास (عَلَيْهِمَا السَّلَام) ज़मीन पर हैं और इदरीस व ईसा (عَلَيْهِمَا السَّلَام) आस्मान पर (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 484 मुल्तक़तन) **ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام के आस्मान पर जाने का वाक़िआ :** आप (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) के वाक़िए में उ़लमा को इख़्तिलाफ़ है, इतना तो ईमान है कि आप आस्मान पर तशरीफ़ फ़रमा हैं। क़ुरआने अ़ज़ीम में है : وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝ हम ने उसे बुलन्द मकान पर उठा लिया। (پ۱۶، مریم: ۵۷) बा'ज़ रिवायात में येह भी है कि बा'दे मौत आप आस्मान पर तशरीफ़ ले गए। (تفسیر البغوی، مریم: ۵۷، ج۳، ص۱۶۷) एक रिवायत में येह है कि एक बार आप धूप की शिद्दत में तशरीफ़ लिये जा रहे थे, दोपहर का वक़्त था, आप को सख़्त तक्लीफ़ हुई। ख़याल फ़रमाया कि जो फ़िरिश्ता आफ़्ताब पर मुअक्कल (या'नी मुक़र्रर) है उस को किस क़दर तक्लीफ़ होती होगी ? अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) उस फ़िरिश्ते पर तख़्फ़ीफ़ (या'नी आसानी) फ़रमा। फ़ौरन दुआ़ क़बूल हुई और उस पर तख़्फ़ीफ़ हो गई। उस फ़िरिश्ते ने अ़र्ज़ किया : या अल्लाह ! मुझ पर तख़्फ़ीफ़ किस त़रफ़ से आई ? इरशाद हुवा : "मेरे बन्दे इदरीस (عَلَيْهِ السَّلَام) ने तेरी तख़्फ़ीफ़ के वासिते़ दुआ़ की मैं ने उस की दुआ़ क़बूल की।" अ़र्ज़ की : मुझे इजाज़त दे कि मैं उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होऊं। इजाज़त मिलने पर ह़ाज़िर हुवा। तमाम वाक़िआ़ बयान किया और अ़र्ज़ किया कि "ह़ज़रत का कोई मत़लब हो तो इरशाद फ़रमाएं।" फ़रमाया : एक मरतबा जन्नत में ले चलो। अ़र्ज़ की : येह तो मेरे क़ब्ज़े से बाहर है लेकिन इ़ज़राईल मलकुल मौत से मेरा दोस्ताना है, उन को लाता हूं शायद कोई तदबीर चल जाए। ग़रज़ इ़ज़राईल (عَلَيْهِ السَّلَام) आए, आप ने उन से फ़रमाया : उन्हों ने अ़र्ज़ किया, हुज़ूर ! बिग़ैर मौत के तो जन्नत में जाना नहीं हो सकता। फ़रमाया : रूह़ क़ब्ज़ कर लो। उन्हों ने ब हुक्मे ख़ुदा एक आन के लिये रूह़ क़ब्ज़ की और फ़ौरन जिस्म में डाल दी। आप ने फ़रमाया : मुझ को दोज़ख़ व जन्नत की सैर कराओ। ह़ज़रते इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام दोज़ख़ पर लाए, त़बक़ाते जहन्नम खुलवाए, आप देखते ही बेहोश हो कर गिर पड़े। इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام वहां से ले आए। जब होश हुवा तो अ़र्ज़ किया : येह तक्लीफ़ आप ने अपने हाथों से उठाई। फिर जन्नत में ले गए, वहां की सैर करने के बा'द इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने चलने के वासिते़ अ़र्ज़ किया। आप ने इल्तिफ़ात न फ़रमाया। फिर दोबारा अ़र्ज़ किया : आप ने जवाब न दिया। फिर जब उन्हों ने अ़र्ज़ किया तो फ़रमाया : "अब चलना कैसा ! जन्नत में आ कर भी कोई वापस जाता है ? अल्लाह तआ़ला ने एक फ़िरिश्ते को इन दोनों में फ़ैसला करने के वासिते़ भेजा। उस ने आ कर पहले ह़ज़रते इ़ज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام से सारा वाक़िआ़ सुना फिर आप से दरयाफ़्त किया कि आप क्यूं नहीं तशरीफ़ ले जाते ? इरशाद फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हर जान को मौत चखनी है। (پ۴، ال عمرٰن: ۱۸۵) और मैं मौत का मज़ा चख चुका हूं। और फ़रमाता है : وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا तुम में से हर एक जहन्नम की सैर करेगा। (پ۱۶، مریم: ۷۱) और मैं जहन्नम की सैर भी कर आया हूं। और फ़रमाता है : وَمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ۝ और वोह लोग जन्नत से कभी न निकाले जाएंगे। (پ۱۴، الحجر: ۴۸) अब मैं जन्नत में आ गया क्यूं जाऊं ? हुक्म हुवा : "मेरा बन्दा इदरीस (عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) सच्चा है इस को छोड़ दो। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 485)

हज़रते सय्यिदुना मा'मर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि जब तक मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को किसी की रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म न दिया जाए तब तक वोह नहीं जानते कि किस का वक़्त पूरा हो चुका है ।(1)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया जाता है : फ़ुलां दिन और फ़ुलां वक़्त में फ़ुलां शख़्स की रूह क़ब्ज़ कर लो ।(2)

बीमारियों की पैदाइश का सबब

हज़रते सय्यिदुना अबू शा'सा जाबिर बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام लोगों को बिग़ैर किसी दर्द व मरज़ के मौत देते थे तो लोग उन्हें बुरा भला कहते थे । आप ने बारगाहे इलाही में इस के बारे में अ़र्ज़ की : तो बारी तआ़ला ने बीमारियां पैदा फ़रमा दीं, लिहाज़ा लोग मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को भूल गए और यूं कहने लगे : फ़ुलां शख़्स फ़ुलां बीमारी की वज्ह से मर गया ।(3)

हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام लोगों के सामने ज़ाहिर होते थे जब वोह किसी शख़्स के पास आते तो फ़रमाते : अपनी हाजत पूरी कर लो क्यूंकि मैं तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करने आया हूं । (वोह बुरा भला कहने लग जाता), चुनान्चे, आप ने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में शिकायत की तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बीमारी नाज़िल फ़रमा दी और मौत को पोशीदा कर दिया ।(4)

1...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانه، ۵/۴۶۴، حدیث: ۲۳۳، عن معمر

2...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانه، ۵/۴۶۴، حدیث: ۲۳۲

3...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانه، ۵/۴۶۰، حدیث: ۲۱۷
کتاب العظمة، باب صفة ملک الموت، ص۱۵۶، حدیث: ۴۳۹

4...حلیة الاولیاء، سلیمان بن الاعمش، ۵/۶۰، رقم: ۶۳۲۳

मलकुल मौत बारगाहे मूसा में

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पहले पहल मलकुल मौत खुल्लम खुल्ला लोगों के पास तशरीफ़ लाते, जब वोह हज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام के पास आए तो उन्हों ने तमांचा मारा जिस से उन की आंख निकल गई, वोह अपनी आंख ले कर बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िर हो गए और अर्ज़ की : मौला ! तेरे बन्दे हज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने मेरी आंख निकाल दी है, अगर तेरी बारगाह में उन के लिये बुज़ुर्गी न होती तो मैं ज़रूर उन पर सख़्ती करता । रब तआला ने इरशाद फ़रमाया : जाओ मेरे बन्दे से कहो : "वोह अपना हाथ बेल की पुश्त पर रख दे, उन के हाथ के नीचे आने वाले हर बाल के बदले एक साल उम्र बढ़ा दूंगा ।" जब मलकुल मौत ने उन्हें येह पैग़ाम सुनाया तो उन्हों ने फ़रमाया : इस के बा'द क्या होगा ? अर्ज़ की : मौत । इरशाद फ़रमाया : तो अभी रूह क़ब्ज़ कर लो । चुनान्चे, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने उन को सूंघा तो उन की रूह क़ब्ज़ हो गई । हज़रते यूनुस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की आंख उन्हें वापस अता फ़रमा दी, उसी दिन से मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام पोशीदा तौर पर तशरीफ़ लाने लगे ।(1)

सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का विसाल

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ की : या रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरे बन्दे हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام मौत से डरते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : इन से कह दो जब दोस्त से मुलाक़ात किये लम्बा अर्सा गुज़र जाए तो मुलाक़ात का शौक़ बढ़ जाता है । आप عَلَیْہِ السَّلَام के पास येह पैग़ाम पहुंचा तो अर्ज़ की : ऐ पाक परवरदगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी मुलाक़ात का शौक़ रखता हूं । चुनान्चे, हज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने आप को एक फूल

1...مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۶۳۴، حدیث: ۱۰۹۰۴

दिया, आप ने वोह सूंघा तो इसी दौरान उन्हों ने आप की रूह क़ब्ज़ कर ली ।(1)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ की : मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि आज तक मैं ने जितने भी मोमिनों की अरवाह़ क़ब्ज़ की हैं सब से ज़ियादा आसानी से आप की रूह क़ब्ज़ करूं । आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : तुझे उस का वासित़ा जिस ने तुझे भेजा है तू उस से मेरे ह़क़ में रुजूअ़ कर । मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे ख़लील ने मुझे तुझ से रुजूअ़ करने का कहा है । रब तआ़ला ने फ़रमाया : उन के पास जाओ और कहो : आप का रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "दोस्त दोस्त से मिलना चाहता है ।" मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने वापस आ कर येह पैग़ाम दिया तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हें जो हुक्म दिया गया है वोह पूरा करो । उन्हों ने कहा : ऐ इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ! क्या आप ने कभी शराब पी है ? इरशाद फ़रमाया : नहीं । चुनान्चे, आप को ख़ुश्बू सूंघाई गई तो वहीं आप की रूह क़ब्ज़ कर ली गई ।(2)

सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का विसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام बहुत ग़ैरत मन्द थे, जब घर से बाहर तशरीफ़ ले जाते तो दरवाज़ों को अच्छी त़रह़ बन्द कर देते, उन के वापस आने तक कोई भी घर में दाख़िल न हो सकता था, एक दिन इसी त़रह़ घर से निकले, पीछे आप की ज़ौजा घर के काम में मश्ग़ूल थीं कि घर में एक शख़्स नज़र आया, कहने लगीं : दरवाज़ा तो बन्द है फिर येह कौन है और कैसे अन्दर आया है ? ह़ज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ज़रूर ख़बर लेंगे । चुनान्चे, आप عَلَيْهِ السَّلَام जब वापस आए तो घर में उस शख़्स को खड़े देख कर पूछा : तुम कौन हो ? उस ने अ़र्ज़ की : मैं वोह हूं जो बादशाहों से नहीं डरता और न कोई रुकावट मुझे

---

❶...تاریخ ابن عساکر، رقم:۳۵۱، ابراھیم بن آزر، ۲۵۵/۶، ملخصاً

❷...کتاب العظمة، باب صفة ملک الموت، ص۱۶۲، حدیث:۴۵۰

रोक सकती है। हज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! तुम मलकुल मौत हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म लाने पर मैं तुम्हें ख़ुश आमदीद कहता हूं। उसी वक़्त आप ने कम्बल ओढ़ा और आप की रूह क़ब्ज़ हो गई।(1)

मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन अ़ली बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिद हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से सुना कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाल के रोज़ जिब्राईले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : आप कैसा महसूस कर रहे हैं ? इरशाद फ़रमाया : ऐ जिब्राईल ! बेचैनी में हूं। इतने में मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ने अन्दर आने की इजाज़त त़लब की तो जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह मलकुल मौत हैं और आप से इजाज़त के त़लबगार हैं, इन्हों ने आप से पहले न कभी किसी से इजाज़त मांगी, न आप के बा'द किसी से मांगेंगे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन्हें इजाज़त है। चुनान्चे, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام आप के सामने बा अदब खड़े हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे आप की त़रफ़ भेजा है और हुक्म दिया है कि आप की इत़ाअ़त करूं, अगर आप मुझे अपनी रूह ले जाने की इजाज़त देंगे तो मैं ऐसा करूंगा, अगर ना पसन्द फ़रमाएंगे तो नहीं करूंगा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मलकुल मौत ! तुम ऐसा ही करोगे। अ़र्ज़ की : जी हां मुझे येही हुक्म दिया गया है। हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की मुलाक़ात का मुश्ताक़ है। महबूबे रब्बुल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मलकुल मौत ! जिस बात का तुम्हें हुक्म दिया गया है तुम वोह कर लो।(2)

मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام की निगाह

हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मौत का फ़िरिश्ता हर घर

❶...مسند امام احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/۴۰۰، حدیث: ۹۴۳۲، بتغیر

❷...معجم کبیر، ۳/۱۲۸، حدیث: ۲۸۹۰

के हर फ़र्द को रोज़ाना पांच मरतबा ग़ौर से देखता है कि आया इन में से कोई ऐसा है जिस की रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म दिया गया है।(1)

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मौत का फ़िरिश्ता हर घर के दरवाज़े से रोज़ाना सात मरतबा देखता है कि यहां कोई ऐसा तो नहीं जिस की रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म दिया गया हो।(2)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : ज़मीन पर कोई कच्चा पक्का घर ऐसा नहीं जहां मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام रोज़ाना दो मरतबा न आते हों।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल आ'ला तैमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : हर घर के हर फ़र्द को मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام दिन में दो मरतबा ग़ौर से देखते हैं।(4)

अजल आ के सर पे खड़ी है

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي फ़रमाते हैं : दिन रात के 24 घन्टों में से कोई घन्टा ऐसा नहीं होता जिस में हर ज़ी रूह के सर पर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام न खड़े हों अगर हुक्म हो तो उस की रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं वरना वापस लौट जाते हैं।(5)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام बन्दों के चेहरों को रोज़ाना 70 बार देखते हैं, जब कोई ऐसा बन्दा हंस रहा हो जिस की रूह क़ब्ज़ करने उन्हें भेजा गया हो तो वोह कहते हैं : कितने तअ़ज्जुब की बात है मुझे इस की रूह क़ब्ज़ करने भेजा गया है और येह हंस रहा है।''(6)

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام रोज़ाना पांच मरतबा घरों को ग़ौर से देखते हैं और रोज़ाना हर आदमी के

1...درمنثور، سورۃ السجدۃ، تحت الآیۃ: ۱۱، ۶/ ۵۴۲

2...تفسیر ابن کثیر، سورۃ السجدۃ، تحت الایۃ: ۱۱، ۶/ ۳۲۳

3...تفسیر عبد الرزاق، سورۃ الانعام، ۲/ ۵۲، حدیث: ۸۱۲

4...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، باب کلام عبد الاعلی، ۱۹/ ۴۱۰، حدیث: ۳۶۵۰۹

5...حلیۃ الاولیاء، ثابت البنانی، ۲/ ۳۷۰، رقم: ۲۶۰۳

6...فردوس الاخبار، ۱/ ۱۳۹، حدیث: ۸۹۳

चेहरे को एक बार देखते हैं। इसी वज्ह से इन्सान को झुर झुरी आती है।[1]

हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बा'ज़ के ब क़ौल हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام रोज़ाना लोगों की किताबे हयात में तीन बार और बा'ज़ के ब क़ौल पांच बार नज़र फ़रमाते हैं।[2]

जानवरों और कीड़े मकोड़ों की रूहें

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जानवरों और ज़मीन के कीड़े मकोड़ों की रूहें तस्बीह में मश्गूल हैं, जब उन की तस्बीह ख़त्म हो जाती है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की अरवाह क़ब्ज़ फ़रमा लेता है, उन की मौत हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के क़ब्ज़े में नहीं।[3]

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अतिय्या और हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا ने इस की वज़ाहत यूं की, कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन की ज़िन्दगी को मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के वासित़े के बिग़ैर ख़त्म कर देता है और इब्ने आदम को रब तआला ने शरफ़ बख़्शा कि उन के लिये एक मौत का फ़िरिश्ता और उस के मददगार बनाए और क़ब्ज़े रूह का मुआमला उस फ़िरिश्ते के सिपुर्द किया।[4]

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मा'मर किलाबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो एक शख़्स ने उन से पूछा : क्या पिस्सूओं की रूह भी हज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام क़ब्ज़ करते हैं ? आप काफ़ी देर ख़ामोश रहे फिर फ़रमाया : क्या पिस्सूओं में जान है ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां। फ़रमाया : बस उन की जान भी वोही निकालते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानों को उन की मौत के वक़्त वफ़ात देता है।[5]

---

❶...كتاب العظمة، باب صفة ملك الموت، ص١٢١، حديث:٣٣٧

❷...كتاب العظمة، باب صفة ملك الموت، ص١٥٥، حديث:٤٣٢

❸...كتاب العظمة، باب ذكر ساعات الليل...الخ، ص٤٥٠، حديث:١٢٢٥

❹...المحرر الوجيز، سورة السجدة، تحت الآية:١١، ٤/٣٦٠

❺...التذكرة للقرطبي، باب كيفية التوفي للموتى...الخ، ص٦٧

मौत के चार फ़िरिश्ते

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने फ़रमाया : हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को इन्सानों की रूह़ क़ब्ज़ करने पर मुक़र्रर किया गया है वोही उन की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं, एक फ़िरिश्ता जिन्नात, एक शैत़ानों पर और एक परन्दों, दरिन्दों, चौपायों, मछलियों, च्यूंटियों और कीड़ों मकोड़ों पर मुक़र्रर है येह चार फ़िरिश्ते हैं तमाम फ़िरिश्ते ख़ुद सइक़ए ऊला में (या'नी पहली बार सूर फूंकने के वक़्त) मर जाएंगे और ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उन सब की अरवाह़ क़ब्ज़ करने के बा'द वफ़ात पाएंगे और समन्दरी जिहाद में जामे शहादत नोश करने वालों की रूहें बत़ौरे इ़ज़्ज़तो करामत ख़ुद ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर क़ब्ज़ फ़रमाता है क्यूंकि वोह राहे ख़ुदा में समन्दर की मौजों पर सुवार हो गए।(1)

ख़ुश नसीब शुहदा

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने समन्दरी शहीदों के सिवा तमाम अरवाह़ मलकुल मौत के सिपुर्द की हैं, समन्दरी शहीदों की अरवाह़ रब तआ़ला ख़ुद क़ब्ज़ फ़रमाता है।(2)

एक इ़बादत गुज़ार की मौत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ईसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : पहली उम्मतों में एक शख़्स था जिस ने 40 बरस ख़ुश्की पर रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की, फिर उस ने दुआ़ की, कि ऐ मौला ! मुझे समन्दर में तेरी इ़बादत करने का शौक़ है। चुनान्चे, वोह साह़िले समन्दर पर आया और लोगों से कहा : मुझे भी कश्ती में बिठा लो, लोगों ने बिठा लिया और जैसे रब तआ़ला ने चाहा कश्ती चलती रही फिर ख़ुद ही रुक गई तो उस ने देखा कि समन्दर किनारे एक दरख़्त है, उस ने लोगों से कहा : मुझे उस दरख़्त पर चढ़ा दो, लोग उसे उस दरख़्त पर चढ़ा कर चल दिये, अब एक फ़िरिश्ते ने आस्मान पर चढ़ने का इरादा किया और वोह कलिमात कहे जिन्हें कह कर वोह बुलन्द होता था लेकिन वोह बुलन्द न हो सका तो जान गया कि मुझ से कोई कमी वाक़ेअ़ हुई है लिहाज़ा वोह दरख़्त

---

1 ... درمنثور، سورۃ السجدۃ، تحت الآیۃ: ۱۱، ۶/ ۵۴۲

2 ... ابن ماجہ، کتاب الجهاد، باب فضل غزو البحر، ۳/ ۳۴۸، حدیث: ۲۷۷۸

वाले इबादत गुज़ार के पास आया और कहा : तुम मेरी सिफ़ारिश करो, उस आ़बिद ने नमाज़ पढ़ कर फ़िरिश्ते के ह़क़ में दुआ़ की और बारगाहे ख़ुदावन्दी में येह भी अ़र्ज़ की, कि मेरी मौत के वक़्त क़ब्ज़े रूह़ के लिये इसी फ़िरिश्ते को भेज ताकि येह मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से ज़ियादा नर्मी करे, जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो वोही फ़िरिश्ता ह़ाज़िर हुवा और उस ने कहा : जिस त़रह़ तुम ने मेरी सिफ़ारिश की थी उसी त़रह़ मैं ने भी तुम्हारी सिफ़ारिश की है, अब मैं तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करूंगा मगर उस त़रह़ जैसे तुम चाहो। येह सुन कर उस आ़बिद ने सजदा किया, उस की आंख से एक आंसू टपका और उसी लम्ह़े उस की रूह़ क़ब्ज़ हो गई।(1)

फ़ाएदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुरआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना नजीब बिन अबू उ़बैद बिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने मुझ से कहा : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को ख़्वाब में देखा कि वोह कह रहे थे : अपने वालिद से कहो वोह मुझ पर दुरूद पढ़ें ताकि मैं क़ब्ज़े रूह़ के वक़्त उन पर नर्मी करूं। मैं ने येह ख़्वाब अपने वालिद को बताया तो वोह फ़रमाने लगे : बेटा ! येह इस लिये है कि तुम्हारी मां से ज़ियादा मैं मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से मानूस हूं।(2)

जहन्नम से नजात का परवाना

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : मुझे एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की रिवायत कर्दा येह ह़दीस याद आई कि "मुसलमान को मुनासिब नहीं कि वोह अपनी वसिय्यत सिरहाने रखे बिग़ैर तीन रातें गुज़ार दे।" चुनान्चे, मैं ने वसिय्यत लिखने के लिये क़लम दवात मंगवाई तो मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मैं सो गया, ख़्वाब में देखा कि सफ़ेद लिबास, ख़ूब सूरत चेहरे और ख़ुश्बू में रची बसी एक हस्ती घर में दाख़िल हुई है, मैं ने पूछा : आप किस की इजाज़त से मेरे घर में दाख़िल हुवे ? फ़रमाने लगे : घरवाले की इजाज़त से। मैं ने पूछा : आप हैं कौन ? फ़रमाया : मलकुल मौत। मैं उन से ख़ौफ़ज़दा हुवा तो फ़रमाने लगे : मुझ से ख़ौफ़ज़दा मत हो मैं तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करने नहीं आया। मैं ने कहा : मेरे लिये नारे जहन्नम से नजात का परवाना लिख दीजिये। उन्हों ने फ़रमाया : क़लम दवात लाओ,

---

❶...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، باب یحیی بن جعدة، ۱۹/۳۰۷، حدیث:۳۶۱۳۸

❷...تاریخ ابن عساکر، رقم:۲۲۰۶، محمد بن حسان الغسانی، ۵۲/۲۸۹

जो क़लम दवात में सिरहाने रख कर सोया था वोह उठा कर उन्हें दी । उन्हों ने लिखा بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ اَسۡتَغۡفِرُاللّٰہ، اَسۡتَغۡفِرُاللّٰہ हत्ता कि काग़ज़ की दोनों त़रफ़ येह लिख कर भर दिया फिर फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए, येह लो येह तुम्हारा जहन्नम से आज़ादी का परवाना है । मैं घबरा कर उठा और चराग़ मंगवा कर देखा तो वोह काग़ज़ मेरे सिरहाने रखा था और उस की दोनों त़रफ़ اَسۡتَغۡفِرُاللّٰہ लिखा हुवा था ।(1)

फ़स्ल

चार फ़रामीने बारी तआ़ला :

﴾1﴿

قُلۡ یَتَوَفّٰىکُمۡ مَّلَکُ الۡمَوۡتِ الَّذِیۡ وُکِّلَ بِکُمۡ (پ۲۱، السجدۃ:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता है मौत का फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है ।*

﴾2﴿

تَوَفَّتۡهُ رُسُلُنَا (پ۷، الانعام:۶۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हमारे फ़िरिश्ते उस की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं ।*

﴾3﴿

تَتَوَفّٰىهُمُ الۡمَلٰٓئِکَۃُ (پ۱۴، النحل:۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फ़िरिश्ते उन की जान निकालते हैं ।*

﴾4﴿

اَللّٰہُ یَتَوَفَّی الۡاَنۡفُسَ (پ۲۴، الزمر:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ***अल्लाह*** *जानों को वफ़ात देता है ।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरत़ुबी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَلِی फ़रमाते हैं : इन आयात में कोई तआ़रुज़ नहीं क्यूंकि वफ़ात की निस्बत ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیۡہِ السَّلَام की त़रफ़ इस लिये है कि वोह वासित़ा हैं और दीगर फ़िरिश्तों की त़रफ़ इस लिये है कि वोह इन के मददगार हैं, जिस्म से रूह़ निकाल कर उन्हें देते हैं, रूह़ पर क़ब्ज़ा ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیۡہِ السَّلَام करते हैं और रूह़ निकालने का मुआ़मला उन के मददगार करते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ निस्बत इस लिये है कि वोह फ़ाइले ह़क़ीक़ी है ।

1...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۲۹۴، اسلم مولی عمر بن الخطاب، ۸/۳۴۹

कल्बी ने कहा : जिस्म से रूह़ ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام ही निकालते हैं फिर उसे रह़मत या अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों के ह़वाले कर देते हैं[1], जब कि मोमिन और काफ़िर की निस्बत करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام की सूरत बदलने का जो तअ़ल्लुक़ है वोह बिल्कुल वाज़ेह़ है क्यूंकि फ़िरिश्तों को येह त़ाक़त ह़ासिल है कि वोह जो शक्ल चाहें इख़्तियार कर लें।

बाब नम्बर 14 — हर बरस उ़म्रें ख़त्म होने का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : शा'बान से शा'बान तक उ़म्रें मुन्क़त़अ़ होती हैं यहां तक कि आदमी निकाह़ करता और उस के हां औलाद भी हो जाती है जब कि उस का नाम मरने वालों में शामिल हो चुका होता है।[2]

मरने वालों की फ़ेहरिस्त बनाने का महीना

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पूरा शा'बान रोज़े रखते थे, मैं ने इस की वज्ह पूछी तो इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस महीने में इस साल मरने वाली हर जान को लिख देता है और मैं पसन्द करता हूं कि जब मेरा वक़्ते रुख़्सत आए तो मैं रोज़े से होऊं।[3]

मरने वालों की फ़ेहरिस्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : जब निस्फ़ शा'बान की रात आती है तो ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को एक सह़ीफ़ा दे कर फ़रमाया जाता है : इस में जिन के नाम हैं (इस साल) उन की रूहें क़ब्ज़ करो पस इन्सान दरख़्त लगाता, निकाह़ करता और घर बनाता है ह़ालांकि उस का नाम मुर्दों की फ़ेहरिस्त में लिखा जा चुका होता है।[4]

---

1 ...التذکرۃ للقرطبی، باب کیفیۃ التوفی للموتی...الخ، ص ٦٤

2 ...فردوس الاخبار، ۱/۳۰۲، حدیث: ۲۲۲۸، عن عثمان بن احنز

3 ...مسند ابی یعلی، مسند عائشۃ، ۴/۲۷۷، حدیث: ۴۸۹۰

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب قطع الآجال، ۵/۴۷۱، حدیث: ۲۵۱

गुफ़रह के आज़ाद कर्दा गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक शबे क़द्र से दूसरी शबे क़द्र तक मरने वालों के नाम मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام के ह़वाले कर दिये जाते हैं। पस इन्सान अपनी शादी बियाह और खेती बाड़ी में मसरूफ़ होता है जब कि उस का नाम मुर्दों में लिखा जा चुका होता है।(1)

नाज़ुक रात

ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म की पन्दरहवीं शब में साल भर के मुआ़मलात तै कर दिये जाते हैं, मरने वालों के नाम ज़िन्दों की फ़ेहरिस्त से मिटा दिये जाते हैं और ह़ाजियों की फ़ेहरिस्त तय्यार कर दी जाती है जिस में एक शख़्स भी कम या ज़ियादा नहीं किया जाता।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَحَد से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पन्दरहवीं शा'बान की रात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस साल मरने वालों के नाम मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को वह़्य फ़रमा देता है।(3)

मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ता और मौत का इल्म

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : बन्दे की मौत का इल्म सब से पहले मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते को होता है क्यूंकि वोही बन्दे का अ़मल ले कर चढ़ता और रिज़्क़ ले कर उतरता है लिहाज़ा जब उस के लिये कुछ भी रिज़्क़ नहीं पाता तो जान लेता है कि अब येह मरने वाला है।(4)

हर मख़्लूक़ का एक पत्ता है

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़म्माद علیہ رَحْمَۃُ اللہِ الْجَوَاد रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श तले एक दरख़्त है उस में हर मख़्लूक़ का एक पत्ता है, जिस बन्दे का पत्ता गिर जाता है उस

1...تفسیر طبری، الدخان، تحت الآیۃ:۳، ۲۲۲/۱۱، حدیث:۳۱۰۳۱

2...تفسیر طبری، الدخان، تحت الآیۃ:۴، ۲۲۳/۱۱، حدیث:۳۱۰۳۹

3...المجالسۃ وجواھر العلم، الجزء السابع، ۳۶۶/۱، حدیث:۹۴۴

4...مستدرک حاکم، کتاب التوبۃ والانابۃ، باب فضیلۃ ذکر اللہ، ۳۶۹/۵، حدیث:۷۷۴۳

की रूह जिस्म से निकल जाती है। इस फ़रमाने बारी तआला से येही मुराद है :

وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا (پ۷، الانعام: ۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो पत्ता गिरता है वोह उसे जानता है।*(1)

बाब नम्बर 15 मय्यित के पास मलाइका वग़ैरा के आने, मरने वाले का मुख़्तलिफ़ चीज़ें देखने नीज़ ब वक़्ते मौत मोमिन को ख़ुश ख़बरी देने और काफ़िर को डराने वाली चीज़ों का बयान

मोमिन और काफ़िर का सफ़रे आख़िरत

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम महबूबे ख़ुदा, ताजदारे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह एक अन्सारी शख़्स के जनाज़े में शरीक हुवे, क़ब्र अभी तय्यार न थी, चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बैठ गए और हम भी आप के गिर्द यूं बैठे गोया हमारे सरों पर परन्दे बैठे हैं, आप के हाथ में एक लकड़ी थी जिस से ज़मीन कुरैदने लगे फिर सरे अक़्दस उठा कर दो या तीन मरतबा फ़रमाया : اِسْتَعِيْذُوْا بِاللّٰهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ "या'नी अज़ाबे क़ब्र से ख़ुदा की पनाह मांगो।" फिर इरशाद फ़रमाया : बन्दए मोमिन जब दुन्या से रवाना हो कर आख़िरत की त़रफ़ जाने लगता है तो उस पर आस्मान से सफ़ेद चेहरों वाले फ़िरिश्ते उतरते हैं गोया उन के चेहरे सूरज हैं, उन के पास जन्नती कफ़न और जन्नती ख़ुश्बूएं होती हैं, वोह मय्यित की ह़द्दे निगाह तक बैठ जाते हैं, फिर ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उस के सिरहाने आ कर बैठ जाते हैं और फ़रमाते हैं : ऐ इत़्मीनान वाली जान ! अपने रब की बख़्शिश और रिज़ा की त़रफ़ निकल। तो वोह यूं बह कर निकलती है जैसे मशकीज़े से क़त़रा बहता है, अगर्चे तुम्हें कुछ और नज़र आता हो बहर ह़ाल मलकुल मौत उस की रूह ले लेते हैं और जैसे ही लेते हैं मुआविन फ़िरिश्ते पल भर भी उन के हाथ में नहीं छोड़ते और उन से ले कर उस कफ़न और ख़ुश्बू में रख देते हैं, उस से रूए ज़मीन की बेहतरीन मुश्क जैसी ख़ुश्बू

1 ...طبقات المحدثین لابی الشیخ، الطبقۃ الخامسۃ، رقم: ۹۸، ابو عبد اللّٰہ محمد بن ابراھیم المدنی، ۲/ ۷۷

निकलती है। फिर फ़िरिश्ते उस को ले कर मलाए आ'ला की जानिब बुलन्द होते हैं तो फ़िरिश्तों के जिस गुरौह के पास से गुज़रते हैं वोह गुरौह पूछता है : येह पाकीज़ा रूह़ कौन है ? फ़िरिश्ते उस के दुन्यावी नामों में से बेहतरीन नाम के साथ बताते हैं कि येह फ़ुलां बिन फ़ुलां है। यहां तक कि वोह उसे ले कर आस्माने दुन्या पर पहुंच जाते हैं और उस के लिये दरवाज़ा खुलवाते हैं तो खोल दिया जाता है, हर आस्मान के मुक़र्रब फ़िरिश्ते दूसरे आस्मान तक पहुंचाने जाते हैं यहां तक कि सातवें आस्मान तक पहुंचा देते हैं, तो रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दे का नामए आ'माल इ़ल्लिय्यीन में रख दो और उसे वापस ज़मीन की त़रफ़ ले जाओ क्यूंकि मैं ने उन्हें ज़मीन से ही पैदा किया, वहां ही लौटाऊंगा और वहां से ही दोबारा निकालूंगा, फिर उस की रूह़ उस के जिस्म में वापस कर दी जाती है। फिर दो फ़िरिश्ते आ कर उसे बिठाते हैं और दरयाफ़्त करते हैं مَنْ رَبُّكَ तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : رَبِّيَ اللهُ मेरा रब **अल्लाह** है। फिर पूछते हैं : مَا دِيْنُكَ तेरा दीन क्या है ? वोह कहता है دِيْنِيَ الْإِسْلَام मेरा दीन इस्लाम है। फिर पूछते हैं : येह साह़िब जो तुम में भेजे गए कौन हैं ? वोह कहता है هُوَ رَسُوْلُ اللهِ येह **अल्लाह** के रसूल हैं। फिर पूछते हैं وَمَا عِلْمُكَ तुम्हारा इ़ल्म क्या है ? वोह कहता है : मैं ने किताबुल्लाह पढ़ी, उस पर ईमान लाया और उसे सच्चा माना। पस आस्मान से पुकारने वाला पुकारता है : मेरे बन्दे ने सच कहा, इस के लिये जन्नती बिछौना बिछाओ, जन्नती लिबास पहनाओ और जन्नत की त़रफ़ दरवाज़ा खोल दो। चुनान्चे, उस की त़रफ़ जन्नत की हवा और ख़ुश्बू आती है उस की क़ब्र ता ह़द्दे निगाह वसीअ़ कर दी जाती है, फिर उस के पास ह़सीनो जमील चेहरे, बेहतरीन कपड़ों और उ़म्दा ख़ुश्बू वाला एक मर्द आता है और कहता है : तुझे ख़ुश ख़बरी हो उस सवाब की जो तुझे ख़ुश करेगा येह वोह दिन है जिस का तुझ से वा'दा किया गया था। मुर्दा पूछता है : तेरा चेहरा भलाई लाया तू है कौन ? वोह कहता है : मैं तेरा नेक अ़मल हूं। मुर्दा कहता है : ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! क़ियामत क़ाइम कर, ऐ रब ! क़ियामत क़ाइम कर ताकि मैं अपने घरबार और माल में पहुंचूं।

इस के बर अ़क्स जब काफ़िर दुन्या से सफ़रे आख़िरत पर जाने लगता है तो आस्मान से सियाह चेहरों वाले फ़िरिश्ते टाट ले कर नुज़ूल करते हैं और ह़द्दे निगाह तक बैठ जाते हैं, फिर मलकुल मौत उस के सिरहाने बैठ कर कहते हैं : ऐ ख़बीस जान ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और ग़ज़ब की त़रफ़ निकल। उस की रूह़ उस के जिस्म में छुपती फिरती है। मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस की

रूह़ ऐसे खींचते हैं जैसे गर्म सीख़ भीगी ऊन से खींची जाती है, जब वोह रूह़ लेते हैं तो मुआ़विन फ़िरिश्ते फ़ौरन उस रूह़ को ले कर टाट में लपेट लेते हैं और उस से रूए ज़मीन के बदतरीन मुर्दार की सी बदबू निकलती है, फिर फ़िरिश्ते उसे ले कर ऊपर की त़रफ़ चढ़ते हैं तो फ़िरिश्तों के जिस गुरौह के पास से भी गुज़रते हैं वोह पूछता है : येह ख़बीस रूह़ कौन है ? फ़ुलां बिन फ़ुलां है फ़िरिश्ते उस का वोह बदतरीन नाम लेते हैं जिस से वोह दुन्या में याद किया जाता था यहां तक कि उसे आस्माने दुन्या तक ले जाते हैं और उस का दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं लेकिन खोला नहीं जाता। फिर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ (پ۸، الاعراف: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे।*

पस रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : उस का नामए आ'माल सब से निचली ज़मीन सिज्जीन में रखो। चुनान्चे, उस की रूह़ पटख़ दी जाती है। फिर आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ﴿۳۱﴾ (پ۱۷، الحج: ۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अल्लाह का शरीक करे वोह गोया गिरा आस्मान से कि परन्दे उसे उचक ले जाते हैं या हवा उसे किसी दूर जगह फैंकती है।*

पस उस की रूह़ जिस्म में लौटाई जाती है फिर दो फ़िरिश्ते उस को बिठा कर पूछते हैं : तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : हाए ! हाए ! मैं नहीं जानता। फिर पूछते हैं : तेरा दीन क्या है ? वोह कहता है : हाए ! हाए ! मैं नहीं जानता। फिर पूछते हैं : येह कौन साह़िब हैं जो तुम में भेजे गए ? वोह कहता है : हाए ! हाए ! मैं नहीं जानता। तब आस्मान से एक पुकारने वाला पुकारता है : येह झूटा है, इस के लिये आग का बिस्तर बिछाओ, इसे आग का लिबास पहनाओ और जहन्नम की त़रफ़ दरवाज़ा खोल दो। पस उसे दोज़ख़ की गर्मी और लू पहुंचती है और उस की क़ब्र तंग कर दी जाती है ह़त्ता कि उस की पस्लियां टूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं फिर उस के पास एक बद शक्ल, बद लिबास बदबूदार शख़्स आ कर कहता है : तुझे ग़म में डालने वाले अ़ज़ाब की खुश ख़बरी हो, येही वोह दिन है जिस का तुझ से वा'दा था। वोह कहता है : तू कौन है कि तेरा चेहरा बुराई ले कर आया ? वोह कहता है : मैं तेरा बुरा अ़मल हूं। मुर्दा कहता है : इलाही ! क़ियामत क़ाइम न कर।(1)

1...مسند امام احمد، حدیث البراء بن عازب، ۲/ ۴۱۳، حدیث: ۱۸۵۵۹، مسند ابی داود الطیالسی، البراء بن عازب، ص ۱۰۲، حدیث: ۷۵۳

हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाता है : मेरे वली के पास जाओ और उसे ले कर आओ क्यूंकि मैं ने उसे रंज व राहत दोनों ही के ज़रीए आज़माया है और उसे अपनी रिज़ा के मुताबिक़ पाया तो मैं चाहता हूं कि उसे दुन्या के ग़मों और परेशानियों से छुटकारा दूं। चुनान्चे, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام अपने हमराह 500 फ़िरिश्तों की जमाअ़त ले कर उस की त़रफ़ रवाना होते हैं, उन के पास जन्नती कफ़न, जन्नती ख़ुश्बूएं और ख़ुश्बूदार गुलदस्ता होता है उस की जड़ एक ही होती है जब कि उस के सिरे पर 10 रंग होते हैं और हर रंग में दूसरे से जुदा ख़ुश्बू होती है, उन के पास मुश्क में बसा हुवा सफ़ेद रेशम भी होता है, मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उस वली के सर के पास और मुआ़विन फ़िरिश्ते उस के इर्द गिर्द बैठ जाते हैं और हर फ़िरिश्ता अपना हाथ उस के एक एक उ़ज़्व पर रखता है, सफ़ेद रेशम को बिछा दिया जाता, मुश्क उस की ठोड़ी के नीचे रख दिया जाता और एक दरवाज़ा जन्नत की त़रफ़ खोल दिया जाता है। अब उस का दिल कभी उस की पाकीज़ा बीवियों (हूरों) के ज़रीए, कभी जन्नती लिबास से और कभी उस के फलों से ऐसे बहलाया जाता है जैसे घरवाले रोते हुवे बच्चे का दिल बहलाते हैं, उस वक़्त उस की जन्नती बीवियां ख़ूब ख़ुश हो रही होती हैं, उस की रूह़ जोश मारती है और मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام कहते हैं : ऐ सुथरी रूह़ निकल, बे कांटों की बेरियों में, केले के गुच्छों में, हमेशा के साए में और हमेशा जारी पानी में। मलकुल मौत उस ख़ुश नसीब पर एक मां से भी बढ़ कर लुत़्फ़ो करम और शफ़्क़त करते हैं क्यूंकि वोह जानते हैं कि येह रूहे़ मुक़द्दस अपने रब तआ़ला की मह़बूब और उस के नज़्दीक मुअ़ज़्ज़ज़ है तो वोह उस रूह़ पर नर्मी फ़रमा कर अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहते हैं, पस उस की रूह़ इस त़रह़ निकाली जाती है जिस त़रह़ आटे से बाल। जब उस की रूह़ निकलती है तो मलाइका उस के गिर्द येह कह रहे होते हैं : अपने अच्छे आ'माल की बदौलत जन्नत में दाख़िल हो जाओ, इस फ़रमाने बारी तआ़ला में येही बयान हुवा है :

اَلَّذِیْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓىٕكَةُ طَیِّبِیْنَۙ یَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَیْكُمُۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾ (پ۱۴، النحل: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान *: वोह जिन की जान निकालते हैं फ़िरिश्ते सुथरे पन में येह कहते हुवे कि सलामती हो तुम पर जन्नत में जाओ बदला अपने किये का।*

रब तआ़ला येह भी इरशाद फ़रमाता है :

فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۸۸﴾ فَرَوْحٌ وَّ رَيْحَانٌ ۙ۬ وَّ جَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿۸۹﴾ (پ۲۷،الواقعة:۸۸، ۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है तो राह़त है और फूल और चैन के बाग़ ।*

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : या'नी राह़त है मौत की कश्मकश से और रैह़ान या'नी फूल उसे रूह़ निकलते वक़्त मिलते हैं और जन्नते नई़म या'नी चैन के बाग़ उस के सामने होते हैं, जब मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उस की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमाते हैं तो रूह़ जिस्म से कहती है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे मेरी त़रफ़ से बेहतरीन बदला दे तू मुझे रब عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की त़रफ़ तेज़ी से ले जाता था और उस की ना फ़रमानी से बचता था, फिर जिस्म भी रूह़ से ऐसा ही कहता है, ज़मीन के वोह तमाम टुकड़े जिन पर येह रब عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता था, आस्मान का हर वोह दरवाज़ा जिस से उस का अ़मल ऊपर चढ़ता और रिज़्क़ उतरता था येह सब 40 रातों तक उस पर रोते हैं, जब उस की रूह़ निकल जाती है तो 500 फ़िरिश्ते उस के जिस्म के पास खड़े हो जाते हैं और इन्सान उसे जिस भी करवट पर करते हैं फ़िरिश्ते उन से पहले ही उसे उस करवट कर देते हैं, उन के कफ़न पहनाने से पहले कफ़न पहना देते और उन के ख़ुश्बू लगाने से पहले ख़ुश्बू लगा देते हैं, फिर उस के घर के दरवाज़े से उस की क़ब्र तक फ़िरिश्ते दो सफ़ें बना कर खड़े हो जाते और इस्तिग़फ़ार के साथ उस का इस्तिक़्बाल करते हैं, उस वक़्त इब्लीसे लई़न इतने ज़ोर की चीख़ मारता है कि उस की कुछ हड्डियां भी टूट जाती हैं, वोह अपने लश्कर से कहता है : तुम्हारी हलाकत हो येह बन्दा तुम से कैसे बच गया ? वोह कहते हैं : बेशक येह बचाया गया था । जब मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उस की रूह़ ले कर आस्मान पर पहुंचते हैं तो जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام 70 हज़ार फ़िरिश्तों में उस का इस्तिक़्बाल करते हैं और हर फ़िरिश्ता उस शख़्स को रब عَزَّوَجَلَّ की जानिब से ख़ुश ख़बरी सुनाता है । जब उस की रूह़ को ले कर अ़र्श तक पहुंचते हैं तो वोह रूह़ बारगाहे इलाही में सजदा रेज़ हो जाती है । रब عَزَّوَجَلَّ मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दे की रूह़ को ले जाओ और बे कांटे की बेरियों, केले के गुच्छों, हमेशा के साए और हमेशा जारी पानी में रख दो । जब उसे क़ब्र में रख दिया जाता है तो नमाज़ उस की दाईं जानिब, रोज़ा बाईं जानिब, ज़िक्र और तिलावते

कुरआन सर के पास और नमाज़ के लिये चलना क़दमों के पास होता है जब कि सब्र क़ब्र के एक किनारे खड़ा हो जाता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़ज़ाब भेजता है तो जब वोह दाईं जानिब से आता है तो नमाज़ कहती है : पीछे हट, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस ने अपनी पूरी ज़िन्दगी मेरी हिफ़ाज़त की है अब जब कि इसे क़ब्र में रख दिया गया है तो येह इस की राह़त का वक़्त है अ़ज़ाब बाईं जानिब से आता है तो रोज़ा भी नमाज़ वाली बात कहता है, सर की जानिब से आता है तो वहां भी येही सुनने को मिलता है, अ़ज़ाब किसी जानिब से भी इस के क़रीब नहीं पहुंच पाता, जिस राह से भी जाना चाहता है वलिय्युल्लाह की इ़बादत इसे बचा लेती है। चुनान्चे, जब अ़ज़ाब कोई राह नहीं पाता तो वहां से निकल जाता है। अब सब्र तमाम आ'माले सालेह़ा से कहता है : मैं भी सामने आ सकता था लेकिन मैं तुम्हें देख रहा था अगर तुम सब आ़जिज़ आ जाते तो मैं सामना करता, अब चूंकि तुम ने इस बन्दे की त़रफ़ से दिफ़ाअ़ कर लिया है तो मैं पुल सिरात़ और मीज़ाने अ़मल पर इस के लिये ज़ख़ीरा होऊंगा, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दो फ़िरिश्तों को रवाना फ़रमाता है जिन की निगाहें उचक लेने वाली बिजली की मानिन्द, आवाज़ ज़ोरदार कड़क व गरज की त़रह़, दांत सींगों जैसे और सांसें शो'लों की त़रह़ होती हैं अपने लम्बे बालों को घसीटते हुवे चलते हैं, उन दोनों के कांधों के दरमियान बहुत बड़ा फ़ासिला होता है, मोमिनों के इ़लावा उन के दिल किसी के लिये मेहरबान नहीं होते, उन का नाम मुन्कर और नकीर है। उन में से हर एक के हाथ में हथोड़ा होगा, अगर जिन्नो इन्स भी इकठ्ठे हो जाएं तो उस हथोड़े को न उठा पाएं, उस नेक बन्दे से कहते हैं : उठ कर बैठ जाओ। वोह अपनी क़ब्र में सीधा बैठ जाता है और कफ़न उस की दोनों जानिब से गिर जाता है। मुन्कर नकीर उस से पूछते हैं : तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : मेरा रब एक अल्लाह है उस का कोई शरीक नहीं, मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं और वोह सब से आख़िरी नबी हैं। फ़िरिश्ते कहते हैं : तू ने सच कहा। चुनान्चे, वोह क़ब्र को इस के दाएं बाएं, सर, पाउं चारों त़रफ़ से कुशादा कर देते हैं फिर उस से कहते हैं : ऊपर देखो। वोह ऊपर देखता है जन्नत तक सब खुला हुवा होता है। फिर कहते हैं : ऐ अल्लाह के वली ! तेरा येह मक़ाम तेरी इत़ाअ़ते इलाही का बदला है।

हुज़ूर सरवरे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जान है ! उस के दिल को ऐसी खुशी पहुंचती है कि फिर कभी ग़मगीन न होगा । फिर उस से कहा जाता है : अपने नीचे देखो वोह नीचे देखता है तो जहन्नम तक सब खुला होता, मुन्कर नकीर उस से कहते हैं : ऐ अल्लाह के वली ! तू ने इस से नजात पा ली । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर इरशाद फ़रमाया : क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है ! उस के दिल को ऐसी खुशी पहुंचती है कि फिर कभी ग़मगीन न होगा, उस के लिये जन्नत की जानिब 77 दरवाज़े खोले जाते हैं जिन से जन्नत की ठन्डक और खुश्बूएं आती हैं यहां तक कि उसे ह़श्र के दिन क़ब्र से उठाया जाएगा ।

फिर इरशाद फ़रमाया : इसी त़रह़ खुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام से इरशाद फ़रमाता है : "मेरे दुश्मन के पास जाओ और उसे ले कर आओ मैं ने उस के रिज़्क़ में कुशादगी की और ने'मतों से सरफ़राज़ किया लेकिन उस ने नाशुक्री व ना फ़रमानी की उसे मेरे पास ले आओ ताकि आज मैं उस से इन्तिक़ाम लूं ।" पस मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस के पास ऐसी ख़ौफ़नाक शक्ल में पहुंचते हैं जो कभी किसी ने नहीं देखी, उन की बारह आंखें होती हैं और उन के पास कसीर कांटों वाली जहन्नमी सलाख़ होती है, उन के साथ 500 फ़िरिश्ते होते हैं जिन में से हर एक के पास बे लपट का धुवां, अंगारे और भड़कते हुवे कोड़े होते हैं, मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام येह ख़ारदार सलाख़ इस त़रह़ मारते हैं कि हर कांटा जड़ तक उस शख़्स के हर रगो पै में दाख़िल हो जाता है फिर उस सलाख़ को सख़्ती से मोड़ते है तो उस की रूह़ उस के क़दमों के नाख़ुनों से निकलती है, उस वक़्त दुश्मने खुदा पर बेहोशी त़ारी होती है और फ़िरिश्ते उस की पीठ और चेहरे पर कोड़े मारते हैं, उस वक़्त उस का गला घुटता है और मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस की रूह़ को टख़्नों से खींच कर घुटनों तक लाते हैं तो उस पर बेहोशी त़ारी हो जाती है इसी त़रह़ रूह़ शानों तक फिर सीने तक और फिर ह़ल्क़ तक आ जाती है फिर वोह बे लपट का धुवां और जहन्नमी अंगारे उस की ठोड़ी के नीचे फैला दिये जाते हैं, फिर मलकुल मौत फ़रमाते हैं : ऐ ला'नती जान ! निकल जलती हवा और खोलते पानी की त़रफ़ और जलते धुवें की छाऊं में जो न ठन्डी है न इ़ज़्ज़त वाली । जब मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام रूह़ क़ब्ज़ करते हैं तो रूह़ जिस्म से कहती है : खुदा तुझ को मेरी त़रफ़ से बदतरीन सज़ा दे क्यूंकि तू मुझे गुनाह

की त़रफ़ तेज़ी से ले जाता था और नेकी से पीछे रखता था, तू ख़ुद भी हलाक हुवा और मुझे भी हलाकत में डाला, जिस्म भी रूह़ से येही कहता है, ज़मीन के वोह ह़िस्से जिन पर वोह गुनाह करता था उस को ला'नत करते हैं, इब्लीसे लईन के लश्करी उस के पास जा कर मुबारक बाद देते हैं कि उन्हों ने एक आदमी को जहन्नम में पहुंचा दिया। जब उसे क़ब्र में रखा जाता है तो उस की क़ब्र तंग कर दी जाती है, यहां तक कि उस की दाईं पस्लियां बाईं में और बाईं पस्लियां दाईं में पैवस्त हो जाती हैं। उस की त़रफ़ काले सांप भेजे जाते हैं जो उसे उंगलियों के पोरों और पाउं के अंगूठों से डसते हुवे दरमियान तक आ जाते हैं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ दो फ़िरिश्ते भेजता है वोह आ कर उस से पूछते हैं : مَنْ رَبُّكَ وَمَا دِيْنُكَ وَمَنْ نَبِيُّكَ या'नी तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है لَا اَدْرِیْ या'नी मैं नहीं जानता। फ़िरिश्ते कहते हैं : तू ने जानने की कोशिश ही कब की थी ? येह कह कर उस को ऐसा गुर्ज़ मारते हैं कि क़ब्र में शो'ले भड़क उठते हैं फिर उस से कहते हैं : ऊपर देख, वोह ऊपर देखता है तो जन्नत तक एक दरवाज़ा खुला हुवा नज़र आता है। फ़िरिश्ते उसे कहते हैं : अल्लाह के दुश्मन ! अगर तू ने ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी की होती तो तेरा येह मक़ाम होता।

सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़सम उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है ! उस वक़्त उस के दिल में ऐसी ह़सरत पैदा होती है जो कभी ख़त्म न होगी, फिर जहन्नम की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल कर उस से कहा जाता है : ऐ दुश्मने ख़ुदा ! ना फ़रमानियों की वज्ह से अब तेरा मक़ाम येह है और 77 दरवाज़े जहन्नम की त़रफ़ खोल दिये जाते हैं जिन से आग की तपिश और झुलसाने वाली हवा आती रहती है यहां तक कि बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस की क़ब्र से उठा कर दोज़ख़ की त़रफ़ भेजेगा।[1]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْكَرِیْم फ़रमाते हैं : وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا[2] से मुराद वोह फ़िरिश्ते हैं जो कुफ़्फ़ार की अरवाह़ निकालते हैं, وَالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا (پ۳۰،النّٰزعٰت:۲) से मुराद वोह फ़िरिश्ते हैं जो कुफ़्फ़ार की रूह़ों को नाख़ुनों और खाल के दरमियान से खींच कर निकालते हैं[3] وَالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا[4] से मुराद वोह फ़िरिश्ते हैं जो मुसलमानों

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب بشری المومن وانذار الکافر، ۵/۴۷۲، حدیث:۲۵۴

2 .....क़सम उन की, कि सख़्ती से जान खींचें। (پ۳۰،النّٰزعٰت:۱)

3 ...تفسیر قرطبی، سورۃ النازعات، تحت الآیۃ:۱، ۲، جزء۱۹، ۱۰/۱۳۵، ۱۳۶

4 .....और आसानी से पैरें (चलें)। (پ۳۰،النّٰزعٰت:۳)

की अरवाह़ के साथ ज़मीनो आस्मान के दरमियान चलते हैं और فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا[1] से मुराद वोह फ़िरिश्ते हैं जो मुसलमानों की अरवाह़ को ले कर बारगाहे इलाही की त़रफ़ एक दूसरे से आगे बढ़ते हैं।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا की तफ़्सीर करते हुवे फ़रमाते हैं : इस से मुराद कुफ़्फ़ार की रूहें हैं जो खींच कर निकाली जाती हैं फिर नारे दोज़ख़ में ग़र्क़ की जाती हैं।[3]

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا की एक तफ़्सीर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से यूं मरवी है कि येह कुफ़्फ़ार की अरवाह़ हैं जब वोह मलकुल मौत को देखती हैं तो वोह उन को ख़ुदा की नाराज़ी की ख़बर देते हैं तो वोह ग़म में डूब जाती हैं और मलकुल मौत उन रूहों को गोश्त और पठ्ठों से खींच लेते हैं और وَالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا से मुराद मोमिनीन की अरवाह़ हैं, जब वोह मलकुल मौत को देखती हैं तो वोह फ़रमाते हैं : ऐ पाक रूह़ ! राह़त और फूलों और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ निकल जो तुझ से राज़ी है तो अरवाहे मोमिनीन येह सुन कर पानी में तेरने वाले की त़रह़ जन्नत की त़रफ़ ख़ुशी और शौक़ से मचलने लगती हैं और فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا से मुराद है वोह रूहें हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बुज़ुर्गी की त़रफ़ चलती हैं।[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अनस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इन दो आयात में कुफ़्फ़ार का वक़्ते नज़्अ़ बयान किया गया है कि उन की अरवाह़ ऐसे खींची जाती हैं जैसे गर्म सीख़ को ऊन में रख कर सख़्ती से खींचा जाए और येह फ़ुज्जार के ह़क़ में नाज़िल हुई या'नी नज़्अ़ के वक़्त फ़िरिश्ते उन की रूहें सख़्ती से खींचते हैं और وَالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا येह दोनों आयात मोमिनीन के लिये हैं।[5]

मुफ़स्सिर सुद्दी कहते हैं وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا से मुराद वोह वक़्त है जब जान सीने में डूब जाती है और وَالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا से मुराद वोह फ़िरिश्ते हैं जो उंगलियों और क़दमों से रूह़ को खींचते हैं और وَالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا से मौत के वक़्त जान का पेट में तेरना और कश्मकश में मुब्तला होना मुराद है।[6]

1.....फिर आगे बढ़ कर जल्द पहुंचीं। (پ۳۰،النّٰزعٰت:۴)

2...كنز العمال، كتاب الاذكار، من قسم الاقوال، باب فى القرن، فصل فى التفسير، ۲/ ۲۳۰، حديث: ۴۲۸۳

3...تفسير ابن أبي حاتم، پ۳۰، النازعات، تحت الاية: ۱، ۱۰/ ۳۳۹۷

4...درمنثور، سورة النازعات، تحت الآية: ۱، ۸/ ۴۰۴

5...تفسير ابن أبي حاتم، پ۳۰، النازعات، تحت الاية: ۳، ۱۰/ ۳۳۹۷

6... تفسير ابن أبي حاتم، پ۳۰، النازعات، تحت الاية: ۳، ۱۰/ ۳۳۹۷، حديث: ۱۹۱۱۳

हर शै की इन्तिहा का मक़ाम

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ह्हाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : जब बन्दए मोमिन की रूह क़ब्ज़ कर के आस्मान की त़रफ़ ले जाई जाती है तो मुक़र्रबीन उस के साथ चलते हैं, पूछा गया : मुक़र्रबीन कौन हैं ? फ़रमाया : जो दूसरे आस्मान के क़रीब हैं। फिर वोह रूह दूसरे फिर तीसरे, चौथे, पांचवें, छटे और सातवें यहां तक कि सिद्रतुल मुन्तहा तक पहुंचा दी जाती है। पूछा गया : इसे सिद्रतुल मुन्तहा क्यूं कहते हैं ? फ़रमाया : इस लिये कि ब हुक्मे इलाही हर शै की इन्तिहा वहां होती है इस से आगे कुछ नहीं बढ़ता। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : इलाही ! येह तेरा फ़ुलां बन्दा है। ह़ालांकि वोह ब ख़ूबी जानता है। चुनान्चे, उस बन्दे को जहन्नम के अ़ज़ाब से छुटकारे का परवाना दिया जाता है, इस फ़रमाने बारी तआ़ला का येही मत़लब है :

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿۱۸﴾ؕ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿۱۹﴾ؕ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿۲۰﴾ۙ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿۲۱﴾ؕ (پ۳۰، المطففین: ۱۸ تا ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हां हां बेशक नेकों की लिखत सब से ऊंचे मह़ल इ़ल्लिय्यीन में है और तू क्या जाने इ़ल्लिय्यीन कैसी है वोह लिखत एक मोहर किया नविश्ता (तह़रीर नामा) है कि मुक़र्रब जिस की ज़ियारत करते हैं।*(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : शबे मे'राज जब शबे असरा के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सिद्रतुल मुन्तहा तक ले जाया गया तो वहां ठहर गए और वहीं तमाम अरवाह़ की इन्तिहा होती है।(2) जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की रिवायत में है कि जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहां तक पहुंचे तो बताया गया : येह सिद्रा है आप की उम्मत में से हर एक की यहीं इन्तिहा होती है सिवाए उन के जो आप के नक़्शे क़दम पर हों।(3)

❶...تفسیر طبری، المطففین، تحت الآیۃ: ۱۸، ۱۲/۴۹۴، حدیث: ۳۶۶۵۹، بتغیرٍ
❷...مسلم، کتاب الایمان، باب فی ذکر سدرۃ المنتھی، ص ۱۰۶، حدیث: ۱۷۳
❸...تفسیر طبری، الاسراء، تحت الآیۃ: ۱، ۸/۱۰، حدیث: ۲۲۰۲۱

जन्नती कफ़न और ख़ुश्बू

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सुल्ताने दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब बन्दए मोमिन दुन्या को पीछे छोड़ कर आख़िरत की त़रफ़ बढ़ने लगता है तो सूरज की त़रह़ चमकते दमकते चेहरों वाले फ़िरिश्ते उस का जन्नती कफ़न और ख़ुश्बू ले कर उतरते हैं और उस की ह़द्दे निगाह तक बैठ जाते हैं, जब उस की रूह़ निकलती है तो ज़मीन और आस्मान के माबैन हर फ़िरिश्ता उस के लिये दुआ़ए रह़मत करता है।(1)

पाक और ख़बीस रूह़

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब रूहे़ मोमिन परवाज़ करती है तो दो फ़िरिश्ते उस का इस्तिक़्बाल करते हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस रूह़ की ख़ुश्बू और मुश्कबार हवा का तज़्किरा किया फिर फ़रमाया : वोह उसे ले कर ऊपर चढ़ते हैं तो अह्ले आस्मान कहते हैं : येह पाक रूह़ ज़मीन की त़रफ़ से आई है, ऐ रूह़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर और उस जिस्म पर रह़्म फ़रमाए जिस में तू रही। फिर फ़िरिश्ते उसे बारगाहे ख़ुदावन्दी में पेश करते हैं, ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : इसे ले जाओ और जब कोई काफ़िर मरता है तो उस के बदन से बदबू निकलती है और फ़िरिश्ते उस पर ला'नत भेजते हैं। अह्ले आस्मान कहते हैं : येह ख़बीस रूह़ ज़मीन की त़रफ़ से आई है। फिर कहा जाता है : इसे भी क़ियामत तक के लिये वापस ले जाओ।(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये ग़ैबदां, रह़मते आ़लमिय्यां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन की मौत का वक़्त आता है तो रह़मत के फ़िरिश्ते सफ़ेद रेशम ले कर उस के पास आते हैं और कहते हैं : ऐ रूहे़ मोमिन ! राज़ी ब रिज़ा हो कर रह़मते ख़ुदा, राह़त और फूलों और राज़िये रब की त़रफ़ निकल तो वोह ऐसे निकलती है जैसे कि बेहतरीन ख़ुश्बू महकती हो, यहां तक कि फ़िरिश्ते उसे एक दूसरे से ले कर सूंघते हैं, फिर उसे आस्मानों पर ले जाते हैं, आस्मान वाले कहते हैं : ज़मीन की त़रफ़ से येह कितनी ही प्यारी ख़ुश्बू आई है, जिस

---

1 ...مسند بزار، مسند ابی ھریرۃ، ۱۷/۱۱، حدیث: ۹۵۱۸

2 ...مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمھا، باب عرض مقعد المیت من الجنۃ...الخ، ص ۱۵۳۶، حدیث: ۲۸۷۲

आस्मान पर से गुज़र होता वहां के फ़िरिश्ते येही कहते हैं यहां तक कि उसे दूसरी अरवाहे मोमिनीन के पास पहुंचाते हैं तो उन को किसी गुमशुदा रिश्तेदार के वापस आ जाने से भी बढ़ कर ख़ुशी होती है, वोह रूहें उस से पूछती हैं : फ़ुलां बिन फ़ुलां का क्या हाल है ? एक रूह कहती है : उसे आराम करने दो येह दुन्या के ग़म से निकल कर आ रहा है जब वोह रूह उन से किसी के बारे में पूछती है कि फ़ुलां बिन फ़ुलां मर गया था क्या तुम्हारे पास नहीं पहुंचा ? वोह अरवाह जवाब देती हैं : वोह तो जहन्नम में गया। जब कि काफ़िर के पास अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आते हैं और कहते हैं : ऐ रूह ! अपने रब के अ़ज़ाब और नाराज़ी की त़रफ़ इस ह़ाल में निकल कि वोह तुझ से नाराज़ और तू उस से नाराज़। चुनान्चे, वोह इन्तिहाई बदबूदार मुर्दे की त़रह़ निकलती है। फ़िरिश्ते उसे ज़मीन के दरवाज़े की त़रफ़ ले जाते हैं तो वहां मुक़र्रर फ़िरिश्ते कहते हैं : येह कितनी बदबूदार है अल ग़रज़ हर दरवाज़े पर येही कहा जाता है ह़त्ता कि फ़िरिश्ते उसे काफ़िरों की रूहों से मिला देते हैं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आदमी नेकूकार होता है तो फ़िरिश्ते उस के पास आ कर कहते हैं : ऐ पाक जिस्म में रहने वाली क़ाबिले ता'रीफ़ पाक रूह ! निकल आ, तुझे राह़त व फूलों और रिज़ाए इलाही की ख़ुश ख़बरी हो, जिस्म से मुकम्मल रूह जुदा होने तक फ़िरिश्ते येही कहते रहते हैं, फिर उसे आस्मान की जानिब ले जाते हैं तो उस के लिये दरवाज़ा खोल कर पूछा जाता है : येह कौन है ? फ़िरिश्ते कहते हैं : फ़ुलां बिन फ़ुलां है। कहा जाता है : ऐ पाक जिस्म में रहने वाली क़ाबिले ता'रीफ़ पाक रूह ! ख़ुश आमदीद, अन्दर आ जा तुझे राह़त व फूलों और रिज़ाए इलाही की ख़ुश ख़बरी हो ह़त्ता कि सातवें आस्मान तक येही सिलसिला चलता है और अगर आदमी गुनहगार है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : ऐ ख़बीस जिस्म में रहने वाली क़ाबिले मज़म्मत ख़बीस रूह ! निकल, तुझे खोलते पानी, जलते पीप और इस जैसे अ़ज़ाबों की ख़ुश ख़बरी हो, जिस्म से मुकम्मल रूह जुदा होने तक ऐसा कहते रहते हैं फिर उसे ले कर आस्मान की जानिब जाते हैं और दरवाज़ा खुलवाते हैं तो पूछा जाता है : येह कौन है ? जवाब मिलता है : फ़ुलां है। अन्दर से जवाब आता है : ख़बीस जिस्म में रहने वाली क़ाबिले मज़म्मत ख़बीस रूह के लिये कोई ख़ुश आमदीद नहीं, चल वापस हो जा। चुनान्चे, उस

1...مسند بزار، قسامۃ بن زھیر، ۱۷/۳۰، حدیث: ۹۵۴۲
الاحسان، کتاب الجنائز، فصل فی الموت وما یتعلق...الخ، ۵/۸، حدیث: ۳۰۰۳
نسائی، کتاب الجنائز، باب مایلقی بہ المؤمن...الخ، ص ۳۱۳، حدیث: ۱۸۳۰

के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और उसे वापस उस की क़ब्र में लौटा दिया जाता है।[1]

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन की वफ़ात का वक़्त क़रीब आता है तो फ़िरिश्ते ख़ुश्बूदार रेशम और मुख़्तलिफ़ फूलों के गुलदस्ते ले कर हाज़िर होते हैं और उस की रूह़ ऐसे निकलती है जैसे आटे से बाल। फ़िरिश्ते उस से कहते हैं : ऐ पाक जान ! अपने रब की इ़ज़्ज़त व राह़त की त़रफ़ निकल इस ह़ाल में कि तू उस से राज़ी और वोह तुझ से राज़ी। जब रूह़ निकल जाती है तो फ़िरिश्ते उसे ख़ुश्बू और फूलों पर रख देते हैं और उसे रेशम में लपेट कर आ'ला इ़ल्लिय्यीन की जानिब ले जाया जाता है। इस के बर अ़क्स जब काफ़िर का वक़्ते आख़िर आता है तो फ़िरिश्ते उस के पास अंगारों से भरा टाट ले कर आते हैं, उस की रूह़ को शिद्दत के साथ खींचा जाता है और कहा जाता है : ऐ ख़बीस रूह़ ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और नाराज़ी की त़रफ़ निकल इस ह़ाल में कि तू उस से नाराज़ और वोह तुझ से नाराज़। जब उस की रूह़ निकल जाती है तो उसे भड़कते अंगारों पर डाल कर उस टाट में लपेट दिया जाता है और फिर उसे सिज्जीन में ले जाया जाता है।[2]

शुहदा, मछली और बेल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब कोई शख़्स राहे ख़ुदा में क़त्ल किया जाता है तो उस के ख़ून का पहला क़त़रा ज़मीन पर गिरते ही अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के सारे गुनाह बख़्श देता है, फिर जन्नत से एक चादर भेजता है जिस में उस की रूह़ को लपेटा जाता है और एक जन्नती जिस्म में उस की रूह़ को रख दिया जाता है फिर फ़िरिश्तों की हमराही में उसे बुलन्द किया जाता है गोया हमेशा येह उन ही फ़िरिश्तों के हमराह रहता था यहां तक कि रह़मान عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किया जाता है तो वोह फ़िरिश्तों से भी पहले सजदा रेज़ हो जाता है और फ़िरिश्ते उस के बा'द सजदा करते हैं, पस उस की मग़्फ़िरत कर दी जाती है और उसे पाक कर दिया जाता है। फिर हुक्म होता है कि इसे शुहदा के पास ले जाओ, वोह शुहदा को सब्ज़ ज़ारों और रेशमी क़बाओं में पाता है, उन के पास बेल और मछली होते हैं जिन्हें वोह हर रोज़ नए ज़ाइक़े के साथ तनावुल करते हैं, मछली जन्नत की नहरों में तैरती और तमाम जन्नती

1 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر الموت والاستعداد لہ، ۴/۴۹۷، حدیث: ۴۲۶۲

2 ...مسند بزار، قسامۃ بن زھیر، ۱۷/۲۹، حدیث: ۹۵۴۱، بتغیر

नहरों की ख़ुश्बू में रच बस जाती है जब शाम होती है तो बेल अपने सींगों से उसे शिकार करता है और शुहदा उस का गोश्त खाते और उस में जन्नती नहरों की हर ख़ुश्बू पाते हैं जब कि बेल रात भर जन्नत में घूम कर फल चरता रहता है जब सुब्ह़ होती है तो मछली अपनी दुम मार कर उसे ज़ब्ह़ कर डालती है शुहदा उसे खाते और उस में हर जन्नती फल का मज़ा पाते हैं, वोह अपने जन्नती मक़ामात को देखते हैं तो क़ियामत क़ाइम होने की दुआ़ करते हैं।

मोमिन की मौत

जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मोमिन बन्दे को मौत देना चाहता है तो उस की त़रफ़ दो फ़िरिश्ते भेजता है जिन के पास जन्नती कफ़न और फूल होते हैं, वोह कहते हैं : ऐ पाक रूह़ ! अपने मेहरबान रब और उस की राह़त व रह़मत की त़रफ़ निकल, तेरे आ'माल बड़े सुथरे हैं, वोह बेहतरीन महकती हुई ख़ुश्बू की त़रह़ निकलती है, उधर आस्मान के किनारों पर फ़िरिश्ते कहते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰه आज ज़मीन से सुथरी रूह़ आई है वोह जिस दरवाज़े से गुज़रती है वोह खोल दिया जाता है और जिस फ़िरिश्ते के पास से गुज़र होता है वोह उस के लिये बख़्शिश त़लब करता है ह़त्ता कि उस रूह़ को बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर किया जाता है और उस के सजदा रेज़ होने से पहले फ़िरिश्ते सजदा रेज़ हो कर अ़र्ज़ गुज़ार होते हैं : ऐ मौला ! तेरे इस बन्दे को हम ने वफ़ात दी और तू ख़ूब जानता है। रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : इसे सजदे का कहो। पस वोह जान सजदा रेज़ हो जाती है, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام को बुला कर इरशाद फ़रमाता है : इस जान को मोमिनीन की जानों के साथ शामिल कर दो ह़त्ता कि क़ियामत के दिन मैं तुम से इस के बारे में पूछूंगा। चुनान्चे, उसे क़ब्र में लौटा कर क़ब्र को 70 हाथ लम्बाई और 70 हाथ चौड़ाई में वुस्अ़त दे दी जाती है, उस में फूल बिखेर दिये जाते और रेशम बिछा दिया जाता है और अगर उसे कुछ क़ुरआन याद होता है तो वोही उस के लिये क़ब्र में नूर बन जाता है वरना उस को सूरज की मानिन्द नूर दिया जाता है, फिर एक दरवाज़ा जन्नत की त़रफ़ खोल दिया जाता है और वोह सुब्ह़ो शाम अपना जन्नती ठिकाना देखता है।

काफ़िर की मौत

जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी काफ़िर को मौत देता है तो उस की त़रफ़ दो फ़िरिश्ते भेजता है जिन के पास टाट का एक इन्तिहाई बदबूदार और खुर्दरा टुकड़ा होता है, वोह कहते हैं : ऐ नापाक रूह़ ! अपने रब की नाराज़ी और दर्दनाक अ़ज़ाब और जहन्नम की त़रफ़ निकल, तेरे करतूत बड़े बुरे

थे, वोह निहायत बदबूदार मुर्दे की त़रह़ निकलती है, हर हर आस्मान के किनारों पर फ़िरिश्ते कहते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पाक है, ज़मीन से कैसी बदबूदार ख़बीस रूह़ आ रही है उस के लिये आस्मानी दरवाज़े नहीं खोले जाते, फिर उस के जिस्म को क़ब्र में डाल कर क़ब्र को तंग कर दिया जाता है और बुख़्ती ऊंटों की गर्दनों जैसे सांप क़ब्र में भर दिये जाते हैं जो उस की हड्डियों से गोश्त नोच नोच कर खाते हैं, फिर उस पर ऐसे फ़िरिश्ते भेजे जाते हैं जिन के पास लोहे के गुर्ज़ होते हैं जो देखते हैं न सुनते हैं कि उस की बद ह़ाली को देख कर या उस की दर्दनाक आवाज़ें सुन कर रह़म खाएं। वोह उन गुर्ज़ों से इन्तिहाई ज़ोर के साथ उसे मारते हैं फिर उस की क़ब्र में दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और वोह सुब्ह़ शाम अपने जहन्नमी ठिकाने को देखता है, वोह जहन्नम को देख कर ख़ुदा तआ़ला से सुवाल करता है कि मुझे इसी क़ब्र में रहने दे ताकि बा'दे क़ियामत जहन्नम के अ़ज़ाब में मुब्तला न होऊं।(1)

सूरज की मिस्ल रौशन चेहरा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मोमिन की जान इस ह़ाल में निकलती है कि वोह मुश्क से बढ़ कर ख़ुश्बूदार होती है, मौत देने वाले फ़िरिश्ते उसे ले कर ऊपर चढ़ते हैं तो आस्माने दुन्या से दूसरे फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त मिलती है और पूछती है : तुम्हारे साथ येह कौन है ? फ़िरिश्ते उस जान की ता'रीफ़ करते हुवे कहते हैं : येह फ़ुलां हैं। येह सुन कर वोह फ़िरिश्ते कहते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले को सलामत रखे और आस्मान के दरवाज़े खोल देते हैं पस उस शख़्स का चेहरा चमक जाता है, अब वोह बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होता है और उस का चेहरा सूरज की मिस्ल रौशन दलील होता है और जब काफ़िर की जान निकलती है तो वोह मुर्दार से ज़ियादा बदबूदार होती है, उसे भी मुआ़विन फ़िरिश्ते आस्मान पर ले जाते हैं, रास्ते में फ़िरिश्तों की एक दूसरी जमाअ़त से मुलाक़ात होती है वोह पूछते हैं : येह कौन है ? फ़िरिश्ते जवाब देते हैं : येह फ़ुलां बिन फ़ुलां है और उस के बदतरीन आ'माल का तज़्किरा करते हैं। फ़िरिश्ते कहते हैं : इसे वापस ज़मीन पर ले जाओ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कोई ज़ुल्म नहीं किया। फिर ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते त़य्यिबा तिलावत की :

---

(1)...الزہد لھناد، باب منازل الشھداء، ۱/۱۲۹، حدیث:۱۶۸، عن عبد اللّٰہ بن عمر
مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب فی موت المؤمن وغیرہ، ۳/۷۲، حدیث: ۳۹۳۲

وَلَا يَدۡخُلُوۡنَ الۡجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الۡجَمَلُ فِىۡ سَمِّ الۡخِيَاطِ ؕ (پ۸، الاعراف:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और न वोह जन्नत में दाख़िल हों जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो ।*

जब कि एक रिवायत में यूं है कि जिस दरवाज़े से उस का अ़मल चढ़ता था उसे वहीं से ले जाया जाता है और रिवायत के आख़िर में है कि उसे सब से निचली ज़मीन की त़रफ़ लौटा दिया जाता है ।(1)

इल्लिय्यीन और सिज्जीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار से इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الۡاَبۡرَارِ لَفِىۡ عِلِّيِّيۡنَ ؕ ۱۸ (پ۳۰، المطففين:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हां हां बेशक नेकों की लिखत सब से ऊंचे मह़ल इल्लिय्यीन में है ।*

के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप ने कहा : जब मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ होती है तो आस्मान की त़रफ़ बुलन्द की जाती है, उस के लिये आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते और फ़िरिश्ते ख़ुश ख़बरी के साथ उस का इस्तिक़्बाल करते हैं ह़त्ता कि उसे अ़र्श तक ले जाया जाता है फिर फ़िरिश्ते अ़र्श के नीचे से एक किताब लाते हैं, उस पर मोहर लगा कर कुछ लिखा जाता है और अ़र्श के नीचे ही उसे रख दिया जाता है ताकि बरोज़े क़ियामत उस के ह़िसाब के लिये ज़रीअ़ए नजात हो इसी बात को इस फ़रमाने बारी तआ़ला में बयान किया गया है :

كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الۡاَبۡرَارِ لَفِىۡ عِلِّيِّيۡنَ ؕ ۱۸ وَ مَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا عِلِّيُّوۡنَ ؕ ۱۹ كِتٰبٌ مَّرۡقُوۡمٌ ۙ ۲۰ (پ۳۰، المطففين:۱۸تا۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हां हां बेशक नेकों की लिखत सब से ऊंचे मह़ल इल्लिय्यीन में है और तू क्या जाने इल्लिय्यीन कैसी है वोह लिखत एक मोहर किया नविश्ता (तह़रीर नामा) है ।*

---

(1)...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی موسی، ۸/۲۰۳، حدیث:۵
شرح اصول اعتقاد اھل السنۃ، باب شفاعۃ لاھل الکبائر، ۲/۹۷۹، حدیث: ۲۱۶۳

और इस आयते मुबारका :

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ؕ﴿۷﴾

(پ۳۰، المطففین:۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *बेशक काफ़िरों की लिखत सब से नीची जगह सिज्जीन में है ।*

से मुराद येह है कि गुनाहगार की रूह़ आस्मानों की त़रफ़ ले जाई जाती है तो आस्मान उसे क़बूल करने से इन्कार कर देता है । चुनान्चे, उसे ज़मीन पर उतार दिया जाता है तो ज़मीन भी उसे क़बूल नहीं करती बिल आख़िर उसे सातों ज़मीन के नीचे सिज्जीन तक पहुंचा दिया जाता है वोह इब्लीस का जबड़ा है, उस जबड़े के नीचे से एक किताब निकाल कर उसे मोहर लगा कर वापस वहीं रख दिया जाता है उस में रोज़े ह़िसाब के लिये उस की हलाकत लिखी होती है और इस फ़रमाने बारी तआ़ला का येही मत़लब है :

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ ؕ﴿۸﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ؕ﴿۹﴾

(پ۳۰، المطففین:۸، ۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है वोह लिखत एक मोहर किया नविश्ता (तह़रीर नामा) है ।*[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रफ़ीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَدِيْع फ़रमाते हैं : जब रूहे मोमिन को आस्मान की त़रफ़ ले जाया जाता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : पाक है वोह ज़ात जिस ने इस बन्दे को शैत़ान से नजात दिलाई, वाह कैसी नजात पाई ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

وَقِيْلَ مَنْ ٜ رَاقٍ ﴿۲۷﴾ۙ

(پ۲۹، القیامۃ:۲۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और लोग कहेंगे कि है कोई झाड़ फूंक करे ।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस से मुराद येह है कि कहा जाएगा : कौन इस की रूह़ को ले कर चढ़े ? रह़मत के फ़िरिश्ते या अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते ।[3]

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : कुछ फ़िरिश्ते दूसरे फ़िरिश्तों से पूछेंगे कि इस के अ़मल को किस दरवाज़े से ले जाया

---

1 ...الزھد لابن المبارک، باب فضل ذکر اللّٰہ، ص۴۳۴، حدیث:۱۲۲۳

2 ...ذم الھوی، الباب الثالث والعشرون فی التخویف من الفتن، ص۱۴۳، رقم:۵۰۳

3 ...تفسیر ابن ابی حاتم، پ۲۹، القیامۃ، تحت الآیۃ:۲۷، ۱۰/۳۳۸۸

जाता था ताकि उस की रूह़ को भी वहीं से ले जाया जाए।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق इस फ़रमाने बारी तआला :

وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿۲۹﴾ (پ۲۹، القیامۃ:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और पिन्डली से पिन्डली लिपट जाएगी।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : लोग मुर्दे के जिस्म को और फ़िरिश्ते उस की रूह़ को तय्यार कर रहे होते हैं।[2]

100 क़त्ल करने वाले की तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : एक बन्दा मुसलसल गुनाह करता रहा और उस ने 97 बन्दे नाह़क़ क़त्ल किये फिर एक कनीसा (या'नी गिरजा) में पहुंचा और राहिब (पादरी) से कहा : ऐ राहिब ! एक शख़्स ने 97 नाह़क़ क़त्ल किये हैं क्या उस के लिये तौबा है ? राहिब ने जवाब दिया : नहीं। उस ने येह सुन कर राहिब को भी मार डाला, फिर दूसरे राहिब के पास पहुंच कर येही सुवाल किया तो उस ने भी कहा : तौबा क़बूल नहीं होगी येह सुन कर उस ने उसे भी क़त्ल कर डाला फिर तीसरे राहिब के पास आया तो वहां भी येही मुआ़मला हुवा फिर एक और के पास आया और कहा : एक शख़्स ने हर बुराई की है और 100 नाह़क़ क़त्ल किये है क्या उस के लिये तौबा की गुन्जाइश है ? उस ने कहा : ब ख़ुदा ! अगर मैं येह कहूं कि ख़ुदा अपने बन्दे की तौबा क़बूल नहीं करता तो येह झूट होगा, यहां एक इ़बादत गुज़ारों की बस्ती है तुम वहां चले जाओ और उन के साथ रह कर ख़ुदा की इ़बादत करो। चुनान्चे, वोह शख़्स सच्ची तौबा के इरादे से उस बस्ती की त़रफ़ चला तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़िरिश्ते को भेजा जिस ने रास्ते ही में उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली, वहां रह़मत और अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते पहुंच गए और उसे ले जाने में इख़्तिलाफ़ हो गया। चुनान्चे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़िरिश्ते को मुन्सिफ़ बना कर भेजा तो उस ने आ कर कहा : येह शख़्स जिन लोगों की बस्ती के क़रीब होगा उन ही में से होगा। जब दोनों बस्तियों का फ़ासिला नापा गया तो वोह एक पोरे की मिक़्दार इ़बादत गुज़ारों की बस्ती से ज़ियादा क़रीब पाया गया लिहाज़ा उस की मग़फ़िरत कर दी गई।[3]

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب شہادات، ۵/۵۴۴، حدیث:۴۶۶

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانہ، ۵/۴۶۴، حدیث:۲۲۹

3 ...حلیۃ الاولیاء، عبیدۃ بن مہاجر، ۵/۱۸۶، حدیث:۶۷۷۴

अस्ल हदीस हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है जिस में है कि जिस बस्ती की त़रफ़ वोह जा रहा था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे नज़्दीक होने का हुक्म दिया और जिस बस्ती से आ रहा था उसे परे हट जाने का हुक्म फ़रमाया।"[1]

बुरी गोद

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जब मोमिन बन्दे की वफ़ात का वक़्त क़रीब होता है तो 500 फ़िरिश्ते उस की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं और उसे आस्माने दुन्या की त़रफ़ ले जाते हैं, रास्ते में गुज़रते हुवे अरवाहे़ मोमिनीन से उस की मुलाक़ात होती है और वोह अरवाह़ उस की ख़बरगीरी चाहती हैं तो फ़िरिश्ते फ़रमाते हैं : येह बड़ी बे चैनी से नजात पा कर आ रही है, उस के साथ नर्मी से पेश आना। फिर वोह रूहें उस से बातें करती हैं यहां तक कि उस से अपने भाइयों और दोस्तों के मुतअ़ल्लिक़ पूछती हैं, वोह रूहे़ मोमिन जवाब देती है : वोह लोग उसी त़रह़ हैं जिस त़रह़ तुम उन्हें छोड़ आए थे। यहां तक कि वोह एक ऐसे बन्दे के बारे में उस से पूछती हैं जो उस से पहले मर चुका होता है, वोह रूहे़ मोमिन कहती है : क्या वोह तुम्हारे पास नहीं पहुंचा ? रूहें कहती हैं क्या वोह वाक़ेई मर चुका है ? रूहे़ मोमिन जवाब देती हैं : हां, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह तो मर चुका है। वोह रूहें कहती हैं : फिर तो वोह नीचा दिखाने वाली गोद (जहन्नम) में डाल दिया गया होगा, क्या ही बुरी गोद और क्या ही बुरा गोद वाला।[2]

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि मौत के वक़्त मोमिन को जन्नती फूल और ख़ुश्बू पेश की जाती है फिर उस की रूह़ क़ब्ज़ होती है फिर उसे जन्नती रेशम में रख कर उस पर ख़ुश्बू छिड़की जाती और जन्नती फूलों में लपेटा जाता है, फिर रह़मत के फ़िरिश्ते उसे ले कर इ़ल्लिय्यीन में पहुंचा देते हैं।[3]

क़ब्र फूलों से भर दी जाती है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मोमिन मरने से पहले ही ख़ुश ख़बरी पा लेता है जब उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाती है तो वोह पुकारता है जिसे जिन्नो इन्स

❶...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ٥٦، ۲/ ۴٦٦، حدیث ۳۴۷۰

❷...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب بشری المومن وانذار الکافر، ۵/ ۴۷۹، حدیث: ۲٦۹

❸...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب بشری المومن وانذار الکافر، ۵/ ۴۷۹، حدیث: ۲٦۷

के इलावा घर में मौजूद हर जानदार सुनता है वोह कहता है : मुझे जल्दी जल्दी तमाम मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान ज़ात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ ले चलो। जब उसे तख़्त पर रखा जाता है तो कहता है : तुम सुस्त क्यूं चलते हो ? जल्दी चलो। जब उसे क़ब्र में रख दिया जाता है तो वोह उठ कर बैठ जाता है और अपना जन्नती ठिकाना और दीगर वा'दा की गई ने'मतें देखता है। उस की क़ब्र फूलों और ख़ुश्बूओं से भर दी जाती है, वोह अ़र्ज़ करता है : या रब عَزَّوَجَلَّ मुझे आगे भेज दे। इरशाद होता है : अभी तेरा वक़्त नहीं हुवा तेरे बहुत से बहन भाई अभी तेरे पास नहीं आए, हां ! ठन्डी आंखें लिये सो जा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! दुन्या में इतनी मुख़्तसर और मीठी नींद कभी कोई पेट भरा आसूदा ह़ाल नौजवान भी नहीं सोया होगा जितनी मीठी नींद उस बन्दे को नसीब होती है यहां तक कि बरोज़े क़ियामत ख़ुश ख़बरी सुनने के लिये बेदार होगा।(1)

ख़ुश आमदीद

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कोई शख़्स जन्नत या दोज़ख़ में अपना मक़ाम देखे बिग़ैर दुन्या से रुख़्सत नहीं होता। फिर इरशाद फ़रमाया : जब वोह मरने के क़रीब होता है तो फ़िरिश्तों की दो सफ़ें खड़ी हो जाती हैं जिन के चेहरे सूरज की त़रह़ चमकते दमकते हैं, सिर्फ़ वोही शख़्स उन्हें देख रहा होता है अगर्चे तुम येही समझते हो कि वोह तुम्हें देख रहा है। उन में से हर फ़िरिश्ते के पास जन्नती कफ़न और ख़ुश्बू होती है, अगर मरने वाला मोमिन है तो फ़िरिश्ते उसे जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुना कर कहते हैं : ऐ सुथरी जान ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और उस की जन्नत की त़रफ़ निकल, ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ ने तेरे लिये वोह इन्आ़मात व ए'ज़ाज़ात तय्यार कर रखे हैं जो दुन्या और इस में मौजूद हर चीज़ से बेहतर हैं। फ़िरिश्ते निहायत नर्मी से उसे येह ख़ुश ख़बरी सुनाते रहते हैं और उन की मेहरबानी व नर्मी मां से भी बढ़ कर होती है फिर आहिस्ता आहिस्ता उस के हर नाख़ुन और जोड़ से रूह़ निकालते हैं, एक के बा'द एक अंग मुर्दा होता रहता है और येह सब बड़ी नर्मी से रू नुमा होता है अगर्चे तुम्हें सख़्त समझ आता है यहां तक कि उस की

---

(1)...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابی ھریرۃ، ۸/۱۸۲، حدیث:۲

रूह ठोड़ी तक पहुंच जाती है, अब वोह रूह जिस्मे मोमिन से निकलने को इतना सख़्त ना पसन्द करती है जितना बच्चा रेहूमे मादर से बाहर निकलने को बुरा जानता है, फ़िरिश्ते उस की रूह लेने को एक दूसरे से आगे बढ़ते हैं बिल आख़िर हज़रते मलकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام उसे ले लेते हैं। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुक़द्दसा तिलावत फ़रमाई :

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِیْ وُكِّلَ بِكُمْ

(پ۲۱، السجدۃ:۱۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता है मौत का फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है।*

फिर हज़रते मलकुल मौत عَلَیْهِ السَّلَام उसे सफ़ेद कपड़े में ले कर अपनी गोद में इस क़दर प्यार से दबाते हैं कि मां भी अपने बच्चे को इतने प्यार से नहीं दबाती, फिर उस से मुश्क से बेहतर ख़ुश्बू निकलती है जिसे फ़िरिश्ते सूंघते और यूं ख़ुश ख़बरी देते हैं : ऐ ख़ुश्बूदार व पाकीज़ा रूह ! ख़ुश आमदीद। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस रूह पर और उस जिस्म पर जिस से येह निकली है रहमत फ़रमा। फिर उसे ले कर आस्मान की तरफ़ बुलन्द होते हैं, हवा में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ऐसी मख़्लूक़ है जिन की ता'दाद वोही जानता है उस रूह से मुश्क से बेहतर ख़ुश्बू फैलती है तो वोह उस को सूंघते हैं और उसे ख़ुश ख़बरी सुनाते हैं, फिर आस्मान के दरवाज़े खुलते हैं और हर आस्मान का हर फ़िरिश्ता उस के लिये दुआए रहमत करता है यहां तक कि उसे बारगाहे इलाही में पहुंचा दिया जाता है। रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ऐ सुथरे जिस्म से निकलने वाली सुथरी रूह ! ख़ुश आमदीद। जब ख़ुदाए रहमान किसी को ख़ुश आमदीद फ़रमाए तो काइनात की हर चीज़ उसे ख़ुश आमदीद कहती है और उस की तमाम तंगी दूर कर दी जाती है, फिर उस पाकीज़ा जान के लिये हुक्म आता है : इसे जन्नत में ले जा कर इस का मक़ाम दिखाओ और इस पर वोह तमाम ने'मतें पेश करो जो हम ने इस के लिये तय्यार की हैं, फिर इसे ज़मीन की तरफ़ ले जाओ, क्यूंकि मैं फ़ैसला फ़रमा चुका हूं कि इन्सानों को ज़मीन से पैदा करूंगा और इसी में उन्हें लौटाऊंगा और इसी से दोबारा निकालूंगा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़सम उस ज़ात की जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! वोह रूहे मोमिन ज़मीन की तरफ़ जाने को जिस्म से निकलने से भी ज़ियादा बुरा जानती है और अर्ज़ करती है : क्या तुम मुझे दोबारा उसी जिस्म में लौटाओगे जिस से छुटकारा पा कर आई हूं ? फ़िरिश्ते कहते हैं : हमें इसी का हुक्म दिया गया है, लिहाज़ा येह तुम्हारे लिये ज़रूरी है।

चुनान्चे, फ़िरिश्ते उसे इतनी देर में वापस जिस्म में ले आते हैं जितनी देर में लोग ग़ुस्ल व कफ़न से फ़ारिग़ होते हैं फिर उसे उस के जिस्म और कफ़न में दाख़िल कर देते हैं।(1)

सुद्दी ने कहा : जब काफ़िर की रूह निकलती है तो ज़मीन के फ़िरिश्ते उसे मारते हैं यहां तक कि वोह आस्मान की तरफ़ बुलन्द हो जाए और जब आस्मान तक पहुंचती है तो आस्मानी फ़िरिश्ते भी उसे मारते पीटते हैं तो वोह ज़मीन पर आ जाती है यहां फिर ज़मीनी फ़िरिश्ते मारते हैं तो आस्मान को चढ़ती है और वहां से दोबारा मार पड़ती है तो सब से निचली ज़मीन में पहुंच जाती है।(2)

मरने के बा'द गुफ़्तगू

हज़रते सय्यिदुना रिबई बिन हिराश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जब मैं घर में दाख़िल हुवा तो मुझे इत्तिलाअ़ दी गई कि मेरा भाई फ़ौत हो चुका है, मैं भाग कर गया तो देखा कि भाई को कपड़ों में लपेट दिया गया है, मैं ने उस के सिरहाने पहुंच कर اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رَاجِعُوْن पढ़ा और उस के लिये इस्तिग़फ़ार करने लगा, अचानक उस ने अपने चेहरे से कपड़ा हटा कर कहा : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ । हम ने कहा : وَعَلَیْکُمُ السَّلَام، سُبْحٰنَ الله उस ने कहा ! سُبْحٰنَ الله मैं तुम से जुदा हो कर बारगाहे इलाही में हाज़िर हुवा तो मैं ने फूल, ख़ुश्बू और अपने रब को राज़ी पाया, उस ने मुझे बारीक और मोटे रेशम का सब्ज़ लिबास पहनाया और मैं ने मुआ़मला उस से आसान पाया जितना तुम समझते हो, तुम मायूस न होना, मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से तुम्हें येह बिशारत सुनाने के लिये इजाज़त मांगी थी, जल्दी करो और मुझे बारगाहे रिसालत में ले चलो क्यूंकि उन्हों ने मुझ से वा'दा फ़रमाया था कि मेरी वापसी तक मेरा इन्तिज़ार फ़रमाएंगे। इतना कह कर वोह फिर से अपनी जगह लेट गए।(3)

हज़रते सय्यिदुना रिबई बिन हिराश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हम चार भाई थे, हमारे एक भाई रबीअ़ हम में सब से ज़ियादा नमाज़ें पढ़ते और सख़्त गर्मियों में हम में सब से ज़ियादा रोज़े रखते थे, जब उन का इन्तिक़ाल हुवा तो हम उन के गिर्द जम्अ़ हो गए, अचानक ही भाई रबीअ़ ने अपने चेहरे से कपड़ा हटाया और कहा : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ लोगों ने कहा : وَعَلَیْکُمُ السَّلَام क्या

1...درمنثور،سورۃالانعام،تحت الآیۃ:۹۳، ۳/ ۳۱۸

2...تفسیرطبری،الاعراف،تحت الآیۃ:۴۰، ۵/ ۴۸۵،حدیث:۱۴۶۱۱

3...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، یحیی بن جعدۃ، ۸/ ۲۲۶،حدیث:۲

तुम मरने के बा'द कलाम कर रहे हो ? उस ने कहा : जी हां, मैं तुम्हारे बा'द अपने रब عَزَّوَجَلَّ से बहुत अच्छी हालत में मिला, मेरा रब नाराज़ नहीं था, उस ने राहत, फूल और रेशम से मेरा इस्तिक़्बाल किया, सुनो ! हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी नमाज़े जनाज़ा का इन्तिज़ार फ़रमा रहे हैं लिहाज़ा मेरी नमाज़े जनाज़ा में जल्दी करो, देर न करो। हम ने इस बात को उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमाया : मैं ने आक़ाए दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि "मेरी उम्मत में एक शख़्स मरने के बा'द कलाम करेगा।"(1)

सूरए सजदह और सूरए मुल्क पढ़ने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबान बिन अबू अय्याश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मुवर्रिक़ इजली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی की वफ़ात के वक़्त हम वहां मौजूद थे, जब उन्हें कफ़न दे दिया गया तो हम ने देखा कि उन के सर से एक नूर निकला जो छत को चीरता हुवा निकल गया, फिर हम ने देखा कि ऐसा ही एक नूर पाउं की तरफ़ से बुलन्द हुवा, फिर जिस्म के दरमियानी हिस्से से एक नूर निकलते देखा, अभी हम एक साअत ही ठहरे थे कि उन्हों ने अपने चेहरे से कपड़ा हटाया और कहा : क्या तुम ने कुछ देखा ? हम ने कहा : जी हां ! और जो कुछ देखा था बता दिया। उन्हों ने फ़रमाया : येह सूरए सजदह है जो मैं हर रात पढ़ता था और जो नूर तुम ने मेरे सर की तरफ़ देखा येह उस की इब्तिदाई 14 आयात थीं और जो क़दमों की तरफ़ देखा येह उस की आख़िरी चौदह आयात का नूर था और जो दरमियानी हिस्से से देखा वोह तन्हा आयते सजदा थी जो मेरी शफ़ाअत करवाने को बुलन्द हुई है और सूरए मुल्क मेरी हिफ़ाज़त कर रही है। इतना कहा और फिर इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

हज़रते सय्यिदुना मुवर्रिक़ इजली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : हम एक बेहोश शख़्स की तीमारदारी को गए तो हम ने मुलाहज़ा किया कि एक नूर उस के सर से निकला और छत चीरता हुवा बाहर निकल गया फिर नाफ़ से भी यूंही एक नूर निकला और फिर क़दमों से भी एक नूर निकल कर बुलन्द हुवा, फिर वोह शख़्स होश में आया तो हम ने पूछा : तुम्हें मा'लूम है तुम्हारे साथ क्या मुआमला पेश आया ? उस ने कहा : हां ! जो नूर मेरे सर से बर आमद हुवा वोह الٓمّٓ تَنْزِيْل (या'नी सूरए सजदह) की इब्तिदाई 14 आयात थीं और जो नूर मेरी नाफ़ से निकला वोह आयते सजदा थी

(1)...حلیۃ الاولیاء، ربعی بن حراش، ۴/۴۰۸، رقم: ۲۰۳۰

और जो क़दमों से निकला वोह सूरए सजदह का आख़िर था, येह सब आयात मेरी शफ़ाअ़त के लिये तशरीफ़ ले गई हैं और सूरए मुल्क यहां मेरी हिफ़ाज़त कर रही है, मैं येह दोनों सूरतें (या'नी सूरए सजदह और सूरए मुल्क) हर रात पढ़ता था।(1)

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मैं एक शख़्स के साथ हज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की इयादत के लिये गया तो हम ने उन्हें बेहोश पाया, इतने में उन से तीन नूर बुलन्द हुवे एक सर से, एक दरिमयान से और एक क़दमों से। हमें इस से बहुत हैरत हुई जब उन्हें इफ़ाक़ा हुवा तो हम ने अ़र्ज़ की : हम ने ऐसी चीज़ देखी है जिस ने हमें हैरत ज़दा कर दिया आख़िर मुआ़मला क्या है ? उन्हों ने फ़रमाया : क्या तुम ने देख लिया ? हम ने कहा : जी हां। फ़रमाने लगे : वोह सूरए सजदह थी। जो मेरे सर से निकला वोह उस की इब्तिदाई 19 आयात थीं, जो मेरे दरमियान से निकला वोह सूरत का दरमियानी हिस्सा था और जो क़दमों से बुलन्द हुवा वोह इस सूरत के आख़िर का नूर था, पूरी सूरत मेरी शफ़ाअ़त करने को बुलन्द हुई है और येह تَبَارَكَ الَّذِی (या'नी सूरए मुल्क) मेरी हिफ़ाज़त कर रही है। इतना कहने के बा'द हज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इन्तिक़ाल फ़रमा गए।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इब्ने मुन्कदिर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने साथ नूर देखा करते थे, वक़्ते वफ़ात उन से उस नूर के बारे में दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाने लगे : वोह नूर अब भी देख रहा हूं।

वफ़ात के बा'द मुस्कुराते रहे

हज़रते सय्यिदुना ह़ारिस عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَارِث फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ह़िराश رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़सम खा ली कि उन्हें हंसते हुवे कोई न देखेगा जब तक वोह अपना ठिकाना न जान लें, लिहाज़ा ऐसा ही हुवा ह़त्ता कि उन्हें वफ़ात के बा'द हंसते हुवे देखा गया, इसी त़रह़ उन के बा'द उन के भाई हज़रते रिबई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَلِی ने भी क़सम खाई कि मैं उस वक़्त तक न हंसूंगा जब तक येह मा'लूम न हो जाए कि मैं जन्नती हूं या जहन्नमी। चुनान्चे, उन की वफ़ात के बा'द उन्हें ग़ुस्ल देने वाले ने मुझे बताया कि हम जब तक उन को ग़ुस्ल देते रहे वोह मुस्कुराते रहे।(3)

1...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۲/۲۹۲، حدیث:۴۷

2...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۲/۲۹۵، حدیث:۴۶

3..موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۲/۲۷۳، حدیث:۱۲

जन्नत में दाख़िले से महरूम लोग

हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन हज़्फ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه[1] फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदतुना रूबा बिन्ते बीजान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا का इन्तिक़ाल हुवा तो उन्हें ग़ुस्ल व कफ़न दिया गया फिर देखा तो वोह हरकत करते हुवे लोगों से कह रही थीं : ख़ुश हो जाओ, क्यूंकि जितना तुम मुझे डराते थे मैं ने मुआमला इस से आसान पाया है और मैं ने जाना है कि रिश्ता काटने वाला, शराब का आदी और मुशरिक जन्नत में दाख़िल न होगा ।[2]

सहाबा को बुरा भला कहने वालों पर फ़िरिश्तों की ला'नत

हज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन हौशब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मदाइन में एक शख़्स फ़ौत हुवा, उसे कफ़न दे दिया गया तो थोड़ी देर बा'द उस के कफ़न में हरकत देखी गई, जब मुंह से कपड़ा हटाया गया तो वोह कहने लगा : दाढ़ियों को ख़िज़ाब लगाए हुवे कुछ लोग इस मस्जिद में बैठ कर अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) को बुरा भला कह रहे और ला'न ता'न कर रहे हैं और मेरी रूह क़ब्ज़ करने के लिये आने वाले मलाइका उन लोगों से बेज़ारी का इज़्हार कर रहे है और उन पर ला'नत भेज रहे हैं । येह बता कर वोह शख़्स दोबारा इन्तिक़ाल कर गया ।[3]

अबू ख़सीब बशीर बयान करते हैं : मैं मदाइन में एक क़रीबुल मर्ग शख़्स के पास गया, उस ने चाक गिरेबान वाली क़मीज़ पहनी हुई थी, अभी हम वहीं थे कि अचानक वोह ऐसे उछला जिस से उस का पेट भी नंगा हो गया और वोह "हाए मौत ! हाए हलाकत !" पुकारने लगा, उस के साथी येह हालत देख कर भाग खड़े हुवे तो मैं उस शख़्स के क़रीब हुवा और पूछा : येह मैं तुम्हारी कैसी हालत देख रहा हूं ? उस ने कहा : मैं कूफ़ा के ऐसे लोगों के साथ बैठता था जिन्हों ने

1.....मतन में इस मक़ाम पर "मुग़ीरा बिन ख़लफ़" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "मुग़ीरा बिन हज़्फ़" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है ।

2...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۲/۲۷۴، حدیث: ۱۴

3...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۲/۲۷۶، حدیث: ۱۷

हज़रते अबू बक्र व हज़रते उमर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से बेज़ारी ज़ाहिर करने और उन्हें बुरा भला कहने में मुझे अपना हम ख़याल बना लिया था। मैं ने कहा : तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुआफ़ी मांगो और दोबारा इस अक़ीदे की तरफ़ मत लौटना। उस ने कहा : अब मुझे इस का कोई फ़ाएदा नहीं क्यूंकि फ़िरिश्ते अभी मुझे मेरे जहन्नमी ठिकाने की तरफ़ ले गए थे जिसे मैं देख चुका हूं। फिर मुझे कहा गया अब तुम अपने दोस्तों की तरफ़ लौटाए जाओगे और अपने अन्जाम की ख़बर दोगे और फिर तुम दोबारा मुर्दा हो जाओगे। मैं नहीं जानता उस ने अपनी बात पूरी की या वोह दोबारा अपनी मुर्दा हालत पर लौट गया।(1)

अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान और हज्जाज बिन यूसुफ़

हज़रते सय्यिदुना अबू मा'शर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मदीनए मुनव्वरा में एक शख़्स वफ़ात पा गया, नहलाने के लिये जब उसे तख़्ते पर लिटाया गया तो वोह सीधा बैठ गया और हाथ से अपनी आंखों की जानिब इशारा कर के तीन मरतबा कहा : मेरी आंखें देख रही हैं कि अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान और ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ जहन्नम में अपनी आंतें खींच रहे हैं। येह कह कर वोह पहली हालत पर लेट गया।(2)

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : हज़रते मिस्वर बिन मख़्रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर बेहोशी त़ारी हो गई, होश आया तो कहने लगे :

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه या'नी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रफ़ीक़े आ'ला में हैं और अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान और ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ जहन्नम में अपनी आंतें घसीट रहे हैं।(3) येह वाक़िआ़ अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान और ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ की बादशाहत से बहुत पहले का है क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना मिस्वर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात मक्कए मुकर्रमा में 64 हिजरी में हुई जिस दिन यज़ीद बिन मुआ़विया के मरने की ख़बर आई और ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ 70 हिजरी के बा'द गवर्नर बना था।

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۶/۲۷۷، حدیث: ۱۹

2 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۱۲۱۷، الحجاج بن یوسف، ۱۲/۲۰۰

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۵/۳۸۴، حدیث: ۳۵۷

ने'मतों वाली सूरत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि हम अपने किसी मरीज़ के इर्द गिर्द बैठे हुवे थे कि उस का इन्तिक़ाल हो गया। हम ने उस की आंखें बन्द कर के उस पर कपड़ा डाल दिया और एक शख़्स को कफ़न, ख़ुश्बू और चारपाई लाने भेज दिया, जब हम उसे ग़ुस्ल देने लगे तो वोह ह़रकत करने लगा, हम ने तअ़ज्जुब से कहा : سُبْحٰنَ اللّٰہ ! हम तो समझे तुम मर गए। उस ने कहा : "हां मैं मर गया था और एक ख़ूब सूरत शख़्स ने मुझे क़ब्र में रख कर काग़ज़ों से ढक भी दिया मगर अचानक एक बदबूदार काली औ़रत आई और उस ने उस बुज़ुर्ग बन्दे के सामने मेरे गुनाह गिनवाने शुरूअ़ कर दिये। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मुझे उस से बड़ी ह़या आई, मैं ने उसे कहा : तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा मेरा पीछा छोड़ दे और ऐसा मत कह। वोह बोली : चल हम मुक़द्दमा लड़ते हैं। चुनान्चे, मैं एक कुशादा जगह गया जहां एक त़रफ़ चांदी का चबूतरा था और एक किनारे पर मस्जिद बनी हुई थी और एक शख़्स उस में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था, उस ने सूरए नह़्ल तिलावत की तो उसे एक जगह शुबा लगा, मैं ने लुक़्मा दिया तो वोह मुझे कहने लगा : क्या तुम्हें येह सूरत याद है ? मैं ने कहा : जी हां। उस ने कहा : येह तो बड़ी ने'मतों वाली सूरत है और क़रीब से एक तक्या उठाया और उस में से एक सह़ीफ़ा निकाल कर उसे देखने लगा, इतने में वोह काली औ़रत भागती हुई आई और कहने लगी : इस ने येह गुनाह किया वोह गुनाह किया। उस की बात सुन कर ख़ूब सूरत चेहरे वाले शख़्स ने मेरी नेकियां गिनवाना शुरूअ़ कर दीं, तो येह सुन कर नमाज़ पढ़ने वाले आदमी ने कहा : येह शख़्स था तो गुनहगार मगर ख़ुदा तआ़ला ने इसे मुआ़फ़ कर दिया, इस की मौत का वक़्त पीर का दिन है।" येह सारी बात बता कर उस शख़्स ने हमें कहा : अगर मैं पीर को मरूं तो समझ लेना जो कुछ मैं ने देखा ह़क़ है और अगर ऐसा न हो तो येह दर्दो कर्ब की वज्ह से मेरा हज़्यान है। फिर जब पीर का दिन आया तो वोह बिल्कुल सिह़्ह़त मन्द हो गया मगर जूंही दिन ढलने लगा वोह वफ़ात पा गया।(1)

बनी इस्राईल का एक क़ाज़ी

हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : बनी इस्राईल का एक शख़्स 40 साल तक मन्सबे क़ज़ा पर फ़ाइज़ रहा, जब उसे मरज़े मौत लाहिक़ हुवा तो उस ने कहा : मुझे लगता

1...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۶/۳۰۹، حدیث:۲۴

है कि इसी मरज़ में मर जाऊंगा, जब मैं मर जाऊं तो मुझे चार पांच दिन अपने पास ही रखना, अगर मेरी त़रफ़ से कोई चीज़ नज़र आए तो मुझे पुकारना। चुनान्चे, जब वोह मर गया तो लोगों ने उसे ताबूत में रख दिया, जब तीन दिन गुज़रे तो उस में से एक हवा चली, एक शख़्स ने उस का नाम ले कर पूछा : येह हवा कैसी है ? उसे बोलने की इजाज़त मिल गई और उस ने कहा : ऐ लोगो ! मैं ने तुम में 40 साल तक ओ़ह्दए क़ज़ा निभाया, मुझे दो शख़्सों के इ़लावा किसी ने शुबे में न डाला, उन में से एक शख़्स से मुझे कुछ लगाव था तो मैं उस की बात उस कान से ज़ियादा सुनता था जो उस के क़रीब था, येह हवा उस से आ रही है। रब तआ़ला ने उस के उसी कान पर मारा तो वोह मर गया।(1)

नेकूकार आया

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुर्रा बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد बयान करते हैं कि हमारे ख़ानदान की एक बीबी मर गई लेकिन हम ने उसे सात दिन तक दफ़्न न किया क्यूंकि उस की एक रग ह़रकत में थी, फिर वोह बीबी बोलने लगीं कि जा'फ़र बिन ज़ुबैर ने क्या किया ह़ालांकि जा'फ़र का इन्तिक़ाल उस ज़माने में हुवा था जब येह बीबी ना समझ थीं। मैं ने कहा : उन का तो इन्तिक़ाल हो गया है। वोह कहने लगीं : ब ख़ुदा ! मैं ने उन्हें सातवें आस्मान पर देखा है, फ़िरिश्ते उन्हें ख़ुश ख़बरी दे रहे हैं, वोह कफ़न पहने हुवे हैं और मैं उन्हें पहचान रही हूं और फ़िरिश्ते कह रहे हैं : नेकूकार आया, नेकूकार आया।(2)

तौबा से गुनाह मिट जाते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ बिन यह़्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मेरे एक पड़ोसी ने मुझे बताया कि एक शख़्स की रूह़ परवाज़ कर गई फिर उस पर उस के आ'माल पेश किये गए तो उस ने कहा : जिन जिन गुनाहों से मैं सच्ची तौबा कर चुका था, वोह ख़त्म हो गए और जिन से तौबा न की थी वोह मौजूद रहे यहां तक कि अनार का एक मा'मूली दाना जो गिर गया था उसे उठा कर खा लेने की नेकी भी लिखी गई थी और एक रात बा आवाज़े बुलन्द नमाज़ पढ़ रहा था कि सुन कर पड़ोसी जागा और उस ने भी नमाज़ पढ़ ली, वोह नेकी भी लिखी गई, इसी त़रह़ एक दिन मैं कुछ

---

1 ...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب من عاش بعد الموت، ٢٨٨/٦، حديث: ٣٥

2 ...مختصر تاريخ دمشق، رقم: ٣١، جعفر بن الزبير الحنفي، ٦/ ٢٠

लोगों के पास मौजूद था, एक मिस्कीन आया जिसे मैं ने उन लोगों की वज्ह से एक दिरहम दे दिया था लेकिन इस अ़मल ने मुझे कोई नफ़्अ़ दिया न नुक़्सान।(1)

हक़ का प्रचार करने का इनआ़म

हज़रते सय्यिदुना माजिशून رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साहिबज़ादे बयान करते हैं कि मेरे वालिद का इन्तिक़ाल हुवा तो हम ने ग़ुस्ल देने के लिये उन्हें तख़्त पर रख दिया और सब लोग बाहर निकल गए, ग़ुस्ल देने वाला अन्दर गया तो उस ने देखा कि उन के तल्वे की एक रग ह़रकत कर रही है। चुनान्चे, हम ने उन्हें दफ़्न न किया, जब तीन दिन गुज़र गए तो वोह सीधे हो कर बैठ गए और कहा : मुझे सत्तू ला कर दो। हम ने सत्तू पेश किया तो उन्हों ने नोश कर लिया। हम ने अ़र्ज़ की : जो आप पर बीती है हमें उस से मुत्तलअ़ कीजिये। फ़रमाया : मेरी रूह़ को ले कर एक फ़िरिश्ता आस्माने दुन्या पर पहुंचा और उस ने दरवाज़ा खुलवाया तो खोल दिया गया इसी त़रह़ होते हुवे जब हम दीगर आस्मानों से सातवें आस्मान पर पहुंचे तो फ़िरिश्ते से पूछा गया : तुम्हारे साथ कौन है ? फ़िरिश्ते ने कहा : माजिशून। उन से कहा गया : अभी तो उस की इतनी उ़म्र बाक़ी है। फिर मैं नीचे आया तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه आप की दाईं और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बाईं जानिब तशरीफ़ फ़रमा थे और हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز सामने मौजूद थे, मैं ने अपने साथ वाले फ़िरिश्ते से पूछा : येह कौन हैं ? उस ने कहा : तुम इन्हें नहीं पहचानते ? मैं ने कहा : मैं तस्दीक़ करना चाहता हूं। उस ने बताया : येह उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ हैं। मैं ने कहा : येह सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से बहुत क़रीब हैं। फ़िरिश्ते ने जवाब दिया : इस की वज्ह येह है कि इन्हों ने ज़ुल्मो सितम के ज़माने में भी इन्साफ़ और ह़क़ का बोल बाला किया और शैख़ैने करीमैन (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने ह़क़ के ज़माने में ह़क़ पर अ़मल किया।(2)

सह़ाबी का ख़्वाब

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان बयान करते हैं कि मेरे वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه शदीद बीमार हो गए ह़त्ता कि आप पर बेहोशी त़ारी हो गई, लोगों ने समझा आप की वफ़ात हो चुकी है, येह सोच कर सब लोग आप के पास

❶...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب من عاش بعد الموت، ٢/٢٧٥، حديث: ١٥

❷...وفيات الاعيان، رقم: ٨٢٣، الماجشون، ٥/ ٣٢٣

से उठ खड़े हुवे और आप को एक कपड़े में लपेट दिया फिर अचानक वोह होश में आ गए और फ़रमाने लगे : मेरे पास दो सख़्त त़बीअ़त फ़िरिश्ते आए और कहा : हमारे साथ अ़ज़ीज़ व अमीन रब तआ़ला के पास चलो ताकि तुम्हारा फ़ैसला करावें। चुनान्चे, वोह मुझे ले कर चले तो रास्ते में दो मेहरबान फ़िरिश्ते मिले, उन्हों ने दरयाफ़्त किया : तुम इसे कहा ले जा रहे हो ? उन दोनों ने कहा : बारगाहे ख़ुदावन्दी में फ़ैसला करवाने ले जा रहे हैं। उन दोनों मेहरबान फ़िरिश्तों ने कहा : इसे छोड़ दो क्यूंकि इन के लिये ख़ुश बख़्ती का फ़ैसला उसी वक़्त हो चुका था जब येह अपनी मां के पेट में थे। इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक माह तक ज़िन्दा रहे फिर वासिले ब ह़क़ हुवे।(1)

वली का ख़्वाब

ह़ज़रते सय्यिदुना सलाम बिन सल्म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ(2) बयान करते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़त़िय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के हमराह मक्कए मुकर्रमा गया, जब हम ''फ़ैद'' नामी एक शहर में पहुंचे तो आधी रात को मुझे उन्हों ने जगा दिया, मैं ने कहा : क्या चाहते हैं ? उन्हों ने कहा : मैं तुम्हें वसिय्यत करना चाहता हूं। मैं ने कहा : ह़ज़रत आप तो ठीक ठाक हैं। फ़रमाने लगे : मैं ने ख़्वाब में दो फ़िरिश्ते देखे वोह कह रहे हैं : हमें तुम्हारी रूह़ क़ब्ज़ करने का हुक्म दिया गया है। मैं ने कहा : क्या ही अच्छा होता तुम मुझे पूरा ह़ज करने देते। फ़िरिश्तों ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारा ह़ज क़बूल कर लिया है, फिर एक ने दूसरे से कहा : तुम अपनी अंगुश्ते शहादत और दरमियान वाली उंगली खोलो, जब उस ने उंगलियां खोलीं तो उन में से दो सब्ज़ कपड़े निकले जिन की सब्ज़ी आस्मानो ज़मीन के दरमियान फैल गई, फिर वोह दोनों कहने लगे : येह तुम्हारा जन्नती कफ़न है। फिर उस फ़िरिश्ते ने दोबारा कफ़न लपेट कर अपनी उंगलियों में रख लिया। अभी हम अपनी मन्ज़िल पर भी न पहुंचे थे कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ज़्ल बिन अ़त़िय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वफ़ात पा गए।(3)

ख़ुश्बू की अहम्मिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान बिन रबीआ़

1.....ابن عساکر، رقم: ۳۹۱۱، عبد الرحمن بن عوف، ۳۵/ ۲۹۲

2.....मतन में इस मक़ाम पर ''सलाम बिन सलाम'' मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में ''सलाम बिन सल्म'' है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

3.....کتاب الفوائد (الغیلانیات)، مجلس من املاء الشافعی، ۱/ ۷۴۰، رقم: ۹۱۲

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ को कहीं से मुश्क मिली तो उन्हों ने अपनी ज़ौजए मोह्तरमा के पास रखवा दी, जब उन की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो ज़ौजा से पूछा : मेरी दी हुई चीज़ कहां है ? उन्हों ने कहा : मेरे पास है। आप ने फ़रमाया : उसे पानी में मिला कर मेरे बिस्तर के इर्द गिर्द छिड़क दो क्यूंकि मेरे हां मख़्लूक़े ख़ुदा में से वोह हस्तियां जल्वा गर होने वाली हैं जो न खाती हैं न पीती हैं मगर ख़ुश्बू मह्सूस करती हैं।(1)

आ'माले सालेहा की ख़ुश्बू

हज़रते सय्यिदुना अबू बकरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब किसी के मरने का वक़्त क़रीब आता है तो हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से कहा जाता है : इस के सर को सूंघो। वोह सूंघ कर बताते हैं कि मैं इस के सर में क़ुरआने मजीद की ख़ुश्बू पाता हूं। फिर कहा जाता है : इस के दिल को सूंघो। वोह सूंघ कर बताते हैं कि मैं इस के दिल में रोज़ों की ख़ुश्बू पाता हूं। फिर कहा जाता है : इस के पाउं को सूंघो। वोह सूंघ कर बताते हैं कि मैं इस के पाउं में (नमाज़ के लिये) क़ियाम की ख़ुश्बू पाता हूं। फिर निदा दी जाती है कि इस शख़्स ने अपने नफ़्स की हिफ़ाज़त की तो ख़ुदा तआला ने इस की हिफ़ाज़त फ़रमाई।(2)

नेक आ'माल की अहम्मिय्यत

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अबू हिन्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ(3) मरज़े ताऊन में मुब्तला हुवे तो उन पर बेहोशी तारी हो गई, जब होश आया तो फ़रमाने लगे : मेरे पास दो फ़िरिश्ते तशरीफ़ लाए, उन में से एक ने दूसरे से दरयाफ़्त किया कि तुम उस के पास क्या पाते हो ? उस ने कहा : ख़ुदाए रह्मान की तस्बीह व तक्बीर, मस्जिद की तरफ़ जाना और कुछ क़ुरआने मजीद पढ़ना। उस वक़्त तक आप ने पूरा क़ुरआने पाक हिफ़्ज़ नहीं किया था (जब इस बीमारी से सिह्हत याब हुवे तो हिफ़्ज़ मुकम्मल फ़रमा लिया)।(4)

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب التاریخ، باب فی بلنجر، ۸/ ۲۴، حدیث:۴

2 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب شهادات، ۵/ ۵۷۷، حدیث: ۵۷۷، عن ابی مکین

3 .....मतन में इस मक़ाम पर "दावूद बिन हिन्द" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "दावूद बिन अबू हिन्द" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

4 ...حلیة الاولیاء، داود بن ابی هند، ۳/ ۱۱۰، رقم: ۳۳۶۵

हज़रते सय्यिदुना दावूद बिन अबू हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ शदीद बीमार हो गए, सिह्हत याबी के बा'द फ़रमाया : मैं ने देखा कि बड़े सर और चौड़े कांधों वाला एक आदमी आ रहा है गोया एक पहाड़ है, मैं उसे देख कर اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ पढ़ने लगा और उस से कहा : क्या तुम मुझे मारना चाहते हो, क्या (مَعَاذَ اللّٰہ) मैं काफ़िर हूं ? क्यूंकि मैं ने सुन रखा था कि कुफ़्फ़ार की रूह काले रंग का फ़िरिश्ता निकालता है, अभी मैं येही कह रहा था कि अचानक छत चटख़ी और फिर खुल गई, मुझे आस्मान नज़र आने लगा फिर सफ़ेद लिबास में मल्बूस एक शख़्स मेरी त़रफ़ उतरा फिर उस के पीछे दूसरा उतरा, दोनों मिल कर उस काले आदमी पर चीख़े तो वोह भागा और दूर जा कर मुझे देखने लगा, वोह दोनों उसे डांटते रहे, फिर उन में से एक मेरे सर और दूसरा क़दमों के पास बैठ गया, सर के पास बैठने वाले ने पाउं वाले से कहा : इसे छू कर देखो। उस ने मेरी उंगलियों को छुआ और कहने लगा : इन के ज़रीए येह शख़्स नमाज़ों के लिये कसरत से जाता रहा है। फिर उस ने सर वाले से कहा : तुम भी छू कर देखो। उस ने मेरे जबड़े छूए तो कहा : इस का जबड़ा ज़िक्रे ख़ुदा से तर है।(1)

रब तआला की रहमत

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुख़ैमिरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा जरमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का एक भतीजा था जो गुनाहों का आदी था, उस की मौत के वक़्त गिध से मुशाबेह दो परन्दे आए और घर के रौशनदान में बैठ गए, एक परन्दे ने दूसरे से कहा : उतर कर उस की छान बीन करो। उस ने अपनी चौंच मुर्दे के पेट में गाड़ दी, येह सब हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के सामने हो रहा था, फिर परन्दे ने कहा : اَللّٰہُ اَکْبَر ऐ मेरे साथी ! नीचे उतरो क्यूंकि मैं ने इस के पेट में "तक्बीर" पाई है, जो इस ने राहे ख़ुदा में "अन्ताकिया" की दीवार पर कही थी, दूसरे परन्दे ने येह सुन कर सफ़ेद पाकीज़ा कपड़ा निकाला और दोनों ने उस की रूह को उस में लपेट कर उठा लिया फिर दोनों परन्दों ने कहा : ऐ अबू क़िलाबा ! उठो और अपने भतीजे को दफ़्न कर दो क्यूंकि येह जन्नती है। अबू क़िलाबा बहुत मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्सिय्यत थे, वोह बाहर निकले और लोगों से येह सारा वाक़िआ़ बयान किया। रावी कहते हैं : इस लड़के के जनाज़े में इस क़दर बड़ा मज्मअ़ था कि मैं ने आज तक इतना मज्मअ़ कभी न देखा।(2)

---

❶...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۲/۲۸۹، حدیث:۳۷

❷...شرح اصول اعتقاد اہل السنۃ، سیاق مارُوی عن النبی فی ان المسلمین لاتضرھم...الخ، ۲/۹۱۲، حدیث:۲۰۲۵

उम्मते मुहम्मदिया के ख़साइल

हज़रते सय्यिदुना नज़्र बिन मा'बद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक आज़ाद ख़याल भतीजा था, वोह शदीद बीमार हुवा मगर हज़रत उस की इयादत को न गए, एक दिन बाज़ार में जा रहे थे कि ख़याल आया वोह मेरा भतीजा है उस का जो भी मुआ़मला है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है। चुनान्चे, आप ने वोह रात अपने भतीजे के पास गुज़ारी, रात के किसी पहर आप ने देखा कि छत से दो सियाह आदमी उतरे हैं और उन के पास एक कुदाल (ज़मीन खोदने का एक नोकदार आला) भी है, एक ने दूसरे से कहा : उस शख़्स के पास जा कर देखो कि कोई भलाई की चीज़ मिलती है? चुनान्चे, एक ने मेरे भतीजे के क़रीब हो कर उस का सर सूंघा फिर पेट सूंघा फिर क़दम सूंघे और अपने साथी के पास जा कर कहा : मैं ने उस का सर सूंघा लेकिन क़ुरआन की ख़ुश्बू न पाई, पेट सूंघा उस में रोज़ों की ख़ुश्बू न पाई, क़दम सूंघे लेकिन रात के क़ियाम की ख़ुश्बू न पाई। फिर उस का दूसरा साथी आ गया और उस ने भी सर, कोहनियां, पेट और क़दम सूंघे और कहा : बड़ी हैरानी की बात है कि इस का नाम उम्मते मुहम्मदिया में लिखा हुवा है मगर इन ख़स्लतों में से कोई भी ख़स्लत इस में नहीं पाई जाती, फिर मैं ने देखा कि उस ने मेरे भतीजे का मुंह खोला और उस की ज़बान पकड़ कर उस को निचोड़ा और कहने लगा : اَللّٰهُ اَكْبَر ! मैं ने इस में एक तक्बीर पाई है जो उस ने मक़ामे अन्ताकिया पर इख़्लास के साथ कही थी। फिर मेरे भतीजे से मुश्क की ख़ुश्बू फूटी और रूह परवाज़ कर गई, जब वोह दोनों सियाह आदमी दरवाज़े पर पहुंचे तो मैं ने सुना कि कोई उन्हें कह रहा है : तुम दोनों यहां से चले जाओ, यहां तुम्हारा कोई काम नहीं। सुब्ह को हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने सारा वाक़िआ़ लोगों को बताया तो उन से कहा गया : हुज़ूर ! तक्बीर तो "साकिना" में कही थी। आप ने फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! मैं ने फ़िरिश्ते के मुंह से अन्ताकिया का सुना है। चुनान्चे, लोग जौक़ दर जौक़ उस के जनाज़े में शरीक होने लगे।

एक कलिमा काम आ गया

हज़रते सय्यिदुना मैमून मरई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى[1] फ़रमाते हैं : हमारे हां एक बदकार बन्दा मर गया तो लोगों ने उस को बदकार जान कर रास्ते में डाल दिया और उस से दूर भाग गए, मैं परेशान हो कर उस के बारे में सोचने लगा, इतने में मुझ पर नींद का ग़लबा हो गया, क्या देखता हूं कि दो

---

1 .....मतन में इस मक़ाम पर "मैमून मुरादी" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "मैमून मरई" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

सफ़ेद परन्दे आए हैं और एक दूसरे से कह रहा है : देखो इस में कोई भलाई मौजूद है या नहीं ? चुनान्चे, एक परन्दा उस की खोपड़ी से दाख़िल हो कर पिछली जानिब से निकला और कहा : मैं ने तो इस में कोई भलाई नहीं पाई। परन्दे ने कहा : जल्दी न करो, अब दूसरा परन्दा उस के सर से घुस कर क़दमों से निकला और कहने लगा اَللّٰہُ اَکْبَر का कलिमा इस के तालू से चिपका हुवा है और वोह : اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कह रहा है। फिर मैं ने सब लोगों को कहा : आ जाओ।(1)

एक मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَر कहने का इनआम

हज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरा एक क़रीबुल बुलूग़ भतीजा था, वोह मेरे साथ सफ़र पर गया तो बीमार हो गया, मैं एक इबादतगाह में दाख़िल हो कर नमाज़ पढ़ने खड़ा हुवा तो इबादत गाह शक़ हो गई, दो सफ़ेद और दो काले फ़िरिश्ते अन्दर दाख़िल हुवे, सफ़ेद फ़िरिश्ते मेरे भतीजे के दाईं जानिब और काले बाईं जानिब बैठ गए। सफ़ेद फ़िरिश्तों ने उस का हाथ छूआ तो काले कहने लगे : इसे हम ने ले जाना है। सफ़ेद फ़िरिश्तों ने कहा : हरगिज़ नहीं। येह कह कर एक ने अपनी उंगली मेरे भतीजे के मुंह में डाल कर ज़बान पलटी तो ना'रए तक्बीर बुलन्द किया और कहा : इसे तो हम ही ले जाएंगे क्यूंकि इस ने अन्ताकिया की फ़त्ह के दिन एक मरतबा اَللّٰہُ اَکْبَر कहा था। चुनान्चे, मैं ने बाहर निकल कर लोगों को बताया तो सब उस के नमाज़े जनाज़ा में शरीक हुवे।(2)

जुनुबी के पास जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام नहीं आते

हज़रते सय्यिदतुना मैमूना बिन्ते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या ग़ुस्ल वाजिब होने की हालत में सोना जाइज़ है ? इरशाद फ़रमाया : मैं पसन्द नहीं करता कि कोई बिला ग़ुस्ल सोए क्यूंकि मुझे ख़ौफ़ है कि वोह अगर इसी हालत में मर गया तो हज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام उस के पास न आएंगे।(3)

---

❶...شرح اصول اعتقاد اهل السنة، سياق ما روى عن النبى فى ان المسلمين لاتضرهم...الخ، ۲/۹۱۷، حديث: ۲۰۲۶، عن ميمون المرئى

❷...موسوعة ابن ابى الدنيا، كتاب المحتضرين، ۵/۳۰۹، حديث: ۲۵، بتغيرٍ

❸...معجم كبير، ۲۵/۳۷، حديث: ۶۵، "يغتسل" بدله "يتوضا ويحسن الوضو"

तल्क़ीन क्यूं करते हैं ?

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अपने मरने वालों के पास रह कर उन्हें ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की याद दिलाओ क्यूंकि वोह ऐसी चीज़ें देखते हैं जो तुम नहीं देखते(1)।(2)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अपने मरने वालों को لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की तल्क़ीन करो क्यूंकि वोह सुनते देखते हैं।(3)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अपने मरने वालों को لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की तल्क़ीन करो और नेकूकारों से जो बातें सुनो उन में ग़ौर करो क्यूंकि उन के लिये सच्चे मुआ़मलात ज़ाहिर होते हैं।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : ज़िन्दों से बन्दे की जान पहचान कब ख़त्म होती है ? तो सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब वोह देख लेता है।(5)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी जब वोह मलकुल मौत या फ़िरिश्तों को देख लेता है।(6)

ह़ज़रते सय्यिदुना लैस बिन अबू रुक़य्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز ने अपने मरज़े वफ़ात में सर उठा कर

1.....मय्यित (या'नी क़रीबुल मर्ग) को "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ" की तल्क़ीन करें यूं कि ख़ुद उस के पास पढ़ें कि वोह सुन कर पढ़े और यूं न कहें कि कह, और जब दोनों जुज़ कलिमा के कह ले तो उस से दोबारा कहने का इसरार न करें कि कहीं उकता न जाए, हां कलिमा पढ़ने के बा'द कोई और बात उस ने की तो फिर तल्क़ीन करें कि आख़िर कलाम "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہ" हो। (फ़तावा रज़विय्या, 9/86)

2...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۵/۳۰۴، حدیث:۸

3...تفسیر طبری، الصافات، تحت الآیۃ:۳۵، ۱۰/۴۸۳، حدیث:۲۹۳۳۷، ''یقال لھم'' بدلہ ''یسمعون''

4...کنز العمال، کتاب الموت من قسم الافعال، المحتضر، ۱۵/ ۲۹۶، حدیث:۴۲۷۹۸

5...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی مومن یؤجر فی النزع، ۲/ ۱۹۷، حدیث:۱۴۵۳

6...التذکرۃ للقرطبی، باب متی تنقطع معرفۃ العبد...الخ، ص ۴۹

तेज़ निगाहों से देखा तो हाज़िरीन ने इस की वज्ह पूछी। फ़रमाया : मैं ऐसी मख़्लूक़ देख रहा हूं जो इन्सान हैं न जिन्न। इस के बा'द वासिल बहक़ हो गए।[1]

हज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात के वक़्त मैं उन के पास मौजूद था, वोह कह रहे थे : ऐ मेरे रब के फ़िरिश्तो ! खुश आमदीद ! नेकी की क़ुव्वत और बदी से बचने की ताक़त खुदा की तौफ़ीक़ से ही है। इस के बा'द ऐसी खुश्बू फैली जिस की मिस्ल मैं ने आज तक न सूंघी थी, फिर उन की आंखें खुली रह गईं और वोह वफ़ात पा गए।[2]

इनआ़म याफ़्ता अफ़राद

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन सालेह़ हम्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي[3] फ़रमाते हैं : जिस रात मेरे भाई अ़ली बिन सालेह़ का इन्तिक़ाल हुवा उस रात मैं नमाज़ में मश्ग़ूल था कि भाई ने कहा : मुझे पानी पिलाओ। मैं नमाज़ पूरी कर के पानी लाया और कहा : पानी पी लीजिये। उन्हों ने कहा : मैं ने अभी पिया है। मैं ने कहा : मेरे और आप के इ़लावा कमरे में कोई नहीं फिर आप को पानी किस ने पिला दिया ? कहा : अभी ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام पानी लाए और मुझे पिलाया और मुझ से फ़रमाया : तुम, तुम्हारा भाई और तुम्हारी वालिदा उन लोगों के साथ हो जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इनआ़म फ़रमाया है या'नी अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिह़ीन। इतना कहा और भाई की रूह़ परवाज़ कर गई।[4]

अ़मल करने वालों का सवाब

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ग़नम अश्अ़री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साहिबज़ादे को अ़मवास के साल नेज़ा लगा और वोह शहीद हो गए तो हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सब्र किया फिर जब खुद के हाथ में नेज़ा लगा तो फ़रमाया : मौत बड़े इन्तिज़ार के बा'द आई तो इस पर ग़म करने वाला फ़लाह़ नहीं पाएगा। मैं ने

1 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۳۲۶/۵، حدیث: ۹۰

2 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۳۴۹/۵، حدیث: ۲۰۰

3 .....मतन में इस मक़ाम पर "ह़सन बिन सालेह़ सिमाजी" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "ह़सन बिन सालेह़ हम्दानी" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

4 ...صفة الصفوة، رقم الترجمہ: ۴۴۶، علی والحسن ابنا صالح، جزء ۳، ۱۰۰/۲

अ़र्ज़ की : ऐ मुआ़ज़ ! क्या आप कुछ देख रहे हैं ? फ़रमाया : मेरे रब ने मुझे सब्रे जमील पर अज्र अ़ता फ़रमाया है, मेरे बेटे की रूह़ मेरे पास ह़ाज़िर हुई है और मुझे येह ख़ुश ख़बरी सुनाई कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मलाइका की 100 सफ़ों में शुहदा और सालिह़ीन के साथ मेरे लिये दुआ़ए रह़मत फ़रमा रहे हैं और वोह मुझे सूए जन्नत ले जाएंगे। येह कह कर आप पर ग़शी त़ारी हो गई। मैं ने देखा कि गोया वोह लोगों से मुलाक़ात कर रहे हैं और उन्हें मरह़बा मरह़बा कह रहे हैं। पस उस वक़्त आप का विसाल हो गया। उस के एक साल बा'द मैं ने ख़्वाब में उन के गिर्द चितकब्रे घोड़ों पर सुवार सफ़ेद लिबास में मल्बूस ऐसा लश्कर देखा जैसा हमारा मजमअ़ होता है और वोह पुकार रहे हैं : ऐ तीरों और नेज़ों के दरमियान मौजूद सा'द ! तमाम ता'रीफ़ें उस ख़ुदाए रह़मान के लिये हैं जिस ने हमें जन्नत इनायत की जिस में हम जहां चाहें रहें, अ़मल करने वालों का सवाब कितना उ़म्दा है। फिर मैं बेदार हो गया।(1)

अच्छों की सोह़बत अपनाओ ताकि.....!

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : जब कोई शख़्स फ़ौत होता है तो उस के साथी उस पर पेश किये जाते हैं, अगर वोह अह्ले ज़िक्र से होता है तो ज़िक्र वालों को और खेल कूद वाला होता है तो खेल कूद वालों को पेश किया जाता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन उ़जरह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हर शख़्स पर मरते वक़्त उस के साथ उठने बैठने वाले पेश किये जाते हैं अगर वोह खेल कूद वालों में से था तो खेल कूद वालों को और इबादत गुज़ारों में से था तो इबादत गुज़ारों को पेश किया जाता है।(3)

बुरे अ़मल का वबाल

बसरा के मश्हूर इबादत गुज़ार ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन बर्रह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने मुल्के शाम में एक शख़्स को मरते वक़्त देखा कि उसे لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की तल्क़ीन की गई तो वोह कहने लगा : मुझे शराब पिलाओ और ख़ुद भी पियो। इसी त़रह़ "अहवाज़" नामी अ़लाक़े में

(1)...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۷۴۸۱، معاذ بن جبل، ۵۸/۴۴۷

(2)...الزھد لابن المبارک، باب ذکر رحمۃ اللہ، ص ۳۲۹، حدیث: ۹۳۹

(3)...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام ابراھیم التیمی، ۸/۲۲۵، حدیث: ۸

एक शख़्स को لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की तल्क़ीन की गई तो उस ने कहा : دہ یازدہ دہ دوازدہ या'नी दस ग्यारह दस बारह। इसी त़रह़ बसरा में एक मरने वाले को لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰه की तल्क़ीन की गई, तो वोह येह शे'र गुनगुनाने लगा।

يَارُبَّ قَائِلَةٍ يَوْمًا وَقَدْ تَعِبَتْ   كَيْفَ الطَّرِيْقُ اِلٰى حَمَّامِ مِنْجَابِ

तर्जमा : हाए रे वोह थकी हुई औ़रत जिस ने एक दिन कहा मिन्जाब के ह़म्माम का रास्ता किस त़रफ़ है ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی कहते हैं : इस शख़्स से एक औ़रत ने ह़म्माम का रास्ता पूछा तो उस ज़ालिम ने अपने घर का पता बता दिया था जभी वोह मौत के वक़्त ऐसा कह रहा है।(1)

अच्छे बुरे अ़मल की पेशी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने फ़रमाया : जब कोई शख़्स फ़ौत होता है तो उस की अच्छाइयां और बुराइयां शक्लों की सूरत में उस के सामने पेश की जाती हैं, वोह अपनी नेकियां आंखें फाड़ फाड़ कर ग़ौर से देखता और बुराइयां देख कर (शर्म से) सर झुका लेता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ القَوِی इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَىٕذٍۭ بِمَا قَدَّمَ وَ اَخَّرَ ؕ۝۱۳

(پ۲۹، القيامة:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस दिन आदमी को उस का सब अगला पिछला जता दिया जाएगा।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : मौत के वक़्त बन्दे की ह़िफ़ाज़त करने वाले फ़िरिश्ते उतरते हैं और उस पर उस की अच्छाई और बुराई पेश करते हैं, जब वोह अच्छाई को देखता है तो ख़ुशी से चेहरा चमक उठता है और जब बुराई को देखता है तो आंखे झुक जाती और चेहरा फीका पड़ जाता है।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़न्ज़ला बिन अस्वद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : मेरे ग़ुलाम के मरने का वक़्त आया तो कभी वोह अपना सर ढकता और कभी खोलता, मैं ने येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना

1...شعب الايمان، باب فی تحريم الملاعب والملاهی، ۲۴۶/۵، حديث: ۶۵۴۱

2...موسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب مقام الميت، ۴۹۴/۵، حديث: ۳۰۴

3...موسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب مقام الميت، ۴۹۴/۵، حديث: ۳۰۵

मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد से अ़र्ज़ की तो उन्हों ने फ़रमाया : हमें येह बात पहुंची है कि जब मोमिन की जान निकलती है तो उस के अच्छे बुरे आ'माल उस पर पेश किये जाते हैं।(1)

दुआ़ए मुस्त़फ़ा की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक क़रीबुल मर्ग अन्सारी शख़्स की बीमार पुर्सी को तशरीफ़ ले गए और उस से इरशाद फ़रमाया : क्या मह़सूस करते हो ? उस ने अ़र्ज़ की : अच्छाई पाता हूं और मेरे पास दो फ़िरिश्ते जल्वा गर हुवे हैं, एक सफ़ेद दूसरा सियाह। दरयाफ़्त फ़रमाया : तुम्हारे क़रीब कौन सा फ़िरिश्ता है ? अ़र्ज़ की : सियाह फ़िरिश्ता। इरशाद फ़रमाया : भलाई कम और बुराई ज़ियादा है। उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे अपनी रह़मत भरी दुआ़ से नफ़्अ़ अ़त़ा फ़रमाइये। आप ने यूं दुआ़ की اَللّٰهُمَّ اغْفِرِ الْكَثِيْرَ وَانْمِ الْقَلِيْل या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के कसीर मुआ़फ़ फ़रमा और थोड़े को बढ़ा दे। फिर दरयाफ़्त फ़रमाया : अब क्या देखते हो ? अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! मैं देख रहा हूं कि भलाई बढ़ रही और बुराई कम होती जा रही है और मेरे क़रीब से सियाह फ़िरिश्ता दूर चला गया है। इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा कौन सा अ़मल उम्मीद अफ़्ज़ा है ? अ़र्ज़ की : मैं प्यासों को पानी पिलाता रहा हूं। इरशाद फ़रमाया : मैं जानता हूं कि इस शख़्स की हर हर रग अ़लाहि़दा अ़लाहि़दा मौत की तक्लीफ़ में मुब्तला है।(2)

अ़मल की हि़फ़ाज़त करने वाले फ़िरिश्ते

ह़ज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि हर मरने वाले के पास उस के अ़मल की हि़फ़ाज़त करने वाले फ़िरिश्ते किरामन क़ातिबीन जल्वा गर हो जाते हैं, अगर उस ने उन की सोह़बत में ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी की है तो कहते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हमारी त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए क्यूंकि बहुत सी सच्ची मह़फ़िलों में तू हमें ले गया और बहुत से अच्छे कामों में तू ने हमें शामिल रखा और हमें अच्छी अच्छी बातें सुनाईं, पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हमारी त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए। अगर मरने वाले ने इन दोनों मुहा़फ़िज़ फ़िरिश्तों

---

1 ...موسوعۃابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب مقام المیت، ۵/۴۹۴، حدیث: ۳۰۶، دون قولہ: حنظلۃ...اخری

2 ...معجم کبیر، ابو الازھر مدنی، ۲/۲۶۹، حدیث: ۲۱۸۵، دون قولہ: وھو فی الموت

के साथ इस के इलावा ऐसे कामों में वक़्त गुज़ारा जिन में रिज़ाए इलाही न थी तो बजाए ता'रीफ़ के उस की बुराई होती है और फ़िरिश्ते उस से कहते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे हमारी त़रफ़ से जज़ाए ख़ैर अ़त़ा न फ़रमाए ! तू ने हमें बहुत सी बुरी मह़फ़िलों में बिठाया, गुनाह के कामों पर पेश किया और बुरी गुफ़्तगू सुनाई, पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझे जज़ाए ख़ैर न दे। मरने वाला उन दोनों फ़िरिश्तों को फटी निगाहों से तकता रहता है। अब उस ने कभी पलट कर दुन्या की त़रफ़ नहीं आना।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : जब मोमिन का वक़्ते वफ़ात आता है तो ज़िन्दगी में उस के साथ रहने वाले दोनों मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते उस के घरवालों की आहो बुका के वक़्त फ़रमाते हैं : हमें इस शख़्स की अपने इल्म के मुत़ाबिक़ ता'रीफ़ करने दो फिर कहते हैं : ख़ुदा तुझ पर रह़्म करे और जज़ाए ख़ैर बख़्शे क्यूंकि तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी में जल्दी करने वाला और उस की ना फ़रमानी से पीछे हटने वाला था और तेरी जुदाई पर हम मुत़्मइन हैं लिहाज़ा अब हम चलते हैं, तू मलाइका के झुरमट में हमें भूल न जाना। इस के बर अ़क्स जब बदकार बन्दे की मौत का वक़्त क़रीब आता है और घरवाले चीख़ते चिल्लाते हैं तो दोनों फ़िरिश्ते येह कह कर खड़े हो जाते हैं : हमें उस शख़्स के लिये अपने इल्म के मुत़ाबिक़ कुछ इज़्हार करने दो फिर कहते हैं : ख़ुदा तुझे बुरा बदला दे तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी में सुस्ती करने वाला और ना फ़रमानी में जल्दी करने वाला था और तेरी जुदाई पर हम मुत़्मइन नहीं हैं फिर वोह दोनों आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हो जाते हैं।(2)

मौत को ना पसन्द करने का मत़लब

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले काइनात صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो रब عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को पसन्द करता है रब तआ़ला भी उस की मुलाक़ात पसन्द फ़रमाता है और जो ख़ुदा तआ़ला की मुलाक़ात को पसन्द नहीं करता रब तआ़ला भी उस की मुलाक़ात ना पसन्द फ़रमाता है। उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : हम तो मौत को ना पसन्द करते हैं। इरशाद फ़रमाया : इस का येह मत़लब नहीं बल्कि बात येह है कि जब मोमिन मरने लगता है तो उसे रिज़ाए इलाही और इ़ज़्ज़त की

1...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانہ، ۵/۴۶۲، حدیث:۲۳۹

2...الحبائک فی اخبار الملائک، باب ماجاء فی الحافظین الکرام، ص۱۰۴، حدیث:۳۸۱

खुश ख़बरी दी जाती है, जो कुछ उस के सामने होता है उसे इस से बढ़ कर कोई चीज़ महबूब नहीं होती, चुनान्चे, वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात पसन्द करता है और रब तआ़ला उस की मुलाक़ात को पसन्द फ़रमाता है और जब काफ़िर मरने लगता है तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब और पकड़ की नवीद सुनाई जाती है अब वोह अपने अन्जाम को सब से बढ़ कर बुरा जानता है और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को पसन्द नहीं करता और रब तआ़ला भी उस की मुलाक़ात को ना पसन्द फ़रमाता है।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू लैला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन आयाते मुबारका की तिलावत फ़रमाई :

فَلَوْلَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿۸۳﴾ وَ اَنْتُمْ حِیْنَىٕذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿۸۴﴾ وَ نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَیْهِ مِنْكُمْ وَ لٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿۸۵﴾ فَلَوْلَاۤ اِنْ كُنْتُمْ غَیْرَ مَدِیْنِیْنَ ﴿۸۶﴾ تَرْجِعُوْنَهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۸۷﴾ فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ ﴿۸۸﴾ فَرَوْحٌ وَّ رَیْحَانٌ ۙ۬ وَّ جَنَّتُ نَعِیْمٍ ﴿۸۹﴾ وَ اَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْیَمِیْنِ ﴿۹۰﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْیَمِیْنِ ﴿۹۱﴾ وَ اَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِیْنَ الضَّآلِّیْنَ ﴿۹۲﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِیْمٍ ﴿۹۳﴾ وَّ تَصْلِیَةُ جَحِیْمٍ ﴿۹۴﴾ (پ۲۷، الواقعة: ۸۳تا۹۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर क्यूं न हो कि जब जान गले तक पहुंचे और तुम उस वक़्त देख रहे हो और हम उस के ज़ियादा पास हैं तुम से मगर तुम्हें निगाह नहीं तो क्यूं न हुवा अगर तुम्हें बदला मिलना नहीं कि उसे लौटा लाते अगर तुम सच्चे हो फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है तो राहत है और फूल और चैन के बाग़ और अगर दहनी तरफ़ वालों से हो तो ऐ महबूब तुम पर सलाम है दहनी तरफ़ वालों से और अगर झुटलाने वालों गुमराहों में से हो तो उस की मेहमानी खोलता पानी और भड़कती आग में धंसाना।*

फिर फ़रमाया : जब बन्दा मरने के क़रीब होता है तो उस से येही कहा जाता है फिर अगर वोह दाईं तरफ़ वालों में से हो तो खुदा तआ़ला से मिलना पसन्द करता है और खुदाए रहमान भी उस की मुलाक़ात को पसन्द फ़रमाता है और अगर बाईं तरफ़ वालों में से हो तो खुदा عَزَّوَجَلَّ से मिलना पसन्द नहीं करता और रब तआ़ला भी उस की मुलाक़ात को ना पसन्द फ़रमाता है।(2)

---

1 ...بخاری، کتاب الرقاق، باب من احب لقاء اللّٰہ...الخ، ۴/۲۴۹، حدیث:۶۵۰۷

2 ...اھوال القبور، الباب السادس، ص۷۷

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू लैला رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक मरतबा किसी जनाज़े के पीछे चलते हुवे बयान किया कि मुझे फ़ुलां बिन फ़ुलां ने येह ह़दीस बयान की, कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात पसन्द करता है रब तआ़ला भी उस की मुलाक़ात पसन्द फ़रमाता है और जो रब तआ़ला से मिलना ना पसन्द करता है रब عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात पसन्द नहीं फ़रमाता। येह सुन कर लोग रोने लगे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्यूं रोते हो ? अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : हम तो मौत को ना पसन्द रखते हैं। इरशाद फ़रमाया : इस का येह मत़लब नहीं बल्कि बात येह है कि जब मौत का वक़्त आता है तो अगर बन्दा मुक़र्रबीने बारगाहे इलाही में से हो तो उस के लिये रह़मत, ख़ुश्बूएं और चैन के बाग़ हैं, पस जब उसे उन बिशारतों से नवाज़ा जाता है तो वोह मुलाक़ाते इलाही को मह़बूब रखता है और रब तआ़ला भी उस की मुलाक़ात पसन्द फ़रमाता है और अगर बन्दा गुमराहों, झुटलाने वालों में से हो तो खोलता पानी और भड़कती आग में धंसाना उस की मेहमान नवाज़ी होती है, पस जब उसे इस की ख़बर दी जाती है तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात को पसन्द नहीं करता और रब तआ़ला भी उस की मुलाक़ात को ना पसन्द फ़रमाता है।(1)

दुन्या में लौटने की तमन्ना

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन फ़िरिश्तों को देखता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : हम तुम्हें दुन्या में लौटा देंगे। वोह कहता है : "क्या ग़मों और मुसीबतों के घर की त़रफ़ लौटाओगे, मुझे बारगाहे इलाही में ले चलो।" और जब काफ़िर को दुन्या में लौटाए जाने की ख़बर देते हैं तो वोह कहता है : मेरे रब मुझे वापस फेर दे शायद जो मैं छोड़ आया हूं उस में कुछ भलाई कमा सकूं।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : जिस शख़्स के पास इतना माल हो जो उसे ह़ज्जे बैतुल्लाह तक पहुंचा दे या इतना माल हो जिस पर ज़कात वाजिब होती हो और उस ने येह काम न किये हों तो वोह मौत के वक़्त दुन्या में वापस होने का सुवाल करेगा। एक शख़्स ने कहा : ऐ इब्ने अ़ब्बास ! ख़ुदा से डरिये, दुन्या में पलटने का सुवाल तो काफ़िर करेंगे। फ़रमाया :

1 ...مسند امام احمد، مسند الکوفیین، ۶/۳۵۷، حدیث: ۱۸۳۱۱

2 ...تفسیر طبری، المؤمنون، تحت الآیۃ: ۹۹، ۹/۲۴۲، حدیث: ۲۵۶۵۲

मैं तुम्हारे सामने इस के मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआन पढ़ता हूं फिर आपने येह आयात तिलावत फ़रमाईं :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۹﴾ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِيْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۱﴾

(پ۲۸، المنٰفقون: ۹تا۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में ख़र्च करो क़ब्ल इस के कि तुम में किसी को मौत आए फिर कहने लगे ऐ मेरे रब तू ने मुझे थोड़ी मुद्दत तक क्यूं मोहलत न दी कि मैं सदक़ा देता और नेकों में होता और हरगिज़ अल्लाह किसी जान को मोहलत न देगा जब उस का वा'दा आ जाए और अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।*[1]

हज़रते जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि जब किसी शख़्स की वफ़ात का वक़्त क़रीब आता है तो हर वोह शै जम्अ़ हो कर उस की आंखों के दरमियान आ जाती है जो उसे हक़ से बाज़ रखती है तो उस वक़्त वोह बे साख़्ता पुकार उठता है : ऐ मेरे रब ! मुझे वापस फेर दे जो मैं छोड़ आया हूं शायद इस में कोई भलाई कमा सकूं।[2]

रूहे मोमिन निकलने की कैफ़िय्यत

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : रूहे मोमिन एक ख़ुश्बूदार फूल में निकलती है। फिर आप ने येह आयते तय्यिबा तिलावत की :

فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۸۸﴾ ۙ فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ۬ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿۸۹﴾ (پ۲۷، الواقعة: ۸۸، ۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है तो राहत है और फूल और चैन के बाग़।*[3]

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब हज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को मोमिन की रूह क़ब्ज़ करने का हुक्म होता है तो वोह जन्नत से फूल लाते

1...ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة المنافقین، ۲۰۸/۵، حدیث: ۳۳۲۷

2...معجم ابن المقرئ، باب الجیم، ص۱۵۸، حدیث: ۸۲۵

3...تفسیر طبری، الواقعة، تحت الآیة: ۸۹، ۱۱/۶۶۲، حدیث: ۳۳۵۸۱

हैं, उन्हें हुक्म होता है उस की रूह इन फूलों में सजा कर ले आओ। इस के बर अ़क्स जब काफ़िर की रूह क़ब्ज़ करने लगते हैं तो दोज़ख़ से टाट ले कर आते हैं और हुक्म दिया जाता है कि उस की रूह इस में लपेट कर लाओ।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू इमरान जौनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हम तक येह बात पहुंची है कि जब मोमिन को मौत आती है तो जन्नत से खुश्बूदार फूलों वाली टहनियां लाई जाती हैं और उस की रूह को उन में रखा जाता है।(2)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : मोमिन की रूह जन्नती रेशम में सजाई जाती है।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबुल आ़लिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं : जो भी मुक़र्रब बन्दा दुन्या से जाने लगता है उस के पास जन्नती फूलों की टहनी लाई जाती हैं, वोह उसे सूंघता है फिर उस की रूह क़ब्ज़ हो जाती है।(4)

मोमिन और काफ़िर का उख़रवी ठिकाना

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन खुसैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ ﴿۸۸﴾ فَرَوْحٌ وَّ رَیْحَانٌ ۬ (پ۲۷، الواقعۃ: ۸۸، ۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है तो राहत है और फूल।*

के तहत फ़रमाते हैं : येह मोमिन के लिये मौत के वक़्त है और आख़िरत में उस के लिये जन्नत है और अगर मरने वाला झुटलाने वाले गुमराहों में से हो तो उस के लिये मौत के वक़्त येह वईद है :

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِیْمٍ ﴿۹۳﴾ وَّ تَصْلِیَةُ جَحِیْمٍ ﴿۹۴﴾ (پ۲۷، الواقعۃ: ۹۳، ۹۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उस की मेहमानी खौलता पानी और भड़कती आग में धंसाना।*

और आख़िरत में उस का ठिकाना जहन्नम है।(5)

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب بشری المؤمن وانذار الکافر، ۵/۴۷۸، حدیث: ۲۶۵

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب بشری المؤمن وانذار الکافر، ۵/۴۷۹، حدیث: ۲۶۸

3 ...ذکر الموت لابن ابی الدنیا، باب کیفیۃ الموت وشدتہ، ص۹۰، حدیث: ۱۶۰

4 ...تفسیر طبری، الواقعۃ، تحت الآیۃ: ۸۹، ۱۱/۶۶۲، حدیث: ۳۳۵۸۲

5 ...الزھد للامام احمد، زھد محمد بن سیرین، ص۳۴۱، حدیث: ۲۰۰۰

शाने ज़ुन्नूरैन

हज़रते सय्यिदुना अ़दी बिन ह़ातिम त़ाई رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जिस दिन अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को शहीद किया गया उस दिन मैं ने येह आवाज़ सुनी : اَبْشِرِ ابْنَ عَفَّان بِرَوْحٍ وَّرَیْحَان، اَبْشِرِ ابْنَ عَفَّان بِرَبٍّ غَیْرِغَضْبَان، اَبْشِرِ ابْنَ عَفَّان بِرِضْوَانٍ وَّغُفْرَان या'नी ऐ इब्ने अ़फ़्फ़ान ! राह़त व फूल की ख़ुश ख़बरी हो, ऐ इब्ने अ़फ़्फ़ान ! रिज़ाए इलाही की ख़ुश ख़बरी हो, ऐ इब्ने अ़फ़्फ़ान ! मग़फ़िरत और जन्नत की ख़ुश ख़बरी हो । जब मैं ने आवाज़ की सम्त तवज्जोह की तो किसी को भी न पाया ।(1)

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

فَرَوْحٌ وَّرَیْحَانٌ ۙ (پ۲۷،الواقعة:۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो राह़त है और फूल ।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : ख़ुदा की क़सम ! मोमिनीन को मौत के वक़्त येह ख़ुश ख़बरी दी जाती है ।(2)

मोमिन को क़ब्र में मिलने वाली पहली ख़ुश ख़बरी

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन को ब वक़्ते वफ़ात सब से पहली ख़ुश ख़बरी रह़मत व राह़त और चैन के बाग़ात की सुनाई जाती है और क़ब्र में उसे सब से पहले ख़ुश ख़बरी यूं दी जाती है कि तुम्हें रिज़ाए इलाही और जन्नत की ख़ुश ख़बरी हो, तुम बहुत अच्छे आए, जो तुम्हें क़ब्र तक छोड़ने आए वोह बख़्श दिये गए, जिन्हों ने तुम्हारे ह़क़ में गवाही दी उन की गवाही क़बूल हुई और जिन्हों ने तुम्हारे लिये इस्तिग़फ़ार किया वोह भी क़बूल हुवा ।(3)

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۴۶۱۹، عثمان بن عفان، ۳۹/۴۴۲

2 ...در منثور، سورۃ الواقعۃ، تحت الآیۃ: ۸۹، ۸/۳۷

3 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الاوائل، باب ما فعل ومن فعلہ، ۸/۳۶۱، حدیث: ۳۱۳، دون بعض الفاظ

रूहे काफ़िर क़ब्ज़ करने की कैफ़िय्यत

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا (الواقعۃ:۹۳، پ۲۷) "فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِیْمٍ ۙ﴿۹۳﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो उस की मेहमानी खोलता पानी।" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : काफ़िर दुन्या से जाने से पहले उस खोलते पानी का प्याला ज़रूर पियेगा।(1)

जब कि हज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق मज़्कूरा आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : जो भी शराबी मरता है उस के चेहरे पर जहन्नम का खोलता पानी डाला जाता है।(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू इमरान जौनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : कुफ़्फ़ार व फ़ुज्जार दुन्या से प्यासे जाएंगे, अपनी क़ब्रों में प्यासे दाख़िल होंगे, क़ियामत के दिन प्यासे हाज़िर होंगे और जहन्नम में प्यासे डाले जाएंगे।

रब तआ़ला का सलाम

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ करने का इरादा फ़रमाता है तो ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को हुक्म इरशाद फ़रमाता है : इसे मेरा सलाम कहना। जब ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उस की रूह़ क़ब्ज़ करने आते हैं तो कहते हैं : तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ तुम्हें सलाम फ़रमाता है।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ करने आते हैं तो कहते हैं : तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ तुम्हें सलाम फ़रमाता है।(4)

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

تَحِیَّتُهُمْ یَوْمَ یَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ (پ۲۲، الاحزاب:۴۴) *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन के लिये मिलते वक़्त की दुआ़ सलाम है।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : या'नी जिस दिन वोह मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام से मिलेंगे क्यूंकि वोह जिस मोमिन की भी रूह़ क़ब्ज़ करते हैं उसे सलाम करते हैं।(5)

---

1 ...تفسیر ابن ابی حاتم، پ۲۷، الواقعۃ، تحت الآیۃ:۹۳، ۱۰/۳۳۳۵، حدیث:۱۸۸۱۲

2 ...تفسیر ابن ابی حاتم، پ۲۷، الواقعۃ، تحت الآیۃ:۹۳، ۱۰/۳۳۳۵، حدیث:۱۸۸۱۳

3 ...ذکر الموت لابن ابی الدنیا، باب ماجاء فی تسلیم الملائکۃ...الخ، ص۱۶۳، حدیث:۲۹۲

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب تسلیم الملائکۃ علی المؤمن، ۵/۴۸۹، حدیث:۲۹۲

5 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام البراء، ۸/۱۹۵، حدیث:۱

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का'ब कुरज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَلِی फ़रमाते हैं : जब मोमिन की रूह निकलने के लिये उस के मुंह में जम्अ़ होती है तो हज़रते मलकुल मौत عَلَيۡهِ السَّلَام तशरीफ़ लाते हैं और फ़रमाते हैं : اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَاوَلِیَّ اللّٰهِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली तुम पर सलाम हो। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें सलाम फ़रमाता है। फिर आप رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه ने बतौरे दलील येह आयते मुक़द्दसा तिलावत फ़रमाई :

اَلَّذِيۡنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الۡمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيۡنَ ۙ يَقُوۡلُوۡنَ سَلٰمٌ عَلَيۡكُمُ ۙ (پ۱۴، النحل:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह जिन की जान निकालते हैं फ़िरिश्ते सुथरे पन में येह कहते हुवे कि सलामती हो तुम पर।*[1]

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡه रिवायत करते हैं कि महबूबे ख़ुदा, शफ़ीए रोज़े जज़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब हज़रते मलकुल मौत عَلَيۡهِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली के पास जल्वा गर होते हैं तो उसे यूं सलाम करते हैं : اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَاوَلِیَّ اللّٰهِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली तुम पर सलाम हो। इस मकान (दुन्या) से उठो जिसे तुम ने वीरान किया और अपने उस घर (जन्नत) की तरफ़ चलो जिसे तुम ने आबाद किया और अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वली न हो तो उस से फ़रमाते हैं : उठ और निकल जा ! अपने उस जहान से जिसे तू ने आबाद कर रखा था, उस जहान की तरफ़ जिसे तू ने वीरान कर रखा है।[2]

वक़्ते मौत मोमिन के लिये बिशारत

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَاحِد फ़रमाते हैं : मोमिन को बा'दे वफ़ात औलाद के नेक होने की ख़ुश ख़बरी सुनाई जाती है ताकि उस की आंखें ठन्डी हों।[3]

हज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الرَّزَّاق इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

لَهُمُ الۡبُشۡرٰى فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَفِى الۡاٰخِرَةِ ؕ (پ۱۱، یونس:۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उन्हें ख़ुश ख़बरी है दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : या'नी वोह मरने से पहले ही जान लेता है कि कहां होगा ![4]

---

1 ...کتاب العظمة، باب صفة ملک الموت، ص۱۵۷، حدیث:۴۴۰

2 ...طبقات الحنابلة، الطبقة الثالثة، ۲/ ۱۴۵، رقم:۶۳۷، عثمان بن عیسی الباقلانی

3 ...التذکرة للقرطبی، باب لاتخرج روح عبد...الخ، ص۵۴

4 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام عکرمة، ۸/ ۲۹۳، حدیث:۳۷

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : हर जान पर उस वक़्त तक दुन्या से निकलना ह़राम है जब तक वोह येह न जान ले कि उस का ठिकाना कहां है !(1)

दुन्या व आख़िरत में ख़ुश ख़बरी से मुराद

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि देहात के रहने वाले एक शख़्स ने हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ पूछा :

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ (پ۱۱، یونس: ۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन्हें ख़ुश ख़बरी है दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।

तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या की ज़िन्दगी में ख़ुश ख़बरी से मुराद वोह अच्छे ख़्वाब हैं जो मोमिन देखता है लिहाज़ा इन के ज़रीए उसे दुन्या में ख़ुश ख़बरी दी जाती है और आख़िरत में ख़ुश ख़बरी से मुराद मोमिन को ब वक़्ते मौत बिशारत देना है, मरते वक़्त उसे कहा जाएगा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरी और तुझे क़ब्र तक उठा कर लाने वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा दी है।(2)

तीन बिशारतें

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۳۰﴾ (پ۲۴، حم السجدة: ۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जिन्हों ने कहा हमारा रब अल्लाह है फिर उस पर क़ाइम रहे उन पर फ़िरिश्ते उतरते हैं कि न डरो और न ग़म करो और ख़ुश हो उस जन्नत पर जिस का तुम्हें वा'दा दिया जाता था।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : येह मौत के वक़्त कहा जाएगा।(3)

---

❶...مصنف ابن ابي شيبة، كتاب الزهد، باب ماقالوا في البكاء، ۸/۳۲۰، حديث: ۱۸۱

❷...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، باب بشرى المومن واذا ر الكافر، ۵/۴۷۵، حديث: ۲۵۵

❸...الاعتقاد للبيهقي، باب الايمان بعذاب القبر...الخ، ص۲۱۹

जब कि हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : तीन बिशारतें दी जाएंगी एक मौत के वक़्त, दूसरी क़ब्र से उठते वक़्त और तीसरी जब आख़िरी सूर फूंका जाएगा।[1]

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : اَلَّا تَخَافُوْا से मुराद है कि मौत और आख़िरत के मुआमले का डर न करो और وَلَا تَحْزَنُوْا से मुराद है कि जो तुम दुन्या के मुआमलात पीछे छोड़े जा रहे हो उन का ग़म न करो या'नी औलाद, ख़ानदान और क़र्ज़ क्यूंकि इन तमाम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी को तुम्हारा नाइब बना देगा।[2]

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : इस से मुराद येह है कि उसे मौत के वक़्त, क़ब्र में और क़ब्र से उठते वक़्त बिशारत दी जाएगी कि वोह जन्नती है लिहाज़ा इस बिशारत की ख़ुशी उस के दिल में घर कर लेगी।[3]

मज़ीद फ़रमाते हैं : मौत के वक़्त मोमिन से कहा जाएगा : जहां तू जाने वाला है उस का ख़ौफ़ न कर। चुनान्चे, वोह बे ख़ौफ़ हो जाएगा और कहा जाएगा : दुन्या और दुन्या वालों पर ग़मगीन न हो, तुझे जन्नत की ख़ुश ख़बरी हो।[4] पस वोह इस हाल में मरेगा कि रब तआला ने उस की आंखें ठन्डी की होंगी।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के ख़ादिम हज़रते सय्यिदुना कसीर बिन कसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं : हर जन्नती शख़्स पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर है जब उसे जन्नत की बिशारत दी जाती है तो फ़िरिश्ता उस के दिल पर हाथ रख लेता है अगर ऐसा न हो तो उस का दिल ख़ुशी के मारे उछल कर सर से बाहर आ जाए।[5]

शाने सिद्दीक़े अक्बर

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास येह आयाते मुबारका तिलावत की गई :

---

1 ...اثبات عذاب القبر للبیهقی، ص ٦٢، حدیث: ٧٥

2 ...تفسیر طبری، سورة فصلت، تحت الآیة: ٣٠، ١١/ ١٠٨، حدیث: ٣٠٥٣٥

3 ...جامع العلوم والحکم، تحت الحدیث: التاسع عشر، ص ٢٤٢، مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام الحسن البصری، ٨/ ٢٦٢، حدیث: ٧٠

4 ...احکام القران للجصاص، ومن سورة حم السجدة، ٣/ ٥٠٨

5 ...صفة الجنة لابی نعیم، ذکر ما یعطون من شدة السرور... الخ، الجزء الثانی، ص ١٣٥، حدیث: ٢٨٦

يٰۤاَیَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ﴿۲۹﴾ وَادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ﴿۳۰﴾ (پ۳۰، الفجر:۲۷تا۳۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *ऐ इत़्मीनान वाली जान अपने रब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ ।*

तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा : येह कितना अच्छा है ! आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी मौत के वक़्त फ़िरिश्ता ज़रूर येह कहेगा ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی से मज़्कूरा आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ जब बन्दए मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ करना चाहता है तो जाने मोमिन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुत़्मइन होती है और ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ बन्दए मोमिन से मुत़्मइन होता है ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ह़सन वाइ़ज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने अपने वालिद को फ़रमाते सुना कि ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ मलकुल मौत के हाथ पर नूरानी ख़त़ से بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ज़ाहिर फ़रमाएगा फिर फ़िरिश्ते को हुक्म होगा कि आ़रिफ़ की वफ़ात के वक़्त अपना येह हाथ फैला दे और लिखा हुवा उसे दिखा दे, आ़रिफ़ की रूह़ उसे देखेगी तो पलक झपकने से भी ज़ियादा जल्दी ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ परवाज़ करेगी ।(3)

जब कि मुस्नदे फ़िरदौस में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को मेरी उम्मत के उन गुनाहगारों की अरवाह़ क़ब्ज़ करने का हुक्म देता है जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका तो इरशाद फ़रमाता है : उन्हें जहन्नम में इतना इतना अ़र्सा सज़ा भुगतने के बा'द जन्नत में जाने की ख़ुश ख़बरी सुनाओ ।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अबू राशिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد(5) फ़रमाते हैं : मोमिनीन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मौत के बा'द जो इ़ज़्ज़त व करामत रखी है अगर उस की उम्मीद

1...تفسیر طبری، الفجر، تحت الآیۃ:۲۷، ۱۲/۵۸۱، حدیث:۳۷۲۱۳

2...تفسیر ابن ابی حاتم، سورۃ الفجر، تحت الآیۃ:۲۷، ۱۰/ ۳۴۳۰، حدیث:۱۹۲۹۴

3...المشیخۃ البغدادیۃ، الجزء السادس والعشرون، من فوائد ھناد، ص۴۶، تحت الحدیث:۴۰

4...فردوس الاخبار، ۱/۱۵۲، حدیث:۹۸۴، عن ابن عمر

5.....मतन में इस मक़ाम पर "रबीअ़ बिन राशिद" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "रबीअ़ बिन अबू राशिद" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है ।

न होती तो दुन्या में ही उन की रगें फट जातीं और पेट शक़ हो जाते।(1)

रोज़े जुमुआ दुरूद पढ़ने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "مَنْ صَلّٰی یَوْمَ الْجُمُعَةِ اَلْفَ مَرَّةٍ عَلَیَّ لَمْ یَمُتْ حَتّٰی یَرٰی مَقْعَدَهٗ مِنَ الْجَنَّةِ" या'नी जो जुमुआ के दिन मुझ पर हज़ार मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह मरेगा नहीं जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले।(2)

नबी से नफ़रत की सज़ा

हज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَیُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ (پ۶، النساء:۱۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *कोई किताबी ऐसा नहीं जो उस की मौत से पहले उस पर ईमान न लाए।*

के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : येह यहूद के बारे में नाज़िल हुई है, हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام इन में से जब किसी की रूह़ क़ब्ज़ करते हैं तो क़ब्ज़े रूह़ से पहले एक फ़िरिश्ता आग का शो'ला ले कर आता और यहूदी के चेहरे और पीठ पर मार कर कहता है : क्या तू इक़रार करता है कि हज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं ? फ़िरिश्ता उसे मारता रहता है यहां तक कि वोह इक़रार कर लेता है और जब वोह इक़रार कर लेता है तो हज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उस की रूह़ क़ब्ज़ कर लेते हैं।(3)

मौत के वक़्त आंख खुली रहने की वज्ह

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम नहीं देखते कि जब कोई शख़्स फ़ौत होता है तो उस की आंखें फटी की फटी रह जाती हैं। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : जी हां।

---

(1)...حلیة الاولیاء، الربیع بن ابی راشد، ۵/۸۹، رقم: ۶۴۲۹

(2)...الترغیب والترھیب، کتاب الذکر والدعاء، باب الترغیب فی اکثار الصلاة...الخ، ۲/۳۲۸، حدیث: ۲۲

(3)...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۵۵۱۹، عیسی بن مریم روح اللہ، ۴۷/۵۱۴

इरशाद फ़रमाया : येह इस वज्ह से है कि उस वक़्त निगाह रूह़ का पीछा करती है ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ुबैसा बिन ज़ुवैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब रूह़ को ऊपर ले जाया जाता है तो निगाहें उसे तकती रहती हैं ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن ने फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام जब इन्सान की शह रग को दबाते हैं तो उस की आंखें खुली की खुली रह जाती हैं और वोह लोगों से ग़ाफ़िल हो जाता है ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने फ़रमाया : जब ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام इन्सान की शह रग दबाते हैं तो इस शिद्दत की वज्ह से इन्सान की पहचानने और कलाम करने की क़ुव्वत ख़त्म हो जाती है और वोह दुन्या व माफ़ीहा से बेगाना हो जाता है, अगर सकराते मौत त़ारी न हों तो उसे पेश आने वाले मुआ़मले की शिद्दत के सबब अपने इर्द गिर्द वालों को तल्वार मारने लगे ।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करिमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि क्या अन्धा मरते वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को देखता है ? तो उन्हों ने फ़रमाया : जी हां ।(5)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुहैर बिन मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام आस्मानो ज़मीन के दरमियान एक सीढ़ी पर जल्वा गर हैं और कुछ फ़िरिश्ते उन के क़ासिद हैं, जब मरने वाले की जान अटक कर गले में आ जाती है और मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام अपनी सीढ़ी से देखते हैं तो उस की आंख उन की जानिब उठ जाती है पस सब से आख़िर में आंख को मौत आती है ।(6)

---

1 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب فی شخوص بصر المیت...الخ، ص۴۵۹، حدیث:۹۲۱

2 ...طبقات ابن سعد، رقم:۵۱، ابو سلمۃ بن عبد الاسد، ۱۸۲/۳

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الخوف من اللّٰہ، ۴۴۹/۵، حدیث:۱۷۷

4 ...المجالسۃ وجواھر العلم، الجزء السابع، ۳۶۵/۱، حدیث:۹۴۰

5 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملک الموت واعوانہ، ۴۶۱/۵، حدیث:۲۲۰

6 ...تفسیر بغوی، سورۃ السجدۃ، تحت الآیۃ:۱۱، ۴۳۰/۳

मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का नेज़ा

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के पास एक नेज़ा है जो मशरिक़ो मग़रिब के दरमियान हर जगह पहुंचता है, जब किसी शख़्स की ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है तो वोह उस नेज़े को उस के सर पर मार कर फ़रमाते हैं : अब तुम से मुर्दों के लश्कर में इज़ाफ़ा होगा।(1)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के पास एक ज़हरीला नेज़ा है जिस का एक किनारा मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में है वोह उसी नेज़े से शह रग काटते हैं।(2)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़साकिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : इस का मरफ़ूअ़ होना क़बूल नहीं जब कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने इल्मे आख़िरत के कश्फ़ के बयान में इस पर ए'तिमाद किया है और हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने इस पर अ़दम वाक़िफ़िय्यत का इज़्हार करते हुवे फ़रमाया : मैं ने इसे सिर्फ़ असरे मुआ़ज़ में पाया है।

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इन्सान की जान उस के हर हर उ़ज़्व से उस की मिक़्दार बराबर निकलती है और जिस्म की मिसाल उस क़मीस की सी है जिसे इन्सान उतार देता है बस क़मीस को जितना किसी चीज़ का एह़सास होता है उतना ही जिस्म को भी होता है, अस्ल राह़त और तक्लीफ़ रूह़ मह़सूस करती है।(3)

---

1 ...كتاب العظمة، باب صفة ملك الموت، ص١٢٨، حديث: ٣٧٤

2 ...تاريخ ابن عساكر، رقم: ٣٦٠٢، عبد الله بن نصر ابو محمد، ٢٦٢/٣٣

3 ...تفسير عبد الرزاق، سورة الزمر، ١٣٢/٣، حديث: ٢٦٣٠

जि़मनी फ़स्ल

तौबा के मुतअ़ल्लिक़

इरशादे बारी तआ़ला है :

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰۤى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّیْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾ (پ۴، النساء:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह तौबा जिस का क़बूल करना **अल्लाह** ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्हीं की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी ही देर में तौबा कर लें ऐसों पर **अल्लाह** अपनी रह़मत से रुजूअ़ करता है और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है और वोह तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की और न उन की जो काफ़िर मरें उन के लिये हम ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।*

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ में क़रीब से मुराद गुनाह करने और ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को देखने के दरमियान का वक़्त है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आख़िरी दम तक बन्दे की तौबा क़बूल फ़रमाता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : बन्दे के लिये तौबा फैला दी गई है जब तक उसे हांका न जाए फिर आप ने येह आयते तृय्यिबा तिलावत फ़रमाई :

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰۤى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّیْ تُبْتُ الْـٰٔنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۱۸﴾ (پ۴، النساء:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की और न उन की जो काफ़िर मरें उन के लिये हम ने दर्दनाक अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है।*

फिर फ़रमाया : मौत का वक़्त क़रीब आना ही उसे हांकना है।(3)

---

1 ...تفسیر طبری، سورۃ النساء، تحت الآیۃ:۱۷، ۳/۲۴۲، حدیث:۸۸۴۷

2 ...ترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبۃ والاستغفار، ۵/۳۱۷، حدیث:۳۵۴۸

3 ...تفسیر عبد الرزاق، سورۃ النساء، ۱/۴۴۰، حدیث:۵۳۰

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : बन्दे के लिये उस वक़्त तक तौबा कुशादा कर दी गई है जब तक नज़्अ़ में मुब्तला न हो जाए।(1)

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

حَتّٰۤی اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ (پ۴، النساء:۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : या'नी मौत को देख ले।(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू मिज्लज़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बन्दे की तौबा उस वक़्त तक क़ाबिले क़बूल है जब तक फ़िरिश्तों को न देख ले।(3)

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی ने फ़रमाया : मौत के फ़िरिश्ते के आने तक तौबा का दर खुला रहता है जब बन्दा फ़िरिश्तों को देख लेता है तो उस की मा'रिफ़त ख़त्म हो जाती है।(4)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं : मैं ने प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : जिसे तौबा की तौफ़ीक़ दी जाती है वोह क़बूलिय्यत से महरूम नहीं रहता क्यूंकि ख़ुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने क़बूलिय्यत निशान है :

وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ (پ۲۵، الشوریٰ:۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता (है)।(5)

...

ज़हर असर न करे

يَاوَاسِعُ जिस को बिच्छू काट ले वोह 70 बार पढ़ कर दम करे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़हर असर न करेगा। (मदनी पंज सूरह, स. 252)

---

1 ...تفسیر طبری، سورۃ النساء، تحت الآیۃ:۱۸، ۳/ ۶۴۵، حدیث:۸۸۶۵

2 ...تفسیر ابن ابی حاتم، پ۴، النساء، تحت الآیۃ:۱۸، ۳/ ۹۰۰، حدیث:۵۰۱۸

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الموت والاستعداد لہ، ۵/ ۴۲۷، حدیث:۱۱۵

4 ...لطائف المعارف، مجلس فی ذکر التوبۃ...الخ، ص ۵۷۴

5 ...نوادر الاصول، الاصل الخامس والخمسون والمائۃ، ۱/ ۶۲۵، حدیث:۸۷۹، عن ابی ھریرۃ

बाब नम्बर 16 अरवाह़ का नई रूह़ से मिलने और उस के पास जम्अ़ हो कर सुवालात करने का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ की जाती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मेहरबान बन्दे उसे ऐसे मिलते हैं जैसे दुन्या में किसी ख़ुश ख़बरी देने वाले से मिलते हैं और कहते हैं : अरे देखो ! तुम्हारा साथी शदीद ग़मों में था, अब छुटकारा पा कर पुर सुकून हुवा है। फिर उस रूह़ से पूछते हैं : फ़ुलां ने क्या किया ? क्या फ़ुलानी ने शादी कर ली ? फिर एक ऐसे शख़्स के बारे में पूछते हैं जो उस से पहले मर चुका होता है, वोह रूह़ कहती है : वोह तो मुझ से पहले मर गया था। अब येह मेहरबान बन्दे कहते हैं : اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَیْهِ رٰجِعُوْنَ (हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना) वोह नीचा दिखाने वाली गोद (या'नी जहन्नम) में चला गया, कितनी बुरी गोद और कितना बुरा उस का गोद वाला, फिर आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे आ'माल तुम्हारे मर्ह़ूम रिश्तेदारों के सामने पेश किये जाते हैं, अगर कोई नेक काम होता है तो वोह ख़ुश हो कर कहते हैं : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरा फ़ज़्ल और तेरी रह़मत है, इस पर अपनी ने'मत मुकम्मल फ़रमा और ह़ुस्ने आ'माल पर इस का ख़ातिमा फ़रमा। यूंही गुनाहगार के आ'माल देखते हैं तो कहते हैं : ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! उसे ऐसे आ'माल की त़रफ़ लगा दे जिन से तू राज़ी हो और वोह उसे तेरी बारगाह के क़रीब कर दें।(1)

फ़ौत शुदगान को सलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू लुबैबा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन बरा बिन मा'रूर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो उन की मां बहुत ग़मज़दा हो गईं और अ़र्ज़ करने लगीं : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क़बीला बनू सलमा में से आए दिन कोई न कोई शख़्स मरता रहता है, येह फ़रमाइये क्या अरवाह़ आपस में एक दूसरे को पहचान लेती हैं क्यूंकि मैं बिशर को सलाम भिजवाना चाहती हूं ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है ! हां वोह एक दूसरे को ऐसे पहचानती हैं जैसे दरख़्तों की बुलन्दियों पर परन्दे एक दूसरे को पहचानते हैं। इस के बा'द जब भी बनू सलमा में से कोई फ़ौत

1 ...معجم اوسط، ۱/۵۲، حدیث: ۱۴۸

होने लगता तो हज़रते सय्यिदुना बिशर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदा उस के पास पहुंच जातीं और कहतीं : ऐ फुलां ! तुझ पर सलाम हो। वोह सलाम का जवाब दे लेता तो आप फ़रमातीं : मेरे बेटे बिशर को मेरा सलाम कहना।(1)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के वक़्ते विसाल उन की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : बारगाहे मुस्तफ़ा में मेरा सलाम पेश कर दीजियेगा(2)।(3)

हज़रते सय्यिदतुना ख़ालिदा बिन्ते अब्दुल्लाह बिन उनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि उम्मुल बनीन बिन्ते अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिद की वफ़ात के आधे महीने बा'द मेरे वालिद हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उनैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास आईं, उस वक़्त वालिदे मोहतरम बीमार थे कहने लगीं : चचाजान ! मेरे बाबाजान को मेरा सलाम कहना।(4)

अरवाहे मोमिनीन की मुलाक़ात

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जन्नत सूरज के सींगों से लिपट कर लटका दी गई है(5) और हर साल एक मरतबा फैलाई जाती है और अरवाहे मोमिनीन चिड़यों की तरह परन्दों के पपोटों में होती हैं और बाहम एक दूसरे को जानती हैं और उन्हें जन्नती फलों से रिज़्क़ दिया जाता है।(6)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर रहमते आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिनों की रूहें एक दिन की मसाफ़त से एक दूसरे से मिलती हैं हालांकि दुन्या में उन्हों ने एक दूसरे को कभी देखा नहीं होता।(7)

1...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۲۵، حدیث: ۱۴

2.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی **मिरआतुल मनाजीह, जिल्द 2, सफ़हा 460** पर इस के तहत फ़रमाते हैं : क्यूंकि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तुम्हारी क़ब्र में तशरीफ़ लाएंगे, तुम से उन के बारे में सुवाल होगा इसी मौक़अ पर मेरा सलाम भी अर्ज़ कर देना, इस से मा'लूम हुवा कि मोमिन हिसाबो किताब के बा'द हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से अर्ज़ो मा'रूज़ भी कर लेता है उश्शाक़ तो उठ कर फ़िदा हो जाते हैं। येह मतलब भी हो सकता है कि तुम बरज़ख़ में हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ ही रहोगे मुझे भी वहां याद कर लेना।

3...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فیما یقال عند المریض، ۲/۱۹۲، حدیث: ۱۴۵۰

4...تاریخ کبیر، رقم: ۲۰۹۲، عبد اللّٰہ بن انیس، ۴/۳۳۴

5.....इस की वज़ाहत आगे आ रही है।

6...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنۃ، باب ماذکر فی الجنۃ وما فیھا، ۸/۷۰، حدیث: ۲۵، عن عبد اللّٰہ بن عمر

7...فردوس الاخبار، ۱/۱۴۲، حدیث: ۹۱۳

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि जब मोमिन की मौत का वक़्त आता है तो वोह ऐसी चीज़ें देखता है जिन्हें देख कर वोह तमन्ना करता है कि काश ! अभी रूह़ निकल जाए और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की मुलाक़ात पसन्द फ़रमाता है। जब मोमिन की रूह़ आस्मान पर ले जाई जाती है तो अरवाहे़ मोमिनीन उस के पास जम्अ़ हो कर अपने जानने वालों के बारे में उस से पूछती हैं, जब वोह कहती है : मैं फ़ुलां को दुन्या में (अच्छे ह़ाल में) छोड़ आई हूं। तो वोह ख़ुश होती हैं और जब वोह कहती है : फ़ुलां का तो इन्तिक़ाल हो चुका है। तो अरवाह़ कहती हैं : उसे हमारे पास नहीं लाया गया।(1)

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब बन्दा मरता है तो उस की रूह़ से मोमिनीन की रूहें मुलाक़ात करती और पूछती हैं : फ़ुलां फ़ुलां ने क्या किया ? जब वोह कहती है कि वोह तो मुझ से पहले मर गया था तो रूहें कहती हैं : उसे नीचा दिखाने वाली गोद (या'नी जहन्नम) में ले जाया गया पस कितनी बुरी गोद लेने वाली और कितना बुरा गोद वाला।(2)

मुर्दे का इस्तिक़्बाल करने वाले

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : जब कोई शख़्स मरता है तो उस की (फ़ौतशुदा) औलाद उस का इस्तिक़्बाल यूं करती है जैसे किसी बिछड़े हुवे का किया जाता है।(3)

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि जब आदमी मर जाता है तो उस के फ़ौतशुदा रिश्तेदार उस का इस्तिक़्बाल करते हैं और वोह उन से मिल कर ख़ुश होता है और वोह लोग भी उस से मिल कर ऐसे ख़ुश होते हैं जैसे किसी मुसाफ़िर के अह्ले ख़ाना उस के घर आने पर ख़ुश होते हैं।(4)

हज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अह्ले क़ुबूर आपस में यूं मिलते हैं जैसे किसी मुसाफ़िर को लोग मिलते हैं। जब आने वाली नई रूह़ से वोह किसी ऐसे

---

1 ...مسند بزار، مسند ابی حمزۃ انس بن مالک، ۱۷/۱۵۴، حدیث: ۹۷۶۰

2 ...مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ القارعۃ، ۳/۳۹۱، حدیث: ۴۰۲۱

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۲۶، حدیث: ۱۵

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب بشری المومن واذا ل الکافر، ۵/۴۷۶، حدیث: ۲۵۹

शख़्स के बारे में पूछते हैं जो उस से पहले मर चुका हो तो वोह कहता है : क्या वोह तुम्हारे पास नहीं आया ? वोह कहते हैं : اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّاۤ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (हम अल्लाह के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना) वोह हमारी राह पर नहीं लाया गया बल्कि उसे नीचा दिखाने वाली गोद (या'नी जहन्नम) में ले जाया गया।[(1)]

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मुझे येह बात मा'लूम हुई है कि मौत के वक़्त रूहों की मुलाक़ात होती है और फ़ौतशुदा रूहें नई निकलने वाली रूह़ से पूछती हैं : अपने पीछे कैसा मुआ़मला छोड़ आई हो ? और तुम पाकीज़ा जिस्म में थीं या ख़बीस में ?[(2)]

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : जब कोई मरता है तो रूहें उस से मुलाक़ात कर के ऐसे ह़ाल अह़वाल पूछती हैं जैसे मुसाफ़िर से पूछा जाता है कि फ़ुलां फ़ुलां का क्या ह़ाल है ?[(3)]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से भी इसी की मिस्ल एक रिवायत है अलबत्ता उस के आख़िर में यूं है : यहां तक कि वोह रूहें घर की बिल्ली के बारे में भी पूछती हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान "रूहें मख़्लूत़ लश्कर हैं जो इन में से जान पहचान रखती हैं, वोह मह़ब्बत करती हैं और जो अजनबी रह चुकी हैं वोह अलग रहती हैं।"[(4)] के तह़त फ़रमाते हैं : कहा गया है कि इस से मुराद बाहमी मुलाक़ात है और येह भी कहा गया कि सोए हुवों और मुर्दों की रूहें मुलाक़ात करती हैं।[(5)]

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : अगर मुझे अपने फ़ौतशुदा अक़ारिब से मिलने की उम्मीद न होती तो मैं ब वज्हे अफ़्सोस मर चुका होता।[(6)]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के मरज़ में शिद्दत हुई तो वोह सख़्त घबराहट में मुब्तला हो गए, मर्ह़ूम बिन

---

1 ..شعب الایمان، باب فی الصلاۃ علی من مات من اھل القبلۃ، فصل فی زیارۃ القبور، ۷/۲۱، حدیث: ۹۳۱۶

مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام عبید بن عمیر، ۸/۲۲۹، حدیث: ۱۶

2 ..موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملاقاۃ الارواح، ۵/۴۸۱، حدیث: ۲۷۳

3 ..موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملاقاۃ الارواح، ۵/۴۸۲، حدیث: ۲۷۶

4 ..بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب الارواح جنود مجندۃ، ۲/۴۱۳، حدیث: ۳۳۳۶

5 ..التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی تلاقی الارواح...الخ، ص ۵۹

6 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب ملاقاۃ الارواح، ۵/۴۸۳، تحت الحدیث: ۲۷۶

अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और कहा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! येह घबराहट कैसी ? आप अपने उस पाक परवरदगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में जा रहे हैं जिस की आप ने 60 साल इ़बादत की, उस के लिये आप ने नमाज़ें पढ़ीं, रोज़े रखे और ह़ज किये। आप ग़ौर कीजिये अगर आप का किसी शख़्स पर एह़सान हो तो क्या आप उस से मुलाक़ात करने में ख़ुशी मह़सूस नहीं करेंगे ताकि वोह आप को पूरा पूरा बदला दे[1] ? चुनान्चे, उन से ग़म दूर हो गया।

अ़ज़ीम हस्तियां

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र दारिमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने येह सनद बयान की और फ़रमाया कि हम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नुऐ़म رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ थे, वोह फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन मुज्तबा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पर तक्लीफ़ की शिद्दत हुई तो आप को कुछ घबराहट हुई इतने में एक शख़्स उन के पास आया और अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : ऐ अबू मुह़म्मद ! येह घबराहट कैसी ? इधर जिस्म से रूह़ जुदा होगी उधर आप अपने वालिदैने करीमैन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा व ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) करीम नाना जान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم प्यारी नानी उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा, अ़ज़ीम चचाओं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा व ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र, अपने मामूओं ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम, ह़ज़रते सय्यिदुना त़य्यिब, ह़ज़रते सय्यिदुना त़ाहिर और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम और मुक़द्दस ख़ालाओं ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुल्सूम और ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) से जा मिलेंगे। येह सुनते ही आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की सारी घबराहट काफ़ूर हो गई।[2]

अमीरुल मोमिनीन का इस्तिक़्बाल

ह़ज़रते सय्यिदुना लैस बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : एक शामी शख़्स शहीद हो गया तो वोह हर जुमुआ़ की रात अपने वालिद के ख़्वाब में आता और वोह अपने बेटे से गुफ़्तगू करते और उन्सिय्यत पाते लेकिन एक जुमुआ़ की रात ख़्वाब में न आया और फिर अगले जुमुआ़

---

1 .....इ़बादत कर के बन्दा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर एह़सान नहीं करता येह गुफ़्तगू बत़ौरे मिसाल समझाने के लिये है कि जिस त़रह़ किसी पर कोई एह़सान किया जाए तो वोह एह़सान का पूरा पूरा बदला देता है इसी त़रह़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़्लो करम से बन्दे को अ़मल की पूरी पूरी जज़ा देता है।

2 ..تاریخ ابن عساکر، رقم: ۱۳۸۳، الحسن بن علی بن ابی طالب، ۲۸۲/۱۳

की रात आया तो वालिद ने कहा : बेटा तुम ने न आ कर मुझे ग़मगीन कर दिया था और मुझे तुम से जुदाई का ख़ौफ़ होने लगा था। बेटे ने अ़र्ज़ की : तमाम शुहदा को हुक्म दिया गया था कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز से मुलाक़ात करो लिहाज़ा हम वहां मसरूफ़ थे। येह उस वक़्त की बात है जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز का विसाल हुवा।(1)

दो मोमिन और दो काफ़िर दोस्त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : दो मोमिन दोस्त थे और दो काफ़िर दोस्त थे, मोमिनों में से एक फ़ौत हो गया और उसे जन्नत की बिशारत दी गई तो उसे अपने मोमिन दोस्त की याद आई, उस ने बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ की : ऐ मौला ! मेरा फ़ुलां दोस्त मुझे तेरी और तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी का हुक्म देता, नेकियों की तरग़ीब दिलाता, बुराई से मन्अ़ करता और मुझे बताता रहता था कि मुझे तुझ से ज़रूर मिलना है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे बा'द उस को हरगिज़ गुमराह न करना यहां तक कि तू उसे भी वोह दिखाए जो मुझे दिखाया है और उस से राज़ी हो जाना जैसा तू मुझ से राज़ी हुवा है। फिर दूसरे मोमिन का भी इन्तिक़ाल हुवा तो दोनों की रूहें एक साथ कर दी गईं और हुक्म हुवा कि तुम एक दूसरे की ता'रीफ़ करो। चुनान्चे, दोनों ने एक दूसरे की ता'रीफ़ करते हुवे कहा : कितना अच्छा भाई, कितना अच्छा रफ़ीक़ और कितना अच्छा दोस्त है ! इस के बर अ़क्स जब काफ़िर दोस्तों में से एक मर गया और उसे जहन्नम की ख़बर दी गई तो वोह अपने बदकार दोस्त को याद कर के कहने लगा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा दोस्त मुझे तेरी और तेरे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी का हुक्म देता, बुराई का हुक्म करता, भलाई से रोकता और बताता था कि मैं ने तुझ से कभी नहीं मिलना। ऐ परवरदगार عَزَّوَجَلَّ तू उस को मेरे बा'द कभी हिदायत न देना, जब तक तू उसे वोह न दिखा दे जो मुझे दिखाया है और तू उस पर इसी त़रह़ नाराज़ रहना जिस त़रह़ तू मुझ से नाराज़ हुवा, जब दूसरा भी मर जाता है तो दोनों की रूहों को इकठ्ठा कर दिया जाता है और हुक्म होता है : अब हर एक दूसरे का ह़ाल बयान करे। चुनान्चे, वोह एक दूसरे को कहते हैं : तू कितना बुरा भाई और कितना बुरा साथी है।(2)

...❀...

1 ...حلية الاولياء، عمر بن عبد العزيز، ٥/٣٧٥، رقم: ٧٤٥٩

2 ...شعب الايمان، باب في مباعدة الكفار، ٧/٥٢، حديث: ٩٤٤٣

बाब नम्बर 17 मुर्दे का ग़स्साल को पहचानने और लोगों की गुफ़्तगू सुनने का बयान

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुर्दा अपने ग़ुस्ल देने वालों, जनाज़ा उठाने वालों, कफ़न देने वालों, और क़ब्र में उतारने वालों को पहचानता है ।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुर्दा अपने ग़ुस्ल देने वालों को पहचानता है और अगर उसे राह़त व फूल और चैन के बाग़ात की ख़ुश ख़बरी दी गई हो तो जनाज़ा उठा कर चलने वालों को क़सम दे कर कहता है कि "जल्दी चलो ।" और अगर खोलते पानी और भड़कती आग की ख़बर दी गई हो तो उन्हें रुक जाने की क़सम देता है ।(2)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد ने फ़रमाया : फ़िरिश्ता जब बन्दे की रूह़ क़ब्ज़ कर लेता है तो मुर्दा ग़ुस्ल देने, जनाज़ा उठाने ह़त्ता कि क़ब्र में पहुंचाए जाने तक के तमाम अह़वाल देख रहा होता है ।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू लैला رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : रूह़ फ़िरिश्ते के हाथ में होती है जब बन्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो फ़िरिश्ता उसे भी वहां छोड़ देता है ।(4)

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۸، حدیث:۲

2 ...اھوال القبور، الباب السادس فی ذکر عذاب القبر ونعیمہ، ص۷۸

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب معرفۃ المیت من یغسلہ، ۵/۴۸۴، حدیث:۲۷۹

4 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، عبد الرحمن بن ابی لیلی، ۸/۲۲۲، حدیث:۱

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : जो भी मर जाता है उस की रूह़ एक फ़िरिश्ते के हाथ में होती है, वोह देख रहा होता है कि उस के जिस्म को कैसे ग़ुस्ल दिया जा रहा है, कैसे कफ़न दिया जा रहा है और उसे कैसे ले जाया जा रहा है और जब वोह शख़्स अपनी चारपाई पर होता है तो उस से कहा जाता है : अपने बारे में लोगों की ता'रीफ़ सुन।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : हर मरने वाला जानता है कि उस के पीछे ख़ानदान में क्या होता है और वोह उन्हें ख़ुद को ग़ुस्ल व कफ़न देते हुवे देख रहा होता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना बकर बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि जब भी कोई शख़्स मर जाता है तो उस की रूह़ ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के हाथ में होती है, लोग उसे ग़ुस्ल व कफ़न दे रहे होते हैं और वोह देख रहा होता है कि उस के अह्ले ख़ाना उस के साथ क्या कर रहे हैं, अगर वोह बात करने पर क़ादिर होता तो उन्हें रोने धोने और वावेला करने से ज़रूर मन्अ़ करता।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : मुर्दा हर हर चीज़ को जानता पहचानता है, यहां तक कि वोह अपने ग़ुस्ल देने वाले को क़सम दे कर कहता है : तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा ! मुझे आराम से ग़ुस्ल दो और जब वोह चारपाई पर होता है तो उस से कहा जाता है : अपने बारे में लोगों की ता'रीफ़ सुन।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : इन्सान की रूह़ फ़िरिश्ते के क़ब्ज़े में रहती है और जिस्म को ग़ुस्ल दिया जा रहा होता है और फ़िरिश्ता क़ब्र तक साथ चलता है, जब क़ब्र बराबर कर दी जाती है तो वोह उस में दाख़िल हो कर मुर्दे से ख़िताब करता है।(5)

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، عمرو بن دینار، ۳/۴۰۰، رقم: ۴۴۱۱

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب معرفۃ المیت من یغسلہ، ۵/۴۸۶، حدیث: ۲۸۵

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب معرفۃ المیت من یغسلہ، ۵/۴۸۴، حدیث: ۲۷۷

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب معرفۃ المیت من یغسلہ، ۵/۴۸۶، حدیث: ۲۸۳

5 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۹، حدیث: ۷

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : रूह़ मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام के क़ब्ज़े में होती है और जिस्म को उलट पलट किया जा रहा होता है जब लोग उसे उठाते हैं तो मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام उन के पीछे चलते हैं जब उसे क़ब्र में रखा जाता है तो वोह रूह़ को भी उस में रख देते हैं।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू लैला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : रूह़ एक फ़िरिश्ते के क़ब्ज़े में होती है जो जनाज़े के साथ चलता है और मुर्दे से कहता है : अपने बारे में लोगों की बातें सुन, जब उसे क़ब्र में रखा जाता है तो फ़िरिश्ता रूह़ को उस के साथ दफ़्न कर देता है।(2)

इब्ने अबू नजीह़(3) का बयान है कि जो भी मर जाता है उस की रूह़ एक फ़िरिश्ते के हाथ में होती है, वोह देख रहा होता है कि उस के जिस्म को कैसे ग़ुस्ल दिया जा रहा है, कैसे कफ़न दिया जा रहा है और उसे कैसे ले जाया जा रहा है, फिर उस की रूह़ जिस्म में लौटाई जाती है तो वोह क़ब्र में बैठ जाता है।(4)

क्या मुर्दे सुनते हैं ?

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे नामदार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक़्तूलीने बद्र के पास खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया : ऐ फुलां बिन फुलां ! क्या तुम ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ के वा'दे को पूरा पा लिया जब कि मैं ने तो अपने रब के सच्चे वा'दे को पाया है। हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ऐसे जिस्मों से कैसे गुफ़्तगू फ़रमा रहे हैं जिन में रूहें ही नहीं ? इरशाद फ़रमाया : जो मैं ने कहा है वोह तुम उन से ज़ियादा नहीं सुनते अलबत्ता येह जवाब नहीं दे सकते।(5)

हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन मरज़ूक़(6) رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : एक औ़रत मदीनए

1 ...اثبات عذاب القبر للبیہقی، ص ۵۳، حدیث: ۴۵

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب معرفۃ المیت من یغسلہ، ۵/۴۸۲، حدیث: ۲۸۴

3 .....मतन में इस मक़ाम पर ''अबू नजीह़'' मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में ''इब्ने अबू नजीह़'' है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب معرفۃ المیت من یغسلہ، ۵/۴۸۵، حدیث: ۲۸۲

5 ...مسلم، کتاب الجنۃ وصفۃ نعیمہا، باب عرض مقعد المیت من الجنۃ، ص ۱۵۳۶، حدیث: ۲۸۷۳

سنن کبری للنسائی، کتاب، الجنائز، باب ارواح المومنین، ۱/۶۶۵، حدیث: ۲۲۰۱، ۲۲۰۳

6 .....मतन में इस मक़ाम पर ''उ़बैद बिन मरज़ूक़'' मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में ''उ़बैदुल्लाह बिन मरज़ूक़'' है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

मुनव्वरा में मस्जिद की सफ़ाई करती थी, वोह वफ़ात पा गई मगर हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर न दी गई, एक दिन आप का गुज़र उस की क़ब्र के क़रीब से हुवा तो पूछा : येह किस की क़ब्र है ? अ़र्ज़ की गई : उम्मे मिह़जन की। इरशाद फ़रमाया : वोही मस्जिद का काम करने वाली ? अ़र्ज़ की गई : जी हां। चुनान्चे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लोगों की सफ़ बनाई और उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी फिर उस से इरशाद फ़रमाया : तू ने कौन सा अ़मल बेहतर पाया ? सह़ाबए किराम ने अ़र्ज़ की : क्या येह सुन सकती है ? इरशाद फ़रमाया : येह तुम से ज़ियादा सुनती है। फिर इरशाद फ़रमाया : इस ने जवाब दिया है कि "मस्जिद की सफ़ाई करना।"(1)

मुझे कहां लिये जाते हो ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब लोग जनाज़े को अपने कांधों पर उठाते हैं तो अगर वोह नेक होता है तो कहता है : जल्दी चलो। और अगर बुरा होता है तो कहता है : हाए हलाकत ! मुझे कहां लिये जाते हो। इन्सान के इ़लावा हर शै उस की आवाज़ सुनती है और अगर इन्सान उसे सुन ले तो यक़ीनन बेहोश हो जाए।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि सरकारे रिसालत मआब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जनाज़े को जल्दी जल्दी ले चलो क्यूंकि अगर वोह नेक है तो ख़ैर की त़रफ़ उसे बढ़ा दो और अगर नेक नहीं है तो उस बुराई को अपनी गर्दनों से जल्द उतार दो।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने हुक्म दिया कि मुर्दे को जल्दी क़ब्र तक पहुंचा दो क्यूंकि येह वोह ठिकाना है जिस से किसी को फ़िरार नहीं लिहाज़ा उसे जल्दी वहां ले चलो ताकि वोह अपना अच्छा बुरा देख ले।

ह़ज़रते सय्यिदुना बक्र मुज़नी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی ने फ़रमाया : मुझे बताया गया है कि मय्यित क़ब्रिस्तान में जल्द पहुंचने पर ख़ुश होती है।(4)

1...الترغیب و الترھیب، کتاب الصلاۃ، باب الترغیب فی تنظیف المساجد...الخ، ۱/۱۲۲، حدیث: ۴

2...بخاری، کتاب الجنائز، باب حمل الرجال الجنازۃ، ۱/۴۴۴، حدیث: ۱۳۱۴، ۱۳۱۶

3...بخاری، کتاب الجنائز، باب السرعۃ بالجنازۃ، ۱/۴۴۴، حدیث: ۱۳۱۵

4...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب دفن المیت وتحسین کفنه، ۵/۴۹۸، حدیث: ۳۱۴

अह्ले ख़ाना पर मय्यित का एक हक़

हज़रते सय्यिदुना अय्यूब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : मन्क़ूल है कि अह्ले ख़ाना पर मय्यित का एक हक़ येह है कि उसे क़ब्र तक जल्द पहुंचा दें ।(1)

मुर्दे की पुकार

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मुर्दे को चारपाई पर रख कर लोग तीन क़दम चलते हैं तो वोह कलाम करता है जिसे इन्सानों और जिन्नों के सिवा हर वोह मख़्लूक़ सुनती है जिसे रब तआ़ला सुनाना चाहे, मुर्दा कहता है : ऐ भाइयो ! ऐ मेरी ना'श को उठा कर ले जाने वालो ! दुन्या तुम्हें धोके में न डाले जैसे मुझे धोके में डाला और ज़माना तुम से न खेले जैसा मुझ से खेला, जो कुछ मेरे पास था वारिसों के लिये छोड़ दिया जब कि फ़ैसला करने वाला (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन मुझ से ह़िसाब और बदला लेगा और तुम भी मेरी त़रह हो और मुझे छोड़े जा रहे हो ।(2)

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : जब मुर्दे को चारपाई पर रखा जाता है तो वोह पुकार कर कहता है : ऐ मेरे घरवालो ! ऐ मेरे पड़ोसियो ! ऐ मेरा जनाज़ा उठाने वालो ! दुन्या तुम्हें धोके में न डाले जैसे मुझे धोके में डाला और तुम से न खेले जैसा उस ने मुझ से खेला, यक़ीनन मेरे अह्ले ख़ाना मेरे बोझ (गुनाहों) से कुछ भी नहीं उठाएंगे ।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद बुख़ारी(4) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : मैं एक मुर्दे को ग़ुस्ल दे रहा था कि उस ने अचानक आंखें खोलीं और मेरा हाथ पकड़ कर कहा : ऐ अबू मुह़म्मद ! इस अखाड़े के लिये अच्छी तय्यारी कर लो ।(5)

---

1 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب دفن المیت وتحسین کفنه، ۵/ ۴۹۸، حدیث: ۳۱۳

2 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، باب الموعظة بالجنازة والاعتبار بها، ۲/ ۲۱، حدیث: ۲۵

3 ...الزهد للامام احمد، زهد عائشة، ص ۱۸۶، حدیث: ۹۲۰

4 .....मतन में इस मक़ाम पर ''अबू मुह़म्मद बिन नज्जार'' मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में ''अबू मुह़म्मद बुख़ारी'' है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

5 ...طبقات حنابلة، رقم: ۲۱۴، ابراهیم بن احمد بن عمر، ۲/ ۱۲۰

बाब नम्बर 18

जनाज़े में फ़िरिश्तों के चलने और गुफ़्तगू करने का बयान

हज़रते सय्यिदुना इब्ने ग़फ़्ला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : फ़िरिश्ते जनाज़े के आगे आगे चलते हैं और कहते हैं : इस शख़्स ने आगे क्या भेजा ? जब कि लोग कहते हैं : इस ने पीछे क्या छोड़ा ?(1)

जनाज़े में फ़िरिश्तों की शिर्कत

हज़रते सय्यिदुना अबू जल्द(2) رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَیْہِ السَّلَام ने रब तआ़ला से अ़र्ज़ की : इलाही ! जो तेरी रिज़ा के लिये जनाज़े के साथ चले उस का क्या अज्र है ? इरशाद हुवा : जिस दिन वोह मरेगा मेरे फ़िरिश्ते उस के साथ चलेंगे और मैं रूहों के दरमियान उस की रूह पर रह़मत भेजूंगा ।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ह़ज़रते दावूद عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ की : इलाही जो तेरी रिज़ा की ख़ातिर क़ब्र तक जनाज़े के साथ जाए उस की जज़ा क्या है ? रब तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : मेरे फ़िरिश्ते उस के साथ चलेंगे और रूहों के माबैन उस की रूह पर दुरूद पढ़ेंगे ।(4)

नूरी और ख़ाकी मख़्लूक़ की सोच में फ़र्क़

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब कोई मरता है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : इस ने आगे क्या भेजा ? जब कि लोग कहते हैं : इस ने पीछे क्या छोड़ा ?(5)

1...صفة الصفوة، رقم: ۳۷۸، سوید بن غفلة، جزء۳، ۲/ ۱۳

2.....मतन में इस मक़ाम पर "अबू ख़ालिद" मज़कूर है जब कि दीगर कुतुब में "अबू जल्द" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

3...الزهد لابن المبارک، باب توبة داود وذکر الانبیاء، ص ۱۶۴، حدیث: ۴۷۷

4...مختصر تاریخ دمشق، ۸/ ۱۲۵، رقم: ۷۰، داود نبی اللّٰہ

5...شعب الایمان، باب فی الزهد وقصر الامل، ۷/ ۳۲۸، حدیث: ۱۰۴۷۵

مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام ابی هریرة، ۸/ ۱۸۷، حدیث: ۸

बाब नम्बर 19 वफ़ाते मोमिन पर ज़मीनो आस्मान के रोने का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ (پ۲۵، الدخان:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उन पर आस्मान व ज़मीन न रोए।*

मोमिन की मौत पर रोने वाले दरवाज़े

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर इन्सान के दो आस्मानी दरवाज़े हैं एक तो वोह जिस से उस का अ़मल बुलन्द होता है और दूसरा वोह जिस से उस का रिज़्क़ उतरता है, जब मोमिन मरता है तो दोनों दरवाज़े उस पर रोते हैं।(1)

मोमिन पर रोने वाला ज़मीन का हिस्सा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ (پ۲۵، الدخان:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो उन पर आस्मान व ज़मीन न रोए।*

के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया कि क्या ज़मीनो आस्मान भी किसी पर रोते हैं ? तो आप ने फ़रमाया : हां, क्यूंकि मख़्लूक़ में कोई भी ऐसा नहीं जिस के लिये आस्मान में दरवाज़ा न हो, उसी से उस का रिज़्क़ उतरता है और उसी से उस का अ़मल बुलन्द होता है, पस जब मोमिन वफ़ात पाता है तो आस्मान में उस का वोह दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता है जिस से उस का अ़मल बुलन्द होता और रिज़्क़ उतरता था, चुनान्चे, वोह दरवाज़ा उस पर रोता है और उस के बिछड़ने पर ज़मीन का वोह हिस्सा रोता है जहां वोह मोमिन नमाज़ पढ़ता और ज़िक्रे इलाही करता था और क़ौमे फ़िरऔ़न के ज़मीन पर कोई भी नेक आसार नहीं थे और न ही उन की त़रफ़ से बारगाहे इलाही में कोई भलाई पहुंची थी लिहाज़ा उन पर आस्मान व ज़मीन नहीं रोए।(2)

हज़रते सय्यिदुना शुरैह़ बिन उ़बैद ह़ज़्रमी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मोमिन ह़ालते सफ़र में इन्तिक़ाल कर जाए

1... ترمذی، کتاب التفسیر، باب من سورۃ الدخان، ۵/۱۷۱، حدیث:۳۲۶۶

حلیۃ الاولیاء، یزید بن ابان، ۳/۲۲، حدیث:۳۱۷۰

2... تفسیر طبری، سورۃ الدخان، تحت الآیۃ:۲۹، ۱۱/۲۳۷، حدیث:۳۱۱۲۲

जहां उस पर रोने वाले न हों तो उस पर ज़मीनो आस्मान रोते हैं फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुक़द्दसा तिलावत फ़रमाई :

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ (پ۲۵، الدخان:۲۹) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तो उन पर आस्मान व ज़मीन न रोए ।*

फिर इरशाद फ़रमाया : ज़मीनो आस्मान काफ़िर पर नहीं रोते ।(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد ने फ़रमाया : हर मोमिन की मौत पर ज़मीन 40 दिन रोती है ।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ता ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने फ़रमाया : बन्दा ज़मीन के जिस टुकड़े पर भी सजदा करता है वोह क़ियामत में उस की गवाही देगा और जिस दिन वोह मरता है ज़मीन का टुकड़ा उस पर रोता है ।(3)

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : जब मोमिन का विसाल होता है तो ज़मीन में उस की जाए नमाज़ और आस्मान में उस का अ़मल चढ़ने का दरवाज़ा उस पर रोते हैं । फिर आप ने येह आयते त़य्यिबा तिलावत फ़रमाई :

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ (پ۲۵، الدخان:۲۹) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तो उन पर आस्मान व ज़मीन न रोए ।*(4)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : ज़मीन 40 दिन तक मोमिन पर रोती है ।(5)

आस्मान व ज़मीन क्यूं रोते हैं ?

सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के दरबान हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि जब मोमिन बन्दा मरता है तो ज़मीन के मुख़्तलिफ़ गोशे पुकार उठते हैं : ऐ अल्लाह मोमिन बन्दा फ़ौत हो गया, पस आस्मान व ज़मीन उस पर रोते हैं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन दोनों से इरशाद फ़रमाता है : तुम मेरे बन्दे पर किस वज्ह से रोए ? वोह अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब ! वोह बन्दा हमारे जिस गोशे से भी गुज़रा तेरा ज़िक्र करते हुवे गुज़रा ।(6)

---

1 ...تفسیر طبری، سورۃ الدخان، تحت الآیۃ:۲۹، ۱۱/۲۳۸، حدیث:۳۱۱۲۹

2 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام مجاھد، ۸/۲۸۷، حدیث:۱۹

3 ...الزھد لابن المبارک، باب فخر الارض بعضھا علی بعض، ص۱۱۵، حدیث:۳۴۰

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب بکاء السماء والارض، ۵/۴۸۷، حدیث:۲۸۷

5 ...الزھد لوکیع، باب فضل المؤمن، ص۳۰۹، حدیث:۸۳

6 ...الزھد لابن المبارک ما رواہ نعیم بن حماد، باب ما یبشر بہ المیت عند الموت، وثناء الملکین علیہ، ص۴۱، حدیث:۱۶۱

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का'ब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ज़मीन किसी पर महब्बत की वज्ह से रोती है और किसी पर अफ़्सोस के सबब, महब्बत की वज्ह से उस पर रोती है जो ज़मीन पर रब तआला की इताअत करता था और बतौरे अफ़्सोस उस पर रोती है जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता था।(1)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन कैस رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि आस्मान व ज़मीन मोमिन पर रोते हैं, आस्मान कहता है : इस की भलाई मुसलसल आती रहती थी और ज़मीन कहती है : येह मुझ पर मुसलसल भलाई करता रहता था।(2)

हज़रते सय्यिदुना ज़ह्हाक عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : नेक मोमिन की वफ़ात पर ज़मीन के वोह हिस्से रोते हैं जिन पर उस की इबादत के निशानात होते हैं और आस्मान के वोह हिस्से रोते हैं जिन से अमले ख़ैर बुलन्द होता था।(3)

आस्मान के रोने की दलील

हज़रते सय्यिदुना अता رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : आस्मान का रोना उस के किनारों का सुर्ख़ होना है।(4)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : आस्मान की सुर्ख़ी उस का रोना है।(5)

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : कहा जाता था कि आस्मान की येह सुर्ख़ी वफ़ाते मोमिन पर उस के रोने की वज्ह से है।(6)

फ़िरिश्तों को रोने का हुक्म

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी मोमिन को ब हालते सफ़र वफ़ात देता है तो उस की तन्हाई की वज्ह से रहमत करते हुवे उसे अज़ाब नहीं देता और फ़िरिश्तों को उस पर रोने का हुक्म देता है क्यूंकि उस के रोने वाले दूर होते हैं।(7)

1...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب شهادات، ۵/۵۷۷، حدیث: ۵۸۰
2...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب شهادات، ۵/۵۷۷، حدیث: ۵۷۹
3...تفسیر طبری، سورة الدخان، تحت الاٰیة: ۲۹، ۱۱/۲۳۸، حدیث: ۳۱۱۳۲
4...تفسیر طبری، سورة الدخان، تحت الاٰیة: ۲۹، ۱۱/۲۳۷، حدیث: ۳۱۱۲۱
5...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب بکاء السماء والارض، ۵/۴۸۸، حدیث: ۲۸۹
6...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب بکاء السماء والارض، ۵/۴۸۸، حدیث: ۲۹۰
7...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب شهادات، ۵/۵۷۷، حدیث: ۵۷۸

बाब नम्बर 20 जिस मिट्टी से तख़्लीक़ हुई वहीं दफ़्न होने का बयान

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीनए मुनव्वरा में एक जगह से गुज़रे तो चन्द लोगों को क़ब्र खोदते मुलाहज़ा फ़रमाया, दरयाफ़्त करने पर उन्हों ने बताया कि एक ह़बशी यहां आ कर फ़ौत हो गया है। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, इस (ह़बशी) को इस की अपनी ज़मीन (ह़बशा) से निकाल कर इस मिट्टी तक लाया जिस से येह पैदा किया गया था।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक ह़बशी मदीनए मुनव्वरा में दफ़्न किया गया तो सरकारे दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस मिट्टी से पैदा हुवा उसी में दफ़्न हुवा।(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हम क़ब्र खोद रहे थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी हुई और इरशाद फ़रमाया : क्या कर रहे हो ? हम ने अ़र्ज़ की : इस ह़बशी मुर्दे के लिये क़ब्र खोद रहे हैं। इरशाद फ़रमाया : इस की मौत इसे इसी की मिट्टी तक ले आई।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शहरे मदीना के अत़राफ़ में दौरा फ़रमा रहे थे कि एक खोदी हुई क़ब्र सामने आ गई आप उस के पास जा खड़े हुवे और इरशाद फ़रमाया : येह किस के लिये है ? बताया गया कि एक ह़बशी शख़्स की है। इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, इसे अपनी ज़मीनो आस्मान से ला कर इसी मिट्टी में दफ़्नाया गया जिस से येह पैदा हुवा था।(4)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर नौ मौलूद पर उस की क़ब्र की मिट्टी से थोड़ा सा हिस्सा छिड़का जाता है।(5)

---

1 ...مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب کل احد یدفن فی التربۃ التی خلق منھا، ۳/۱۵۷، حدیث: ۴۲۲۶

2 ...مجمع الزوائد، کتاب الجنائز، باب کل احد یدفن فی التربۃ التی خلق منھا، ۳/۱۵۸، حدیث: ۴۲۲۸

3 ...معجم اوسط، ۴/۳۶، حدیث: ۵۱۲۶

4 ...نوادر الاصول، الاصل الثانی والخمسون، ۱/۲۱۳، حدیث: ۳۰۵

5 ...حلیۃ الاولیاء، محمد بن سیرین، ۲/۳۱۸، حدیث: ۲۳۸۹

रेह़्म पर मुक़र्रर फ़िरिश्ता

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : रेह़्म पर मुक़र्रर फ़िरिश्ता रेह़्म से नुत्फ़े को ले कर अपनी हथेली पर रखता और अ़र्ज़ करता है : ऐ बारी तआ़ला ! इसे पैदा किया जाएगा या नहीं ? अगर रब तआ़ला इरशाद फ़रमाए कि पैदा किया जाएगा तो फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है : इलाही इस का रिज़्क़ क्या है ? बाक़ियात क्या हैं ? मौत का वक़्त क्या है ? और अ़मल क्या है ? रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : लौहे़ मह़फ़ूज़ में देखो। वोह फ़िरिश्ता लौहे़ मह़फ़ूज़ में देखता है तो उस में उस का रिज़्क़, बाक़ियात, मौत और अ़मल सब जान लेता है फिर उस के जाए मदफ़न की मिट्टी ले कर नुत्फ़े को उस में गूंधता है रब तआ़ला के इस फ़रमान का येही मत़लब है :

مِنۡهَا خَلَقۡنٰكُمۡ وَفِيۡهَا نُعِيۡدُكُمۡ (پ۱۶، طٰہٰ:۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया और इसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना हिलाल बिन यसाफ़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : हर पैदा होने वाले की नाफ़ में उस के जाए मदफ़न की मिट्टी होती है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना मत़र बिन अ़कामस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِذَا قَضَى اللّٰهُ لِعَبْدٍ اَنْ يَّمُوْتَ بِاَرْضٍ جَعَلَ لَهٗ اِلَيْهَا حَاجَةً या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे को जब किसी जगह वफ़ात देने का फ़ैसला फ़रमाता है तो उस जगह बन्दे की कोई ह़ाजत पैदा कर देता है।(3)

मौला ! येह तेरी अमानत है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस की मौत जिस ज़मीन में होना होती है वहां उस के लिये कोई ह़ाजत पैदा कर दी जाती है, चुनान्चे, वोह वहां जाता है तो उस की रूह़ क़ब्ज़ कर ली जाती है, क़ियामत के दिन ज़मीन अ़र्ज़ करेगी : मौला ! येह तेरी अमानत है।(4)

1 ...نوادر الاصول، الاصل الثانی والخمسون، ۱/۲۱۳، تحت الحدیث:۳۰۵

2 ...المجالسة وجواھر العلم، الجزء الثانی، ۱/۱۰۷، حدیث:۱۹۱

3 ...ترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء ان النفس تموت حیث ما کتب لھا، ۴/۵۸، حدیث:۲۱۵۳

4 ...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، باب اذا اراد اللہ قبض عبد...الخ، ۱/۲۹۷، حدیث:۱۳۹۸

नुत्फ़े से गुफ़्त्गू

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : नुत्फ़ा जब रेह़्म में क़रार पकड़ लेता है तो फ़िरिश्ता उसे अपनी हथेली में उठा कर अ़र्ज़ करता है : या इलाही ! इस ने पैदा होना है या नहीं ? अगर फ़रमाया जाए कि नहीं होना तो उस के लिये कोई रूह़ नहीं होती और रेह़्म उसे ख़ून की सूरत में बाहर डाल देता है और अगर फ़रमाया जाए कि पैदा होना है तो फ़िरिश्ता अ़र्ज़ करता है : येह मुज़क्कर है या मुअन्नस ? खुश बख़्त है या बद बख़्त ? इस ने मरना कब है ? बाक़ियात क्या हैं ? रिज़्क़ क्या है ? और किस जगह मरेगा ? रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : लौहे़ मह़फ़ूज़ को देखो उस में तुम्हें इस के बारे में मा'लूम हो जाएगा । उस नुत्फ़े से कहा जाता है : तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : **अल्लाह** । फिर पूछा जाता है : तुझे रिज़्क़ देने वाला कौन है ? वोह कहता है : **अल्लाह** । चुनान्चे, वोह पैदा किया जाता है और अपने अह्ले ख़ाना में ज़िन्दगी बसर करता है, अपना रिज़्क़ खाता है, अपनी बाक़ियात छोड़ता है और जब उस की मौत आती है तो मर जाता है और उसी जगह दफ़्न कर दिया जाता है ।(1)

दुन्या व आख़िरत में नफ़्अ़ मन्द और नुक़्सान देह पड़ोसी

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِدْفِنُوْا مَوْتَاكُمْ وَسْطَ قَوْمٍ صَالِحِيْنَ فَاِنَّ الْمَيِّتَ يَتَاَذّٰى بِجَارِ السُّوْءِ كَمَا يَتَاَذّٰى الْحَيُّ بِجَارِ السُّوْءِ या'नी तुम अपने मुर्दों को नेक लोगों के दरमियान दफ़्न करो क्यूंकि मुर्दे को भी बुरे पड़ोसी से उसी त़रह़ तक्लीफ़ होती है जिस त़रह़ ज़िन्दा को बुरे पड़ोसी से तक्लीफ़ होती है ।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِدْفِنُوْا مَوْتَاكُمْ وَسْطَ قَوْمٍ صَالِحِيْنَ فَاِنَّ الْمَيِّتَ يَتَاَذّٰى بِجَارِ السُّوْءِ كَمَا يَتَاَذّٰى الْحَيُّ بِجَارِ السُّوْءِ

---

1 ...نوادر الاصول، الاصل الثانی والخمسون، ۲۱۴/۱، حدیث:۳۰۷

2 ...حلیۃ الاولیاء، مالک بن انس، ۳۹۰/۶، حدیث:۹۰۴۲

या'नी तुम अपने मुर्दों को नेक लोगों के दरमियान दफ़्न करो क्यूंकि मुर्दे को भी बुरे पड़ोसी से उसी त़रह़ तक्लीफ़ होती है जिस त़रह़ ज़िन्दा को बुरे पड़ोसी से तक्लीफ़ होती है ।[(1)]

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : हमें रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि हम अपने मुर्दों को नेक लोगों के बीच दफ़्न करें क्यूंकि ज़िन्दों की त़रह़ मुर्दों को भी बुरे पड़ोसी से तक्लीफ़ होती है ।[(2)]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से किसी का इन्तिक़ाल हो जाए तो उसे अच्छा कफ़न दो, उस की वसिय्यत जल्द पूरी करो, उस के लिये क़ब्र गहरी खोदो और उसे बुरे पड़ोसी से बचाओ । अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या नेक पड़ोसी आख़िरत में भी नफ़्अ़ देता है ? इरशाद फ़रमाया : क्या दुन्या में नफ़्अ़ देता है ? अ़र्ज़ की गई : जी हां । इरशाद फ़रमाया : इसी त़रह़ आख़िरत में भी नफ़्अ़ देता है ।[(3)]

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि अपने मुर्दों को अच्छा कफ़न दो और चिल्ला चिल्ला कर, उन की ख़ूबियां बयान कर के, वसिय्यत पूरी करने में ताख़ीर कर के और क़त्ए़ रेह़मी के सबब उन्हें तक्लीफ़ मत दो, उन का क़र्ज़ अदा करने में जल्दी करो और उसे बुरे पड़ोसियों से बचाओ ।[(4)]

नेक पड़ोसी की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन नाफ़ेअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरा में एक शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो बा'दे दफ़्न उसे किसी ने ख़्वाब में जहन्नम में देखा जिस से वोह ग़मगीन हो गया, फिर सात या आठ दिन बा'द उसी शख़्स ने उसे जन्नत में देखा तो इस का सबब पूछा, मरने वाले ने बताया कि हमारे साथ एक नेक शख़्स को दफ़्न किया गया तो उस ने अपने 40 पड़ोसियों की शफ़ाअ़त की जिन में, मैं भी शामिल था ।[(5)]

---

❶...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۷۴۷۳، المظفر بن الحسن بن المهند، ۳۷۷/۵۸

❷...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۴۲۹۵، عبد المؤمن بن خلف، ۱۹۷/۳۷

❸...التذکرة للقرطبی، باب یختار للمیت قوم صالحون، ص ۹۴

❹...فردوس الاخبار، ۲۲/۱، حدیث: ۳۱۷

❺...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۸۶/۲، حدیث: ۱۳۹

ज़मीन का बेहतरीन और बद तरीन हिस्सा

हज़रते सय्यिदुना मुआविया बिन सालेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने वसिय्यत की, कि मेरी क़ब्र गहरी न खोदना क्यूंकि ज़मीन का बेहतरीन हिस्सा ऊपर वाला और बद तरीन हिस्सा नीचे वाला है।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुहाजिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَادِر फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز के भाई हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز का इन्तिक़ाल हुवा तो अमीरुल मोमिनीन ने मुझे क़ब्र खोदने का हुक्म दिया और फ़रमाया : अपने क़द या फिर कांधों के बराबर तक खोदना, ज़ियादा गहरी न करना क्यूंकि ज़मीन का ऊपर उस के नीचे से ज़ियादा पाकीज़ा है।(2)

क़ब्रिस्तान की रौशनी और तारीकी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन मरता है तो उस की मौत से क़ब्रिस्तान जगमगा उठता है और उस का हर टुकड़ा येह ख़्वाहिश करता है कि उसे मेरे अन्दर दफ़्न किया जाए और जब काफ़िर मरता है तो क़ब्रिस्तान में अन्धेरा छा जाता है और उस का हर टुकड़ा ख़ुदा की पनाह मांगता है कि उसे उस के अन्दर दफ़्न न किया जाए।(3)

ज़ियादा मेहरबान फ़िरिश्ते

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह असदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی बयान करते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुस्समद बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی के अह्ले ख़ाना में से किसी शख़्स के जनाज़े में शरीक हुवा तो वोह लोगों को जल्दी करने पर उभार रहे थे और फ़रमा रहे थे :

---

1 ...طبقات ابن سعد، رقم: ۹۹۵، عُمَرُ بْنُ عبد العزیز، ۵/ ۳۲۰

2 ...مختصر تاریخ دمشق، ۱۰/ ۲۲۳، رقم: ۱۲۹، سهل بن عبد العزیز بن مروان

3 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۸۳۰۴، یزید بن عبد الله بن ابی یزید، ۶۵/ ۲۷۷، حدیث: ۱۳۲۷۴

शाम होने से पहले इसे राहत पहुंचाओ। पूछा गया : क्या इस बारे में आप के पास कोई रिवायत है ? उन्हों ने फ़रमाया : जी हां। मेरे वालिद ने मेरे दादा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत की है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक दिन के फ़िरिश्ते रात के फ़िरिश्तों से ज़ियादा मेहरबान हैं।(1)

फ़ाएदा

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन वह्ब ख़ौलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हम हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के हमराह पहाड़ के दामन में चल रहे थे, (वालिये मिस्र) मुक़ौक़स भी हमारे साथ था, हज़रते सय्यिदुना अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उस से फ़रमाया : मुक़ौक़स ! तुम्हारे मुल्क के पहाड़ मुल्के शाम के पहाड़ों की त़रह़ गंजे क्यूं हैं ? उन पर हरयाली है न कोई दरख़्त ? उस ने अ़र्ज़ की : येह तो मैं नहीं जानता अलबत्ता यहां वालों को ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ ने दरयाए नील के ज़रीए इन पहाड़ों से बे परवा कर दिया है। लेकिन इस पहाड़ के नीचे एक ऐसी चीज़ है जो इस नील से भी बेहतर है। पूछा : वोह क्या ? मुक़ौक़स ने कहा : वोह येह कि इस के नीचे ऐसे लोग दफ़्न किये जाएंगे जिन पर क़ियामत के रोज़ ह़िसाब किताब न होगा। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुआ मांगी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे भी उन में से कर दे।

हज़रते सय्यिदुना ह़र्मला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहते हैं : मैं ने वहां पर हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र देखी है और वहीं हज़रते सय्यिदुना अबू नज़रह ग़िफ़ारी और हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की क़ब्रें हैं।(2)

काले सांप का तौक़ या ज़न्जीरों की आवाज़

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक जनाज़े के साथ तशरीफ़ ले गए, फिर एक कपड़ा मंगवा कर क़ब्र पर फैला

---

1 ...ناسخ الحدیث ومنسوخہ لابن شاہین، کتاب الجنائز، باب فی دفن اللیل، ص ۳۷۹، حدیث: ۳۱۷

2 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۴۷۲۶، عقبۃ بن عامر بن عبس، ۴۰/۵۰۲

दिया और इरशाद फ़रमाया : क़ब्र में मत झांकना क्यूंकि येह अमानत है। हो सकता है गिरह खुले तो उस की गर्दन में काले सांप का तौक़ नज़र आए या उसे जकड़ने का हुक्म दिया गया हो तो ज़न्जीरों की आवाज़ सुनाई दे।[1]

अपने मुर्दों को भूल जाओ

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि जनाज़े के साथ चलने वालों पर ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर देता है, लोग क़ब्र तक ग़म में मुब्तला रहते हैं और जब मुर्दे को क़ब्र के सिपुर्द कर के लौटते हैं तो फ़िरिश्ता एक मुठ्ठी मिट्टी उठा कर उन पर फैंक कर कहता है : जाओ अपनी दुन्या की त़रफ़, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें तुम्हारा मुर्दा भुला दे। चुनान्चे, लोग अपने मुर्दे को भूल कर अपनी ख़रीदो फ़रोख़्त में मश्ग़ूल हो जाते हैं, गोया न उन का उस से कोई तअ़ल्लुक़ है न उस का उन से कोई तअ़ल्लुक़ था।[2]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता क़ब्रों पर मुक़र्रर है, मय्यित को दफ़्न कर के मिट्टी बराबर की जाती है और लोग वापस जाने के लिये पलटते हैं तो वोह फ़िरिश्ता मिट्टी की एक मुठ्ठी भर के उन पर फैंकता है और कहता है : जाओ अपनी दुन्या की त़रफ़ और अपने मुर्दों को भूल जाओ।[3]

दर्दे सर दूर हो

یَا مُجِیْبُ जो कोई 3 बार पढ़ कर दम करेगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दर्दे सर दूर होगा।

(मदनी पंज सूरह, स. 252)

---

1 ...التذكرة للقرطبي، باب بسط الثوب على القبر عند الدفن، ص ٧٥
اخرجه ابن الجوزي في الموضوعات، ٣/ ٢٣٥، فيه: ابراهيم بن هدبة كذاب

2 ...فردوس الاخبار، ١/ ١٤٢، حديث: ٩٠٩

3 ...فردوس الاخبار، ٢/ ١٦٦، حديث: ٦٥١٧

बाब नम्बर 21 ब वक़्ते तदफ़ीन पढ़ी जाने वाली दुआओं का बयान

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : जब जनाज़ा क़ब्र के पास पहुंच जाए और लोग बैठ जाएं तो तुम न बैठो बल्कि क़ब्र के किनारे खड़े हो जाओ और जब मय्यित को क़ब्र में उतारा जाए तो तुम यूं कहो :

بِسْمِ اللّٰهِ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، اَللّٰهُمَّ عَبْدُكَ نَزَلَ بِكَ وَاَنْتَ خَيْرُ مَنْزُوْلٍ بِهٖ، خَلَّفَ الدُّنْيَا خَلْفَ ظَهْرِهٖ، فَاجْعَلْ مَا قَدِمَ عَلَيْهِ خَيْرًا مِّمَّا خَلَّفَ، فَاِنَّكَ قُلْتَ: مَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में और रसूले ख़ुदा के दीन पर ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरा बन्दा तेरे पास ह़ाज़िर होता है और तू बेहतरीन मेहमान नवाज़ी फ़रमाने वाला है, येह दुन्या को अपने पसे पुश्त छोड़ आया है, इस के आगे आने वाले को पीछे छोड़े हुवे से बेहतर फ़रमा दे क्यूंकि तेरा फ़रमान है : "जो अल्लाह के पास है वोह नेकों के लिये सब से भला।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : जब तुम में से कोई मर जाए तो उसे रोके मत रखो बल्कि उसे उस की क़ब्र की त़रफ़ जल्दी ले जाओ और उस के सर की जानिब कलामे पाक की इब्तिदाई आयात और एक रिवायत में है कि सूरए बक़रह की इब्तिदाई आयात और पाउं की जानिब सूरए बक़रह की आख़िरी आयात पढ़ो।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे मेरे वालिदे गिरामी ने वसिय्यत की, कि बेटा ! जब तुम मुझे लह़द में उतार दो तो यूं कहना : ख़ुदा के नाम के साथ और रसूले ख़ुदा के दीन पर, फिर मुझ पर मिट्टी डाल कर सिरहाने सूरए बक़रह की इब्तिदाई और आख़िरी आयात तिलावत करना क्यूंकि मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ऐसा ही फ़रमाते सुना है।(3)

---

(1)...مسند بزار، ابو سعید الخدری عن علی، ۲/۱۲۳، حدیث: ۴۸۰

(2)...معجم کبیر، ۱۲/۳۴۰، حدیث: ۱۳۶۱۳

مشکاة المصابیح، کتاب الجنائز، باب دفن المیت، الفصل الثالث، ۱/۳۲۵، حدیث: ۱۷۱۷

(3)...معجم کبیر، ۱۹/۲۲۱، حدیث: ۴۹۱

तदफ़ीन के वक़्त और बा'द की दुआएं

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे की तदफ़ीन के बा'द यूं दुआ की :

اَللّٰھُمَّ جَافِ الْاَرْضَ عَنْ جَنْبَیْہِ وَافْتَحْ اَبْوَابَ السَّمَاءِ لِرُوْحِہٖ وَاَبْدِلْہُ دَارًا خَیْرًا مِّنْ دَارِہٖ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस के दोनों पहलूओं से ज़मीन को कुशादा कर दे इस की रूह के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दे और इसे दुन्या के घर से बेहतर घर अ़ता फ़रमा।(1)

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر रिवायत करते हैं : जब मुर्दे को दफ़्न किया जाता तो हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह दुआ करते :

اَللّٰھُمَّ جَافِ الْقَبْرَ عَنْ جَنْبَیْہِ وَصَعِّدْ رُوْحَہٗ وَتَقَبَّلْہُ وَتَلَقَّہٗ مِنْكَ بِرَوْحٍ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस के पहलूओं से क़ब्र को कुशादा फ़रमा, इस की रूह को बुलन्द फ़रमा कर क़बूल फ़रमा और अपनी बारगाह से इसे राह़त नसीब फ़रमा।(2)

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की साहिबज़ादी के जनाज़े में हाज़िर हुवा तो उन्हों ने अपनी बेटी को क़ब्र में रख कर कहा : بِسْمِ اللهِ وَفِیْ سَبِیْلِ اللهِ या'नी अल्लाह के नाम से अल्लाह की राह में। फिर उस पर ईंटें बराबर कीं तो कहा : اَللّٰھُمَّ اَجِرْھَا مِنَ الشَّیْطٰنِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे शैतान और अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ फ़रमा। जब मिट्टी डाल चुके तो एक त़रफ़ खड़े हो गए और येह दुआ की : اَللّٰھُمَّ جَافِ الْاَرْضَ عَنْ جَنْبَیْھَا وَصَعِّدْ رُوْحَھَا وَلَقِّھَا مِنْكَ رِضْوَانًا या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस के पहलूओं से क़ब्र को कुशादा फ़रमा, इस की रूह़ को बुलन्द फ़रमा और अपनी रिज़ा की दौलत अ़ता फ़रमा। फिर फ़रमाने लगे : येह सब मैं ने सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना है।(3)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد यूं दुआ किया करते थे :

بِسْمِ اللهِ وَفِیْ سَبِیْلِ اللهِ اَللّٰھُمَّ افْسَحْ فِیْ قَبْرِہٖ وَنَوِّرْ لَہٗ فِیْہِ وَاَلْحِقْہُ بِنَبِیِّہٖ या'नी अल्लाह के नाम से अल्लाह की राह में, इलाही ! इस की क़ब्र कुशादा फ़रमा, इस की क़ब्र रौशन कर दे और

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، باب ما قالوا اذا وضع المیت فی قبرہ، ۳/۲۱۱، حدیث: ۹

2 ...شعب الایمان، باب فی الصلاۃ علی من مات...الخ، ۷/۸، حدیث: ۹۲۶۲، بتغیر قلیل

3 ...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی ادخال المیت القبر، ۲/۲۴۳، حدیث: ۱۵۵۳
سنن کبری للبیہقی، کتاب الجنائز، باب ما یقال اذا ادخل المیت قبرہ، ۴/۹۱، حدیث: ۷۰۶۱

इसे अपने नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस अ़ता फ़रमा ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुर्रह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गों का त़रीक़ा रहा है कि जब वोह मय्यित को लह़द में रख देते तो यूं कहते : اَللّٰهُمَّ اَعِذْهُ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم या'नी ऐ ख़ुदा ! इसे शैत़ान मर्दूद से बचा ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गाने दीन मुर्दे को क़ब्र में उतारते वक़्त यूं कहना पसन्द फ़रमाते थे :

بِسْمِ اللّٰهِ وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اَجِرْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ وَ مِنْ شَرِّ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم

या'नी ख़ुदा के नाम से और ख़ुदा की राह में और रसूले ख़ुदा के दीन पर, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इसे अ़ज़ाबे क़ब्र, अ़ज़ाबे दोज़ख़ और शैत़ान मर्दूद के शर से मह़फ़ूज़ रख ।(3)

दफ़्न के बा'द तल्क़ीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई मर जाए और तुम उस पर मिट्टी डाल चुको तो तुम में से कोई एक क़ब्र के सिरहाने खड़ा हो जाए और यूं कहे : ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलाना । मुर्दा सुन लेगा मगर जवाब नहीं देगा, वोह फिर कहे : ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलाना तो मुर्दा उठ कर बैठ जाएगा, फिर उसे तीसरी मरतबा पुकारे तो मुर्दा बोल उठेगा : ऐ पुकारने वाले ! ख़ुदा तुझ पर रह़म फ़रमाए, हमारी रहनुमाई कर, लेकिन तुम उस मुर्दे की आवाज़ नहीं सुन सकोगे, चुनान्चे, पुकारने वाला कहे :

اُذْكُرْ مَا خَرَجْتَ عَلَيْهِ مِنَ الدُّنْيَا شَهَادَةَ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

وَاَنَّكَ رَضِيْتَ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا وَّبِالْقُرْاٰنِ اِمَامًا

या'नी उसी गवाही को याद करो जिस पर दुन्या से निकले हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं और येह कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रब होने, इस्लाम के दीन होने, ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने और क़ुरआन के पेश्वा होने पर राज़ी हो । अब नकीरैन एक दूसरे का हाथ पकड़ कर कहते हैं :

(1) ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الدعاء، باب ما یدعو بہ الرجل اذا وضع المیت فی قبرہ، ۷/۱۳۷، حدیث:۵

(2) ...نوادر الاصول، الاصل الحادی والخمسون والمائتان، ۲/۱۰۱۹، حدیث:۱۳۲۵

(3) ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، باب ما قالوا اذا وضع المیت فی قبرہ، ۳/۲۱۱، حدیث:۵

चलो ऐसे शख़्स के पास बैठ कर हम क्या करेंगे जिसे उस की हुज्जत बता दी गई। पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें उस से दूर फ़रमा देता है। एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! अगर किसी की मां का नाम मा'लूम न हो तो ? इरशाद फ़रमाया : उसे ह़ज़रते ह़व्वा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ मन्सूब कर के यूं कहे : ऐ फ़ुलां बिन ह़व्वा।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गाने दीन मुर्दे को क़ब्र में उतारने के वक़्त यूं कहना पसन्द फ़रमाते थे : ख़ुदा के नाम से और ख़ुदा की राह में और रसूले ख़ुदा के दीन पर, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे अ़ज़ाबे क़ब्र, अ़ज़ाबे दोज़ख़ और शैत़ान मर्दूद के शर से मह़फ़ूज़ रख।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब क़ब्र पर मिट्टी बराबर कर दी जाती तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्र के पास खड़े हो कर दुआ़ फ़रमाते : इलाही ! हमारा साथी तेरे हुज़ूर आया है, येह दुन्या को अपने पीछे छोड़ आया है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! सुवालात के वक़्त इस की क़ुव्वते गोयाई सलामत रख और इसे क़ब्र में ऐसी आज़माइश में न डाल जिस की इसे त़ाक़त न हो।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत फ़रमाई कि जब मैं मर जाऊं तो मुझे दफ़्न कर के एक शख़्स मेरे सिरहाने खड़ा हो जाए और यूं कहे : ऐ सुदय बिन अ़ज्लान ! उस गवाही को याद करो जिस पर तुम दुन्या में क़ाइम थे कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अल्लाह के रसूल हैं।[4]

क़ब्र पर ज़िक्र के लिये ठहरना मुस्तह़ब है

ह़ज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़मरह बिन ह़बीब और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम बिन उ़मैर رَحِمَہُمُ اللہُ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : जब क़ब्र पर मिट्टी डाल दी जाए और लोग चले जाएं तो मुस्तह़ब है कि क़ब्र के पास खड़े हो कर यूं कहा जाए : ऐ फ़ुलां ! कहो : अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं। येह तीन मरतबा कहा जाए फिर यूं मुख़ात़िब हो : ऐ फ़ुलां ! कहो : मेरा

---

❶...معجم کبیر، ۸/۲۴۹، حدیث: ۷۹۷۹

❷...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الجنائز، باب ماقالوا اذا وضع المیت فی قبرہ، ۳/۲۱۱، حدیث: ۵

❸...القول البدیع، الصلاۃ علیہ فی الصلاۃ فی الصلاۃ، ص ۳۹۳

❹...معجم کبیر، ۸/۲۴۹، حدیث: ۷۹۷۹

रब अल्लाह है, मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं । इस के बा'द वहां से वापस हुवा जाए ।(1)

तम्बीह

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र आजुरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : दफ़्ने मय्यित के बा'द कुछ देर ठहरना और उस के चेहरे की त़रफ़ रुख़ कर के उस के लिये साबित क़दमी की दुआ़ करना मुस्तह़ब है । पस यूं दुआ़ करे : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरा बन्दा है और तू इसे हम से ज़ियादा जानता है हम ने तो इसे नेक ही पाया है, तू ने इसे सुवाल जवाब के लिये बिठा दिया है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे आख़िरत में ह़क़ बात पर साबित क़दम फ़रमा जैसा तू ने दुन्या में साबित क़दम फ़रमाया, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस पर रह़म फ़रमा और इसे अपने नबी (صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का पड़ोस अ़त़ा फ़रमा, हमें इस के बा'द गुमराह न फ़रमा और न ही इस के अज्र से मह़रूम रख ।(2)

मुर्दे के सिफ़ारिशी

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने फ़रमाया : क़ब्र के पास खड़े होना और वक़्ते दफ़्न इस की साबित क़दमी की दुआ़ करना येह नमाज़े जनाज़ा के बा'द मय्यित की मदद है क्यूंकि मोमिनीन का नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मय्यित के लिये उस लश्कर की त़रह़ है जो बादशाह के दरवाज़े पर खड़ा हो कर उस की सिफ़ारिश कर रहा है और क़ब्र पर खड़े होना और साबित क़दमी की दुआ़ करना उस लश्कर की मदद है, उस वक़्त मुर्दा परेशान ह़ाल होता है क्यूंकि एक घबराहट और मुन्कर नकीर उस के सामने होते हैं ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना नज़ाल बिन सबरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने मुझ से कहा : जब आप मुझे क़ब्र में उतार दें तो येह दुआ़ कीजियेगा : اَللّٰھُمَّ بَارِکْ فِیْ ھٰذَا الْقَبْرِ وَفِیْ دَاخِلِہٖ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस क़ब्र और क़ब्र वाले को बरकत अ़त़ा फ़रमा ।(4)

---

1 ...تلخیص الحبیر، کتاب الجنائز، ۲/ ۳۱۰، تحت الحدیث: ۷۹۶

2 ...التذکرۃ للقرطبی، باب الوقوف عن القبر قلیلا بعد الدفن، ص ۱۰۴

3 ...نوادر الاصول، الاصل الحادی والخمسون والمائتان، ۲/ ۱۰۱۹، تحت الحدیث: ۱۳۲۳

4 ...طبقات ابن سعد، رقم: ۱۹۷۹، النزال بن سبرۃ، ۶/ ۱۴۶

बाब नम्बर 22 क़ब्र के हर एक को दबाने का बयान

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक जनाज़े में शरीक हुवे जब हम क़ब्र तक पहुंचे तो आप उस की एक जानिब बैठ गए और क़ब्र में बार बार देखने लगे फिर इरशाद फ़रमाया : इस में मोमिन को इस त़रह़ दबाया जाता है कि उस की पस्लियां अपनी जगह छोड़ देती हैं और काफ़िर के लिये येह दोज़ख़ की आग से भर जाती है।(1)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ब्र हर एक को दबाती है अगर कोई इस से नजात पाने वाला हुवा तो सा'द बिन मुआ़ज़ इस से ज़रूर नजात पाएंगे।(2)

क़ब्र पर ज़िक्रुल्लाह करने की बरकत

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दफ़्न किया गया तो सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देर तक तस्बीह़ की, लोगों ने भी आप के साथ तस्बीह़ की, फिर आप ने तक्बीर कही तो लोगों ने भी तक्बीर कही, फिर लोगों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप के तस्बीह़ करने की क्या वज्ह है ? इरशाद फ़रमाया : इस नेक बन्दे पर क़ब्र तंग हो गई थी यहां तक कि (तस्बीह़ की बरकत से) ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ ने इसे कुशादा कर दिया।(3)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को दफ़्न किया गया तो हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन की क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा थे आप ने इरशाद फ़रमाया : अगर कोई क़ब्र के दबाने से बच सकता तो सा'द बिन मुआ़ज़ ज़रूर बच जाते और उन्हें क़ब्र ने एक बार दबाया फिर छोड़ दिया।(4)

---

1 ...مسند امام احمد، حدیث حذیفۃ بن الیمان، ۹/۱۲۰، حدیث: ۲۳۵۱۷

2 ...مسند امام احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ۹/۳۱۶، حدیث: ۲۴۳۳۷

3 ...مسند امام احمد، مسند جابر بن عبد اللّٰہ، ۵/۱۷۵، حدیث: ۱۵۰۳۳

4 ...معجم کبیر، ۱۰/۳۳۴، حدیث: ۱۰۸۲۷، ''ضمۃ القبر'' بدلہ ''فتنۃ القبر''

अ़र्शे इलाही झूम उठा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا रिवायत करते हैं कि आक़ाए दो जहां, रह़मते आ़लमिय्यां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : येह वोह शख़्स है जिस के लिये अ़र्श ने जुम्बिश की, आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये गए और 70 हज़ार मलाइका ह़ाज़िर हुवे हैं। पहले क़ब्र ने उन्हें दबाया फिर छोड़ दिया।(1)

हज़रते ह़सन बसरी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : अ़र्श उन की रूह़ की आमद पर ख़ुशी से झूम उठा था।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की क़ब्र में दाख़िल हो कर कुछ देर ठहरे रहे, जब बाहर तशरीफ़ लाए तो अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप को किस चीज़ ने रोका ? इरशाद फ़रमाया : सा'द को क़ब्र ने दबाया था तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की, कि इसे कुशादा फ़रमा दे।(3)

हज़रते सय्यिदुना उमय्या बिन अ़ब्दुल्लाह رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ कहते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के घरवालों से पूछा : तुम्हें क़ब्र के इस दबाने के बारे में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की कोई बात पहुंची है ? उन्हों ने कहा : हां ! हमें बताया गया है कि इस बारे में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा गया था और आप ने इरशाद फ़रमाया था : येह कभी कभार पेशाब से त़हारत में बे तवज्जोगी बरतते थे(4) ।(5)

---

1 ...نسائی، کتاب الجنائز، باب ضمة القبر وضغطته، ص۳۴۶، حدیث:۲۰۵۲

2 ...دلائل النبوة للبیھقی، باب دعاء سعد بن معاذ...الخ، ۴/۲۸

3 ...مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، باب تحرک العرش لسعد، ۴/۲۱۴، حدیث:۴۹۷۷

4 ...شعب الایمان، باب فی ان دار المؤمنین، ۱/۳۵۸، تحت الحدیث:۳۹۶

التذکرة للقرطبی، باب مایکون منه عذاب القبر...الخ، ص۱۳۳

5 .....हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान कि "फिर उसे कुशादा कर दिया गया" येह दलील है कि इन की बे तवज्जोगी का बदला मिल गया था अब ऐसा नहीं है कि इस के बा'द भी उन्हें क़ब्र में अ़ज़ाब होता रहे, इस का क़ाइल वोही होगा जो इन के फ़ज़्ल, किरदार और सह़ाबिय्यत में शक करे। क्या तुम नहीं देखते कि अ़र्शे इलाही जिस के लिये जुम्बिश करे, मुअ़ज़्ज़ज़ फ़िरिश्ते उस की रूह़ को ख़ुश आमदीद कहें और अपने मिलने वाले दूसरे फ़िरिश्तों को ख़ुश ख़बरी दें तो उस की क़ब्र कुशादा होने के बा'द भला उसे अ़ज़ाब कैसे हो सकता है ? अफ़्सोस ! येह गुमान तो वोही रखेगा जिस की अ़क़्ल पर जहालत के पर्दे होंगे और वोह इन की अ़ज़्मतो शान से ग़ाफ़िल होगा। (التذکرة للقرطبی، باب مایکون منه عذاب القبر...الخ، ص۱۳۴)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी कि सरकारे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादी हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का विसाल हो गया तो हम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जनाज़े में शरीक हुवे, हम ने देखा कि आप बहुत ग़मगीन हैं, आप क़ब्र के पास थोड़ी देर बैठे आस्मान को देखते रहे फिर क़ब्र में उतर गए हम ने देखा कि आप का ग़म ज़ियादा हो गया है फिर जब बाहर तशरीफ़ लाए तो हम ने आप को ख़ुश और मुस्कुराते देख कर वज्ह पूछी तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं क़ब्र की तंगी और तक्लीफ़ और ज़ैनब की कमज़ोरी को याद कर के ग़मगीन हो गया था फिर मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ज़ैनब पर नर्मी की दुआ की तो वोह क़बूल हुई लेकिन क़ब्र ने उसे एक बार ज़रूर दबाया जिसे इन्सानों और जिन्नों के सिवा मशरिक़ो मग़रिब की हर शै ने सुना।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक बच्चा दफ़्न किया गया तो हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर क़ब्र के दबाने से कोई बचता तो येह बच्चा बच जाता।(2)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक बच्चे या बच्ची की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई फिर इरशाद फ़रमाया : अगर क़ब्र के दबाने से कोई बचता तो येह बच्चा बच जाता।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि जब सरकारे अबद क़रार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी शहज़ादी हज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दफ़्नाया तो क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा हो गए और आप के चेहरए मुबारक का रंग मुतग़य्यिर हो गया फिर ख़ुशी के आसार नुमूदार हो गए, आप से इस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : मुझे अपनी बेटी की कमज़ोरी और क़ब्र का दबाना याद आ गया था चुनान्चे, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ की तो उस ने क़ब्र को कुशादा फ़रमा दिया और ब ख़ुदा ! क़ब्र ने उसे ऐसा दबाया है जिस की आवाज़ मशरिक़ो मग़रिब के माबैन मख़्लूक़ ने सुनी है।(4)

---

1 ...معجم کبیر، ۱/۲۵۷، حدیث: ۷۴۵

2 ...معجم کبیر، ۴/۱۲۱، حدیث: ۳۸۵۸

3 ...معجم اوسط، ۲/۱۲۶، حدیث: ۲۷۵۳

4 ...التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی ضغط القبر...الخ، ص ۹۹

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबू मुलैका رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : क़ब्र के दबाने से कोई भी महफ़ूज़ नहीं रहा और वोह सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه भी न बच सके जिन का एक रूमाल दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर है।(1)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی से मरवी है कि जब हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को दफ़्न किया गया तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सा'द को क़ब्र में इस तरह दबाया गया कि वोह बाल की मिस्ल हो गए पस मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ की, कि उस तक्लीफ़ को उन से दूर फ़रमा दे (तो वोह दूर हो गई) और येह दबाना इस वज्ह से था कि वोह बा'ज़ औक़ात पेशाब से न बचते थे।(2)

हज़रते सय्यिदुना सईद मक़बिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : जब हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को दफ़्नाया तो इरशाद फ़रमाया : अगर क़ब्र के भींचने से कोई बचता तो सा'द ज़रूर बच जाते लेकिन क़ब्र ने उन्हें भी एक बार ऐसा दबाया है कि पस्लियां इधर उधर हो गईं और येह पेशाब की वज्ह से हुवा है।(3)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : मक्की मदनी आक़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जो सब से सख़्त हदीस हम ने सुनी वोह हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और क़ब्र के मुआमले के मुतअ़ल्लिक़ है।(4)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ग़नवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی एक शख़्स से रिवायत करते हैं कि उस ने कहा : मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास था कि वहां से एक छोटे बच्चे का जनाज़ा गुज़रा तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रो पड़ीं, मैं ने अ़र्ज़ की : आप क्यूं रोती हैं ? फ़रमाने लगीं : इस बच्चे पर शफ़्क़त के सबब रोती हूं कि इसे क़ब्र दबाएगी।(5)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : फ़ातिमा बिन्ते असद के सिवा क़ब्र के दबाने से कोई भी महफ़ूज़ नहीं रहा। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप के शहज़ादे

---

1 ...الزهد لهناد، باب فی قوله تعالی معیشة ضنکا، ۲۱۵/۱، حدیث: ۳۵٦

2 ...الزهد لهناد، باب فی قوله تعالی معیشة ضنکا، ۲۱۵/۱، حدیث: ۳۵۷

3 ...طبقات ابن سعد، رقم: ۸۷، سَعْدُ بْنُ مُعَاذٍ، ۳۲۹/۳

4 ...مصنف عبد الرزاق، باب الرجل یغزو وابوه کاره له، ۱۲۲/۵، حدیث: ۹۳۵۷

5 ...التذکرة للقرطبی، باب ما جاء فی ضغط القبر...الخ، ص ۹۹

क़ासिम भी नहीं ? इरशाद फ़रमाया : बल्कि इब्राहीम भी नहीं हालांकि वोह इन दोनों (फ़ातिमा व क़ासिम) से छोटे थे ।(1)

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन बुरक़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र के पास खड़े हो कर इरशाद फ़रमाया : यक़ीनन इन को एक बार दबाया गया अगर किसी अमल के सबब कोई क़ब्र के दबाने से नजात पाता तो सा'द ज़रूर नजात पाते ।(2)

अब्दुल मजीद बिन अब्दुल अज़ीज़ के वालिद का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के गुलाम हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते वफ़ात क़रीब आया तो रोने लगे : पूछा गया : क्यूं रोते हैं ? फ़रमाया : मुझे हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और क़ब्र का इन को दबाना याद आ गया ।(3)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल हुवा तो हम सरकारे मदीना राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह शिर्कत कर के वापस हुवे । चलते चलते अचानक प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ठहर गए, सहाबए किराम भी आगे जा कर रुक गए यहां तक कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो अर्ज़ की गई : या नबिय्यल्लाह ! आप पीछे क्यूं रुक गए ? इरशाद फ़रमाया : जब सा'द बिन मुआज़ को क़ब्र में दबाया गया तो मैं ने वोह आवाज़ सुनी । सहाबा ने अर्ज़ की : उन्हें भी क़ब्र ने दबाया है हालांकि उन की वफ़ात पर तो अर्श झूम उठा था ? इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां सा'द का ज़ियादा मर्तबा है या हज़रते यह्या बिन ज़करिया علیهما السلام का ? उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! हज़रते यह्या عَلَيْهِ السَّلَام को भी दबाया गया क्यूंकि उन्हों ने एक मरतबा जव की रोटी पेट भर के खाई थी ।

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को क़ब्र नहीं दबाती

(मुसन्निफ़े किताब) हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : मैं कहता हूं कि येह हदीस एक लिहाज़ से मुन्किर है और इस की सनद मो'ज़ल है जब कि दुरुस्त येह है कि हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को क़ब्र नहीं दबाती ।

---

1 ...تاریخ المدینة لابن شبة، قبر فاطمة بنت اسد، ۱۲۴/۱، عن محمد بن علی بن ابی طالب

2 ...طبقات ابن سعد، رقم: ۸۷، سعد بن معاذ، ۳۲۹/۳

3 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المحتضرین، ۳۵۸/۵، حدیث: ۲۳۷

क़ब्र का मुसलमान और काफ़िर को दबाने में फ़र्क़

हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम सा'दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی अपनी तस्नीफ़ "किताबुर्रूह़" में फ़रमाते हैं : कोई भी नेक व बद क़ब्र के दबाने से नजात नहीं पाएगा अलबत्ता मुसलमान और काफ़िर में फ़र्क़ है, काफ़िर को हमेशा दबाती रहेगी और मुसलमान पर येह ह़ालत सिर्फ़ उस वक़्त होगी जब उसे क़ब्र में उतारा जाएगा फिर क़ब्र कुशादा कर दी जाएगी और क़ब्र के दबाने से मुराद येह है कि उस के दोनों किनारे मय्यित के जिस्म पर बाहम मिल जाएंगे ।(1)

क़ब्र का मोमिन को दबाना किसी ख़त़ा का बदला होता है

हज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस दबाने का सबब येह है कि हर कोई किसी न किसी ख़त़ा का मुर्तकिब हो जाता है चाहे वोह नेक ही क्यूं न हो, येह दबाना उस का बदला होता है फिर उसे रह़मत घेर लेती है और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को दबाने का सबब भी येही था कि वोह कभी कभार पेशाब से पाकी में बे तवज्जोगी बरतते थे, जहां तक अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की बात है तो हम उन की इ़स्मत की वज्ह से येह यक़ीन नहीं रखते कि उन्हें क़ब्र दबाएगी और उन से सुवालाते क़ब्र होंगे ।(2)

क़ब्र का मुसलमान को दबाने का एक सबब

हज़रते सय्यिदुना इमाम नसफ़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی ने "बह़रुल कलाम" में फ़रमाया : फ़रमां बरदार मुसलमान को अ़ज़ाबे क़ब्र नहीं होगा लेकिन उसे क़ब्र दबाएगी और वोह उस की तक्लीफ़ और ख़ौफ़ को मह़सूस भी करेगा इस की वज्ह येह है वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों में रहा लेकिन कमाह़क़्क़ुहू उन का शुक्र अदा न कर सका ।(3)

क़ब्र मां की मिस्ल है

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद तैमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی बयान करते हैं : मन्क़ूल है कि क़ब्र के दबाने की अस्ल येह है कि वोह बन्दों की मां है क्यूंकि बन्दे उसी से पैदा किये गए फिर एक लम्बे अ़र्से तक

---

1 ...لوامع الانوار، سبب الضغطة وهل تنال الانبياء، ۲/ ۱۲

2 ...نوادر الاصول، الاصل السادس والعشرون والمائة، ص ۵۰۴ تا ۵۰۷، ملخصًا

3 ...بحر الکلام، المبحث الاول سوال القبر وعذابه، ص ۲۵۰

उस से दूर रहे और अब उस की त़रफ़ उस की औलाद को लौटाया गया तो उस ने ऐसे दबाया जैसे मां अपने गुमशुदा बच्चे के मिलने पर उसे साथ चिमटा लेती है, पस जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार हो उसे क़ब्र नर्मी व शफ़्क़त से भींचती है और जो गुनाहगार हो उसे सख़्ती के साथ दबाती है क्यूंकि उस का रब عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ होता है।(1)

क़ब्र का फ़रमां बरदार और ना फ़रमान को दबाना

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जिस दिन से आप ने मुन्कर नकीर की आवाज़ और क़ब्र के दबाने का मुझे बताया है उस दिन से मुझे कोई चीज़ अच्छी नहीं लगती। इरशाद फ़रमाया : आइशा ! मोमिनीन के कानों में तो मुन्कर नकीर की आवाज़ ऐसे आएगी जैसे आंख में इस्मिद (सुर्मा) और मोमिन को क़ब्र ऐसे दबाएगी जैसे मेहरबान मां से बच्चा दर्द की शिकायत करे तो वोह उस के सर को बड़े प्यार से अपने साथ चिमटा लेती है लेकिन ऐ आइशा ! हलाकत है रब عَزَّوَجَلَّ के बारे में शक करने वालों के लिये कि वोह अपनी क़ब्रों में ऐसे दबोचे जाएंगे जैसे अन्डे को चट्टान से कुचल दिया जाए।(2)

गुनाह के अ़ज़ाब से छुटकारा

फ़ाएदा : बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : अगर कोई शख़्स गुनाह करे तो वोह 10 चीज़ों के ज़रीए उस के अ़ज़ाब से बच सकता है : (1)...तौबा करे तो क़बूल की जाएगी या (2)...इस्तिग़्फ़ार करे तो बख़्शा जाए या (3)...नेकियां करे तो वोह उस बुराई को मिटा देंगी क्यूंकि नेकियां गुनाहों को मिटा देती हैं या (4)...दुन्यावी मसाइब में मुब्तला हो जाए तो वोह उस बुराई का कफ़्फ़ारा बन जाएंगे या (5)...(मरने के बा'द) क़ब्र के दबाने और फ़ित्ने में मुब्तला हो तो येह उस के लिये कफ़्फ़ारा बन जाएगा या (6)...उस के मुसलमान भाई उस के लिये दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार करें या (7)...अपने आ'माले सालेहा का सवाब उसे ईसाल करें जो उसे नफ़्अ़ दे या (8)...क़ियामत की हौलनाकियों में मुब्तला किया जाए तो येह उस गुनाह का कफ़्फ़ारा बन जाएगा या (9)...उसे उस के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की शफ़ाअ़त नसीब हो जाए या फिर (10)...रब तआ़ला अपनी रह़मत से मुआ़फ़ फ़रमा दे।

---

❶...اھوال القبور، الباب السادس، فصل انواع عذاب القبر، ص۱۰۴

❷...اثبات عذاب القبر للبیھقی، ص۸۵، حدیث:۱۱۲

क़ब्र के फ़ितने से हिफ़ाज़त

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, दो आलम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अपने मरज़े मौत में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) पढ़ ले वोह क़ब्र के फ़ितने में मुब्तला न होगा और क़ब्र के दबाने से महफ़ूज़ रहेगा, फ़िरिश्ते बरोज़े क़ियामत उसे अपने परों पर उठा लेंगे और पुल सिरात़ पार करवा कर जन्नत के दरवाज़े तक ले जाएंगे ।(1)

हज़रते सय्यिदुना वलीद बिन अम्र बिन वस्साज رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि मुर्दे को क़ब्र में सब से पहले अपने पाउं के पास एक ह़रकत मह़सूस होती है, वोह पूछता है : तू कौन है ? जवाब मिलता है : मैं तेरा अ़मल हूं ।(2)

क़ब्र के मूनिस व ग़म ख़्वार

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो आ'माल उसे घेर लेते हैं फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें क़ुव्वते गोयाई देता है तो वोह यूं गोया होते हैं : ऐ क़ब्र में तन्हा रह जाने वाले बन्दे ! तेरे अहलो इ़याल और दोस्त अह़बाब तुझ से जुदा हो गए और आज हमारे सिवा तेरा कोई ग़म ख़्वार नहीं है ।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो सब से पहले उस का अ़मल उस के पास आता है और उस की बाईं रान को ह़रकत दे कर कहता है : मैं तेरा अ़मल हूं । मुर्दा पूछता है : मेरे अहलो इ़याल और कुम्बा कहां है ? मेरे ताबे'दार कहां हैं ? अ़मल कहता है : तू अपनी आल औलाद, कुम्बा और ग़ुलाम अपने पीछे छोड़ आया और मेरे सिवा तेरी क़ब्र में कोई भी दाख़िल नहीं हुवा । मुर्दा कहता है : जब तू ने ही मेरे साथ दाख़िल

1...معجم اوسط، ۴/۲۲۲، حديث: ۵۷۸۵، دون قوله: باب

2...اهوال القبور، الباب الرابع، ص ۵۹

3...اهوال القبور، الباب الرابع، ص ۵۸

होना था तो काश ! मैं अपनी आल औलाद और कुम्बे वग़ैरा पर तुझे ही तरजीह़ देता।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मलीह़ रक़्क़ी رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब आदमी को क़ब्र में रखा जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर वोह शै जिस से वोह दुन्या में डरता था उसे क़ब्र में डराने आ जाती है क्यूंकि दुन्या में येह ख़ौफ़ ख़ौफ़े ख़ुदा के सिवा था।(2)

बाब नम्बर 23

क़ब्र का मुर्दों को ख़िताब करने का बयान

क़ब्र रोज़ाना करती है पुकार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली मौत को कसरत से याद करो क्यूंकि क़ब्र रोज़ाना पुकार कर कहती है : मैं अजनबिय्यत का घर हूं, मैं तन्हाई का घर हूं, मैं मिट्टी का घर हूं और मैं कीड़े मकोड़ों का घर हूं। जब मोमिन को क़ब्र में दफ़्नाया जाता है तो क़ब्र उसे कहती है : ख़ुश आमदीद तू मेरी पुश्त पर चलने वालों में से मुझे मह़बूब तरीन था और अब तू मेरे अन्दर आ गया है अब तू मेरा ह़ुस्ने सुलूक देख, फिर क़ब्र उस के लिये ह़द्दे निगाह तक कुशादा हो जाती है और उस के लिये जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और जब कोई फ़ाजिर या काफ़िर शख़्स दफ़्न किया जाता है तो क़ब्र कहती है : तुझे कोई मरह़बा नहीं, तू मेरी पुश्त पर चलने वालों में मेरे नज़्दीक बदतरीन शख़्स था और अब तू मेरे अन्दर आ गया है लिहाज़ा अब अपने साथ मेरा बरताव देख फिर क़ब्र उस पर अपना घेरा तंग कर देती है और उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं। रावी कहते हैं कि सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बात अपनी मुबारक उंगलियां एक दूसरे में डाल कर इशारा कर के बताई। फिर फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर 70 हज़ार अज़्दहे मुक़र्रर फ़रमा देता है अगर उन में से कोई एक भी ज़मीन पर फुंकार दे तो रहती दुन्या तक कभी कुछ भी न उगे, वोह अज़्दहे उस मुर्दे को ता क़ियामे क़ियामत डसते रहेंगे। रावी कहते हैं : आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّمَا الْقَبْرُ رَوْضَۃٌ مِّنْ رِیَاضِ الْجَنَّۃِ اَوْحُفْرَۃٌ مِّنْ حُفَرِ النَّارِ या'नी क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।(3)

❶...اھوال القبور، الباب الرابع، ص۶۱

❷...حلیۃ الاولیاء، احمد بن ابی الحواری، ۱۰/۱۲، حدیث:۱۴۳۱۸، بتغیر

❸...ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب ۹۱، ۴/۲۰۸، حدیث:۲۴۶۸

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ बयान करते हैं : हम सरकारे दो जहां صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के साथ एक जनाज़े में शरीक हुवे तो आप क़ब्र के पास बैठ गए और इरशाद फ़रमाया : क़ब्र रोज़ाना ब ज़बाने फ़सीह़ पुकारती है : ऐ इब्ने आदम ! तू ने मुझे कैसे भुला दिया ? क्या तू नहीं जानता मैं अजनबिय्यत व वह़्शत का घर हूं, कीड़े मकोड़ों का घर हूं, तंगी का घर हूं मगर जिस के लिये अल्लाह عزوجل मुझे वसीअ़ कर दे। फिर इरशाद फ़रमाया : क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।(1)

क़ब्र की मुर्दे से गुफ़्तगू

हज़रते सय्यिदुना अबू ह़ज्जाज सुमाली رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र उस से कहती है : तेरी ख़राबी हो क्या तू नहीं जानता था मैं फ़ितने का घर हूं, तारीकी का घर हूं, तन्हाई का घर हूं और कीड़े मकोड़ों का घर हूं, तो ऐ इन्सान ! किस चीज़ ने तुझे मुझ से ग़ाफ़िल रखा कि तू मेरे ऊपर अकड़ कर चलता था। अगर मुर्दा नेकी का हुक्म करने वाला हो तो क़ब्र में एक जवाब देने वाला क़ब्र से कहता है : अगर येह बन्दा नेकी का हुक्म करने वाला और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो तो फिर तेरा क्या ख़याल है ? क़ब्र कहती है : तब तो मैं इस शख़्स के लिये सर सब्ज़ो शादाब हो जाऊंगी। चुनान्चे, उस के जिस्म को नूरानी कर दिया जाता है और उस की रूह़ बारगाहे इलाही की त़रफ़ बुलन्द हो जाती है।(2)

मोमिन की वफ़ात

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन की मौत का वक़्त आता है तो एक बहुत ख़ूब सूरत और ख़ुश्बूदार फ़िरिश्ता उस के पास आता है और उस की रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये उस के पास बैठ जाता है फिर दो फ़िरिश्ते जन्नती ख़ुश्बू और कफ़न लाते हैं, वोह अभी दूर ही होते हैं कि मलकुल मौत علیہ السلام पसीना बहने की सूरत में उस के जिस्म से रूह़ निकाल

---

(1)...معجم اوسط، ۶/۲۳۲، حدیث: ۸۶۱۳

(2)...معجم کبیر، ۲۲/۳۷۷، حدیث: ۹۴۲، بتغیر

लेते हैं, फिर वोह फ़िरिश्ते जल्दी से आते और उन से रूह़ ले कर उसे जन्नती ख़ुश्बू और कफ़न में रख कर जन्नत की त़रफ़ बुलन्द हो जाते हैं, उस के लिये आस्मानी दरवाज़े खुल जाते हैं और फ़िरिश्ते ख़ुश ख़बरी देते हुवे पूछते हैं : येह किस की रूह़ है जिस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोले गए ? फ़िरिश्ता दुन्या में लिया जाने वाला उस का सब से अच्छा नाम ले कर कहता है : येह फ़ुलां की रूह़ है। फिर जब उसे आस्मानों की त़रफ़ बुलन्द किया जाता है तो हर आस्मान के मुक़र्रब फ़िरिश्ते उस के पीछे हो लेते हैं ह़त्ता कि उसे अ़र्श के पास रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंचा दिया जाता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुक़र्रब फ़िरिश्तों से इरशाद फ़रमाता है : गवाह हो जाओ कि मैं ने इस अ़मल वाले को बख़्श दिया है। चुनान्चे, उस के आ'माल नामे को मोहर लगा कर इल्लिय्यीन में रख दिया जाता है। फिर रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दे की रूह़ को ज़मीन की त़रफ़ लौटा दो क्यूंकि मैं ने इन से वा'दा किया है कि इन्हें ज़मीन में ही लौटाऊंगा। जब मोमिन को क़ब्र में रख दिया जाता है तो ज़मीन कहती है : तू मुझे अपनी पुश्त पर भी मह़बूब था और अब जब कि तू मेरे पेट में आ गया है तो मैं तुझे दिखाती हूं कि तेरे साथ कैसा सुलूक करूंगी। फिर वोह उस के लिये ह़द्दे निगाह तक वसीअ़ हो जाती है और उस के पाउं के पास एक जन्नती दरवाज़ा खोल दिया जाता है और कहा जाता है : इन ने'मतों को देख जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे लिये तय्यार कर रखी हैं। फिर एक दरवाज़ा सर के पास से जहन्नम की त़रफ़ खोला जाता है और कहा जाता है : उस अ़ज़ाब को देख जिस से रब عَزَّوَجَلَّ ने तुझे बचाया और अब तू ठन्डी आंखें लिये सो जा। पस उस वक़्त उसे क़ियामत बरपा होने से बढ़ कर कुछ भी मह़बूब नहीं होता।

तू ने मेरे लिये क्या तय्यारी की ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुर्दे को जब क़ब्र में रखा जाता है तो वोह बैठ जाता है और जनाज़े के साथ आने वालों के क़दमों की आवाज़ सुनता है, सब से पहले उस की क़ब्र उस से कलाम करते हुवे कहती है : ऐ इब्ने आदम ! तेरा बुरा हो क्या तुझे मुझ से डराया नहीं गया ? क्या तुझे मेरी तंगी, बदबू, वह़्शत, हौलनाकी और कीड़ों मकोड़ों का ख़ौफ़ न दिलाया गया था ? येह मैं ने आज के दिन के लिये तय्यार किये हैं तो बता तू ने मेरे लिये क्या तय्यारी की है ?[1]

---

1 ...الزهد لابن المبارك مارواه نعيم بن حماد، باب ما يبشر به الميت عند الموت، وثناء الملكين عليه، ص٤١، حديث: ١٢٣، لم يرفعه

तुझे किस चीज़ ने धोके में डाले रखा ?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : इन्सान को जब क़ब्र में रख दिया जाता है तो उस की क़ब्र कहती है : ऐ इब्ने आदम ! तुझे मा'लूम न था कि मैं तन्हाई, तारीकी और ख़ौफ़ व घबराहट का घर हूं ? तुझे किस चीज़ ने धोके में डाले रखा कि तू मेरे गिर्द अकड़ कर चलता था। अगर मुर्दा मोमिन हो तो उस की क़ब्र वसीअ़ और सर सब्ज़ो शादाब कर दी जाती और उस की रूह़ जन्नत की त़रफ़ ले जाई जाती है।(1)

वह़शत व तंगी का घर

जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन शजरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क़ब्र काफ़िरो फ़ाजिर से कहती है : क्या तुझे मेरा अन्धेरा, मेरी वह़शत, मेरी तन्हाई, मेरी तंगी और मेरा ग़म याद नहीं था ?(2)

कीड़े मकोड़ों का घर

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : क़ब्र येह ज़रूर कहेगी कि ऐ इब्ने आदम ! तू ने मेरे लिये क्या तय्यारी की ? क्या तू नहीं जानता था कि मैं मुसाफ़री, तन्हाई, कीड़े मकोड़ों (और जिस्मों) को खा जाने का घर हूं ?(3)

ना फ़रमान के लिये अ़ज़ाब

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हर मरने वाले की क़ब्र उसे पुकार कर कहती है : मैं अन्धेरी और तन्हाई का घर हूं, अगर तू अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार था तो आज मैं तुझ पर रह़मत करूंगी और अगर ना फ़रमान था तो मैं तेरे लिये अ़ज़ाब हूं, मैं वोह घर हूं जिस में फ़रमां बरदार दाख़िल हो तो ख़ुश व ख़ुर्रम निकलेगा और गुनाहगार दाख़िल हो तो तबाहो बरबाद हो कर निकलेगा।(4)

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام عبد اللہ بن عمرو، ۱۸۸/۸، حدیث:۲

2 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام ابراھیم التیمی، ۲۲۵/۸، حدیث:۹، دون قولہ: وحدتی

3 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الزھد، کلام عبید بن عمیر، ۲۲۹/۸، حدیث:۱۷

4 ...اھوال القبور، الباب الثانی، ص۳۶

तू ने मुझे कैसे भुला दिया ?

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि क़ब्र की एक ज़बान है, जिस से वोह कलाम करते हुवे कहती है : ऐ इब्ने आदम ! तू ने मुझे कैसे भुला दिया ? क्या तू ने न जाना कि मैं दूरी व वह़्शत का घर हूं, कीड़े मकोड़ों और तंगी का घर हूं मगर जिस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे कुशादा फ़रमा दे ।(1)

अजनबिय्यत व तन्हाई का घर

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम सरकारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह एक जनाज़े में शरीक हुवे, क़ब्रिस्तान पहुंचे तो मा'लूम हुवा कि अभी क़ब्र नहीं खोदी गई । चुनान्चे, हम आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इर्द गिर्द बैठ गए, आप ने इरशाद फ़रमाया : जब मुर्दे को क़ब्र में रख कर ईंटें बराबर कर दी जाती हैं तो ज़मीन (या'नी क़ब्र) उसे पुकार कर कहती है : क्या तुझे मा'लूम न था कि मैं अजनबिय्यत, तन्हाई और कीड़े मकोड़ों का घर हूं ? तू ने मेरे लिये क्या तय्यारी की ?(2)

क़ब्र का महबूब और मब्ग़ूज़ बन्दा

हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : क़ब्र रोज़ाना पुकार कर कहती है : मैं तन्हाई, वह़्शत और कीड़े मकोड़ों का घर हूं, मैं जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा हूं या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ । जब मोमिन को क़ब्र में उतारा जाता है तो क़ब्र कहती है : जब तू मेरी पुश्त पर चलता था तो मुझे बहुत अ़ज़ीज़ था और अब जब कि तू मेरे पेट में आ गया है तो मेरा हुस्ने सुलूक देख लेगा । चुनान्चे, क़ब्र ह़द्दे निगाह तक वसीअ़ हो जाती है और जब काफ़िर को क़ब्र में रखा जाता है तो क़ब्र कहती है : जब तू मेरी पुश्त पर चलता था तब भी मुझे इन्तिहाई ना पसन्द था और अब तो तुझे मेरे हवाले कर दिया गया है अब देख मैं तेरा क्या ह़ाल करती हूं । पस क़ब्र उसे ऐसा दबाती है कि उस की पस्लियां टूट फूट जाती हैं ।(3)

---

1 ...اھوال القبور، الباب الثانی، ص ۴۴

2 ...مصنف عبد الرزاق، باب المشی بالجنازۃ، ۳/ ۲۸۰، حدیث: ۶۲۸۱، بتغیرٍ وعن عبد الرحمن بن ابی لیلی

3 ...شعب الایمان، باب فی ان دار المؤمنین، ۱/ ۳۶۰، حدیث: ۴۰۱

अपनी ज़िन्दगी में खुद पर रहम कर

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपनी क़ब्र के लिये खूब तय्यारी कर लो क्यूंकि क़ब्र रोज़ाना सात मरतबा येह पुकारती है : ऐ कमज़ोर आदमी मुझे मिलने से पहले ही अपनी ज़िन्दगी में खुद पर रहम कर, क्या तू उस वक़्त खुद पर रहम करेगा जब मुझ में बोसीदा हो जाएगा ?[1]

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ज़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जब मोमिन क़ब्र में दाख़िल होता है तो क़ब्र उसे पुकारती है : फ़रमां बरदार है या ना फ़रमान ? अगर फ़रमां बरदार हो तो क़ब्र के किनारे से एक पुकारने वाला क़ब्र को कहता है : इस पर सर सब्ज़ो शादाब हो जा और रहमत बन जा क्यूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बेहतरीन बन्दा था और कितना खूब है जो तेरी त़रफ़ आया है । क़ब्र कहती है : तब तो येह इ़ज़्ज़त के लाइक़ है ।[2]

नसीहत के लिये मौत ही काफ़ी है

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सबीह़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَدِیْع फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि जब बन्दे को क़ब्र में रख दिया जाता है और उसे अ़ज़ाब या कोई सज़ा पहुंचती है तो उस के पड़ोसी मुर्दे पुकार कर कहते हैं : ऐ अपने भाइयों के बा'द दुन्या से आने वाले ! क्या तू ने हम से नसीहत न पकड़ी ? क्या हमारे पहले आ जाने ने तुझे इ़ब्रत ह़ासिल करने पर मजबूर न किया ? क्या तू ने येह भी ख़याल न किया कि हमारे आ'माल का सिलसिला तो ख़त्म हो चुका है जब कि तेरे पास मोहलत है ? जो मौक़अ़ था तू ने उस से फ़ाएदा क्यूं न उठाया ? और क़ब्र के गोशे पुकार कर कहते हैं : ऐ ज़मीन पर इतरा कर चलने वाले ! क्या तू ने अपने ख़ानदान के उन लोगों से इ़ब्रत न पकड़ी जिन्हें तुझ से पहले दुन्या ने धोके में डाला और फिर उन की मौत उन्हें क़ब्रों तक ले

---

1 ...کنز العمال، کتاب الموت من قسم الاقوال، الباب الاول فی ذکر الموت، ۱۵/ ۲۳۵، حدیث: ۴۲۱۳۷

2 ...اھوال القبور، الباب الثانی فی کلام القبر، ص ۴۲

आई और तू उन्हें कांधों पर उठाए देख रहा था जब कि महब्बत करने वाले उन्हें उस मन्ज़िल की त़रफ़ ले जा रहे थे जिस के सिवा कोई चारह नहीं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : जो क़ब्र को अक्सर याद करे वोह उसे जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ पाएगा और जो उस की याद से ग़ाफ़िल रहा वोह उसे जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा पाएगा।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : मुझे येह बात मा'लूम हुई कि मुर्दे को जब क़ब्र में रखा जाता है तो उस के आ'माल उसे घेर लेते हैं फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें बोलने की क़ुव्वत अ़ता फ़रमाता है तो वोह कहते हैं : ऐ क़ब्र में तन्हा रह जाने वाले ! तेरे दोस्त और अह्लो इ़याल तुझ से जुदा हो गए, आज हमारे सिवा तेरा कोई ग़म ख़्वार नहीं। फिर मुर्दा रोने लगता है। आप رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡهِ फ़रमाते हैं : ख़ुश ख़बरी है उस के लिये जिस का ग़म ख़्वार नेक हो और अफ़्सोस है उस पर जिस का साथी उस के लिये वबाल हो।(3)

दो दिन और दो रातें

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُ फ़रमाते हैं : मैं तुम्हें ऐसे दो दिनों और दो रातों की ख़बर न दूं जिन की मिस्ल मख़्लूक़ ने न सुना होगा। एक दिन वोह जब तुम्हारे पास अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ख़ुश ख़बरी देने वाला आएगा या तो ख़ुदा तआ़ला की रिज़ा की या नाराज़ी की, दूसरा वोह दिन जब तुम बारगाहे ख़ुदावन्दी में खड़े होगे और आ'माल नामा तुम्हारे दाएं या बाएं हाथ में दिया जाएगा। इसी त़रह़ एक वोह रात जो क़ब्र की पहली रात होगी और उस की मिस्ल कभी कोई रात न आई और एक वोह रात जिस की सुब्ह़ क़ियामत क़ाइम होगी और उस रात के बा'द कोई रात नहीं।(4)

---

1 ...اهوال القبور، الباب الثانی فی کلام القبر، ص۴۲

2 ...التذکرة للقرطبی، باب ما جاء فی کلام القبر کل یوم...الخ، ص۹۸

3 ...تاریخ بغداد، رقم: ۱۸۲۵، محمد بن یحیی بن عمر الواسطی، ۱۹۱/۳

4 ...شعب الایمان، باب فی الزهد و قصر الامل، ۳۸۸/۷، حدیث: ۱۰۶۹۷

बाब नम्बर 24 फ़ितनए क़ब्र और फ़िरिश्तों के सुवालात का बयान

इस सिलसिले में अहादीसे करीमा मुतवातिरा हैं जो दर्जे ज़ैल सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मरवी हैं :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक, हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब, हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी, हज़रते सय्यिदुना बशीर बिन कमाल, हज़रते सय्यिदुना सौबान, हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा, हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित, हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा, हज़रते सय्यिदुना ज़मरह बिन ह़बीब, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर, हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब, हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स, हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल, हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा, हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा, हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़, हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी, हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा, हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा, हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री, हज़रते सय्यिदतुना अस्मा और उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان)

ह़दीसे अनस

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब आदमी को क़ब्र में उतार दिया जाता है और लोग वहां से वापस पलटते हैं तो वोह उन के जूतों की आहट सुनता है फिर उस के पास दो फ़िरिश्ते आ कर उसे बिठाते हैं और पूछते हैं : तुम इस शख़्सिय्यत के बारे में क्या कहा करते थे ? जब कि इब्ने मरदवया की रिवायत में यूं है कि "तुम इन मर्द के बारे में क्या कहा करते थे जो तुम्हारे दरमियान ज़ाहिर हुवे और जिन का नामे नामी मुह़म्मद था ?" मोमिन कहेगा : मैं गवाही देता हूं कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं। उसे कहा जाएगा : जहन्नम में अपना ठिकाना देख जिस की जगह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे जन्नती ठिकाना दे दिया है। आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह उन दोनों ही को देखेगा। हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हमें येह भी बताया गया है कि उस की क़ब्र 70 गज़ कुशादा कर दी जाएगी और सब्ज़े से भर दी जाएगी। जब कि काफ़िर और मुनाफ़िक़ से कहा जाएगा : तुम उस शख़्स के बारे में क्या कहते थे ? वोह कहेगा : मैं नहीं जानता, मैं लोगों को जो कहते सुनता था वोही कहता था। उस से कहा जाएगा : तुझे तो कुछ

भी ख़बर नहीं, फिर उसे लोहे के हथोड़े की एक ज़र्ब लगाई जाएगी तो वोह ऐसी चीख़ मारेगा जिसे इन्सान व जिन्न के सिवा सारी मख़्लूक़ सुनेगी।[1]

हथोड़े की एक ज़र्ब

हज़रते सय्यिदुना अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ रिवायत करते हैं कि अल्लाह عزوجل के प्यारे हबीब صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक येह उम्मत अपनी क़ब्रों में आज़माई जाएगी, जब मोमिन को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के पास एक फ़िरिश्ता आता है और पूछता है : तू किस की इबादत करता था ? अगर अल्लाह عزوجل ने उसे हिदायत दी हो तो वोह कहता है : मैं अल्लाह عزوجل की इबादत करता था। फिर पूछा जाता है : तू इस शख़्सिय्यत के बारे में क्या कहा करता था ? वोह कहता है : येह अल्लाह عزوجل के बन्दे और रसूल हैं। पस इस के बा'द उस से कुछ नहीं पूछा जाता और उसे उस के जहन्नमी घर की तरफ़ ले जाया जाता है और कहा जाता है : येह जहन्नम में तेरा ठिकाना था लेकिन अल्लाह عزوجل ने तुझ पर रह्म फ़रमा कर तुझे बचाया और इस की जगह तुझे जन्नती घर अ़ता फ़रमा दिया है। वोह कहता है : मुझे छोड़ दो कि मैं अपने घर जाऊं ताकि अपने घरवालों को येह खुश ख़बरी सुनाऊं। उस से कहा जाता है : तुम यहीं ठहरे रहो। जब काफ़िर को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के पास एक फ़िरिश्ता आ कर उसे झिड़कता है और कहता है : तू किस की इबादत करता था ? वोह कहता है : मैं नहीं जानता। उस से कहा जाता है : इस शख़्सिय्यत के बारे में क्या कहता था ? वोह बोलता है : मैं नहीं जानता, मैं तो जो लोगों को कहते सुनता था वोही कहता था। चुनान्चे, फ़िरिश्ते उसे लोहे के हथोड़े से दोनों कानों के दरमियान एक ज़र्ब मारते हैं जिस से वोह ऐसी चीख़ मारता है जिसे जिन्नो इन्स के सिवा तमाम मख़्लूक़ सुनती है।[2]

एक कोड़ा

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضی اللہ تعالٰی عنہ मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि मुन्कर और नकीर मुर्दे की क़ब्र में दाख़िल हो कर उसे बिठाते हैं और पूछते हैं : तेरा रब कौन है ? अगर

---

1 ...بخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، ۱/۴۶۳، حدیث: ۱۳۷۴

مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها واهلها، باب عرض مقعد المیت من الجنة او النار...الخ، ص ۱۵۳۵، حدیث: ۲۸۷۰

2 ...ابو داود، کتاب السنة، باب فی مسالة فی القبر وعذاب القبر، ۴/۳۱۵، حدیث: ۴۷۵۱

مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ۴/۴۶۶، حدیث: ۱۳۴۴۷

वोह मोमिन हो तो कहता है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ । पूछते हैं : तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : मुहम्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم । फिर पूछते हैं : तेरा इमाम कौन है ? वोह कहता है : कुरआन । पस वोह उस की क़ब्र को कुशादा कर देते हैं और अगर वोह काफ़िर हो तो उस से भी पूछते हैं : तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : मैं नहीं जानता । पूछते हैं : तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : मैं नहीं जानता । फिर पूछते हैं : तेरा इमाम कौन है ? वोह कहता है : मैं नहीं जानता । पस वोह एक कोड़ा मारते हैं जिस से क़ब्र में आग भड़क उठती है और क़ब्र उस पर तंग हो जाती है ह़त्ता कि पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं ।(1)

समाअ़ते मुस्त़फ़ा का कमाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब बिन बशीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر अपने वालिद से रिवायत करते हैं : बनू उमय्या में कुछ इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ़ हुवा तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन में सुल्ह़ कराने के लिये तशरीफ़ लाए तो एक क़ब्र की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : لَا دَرَيْتَ या'नी तू कुछ भी न जाने । आप से उस के बारे में अ़र्ज़ की गई तो इरशाद फ़रमाया : उस क़ब्र वाले से मेरे मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो उस ने कहा : لَا اَدْرِی या'नी मैं नहीं जानता ।(2)

ह़दीसे सौबान

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन मरता है तो (क़ब्र में) नमाज़ उस के सर के पास, सदक़ा दाईं जानिब और रोज़ा सीने के पास होता है ।(3)

ह़दीसे जाबिर

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़ब्र के फ़ितनों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो फ़रमाने लगे : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना है : बेशक येह उम्मत अपनी क़ब्रों में आज़माई जाएगी, जब मोमिन को क़ब्र में रखा

---

1 ...فردوس الاخبار، ۵/۵۰۹، حدیث:۸۹۱۶

2 ...معجم کبیر، ۲/۴۶، حدیث:۱۲۳۷

3 ...حلیة الاولیاء، ابوعمرو الاوزاعی، ۶/۱۵۸، حدیث:۸۱۴۴

जाता है और उस के अह़बाब वहां से लौट जाते हैं तो उस के पास शिद्दत से झिड़कने वाला एक फ़िरिश्ता आता है और कहता है : तू इस शख़्सिय्यत के बारे में क्या कहा करता था ? मोमिन कहता है : मैं कहता था : येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल और उस के बन्दे हैं। फ़िरिश्ता उस से कहता है : जहन्नम में अपना ठिकाना देख जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे बचाया है और उस के बदले तुझे जन्नत में ठिकाना दिया है। पस मोमिन दोनों ठिकानों को एक साथ देखता और कहता है : मुझे जाने दो ताकि अपने घरवालों को ख़ुश ख़बरी सुनाऊं। उस से कहा जाता है : यहीं ठहरे रहो। और काफ़िर के अहलो इयाल जब दफ़्ना कर उस के पास से चले जाते हैं तो वोह बैठ जाता है और उस से भी पूछा जाता है कि तू इस शख़्सिय्यत के बारे में क्या कहता था : वोह कहता है : मैं नहीं जानता, मैं तो वोही कहता था जो लोग कहते थे। उस से कहा जाता है : जाना ही नहीं, देख येह जन्नत में तेरा ठिकाना था लेकिन इस की जगह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नम में तुझे ठिकाना दे दिया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : मैं ने हुज़ूरे पूरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : हर शख़्स जिस ह़ालत पर दुन्या से जाएगा उसी पर क़ब्र से उठाया जाएगा, मोमिन अपने ईमान पर और मुनाफ़िक़ अपने निफ़ाक़ पर।(1)

क़ब्र में मोमिन की ह़ालत

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : (मोमिन) मुर्दे को जब क़ब्र में रखा जाता है तो उसे ऐसा लगता है गोया सूरज ग़ुरूब हो रहा है, वोह आंखें मलता हुवा बैठ जाता है और कहता है : मुझे छोड़ दो ताकि मैं नमाज़ पढ़ लूं।(2)

मौत से ले कर क़ियामत तक

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : आदमी जिस के लिये पैदा किया गया है उस से ग़फ़्लत में है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब आदमी की तख़्लीक़ का इरादा फ़रमाता है तो

(1)...مسند امام احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، ۵/۱۱۴، حدیث:۱۴۷۲۸

(2)...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر القبر والبلی، ۴/۵۰۳، حدیث:۴۲۷۲

फ़िरिश्ते से इरशाद फ़रमाता है : इस का रिज़्क़ लिख दो, इस के आ'माल लिख दो, इस की मौत लिख दो और इस की नेक बख़्ती या बद बख़्ती भी लिख दो। फिर वोह फ़िरिश्ता चला जाता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक और फ़िरिश्ता भेज देता है जो उस लिखे हुवे को ख़ूब अच्छी त़रह़ मह़फ़ूज़ कर लेता है फिर वोह फ़िरिश्ता भी चला जाता और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उस की अच्छाइयां और बुराइयां लिखते हैं और जब उस का वक़्ते मौत आता है तो वोह फ़िरिश्ते भी अपनी जगह छोड़ देते हैं और मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस की रूह़ क़ब्ज़ करने आ जाते हैं, जब उसे क़ब्र में रख दिया जाए तो उस की रूह़ जिस्म की त़रफ़ वापस की जाती है और क़ब्र के दो फ़िरिश्ते (या'नी मुन्कर नकीर) उस का इम्तिह़ान लेने आ जाते हैं और फिर वोह भी चले जाते हैं। फिर जब क़ियामत क़ाइम होगी तो अच्छाइयां बुराइयां लिखने वाले फ़िरिश्ते नीचे उतरेंगे और उस की गर्दन में गिरह लगाई गई किताब खोलेंगे फिर वोह उसे ले कर इस त़रह़ ह़ाज़िर होंगे कि एक क़ाइद और एक साइक़ (चलाने वाला) होगा। इस के बा'द प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : यक़ीनन तुम्हारे सामने एक बहुत बड़ा मुआमला है जिस की तुम त़ाक़त नहीं रखते लिहाज़ा ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर से मदद मांगो।[(1)]

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि मक्की मदनी आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के पास दो फ़िरिश्ते आते हैं और उसे झिड़कते हैं, वोह ऐसे हड़बड़ा कर उठ जाता है जैसे सोने वाला हड़बड़ाता है, उस से पूछा जाता है : तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा रब है, इस्लाम मेरा दीन है और मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे नबी हैं। एक पुकारने वाला पुकार कर कहता है : इस ने सच कहा, इस के लिये जन्नती बिछौना बिछा दो और इसे जन्नती लिबास पहनाओ। मोमिन कहता है : मुझे जाने दो ताकि मैं अपने घरवालों को ख़ुश ख़बरी दूं। उस से कहा जाता है : यहीं आराम करो।[(2)]

ह़दीसे ह़ुज़ैफ़ा : येह ह़दीस "**मुर्दे के ग़स्साल को पहचानने के बयान**" में गुज़र चुकी।

---

❶...حلیۃ الاولیاء، محمد بن علی الباقر، ۳/۲۲۱، حدیث: ۳۷۷۵، بتغیر

❷...السنۃ لابن ابی عاصم، باب فی القبر وعذاب القبر، ص۲۰۲، حدیث: ۸۹۲

हदीसे ज़मरह

हज़रते सय्यिदुना ज़मरह बिन हबीब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُجِيْب फ़रमाते हैं : क़ब्र में तीन फ़िरिश्ते आते हैं : अन्कर, नाकूर और उन के सरदार रूमान ।(1)

आप ही की एक मरफ़ूअ़ रिवायत में है कि वोह चार हैं : मुन्कर, नकीर, नाकूर और इन सब के सरदार रूमान ।

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی कहते हैं : इस ह़दीस के मरफ़ूअ़ होने की कोई अस्ल नहीं है और ज़मरह ताबेई हैं और इस रिवायत का इन पर मौक़ूफ़ होना ज़ियादा साबित है ।(2)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने हजर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया कि क्या मुर्दे के पास कोई रूमान नाम का फ़िरिश्ता भी आता है ? उन्हों ने फ़रमाया : इस बारे में सनद तो आई है लेकिन इस की सनद कमज़ोर है(3) ।(4)

हदीसे उ़बादा बिन सामित

हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जब तुम में से कोई रात को इबादत करे तो बुलन्द आवाज़ से तिलावते कुरआन करे इस से शैतान और शरीर जिन्नात भाग जाते हैं, घर और फ़ज़ाओं में रहने वाले फ़िरिश्ते उस तिलावत को बग़ौर सुनते हैं, जब येह रात गुज़रने लगती है तो आने वाली रात को वसिय्यत करती है कि इस बन्दे को इस के वक़्त पर जगा देना और इस के लिये आसान हो जाना । फिर जब उस इबादत गुज़ार बन्दे का इन्तिक़ाल हो जाता है और लोग उसे गुस्ल दे रहे होते हैं तो कुरआने पाक उस के सर के पास खड़ा हो जाता है और जब वोह गुस्ल से फ़ारिग़ होते हैं तो कुरआने मजीद उस के कफ़न के नीचे सीने के पास आ जाता है, फिर जब उसे क़ब्र में रख दिया जाता है और मुन्कर नकीर उस के पास आते हैं तो कुरआन निकल कर बन्दे और उन के दरमियान ह़ाइल हो जाता है, फ़िरिश्ते उस से कहते हैं : हमारे दरमियान से हट जा हम इस

---

(1)...حلیۃ الاولیاء، ضمرۃ بن حبیب، ۶/۱۱۰، حدیث: ۷۹۹۲

(2)...الموضوعات لابن جوزی، باب ذکر فتان القبر، ۳/ ۲۳۴

(3)...ذکرہ الرافعی فی تاریخ قزوین عن الطوالات لابی الحسن القطان بسندہ برجال موثقین الی ضمرۃ بن حبیب قال:
فتان القبر اربعۃ منکر ونکیر وناکور وسیدھم رومان۔ وھذ الوقف لہ حکم الرفع اذ لا یقال مثلہ من قبل الرأی فھو مرسل۔ (تنزیہ الشریعۃ المرفوعۃ، ۲/ ۳۷۲)

(4)...تنزیہ الشریعۃ، کتاب الموت والقبور، الفصل الثانی، ۲/ ۳۷۲، تحت الحدیث: ۲۷

से कुछ पूछ गछ कर लें। कुरआने पाक कहता है : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं इस से उस वक़्त तक जुदा नहीं होऊंगा जब तक इसे दाख़िले जन्नत न करवा दूं। हां, अगर तुम्हें कुछ हुक्म दिया गया है तो वोह पूरा करो। फिर बन्दे की त़रफ़ मुवज्जेह हो कर कहता है : क्या तू मुझे जानता है ? बन्दा कहता है : नहीं। कुरआने पाक कहता है : मैं कुरआन हूं, मैं ही तुझे रात में जगाता और दिन में प्यासा रखता था और तुझे तेरी आंख, कान वग़ैरा की शहवत पूरा करने से रोकता था, अब तू मुझे अपने दोस्तों में सच्चा दोस्त और भाइयों में सच्चा भाई पाएगा, मैं तुझे खुश ख़बरी देता हूं कि मुन्कर नकीर के बा'द तुझ पर कोई रंजो ग़म नहीं। चुनान्चे, मुन्कर नकीर वहां से चले जाते हैं और कुरआने पाक बारगाहे इलाही की त़रफ़ बुलन्द हो जाता है और बन्दे के लिये चादर और बिछौने का सुवाल करता है, रब तआला उस बन्दे के लिये जन्नती क़िन्दील, जन्नती चादर, जन्नती बिछौने और जन्नती खुश्बू का हुक्म जारी फ़रमाता है तो आस्माने दुन्या के एक हज़ार मुक़र्रब फ़िरिश्ते उन सब चीज़ों को उठाते हैं और कुरआने पाक उन सब से पहले बन्दे के पास पहुंच जाता है और कहता है : मेरे बा'द किसी क़िस्म की वहूशत तो नहीं हुई ? मैं तेरे पास से रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तेरे लिये चादर, बिछौने और रौशनी का सुवाल करने गया था अन क़रीब येह चीज़ें तुझे मिल जाएंगी। इतने में फ़िरिश्ते वोह तमाम चीज़ें उठाए क़ब्र में दाख़िल होते हैं, बिछौना बिछाते हैं, चादर उस के क़दमों की जानिब और खुश्बू सीने के पास रख कर बन्दे को दाईं करवट पर लिटाते हैं और खुद आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हो जाते हैं, बन्दा उन्हें मुसलसल देखता रहता है ह़त्ता की वोह आस्मान में दाख़िल हो जाते हैं और कुरआने पाक क़ब्र में जानिबे क़िब्ला चला जाता है फिर रब तआला जितना चाहे उस की क़ब्र को कुशादा फ़रमा देता है।

हज़रते सय्यिदुना अबू मुआविया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की किताब में है कि उस की क़ब्र को 400 साल की मसाफ़त जितनी वुस्अत दी जाती है और यास्मीन (खुश्बू) उस के सीने के पास रख दी जाती है जिसे वोह सूर फूंके जाने तक सूंघता रहेगा, फिर वोह रोज़ाना एक या दो मरतबा अपने घरवालों के पास आता है उन्हें ह़ाल अह़वाल बताता और उन के लिये भलाई की दुआ करता है, अगर उस की औलाद में से कोई कुरआन की ता'लीम ह़ासिल करता है तो वोह उस से खुश होता है और अगर उस के घरवालों में से कोई बुराई में मुब्तला हो तो वोह सुब्हो शाम घर आ कर उस पर रोता है और येह सिलसिला सूर फूंके जाने तक जारी रहेगा।(1)

---

(1)...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب التهجد، باب الحث على قيام الليل، ۱/ ۲۵۰، حديث: ۳۱

हदीसे इब्ने अ़ब्बास

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से रिवायत है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़मर ! उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब तुम ज़मीन के अन्दर पहुंच जाओगे, तुम्हारे लिये तीन हाथ एक बालिश्त लम्बा और एक हाथ एक बालिश्त चौड़ा गढ़ा खोदा जाएगा, फिर तुम्हारे पास सियाह रंगत वाले फ़िरिश्ते मुन्कर नकीर अपने लम्बे बाल घसीटते और दांतों से ज़मीन चीरते हुवे आएंगे, उन की आवाज़ें ज़ोरदार गरज की मानिन्द और निगाहें उचकने वाली बिजली की त़रह़ होंगी, वोह तुम्हें झिड़क कर बिठाएंगे और ख़ूब डराएंगे । हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या उस दिन भी मैं इसी ह़ाल (या'नी ईमान व अ़क़्ल की मज़बूत़ी) पर होऊंगा ? इरशाद फ़रमाया : हां । अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर तो ब हुक्मे ख़ुदा मैं उन्हें काफ़ी हो जाऊंगा ।(1)

मुर्दा जूतियों की आवाज़ सुनता है

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا से मरवी है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मुर्दे को क़ब्र में रख कर लोग पलटते हैं तो मुर्दा उन की जूतियों की आवाज़ सुनता है फिर जब बैठ जाता है तो उस से पूछा जाता है : तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ । फिर सुवाल होता है : तेरा दीन क्या है ? वोह कहता है : इस्लाम । फिर पूछा जाता है : तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم । फिर सुवाल होता है : तू उन के बारे में क्या जानता है ? वोह कहता है : मैं ने उन्हें पहचाना और जो किताब वोह ले कर आए मैं ने उस की तस्दीक़ की । चुनान्चे, उस की क़ब्र को ह़द्दे निगाह तक वसीअ़ कर दिया जाता है और उस की रूह़ मोमिनीन की अरवाह़ से मिला दी जाती है ।(2)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : क़ब्र में आने वाले फ़िरिश्तों के नाम मुन्कर और नकीर हैं ।(3)

---

1 ...اثبات عذاب القبر للبیہقی، ص۸۱، حدیث:۱۰۴

2 ...اثبات عذاب القبر، باب ما یکون علی من اعرض عن ذکر اللہ... الخ، ص۲۱، حدیث:۲۷، عن ابی ہریرۃ مختصرًا درمنثور، سورۃ ابراھیم، تحت الآیۃ:۲۷، ۵/ ۳۵

3 ...معجم اوسط، ۲/ ۱۱۳، حدیث:۲۷۰۳

क़ब्र ता हद्दे निगाह वसीअ़ कर दी जाती है

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब मोमिन की मौत का वक़्त आता है तो फ़िरिश्ते उस के पास आ कर सलाम करते और जन्नत की ख़ुश ख़बरी सुनाते हैं। जब वोह मर जाता है तो उस के जनाज़े के साथ साथ चलते और लोगों के हमराह उस की नमाज़े जनाज़ा अदा करते हैं और जब उसे दफ़्ना दिया जाए तो उसे क़ब्र में बिठा दिया जाता है और उस से पूछा जाता है : तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है। फिर पूछा जाता है : तेरे रसूल कौन हैं ? वोह कहता है : हज़रत मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर सुवाल होता है : तेरी शहादत क्या है ? वोह कहता है : اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ या'नी मैं गवाही देता हूं के **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद **अल्लाह** के रसूल हैं। येह फ़रमाने बारी तआ़ला इसी से मुतअ़ल्लिक़ है :

یُثَبِّتُ اللّٰہُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِی الْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا وَفِی الْاٰخِرَۃِ ۚ (پ۱۳، ابراھیم:۲۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** साबित रखता है ईमान वालों को हक़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।*

चुनान्चे, उस की क़ब्र ता हद्दे निगाह वसीअ़ कर दी जाती है। जब कि काफ़िर के पास फ़िरिश्ते आते हैं तो उसे बांध देते हैं, उस की पुश्त और चेहरे पर मारते हैं, उसे क़ब्र में रखा जाता है तो उसे बिठा कर पूछते हैं : तेरा रब कौन है ? वोह उन्हें कोई जवाब नहीं दे पाता क्यूंकि रब तआ़ला ने उसे भुला दिया होता है। फिर पूछा जाता है : वोह रसूल कौन हैं जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए ? अब भी वोह कोई जवाब नहीं दे पाता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान इसी बारे में है :

وَیُضِلُّ اللّٰہُ الظّٰلِمِیْنَ ۙ۟ وَیَفْعَلُ اللّٰہُ مَا یَشَآءُ ﴿۲۷﴾ (پ۱۳، ابراھیم:۲۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ज़ालिमों को गुमराह करता है और **अल्लाह** जो चाहे करे।*[1]

जन्नती तहाइफ़

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक अन्सारी के जनाज़े में शरीक हुवे और क़ब्र तक साथ तशरीफ़

1...تفسیر ابن ابی حاتم، ابراھیم، تحت الآیۃ:۲۷، ۷/ ۲۲۴۵، حدیث:۱۲۲۶۷

ले गए उस वक़्त तक क़ब्र न खोदी गई थी लिहाज़ा आप तशरीफ़ फ़रमा हो गए और लोग भी आप के पास ऐसे साकिन बैठ गए गोया उन के सरों पर परन्दे हैं। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ज़मीन की त़रफ़ नज़र फ़रमाई और तिन्के से ज़मीन कुरेदने लगे फिर आस्मान की त़रफ़ निगाह उठाई और तीन मरतबा यूं दुआ फ़रमाई : اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ या'नी मैं अ़ज़ाबे क़ब्र से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता हूं। फिर इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन दुन्या को पीछे छोड़ कर आख़िरत की त़रफ़ बढ़ता है तो ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस के सर के पास आ कर बैठ जाते हैं, उन के साथ दीगर फ़िरिश्ते भी होते हैं जिन के पास जन्नती तह़ाइफ़ ख़ुश्बू और लिबास होता है, वोह तमाम ता ह़द्दे निगाह सफ़ ब सफ़ बैठ जाते हैं, पहले ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उसे ख़ुश ख़बरी सुनाते हैं फिर दीगर फ़िरिश्ते उसे ख़ुश ख़बरी देते हैं तो उस की रूह़ ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की जानिब से दी जाने वाली ख़ुश ख़बरी से ख़ुश हो कर मुश्क से क़त़रा बहने की मिस्ल बह कर निकलती है, फिर मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام उस की रूह़ ले कर पलक झपकते ही दूसरे फ़िरिश्तों के ह़वाले करते हैं वोह फ़ौरन उसे जन्नती तह़ाइफ़ में लपेट लेते हैं और उस वक़्त ज़मीनो आस्मान के माबैन एक ख़ुश्बू फैल जाती है, फ़िरिश्ते कहते हैं : येह ख़ुश्बू कितनी अच्छी है। दूसरे फ़िरिश्ते कहते हैं : येह ख़ुश्बू आज क़ब्ज़ की गई फ़ुलां मोमिन की रूह़ की है, जब उसे आस्मान तक लाया जाता है तो आस्मान के दरवाज़े उस के लिये खुल जाते हैं, हर दरवाज़ा येह चाहता है कि उस रूह़ को मुझ से गुज़ारा जाए, चुनान्चे, उसे उस के अ़मल के दरवाज़े से गुज़ारा जाता है तो वोह रोने लगता है और जिन जिन आस्मान वालों के पास से वोह गुज़रती है सब येही कहते हैं कि "ख़ुश आमदीद उस जान को जिस ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ का हुक्म माना" ह़त्ता कि उसे सिद्रतुल मुन्तहा तक पहुंचा दिया जाता है, ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام और उन के मुआ़विन फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : इलाही ! हम ने फ़ुलां बिन फ़ुलां मोमिन की रूह़ क़ब्ज़ की है। ह़ालांकि रब तआ़ला उन से ज़ियादा जानता है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : उसे ज़मीन की त़रफ़ लौटा दो, मैं ने उन बन्दों को उसी से पैदा किया, उसी में लौटाऊंगा और उन्हें उसी से दोबारा उठाऊंगा। दफ़्नाने वाले जब वापस पलटते हैं तो मुर्दा उन की जूतियों की आहट और हाथ झाड़ने की आवाज़ भी सुनता है, फिर उस के पास तीन फ़िरिश्ते आते हैं, दो रह़मत के और एक अ़ज़ाब का, बन्दे का अ़मले सालेह़ उसे अपनी ह़िफ़ाज़त में ले लेता है, नमाज़ क़दमों के पास, रोज़ा सर के पास, ज़कात दाईं त़रफ़, सदक़ा बाईं त़रफ़ और नेकी और ह़ुस्ने अख़्लाक़ सीने के

पास आ जाते हैं, अब अ़ज़ाब का फ़िरिश्ता जिस जानिब से भी आता है अ़मले सालेह़ उसे रोक लेता है, वोह फ़िरिश्ता इतना वज़्नी हथोड़ा ले कर खड़ा होता है कि अगर मिना में जम्अ़ होने वाले सब मिल कर भी उसे उठाना चाहें तो न उठा सकें, फिर वोह कहता है : ऐ नेक बन्दे ! अगर नमाज़, रोज़ा, ज़कात और सदक़ा तेरी ह़िफ़ाज़त न करते तो मैं इस हथोड़े से तुझे ऐसी मार मारता जिस से क़ब्र में आग भड़क उठती, वोह रह़मत के फ़िरिश्तों से कहता है : येह तुम्हारे लिये और तुम इस के लिये हो। चुनान्चे, वोह वहां से रुख़्सत हो जाता है और रह़मत का एक फ़िरिश्ता दूसरे से कहता है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली से नर्मी करना क्यूंकि येह बहुत बड़ी मुसीबत से आया है। फ़िरिश्ता पूछता है : तेरा रब कौन है। बन्दा कहता है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ। वोह पूछता है : तेरा दीन क्या है ? मुर्दा जवाब देता है : मेरा दीन इस्लाम है। फ़िरिश्ता फिर सुवाल करता है : तेरे नबी कौन हैं : बन्दा कहता है : ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। फ़िरिश्ता पूछता है : तू क्या जानता है ? बन्दा कहता है : मैं ने किताबुल्लाह को पढ़ा उस पर ईमान लाया और उस की तस्दीक़ की। येह सुवाल फ़िरिश्ते सख़्ती से पूछते हैं और येह मोमिन को पेश आने वाली सख़्त तरीन आज़्माइश होती है, पस आस्मान से निदा आती है : मेरे बन्दे ने सच कहा, इस के लिये जन्नती बिछौना बिछाओ, जन्नती लिबास पहनाओ और जन्नती ख़ुश्बू से मुअ़त्त़र कर दो और इस की क़ब्र को ह़द्दे निगाह तक वसीअ़ कर दो, एक जन्नती दरवाज़ा इस के सर की जानिब और एक क़दमों की जानिब खोल दो। फ़िरिश्ते उस से कहते हैं : दुल्हन की त़रह़ सो जा तुझे अ़ज़ाबे क़ब्र नहीं होगा। वोह कहता है : या इलाही ! क़ियामत क़ाइम फ़रमा दे ताकि मैं अपने अह्लो इ़याल और माल की त़रफ़ लौटूं और वोह कुछ पाऊं जो तू ने मेरे लिये तय्यार किया है। चुनान्चे, उसे बरोज़े क़ियामत चमकते चेहरे के साथ क़ब्र से उठाया जाएगा।(1)

ह़दीसे इब्ने उ़मर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने एक शख़्स से कहा : ऐ भाई ! क्या तुम जानते हो कि मौत तुम्हारे सामने है अचानक आ जाएगी, न जाने तुम्हारे पास सुब्ह़ आ जाए या शाम, रात को आ जाए या दिन को फिर हौलनाक क़ब्र और मुन्कर नकीर का सामना होगा और फिर क़ियामत का वोह दिन जिस में बात़िल परस्तों को ख़सारा होगा।(2)

---

❶...اثبات عذاب القبر، باب اخبر المصطفى بان المؤمن والكافر جميعا يسلان...الخ، ص ۳۷، حديث: ۲۰، بتغير، عن البراء بن عازب

❷...شعب الايمان، باب فى حفظ اللسان، ۴/۲۱۴، حديث: ۴۸۳۴

ज़बान को इन कलिमात से तर रखो

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! अपनी ज़बानों को इन कलिमात का आ़दी बनाओ : لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰہِ وَاللّٰہُ رَبُّنَا وَالْاِسْلَامُ دِیْنُنَا وَمُحَمَّدٌ اَنْبِیُّنَا या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूदे बर ह़क़ नहीं और मुह़म्मद अल्लाह के रसूल हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारा रब, इस्लाम हमारा दीन और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे नबी हैं। क्यूंकि क़ब्र में तुम से इन बातों के बारे में पूछा जाएगा।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ब्र में इम्तिह़ान लेने वाले फ़िरिश्तों के बारे में बताया तो मेरे वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हमारी अ़क़्लें हमें लौटा दी जाएंगी ? इरशाद फ़रमाया : हां ! जैसे आज हो बिल्कुल वैसे ही। अ़र्ज़ की : ना फ़रमान के लिये ख़सारा है।(2)

ह़दीसे इब्ने मसऊ़द

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जब मोमिन इन्तिक़ाल के बा'द क़ब्र में पहुंच जाए तो उसे बिठा कर पूछा जाता है : तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : मेरा रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, मेरा दीन इस्लाम है और मेरे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। चुनान्चे, उस की क़ब्र को ख़ूब कुशादा कर के उस के लिये राह़त का सामान कर दिया जाता है फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह आयते त़य्यिबा तिलावत की :

یُثَبِّتُ اللّٰہُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِی الْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا وَفِی الْاٰخِرَۃِ (پ۱۳، ابراھیم: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।

---

1 ...فردوس الاخبار، ۱/۶۹، حدیث: ۳۴۷

2 ...مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن عمرو، ۲/۵۸۱، حدیث: ۲۲۱۴، عن عبد اللہ بن عمر

और जब काफ़िर को क़ब्र में रखा जाए तो उसे भी बिठा कर पूछा जाता है : तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : मैं कुछ नहीं जानता। चुनान्चे, उस की क़ब्र तंग कर दी जाती है और उसे अ़ज़ाब दिया जाता है। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِیْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِیْشَةً ضَنْكًا (پ۱۶، طٰہٰ:۱۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जिस ने मेरी याद से मुंह फेरा तो बेशक उस के लिये तंग ज़िन्दगानी है।*(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : ज़रूर तुम्हें क़ब्र में सीधा बिठाया जाएगा और पूछा जाएगा : तू कौन है ? अगर वोह मोमिन हुवा तो कहेगा : मैं ज़िन्दा व मुर्दा हर दो ह़ालत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा हूं मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं। चुनान्चे, उस की क़ब्र में कुशादगी कर दी जाती है और वोह अपना जन्नती ठिकाना देख लेता है फिर जन्नत से एक लिबास आता है जिसे वोह पहन लेता है। जब काफ़िर से पूछा जाता है कि तू कौन है तो वोह कहता है ? मैं नहीं जानता। उस से तीन मरतबा कहा जाता है : तू ने कभी जाना ही नहीं। चुनान्चे, उस की क़ब्र इतनी तंग कर दी जाती है कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं, क़ब्र में हर त़रफ़ से सांप आ जाते हैं जो उसे काटते और खाते हैं वोह तक्लीफ़ से चीख़ता है, उसे लोहे और आग के हथोड़ों से मारा जाता है और उस के लिये जहन्नम की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है।(2)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब बन्दा मरता है तो उस के पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्ते भेजता है, वोह उस की रूह़ क़ब्ज़ कर के कफ़न में रखते हैं और जब उसे क़ब्र में उतारा जाता है तो रब तआ़ला उस के पास दो फ़िरिश्ते भेजता है जो उसे झिड़क कर उठाते हैं और पूछते हैं : तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है। पूछते हैं : तेरा दीन क्या है ? कहता है : मेरा दीन इस्लाम है। वोह कहते हैं : तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : मेरे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। वोह कहते हैं : तू ने सच कहा, तू ऐसा ही है। चुनान्चे, उस के लिये जन्नती बिछौना बिछाया जाता, जन्नती लिबास पहनाया जाता और उसे उस का जन्नती

---

❶...معجم کبیر، ۹/۲۳۳، حدیث: ۹۱۴۵، اثبات عذاب القبر للبیہقی، ص۲۹، حدیث: ۲

❷...اثبات عذاب القبر للبیہقی، ص۱۳۲، حدیث: ۲۲۵، ۲۲۶

ठिकाना दिखाया जाता है, जब कि काफ़िर को ऐसी मार मारी जाती है जिस से उस की क़ब्र में आग भड़क उठती है, क़ब्र इतनी तंग कर दी जाती है कि पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं और उस पर ऊंट की गर्दन जैसे सांप मुसल्लत़ कर दिये जाते हैं।[1]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब मोमिन का वक़्ते मौत आता है तो हज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام यूं निदा करते हैं : ऐ पाकीज़ा रूह़ ! पाकीज़ा जिस्म से निकल आ। जब रूह़ निकलती है तो उसे सुर्ख़ पाकीज़ा कपड़े में लपेट लेते हैं, जब ग़ुस्ल व कफ़न दे कर उसे चारपाई पर रखा जाता है तो उस की रूह़ चारपाई के ऊपर आ जाती है और जिधर जिधर चारपाई घूमती है वोह भी साथ घूमती है यहां तक कि उसे क़ब्र में रख दिया जाता है और जब उसे क़ब्र में रख दिया जाता है तो उस की रूह़ उस के जिस्म में डाल दी जाती है और उस से सुवालात होते हैं : तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? वोह कहता है : मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, मेरा दीन इस्लाम और मेरे नबी हज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। उसे कहा जाता है : तू ने सच कहा। फिर उस की क़ब्र ता ह़द्दे निगाह वसीअ़ कर दी जाती और उस की रूह़ बुलन्द हो जाती है और उसे आ'ला इ़ल्लिय्यीन में पहुंचा दिया जाता है। फिर हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने येह आयते मुक़द्दसा तिलावत की :

اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِیْ عِلِّیِّیْنَ ﴿۱۸﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّیُّوْنَ ﴿۱۹﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿۲۰﴾

(پ۳۰، المطففین: ۱۸تا۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक नेकों की लिखत सब से ऊंचे मह़ल इ़ल्लिय्यीन में है और तू क्या जाने इ़ल्लिय्यीन कैसी है वोह लिखत एक मोहर किया नविश्ता (तह़रीर नामा) है।*[2]

फिर फ़रमाया : येह सातवें आस्मान में है फिर काफ़िर के बारे में बताया और येह आयते त़य्यिबा तिलावत की :

اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِیْ سِجِّیْنٍ ﴿۷﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّیْنٌ ﴿۸﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿۹﴾

(پ۳۰، المطففین: ۷تا۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक काफ़िरों की लिखत सब से नीची जगह सिज्जीन में है और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है वोह लिखत एक मोहर किया नविश्ता (तह़रीर नामा) है।*

फिर फ़रमाया : येह सातवीं ज़मीन में है।

1 ...کتاب الشریعۃ للآجری، کتاب الایمان بالحوض، باب ذکر الایمان والتصدیق بمسألۃ منکر ونکیر، ۳/۱۲۹۳، حدیث: ۸۷۳

2 ...اھوال القبور، الباب الثامن، ص ۱۳۶

हदीसे उ़स्मान बिन अफ़्फ़ान

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक जनाज़े के साथ तशरीफ़ ले गए और मय्यित की तदफ़ीन के बा'द फ़रमाया : अपने भाई के लिये बख़्शिश और साबित क़दमी की दुआ़ करो, क्यूंकि अभी उस से सुवालात होंगे।(1)

हदीसे उ़मर फ़ारूक़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़मर ! उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब तुम चार हाथ लम्बी दो हाथ चौड़ी क़ब्र में होगे और मुन्कर नकीर को देखोगे। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुन्कर नकीर कौन हैं ? इरशाद फ़रमाया : क़ब्र का इम्तिह़ान लेने वाले दो फ़िरिश्ते जो अपने दांतों से ज़मीन चीरते और अपने बालों को घसीटते हुवे आएंगे। उन की आवाज़ें ज़ोरदार गरज की मानिन्द और निगाहें उचकने वाली बिजली की त़रह़ होंगी। उन के पास ऐसा हथोड़ा होगा कि अगर तमाम अहले मिना मिल कर उसे उठाना चाहें तो न उठा सकें लेकिन मुन्कर नकीर के लिये वोह मेरी इस लाठी से भी ज़ियादा हल्का होगा, वोह तुम्हारा इम्तिह़ान लेंगे, अगर तुम आ़जिज़ आ गए या मुख़ालफ़त की तो वोह तुम्हें उस हथोड़े से ऐसी ज़र्ब मारेंगे जिस से तुम रेत की त़रह़ रेज़ा रेज़ा हो जाओगे। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या उस वक़्त भी मेरी येही ह़ालत होगी (या'नी ह़वास सलामत होंगे) ? इरशाद फ़रमाया : हां। अ़र्ज़ की : तब तो मैं उन दोनों को काफ़ी होऊंगा।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़मर ! जब लोग तुम्हारे लिये तीन गज़ एक बालिश्त लम्बी और एक गज़ एक बालिश्त चौड़ी क़ब्र खोदेंगे फिर वापस आ कर तुम्हें ग़ुस्ल व कफ़न दे कर ख़ुश्बू लगाएंगे, तुम्हें उठा कर क़ब्र में रख देंगे और फिर तुम पर मिट्टी बराबर कर देंगे, जब वोह वापस चले जाएंगे तो क़ब्र का इम्तिह़ान

---

1 ...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، باب الاستغفار وسوال التثبیت للمیت، ۱/۷۰۲، حدیث: ۱۴۱۲

2 ...اثبات عذاب القبر للبیہقی، ص۸۲، حدیث: ۱۰۵، فردوس الاخبار، ۲/۱۸۱، حدیث: ۴۹۱۴

लेने वाले मुन्कर नकीर तुम्हारे पास आएंगे जिन की आवाज़ ज़ोरदार गरज की मानिन्द और निगाहें उचकने वाली बिजली की त़रह़ होंगी, वोह तुम्हें ख़ूब डराएंगे तो ऐ उ़मर ! उस वक़्त तुम्हारी क्या ह़ालत होगी ? अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मेरी अ़क़्ल सलामत होगी ? इरशाद फ़रमाया : हां । अ़र्ज़ की : तब तो मैं उन्हें काफ़ी होऊंगा ।[1]

ह़दीसे अ़म्र बिन आ़स

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपने मरज़े वफ़ात में फ़रमाया : जब तुम मुझे दफ़्न करो तो मुझ पर मिट्टी डाल देना और मेरी क़ब्र के पास इतनी देर ठहरे रहना जितनी देर में ऊंट ज़ब्ह़ कर के उस का गोश्त तक़्सीम किया जाता है ताकि मैं तुम से उन्सिय्यत ह़ासिल करूं और देखूं कि मैं फ़िरिश्तों को क्या जवाब देता हूं ।[2]

ह़दीसे मुआ़ज़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस घर में कुरआने मजीद की तिलावत की जाती है उस घर पर नूर का एक ख़ैमा होता है जिस से आस्मान वाले राहनुमाई ह़ासिल करते हैं जिस त़रह़ ठाठें मारते समन्दर और चटयल मैदानों में मोती जैसे तारे से राहनुमाई ली जाती है, जब तिलावत करने वाला फ़ौत हो जाता है तो वोह नूरी ख़ैमा उठा लिया जाता है, चुनान्चे, फ़िरिश्ते आस्मान से देखते हैं तो उन्हें वोह नूर नज़र नहीं आता फिर फ़िरिश्ते उसे एक आस्मान से दूसरे आस्मान पर ले जाते और उस की रूह़ पर दुरूद भेजते हैं फिर क़ियामत तक उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं और जो भी मोमिन किताबुल्लाह सीखता है और फिर रात की किसी घड़ी में नमाज़ पढ़ता है तो वोह रात अगली रात को वसिय्यत करती है कि इस मोमिन को वक़्ते मुक़र्ररा पर बेदार कर देना और इस के लिये आसान हो जाना, जब वोह फ़ौत हो जाता है तो उस के घरवाले उस के कफ़न की तय्यारी में मश्ग़ूल होते हैं जब कि कुरआने करीम इन्तिहाई ह़सीन सूरत में उस के सर के पास आ कर ठहर जाता है फिर कफ़न के नीचे और सीने के ऊपर आ जाता है और जब उसे क़ब्र में रख कर उस पर मिट्टी बराबर कर दी

---

1 ...اثبات عذاب القبر للبیھقی، ص۸۱، حدیث: ۱۰۳، مسند الحارث، کتاب الجنائز، باب السؤال فی القبر، ۱/ ۳۷۹، حدیث: ۲۸۱

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب کون الاسلام یھدم ما قبلہ، ص ۷۴، حدیث: ۱۹۲

जाती और दोस्त अह्बाब वापस चले जाते हैं तो नकीरैन आ कर उसे क़ब्र में बिठा देते हैं इतने में कुरआने मजीद मोमिन और फ़िरिश्तों के दरमियान ह़ाइल हो जाता है, फ़िरिश्ते कहते हैं : एक त़रफ़ हो जाओ ताकि हम इस से सुवाल करें। वोह कहता है : रब्बे का'बा की क़सम ! ऐसा हरगिज़ न होगा क्यूंकि येह मेरा मुसाहिब और मेरा दोस्त है मैं इसे किसी ह़ाल में अकेला न छोड़ूंगा अलबत्ता अगर तुम्हें किसी बात का हुक्म है तो तुम उस पर अ़मल करो और मुझे मेरी जगह पर रहने दो क्यूंकि मैं इसे जन्नत में पहुंचाने से पहले इस से जुदा नहीं होऊंगा। फिर कुरआने पाक अपने दोस्त की त़रफ़ देख कर कहता है : मैं वोही कुरआन हूं जिसे तू कभी बुलन्द आवाज़ से और कभी आहिस्ता पढ़ता था और मुझ से मह़ब्बत रखता था, पस मुझे तुझ से मह़ब्बत है और जिस से मैं मह़ब्बत करता हूं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उसे मह़बूब बना लेता है, नकीरैन के सुवालात के बा'द तुझ पर कोई ख़ौफ़ है न कोई ग़म। नकीरैन सुवालात करने के बा'द तशरीफ़ ले जाते हैं, अब मोमिन होता है और कुरआने करीम, कलामे मजीद फ़रमाता है : मैं तेरे लिये नर्म व आराम देह बिस्तर बिछाऊंगा और ह़सीनो जमील चादर अ़त़ा करूंगा क्यूंकि तू रात भर मेरे लिये जागता और दिन भर मेरे लिये मशक़्क़त उठाता था। फिर कुरआने पाक पलक झपकने से भी जल्दी आस्मान की त़रफ़ परवाज़ कर जाता है और रब عَزَّوَجَلَّ से बिस्तर और चादर का सुवाल करता है तो वोह उसे अ़त़ा कर दिये जाते हैं, फिर छटे आस्मान के एक हज़ार मुक़र्रब फ़िरिश्ते उस के साथ उतरते हैं और कुरआने करीम मोमिन से दरयाफ़्त फ़रमाता है कि तू मेरी अ़दम मौजूदगी में वह़्शत ज़दा तो नहीं हुवा ? मैं रब عَزَّوَجَلَّ के पास तेरे लिये बिस्तर और चादर लेने गया था और वोह ले भी आया हूं लिहाज़ा खड़ा हो जा ताकि फ़िरिश्ते बिस्तर बिछा दें, फिर फ़िरिश्ते उसे इन्तिहाई नर्मी से उठाते हैं और उस की क़ब्र 400 साल की मसाफ़त तक वसीअ़ कर दी जाती है फिर उस के लिये अज़्फ़र ख़ुश्बू लगा सब्ज़ रेशम बिछाया जाता है और उस के सर और पाउं की जानिब बारीक और मोटे रेशम के तक्ये लगाए जाते हैं, उस के सर और क़दमों की त़रफ़ जन्नती नूर के दो चराग़ जलाए जाते हैं जो क़ियामत तक जलते रहेंगे फिर फ़िरिश्ते उसे दाएं पहलू पर क़िब्ला रू कर के और उसे जन्नती यास्मीन दे कर परवाज़ कर जाते हैं और फिर क़ियामत तक वोह और कुरआन रह जाते हैं।

कुरआने मजीद शबो रोज़ उस की ख़बर उस के घरवालों को देता है और उस के साथ इस त़रह़ रहता है जिस त़रह़ मेहरबान बाप अपने बच्चे के साथ रहता है, अगर उस की औलाद

में से किसी ने कुरआने पाक पढ़ लिया तो कुरआने करीम उस को खुश ख़बरी सुनाता है और अगर उस के पीछे उस की औलाद में से कोई बुरा हो तो कुरआने मजीद उस की इस्लाह़ व बेहतरी के लिये दुआ़ करता है।(1)

ह़दीसे अबू उमामा : इन की ह़दीस "मुर्दे को तलक़ीन के बयान" में गुज़र चुकी है।

ह़दीसे अबू दरदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : मुझे ऐसी भलाई सिखाएं जिस से रब तआ़ला मुझे नफ़्अ़ दे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ज़रा येह तसव्वुर कर कि जब तेरे लिये ज़मीन में सिर्फ़ चार हाथ लम्बी और दो हाथ चौड़ी जगह होगी, तेरी जुदाई को ना पसन्द करने वाले तेरे घरवाले और दोस्त अह़बाब तुझे वहां ले जाएंगे और अपने हाथों से उस में डाल देंगे फिर तुझ पर ईंटें रख कर ख़ूब मिट्टी डाल देंगे, फिर तेरे पास नीली आंखों और घूंगरियाले लटकते बालों वाले दो फ़िरिश्ते आएंगे एक का नाम मुन्कर और दूसरे का नकीर होगा, वोह पूछेंगे : तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरे नबी कौन हैं ? अगर तू ने कहा : मेरा रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा दीन इस्लाम और मेरे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। तो खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! यक़ीनन तू कामयाब हो गया और उस ख़ौफ़ व घबराहट के आ़लम में तुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की दी हुई साबित क़दमी ही से येह जवाब देने की त़ाक़त होगी वरना अगर तू ने कहा कि मैं नहीं जानता। तो ब खुदा ! तू नाकाम व ना मुराद हो गया।(2)

ह़दीसे अबू सईद ख़ुदरी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक जनाज़े में शरीक हुवा तो आप ने इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! येह उम्मत अपनी क़ब्रों में आज़माई जाएगी जब इन्सान दफ़्न कर दिया जाता है और लोग चले जाते हैं तो एक फ़िरिश्ता हथोड़ा लिये हुवे आता है और उस मुर्दे को बिठा कर पूछता है : तू इस शख़्स के बारे में क्या कहता है ? अगर मुर्दा मोमिन हुवा तो कहेगा : मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं।

❶...مسند بزار، مسند اسامة بن زيد، ۷/۹۷، حديث: ۲۶۵۵

❷...اثبات عذاب القبر للبیهقی، ص ۱۳۳، حدیث: ۲۲۹

کتاب الشریعة للآجری، کتاب الایمان بالحوض، باب ذکر الایمان والتصدیق بمسالة منکر ونکیر، ۳/۱۲۹۰، حدیث: ۸۲۰

फ़िरिश्ता कहेगा : तू ने सच कहा। फिर उस के लिये जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाएगा और उसे कहा जाएगा : अगर तू अपने रब عَزَّوَجَلَّ का इन्कार करता तो तेरा ठिकाना येह होता अब चूंकि तू ने ईमान का इक़रार किया है तो देख तेरा ठिकाना येह है, इतने में उस के लिये जन्नत की त़रफ़ दरवाज़ा खुलेगा वोह उस की त़रफ़ जाना चाहेगा तो उस से कहा जाएगा : अभी यहीं रहना है। चुनान्चे, उस की क़ब्र कुशादा कर दी जाएगी और अगर मुर्दा काफ़िर या मुनाफ़िक़ हुवा तो उस से पूछा जाएगा : इस शख़्स के बारे में क्या कहता है? वोह कहेगा : मैं नहीं जानता बस लोगों को कुछ कहते सुना था। फ़िरिश्ता कहेगा : तू ने न जाना, न सीखा और न ही हिदायत पाई। फिर उस के लिये जन्नती दरवाज़ा खोला जाएगा और कहा जाएगा : अगर तू ईमान लाता तो तेरा मक़ाम येह था लेकिन तू ने कुफ़्र किया है तो बजाए जन्नत के तेरा ठिकाना येह जहन्नम है। चुनान्चे, उस के लिये जहन्नम की त़रफ़ दरवाज़ा खोल दिया जाएगा और फ़िरिश्ता लोहे के गुर्ज़ से उस के सर पर इस ज़ोर से ज़र्ब लगाएगा कि उस की आवाज़ इन्सो जिन्न के इलावा सारी मख़्लूक़ सुनेगी। किसी ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जब फ़िरिश्ता लोहे का गुर्ज़ ले कर खड़ा होगा तो भला कौन है जो हैबत ज़दा न हो। आप ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ (پ۱۳، ابراهيم:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।(1)

ह़दीसे अबू राफ़ेअ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक क़ब्र के पास से गुज़रे तो इरशाद फ़रमाया : अफ़्सोस, अफ़्सोस, अफ़्सोस। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप के साथ मेरे इलावा और कोई नहीं तो क्या हुज़ूर मुझ पर अफ़्सोस फ़रमा रहे हैं ? इरशाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि इस क़ब्र वाले पर अफ़्सोस कर रहा हूं कि इस से मेरे मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो येह शक करने लगा।(2)

---

(1)...مسند امام احمد، مسند ابی سعيد الخدری، ۴/۸، حديث:۱۱۰۰۰

(2)...معجم كبير، ۱/۳۲۲، حديث:۹۶۱

हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं एक दिन सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ बक़ीए ग़र्क़द पहुंचा, मैं आप के पीछे था कि इतने में आप ने इरशाद फ़रमाया : न तू ने हिदायत पाई न तुझे हिदायत मिली। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या येह हुक्म मेरे लिये है ? इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुम्हें नहीं कहा बल्कि मेरी मुराद येह क़ब्र वाला है जिस से मेरे बारे में पूछा गया तो उस ने गुमान किया कि वोह मुझे नहीं जानता। उस क़ब्र वाले को दफ़्नाने के बा'द जो पानी छिड़का गया था उस का असर मौजूद था।(1)

हदीसे अबू क़तादा

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब मोमिन मरता है तो उसे क़ब्र में बिठा कर पूछा जाता है : तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ । सुवाल होता है : तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : हज़रत मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم । येह बात उस से तीन बार पूछी जाती है फिर जहन्नम का दरवाज़ा खोल कर कहा जाता है : अगर तुम नाकाम हो जाते तो देखो तुम्हारा येह ठिकाना था। फिर जन्नत की त़रफ़ दरवाज़ा खोल कर कहा जाता है : अपना ठिकाना देखो क्यूंकि तुम साबित क़दम रहे। जब काफ़िर मरता है तो उसे भी क़ब्र में बिठा कर पूछा जाता है : तेरा रब कौन है ? और तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : मैं नहीं जानता। बस मैं ने लोगों को जो कुछ कहते सुना वोही कहा। उसे कहा जाता है : तू ने जाना ही नहीं। फिर जन्नत की त़रफ़ दरवाज़ा खोल कर हुक्म होता है : देख अगर तू साबित क़दम रहता तो तेरा ठिकाना येह होता फिर जहन्नम की जानिब दरवाज़ा खोल कर हुक्म होता है : अपना ठिकाना देख क्यूंकि तू नाकाम रहा। रब عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से येही क़ब्र का मुआ़मला मुराद है :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ (پ۱۳، ابراھیم: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।

दुन्या की ज़िन्दगी में ह़क़ बात पर साबित क़दमी से मुराद لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ है और आख़िरत में ह़क़ बात पर साबित क़दमी से मुराद सुवालाते क़ब्र में साबित क़दमी है।(2)

---

❶...مسند بزار، مسند ابی رافع مولیٰ رسول اللّٰہ، ۹/ ۳۲۰، حدیث: ۳۸۷۰

❷...تفسیر ابن ابی حاتم، ابراھیم، تحت الآیۃ: ۲۷، ۷/ ۲۲۴۵، حدیث: ۱۲۲۶۸

हदीसे अबू मूसा

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने अपनी किताब "इस्बातु अ़ज़ाबिल क़ब्र" में मा क़ब्ल सफ़हा 197 पर मज़्कूर हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ह़दीस के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की ह़दीस ज़िक्र की मगर इस के अल्फ़ाज़ ज़िक्र करने के बजाए फ़रमाया : येह ह़दीस मा क़ब्ल ह़दीस की मिस्ल है।

हदीसे अबू हुरैरा

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब आदमी को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के पास नीली आंखों वाले दो काले फ़िरिश्ते आते हैं, एक को मुन्कर दूसरे को नकीर कहा जाता है, वोह मुर्दे से कहते हैं : इस शख़्स के बारे में तू क्या कहा करता था ? वोह वोही कहता है जो कहा करता था कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं। चुनान्चे, वोह कहता है : اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُه या'नी मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और बेशक हज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं। फ़िरिश्ते कहते हैं : हम जानते थे कि तुम येही कहोगे। फिर उस की क़ब्र 70 हाथ लम्बी 70 हाथ चौड़ी कर दी जाती है फिर उस में नूर भर दिया जाता है और उस मोमिन से कहा जाता है : सो जा। वोह कहता है : मैं अपने घरवालों को जा कर ख़बर दे दूं ? फ़िरिश्ते कहते हैं : सो जाओ उस दुल्हन की त़रह़ जिसे उस का मह़बूब ही जगाता है। (वोह सो जाएगा) यहां तक कि बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उठाएगा और अगर मरने वाला मुनाफ़िक़ हो तो कहता है : मैं लोगों को जो कहते सुनता था वोही कहता था मैं तो कुछ नहीं जानता। मुन्कर नकीर कहते हैं : हम जानते थे कि तू येही जवाब देगा। चुनान्चे, ज़मीन को हुक्म होता है कि इसे जकड़ ले तो वोह उसे ऐसा दबाती है जिस से उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं। अल ग़रज़ वोह क़ियामत के दिन तक अ़ज़ाबे क़ब्र में मुब्तला रहेगा।[1]

ज़मीन कभी कुछ न उगाए

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : हम सरकारे दो आ़लम

[1]...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، ۲/۳۳۷، حدیث: ۱۰۷۳

صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में एक जनाज़े में हाज़िर हुवे, जब उस के दफ़्न से फ़ारिग़ हो कर लोग जाने के लिये पलटे तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह तुम्हारे जूतों की आवाज़ सुन रहा है इस के पास मुन्कर व नकीर आए हैं जिन की आंखें तांबे की हन्डिया की त़रह़, दांत गाए के सींगों की त़रह़ और आवाज़ ज़ोरदार गरज की मिस्ल है, वोह उसे बिठा कर पूछेंगे कि वोह किस की इबादत करता था और उस के नबी कौन थे अगर वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करने वालो में से हुवा तो कहेगा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करता था और मेरे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं जो रौशन निशानियां लाए तो हम उन पर ईमान लाए और उन की पैरवी की । इस फ़रमाने बारी तआ़ला का येही मत़लब है :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ (پ۱۳، ابراھیم:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में ।

उसे कहा जाएगा : तुम ने सच कहा, तुम यक़ीन पर मरे और यक़ीन ही पर उठाए जाओगे फिर उस के लिये जन्नत की जानिब दरवाज़ा खोल कर क़ब्र कुशादा कर दी जाएगी और अगर येह मुर्दा शक करने वालों में से हुवा तो कहेगा : मैं कुछ नहीं जानता मैं तो लोगों को जो कहते सुनता था वोही कहता था । उस से कहा जाएगा : तू शक के साथ आया शक पर मरा और शक पर ही उठाया जाएगा फिर उस के लिये जहन्नम की त़रफ़ दरवाज़ा खोल कर उस की क़ब्र में ऐसे बिच्छू और सांप भर दिये जाएंगे कि उन में से एक भी दुन्या में सांस ले ले तो ज़मीन कभी कुछ न उगाए और येह उसे डसेंगे । ज़मीन को हुक्म होगा कि इस पर तंग हो जा तो वोह ऐसी तंग हो जाएगी जिस से उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी ।(1)

अ़ज़ाबे क़ब्र से कैसे बचा जाए ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये ग़ैब दां, रह़मते आ़लमिय्यां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जब मुर्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो वोह वापस जाने वालों के जूतों की आवाज़ सुनता है, अगर मोमिन हो तो नमाज़ उस के सर की जानिब, ज़कात दाईं, रोज़ा बाईं और दीगर भलाइयां, नेकियां और लोगों के साथ ह़ुस्ने सुलूक उस के क़दमों की जानिब आ जाते हैं, सर की त़रफ़ से अ़ज़ाब आए तो

---

(1)...معجم اوسط، ۳/۲۹۲، حدیث:۴۶۲۹

नमाज़ कहती है : यहां तेरे लिये कोई राह नहीं। दाएं से आए तो ज़कात कहती है : मेरी जानिब से भी तुझे रास्ता नहीं मिलेगा। बाएं से आए तो रोज़ा कहता है : मैं तुझे यहां से दाख़िल नहीं होने दूंगा। फिर अ़ज़ाब क़दमों की जानिब से आता है तो भलाइयां, नेकियां और लोगों के साथ हुस्ने सुलूक कहते हैं : यहां से भी तुझे कोई रास्ता नहीं मिलने वाला। फिर मुर्दे से कहा जाता है : बैठ जा। वो बैठ जाता है और उसे ऐसा लगता है गोया सूरज गुरूब होने वाला है। फिर कहा जाता है : जो कुछ हम पूछें उस का हमें जवाब देना। वोह कहता है : मुझे नमाज़ पढ़ने दो। कहा जाता है : थोड़ी देर में पढ़ लेना पहले हमारे सुवालों का जवाब दो। वोह कहता है : पूछो क्या पूछना है। पूछा जाता है : तुम उस शख़्स के बारे में क्या कहते हो जो तुम्हारे दरमियान भेजा गया? या'नी हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। मुर्दा कहता है : वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं जो हमारे रब के हां से रौशन निशानियां लाए तो हम ने उन की तस्दीक़ की और उन पर अ़मल पैरा हुवे। उसे कहा जाता है : तू ने सच कहा, तू इसी पर मरा और اِنْ شَآءَ اللّٰه इसी पर उठाया जाएगा। चुनान्चे, उस की क़ब्र ता ह़द्दे निगाह वसीअ़ कर दी जाती है। इस फ़रमाने बारी तआ़ला का येही मत़लब है :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ (پ۱۳، ابراھیم:۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।

हुक्म होता है : जहन्नम की त़रफ़ दरवाज़ा खोलो। चुनान्चे, जहन्नम की त़रफ़ दरवाज़ा खोल कर उसे कहा जाता है : अगर तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ना फ़रमान होता तो तेरा ठिकाना येह होता। यूं उस का रश्क व सुरूर बढ़ जाता है (कि मैं इस से बच गया) फिर हुक्म होता है : अब इस के लिये जन्नत की त़रफ़ दरवाज़ा खोल दो। चुनान्चे, दरवाज़ा खोल कर उसे कहा जाता है : येह तेरा ठिकाना और वोह ने'मतें हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे लिये तय्यार फ़रमाई हैं। अब उस का कैफ़ो सुरूर और बढ़ जाता है। पस जिस्म को वहीं रखा जाता है जहां से वोह बना था या'नी मिट्टी में और रूह़ को पाकीज़ा फ़ज़ाओं में रखा जाता है और वोह पाकीज़ा फ़ज़ा एक सब्ज़ परन्दा है जो जन्नत के दरख़्त पर है। जब कि काफ़िर की क़ब्र में अ़ज़ाब सर और पैरों की जानिब से आता है तो कोई रुकावट नहीं पाता, काफ़िर डरता कांपता बैठ जाता है उस से कहा जाता है : तुम उस शख़्स के बारे में क्या कहते हो जो तुम्हारे दरमियान भेजा गया? उसे नाम मा'लूम नहीं होता तो उसे बताया जाता है कि ह़ज़रत

मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बारे में क्या गवाही देते हो ? वोह कहता है : मैं लोगों को कुछ कहते सुनता था बस मैं भी वोही कहता था। उसे कहा जाता है : तू ने सच कहा तू इसी पर मरा और इसी पर उठाया जाएगा إِنْ شَآءَ الله। चुनान्चे, उस की क़ब्र उस पर इस क़दर तंग हो जाती है कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं। इस फ़रमाने बारी तआ़ला का येही मत्लब है :

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِیْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِیْشَةً ضَنْكًا (پ۱۶، طٰہٰ:۱۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिस ने मेरी याद से मुंह फेरा तो बेशक उस के लिये तंग ज़िन्दगानी है।

हुक्म होता है कि जन्नत का दरवाज़ा खोलो। चुनान्चे, जन्नत का दरवाज़ा खोल कर उसे कहा जाता है : तेरा ठिकाना येह होता और अगर तू इताअ़त गुज़ार होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें तेरा मुक़द्दर होतीं। येह देख कर उसे ह़सरत व नदामत और ज़ियादा हो जाती है फिर हुक्म होता है : इस के लिये जहन्नम की त़रफ़ दरवाज़ा खोल दो। चुनान्चे, दरवाज़ा खोल कर उसे कहा जाता है : येह और इस का अ़ज़ाब तेरा ठिकाना है। अब वोह ह़सरत व हलाकत में मज़ीद डूब जाता है।

अबू उ़मर ज़रीर कहते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद बिन सलमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा : क्या येह शख़्स अह्ले क़िब्ला में से होगा ? उन्हों ने कहा : हां ! वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की गवाही तो देता है मगर क़ल्बी यक़ीन के साथ नहीं, बस जो लोगों को कहते सुनता था वोही कह देता था।(1)

अ़ज़ाब से बचने के ज़राएअ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि आदमी की क़ब्र में अ़ज़ाब आता है पस जब वोह सर की जानिब से आता है तो तिलावते क़ुरआन उसे दूर भगा देती है। जब हाथों की त़रफ़ से आता है तो सदक़ा रोक लेता है और जब क़दमों की त़रफ़ से आता है तो उस का मस्जिद की त़रफ़ चलना अ़ज़ाब को भगा देता है और सब्र एक किनारे पर मौजूद होता है और कहता है : अगर मैं कहीं से अ़ज़ाब के आगे बढ़ने की जगह देखूंगा तो सामने आ जाऊंगा।(2)

---

1 ...معجم اوسط، ۲/۹۲، حدیث: ۲۶۳۰

2 ...معجم اوسط، ۶/۴۷۰، حدیث: ۹۴۳۸

क़ब्र में फ़ाएदा पहुंचाने वाली चीज़ें

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : जब मुर्दे को क़ब्र में उतार दिया जाता है तो उस के आ'माले सालेहा उसे घेर लेते हैं, अगर अ़ज़ाब मुर्दे के सर की त़रफ़ बढ़ता है तो तिलावते क़ुरआन रुकावट बनती है, अगर अ़ज़ाब पाउं की त़रफ़ से आता है तो नमाज़ का क़ियाम काम देता है, अगर हाथों की त़रफ़ से आता है तो हाथ कहते हैं : येह हमें सदक़ा और दुआ़ के लिये फैलाता था हमारी त़रफ़ से तो तेरे लिये कोई राह नहीं है। अगर अ़ज़ाब मुंह की त़रफ़ रुख़ करता है तो ज़िक्र और रोज़ा सामने आ जाते हैं यूंही नमाज़ भी उस की हिफ़ाज़त करती है जब कि सब्र एक कोने में मौजूद होता है और कहता है : अगर मैं कहीं से अ़ज़ाब के आगे बढ़ने की जगह देखूंगा तो सामने आ जाऊंगा। आ'माले सालेहा उस की त़रफ़ से ऐसे दिफ़ाअ़ करते हैं जैसे कोई शख़्स अपने भाई, औलाद या घरवालों की त़रफ़ से दिफ़ाअ़ करता है, फिर उसे कहा जाता है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी आराम गाह में बरकत दे ! सो जा, तेरे भाई और तेरे दोस्त (या'नी अच्छे आ'माल) बहुत ही ख़ूब हैं।(1)

नमाज़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ चलने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब मोमिन की रूह़ जिस्म से निकलती है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : "पाकीज़ा जिस्म से बर आमद होने वाली पाकीज़ा रूह़ है।" और जब वोह रूह़ अपने घर से क़ब्र की त़रफ़ चलती है तो इस बात को पसन्द करती है कि उसे जल्दी ले जाया जाए, जब उसे क़ब्र में रख देते हैं तो उस के सर की त़रफ़ अ़ज़ाब बढ़ता है तो उस के सजदे रुकावट बन जाते हैं, उस के पेट की त़रफ़ अ़ज़ाब आता है तो रोज़े ढाल बन जाते हैं, जब उस के हाथ को अ़ज़ाब पकड़ना चाहता है तो उस का सदक़ा ह़ाइल हो जाता है, उस के पाउं की त़रफ़ अ़ज़ाब बढ़ने लगता है तो उस मोमिन का नमाज़ में क़ियाम करना और मस्जिद की त़रफ़ चलना अ़ज़ाब और बन्दे के दरमियान ह़ाइल हो जाता है, इस के बा'द मोमिन कभी ख़ौफ़ज़दा नहीं होता, हां ! जिसे रब عَزَّوَجَلَّ चाहे तो वोह ज़रूर ख़ौफ़ज़दा होगा, फिर जब वोह अपना ठिकाना और अपने लिये तय्यार इन्आ़मात देखता है तो अ़र्ज़ करता है : इलाही ! मुझे मेरे ठिकाने तक पहुंचा दे। उसे कहा जाता है : तेरे कुछ

---

❶...ملحق کتاب القبور لابن ابی الدنیا، ص ۲۲۲، حدیث: ۵۲

भाई और बहनें हैं जो अभी तुझ तक नहीं पहुंचे लिहाज़ा इत्मीनान से सो जा। जब कि काफ़िर की रूह जब बदन से ख़ारिज होती है तो फ़िरिश्ते कहते हैं : गन्दे जिस्म से गन्दी रूह निकली है और जब उसे उस की क़ब्र की त़रफ़ ले जा रहे होते हैं तो वोह चाहता है कि येह आहिस्ता चलें और फिर चीख़ते हुवे कहता है : मुझे कहां ले जाते हो ? फिर जब उसे क़ब्र में रख दिया जाता है और वोह अपने लिये तय्यार अ़ज़ाब देखता है तो कहता है : मेरे रब ! मुझे वापस लौटा दे ताकि मैं तौबा और अच्छे अ़मल करूं। उसे कहा जाता है : तू ने जितनी उ़म्र गुज़ारनी थी गुज़ार ली। चुनान्चे, उस पर उस की क़ब्र तंग कर दी जाती है यहां तक कि उस की पस्लियां टूट फूट जाती हैं और उस की ह़ालत इन्तिहाई कमज़ोर होती है वोह ख़ौफ़ज़दा होता है और ज़मीन के सांप बिच्छू उस पर ह़म्ला आवर हो जाते हैं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि जब मोमिन की मौत का वक़्त आता है और वोह अपने आने वाले मुआ़मलात को देखता है तो शिद्दत से ख़्वाहिश करता है कि उस की रूह़ जल्दी निकले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात को पसन्द करता है, उस की रूह़ को आस्मान की बुलन्दी पर ले जाया जाता है और उस के पास दीगर अरवाहे़ मोमिनीन आती और अपने रिश्तेदारों के ह़ालात पूछती हैं, किसी के बारे में कहता है : मैं फ़ुलां को दुन्या में छोड़ आया हूं तो वोह खुश होती हैं और जब किसी का बताता है कि फ़ुलां मर चुका है तो वोह अरवाह़ कहती हैं : उस की रूह़ तो हमारे पास नहीं आई यक़ीनन वोह जहन्नमियों की रूहों के साथ कर दी गई होगी। मोमिन अपनी क़ब्र में बिठाया जाता है फिर उस से पूछा जाता है : तेरा रब कौन है ? वोह कहता है : मेरा रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है। सुवाल होता है : तेरे नबी कौन हैं ? वोह कहता है : ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। फिर पूछा जाता है : तेरा दीन क्या है ? वोह कहता है : मेरा दीन इस्लाम है। फिर उस की क़ब्र में एक दरवाज़ा खोल कर उसे कहा जाता है : अपना ठिकाना देख और इत्मीनान से सो जा। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे उठाएगा तो उसे ऐसे लगेगा जैसे अभी सोया था और जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के किसी दुश्मन को मौत आती है तो वोह आने वाला अ़ज़ाब देखता है और उस की रूह़ निकलना पसन्द नहीं करती, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भी उस की मुलाक़ात ना पसन्द फ़रमाता है, जब उसे क़ब्र में बिठा कर पूछा जाता है कि तेरा रब कौन है ? तो वोह कहता है : मैं नहीं जानता। उस से कहा जाता है : तू ने जाना ही नहीं। सुवाल होता है : तेरे नबी कौन

(1)...ملحق كتاب القبور لابن ابی الدنیا، ص۲۲۲، حدیث:۵۳

हैं ? वोह कहता है : मैं नहीं जानता । कहा जाता है : तू ने जाना ही नहीं । फिर सुवाल होता है : तेरा दीन क्या है ? वोह कहता है : मुझे मा'लूम नहीं । कहा जाता है : तू ने मा'लूम ही नहीं किया । चुनान्चे, उस की क़ब्र में जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाता है फिर उसे ऐसी मार मारी जाती है जिसे इन्सान व जिन्नात के सिवा सारी मख़्लूक़ सुनती है फिर हुक्म होता है मन्हूस की त़रह पड़ा रह । ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से पूछा गया : मन्हूस कौन होता है ? फ़रमाया : जिसे कीड़े मकोड़े और सांपों ने डसा हुवा हो । फिर उस की क़ब्र इतनी तंग कर दी जाती है कि पस्लियां टूट फूट जाती हैं ।(1)

उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत हैं कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा जब तुम मुन्कर नकीर को देखोगे ? अ़र्ज़ की : मुन्कर नकीर कौन हैं ? इरशाद फ़रमाया : क़ब्र का इम्तिह़ान लेने वाले दो फ़िरिश्ते हैं, उन की आवाज़ ज़ोरदार गरज की मानिन्द और निगाहें उचकने वाली बिजली की त़रह़ हैं, वोह अपने बालों को घसीटते और अपने अगले दांतों से ज़मीन को चीरते हुवे आएंगे, उन के हाथ में लोहे का एक डन्डा होगा जिसे तमाम मिना वाले मिल कर भी उठाना चाहें तो न उठा सकें ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुर्दा क़ब्र तक ले जाया जाता है और नेक शख़्स को क़ब्र में बिठाया जाता है तो वोह बे ख़ौफ़ और मुत़मइन होता है फिर उस से पूछा जाता है : तुम किस मज़हब में थे ? वोह कहता है : मैं इस्लाम में था । सुवाल होता है : येह कौन शख़्स हैं ? वोह कहता है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं जो हमारे पास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से रौशन निशानियां लाए तो हम ने उन की तस्दीक़ की । उस से पूछा जाता है : क्या तू ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को देखा है ? वोह कहता है : नहीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को देखने की त़ाक़त किसी में नहीं । चुनान्चे, जहन्नम की त़रफ़ शिगाफ़ डाला जाता है तो वोह देखता है उस की आग एक दूसरे को खा रही है उसे कहा जाता है : उस की त़रफ़ देख जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे बचाया है ।

1... مسند بزار، مسند ابو مالک الاشجعی، ۱۵۴/۱۷، حدیث: ۹۷۲۰، دون بعض الفاظ

2... ملحق کتاب القبور لابن ابی الدنیا، ص ۲۲۳، حدیث: ۵۴

फिर जन्नत की जानिब एक शिगाफ़ किया जाता है तो वोह उस की ख़ूब सूरती और ने'मतों को देखता है, उस से कहा जाता है : येह तेरा ठिकाना है, तू यक़ीन पर मरा और اِنْ شَآءَاللہ इसी पर उठाया जाएगा। जब कि बुरे शख़्स को ख़ौफ़ज़दा हालत में क़ब्र में बिठाया जाता है और पूछा जाता है : तू किस दीन में था ? वोह कहता है : मैं नहीं जानता। फिर सुवाल होता है : येह शख़्स कौन हैं ? वोह कहता है : मैं तो जो लोगों को कहते सुनता था वोही कहता था। चुनान्चे, जन्नत की जानिब एक शिगाफ़ डाला जाता है वोह उस की ख़ूब सूरती और ने'मतें देखता है तो उस से कहा जाता है : देख इस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे फैर दिया है। फिर दोज़ख़ की त़रफ़ एक शिगाफ़ किया जाता है वोह देखता है कि उस की आग एक दूसरे को खा रही है, उस से कहा जाता है : येही तेरा ठिकाना है, तू शक पर रहा, शक पर मरा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो शक पर ही तुझे उठाया जाएगा।(1)

ह़दीसे अस्मा

ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते अबू बक्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) बयान करती हैं कि मैं ने हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : बेशक मेरी त़रफ़ वह़्य की गई है कि तुम लोग अपनी क़ब्रों में आज़माए जाओगे, पूछा जाएगा : इस शख़्स के बारे में क्या जानते हो : मुर्दा मोमिन हुवा तो कहेगा : येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं जो हमारे पास रौशन निशानियां और हिदायत लाए तो हम ने क़बूल किया और पैरवी की। कहा जाएगा : हम जानते थे कि तू मोमिन है अब बख़ैरो आ़फ़िय्यत सो जा। मुर्दा मुनाफ़िक़ या शक करने वाला हुवा तो कहेगा : मैं नहीं जानता, बस जो लोगों को कहते सुनता था वोही कहता था।(2)

बहरा चौपाया

ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि आक़ाए दो जहां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुर्दा अगर मोमिन हो तो उस की नमाज़, रोज़ा उसे घेर लेते हैं, अब अ़ज़ाब का फ़िरिश्ता नमाज़ की जानिब से आए तो वोह उसे वापस लौटा देती है और रोज़े की त़रफ़ से आए

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر القبر والبلی، ۴/۵۰۰، حدیث: ۴۲۵۸

2 ...بخاری، کتاب الوضوء، باب من لم یتوضا الامن الغشی المثقل، ۱/۸۷، حدیث: ۱۸۴

مسند امام احمد، حدیث اسماء بنت ابی بکر، ۱۰/۲۶۷، حدیث: ۲۶۹۹۱

तो वोह भी वापस कर देता है, फिर उसे कहा जाता है : बैठ जाओ। वोह बैठ जाता है तो उस से पूछा जाता है : तुम उस शख़्स के बारे में क्या कहते हो ? या'नी नबी صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़। वोह पूछता है : कौन ? कहा जाता है : ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहता है ? वोह कहता है : मैं गवाही देता हूं कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। पूछा जाता है : तू ने कैसे पहचाना ? वोह कहता है : मैं येही गवाही देता था कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं। कहा जाता है : तू इसी पर ज़िन्दा रहा, इसी पर मरा और इसी पर उठाया जाएगा। अगर मुर्दा काफ़िर या फ़ाजिर हो तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते को रोकने के लिये कोई चीज़ नहीं होती, उसे बिठा कर पूछा जाता है : इस शख़्स के बारे में क्या कहता है ? वोह पूछता है : कौन शख़्स ? फ़िरिश्ता कहता है : ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم। मुर्दा कहता है : ब ख़ुदा ! मैं नहीं जानता, मैं तो लोगों को जो कहते सुनता था वोही कहता था। फ़िरिश्ता कहता है : तू इसी पर ज़िन्दा रहा, इसी पर मरा और इसी पर उठाया जाएगा। चुनान्चे, उस की क़ब्र में एक चौपाया मुसल्लत़ कर दिया जाता है जिस के पास एक दुर्रा होता है जिस के दोनों त़रफ़ आग के ऐसे शो'ले होते हैं जैसे ऊंट की गर्दन पर बाल, वोह उस दुर्रे से उसे मारेगा और उस की आवाज़ भी नहीं सुन सकेगा कि उस पर रह़्म आए।(1)

ह़दीसे आ़इशा

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : एक यहूदिया ने मेरे दरवाज़े पर आ कर यूं खाना मांगा : मुझे खाना खिलाओ ख़ुदा तुम्हें दज्जाल के फ़ित्ने और क़ब्र के फ़ित्ने से बचाए। मैं ने उसे अपने सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के आने तक रोक लिया जब आप तशरीफ़ लाए तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह यहूदिया क्या कहती है ? इरशाद फ़रमाया : क्या कह रही है ? मैं ने अ़र्ज़ की : येह कह रही है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें दज्जाल और अ़ज़ाबे क़ब्र के फ़ित्ने से बचाए। आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने हाथ ख़ूब बुलन्द किये और दज्जाल और अ़ज़ाबे क़ब्र के फ़ित्ने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगी फिर इरशाद फ़रमाया : दज्जाल का फ़ित्ना वोह है जिस से हर नबी ने अपनी उम्मत को डराया है और मैं तुम्हें उस से एक ऐसी बात के ज़रीए़ डराता जिस बात से किसी नबी ने अपनी उम्मत को

---

(1)...مسند امام احمد، حدیث اسماء بنت ابی بکر، ۱۰/۲۷۹، حدیث: ۲۷۰۴۴

नहीं डराया, दज्जाल काना है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसा नहीं है, दज्जाल की दोनों आंखों के माबैन काफ़िर लिखा हुवा है जिसे हर मोमिन पढ़ लेगा और जहां तक क़ब्र के फ़ितने की बात है तो मेरे ज़रीए तुम्हारा इम्तिहान होगा नेक शख़्स को जब क़ब्र में बिठाया जाएगा तो वोह बे ख़ौफ़ व पुर सुकून होगा फिर उस से कहा जाएगा : तुम किस मज़हब पर थे ? वोह कहेगा : इस्लाम पर। सुवाल होगा : येह कौन शख़्स हैं जो तुम्हारे दरमियान थे ? वोह कहेगा : **अल्लाह** के रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास से हमारे पास रौशन निशानियां लाए तो हम ने उन की तस्दीक़ की। चुनान्चे, जानिबे दोज़ख़ एक शिगाफ़ पड़ेगा तो वोह देखेगा कि वहां आग आग को खा रही है। कहा जाएगा : देखो ! इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हें बचाया है। फिर जन्नत की त़रफ़ शिगाफ़ डाला जाएगा और कहा जाएगा : येह तुम्हारा ठिकाना है, तुम यक़ीन पर रहे, यक़ीन पर मरे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो यक़ीन पर ही उठाए जाओगे। जब कि गुनाहगार अपनी क़ब्र में ख़ौफ़ व घबराहट की ह़ालत में बैठेगा, पूछा जाएगा : किस मज़हब में थे ? बोलेगा : मैं नहीं जानता। फिर सुवाल होगा : येह कौन शख़्स हैं जो तुम्हारे दरमियान मबऊ़स हुवे ? वोह कहेगा : मैं लोगों को जो कहते सुनता था वोही कहता था। चुनान्चे, जन्नत की त़रफ़ से ह़िजाब हटेगा और वोह जन्नत के सब्ज़ा ज़ार और ने'मतों को देख रहा होगा कि उस से कहा जाएगा : देख **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझे इस से फेर दिया है। फिर दोज़ख़ की त़रफ़ शिगाफ़ होगा तो वोह देखेगा कि आग आग को खा रही है, उस से कहा जाएगा : येही तेरा ठिकाना है, तू शक पर रहा, शक पर मरा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो शक ही पर उठाया जाएगा। फिर उसे अ़ज़ाब होगा।(1)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह उम्मत अपनी क़ब्रों में आज़माई जाएगी मेरा क्या बनेगा मैं तो एक कमज़ोर औ़रत हूं ? आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ (پ۱۳، ابراهيم:۲۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में।*(2)

---

❶...مسند امام احمد، مسند السيدة عائشة، ۹/۴۶۹، حديث: ۲۵۱۴۳

❷...مجمع الزوائد، كتاب الجنائز، باب السؤال في القبر، ۳/۱۷۲، حديث: ۴۲۷۲

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا रिवायत करती हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरे ज़रीए क़ब्र वालों को आज़माया जाता है और उसी के मुतअ़ल्लिक़ येह आयते त़य्यिबा नाज़िल हुई है :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ (پ۱۳، ابراهيم: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में ।[1]

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी है कि रसूले खुदा, शफ़ीए रोज़े जज़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मोमिन का जनाज़ा उठता है तो वोह कहता है : तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वासित़ा मुझे जल्दी ले कर चलो । जब उसे क़ब्र में रख दिया जाता है तो उस का अ़मल उसे घेर लेता है, नमाज़ उस की दाईं और रोज़ा बाईं जानिब होता है और दीगर नेक आ'माल क़दमों के पास होते हैं, (अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आते हैं तो) नमाज़ कहती है : मेरी त़रफ़ से तुम्हें रास्ता नहीं मिलेगा क्यूंकि येह मुझे अदा करता था । बाईं जानिब से आते हैं तो रोज़ा कहता है : येह रोज़ा रख कर प्यासा रहा करता था लिहाज़ा यहां भी तुम्हारे लिये कोई रास्ता नहीं । क़दमों की त़रफ़ से आते हैं तो नेक आ'माल बन्दे का दिफ़ाअ़ करते हुवे उन्हें कोई रास्ता नहीं देते और अगर मुआ़मला बर अ़क्स हो तो वोह (अ़ज़ाब के सबब) चिल्लाता है और उस की आवाज़ सिवाए इन्सान (व जिन्नात) के हर चीज़ सुनती है क्यूंकि अगर येह उस की आवाज़ सुन लें तो बेहोश हो जाएं या घबरा जाएं ।[2]

मय्यित की त़रफ़ से खाना खिलाने का फ़ाएदा

हज़रते सय्यिदुना त़ाऊस बिन कैसान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुर्दे अपनी क़ब्रों में सात दिन तक आज़्माए जाते हैं लिहाज़ा वोह येह पसन्द करते हैं कि इन दिनों में उन की त़रफ़ से खाना खिलाया जाए ।[3]

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने एक सहाबी की तदफ़ीन के बा'द क़ब्र के पास येह पढ़ा : اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

1 ...اثبات عذاب القبر للبيهقي، ص۳۲، حديث:۱۱

2 ...ملحق كتاب القبور لابن ابي الدنيا، ص۲۲۳، حديث:۵۵

3 ...حلية الاولياء، طاوس بن كيسان، ۴/۱۲، رقم:۴۵۹۳

या'नी हम अल्लाह का माल हैं और हम ने उसी की त़रफ़ लौटना है, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! येह तेरे पास ह़ाज़िर हुवा है और तेरी बारगाह ही सब से बेहतरीन मन्ज़िल है, इस की क़ब्र को कुशादा कर दे इस की रूह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े खोल दे और इसे अच्छी क़बूलिय्यत से सरफ़राज़ फ़रमा और सुवालात के वक़्त इस की गोयाई को साबित रख।(1)

क़ब्र में शैत़ाने लईन का आना

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : जब मुर्दे से पूछा जाता है कि तेरा रब कौन है ? तो शैत़ाने लईन एक शक्ल इख़्तियार कर के अपनी त़रफ़ इशारा करते हुवे कहता है : मैं तेरा रब हूं।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं कि इस की ताईद दफ़्ने मय्यित के वक़्त हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस दुआ से होती है : اَللّٰهُمَّ اَجِرْهُ مِنَ الشَّيْطَان या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे शैत़ान से बचा।(2) येह ह़दीस "दफ़्ने मय्यित के बयान" में गुज़र चुकी है और अगर शैत़ान की क़ब्र तक रसाई न होती तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह दुआ न करते।

क़ब्र के इम्तिह़ान की तय्यारी

ह़ज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد से मरवी है कि मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपनी दलील सीखो क्यूंकि तुम से पूछा जाएगा। इस फ़रमान का ऐसा असर हुवा कि अन्सार में से जब किसी की मौत क़रीब आती तो वोह उसे नकीरैन के सुवालों के जवाबात सिखाते और बच्चा जब अ़क़्ल मन्द हो जाता तो उसे भी कहते कि जब तुम से पूछा जाए : तुम्हारा रब कौन है ? तो तुम कहना : मेरा रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है। पूछा जाए : तुम्हारा दीन क्या है ? तो कहना : मेरा दीन इस्लाम है और येह सुवाल हो कि तुम्हारे नबी कौन हैं ? तो कहना : मेरे नबी मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।(3)

---

1 ...حلية الاولياء، عطاء بن ميسرة، ۵/۲۲۸، حديث: ۷۴۲۹

2 ...نوادر الاصول، الاصل التاسع والسبعون والمائتان، ۲/۱۲۱۹، تحت الحديث: ۱۵۱۵

3 ...درمنثور، سورة ابراهيم، تحت الآية: ۲۷، ۵/۳۸

हज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन अम्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : मेरी क़ब्र में दो सख़्त मिज़ाज फ़िरिश्ते आए और मुझ से पूछा : तुम्हारा दीन क्या है ? तुम्हारा रब कौन है ? और तुम्हारे नबी कौन हैं ? मैं ने अपनी सफ़ेद दाढ़ी पकड़ कर कहा : मुझ जैसे से ऐसा कहा जाएगा हालांकि मैं ने 80 साल लोगों को तुम्हारे सुवालात के जवाबात सिखाए हैं । चुनान्चे, वोह चले गए और जाते जाते पूछा : तुम ने जरीर बिन उ़स्मान से रिवायत लिखी है ? मैं ने कहा : जी हां । उन्हों ने कहा : वोह हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से बुग़्ज़ रखता था लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ना पसन्द फ़रमाता है[1] ।[2]

हज़रते सय्यिदुना हौसरह बिन मुहम्मद मिन्क़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देखा तो वोह कह रहे थे : मुन्कर नकीर मेरे पास आए और मुझे बिठा कर पूछा कि तुम्हारा रब कौन है ? तुम्हारा दीन क्या है और तुम्हारे नबी कौन हैं ? मैं ने अपनी सफ़ेद दाढ़ी से मिट्टी झाड़ते हुवे कहा : मुझ जैसे से पूछा जा रहा है, मैं यज़ीद बिन हारून हूं और मैं दुन्या में लोगों को 60 साल तक इन के जवाबात सिखाता रहा हूं । एक फ़िरिश्ते ने कहा : येह सच कहता है । फिर कहने लगे : दुल्हन की तरह सो जाओ आज के बा'द तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं है ।[3]

क़ब्र के इम्तिहान में कामयाबी

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन त़रीफ़ बजली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मेरे भाई की वफ़ात हो गई तो उन की तदफ़ीन के बा'द मैं ने अपना सर उन की क़ब्र पर रख दिया उसी अस्ना में उन की आवाज़ मेरे बाएं कान में पड़ी वोह कह रहे थे : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ । फिर किसी ने कहा : तुम्हारा दीन क्या है ? तो भाई की आवाज़ आई : इस्लाम ।[4]

1....शर्हुस्सुदूर के नुस्ख़ों में "जरीर बिन उ़स्मान और हज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه" मज़्कूर है जब कि कुतुबे आ'लाम में : **जरीर** की जगह **हरीज़** और **हज़रते उ़स्मान** की जगह **हज़रते अ़ली** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا मज़्कूर है । (سیراعلام النبلاء للذھبی، رقم:۱۳۳۲ یزید بن ھارون، ۸/۲۳۲)

2...تفسیر قرطبی، سورۃ ابراھیم، تحت الآیۃ:۲۷، جزء۹، ۵/۲۵۶، جریر بدلہ حریز، عثمان بدلہ علی

3...شرح اصول اعتقاد اھل السنۃ، سیاق ما روی عن النبی فی ان المسلمین...الخ، ۲/۹۷۰، حدیث:۲۱۴۷

4...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/۸۴، حدیث:۱۳۳

हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन अ़ब्दुल करीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّحِيْم फ़रमाते हैं कि एक शख़्स जिस की बीनाई काफ़ी कमज़ोर थी वोह कहता है : मेरे भाई का इन्तिक़ाल हुवा तो हम ने उसे दफ़्ना दिया, जब लोग चले गए तो मैं ने भाई की क़ब्र पर सर रख दिया, अचानक मुझे क़ब्र के अन्दर से आवाज़ आई : तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है और तेरे नबी कौन हैं ? मैं ने अपने भाई की आवाज़ सुनी, उस ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरा रब है और हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे नबी हैं। इतने में क़ब्र के अन्दर से सूरज की किरनों जैसी रौशनी मेरे कानों की त़रफ़ बुलन्द हुई तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए और मैं वहां से हट गया।[1]

हज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा भाई फ़ौत हो गया तो मेरे पहुंचने से पहले ही उसे दफ़्न कर दिया गया। चुनान्चे, मैं उस की क़ब्र पर गया और कान लगा लिये अचानक उस की आवाज़ आई : मेरा रब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है और मेरा दीन इस्लाम है।[2]

सहाबा का वसीला क़ब्र में काम आ गया

मुफ़स्सिरे क़ुरआन हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम बिन हिबतुल्लाह बिन सलामा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : हमारे एक उस्तादे मोह़्तरम के एक शागिर्द ने वफ़ात पाई तो उस्ताद साहिब ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उस ने कहा : मुझे बख़्श दिया गया है। उस्ताद साहिब ने दरयाफ़्त फ़रमाया : नकीरैन के साथ कैसी गुज़री ? उस ने कहा : उस्ताद साहिब ! जब नकीरैन ने मुझे बिठा कर पूछा कि तुम्हारा रब कौन है और तुम्हारे नबी कौन हैं ? तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे इल्हाम फ़रमाया कि मैं उन से कहूं : हज़रते अबू बक्र और हज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا के वसीले से मुझे छोड़ दो। पस एक फ़िरिश्ते ने दूसरे से कहा : इस ने हमें बहुत बड़ी क़सम दी है, लिहाज़ा इसे छोड़ दो। चुनान्चे, वोह दोनों मुझे छोड़ कर चले गए।[3]

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन नस्र साइग़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे गिरामी को

1...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب القبور، جامع ذكر القبور، ٦/٨٣، حديث: ١٣٣

2...اهوال القبور، الباب الاول، ص ٣٧

3...المنتظم لابن جوزی، رقم: ٣٠٩٢، هبة الله بن سلامة، ١٥/١٣٨

नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का बहुत शौक़ था ह़त्ता कि जिसे न जानते उस की नमाज़े जनाज़ा में भी शरीक होते, एक दिन मुझ से फ़रमाया : बेटा ! मैं एक जनाज़े में शरीक हुवा तो उसे दफ़्न करने दो शख़्स क़ब्र में उतरे, एक बाहर निकल आया और दूसरा अभी अन्दर ही था कि लोगों ने मिट्टी डालना शुरूअ़ कर दी, मैं ने कहा : तुम लोग मुर्दा के साथ ज़िन्दा को भी दफ़्न करते हो ? उन्हों ने कहा : क़ब्र में तो कोई ज़िन्दा नहीं है। मैं ने सोचा शायद मुझे कोई शुबा हुवा है, जब मैं वापस हुवा तो मेरे दिल ने कहा : यक़ीनन मैं ने दो आदमियों को जाते हुवे और एक को बाहर निकलते हुवे देखा है, मैं चैन से नहीं रहूंगा जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस राज़ को मुझ पर मुन्कशिफ़ न फ़रमा दे। चुनान्चे, मैं क़ब्र के पास गया और 10 मरतबा सूरए يٰسٓ और सूरए मुल्क तिलावत कर के रोते हुवे दुआ़ करने लगा कि ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! जो कुछ मैं ने देखा उसे मुझ पर वाज़ेह़ फ़रमा क्यूंकि मैं अपनी अ़क्ल और दीन के मुआ़मले में ख़ौफ़ का शिकार हूं। इतने में क़ब्र खुली, एक शख़्स बाहर निकला और पीठ फेर कर चल पड़ा। मैं ने कहा : ओ जाने वाले ! तुझे तेरे मा'बूद की क़सम ! ठहर जा, मैं ने तुझ से कुछ पूछना है। वोह मेरी त़रफ़ मुतवज्जेह न हुवा तो मैं ने दूसरी और फिर तीसरी मरतबा भी उसे येही कहा, पस वोह मेरी त़रफ़ मुड़ा और पूछा : तुम नस्र साइग़ हो ? मैं ने कहा : हां। उस ने कहा : मुझे नहीं पहचानते ? मैं ने कहा : नहीं। कहने लगा : हम रह़मत के फ़िरिश्ते हैं और हमें अह्ले सुन्नत पर मुक़र्रर किया गया है कि जब उन्हें क़ब्रों में रखा जाता है तो हम उन्हें हु़ज्जत (या'नी सुवालाते क़ब्र के जवाबात) सिखाते हैं। इतना कहने के बा'द वोह ग़ाइब हो गया।[1]

वली की ख़िदमत क़ब्र में काम आ गई

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार क़ूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नासिरुद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن के घर के पास था कि इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ बहाउद्दीन इख़मीमी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तशरीफ़ लाए, मैं ने उन की पोस्तीन अपने कांधों पर रख ली, उन्हों ने मुझे बताया कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू यज़ीद बिस्त़ामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِى का ख़ादिम उन की पोस्तीन अपने कांधों पर उठाता था और वोह एक नेक शख़्स था, एक मरतबा मुन्कर नकीर के सुवालात की बात चली तो उस मग़रिबी ख़ादिम ने कहा : अगर मुझ से नकीरैन ने सुवाल किये तो

1...شرح اصول اعتقاد اهل السنة، سياق ما روی عن النبی فی ان المسلمين...الخ، ۹۲۹/۲، حديث: ۲۱۴۵

मैं उन्हें जवाब दे लूंगा। लोगों ने कहा : हमें कैसे पता चलेगा कि तुम ने जवाब दे दिया है ? उस ने कहा : मेरी क़ब्र पर बैठ जाना, ख़ुद सुन लोगे। चुनान्चे, जब उस की वफ़ात हुई तो तदफ़ीन के बा'द लोग उस की क़ब्र के क़रीब बैठ गए और उन्हों ने सुना कि वोह नकीरैन से कह रहा है : क्या तुम मुझ से सुवालात करते हो हालांकि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی की पोस्तीन उठाने वाला हूं। येह जवाब सुन कर नकीरैन पलट गए।(1)

चन्द फ़वाइद का बयान

पहला फ़ाएदा : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरत़ुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی ने फ़रमाया : बा'ज़ रिवायतों में दो फ़िरिश्तों के और बा'ज़ में एक फ़िरिश्ते के सुवाल करने का ज़िक्र है। इन में कोई तआ़रुज़ नहीं है बल्कि येह लोगों के ए'तिबार से है किसी के पास एक फ़िरिश्ता आता है और किसी के पास दोनों एक साथ आते हैं और लोगों के जाते ही एक साथ सुवालात करते हैं ताकि उस के गुनाहों के ह़िसाब से उस पर घबराहट त़ारी हो जाए और किसी के पास लोगों के जाने से पहले आते हैं ताकि लोगों से उन्सिय्यत की वज्ह से उस पर आसानी रहे, किसी के पास एक ही फ़िरिश्ता आता है ताकि उस पर नर्मी हो और अपने नेक आ'माल के सबब जवाबात में आसानी रहे, येह भी एह़तिमाल है कि फ़िरिश्ते तो दो ही आते हों लेकिन सुवाल एक करता हो इस मा'ना पर जिन रिवायतों में एक का ज़िक्र है वोह इसी पर मह़मूल होगी।(2)

(ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं) मैं कहता हूं : येह दूसरा मा'ना ही दुरुस्त है क्यूंकि अक्सर अह़ादीस में दो फ़िरिश्तों का ज़िक्र मौजूद है।

दूसरा फ़ाएदा : सुवाल जवाब की कैफ़िय्यत अह़ादीस में मुख़्तलिफ़ बयान हुई है और येह भी अश्ख़ास के लिह़ाज़ से है। किसी से उस के बा'ज़ अ़क़ाइद के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा और किसी से तमाम के बारे में पूछा जाएगा और यहां येह एह़तिमाल भी हो सकता है कि बा'ज़ रावियों ने एक आध सुवाल ज़िक्र करने पर इक्तिफ़ा किया हो और दूसरे बा'ज़ ने मुकम्मल बयान कर दिया।(3)

---

1 ...روح البیان، سورۃ النحل، تحت الایۃ: ۱۲۳، ۵/ ۹۵

2 ...التذکرۃ للقرطبی، باب فی سوال الملکین للعبد...الخ، ص ۱۱۵

3 ...التذکرۃ للقرطبی، باب فی سوال الملکین للعبد...الخ، ص ۱۱۵

मैं कहता हूं : येह दूसरी वज्ह दुरुस्त है क्यूंकि ज़ियादा तर अहादीस का इसी पर इत्तिफ़ाक़ है बस अल्फ़ाज़ में इख़्तिलाफ़ है ख़ुसूसन हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू दावूद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी रिवायत में है कि मुर्दे से इस के बा'द कुछ नहीं पूछा जाएगा[1] और हज़रते सय्यिदुना इब्ने मरदवया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की रिवायत में भी येही है कि इस के बा'द उस से किसी शै का सुवाल नहीं होगा या'नी अक़ाइद के इलावा जिन चीज़ों का वोह मुकल्लफ़ था उस के मुतअ़ल्लिक़ नहीं पूछा जाएगा और हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से जो रिवायत बयान की है उस में तो सराहत है कि इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ (پ۱۳، ابراهيم: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह साबित रखता है ईमान वालों को ह़क़ बात पर दुन्या की ज़िन्दगी में और आख़िरत में ।*

में शहादत ही मुराद है और मौत के बा'द उसी का सुवाल होगा । हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा गया शहादत क्या है ? तो उन्हों ने फ़रमाया : मुर्दों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को एक मानने और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल होगा ।[2]

तीसरा फ़ाएदा : (हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं) मैं कहता हूं : एक रिवायत में येह आया है कि मुर्दे से एक ही मजलिस में तीन बार सुवालात किये जाएंगे जब कि दीगर रिवायात में ऐसा कोई ज़िक्र नहीं, लिहाज़ा इसे भी मा क़ब्ल एह़तिमाल पर मह़मूल किया जाएगा या फिर कहा जाएगा कि मुख़्तलिफ़ अश्ख़ास के ए'तिबार से ह़ाल भी मुख़्तलिफ़ होगा जैसा कि हज़रते सय्यिदुना त़ाऊस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه की येह रिवायत पीछे गुज़री है कि लोग अपनी क़ब्रों में सात दिन तक आज़माए जाएंगे ।

चौथा फ़ाएदा : हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه का कहना है : जिसे दफ़्न न किया गया हो उस के साथ भी सुवालात और अ़ज़ाब का मुआ़मला होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जिन्नो इन्स की निगाहों से छुपा लेता है जैसा कि उस ने फ़िरिश्तों और शैत़ानों को उन की निगाहों से छुपा रखा है ।[3]

---

❶...ابوداود، كتاب السنة، باب في مسالة في القبر وعذاب القبر، ۴/۳۱۵، حديث: ۴۷۵۱

❷...اثبات عذاب القبر للبيهقي، ص۳۱، حديث: ۱۰

❸...التذكرة للقرطبي، باب الرد على الملحدة، الفصل الثالث، ص۱۲۲

बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : जिसे सूली दी गई उस में दोबारा ज़िन्दगी डाली जाती है लेकिन हमें इस का शुऊ़र नहीं होता जिस त़रह़ कि हम बेहोश को मुर्दा ही ख़याल करते हैं और सूलीज़दा पर हवा ऐसे तंग हो जाती है जैसे क़ब्र दबोचती है। जिस के दिल में ज़रा भी ईमान हुवा वोह इन में से कुछ भी ना पसन्द नहीं करेगा। इसी त़रह़ जिस शख़्स के टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं उस के तमाम आ'ज़ा में या फिर बा'ज़ अजज़ा में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़िन्दगी पैदा फ़रमाता है और उन्ही से सुवालात होते हैं येह बात ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़रमैन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बयान फ़रमाई है। बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया : येह सब कुछ होना उस नस्ल से ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ैज़ व बईद नहीं जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुश्त से निकाला और उन्हें ख़ुद पर यूं गवाह किया कि اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ "या'नी क्या मैं तुम्हारा रब नहीं" तो सब बोले : بَلٰی "क्यूं नहीं"[1],[2]।

पांचवां फ़ाएदा : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : सुवालात मोमिन से होंगे या फिर उस मुनाफ़िक़ से जो ख़ुद को ज़ाहिर में मुसलमान कहता हो लेकिन काफ़िर से नहीं होंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरत़ुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی और इब्ने क़य्यिम ने इन से इख़्तिलाफ़ करते हुवे कहा : अह़ादीसे त़य्यिबा में सराह़त है कि काफ़िर और मुनाफ़िक़ से भी सुवालात होंगे।

मैं कहता हूं : इन दोनों का क़ौल दुरुस्त नहीं, क्यूंकि अह़ादीसे मुबारका ने इन को एक साथ जम्अ़ नहीं किया कहीं पर मुनाफ़िक़ का ज़िक्र आया है और कहीं इस की जगह काफ़िर कहा गया है और वहां भी काफ़िर से मुराद मुनाफ़िक़ ही है इस की दलील ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की वोह ह़दीस है जिस में اَمَّا الْمُنَافِقُ اَوِ الْمُرْتَابُ "या'नी मुनाफ़िक़ या शक करने वाला" के अल्फ़ाज़ आए हैं।[3] इस में काफ़िर का ज़िक्र नहीं है यूंही ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ह़दीस के आख़िर में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्माद और ह़ज़रते

1 ...(پ۹، الاعراف:۱۷۲)

2 ...التذکرة للقرطبی، باب الرد علی الملحدة، الفصل الثالث، ص ۱۲۲، ۱۲۳

3 ...بخاری، کتاب الوضوء، باب من لم یتوضا الامن الغشی المثقل، ۱/ ۸۷، حدیث: ۱۸۴
مسند امام احمد، حدیث اسماء بنت ابی بکر، ۱۰/ ۲۶۷، حدیث: ۲۶۹۹۱

सय्यिदुना अबू उ़मर ज़रीर رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْهِما की गुफ़्त्गू में भी इसी की सराह़त है।[1]

छटा फ़ाएदा : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : सुवालाते क़ब्र इस उम्मत के साथ ख़ास हैं क्यूंकि पहली उम्मतें जब रसूलों को झुटलाती थीं तो रसूल उन्हें छोड़ देते थे और उम्मती जल्द ही अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाते थे लेकिन जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने मह़बूब को रह़मत बना कर मबऊ़स फ़रमाया तो लोगों से अ़ज़ाब रोक दिया गया और उन को तल्वार अ़ता की गई ताकि जिस ने इस की हैबत से इस्लाम में दाख़िल होना है वोह हो जाए फिर उस के दिल में ईमान को मज़बूत़ फ़रमा दिया जाए। चुनान्चे, यहीं से निफ़ाक़ ज़ाहिर हुवा लोग कुफ़्र को छुपा कर ख़ुद को मोमिन ज़ाहिर करने लगे यूं वोह मुसलमानों से छुपे रहे, पस जब मुनाफ़िक़ मरते हैं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दो सख़्त फ़िरिश्तों या'नी मुन्कर नकीर को क़ब्र में उन के पास भेजता है ताकि सुवालाते क़ब्र के ज़रीए़ उन की छुपी हुई बात ज़ाहिर हो जाए और ख़बीस और त़य्यिब में फ़र्क़ व तमीज़ हो जाए।[2] बा'ज़ उ़लमा ने इन से इख़्तिलाफ़ करते हुवे कहा कि सुवालाते क़ब्र इस उम्मत के इलावा दूसरी उम्मतों के लिये भी थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुल बर्र رَحْمَةُاللهِ تعالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : अ़ज़ाबे क़ब्र के इस उम्मत के साथ ख़ास होने पर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दर्जे ज़ैल फ़रामीन दलील हैं : (1) बेशक येह उम्मत अपनी क़ब्रों में आज़माई जाएगी।[3] (2) मुझे वह़्य की गई है कि तुम अपनी क़ब्रों में आज़माए जाओगे।[4] (3) मेरे ज़रीए़ तुम्हारी आज़माइश होगी और मेरे मुतअ़ल्लिक़ तुम से पूछा जाएगा।[5]

मुबश्शिर और बशीर

सातवां फ़ाएदा : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى येह भी फ़रमाते हैं : मुन्कर नकीर को (अह्ले अ़रब) "فَتَّانِي الْقَبْر" इस लिये कहते हैं क्यूंकि उन के सुवाल में झिड़क और उन की त़बीअ़त में सख़्ती पाई जाती है और उन्हें मुन्कर नकीर इस लिये कहते हैं कि उन की शक्लें इन्सानों, फ़िरिश्तों, चौपाइयों और कीड़े मकोड़ों से बिल्कुल जुदा हैं बल्कि

1 ...معجم اوسط، ٦/ ٢٧٠، حديث: ٩٣٣٨

2 ...نوادر الاصول، الاصل الحادی والخمسون والمائتان، ٢/ ١٠٢٠، تحت الحديث: ١٣٢٥، بتغير

3 ...مسند امام احمد، مسند ابي سعيد الخدری، ٤/ ٨، حديث: ١١٠٠٠

4 ...بخاری، كتاب العلم، باب من اجاب الفتيا باشارة اليد والراس، ١/ ٤٨، حديث: ٨٦

5 ...مسند امام احمد، مسند السيدة عائشة، ٩/ ٤٦٩، حديث: ٢٥١٤٣

वोह अ़जीब मख़्लूक़ है और देखने वालों को भली नहीं लगती जब कि मोमिनीन के लिये बत़ौरे इ़ज़्ज़त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की सूरत को देखने और साबित क़दम रहने के लाइक़ बना देता है और क़ियामत से क़ब्ल बरज़ख़ ही में मुनाफ़िक़ की ज़िल्लत और उन का पर्दा चाक करने के लिये वोह पहली सूरत होती है ताकि मुनाफ़िक़ के लिये यहां भी अ़ज़ाब हो।(1) हमारे शाफ़ेई उ़लमा में से ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने यूनुस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं : मोमिन के पास आने वाले दो फ़िरिश्तों के नाम : मुबश्शिर और बशीर है।

आठवां फ़ाएदा : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने फ़रमाया : अगर येह कहा जाए कि तमाम मुर्दों को जो कि दूर दराज़ अ़लाक़ों में होते हैं उन्हें येह दो फ़िरिश्ते एक साथ कैसे पुकारते हैं ? तो इस का जवाब येह है कि उन का अ़ज़ीम जुस्सा (जसामत) इस का तक़ाज़ा करता है पस वोह एक ही मरतबा एक ही पुकार कसीर मख़्लूक़ को करते हैं तो उन में से हर एक येह समझता है कि मुझे ही पुकारा गया है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुर्दों के माबैन रुकावट पैदा कर देता है यूं वोह एक दूसरे के जवाबात नहीं सुनते।(2)

मैं कहता हूं : मुमकिन है इस काम के लिये मज़ीद फ़िरिश्ते भी हों जैसा कि मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते वग़ैरा होते हैं और हमारे शाफ़ेई उ़लमा में से ह़ज़रते सय्यिदुना ह़लीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने भी येही क़ौल किया है। चुनान्चे, वोह अपनी किताब "अल मिन्हाज" में फ़रमाते हैं : लगता येह है कि सुवालाते क़ब्र करने वाले फ़िरिश्ते कसीर हैं जिन में से किसी को मुन्कर और किसी को नकीर कहा जाता है पस हर एक की क़ब्र में दो भेजे जाते हैं जैसा कि उस पर नामए आ'माल लिखने वाले जुदा जुदा दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं।

नवां फ़ाएदा : गुज़श्ता अह़ादीसे मुबारका में मोमिन की क़ब्र की वुस्अ़त व कुशादगी मुख़्तलिफ़ बयान हुई है। दर अस्ल अह़ादीस में कोई तआ़रुज़ नहीं है क्यूंकि हर मोमिन की क़ब्र उस की शान के मुत़ाबिक़ कुशादा होती है।

दसवां फ़ाएदा : इस फ़ाएदे के तह़्त चन्द सुवालात हैं जो ह़ाफ़िज़ुल अ़स्र, शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल फ़ज़्ल इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى से किये गए, (सुवालात मअ़ जवाबात दर्जे ज़ैल हैं) :

---

(1)...نوادر الاصول، الاصل الحادی والخمسون والمائتان، ۱۰۱۹/۲، تحت الحدیث: ۱۳۲۳

(2)...التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی صفۃ الملکین، ص۱۲۷

सुवाल : मय्यित को सुवालात के वक़्त बिठा दिया जाएगा या लेटे लेटे ही सुवालात होंगे ?

जवाब : बिठाया जाएगा।

सुवाल : सुवालात के वक़्त रूह़ को पहला जिस्म अ़ता किया जाएगा ?

जवाब : हां, लेकिन ज़ाहिरे ह़दीस से लगता है कि रूह़ जिस्म के ऊपरी निस्फ़ ह़िस्से में आएगी।

सुवाल : क्या मय्यित के सामने से पर्दे हट जाएं कि वोह प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देख ले ?

जवाब : इस सिलसिले में कोई ह़दीस नहीं आई, मह़्ज़ बा'ज़ ऐसे अफ़राद का दा'वा है जो किसी मुस्तनद दलील के बिग़ैर क़ाबिले ह़ुज्जत नहीं सिर्फ़ लफ़्ज़ هٰذَا الرَّجُل से इस्तिद्लाल किया गया है लेकिन येह दलील सह़ीह़ नहीं क्यूंकि هٰذَا का इशारा ज़ेहन में मौजूद चीज़ के लिये भी होता है।(1)

सुवाल : क्या बच्चों से भी क़ब्र में सुवालात होंगे ?

जवाब : ज़ाहिर येही है कि सुवालात सिर्फ़ मुकल्लफ़ से होंगे।

इब्ने क़य्यिम ने कहा : अह़ादीस इस बात की सराह़त करती हैं कि सुवालात के वक़्त रूह़ बदन की त़रफ़ लौटाई जाएगी लेकिन वोह पहले वाली ज़िन्दगी ह़ासिल न होगी कि ग़ौरो फ़िक्र करने या खाने वग़ैरा की मोह़ताजी हो उस से एक अलग ही ज़िन्दगी का ह़ुसूल होगा जिस में सुवालात के ज़रीए़ इम्तिह़ान लिया जा सके। येह ज़िन्दगी सोने वाले की ज़िन्दगी की त़रह़ होगी कि वोह ज़िन्दा तो होता है लेकिन जागने वाले की त़रह़ नहीं होता चूंकि नींद मौत की बहन है और सोने वाले से भी

1.....**सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत** इमामे अह्ले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن क़ब्र में पूछे जाने वाले तीसरे सुवाल "مَا تَقُوْلُ فِیْ هٰذَا الرَّجُل" के बारे में फ़रमाते हैं : इस के बा'द (फ़िरिश्ते) सुवाल करते हैं "مَا تَقُوْلُ فِیْ هٰذَا الرَّجُل" इन के बारे में क्या कहता है ? अब न मा'लूम कि सरकार ख़ुद तशरीफ़ लाते हैं या रौज़ए मुक़द्दसा से पर्दा उठा दिया जाता है, शरीअ़त ने कुछ तफ़्सील न बताई। और चूंकि इम्तिह़ान का वक़्त है इस लिये "هٰذَا النَّبِی" न कहेंगे "هٰذَا الرَّجُل" कहेंगे। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 526)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی अपनी माया नाज़ तस्नीफ़ "जा अल ह़क़" दूसरी फ़स्ल ह़ाज़िरो नाज़िर की अह़ादीस के बयान में फ़रमाते हैं : बा'ज़ लोग कहते हैं कि "هٰذَا الرَّجُل" मा'हूदे ज़ेहनी की त़रफ़ इशारा है कि फ़िरिश्ते मुर्दे से पूछते हैं कि वोह जो तेरे ज़ेहन में मौजूद हैं उन्हें तू क्या कहता था ? मगर येह दुरुस्त नहीं क्यूंकि ऐसा होता तो काफ़िर मय्यित से सुवाल न होता क्यूंकि वोह तो ह़ुज़ूर عَلَیْهِ السَّلَام के तसव्वुर से ख़ालियुज़्ज़ेह्न है। नीज़ काफ़िर इस के जवाब में येह न कहता : मैं नहीं जानता बल्कि पूछता तुम किस के बारे में सुवाल करते हो ? इस के "لَا اَدْرِی" कहने से मा'लूम होता है कि वोह ह़ुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को आंखों से देख तो रहा है मगर पहचानता नहीं और येह इशारा ख़ारिजी है।

ज़िन्दगी की नफ़ी नहीं की जाती, बस येही कैफ़िय्यत क़ब्र में रूह लौटाए जाने के बा'द होगी कि वोह ज़िन्दों की त़रह़ ज़िन्दा नहीं होगा अलबत्ता येह ऐसी ज़िन्दगी होगी जिस से मौत को भी जुदा नहीं कर सकते बल्कि ज़िन्दगी और मौत के दरमियान का मुआ़मला होगा और ह़दीस में इस बात की कोई सराह़त नहीं है कि येह ज़िन्दगी बाक़ी भी रहेगी बल्कि ह़दीस शरीफ़ इस बात पर दलालत करती है कि बस बदन के साथ ज़िन्दगी के जैसा तअ़ल्लुक़ होगा और येह तअ़ल्लुक़ जिस्म के फूल फट जाने और मुन्तशिर हो जाने के बा'द भी क़ाइम रहेगा ।

इब्ने तैमिया कहता है : सुवाल के वक़्त रूह़ का जिस्म में आना अह़ादीसे मुतवातिरा से साबित है । जब कि एक गुरोह के नज़्दीक "बदन से बिग़ैर रूह़ के सुवाल होगा ।" इमाम इब्ने ज़ाग़ूनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه भी इसी गुरोह से हैं ।

एक क़ौल इमाम इब्ने जरीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِير से मन्क़ूल है जिस का जुम्हूर ने इन्कार किया है और बा'ज़ ने जुम्हूर के मुक़ाबिल येह क़ौल किया कि "सुवाल सिर्फ़ रूह़ से होगा बदन से नहीं ।" येही क़ौल इब्ने ह़ज़्म और मुतअख़्ख़िरीन में से इमाम इब्ने अ़क़ील और अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) का है और येह ग़लत़ है अगर ऐसा ही होता तो फिर सुवालात को क़ब्र के साथ ख़ास न किया जाता ।

पांच के ज़रीए पांच से छुटकारा

ग्यारहवां फ़ाएदा : ह़ज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : हम ने पांच चीज़ों को तलाश किया तो उन्हें पांच में पाया : (1) गुनाहों के छोड़ने को चाश्त की नमाज़ में (2) क़ब्र की रौशनी को नमाज़े तहज्जुद में (3) मुन्कर नकीर के जवाब को तिलावते कुरआन में (4) पुल सिरात़ पार करने को रोज़े और सदक़े में और (5) अ़र्श के साए को ख़ल्वत (गोशा नशीनी) में ।[1]

बारहवां फ़ाएदा : ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "जो दुन्या से नशे की हालत में गया वोह क़ब्र में भी नशे की ह़ालत में दाख़िल होगा ।"[2]

1 ...روض الرياحين، الحكاية السابعة والثلاثون بعد الثلاث مئة، ص٢٨١، ترک الذنوب، بدله: بركة القوت

2 ...الكامل لابن عدى، رقم: ٥٥، ابراهيم ابو هدبة الفارسى، ١/ ٣٤٣

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की एक दूसरी रिवायत में येह भी है कि "वोह नशे की हालत में हज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को देखेगा और नशे ही की हालत में मुन्कर नकीर का सामना करेगा।"(1)

तेरहवां फ़ाएदा : हमारे उस्ताद, शैख़ुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना अ़लमुद्दीन बुल्क़ैनी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के फ़तावा में है कि मय्यित क़ब्र में सुवालों के जवाब सुरयानी ज़बान में देगी लेकिन मुझे इस की कोई मुस्तनद दलील नहीं मिली।(2) हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ इब्ने हजर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی से इस बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : हदीसे पाक से तो येही मा'लूम होता है कि सुवाल जवाब अ़रबी में होंगे लेकिन येह भी मुमकिन है कि हर एक से उस की ज़बान में सुवालात किये जाएं।

चौदहवां फ़ाएदा : हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुहम्मद बज़ाज़ी हनफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی अपने फ़तावा (बज़्ज़ाज़िया) में फ़रमाते हैं : मुर्दा जहां मुस्तक़िल तौर पर ठहर जाए वहीं उस से सुवालात होंगे हत्ता कि अगर उसे किसी दरिन्दे ने खा लिया हो तो उस के पेट में सुवालात होंगे, अलबत्ता अगर उसे किसी ताबूत में दूसरी जगह मुन्तक़िल करने की ग़रज़ से चन्द दिन तक रखा गया तो जब तक दफ़्न न कर दिया जाए सुवालात नहीं होंगे।(3)

...

रोज़े की हालत में मरने की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो रोज़े की हालत में मरा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक के लिये उस के हिसाब में रोज़े लिख देगा।

(مسند الفردوس، ۳/ ۵۰۴، حدیث: ۵۵۵۷)

---

1 ...التذکرۃ للقرطبی، باب یبعث کل عبد علی ما مات علیہ، ص ۱۷۹

2 ...الفتاوی الحدیثیۃ، مطلب السوال بالعربیۃ...الخ، ص ۲۱، ۲۲

3 ...الفتاوی البزازیۃ مع الفتاوی الھندیۃ، الخامس والعشرون فی الجنائز، ۴/ ۸۰

बाब नम्बर : 25 सुवालाते क़ब्र से महफ़ूज़ रहने वालों का बयान

हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम सा'दी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : सहीह अहादीस में आया है कि बा'ज़ लोग न तो क़ब्र की आज़माइश में मुब्तला होंगे, न नकीरैन उन के पास आएंगे, इस की तीन वुजूहात हैं : (1) उस के अ़मल की वज्ह से (2) ब वक़्ते वफ़ात पहुंचने वाली तकालीफ़ के सबब या फिर (3) मुबारक अय्याम में (जैसे जुमुआ़, शबे जुमुआ़, रमज़ान और अ़रफ़ा के दिन) वफ़ात पाने की वज्ह से ।

शहीद फ़ितनए क़ब्र से महफ़ूज़ होता है

हज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد एक सहाबी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या बात है कि सिवाए शहीद के हर मोमिन क़ब्र में आज़माया जाता है ? इरशाद फ़रमाया : उस के सर पर तल्वारों का साया ही उस की आज़माइश के लिये काफ़ी है ।[1]

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स (जिहाद में) दुश्मन के सामने साबित क़दम रहे यहां तक कि फ़त्ह याब हो जाए या शहीद हो जाए तो वोह इम्तिहाने क़ब्र से महफ़ूज़ रहेगा ।[2]

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं : मैं ने हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि एक दिन और एक रात राहे ख़ुदा में इस्लामी सरहद पर पेहरा देना एक महीना दिन में रोज़ा रख कर रात को इबादत करने से अफ़्ज़ल है और अगर वोह इसी हालत में मर जाए तो उस का वोह नेक अ़मल और रिज़्क़ जारी रहेगा और वोह क़ब्र के फ़ितने से अम्न में रहेगा ।[3]

---

1 ...نسائی، کتاب الجنائز، باب الشھید، ص۳۴۵، حدیث:۲۰۵۰

2 ...معجم اوسط، ۱۴۱/۳، حدیث:۴۱۱۸

3 ...مسلم، کتاب الامارۃ، باب فضل الرباط فی سبیل اللہ، ص۱۰۵۹، حدیث:۱۹۱۳

बड़ी घबराहट से बे ख़ौफ़

हज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर मरने वाले का अ़मल ख़त्म हो जाता है सिवाए उस शख़्स के जो राहे ख़ुदा में दुश्मनों के मुक़ाबिल मुसलमानों की हिफ़ाज़त की ख़ातिर पड़ाव किये हुवे हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे उस के नेक अ़मल का सवाब और उस का रिज़्क़ जारी रखता है, उसे क़ब्र के फ़ितने से महफ़ूज़ कर देता है और क़ियामत में उसे बड़ी घबराहट से अम्न में उठाएगा।[1]

अबू दावूद शरीफ़ की रिवायत में है कि "वोह मुन्कर नकीर से अम्न में होता है।"[2]

सरहदे इस्लाम पर पेहरा देने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में सरहदे इस्लाम पर पेहरा देते हुवे इन्तिक़ाल कर जाए तो उस का नेक अ़मल और रिज़्क़ जारी रहता है, वोह क़ब्र की आज़माइश से अम्न में होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन बड़ी घबराहट से बे ख़ौफ़ उठाएगा।[3]

रिबात़ का मा'ना व मफ़्हूम

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : इस ह़दीस और इस से मा क़ब्ल ह़दीसे पाक में एक क़ैद है और वोह है ह़ालते रिबात़ पर मौत आना[4] और रिबात़ का मत़लब : मुसलमानों की सरह़दों की एक अ़र्से तक ब निय्यते जिहाद हिफ़ाज़त करना चाहे घोड़े पर हो या पैदल ब ख़िलाफ़ उन मुसलमानों के जो अहलो इ़याल के साथ मुस्तक़िल त़ौर पर सरह़दों पर ही रहते, काम काज करते और वहीं कमाते हैं येह लोग मुराबित़ नहीं हैं।[5]

हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मैं ने प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : हर मरने वाले का ख़ातिमा अपने अ़मल पर होता है

1...ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء فی فضل من مات مرابطا، ۳/۲۳۲، حدیث: ۱۶۲۷

2...ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی فضل الرباط، ۳/۱۴، حدیث: ۲۵۰۰

3...ابن ماجه، کتاب الجهاد، باب فضل الرباط فی سبیل الله، ۳/۳۴۲، حدیث: ۲۷۶۷، بتغیرٍ قلیلٍ

4...تفسیر قرطبی، ال عمران، تحت الآیة: ۲۰۰، جز ۴، ۲/ ۲۵۰

5...التذکرة للقرطبی، باب ما ینجی المؤمن من اهوال القبر، ص ۱۴۲

सिवाए उस शख़्स के जो राहे ख़ुदा में दुश्मनों के मुक़ाबिल मुसलमानों की हिफ़ाज़त की ख़ातिर पड़ाव किये हुवे हो उस के इस अ़मल का सवाब क़ियामत तक जारी रहता है और वोह क़ब्र के फ़ितने से महफ़ूज़ कर दिया जाता है।(1)

हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में इस्लामी सरहद पर पेहरा देते हुवे इन्तिक़ाल कर जाए तो उस का नेक अ़मल और रिज़्क़ जारी रहता है, वोह क़ब्र के फ़ितने से अम्न में होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बरोज़े क़ियामत बड़ी घबराहट से बे ख़ौफ़ उठाएगा।(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो राहे ख़ुदा में सरहदे इस्लाम की हिफ़ाज़त करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ब्र में महफ़ूज़ रखता है।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मक्की मदनी आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स सरहदे इस्लाम की हिफ़ाज़त करते हुवे इन्तिक़ाल कर जाए वोह इम्तिहाने क़ब्र से बचा लिया जाता और उस का रिज़्क़ जारी रहता है।(4)

एक माह रोज़ा रख कर इबादत की मिस्ल

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : राहे ख़ुदा में एक दिन इस्लामी सरहद की हिफ़ाज़त करना एक महीना दिन में रोज़े रख कर रात को नमाज़ पढ़ने की त़रह है और जो सरहदे इस्लाम की हिफ़ाज़त करते हुवे इन्तिक़ाल कर जाए उस के इस अ़मल का सवाब जारी रहता है, वोह फ़ितनए क़ब्र से महफ़ूज़ होता है और बरोज़े क़ियामत शहीद उठाया जाएगा।(5)

---

1 ...مسند امام احمد، حدیث عقبۃ بن عامر، ۶/۱۴۵، حدیث: ۱۷۴۴۱، معجم کبیر، ۱۸/۳۱۱، حدیث: ۸۰۳، عن فضالۃ بن عبید

2 ...مسند بزار، ابو صالح مولی عثمان بن عفان، ۱۷/۱۱۰، حدیث: ۸۴۰۵

ابن ماجہ، کتاب الجھاد، باب فضل الرباط فی سبیل اللہ، ۳/۳۴۲، حدیث: ۲۷۶۷

3 ...مجمع الزوائد، کتاب الجھاد، باب فی الرباط، ۵/۵۲۷، حدیث: ۹۵۰۱، معجم کبیر، ۸/۹۲، حدیث: ۷۴۸۰

4 ...معجم اوسط، ۵/۳۹، حدیث: ۲۵۱۲

5 ...معجم کبیر، ۶/۲۶۷، حدیث: ۶۱۷۹

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : राहे ख़ुदा में एक दिन इस्लामी सरह़द की ह़िफ़ाज़त करना एक महीना दिन में रोज़ा रख कर रात को नमाज़ पढ़ने की त़रह़ है और वोह फ़ितनए क़ब्र से अम्न में होगा और उस के इस अ़मल का सवाब उसे क़ियामत तक मिलता रहेगा।[1]

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो बीमारी में मरा वोह शहीद मरा और क़ब्र के इम्तिह़ान से मह़फ़ूज़ हो गया और सुब्ह़ो शाम उसे जन्नती रिज़्क़ दिया जाता है।[2]

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरत़ुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : येह ह़दीस तमाम अमराज़ को शामिल है लेकिन एक दूसरी ह़दीस जिसे इमाम नसाई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वग़ैरा ने बयान किया उस में ख़ास पेट की बीमारी का ज़िक्र है कि ''जो पेट के मरज़ में मरा उसे क़ब्र में अ़ज़ाब नहीं दिया जाएगा'' और यहां पेट के मरज़ से मुराद क़ै है, येह भी कहा गया है कि दस्तों की बीमारी मुराद है। इस में नुक्ता येह है कि इस्तिस्क़ा या इस्हाल में मुब्तला मरीज़ की अ़क़्ल सलामत होती है और वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पहचानता है[3] और उस से बार बार सुवाल करने की ह़ाजत नहीं पड़ती ब ख़िलाफ़ बाक़ी अमराज़ में मरने वालों के क्यूंकि उन की अ़क़्ल ग़ाइब हो चुकी होती है।

(इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं : इस क़िस्म की किसी क़ैद की कोई ज़रूरत नहीं क्यूंकि हुफ़्फ़ाज़े ह़दीस मुत्तफ़िक़ हैं कि इस में रावी से ग़लत़ी हुई है कि उस ने "مَنْ مَاتَ مُرَابِطًا" के बजाए "مَنْ مَاتَ مَرِيْضًا" कह दिया येही वज्ह है कि अ़ल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इसे मौज़ूआ़त में ज़िक्र किया है।

हर रात सूरए मुल्क पढ़ने की फ़ज़ीलत

मरवी है कि जो शख़्स हर रात सूरए मुल्क पढ़ता है वोह फ़ितनए क़ब्र से मह़फ़ूज़ हो जाता है।[4]

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۶۹۹، اسماعیل بن احمد بن عبید اللہ، ۸/۳۵۶، حدیث: ۲۲۳۱

2 ...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ما جاء فیمن مات مریضا، ۲/۲۷۷، حدیث: ۱۶۱۵

3 ...التذکرۃ للقرطبی، باب ما ینجی المؤمن من اھوال القبر، ص ۱۴۶، بتغیر

4 ...التذکرۃ للقرطبی، باب ما ینجی المؤمن من اھوال القبر، ص ۱۴۴

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जो शख़्स हर रात सूरए मुल्क की तिलावत का आ़दी होगा वोह क़ब्र की आज़्माइश से बचा लिया जाएगा[1] और जो पाबन्दी से इस आयते मुबारका :

اِنِّیْۤ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ؕ﴿۲۵﴾

(پ۲۳،یٰس:۲۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *मुक़र्रर (यक़ीनन) मैं तुम्हारे रब पर ईमान लाया तो मेरी सुनो।*

को पढ़ता रहेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर मुन्कर नकीर के सुवाल आसान फ़रमा देगा।

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मैं ने तौरात में लिखा पाया है कि "जो हर रात सूरए मुल्क की तिलावत करे वोह क़ब्र के इम्तिह़ान से मह़फ़ूज़ है।"

सोने से क़ब्ल सूरए सजदह पढ़ने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि जो सोने से क़ब्ल सूरए सजदह और सूरए मुल्क पढ़ लिया करे वोह अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात पा गया और मुन्कर नकीर से बचा लिया गया।[2]

रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ मरने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मुसलमान रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ वफ़ात पा जाए वोह क़ब्र की आज़्माइश से मह़फ़ूज़ रहेगा।[3]

एक रिवायत में है : वोह क़ब्र के फ़ित्ने से बरी है।[4]

एक रिवायत में है : वोह क़ब्र के इम्तिह़ान से मह़फ़ूज़ रहेगा।[5]

---

1 ...سنن کبری للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلۃ، باب الفضل فی قراءۃ تبارک الذی، ۶/ ۱۷۹، حدیث: ۱۰۵۴۷

2 ...اھوال القبور، الباب الرابع، ص۲۱

3 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فیمن مات یوم الجمعۃ، ۲/ ۳۳۹، حدیث: ۱۰۷۶، عن ابن عمرو

4 ...مصنف عبد الرزاق، باب من مات یوم الجمعۃ، ۳/ ۱۴۹، حدیث: ۵۶۱۳

5 ...اثبات عذاب القبر للبیہقی، ص ۱۰۳، حدیث: ۱۵۷

हज़रते सय्यिदुना इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : येह अहादीस उन अहादीस के मुआरिज़ नहीं जिन में सुवालाते क़ब्र का ज़िक्र आया है बल्कि येह उन को ख़ास कर रही हैं और क़ब्र के इम्तिहान में मुब्तला होने और न होने वालों के दरमियान फ़र्क़ को वाज़ेह कर रही हैं, इन बातों में क़ियास व अक़्ल को कोई दख़्ल नहीं बल्कि यहां तो तस्लीम के इलावा चारए कार नहीं है सादिक़ो मस्दूक़ आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन हैं।

मोमिन की शान और मुनाफ़िक़ की निशानी

मज़ीद फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने शहीद के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया : "इस के सर पर तल्वारों के साए की आज़्माइश ही काफ़ी है।"(1) इस का मा'ना व मफ़्हूम येह है कि अगर शहीद में मुनाफ़क़त होती तो लश्करों के आमने सामने होने और तल्वारें चमकने के वक़्त वोह भाग जाते क्यूंकि ऐसे वक़्त में जान बचा कर भागना मुनाफ़िक़ की निशानी है जब कि मोमिन की शान येह है कि अपनी जान कुरबान कर दे और ख़ुद को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द कर दे और उस का येह अ़मल उस की क़ल्बी सच्चाई को ज़ाहिर कर देता है इस तरह़ कि वोह जंग व शहादत के लिये आगे बढ़ जाता है तो अब क्यूं उस पर दोबारा सुवालाते क़ब्र हों। येही बात हज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने फ़रमाई है।

"सिद्दीक़" का मक़ामो मर्तबा

हज़रते सय्यिदुना इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى मज़ीद फ़रमाते हैं : जब शहीद से सुवाल न होगा तो सिद्दीक़ का मर्तबा और क़द्रो मन्ज़िलत तो इस से ज़ियादा है लिहाज़ा येह इस बात का ज़ियादा ह़क़दार है कि इस से क़ब्र का इम्तिहान न हो क्यूंकि कुरआने मजीद में सिद्दीक़ीन का ज़िक्र शुहदा से पहले आया है और यूं ही जब सरह़द पर पेहरा देने वाले से क़ब्र का इम्तिहान न होगा हालांकि वोह तो शहीद से भी कम मर्तबे वाला है तो फिर उस से कैसे हो सकता है जो इस से और शहीद से भी बुलन्द मर्तबा हो।(2)

---

1 ...سنن کبری للنسائی، کتاب الجنائز وتمنی الموت، باب الشهید، ١/ ٢٦٠، حدیث: ٢١٨٠

2 ...التذکرۃ للقرطبی، باب ماینجی المؤمن من اھوال القبر، ص١٤٥، بتغیرٍ

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं) मैं कहता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى ने इस बात की सराह़त की है कि सिद्दीक़ीन से सुवाल न होगा, उन की इबारत येह है : फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَيَفْعَلُ اللهُ مَا يَشَآءُ ﴿٢٧﴾ (پ۱۳، ابراهيم: ۲۷)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** जो चाहे करे।*

हमारे नज़्दीक इस की तावील येह है कि येह उस की चाहत से है कि वोह कुछ लोगों को बुलन्द मर्तबा दे कर उन्हें सुवालाते क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखे और वोह सिद्दीक़ीन व शुहदा हैं। (وَاللهُ اَعْلَمُ بِالصَّوَاب या'नी और दुरुस्त बात को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है)।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى से मन्क़ूल ह़दीसे शहीद की तौज़ीह इस बात का तक़ाज़ा करती है कि येह फ़ज़ीलत सिर्फ़ जंग में शहीद होने वाले के लिये हो लेकिन सरह़द पर पेहरेदारी के मुतअ़ल्लिक़ आने वाली अह़ादीस का तक़ाज़ा है कि येह फ़ज़ीलत हर क़िस्म के शहीद के लिये हो।

मरज़े ताऊ़न में मरने वाले की फ़ज़ीलत

शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने अपनी तस्नीफ़ "بَذْلُ الْمَاعُوْنِ فِىْ فَضْلِ الطَّاعُوْن" में यक़ीन के साथ बयान किया कि ताऊ़न के सबब मरने वाले से भी सुवालाते क़ब्र नहीं होंगे क्यूंकि वोह जिहाद में शहीद होने वाले की त़रह़ है और जो ताऊ़न में सब्र करता है (या'नी ताऊ़न ज़दा अ़लाक़े से भागता नहीं) इस यक़ीन के साथ कि उसे वोही मुसीबत पहुंचेगी जो उस के मुक़द्दर में है और अब अगर वोह वहां ताऊ़न में मुब्तला हुवे बिग़ैर भी इन्तिक़ाल कर जाए तो शहीद है क्यूंकि येह सरह़द पर ह़िफ़ाज़त करने वाले की त़रह़ है।(1) येह बातें इन्तिहाई क़ाबिले तवज्जोह हैं।

क़ब्र के इम्तिहान का मक़्सद

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى सरह़द पर पहरेदारी वाली ह़दीस की तौज़ीह में फ़रमाते हैं कि सरह़द पर पेहरा देने वाले ने गोया ख़ुद को बांध कर क़ैद कर लिया है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में उस के दुश्मनों से लड़ने के लिये तय्यार है पस जब वोह इसी ह़ालत पर इन्तिक़ाल कर गया तो उस के बात़िन की सच्चाई ज़ाहिर हो गई लिहाज़ा वोह क़ब्र की आज़माइश में

1...شرح النسائى للسيوطى، كتاب الجنائز، باب الشهيد، ۴/ ۱۰۰

मुब्तला नहीं होता। मज़ीद फ़रमाते हैं : जो शख़्स जुमुआ़ के दिन इन्तिक़ाल करता है उस के लिये पर्दे हट जाते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां उस के लिये जो कुछ होता है वोह देख लेता है क्यूंकि रोजे़ जुमुआ़ जहन्नम नहीं सुलगाया जाता और उस के दरवाजे़ भी बन्द कर दिये जाते हैं और जहन्नम पर मुक़र्रर फ़िरिश्ता बक़िया अय्याम में जो कुछ करता है वोह जुमुआ़ के दिन नहीं करता, लिहाज़ा जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे की रूह़ जुमुआ़ के दिन क़ब्ज़ फ़रमाए तो येह उस की सआ़दत मन्दी और अन्जामे ख़ैर की दलील है क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस अ़ज़ीम दिन में उन ही की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमाता है जिन के लिये उस ने ख़ुश बख़्ती मुक़द्दर की होती है इसी वज्ह से वोह इम्तिह़ाने क़ब्र में मुब्तला नहीं होते क्यूंकि इस इम्तिह़ान का मक़्सद तो मोमिन और मुनाफ़िक़ में फ़र्क़ करना है।(1)

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं : बात यूं पूरी होती है कि जो रोजे़ जुमुआ़ इन्तिक़ाल कर जाए उस के लिये शहीद का सवाब है और येह बात इसी क़ाइदे पर है कि शहीद से सुवालाते क़ब्र न होंगे और इसी त़रह़ की एक ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ ह़ाफ़िज़ अबू नुऐ़म अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने "حِلْيَةُ الْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء" में ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत की है कि सरकारे नामदार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स रोजे़ जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ इन्तिक़ाल कर गया वोह अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया गया और वोह क़ियामत के दिन इस ह़ाल में आएगा कि उस पर शहीद की मोहर होगी।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इयास बिन बुकैर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो जुमुआ़ के दिन इन्तिक़ाल करे उस के लिये शहीद का अज्र लिखा जाता है और वोह इम्तिह़ाने क़ब्र से मह़फ़ूज़ होता है।(3)

इम्तिह़ाने क़ब्र और अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन यसार عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से मरवी है कि रसूले काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो मुसलमान मर्द या औ़रत रोजे़ जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ इन्तिक़ाल कर जाए तो वोह इम्तिह़ाने क़ब्र और अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया जाता है और वोह

---

(1)...نوادر الاصول، الاصل التاسع والسبعون والمائتان، ۲/۱۲۱۸، تحت الحدیث: ۱۵۱۵

(2)...حلیۃ الاولیاء رقم: ۲۳۰، محمد بن المنکدر، ۳/۱۸۱، حدیث: ۳۶۲۹

(3)...تعزیۃ المسلم عن اخیہ، ص ۸۰، حدیث: ۱۱۱

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि उस पर कोई हिसाब न होगा और क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उस के साथ मोहर या गवाह होंगे जो उस के जन्नती होने की गवाही देंगे।"(1)

येह ह़दीसे पाक बहुत उ़म्दा है इस में क़ब्र के इम्तिहान और इस के अ़ज़ाब दोनों के न होने की सराहत एक साथ मौजूद है। येह यूं होना चाहिये : "हमारी इस गुफ़्तगू ने उन तमाम अफ़राद को यक्जा कर दिया है जिन से क़ब्र में सुवाल नहीं होगा और अगर हम आ़म रख कर हर शहीद मुराद लें तो मुआ़मला और वसीअ़ हो जाएगा क्यूंकि शुहदा की 30 से ज़ाइद अक़्साम हैं जिन्हें मैं ने एक मुस्तक़िल रिसाले "اَبْوَابُ السَّعَادَةِ فِيْ اَسْبَابِ الشَّهَادَةِ" में ज़िक्र कर दिया है।"

क्या क़ब्र में बच्चों से भी सुवाल होगा ?

एक सुवाल ब कसरत किया जाता है कि आया क़ब्र में बच्चों से भी सुवाल होगा ? तो इस मस्अले को इब्ने क़य्यिम ने "किताबुर्रूह़" में ज़िक्र करते हुवे ह़नाबिला के दो क़ौल नक़्ल किये हैं :

पहला क़ौल : बच्चों से भी सुवालाते क़ब्र होंगे इस की दलील येह ह़दीस शरीफ़ है कि रसूले पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक बच्चे की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई तो येह दुआ़ की : "ऐ मौला ! इसे अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाना।"(2) ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने भी येही क़ौल किया है, वोह फ़रमाते हैं कि उस वक़्त उन की अ़क़्ल मुकम्मल कर दी जाती है ताकि वोह अपने मक़ाम और नेक बख़्ती को पहचान सकें और सुवालात के जवाबात भी उन्हें इल्हाम कर दिये जाते हैं।(3) मैं कहता हूं : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने भी येही कहा है। चुनान्चे, इब्ने जरीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِير ने जुवैबर से रिवायत की, कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक बिन मुज़ाह़िम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का छे दिन का बच्चा फ़ौत हो गया तो उन्हों ने फ़रमाया : जब मेरे बच्चे को इस क़ब्र में रखना तो उस का चेहरा और कफ़न की गिरह खोल देना क्यूंकि मेरे बेटे को सुवाल के लिये बिठाया जाएगा। मैं ने अ़र्ज़ की : उस से क्या सुवाल किया जाएगा ? फ़रमाया : उस वा'दे के मुतअ़ल्लिक़ जिस का इक़रार सुल्बे आदम में किया था।(4)

---

1 ...المتفق والمفترق، علی بن حرب ابن عبد الرحمٰن الجندی سابوری، ۳/ ۱۲۵۷، حدیث: ۱۱۴۴، مختصرًا

2 ...قوت القلوب، الفصل الثانی والثلاثون، ۱/ ۳۸۲

3 ...التذکرة للقرطبی، باب الرد علی الملحد، الفصل الرابع، ص ۱۲۳

4 ...تفسیر طبری، الاعراف، تحت الآیة: ۱۷۲، ۶/ ۱۱۱، حدیث: ۱۵۳۶۳

दूसरा क़ौल : बच्चों से सुवालाते क़ब्र नहीं होंगे क्यूंकि सुवाल तो उस से होता है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहचानता हो ताकि उस से पूछा जाए कि क्या वोह रसूल पर ईमान लाया और उन की इत़ाअ़त की या नहीं ? और ज़िक्रकर्दा ह़दीस का जवाब येह है कि इस में अ़ज़ाबे क़ब्र से मुराद क़ब्र का अ़ज़ाब है न सुवाल बल्कि वोह तक्लीफ़ मुराद है जो ग़म, ह़सरत और वह़्शत की वज्ह से होगी और येह बच्चों, बड़ों सब के लिये आ़म है। येही क़ौल सह़ीह़ व दुरुस्त है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मह़मूद बिन मुह़म्मद नसफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने "बह़रुल कलाम" में फ़रमाया : अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام और मोमिनीन के बच्चों से ह़िसाबो किताब न होगा, न अ़ज़ाबे क़ब्र होगा और न ही नकीरैन का सुवाल होगा।(1) हमारे उ़लमाए शाफ़ेइय्या ने येही फ़रमाया : दफ़्न के बा'द बच्चे को तल्क़ीन न की जाए येह तो सिर्फ़ बालिग़ अफ़राद के लिये है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने "अर्रौज़ह" वग़ैरा में ऐसा ही ज़िक्र किया है(2) और येह इस अम्र की दलील है कि बच्चों से सुवाल न होगा और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का भी येही फ़तवा है जैसा कि इन से मा क़ब्ल नक़्ल किया गया।

इस्लाम का नूर

फ़ाएदा : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अपनी किताब "अल मौज़ूआ़त" में ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से एक ह़दीस मरफ़ूअ़न रिवायत की, कि ख़िज़ाब किया हुवा शख़्स जब इन्तिक़ाल के बा'द क़ब्र में पहुंचता है तो मुन्कर नकीर उस से सुवाल नहीं करते, मुन्कर कहता है : नकीर इस से सुवाल करो। नकीर कहता है : मैं इस से कैसे सुवाल करूं जब कि इस्लाम का नूर इस पर मौजूद है।(3)

(इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَيْهِ الرَّحْمَة फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं "इस्लाम का नूर" की वज़ाह़त वोह है जो उस सह़ीह़ ह़दीस से साबित है कि "यहूदी और नसरानी (दाढ़ियां) नहीं रंगते लिहाज़ा तुम उन की मुख़ालफ़त करो।" अगर "अल मौज़ूआ़त" वाली ह़दीस की कोई अस्ल हो तो इस से मुराद वोह शख़्स होगा जो सुन्नत की ह़िफ़ाज़त की निय्यत से इस पर अ़मल पैरा हो।

---

1 ...بحر الكلام، المبحث الثالث من لا يسئل فی القبر ولا يعذب، ص ١٩٣

2 ...روضۃ الطالبين، كتاب الجنائز، باب الدفن، ١/ ٦٥٥

3 ...الموضوعات لابن جوزی، باب الحناء، ٣/ ٥٦

बाब नम्बर 26

क़ब्र की घबराहट और मोमिन पर इस की आसानी व कुशादगी का बयान

आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम हज़रते सय्यिदुना हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक क़ब्र पर ठहरे और इतना रोए कि आप की दाढ़ी मुबारक तर हो गई। अ़र्ज़ की गई : जन्नत व दोज़ख़ के तज़्किरे के वक़्त आप इतना नहीं रोते और क़ब्र को देख कर इतना रो रहे हैं ? फ़रमाया : हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है :

اِنَّ الْقَبْرَ اَوَّلُ مَنَازِلِ الْاٰخِرَۃِ فَاِنْ نَجَا مِنْہُ فَمَا بَعْدَہٗ اَیْسَرُ مِنْہُ وَاِنْ لَّمْ یَنْجُ مِنْہُ فَمَا بَعْدَہٗ اَشَدُّ مِنْہُ

या'नी आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल क़ब्र है, अगर किसी ने इस से नजात पा ली तो अगली मन्ज़िलें इस से आसान होंगी और अगर इस से नजात न पाई तो अगली मन्ज़िलें इस से सख़्त तर होंगी। येह भी इरशाद फ़रमाया : مَارَاَیْتُ مَنْظَرًا اِلَّا وَالْقَبْرُ اَفْظَعُ مِنْہُ या'नी मैं ने क़ब्र से ज़ियादा हौलनाक मन्ज़र कोई नहीं देखा।(1)

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि हम रसूले काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह एक जनाज़े में शरीक थे, आप क़ब्र के एक किनारे तशरीफ़ फ़रमा हुवे और ख़ुद भी रोए और दूसरों को भी रुला दिया ह़त्ता कि मिट्टी भीग गई फिर इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरे भाइयो ! इस (दिन) के लिये तय्यारी कर लो।(2)

जाए विलादत के इ़लावा में मौत आने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरा में एक शख़्स वफ़ात पा गया तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई फिर इरशाद फ़रमाया : काश ! येह अपनी जाए विलादत में न मरता। एक शख़्स ने

❶...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب ذکر القبر والبلی، ۴/۵۰۰، حدیث:۴۲۶۷

❷...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحزن والبکاء، ۴/۴۶۶، حدیث:۴۱۹۵

अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ऐसा क्यूं ? इरशाद फ़रमाया : जब कोई शख़्स अपनी जाए पैदाइश के बजाए दूसरी जगह मरता है तो जाए पैदाइश और जाए वफ़ात के दरमियान मिक़्दार जितनी जगह उसे जन्नत में दे दी जाती है।(1)

मुसाफ़िरी की हालत में मौत आने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसाफ़िर की क़ब्र इतनी वसीअ़ कर दी जाती है जितना वोह अपने घरवालों से दूर होता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या फिर जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।(3)

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने एक दिन खुत़बे में फ़रमाया : क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या फिर जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा। ख़बरदार ! क़ब्र रोज़ाना तीन बार कहती है : मैं कीड़े मकोड़ों का घर हूं, मैं अन्धेरे का घर हूं, मैं वह़शत का घर हूं।(4)

सब्ज़ हरयाला बाग़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन अपनी क़ब्र में सब्ज़ हरयाले बाग़ में होता है उस की क़ब्र 70 गज़ कुशादा कर दी जाती और चौदहवीं के चांद की त़रह़ रौशन कर दी जाती है।(5)

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ما جاء فیمن مات غریبا، ۲/۲۷۲، حدیث:۱۶۱۴

2 ...فردوس الاخبار، ۲/۵۰۴، حدیث:۸۵۲۴

3 ...ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، باب۹۱، ۴/۲۰۸، حدیث:۲۴۶۸

موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/۸۱، حدیث:۱۲۲

4 ...تاریخ ابن عساکر، رقم:۴۹۳۳، علی بن ابی طالب، ۴۲/۴۹۶

5 ...نوادر الاصول، الاصل السادس والعشرون والمائۃ، ۱/۵۰۴، حدیث:۷۲۱

हज़रते सय्यिदतुना मुआज़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से अ़र्ज़ की : क्या आप हमें येह बताएंगी कि हमारे मुर्दों के साथ क़ब्र में क्या होता है ? फ़रमाया : अगर मुर्दा मोमिन है तो उस के लिये उस की क़ब्र 40 गज़ वसीअ़ कर दी जाती है।(1)

एक हदीस की वज़ाहत

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : येह वुस्अ़त इब्तिदाई तंगी और सुवालाते क़ब्र के बा'द होगी जब कि काफ़िर की क़ब्र मुसलसल तंग होती रहती है(2) और हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान : "क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या फिर जहन्नम के गढ़ों में से एक गढ़ा।" हमारे नज़्दीक येह ह़क़ीक़त पर मह़मूल है इस से मजाज़ी मा'ना मुराद नहीं और मोमिन की क़ब्र सब्ज़े से मा'मूर हो जाएगी और येह सब्ज़ा ज़मीनी नबातात होंगी जब कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की हदीस में इस की ता'यीन है कि वोह फूल होंगे। बा'ज़ उ़लमाए किराम ने इस को मजाज़ पर मह़मूल करते हुवे कहा कि इस से मुराद येह है कि सुवालात में मोमिन से नर्मी व आसानी बरती जाएगी, उसे ख़ौफ़ से अम्न दिया जाएगा और उस की क़ब्र ह़द्दे निगाह तक वसीअ़ कर दी जाएगी, जैसा कि जब कोई ऐ़शो राह़त में ज़िन्दगी बसर कर रहा हो तो कहा जाता है : "फ़ुलां तो जन्नत में है" और तंगी वाली ज़िन्दगी गुज़ार रहा हो तो कहा जाता है : "फ़ुलां जहन्नम में है।" हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : पहली बात (या'नी ह़क़ीक़त मुराद होना) ही ज़ियादा सह़ीह़ है।

हज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना ई़सा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام अपने ह़वारियों समेत एक क़ब्र के पास खड़े हुवे तो ह़वारियों ने क़ब्र की वह़शत, तारीकी और तंगी का ज़िक्र किया। येह सुन कर आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : तुम अपनी माओं के पेटों में इस से भी तंग जगह में थे पस जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुशादगी फ़रमाना चाही तो फ़रमा दी।(3)

(1)...التذكرة للقرطبي، باب اختلاف الآثار في سعة القبر، ص ١٢٧
(2)...التذكرة للقرطبي، باب اختلاف الآثار في سعة القبر، ص ١٢٧
(3)...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب القبور، جامع ذكر القبور، ٦/٨٧، حديث: ١٣٣

रहमते इलाही के उम्मीद वार पर इन्आमे इलाही

हज़रते सय्यिदुना अबू ग़ालिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मुल्के शाम में एक नौजवान शख़्स की वफ़ात का वक़्त आया तो उस ने अपने चचा से कहा : चचा जान ! अगर मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी मां के हवाले कर दे तो वोह मेरे साथ क्या सुलूक करेगी ? चचा ने कहा : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! वोह तुझे जन्नत में भेज देगी। येह सुन कर उस नौजवान ने कहा : ब खुदा ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर मेरी मां से ज़ियादा मेहरबान है। चुनान्चे, उस का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं उस के चचा के साथ उस की क़ब्र में उतरा फिर हम ने उस पर सिलें रखीं तो एक सिल गिर गई, उस का चचा आगे बढ़ा लेकिन यकदम रुक गया, मैं ने पूछा : क्या हुवा ? कहने लगा : इस की क़ब्र नूर से मा'मूर और ता हद्दे निगाह वसीअ़ कर दी गई है।(1)

हज़रते सय्यिदुना हुमैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अपने भांजे के मुतअ़ल्लिक़ गुज़श्ता हिकायत की मिस्ल हिकायत बयान करते हुवे फ़रमाया : मैं ने भांजे की क़ब्र में झांका तो वोह हद्दे निगाह तक वसीअ़ थी मैं ने अपने साथी से पूछा : क्या जो मैं देख रहा हूं वोह तुम भी देख रहे हो ? तो उस ने कहा : हां ! तुम्हें मुबारक हो। हज़रते सय्यिदुना हुमैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मेरा ख़याल है कि येह उसी बात की बरकत थी जो उस ने मरने से पहले कही थी।(2)

एक नौजवान की बख़्शिश का सबब

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मरयम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه अपने शुयूख़ से रिवायत करते हैं कि बसरा में बनू हज़रमी का एक बरगुज़ीदा शख़्स रहता था, उन का एक भतीजा गाने वालियों के पास बैठा करता था, वोह बुजुर्ग उसे समझाते रहते थे। वोह नौजवान फ़ौत हो गया तो उस के चचा उस की क़ब्र में उतरे। जब मिट्टी डाल चुके तो उन्हें कुछ याद आया पस उन्हों ने एक ईंट हटा कर क़ब्र में देखा तो उस की क़ब्र बसरा शहर के घुड़ दौड़ के मैदान से भी वसीअ़ नज़र आई और वोह लड़का उस के वस्त़ में मौजूद था। चचा ने ईंट वापस रख दी और घर आ कर उस की बीवी से उस के आ'माल पूछे। वोह बोली : येह जब भी मुअज़्ज़िन को "اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا الله" और

(1) ...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب المحتضرين، ٥/٣٠٧، حديث:١٩

(2) ...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب المحتضرين، ٥/٣٠٨، حديث:٢٠

"اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ الله" कहते सुनता तो येह कहा करता था : "मैं भी इसी की गवाही देता हूं जिस की तू ने गवाही दी।" और उस से रू गर्दानी करने वालों को भी उस की तल्क़ीन करता था।(1)

क़ब्र में त़वाफ़े का'बा

ह़ज़रते सय्यिदुना शरीक बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने कूफ़ा में एक शख़्स की नमाज़े जनाज़ा अदा की फिर मैं उस की क़ब्र में दाख़िल हुवा और उस पर सिलें सीधी कीं इतने में एक सिल गिर गई तो मैं ने क़ब्र में झांका तो क्या देखा कि का'बा आंखों के सामने है और त़वाफ़े का'बा हो रहा है।(2)

तीन क़ब्रों के अह़वाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुस्लिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : एक गोरकन का बयान है : मैं ने दो क़ब्रें खोद कर तय्यार कीं और तीसरी खोद रहा था कि मुझे सख़्त गर्मी लगी, मैं ने साए के लिये अपनी चादर उतार कर खोदे गए ह़िस्से पर तान ली और दोबारा अपने काम में मश्ग़ूल हो गया इसी असना में सियाही माइल सफ़ेद घोड़ों पर दो शख़्स आए और पहली क़ब्र पर खड़े हो गए उन में से एक दूसरे से कहने लगा : लिखो। उस ने कहा : क्या लिखूं ? वोह कहने लगा : तीन मुरब्बअ़ मील लिखो। फिर वोह दूसरी क़ब्र पर पहुंच गए और कहा : लिखो। उस ने कहा : क्या लिखूं ? वोह बोला : ह़द्दे निगाह तक लिखो। फिर वोह उस क़ब्र पर पहुंच गए मैं जिस में मौजूद था, उस ने फिर कहा : लिखो। पूछा : क्या लिखूं ? वोह बोला डेढ़ बालिश्त लिख दो। अब मैं बैठ कर जनाज़ों का इन्तिज़ार करने लगा तो चन्द लोग एक जनाज़ा लाए और पहली क़ब्र पर रुक गए। मैं ने पूछा : येह किस की मय्यित है ? मुझे बताया गया : येह पानी भरने वाला इ़यालदार शख़्स था, इस ने ब वक़्ते वफ़ात पीछे कुछ न छोड़ा तो हम ने इस के लिये कुछ दराहिम जम्अ़ किये हैं। मैं ने कहा : "येह दराहिम मर्ह़ूम के बच्चों को दे देना।" फिर मैं ने उन के साथ मिल कर उसे दफ़्न कर दिया। फिर एक ऐसा जनाज़ा लाया गया जिस के साथ वोही आदमी थे जिन्हों ने उसे उठाया हुवा था, उसे दूसरी क़ब्र के पास लाया गया जिस के बारे में ह़द्दे निगाह तक वुस्अ़त लिखी गई थी मेरे पूछने पर उन्हों ने बताया कि येह एक मुसाफ़िर था जो दौराने सफ़र अपने घोड़े पर मर गया और इस के पास कुछ भी

1...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، باب الکرامات عند الموت، ۵/ ۵۰۰، حدیث: ۳۱۹

2...اهوال القبور، الباب الاول، ص ۳۹

नहीं था। मैं ने उस के लाने वालों से कुछ न लिया और साथ मिल कर मुर्दे को दफ़्न कर दिया। अब मैं तीसरे का इन्तिज़ार करने लगा हत्ता कि इशा के क़रीब तीसरी मय्यित लाई गई जो किसी सरदार की बीवी थी, मैं ने उन लोगों से क़ब्र खोदने की उजरत मांगी तो उन्हों ने मेरे सर पर ज़र्ब लगाई और उसे दफ़्न कर के चल दिये।[1]

जा'फ़र बिन सुलैमान का बयान है कि एक शख़्स एक मय्यित को क़ब्र में उतारते हुवे कहने लगा : बेशक जो ज़ात मां के पेट में कच्चे बच्चे पर आसानी फ़रमाती है वोह इस बात पर क़ादिर है कि तुझ पर भी आसानी फ़रमाए।[2]

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब आप हमें डराते हैं तो हम डर जाते हैं, क़ब्र की तंगी व तारीकी का क्या हाल है ? इरशाद फ़रमाया : बन्दा जिस हाल पर होगा उसी पर उसे मौत तारी होती है।[3]

हज़रते सय्यिदुना सल्त बिन हकीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : मुझे बहरैन के अबू यज़ीद नामी एक शख़्स ने बताया कि मैं ने बहरैन में एक मुर्दे को ग़ुस्ल दिया तो उस के गोश्त पर लिखा था : طُوْبٰی لَکَ یَا غَرِیْب या'नी ऐ मुसाफ़िर ! तुझे ख़ुश ख़बरी हो। मैं ने बग़ौर देखा तो वोह तहरीर गोश्त और चमड़े के दरमियान थी।[4]

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन उमारा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना अहनफ़ बिन क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के जनाज़े में शरीक हुवा और उन को क़ब्र में उतारने के लिये क़ब्र में दाख़िल हो कर जब उन्हें सीधा किया तो देखा कि क़ब्र हद्दे निगाह तक वसीअ़ कर दी गई है, मैं ने अपने साथियों को बताया लेकिन वोह उस कुशादगी को न देख सके।[5]

---

1 ...اھوال القبور، الباب الاول، ص۴۱

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/۷۴، حدیث:۹۱

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/۸۷، حدیث:۱۴۳

4 ...تعزیۃ المسلم لابن عساکر، باب ما جاء من الشھادۃ لمن مات غریبا، ص۲۸، رقم ۹۲

5 ...تاریخ ابن عساکر، ۲۴/۳۵۲، رقم: ۲۹۲۱، ضحاک بن قیس تمیمی

मुनव्वर क़ब्र

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम हनफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : हज्जाज बिन यूसुफ़ उ़लमा को उन ही के दरवाज़ों पर फांसी देता था उस बद बख़्त व ज़ालिम ने हज़रते सय्यिदुना माहान हनफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی को भी उन के दरवाज़े पर फांसी दी । फिर हम रात में उन के पास रौशनी देखा करते थे ।(1)

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : शाहे हबशा हज़रते नजाशी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की वफ़ात के बा'द हम येह बातें करते थे कि उन की क़ब्र से हमेशा नूर देखा जाता है ।(2)

मुश्कबार क़ब्र

हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन ह़बीब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ग़ालिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक जंग में शहीद हो गए जब उन्हें दफ़्न किया गया तो उन की क़ब्र से मुश्क की खुश्बू आने लगी, उन के एक भाई ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : आप के साथ कैसा सुलूक किया गया ? उन्हों ने कहा : अच्छा सुलूक किया गया । भाई ने पूछा : आप को कहां ले जाया गया ? फ़रमाया : जन्नत में । पूछा : किस सबब से ? फ़रमाने लगे : यक़ीने कामिल, तहज्जुद की पाबन्दी और सख़्त गर्मियों के रोज़ों में प्यास की बदौलत । भाई ने पूछा : आप की क़ब्र से खुश्बू कैसी आती है ? फ़रमाया : येह तिलावते क़ुरआन और नफ़्ली रोज़ों की खुश्बू है ।(3)

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ग़ालिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के लिये तय्यार की जाने वाली क़ब्र में दाख़िल हुवा और मैं ने क़ब्र से थोड़ी सी मिट्टी ले कर देखी तो वोह मुश्क की मानिन्द थी, लोग उस पर फ़रेफ़्ता हो गए, फिर उन्हें क़ब्र में उतार कर मिट्टी बराबर कर दी गई ।(4)

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب صلاة التطوع والامامة، باب فی عقد التسبیح وعدالحصی، ۲/ ۲۸۳، حدیث: ۱۱

2 ...ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی النور یری عند قبر الشهید، ۳/ ۲۳، حدیث: ۲۵۲۳

3 ...حلیة الاولیاء، المغیرة بن حبیب، ۶/ ۲۷۲، رقم: ۸۵۵۳

4 ...شرح اصول اعتقاد اهل السنة، سیاق ما روی من کرامات عبد اللّٰہ بن غالب، ۲/ ۱۴۳۵، حدیث: ۱۹۳

बाब नम्बर 27 आख़िरत के पहले अ़द्ल का बयान

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "आख़िरत का पहला इन्साफ़ क़ब्रें हैं जिन के इम्तिह़ान में अच्छे बुरे सब बराबर हैं।"(1)

...❁...

बाब नम्बर 28 बन्दे पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सब से ज़ियादा रह़्म का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे पर सब से ज़ियादा मेहरबान उस वक़्त होता है जब लोग और रिश्तेदार उसे क़ब्र में छोड़ कर चले जाते हैं।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि ह़ुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे पर उस वक़्त सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाता है जब उसे क़ब्र में रखा जाता है।(3)

...❁...

बाब नम्बर 29 मोमिन को क़ब्र में मिलने वाले पहले तोह़्फ़े का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू आ़सिम ह़ब्शी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "मोमिन को क़ब्र में मिलने वाला सब से पहला तोह़्फ़ा येह है कि उसे कहा जाता है : तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो तुम्हारे जनाज़े के साथ आने वाले बख़्श दिये गए।"(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन का सब से पहला तोह़्फ़ा येह है कि उस के जनाज़े के साथ जाने वाले बख़्श दिये जाते हैं।(5)

---

1 ...فردوس الاخبار، ۱/۳۸، حدیث: ۶۹

2 ...التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی رحمۃ اللّٰہ بعبدہ اذا دخل فی قبرہ، ص ۱۱۰

3 ...فردوس الاخبار، ۱/۱۲۹، حدیث: ۸۲۰

4 ...جمع الجوامع، قسم الاقوال، ۳/ ۷۷، حدیث: ۷۴۲۷

5 ...ذکر الموت لابن ابی الدنیا، باب تعزیۃ اھل المیت، ص ۲۰۹، حدیث: ۳۷۷

बाब नम्बर 30 मोमिन को मिलने वाली पहली जज़ा का बयान

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन (सालेह़) को मौत के बा'द सब से पहला बदला येह मिलता है कि उस के जनाज़े के साथ चलने वाले तमाम लोगों को बख़्श दिया जाता है।(1)

• • • • • •

बाब नम्बर 31 मुख़्तलिफ़ उमूर के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे नबविय्या का बयान

क़ब्र में कुशादगी और नूर की दुआ़

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जब हज़रते अबू सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इन्तिक़ाल हुवा तो प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह दुआ़ की : اَللّٰھُمَّ افْسَحْ لَہٗ فِیْ قَبْرِہٖ وَنَوِّرْلَہٗ فِیْہِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अबू सलमा के लिये क़ब्र में कुशादगी और नूर अ़त़ा फ़रमा।(2)

दुआ़ए सरकार की बरकत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : اِنَّ ھٰذِہِ الْقُبُوْرُ مَمْلُوْءَۃٌ عَلٰی اَھْلِھَا ظُلْمَۃً وَّاِنَّ اللّٰہَ یُنَوِّرُھَا بِصَلَاتِیْ عَلَیْھِمْ या'नी बेशक येह क़ब्रें अपने मकीनों पर अन्धेरे से भरी हुई हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन पर मेरी दुआ़ की बरकत से इन्हें रौशन व मुनव्वर कर देता है(3) ।(4)

---

1 ...مسند بزار، مسند ابن عباس، ۱۱/۸۶، حدیث: ۴۷۹۶

2 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب فی اغماض المیت والدعاء لہ اذا حضر، ص۴۵۸، حدیث: ۹۲۰

3 .....(साहि़बे) अशिअ़्अ़तुल लम्आ़त ने यहां फ़रमाया कि यहां सलात ब मा'ना दुआ़ है इसी लिये यहां न तक्बीरों का ज़िक्र है न सफ़ें बनाने का, बा'ज़ लोग इन अह़ादीस की बिना पर कहते हैं कि नमाज़े जनाज़ा कई बार हो सकती है मगर येह ग़लत है, वरना ता क़ियामत हमेशा ज़ाइरीन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़े पर पहुंच कर आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ा करते। वली के नमाज़ पढ़ लेने के बा'द और किसी को जनाज़ा पढ़ने का ह़क़ नहीं, देखो, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दो रोज़ तक मुसलसल नमाज़ें होती रहीं मगर जब सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने जो ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन और वलिय्ये रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم थे आप पर नमाज़ पढ़ ली फिर किसी ने न पढ़ी। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 473)

4 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب الصلاۃ علی القبر، ص۴۷۶، حدیث: ۹۵۶

मस्जिद में हंसने का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मक्की मदनी आक़ा, दो आलम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلضَّحْكُ فِي الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِي الْقَبْرِ या'नी मस्जिद में हंसना क़ब्र में अन्धेरा लाता है।"(1)

क़ब्र की वह्शत कैसे दूर हो ?

मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से इरशाद फ़रमाया : जब तुम किसी सफ़र पर निकलते हो तो तय्यारी ज़रूर करते हो, फिर क़ियामत के रास्ते पर सफ़र का क्या हाल होना चाहिये ? ऐ अबू ज़र ! क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न बताऊं जो तुम्हें उस दिन नफ़्अ़ दे ? अ़र्ज़ की : मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! ज़रूर। इरशाद फ़रमाया : रोज़े महशर के लिये सख़्त गर्मी के रोज़े रखो और क़ब्र की वह्शत दूर करने के लिये रात के अन्धेरे में दो रक्अ़तें पढ़ा करो।(2)

मोहताजी से बचने का वज़ीफ़ा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने रोज़ाना 100 मरतबा لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ الْمَلِکُ الْحَقُّ الْمُبِیْنُ पढ़ा वोह दुन्या में मोहताजी से बचेगा, उसे क़ब्र में घबराहट न होगी और उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाएंगे।(3)

इल्म इन्सानी शक्ल में

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब आ़लिम दुन्या से जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के इल्म को इन्सानी शक्ल अ़ता फ़रमाता है जो क़ियामत तक उस के लिये उन्स का ज़रीआ़ बनता और ज़मीन के कीड़ों को दूर करता है।

---

1 ...فردوس الاخبار، ۲/۳۱، حدیث: ۳۷۰۲

2 ...موسوعة ابن أبي الدنيا، کتاب التهجد، باب الحث علی قیام اللیل، ۱/۲۴۷، حدیث: ۱۰

3 ...التمهید لابن عبد البر، زیاد بن ابی زیاد، ۲/۲۸۶

ख़ैरो भलाई सीखने सिखाने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि "ख़ैरो भलाई सीखो और दूसरों को सिखाओ क्यूंकि मैं भलाई सीखने सिखाने वालों की क़ब्रें रौशन कर दूंगा जिस से उन्हें क़ब्रों में वह़शत न होगी ।"(1)

सुन्नते नबवी

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : मैं ने एक जनाज़ा उठाया तो कहा : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये मौत में बरकत दे ।" तो चारपाई से किसी कहने वाले ने कहा : और मौत के बा'द भी । येह सुन कर मुझ पर कुछ रो'ब त़ारी हो गया, मय्यित को दफ़्न कर देने के बा'द मैं क़ब्र के क़रीब बैठा ग़ौरो फ़िक्र में मश्ग़ूल था कि अचानक एक ख़ूब सूरत चेहरे, सुथरे लिबास और ख़ुश्बूओं में बसी शख़्सिय्यत क़ब्र से बर आमद हुई उस ने कहा : ऐ इब्राहीम ! मैं ने लब्बैक कहा और उस से पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए ! तुम कौन हो ? उस ने कहा : मैं वोही हूं जिस ने तुम्हें चारपाई से कहा था कि "मौत के बा'द भी" मैं ने पूछा : आख़िर तुम हो कौन ? उस ने कहा : मैं सुन्नते नबवी हूं, जो मुझे अपनाता है मैं उस की दुन्या में मुह़ाफ़िज़ व निगहबान होती हूं, क़ब्र में उस के लिये नूर और ग़मगुसार होती हूं और बरोज़े क़ियामत उसे जन्नत में ले जाने वाली हूं ।(2)

मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुह़म्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد अपने दादा से रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुशी से एक फ़िरिश्ता पैदा फ़रमाता है जो ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की इबादत करता और तौह़ीद बयान करता है और जब वोह मोमिन फ़ौत हो जाता है तो वोह ख़ुशी उस की क़ब्र में आ कर कहती है : क्या तुम मुझे पहचानते हो ?

---

(1)...جامع بیان العلم لابن عبد البر، باب جامع فی فضل العلم، ص۸۲، حدیث:۲۶۰

(2)...شرح اصول اعتقائد اهل السنة، سیاق ما روی عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم فی ان المسلمین...الخ، ۹۲۹/۲، حدیث:۲۱۴۲، بتغیر

बन्दा कहता है : तू कौन है ? वोह कहती है : मैं वोह खुशी हूं जो तू ने फुलां के दिल में दाख़िल की थी अब मैं इस वह्शत में तेरी ग़म ख़्वार हूं, तुझे तेरी हुज्जत (सुवालाते क़ब्र के जवाबात) बताऊंगी, तुझे हक़ बात पर साबित क़दम रखूंगी, क़ियामत में तेरे साथ रहूंगी, तेरी शफ़ाअ़त करूंगी और जन्नत में तुझे तेरा ठिकाना दिखाऊंगी।(1)

लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने से बचने की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू काहिल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू काहिल ! ख़ूब जान लो कि जो लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने से बाज़ रहा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हक़ है कि उस से अ़ज़ाबे क़ब्र को रोक दे।(2)

क़ब्र रौशन और खुश्बूदार करने का नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मस्जिदों में रौशनी की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र रौशन फ़रमाएगा और जिस ने मस्जिदों को खुश्बूदार किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की क़ब्र में जन्नती खुश्बू दाख़िल फ़रमाएगा।"(3)

मरीज़ की इ़यादत करने की फ़ज़ीलत

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि रहीमो करीम आक़ा, मीठे मीठे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : या इलाही ! मरीज़ की इ़यादत करने वाले का क्या अज्र है ? इरशाद फ़रमाया : उस पर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर दिये जाएंगे जो क़ब्र में क़ियामत तक उस की ख़ैर ख़ैरिय्यत दरयाफ़्त करते रहेंगे।(4)

जब कि हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी रिवायत में दो फ़िरिश्तों की जगह मुत़लक़ फ़िरिश्तों का ज़िक्र है।

1...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب قضاء الحوائج، ۴/ ۲۱۴، حدیث: ۱۱۵

2...معجم کبیر، ۱۸/ ۳۶۲، حدیث: ۹۲۸

3...الکامل لابن عدی، رقم: ۸۵، ابراھیم بن البراء، ۱/ ۴۱۲

4...فردوس الاخبار، ۳/ ۱۹۳، حدیث: ۵۴۳۶

बाब नम्बर 32 क़ब्र में ह़िसाबो किताब का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : क़ब्र में भी ह़िसाब है और आख़िरत में भी ह़िसाब है जिस का ह़िसाबो किताब क़ब्र में हो गया वोह नजात पा गया और जिस का ह़िसाबो किताब क़ियामत में हुवा वोह अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार होगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मोमिन का ह़िसाबो किताब क़ब्र में इस लिये होता है ताकि कल मैदाने मह़शर में उस पर आसानी हो लिहाज़ा बरज़ख़ में ही उसे (गुनाहों की आलूदगी से) पाक साफ़ कर दिया जाता है ताकि जब वोह क़ब्र से निकले तो उस से बदला लिया जा चुका हो।(1)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि सरकारे दो जहां, रह़मते आ़लमिय्यां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : रोज़े मह़शर किसी को बिग़ैर ह़िसाबो किताब इस लिये बख़्श दिया जाएगा कि वोह क़ब्र में अपने अ़मल को देख चुका होगा।(2)

• • • • • •

बाब नम्बर 33 क़त्ले उ़स्माने ग़नी को मह़बूब रखने वाले का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! जिस शख़्स के दिल में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़त्ल की ज़र्रा बराबर भी ख़ुशी होगी तो वोह दज्जाल का ज़माना पाने की सूरत में उस की पैरवी पर मरेगा और अगर उस का ज़माना न पा सका तो अपनी क़ब्र में दज्जाल पर ईमान लाएगा।(3)

• • • • • •

---

1 ...نوادر الاصول، الاصل الحادی والخمسون والمائتان، ۱۰۲۱/۲، تحت الحدیث: ۱۳۲۶، حدیث: ۱۳۲۷

2 ...مسند امام احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ۴۰۲/۹، حدیث: ۲۴۷۷۰

3 ...تاریخ ابن عساکر، رقم: ۴۶۱۹، عثمان بن عفان، ۴۴۷/۳۹

बाब नम्बर 34

अ़ज़ाबे क़ब्र का बयान

हम अ़ज़ाबे क़ब्र से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं। कुरआने मजीद में कई मक़ामात पर इस का ज़िक्र आया है जिसे मैं ने अपनी किताब “اَلْاِكْلِيْلُ فِيْ اِسْتِنْبَاطِ التَّنْزِيْل” में बयान किया है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह दुआ़ किया करते थे : اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं अ़ज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहता हूं।(1)

अ़ज़ाबे क़ब्र ह़क़ है

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ या'नी अ़ज़ाबे क़ब्र ह़क़ है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बनू नज्जार के बाग़ में अपने ख़च्चर पर सुवार थे और हम भी आप के साथ थे कि अचानक ख़च्चर बिदकने लगा क़रीब था कि आप उस की पुश्त से नीचे तशरीफ़ ले आते, देखा गया तो वहां चार, पांच या छे क़ब्रें थीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि इन क़ब्र वालों को कौन पहचानता है ? एक शख़्स ने कहा : मैं पहचानता हूं। इरशाद फ़रमाया : येह कब फ़ौत हुवे ? उस ने बताया कि येह शिर्क की ह़ालत में मरे हैं। इरशाद फ़रमाया : बेशक येह उम्मत अपनी क़ब्रों में आज़माई जाएगी अगर येह ख़ौफ़ न होता कि तुम मुर्दे दफ़्नाना छोड़ दोगे तो मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करता कि येह अ़ज़ाबे क़ब्र जो मैं सुन रहा हूं तुम्हें भी सुनाए।(3)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं : मेरे सरताज, साहि़बे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اَهْلَ الْقُبُوْرِ يُعَذَّبُوْنَ فِیْ قُبُوْرِهِمْ عَذَابًا تَسْمَعُهُ الْبَهَائِمُ या'नी बेशक मुर्दों को अपनी क़ब्रों में ऐसा अ़ज़ाब दिया जाता है जिसे चौपाए सुनते हैं।(4)

---

(1)... بخاری، کتاب الجنائز، باب التعوذ من عذاب القبر، ۱/۴۶۴، حدیث: ۱۳۷۷

(2)... بخاری، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، ۱/۴۶۳، حدیث: ۱۳۷۲

(3)... مسلم، کتاب الجنة وصفة نعیمها واهلها، باب عرض مقعد المیت من الجنة او النار علیه، ص۱۵۳۴، حدیث: ۲۸۶۷

(4)... مسلم، کتاب المساجد، باب استحباب التعوذ من عذاب القبر، ص۲۹۵، حدیث: ۵۸۶

अ़ज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगो

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बनू नज्जार के एक नख़्लिस्तान (या'नी खजूर के बाग़) में दाख़िल हुवे और ज़मानए जाहिलिय्यत में मरने वाले बनू नज्जार की क़ब्रों से अ़ज़ाब दिये जाने की आवाज़ें सुनीं तो बे चैनी की कैफ़िय्यत में बाहर तशरीफ़ लाए और सहाबा से फ़रमाया : अ़ज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगो ।[1]

99 अज़्दहे

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ब्र में काफ़िर पर 99 अज़्दहे मुसल्लत़ किये जाते हैं जो उसे क़ियामत तक डसते रहेंगे ।[2]

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन अपनी क़ब्र में एक बाग़ में होता है, क़ब्र उस के लिये 70 गज़ फ़राख़ कर दी जाती है और उसे चौदहवीं रात के चांद की त़रह रौशन कर दिया जाता है, क्या तुम जानते हो येह आयत किस बारे में नाज़िल हुई :

فَاِنَّ لَہٗ مَعِیْشَۃً ضَنْكًا (پ۱۶، طٰہٰ:۱۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो बेशक उस के लिये तंग ज़िन्दगानी है ।

सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं । इरशाद फ़रमाया : येह काफ़िर के अ़ज़ाबे क़ब्र के बारे में नाज़िल हुई है । क़सम उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! काफ़िर पर उस की क़ब्र में 99 अज़्दहे मुसल्लत़ कर दिये जाते हैं जो क़ियामत तक उस पर फंकारते और उसे नोचते फाड़ते रहेंगे ।[3]

---

1 ...مسند امام احمد، مسند جابر بن عبد اللّٰہ، ۵/۱۳، حدیث: ۱۴۱۵۵

2 ...مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴/۷۷، حدیث: ۱۱۳۳۴

3 ...الاحسان، کتاب الجنائز، باب المریض وما یتعلق بہ، فصل فی احوال المیت فی قبرہ، ۵/۵۰، حدیث: ۳۱۱۲
مسند ابی یعلی، مسند ابی ھریرۃ، ۵/۵۰۸، حدیث: ۶۶۱۳

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूर जाने काइनात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : काफ़िर पर दो सांप मुसल्लत़ कर दिये जाते हैं, एक सर की जानिब और दूसरा पाउं की जानिब और दोनों उसे क़ियामत तक काटते रहेंगे।[1]

पेशाब के छींटों से न बचने का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि त़य्यिबो त़ाहिर आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : تَنَزَّهُوا مِنَ الْبَوْلِ فَإِنَّ عَامَّةَ عَذَابِ الْقَبْرِ مِنْهُ या'नी पेशाब से बचो क्यूंकि क़ब्र का अ़ज़ाब ज़ियादा तर इसी से होता है।[2]

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दो क़ब्रों के पास से गुज़रे तो इरशाद फ़रमाया : इन दोनों को अ़ज़ाब हो रहा है और किसी बड़ी बात पर नहीं हो रहा बल्कि इन में से एक पेशाब के छींटों से नहीं बचता था और दूसरा चुग़ुल ख़ोरी करता था फिर आप ने एक तर शाख़ ले कर उस के दो टुकड़े किये और दोनों क़ब्रों पर एक एक गाड़ दिया। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप ने येह क्यूं किया ? इरशाद फ़रमाया : जब तक येह ख़ुश्क न होंगी इन क़ब्र वालों पर अ़ज़ाब हल्का रहेगा।[3]

हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ मैमूना ! अ़ज़ाबे क़ब्र से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो क्यूंकि ज़ियादा तर अ़ज़ाबे क़ब्र ग़ीबत और पेशाब (से न बचने) की वज्ह से होता है।[4]

चुग़ली का वबाल

हज़रते सय्यिदुना या'ला बिन सय्याबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक ऐसी क़ब्र के पास से गुज़रे जिस में मुर्दे को अ़ज़ाब हो रहा था इरशाद फ़रमाया

---

1 ...مسند امام احمد، مسند السیدۃ عائشۃ، ۹/۴۹۲، حدیث: ۲۵۲۴۴

2 ...ابن ماجہ، کتاب الطہارۃ، باب التشدید فی البول، ۱/۲۱۹، حدیث: ۳۴۸

دارقطنی، کتاب الطہارۃ، باب نجاسۃ البول... الخ، ۱/۲۳۱، حدیث: ۴۵۹

3 ...بخاری، کتاب الوضوء، باب: ۵۹، ۱/۹۲، حدیث: ۲۱۸

4 ...شعب الایمان، باب فی تحریم اعراض الناس... الخ، ۵/۳۰۳، حدیث: ۶۷۳۱

طبقات ابن سعد، ۸/۲۳۶، رقم: ۴۲۶۵: میمونۃ بنت سعید

: येह लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) था। फिर एक तर शाख़ मंगवा कर उस की क़ब्र पर लगा दी और इरशाद फ़रमाया : जब तक येह तर रहेगी इस के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ रहेगी।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना या'ला बिन मुर्रह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं रसूले अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ क़ब्रिस्तान के पास से गुज़र रहा था कि मैं ने एक क़ब्र से चीख़ो पुकार सुनी तो अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं ने क़ब्र से चीख़ सुनी है। इरशाद फ़रमाया : या'ला ! क्या वाक़ेई तुम ने सुनी है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : येह शख़्स एक आसान सी बात की वज्ह से अ़ज़ाब में मुब्तला है। मैं ने अ़र्ज़ की : वोह क्या है ? इरशाद फ़रमाया : येह लोगों की चुग़लियां करता और पेशाब से न बचता था।[2] फिर रावी ने तर शाख़ वाली बात बयान फ़रमाई।

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते अबू त़लह़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के बाग़ में चल रहे थे और ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ आप के पीछे पीछे थे कि रास्ते में एक क़ब्र आ गई तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ बिलाल ! मैं सुन रहा हूं कि इस क़ब्र वाले को अ़ज़ाब हो रहा है क्या तुम भी इसे सुन रहे हो ? फिर दरयाफ़्त करने पर मा'लूम हुवा वोह एक यहूदी की क़ब्र है।[3]

अ़ज़ाबे क़ब्र के अस्बाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़ज़ाबे क़ब्र तीन चीज़ों के सबब होता है : (1) ग़ीबत (2) चुग़ली और (3) पेशाब, लिहाज़ा इन से बचो।[4]

---

1 ... معجم اوسط، ۲/۳۵، حدیث: ۲۴۱۳، مسند امام احمد، مسند الشامیین، حدیث یعلی بن مرۃ الثقفی، ۶/۱۷۷، حدیث: ۱۷۵۷۱

2 ... دلائل النبوۃ، باب ما جاء فی سماع یعلی بن مرۃ ضغطۃ فی قبر، ۶/۴۲

3 ... مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ۴/۳۰۳، حدیث: ۱۲۵۳۲

4 ... اثبات عذاب القبر للبیہقی، ص ۱۳۶، حدیث: ۲۳۹

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़ज़ाबे क़ब्र के तीन हिस्से हैं : एक हिस्सा ग़ीबत, एक चुग़ली और एक पेशाब की वज्ह से है ।(1)

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे मुबश्शिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं कि ग़ैबों पर ख़बरदार बि इज़्ने परवरदगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِسْتَعِیْذُوْا بِاللّٰہِ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ या'नी अ़ज़ाबे क़ब्र से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो । मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मुर्दों को क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाता है ? इरशाद फ़रमाया : हां ! ऐसा अ़ज़ाब जिस की आवाज़ चौपाए सुनते हैं ।(2)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुर्दों को उन की क़ब्रों में अ़ज़ाब दिया जाता है ह़त्ता कि चौपाए उन की आवाज़ सुनते हैं ।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं : मैं नानाए ह़सनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ सफ़र में था और आप अपनी सुवारी पर चले जा रहे थे कि अचानक सुवारी बिदक गई, मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप की सुवारी क्यूं बिदकी है ? इरशाद फ़रमाया : इस लिये कि इस ने उस आदमी की आवाज़ सुन ली है जिसे क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जा रहा है ।(4)

हज़रते सय्यिदुना इ़करिमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿۱۳﴾

(پ۲۸، الممتحنة:۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जैसे काफ़िर आस तोड़ बैठे क़ब्र वालों से ।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : कुफ़्फ़ार जब क़ब्रों में दाख़िल हो कर उस ज़िल्लत व अ़ज़ाब को देखेंगे जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये तय्यार कर रखा है तो रह़मते इलाही से मायूस हो जाएंगे ।(5)

---

1 ...اثبات عذاب القبر للبیھقی، ص۱۳۶، حدیث:۲۳۸

2 ...مسند امام احمد، حدیث ام مبشر امراۃ زید بن حارثۃ، ۱۰/۲۹۵، حدیث:۲۷۱۱۲

3 ...معجم کبیر، ۱۰/۲۰۰، حدیث:۱۰۴۵۹

4 ...معجم اوسط، ۲/۳۰۴، حدیث:۳۳۲۶

5 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام عکرمۃ، ۸/۲۸۸، حدیث:۵

अबू जह्ल का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं मक़ामे बद्र के क़रीब से गुज़र रहा था कि अचानक एक शख़्स गढ़े से नुमूदार हुवा जिस की गर्दन में ज़न्जीर थी, उस ने मुझे पुकार कर कहा : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! मुझे पानी पिलाओ । मा'लूम नहीं वोह मेरा नाम जानता था या उस ने अ़रब के दस्तूर के मुताबिक़ अ़ब्दुल्लाह कहा था । फिर उसी गढ़े से एक और आदमी कोड़ा लिये उस के पीछे निकला और कहा : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! इसे पानी मत पिलाना क्यूंकि येह काफ़िर है । फिर वोह उसे कोड़ा मारते हुवे वापस गढ़े में ले गया । मैं ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर सारा माजरा बयान किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या येह सब तुम ने देखा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां । इरशाद फ़रमाया : वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दुश्मन अबू जह्ल था और येह अ़ज़ाब उसे क़ियामत तक होता रहेगा ।[1]

हिकायत : मश्कीज़ा और पेशाब

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मैं एक मरतबा दौराने सफ़र ज़मानए जाहिलिय्यत के क़ब्रिस्तान के पास से गुज़रा तो एक क़ब्र से एक शख़्स नुमूदार हुवा जिस की गर्दन में आग की ज़न्जीर थी, उस वक़्त मेरे पास पानी का मश्कीज़ा भी था जब उस ने मुझे देखा तो कहा : अ़ब्दुल्लाह ! मुझे पानी पिलाओ । इतने में उस के पीछे एक शख़्स निकला और कहा : अ़ब्दुल्लाह ! इसे पानी मत पिलाना क्यूंकि येह काफ़िर है । फिर उस ने उसे कोड़े मारे और ज़न्जीर से घसीटता हुवा वापस क़ब्र में ले गया, जब रात हुई तो मैं एक बुढ़िया के घर चला गया, उस घर के पास भी एक क़ब्र थी जिस से मैं ने येह आवाज़ सुनी : بَوْلٌ وَّمَا بَوْلٌ شَنٌّ وَّمَا شَنٌّ या'नी पेशाब और पेशाब क्या है ? मश्कीज़ा और मश्कीज़ा क्या है ? मैं ने बुढ़िया से पूछा : येह क्या माजरा है ? उस ने कहा : येह मेरा शौहर है जब पेशाब करता था तो उस के छींटों से नहीं बचता था, मैं उस से कहती थी : तेरा बुरा हो ! ऊंट जब पेशाब करता है तो टांगें फैला देता है, लेकिन वोह न सुनता था और जिस दिन से मरा है येही पुकारता रहता है कि بَوْلٌ وَّمَا بَوْلٌ या'नी पेशाब और पेशाब क्या है ? मैं ने कहा : येह मश्कीज़े वाली क्या बात है ? वोह बोली : एक मरतबा उस के पास एक प्यासा आया और उस ने कहा : मुझे पानी पिला दो । तो उस ने कहा : येह लो मश्कीज़ा । जब उस ने मश्कीज़ा लिया तो

[1] ...معجم اوسط، ۵/۵۳، حدیث: ۲۵۲۰

वोह ख़ाली निकला और वोह प्यासा शिद्दते प्यास से मर गया। मेरा शौहर जब से मरा है येही कहता रहता है : شَنٌّ وَمَاشَنٌّ या'नी मश्कीज़ा और मश्कीज़ा क्या है ? जब मैं सफ़र से लौट कर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवा और सारा वाक़िआ गोश गुज़ार किया तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मन्अ़ फ़रमा दिया कि कोई शख़्स तन्हा सफ़र न करे।(1)

हज़रते सय्यिदुना हुवैरिस बिन रबाब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं चन्द लोगों के साथ सफ़र में था कि अचानक हमारे सामने क़ब्र से एक शख़्स नुमूदार हुवा जिस के चेहरे और सर से आग के शो'ले निकल रहे थे और हाथ गर्दन में लोहे की हथकड़ी से बन्धे थे, वोह कहने लगा : मुझे पानी पिलाओ, मुझे पानी पिलाओ। इतने में एक और आदमी उस के पीछे निकला और बोला : काफ़िर को पानी मत पिलाना। इतना कह कर उसे हथकड़ी के सिरे से पकड़ कर खींचता हुवा क़ब्र में ले गया, मेरी कैफ़िय्यत ऐसी थी कि मैं ने ऊंटनी को वहीं बिठा दिया और मग़रिब व इशा की नमाज़ पढ़ कर फिर सफ़र शुरूअ़ किया ह़त्ता कि सुब्ह़ मदीनए मुनव्वरा पहुंच कर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की बारगाह में हाज़िर हुवा और सारा क़िस्सा बयान किया। आप ने फ़रमाया : ऐ हुवैरिस ! मैं तुम पर तोहमत नहीं लगाता बेशक तुम ने मुझे सच्ची ख़बर सुनाई है। फिर आप ने ज़मानए जाहिलिय्यत पाने वाले चन्द बड़ी उ़म्र के लोगों को बुला कर फ़रमाया : हुवैरिस ने मुझे एक ख़बर दी है और मैं उसे झुटला भी नहीं रहा। फिर मुझ से फ़रमाया : हुवैरिस ! जो बात मुझे बताई है इन्हें भी बताओ। चुनान्चे, मैं ने वोह सारा क़िस्सा दोहरा दिया। मेरी बात सुन कर वोह कहने लगे : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! हम उस शख़्स को पहचानते हैं वोह बनू ग़फ़्फ़ार का आदमी है जो ज़मानए जाहिलिय्यत में मर गया था और उस के ख़याल में मेहमान का कोई ह़क़ नहीं था।(2)

हज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन उ़रवा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने वालिद के मुतअ़ल्लिक़ बयान करते हैं कि एक मरतबा वोह मक्का व मदीना के दरमियान सफ़र पर थे कि अचानक शो'लों में लिपटा और ज़न्जीरों में जकड़ा एक शख़्स क़ब्र से बाहर निकला और कहा : ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! पानी छिड़को, ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! पानी छिड़को। इतने में उस के पीछे एक और शख़्स येह कहते हुवे नुमूदार हुवा : ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! पानी मत छिड़कना, ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! पानी मत छिड़कना। येह मन्ज़र देख कर वोह बेहोश हो गए और जब सुब्ह़ बेदार हुवे तो उन के बाल सफ़ेद

1...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب من عاش بعد الموت، ٢/ ٢٨٦، حديث: ٣٣

2...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب القبور، جامع ذكر القبور، ٦/ ٧٩، حديث: ١١٤

موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب من عاش بعد الموت، ٢/ ٣٠٣، حديث: ٥٦

हो चुके थे। जब उन्हों ने येह क़िस्सा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को बताया तो आप ने तन्हा सफ़र करने से मन्अ़ फ़रमा दिया।(1)

ख़ियानत का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं हबीबे ख़ुदा, मुहम्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह बक़ीए़ ग़रक़द से गुज़रा तो आप ने इरशाद फ़रमाया : "अफ़्सोस ! अफ़्सोस।" मैं समझा शायद मुझ से फ़रमा रहे हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मुझ से कोई ख़त़ा सरज़द हो गई है ? इरशाद फ़रमाया : कैसी ख़त़ा ? मैं ने अ़र्ज़ की : आप ने मुझ पर अफ़्सोस फ़रमाया है। इरशाद फ़रमाया : नहीं, बल्कि इस क़ब्र वाले पर, मैं ने इसे एक क़बीले के पास ज़कात की वुसूल याबी के लिये भेजा तो इस ने एक ज़िरह बत़ौरे ख़ियानत रख ली थी अब इसे उस की मिस्ल आग की एक ज़िरह पहना दी गई है।(2)

एक कोड़ा मार ही दिया

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुरह़बील عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَکِیْل फ़रमाते हैं : एक शख़्स का इन्तिक़ाल हो गया, लोग उसे परहेज़गार तसव्वुर करते थे, जब वोह अपनी क़ब्र में पहुंचा तो फ़िरिश्तों ने कहा : हम तुझे अ़ज़ाब के 100 कोड़े मारेंगे। उस ने कहा : तुम मुझे क्यूं मारोगे ? क्या मैं मुत्तक़ी परहेज़गार नहीं था ? कहा : चलो 50 मारेंगे। उस ने फिर हुज्जत की ह़त्ता कि वोह कम होते होते एक कोड़े पर आ गए बिल आख़िर उन्हों ने एक कोड़ा मार ही दिया जिस से पूरी क़ब्र में आग भड़क उठी और वोह मुर्दा जल कर ख़ाकिस्तर हो गया उसे फिर दुरुस्त हालत पर लौटाया गया तो उस ने पूछा : तुम ने मुझे येह कोड़ा किस वज्ह से मारा ? फ़िरिश्तों ने कहा : एक दिन तू ने (अ़दम तवज्जोह की बिना पर) बे वुज़ू नमाज़ पढ़ी थी और एक दिन एक मज़लूम ने तुझ से फ़रयाद की मगर तू ने उस की मदद न की।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों में से एक

1...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۷۴/۶، حدیث: ۹۵

2...نسائی، کتاب الامامۃ، الاسراع الی الصلاۃ من غیر سعی، ص۱۵۰، حدیث: ۸۵۹

صحیح ابن خزیمۃ، کتاب الزکاۃ، باب التغلیظ فی غلول الساعی من الصدقۃ، ۵۲/۴، حدیث: ۲۳۳۷

3...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام علقمۃ، ۲۱۵/۸، حدیث: ۱۳

के बारे में हुक्म जारी हुवा कि उसे क़ब्र में 100 कोड़े मारे जाएं। चुनान्चे, वोह बन्दा मुसलसल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ व फ़रयाद करता रहा हत्ता कि (मुआफ़ होते होते) एक कोड़ा रह गया, उस एक कोड़े से उस की क़ब्र आग से भर गई फिर जब आग ख़त्म हुई और उस बन्दे को इफ़ाक़ा हुवा तो (उस ने फ़िरिश्तों से) पूछा : तुम ने मुझे येह कोड़ा क्यूं मारा ? उन्हों ने कहा : एक दिन तू ने बे वुज़ू नमाज़ पढ़ी थी और एक मरतबा तू मज़्लूम के पास से गुज़रा मगर उस की मदद न की।(1)

अ़ज़ाबे बरज़ख़ के चन्द मनाज़िर

हज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अक्सर अपने सहाबा से पूछते कि तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है ? एक दिन खुद ही इरशाद फ़रमाया : आज रात दो आने वाले मेरे पास आए और कहा : हमारे साथ चलें। मैं उन के साथ चल पड़ा, वोह मुझे अरज़े मुक़द्दसा (पाक ज़मीन फ़िलिस्तीन) में ले आए, हम ने देखा कि एक बन्दा लेटा हुवा है और उस के सिरहाने दूसरा बन्दा एक बड़ा पथ्थर उठाए खड़ा है और उस के सर को कुचल रहा है, पथ्थर सर पर लगते ही सर कुचल जाता है और पथ्थर लुढ़क जाता है। जब तक वोह पथ्थर उठा कर लाता है सर दोबारा सहीह हो जाता है, वोह बन्दा दोबारा उस का सर कुचल देता है, मैं ने कहा : سُبْحٰنَ اللہ ! येह दोनों कौन हैं ? उन्हों ने कहा : आगे तशरीफ़ ले चलिये। चुनान्चे हम आगे गए तो एक बन्दे को बैठे और दूसरे को हाथ में लोहे का औज़ार लिये उस के सर पर खड़े देखा कि वोह लोहे के औज़ार से बैठे हुवे का एक जबड़ा चीरता हुवा गुद्दी तक ले जाता है इसी त़रह़ नाक का नथना और आंख को भी चीरते हुवे गुद्दी तक ले जाता है। फिर दूसरी त़रफ़ आता है और येही अ़मल करता है जब तक पहला ठीक हो जाता है, उसी त़रह़ बारी बारी चीरता रहता है। मैं ने कहा : سُبْحٰنَ اللہ ! येह दोनों कौन हैं ? उन्हों ने कहा : आगे चलिये। हम आगे चल कर एक तन्नूर पर पहुंचे जिस में से शोरो गुल की आवाज़ें आ रही थीं, हम ने अन्दर झांक कर देखा तो उस में नंगे मर्द व ज़न मौजूद थे, उन के नीचे से शो'ले लपक रहे थे, जब वोह शो'ले उन्हें पहुंचते तो वोह चीख़ते चिल्लाते, मैं ने पूछा : येह कौन हैं ? उन्हों ने कहा : आगे तशरीफ़ ले चलिये। हम आगे चल कर एक ऐसी नहर पर पहुंचे जो ख़ून की त़रह़ सुर्ख़ थी, एक

(1)...امالی ابن سمعون، المجلس الثالث عشر، الجزء الثانی، ص۲۱۷، حدیث:۲۱۲

आदमी उस में तैर रहा था और दूसरा शख़्स हाथ में कसीर पथ्थर लिये किनारे पर खड़ा था, अन्दर वाला शख़्स तैरते हुवे किनारे पर आ कर अपना मुंह खोलता तो येह उस के मुंह में एक पथ्थर डाल देता अल ग़रज़ वोह कुछ देर तैर कर जब भी वापस आता और मुंह खोलता तो येह फिर एक पथ्थर उस के मुंह में डाल देता, मैं ने पूछा : येह कौन है ? वोह बोले : आगे तशरीफ़ ले चलिये। हम आगे चले तो एक इन्तिहाई बद सूरत शख़्स देखा। इतना बद सूरत तुम ने कभी न देखा होगा, उस के क़रीब आग थी और वोह उस के गिर्द फेरे लगा रहा था, मैं ने पूछा : येह कौन है ? कहा : आगे तशरीफ़ ले चलिये। चुनान्चे,

हम चलते हुवे एक सब्ज़ बाग़ में पहुंचे जिस में मौसिमे बहार का हर फूल मौजूद था और बाग़ के बीचों बीच एक इतना लम्बा शख़्स खड़ा था जिस का सर आस्मान को छूता महसूस हो रहा था, उस के इर्द गिर्द कुछ बच्चे भी थे जिन्हें मैं ने पहले कभी न देखा था। फ़िरिश्तों ने मुझ से कहा : आगे चलिये। फिर हम आगे गए तो एक इतने बड़े बाग़ में पहुंच गए जिस से बड़ा और ख़ूब सूरत बाग़ मैं ने कभी न देखा था, उस में चलते हुवे हम एक ऐसे शहर में पहुंच गए जो सोने और चांदी की ईंटों से बना हुवा था हम ने शहर के दरवाज़े पर पहुंच कर उसे खुलवाया और जब अन्दर दाख़िल हुवे तो वहां अ़जीबो ग़रीब लोगों से हमारी मुलाक़ात हुई उन का एक हिस्सा तो इतना हसीन था कि तुम ने ऐसा हसीन कभी न देखा होगा और एक हिस्सा इतना बद सूरत था जितना तुम ने आज तक न देखा होगा। मुझे अपने साथ ले जाने वालों ने उन से कहा : इस नहर में दाख़िल हो जाओ वोह सामने वाली नहर में दाख़िल हो गए, वोह कुशादा नहर थी जिस का पानी ख़ालिस सफ़ेद था, जब बाहर निकले तो उन की बद सूरती हुस्नो जमाल में बदल चुकी थी, उन्हों ने मुझे बताया कि येह "जन्नते अ़द्न" है और येही आप का बुलन्दो बाला मक़ाम है, अब मैं ने निगाह उठा कर देखा तो सफ़ेद बादल की मानिन्द एक महल नज़र आया, वोह बोले : येह आप का है। मैं ने उन से कहा : ख़ुदाए मेहरबान तुम्हें बरकत अ़ता फ़रमाए, अब मुझे छोड़ दो ताकि मैं अपने महल में दाख़िल हो जाऊं। उन्हों ने कहा : अभी इस का वक़्त नहीं आया। मैं ने उन से पिछली तमाम देखी हुई चीज़ों की वज़ाहत तलब की तो उन्हों ने कहा : पहला शख़्स जो आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया जिस का सर पथ्थर से कुचला जा रहा था उस ने क़ुरआने मजीद पढ़ कर भुला दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाने का आ़दी था, येह सज़ा उसे क़ियामत तक मिलती रहेगी, दूसरा शख़्स जिस के जबड़ों, नाक के नथनों और आंख के हल्क़ों को गुद्दी तक चीरा जा रहा था वोह इन्तिहाई झूटा था उसे भी क़ियामत

तक येह सज़ा मिलती रहेगी, तन्नूर में जलने वाले मर्द और औरतें ज़िनाकार थे, ख़ून की नहर में तैरते हुवे पथ्थर खाने वाला सूदख़ोर था और आग के गिर्द घूमने वाले हैबत नाक शख़्स दारोग़ए जहन्नम हज़रते मालिक عَلَیْہِ السَّلَام थे जब कि ख़ूब सूरत बाग़ में लम्बे क़द वाली हस्ती अबुल अम्बिया हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام थे और इन के पास मौजूद छोटे बच्चे वोह हैं जो फ़ित्रते इस्लाम पर बचपन में मर गए। येह बात सुन कर हज़राते सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या उन में मुशरिकीन के बच्चे भी शामिल हैं ? इरशाद फ़रमाया : हां ! वोह भी शामिल हैं। फिर बताया कि जो आधे ख़ूब सूरत आधे बद सूरत नज़र आते थे वोह अच्छे और बुरे अ़मल वाले थे, ख़ुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ ने उन से दर गुज़र फ़रमाया। (फिर उन फ़िरिश्तों में से एक ने कहा :) मैं जिब्राईल हूं और येह मीकाईल हैं।(1)

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : येह ख़्वाब मुबारक "अ़ज़ाबे बरज़ख़" के सुबूत में नस्स है क्यूंकि हज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के ख़्वाब हक़ीक़त में वह्य होते हैं और इसी ह़दीसे पाक में फ़रमाया गया कि "क़ियामत तक ऐसा होता रहेगा" (येह जुम्ला अ़ज़ाबे बरज़ख़ की वाज़ेह़ दलील है)।

क़ुरआन भुला देने का अ़ज़ाब

दारे क़ुत़नी की रिवायत में कुछ इस त़रह है कि "मैं ने कहा : मुझे उस बाग़ के बारे में बताओ। उस फ़िरिश्ते ने बताया कि वोह बाग़ वाले बच्चे हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام के ह़वाले कर दिये गए हैं वोह क़ियामत तक उन की परवरिश करेंगे। मैं ने पूछा : वोह ख़ून में तैरने वाला कौन था ? उस ने कहा : वोह सूदख़ोर था अब क़ियामत तक क़ब्र में उस की येही ग़िज़ा है। मैं ने कहा : जिस का सर कुचला जा रहा था वोह कौन था ? फ़िरिश्ते ने बताया कि उस ने क़ुरआने पाक सीखा फिर उस से ग़ाफ़िल हो गया यहां तक कि ऐसा भूल गया कि उस में से कुछ भी नहीं पढ़ सकता था, अब वोह क़ब्र में जैसे ही सोने लगता है फ़िरिश्ते उस का सर कुचल देते हैं और वोह क़ियामत तक उसे यूंही सोने नहीं देंगे।"(2)

---

1 ... بخاری، کتاب الجنائز، باب: ۹۳، ۱/۴۶۷، حدیث: ۱۳۸۶

بخاری، کتاب التعبیر، باب تعبیر الرؤیا بعد صلاۃ الصبح، ۴/۴۲۵، حدیث: ۷۰۴۷

2 ... تاریخ ابن عساکر، ۲۷/۵، رقم: ۳۱۳۹: عبد اللّٰہ بن احمد الجوھری، حدیث: ۵۷۱۳

आग की कैंचियां

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने कुछ लोग देखे जिन की ज़बानें आग की कैंचियों से काटी जा रही थीं मेरे दरयाफ़्त करने पर बताया गया कि येह लोग नाजाइज़ चीज़ों से ज़ीनत हासिल करते थे और मैं ने एक गढ़ा देखा जिस से चीख़ो पुकार की आवाज़ें आ रही थीं मेरे दरयाफ़्त करने पर बताया गया कि येह औ़रतें हैं जो नाजाइज़ चीज़ों से ज़ीनत हासिल करती थीं और कुछ ऐसे लोग भी देखे जो आबे ह़यात से ग़ुस्ल कर रहे थे मेरे पूछने पर बताया गया कि उन लोगों ने अच्छे बुरे दोनों त़रह़ के अ़मल किये थे।(1)

गुनाहों के अ़ज़ाबात का नक़्शा

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक दिन नमाज़े फ़ज्र पढ़ा कर हमारी त़रफ़ मुतवज्जेह हुवे और इरशाद फ़रमाया : रात मेरे पास दो फ़िरिश्ते हाज़िर हुवे और मुझे आस्माने दुन्या की त़रफ़ ले गए, मैं ने एक फ़िरिश्ता देखा जिस के हाथ में बड़ा पथ्थर था और उस के सामने एक आदमी था फ़िरिश्ता पथ्थर उस की खोपड़ी पर मार रहा था जिस से दिमाग़ निकल कर एक त़रफ़ बह जाता और पथ्थर दूसरी जानिब लुढ़क जाता, मैं ने पूछा : येह कौन है ? फ़िरिश्तों ने कहा : आगे तशरीफ़ ले चलिये। आगे भी एक फ़िरिश्ते को देखा जो अपने सामने पड़े आदमी के कभी दाएं और कभी बाएं जबड़े को लोहे की सलाख़ से चीरता हुवा कान तक ला रहा था, मैं ने कहा : येह कौन है ? फ़िरिश्ते बोले : आगे तशरीफ़ ले चलिये। मैं आगे बढ़ा तो ख़ून की एक नहर देखी जो हांडी की त़रह़ उबल रही थी, उस में बरहना लोग थे और नहर के किनारों पर फ़िरिश्ते अपने हाथों में मिट्टी के ढेले लिये मौजूद थे जो भी नहर में से बाहर झांकता है उसे वोह ढेला मारते जिस से वोह वापस नहर में गिरता ह़त्ता कि उस की तह में पहुंच जाता है, मैं ने पूछा : येह कौन हैं ? फ़िरिश्तों ने कहा : आगे बढ़िये। मैं आगे बढ़ा तो एक घर देखा जिस का निचला हिस्सा ऊपर वाले से ज़ियादा तंग था, उस में भी बरहना लोग थे जिन के नीचे आग भड़क रही थी और इतनी बदबू आ रही थी कि मैं ने उस से बचने के लिये अपनी नाक

(1)...تاریخ بغداد، ۱/ ۴۱۵، رقم: ۳۶۹: محمد بن ابراھیم بن عبد الحمید

पकड़ ली और पूछा : येह कौन हैं ? फ़िरिश्तों ने कहा : आगे तशरीफ़ ले चलिये। आगे बढ़े तो देखा कि एक सियाह टीले पर कुछ पागल लोग हैं और उन के पिछले मक़ाम में आग फूंकी जा रही है जो उन के मूंहों, नथनों, आंखों और कानों से निकल रही है, मैं ने पूछा : येह कौन लोग हैं ? मुझे कहा गया : आगे चलिये। मैं आगे बढ़ा तो आग से भरा एक ज़मीन दोज़ क़ैदख़ाना देखा जिस पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर था, उस आग से जो भी निकलता फ़िरिश्ता उस के पीछे हो लेता ह़त्ता कि उसे वापस वहीं डाल देता, मैं ने पूछा : येह कौन लोग हैं ? मुझे फिर आगे चलने का कहा गया तो मैं आगे बढ़ गया, क्या देखता हूं कि एक बाग़ है जिस में एक ह़सीनो जमील बुज़ुर्ग हैं कि उन से ह़सीन कोई नहीं, उन के इर्द गिर्द बच्चे मौजूद हैं। फिर एक दरख़्त देखा जिस के पत्ते हाथी के कानों जैसे थे, रब عَزَّوَجَلَّ ने जितना चाहा मैं उस दरख़्त पर चढ़ा, अचानक मैं ने ख़ुद को ऐसे ह़सीन मह़ल्लात में पाया जो खोखले मोतियों, सब्ज़ ज़बरजद और सुर्ख़ याक़ूत से बने हुवे थे, मैं ने पूछा : येह क्या है ? मुझे फिर आगे बढ़ने को कहा गया। चुनान्चे,

मैं आगे बढ़ा तो एक नह्र देखी जिस पर सोने और चांदी के दो पुल बने हुवे थे और उस नह्र के किनारे पर भी खोखले मोतियों, सब्ज़ ज़बरजद और सुर्ख़ याक़ूत से बने हुवे ऐसे मह़ल्लात थे कि इन से ख़ूब सूरत कोई घर नहीं, उस नह्र पर लोटे और प्याले बिखरे हुवे थे, मैं ने पूछा येह क्या है ? फ़िरिश्तों ने कहा : यहां ठहरिये। मैं ठहरा और एक प्याला उठाया, जब नह्र से भर कर पिया तो वोह शहद से ज़ियादा मीठा, दूध से ज़ियादा सफ़ेद और मख्खन से ज़ियादा नर्म था। फिर उन्हों ने मुझे बताया कि वोह शख़्स जिस का सर पथ्थर से कुचला जा रहा था कि दिमाग़ एक जानिब और पथ्थर दूसरी जानिब जा गिरता था, येह वोह है जो इ़शा की नमाज़ नहीं पढ़ता था और दीगर नमाज़ें वक़्त गुज़ार कर पढ़ता था उसे जहन्नम में डाले जाने तक यूंही मारा जाता रहेगा और वोह जिस की बाछें लोहे की सलाख़ से चीरी जा रही थीं येह उन लोगों का अ़ज़ाब है जो मुसलमानों के दरमियान फ़साद फैलाते और चुग़ुलख़ोरी किया करते थे, उन्हें भी येह अ़ज़ाब मुसलसल होता रहेगा ह़त्ता कि जहन्नम में डाल दिये जाएंगे और वोह जिस के मुंह में पथ्थर डाले जा रहे थे वोह सूदख़ोर है उसे भी जहन्नम में जाने तक येह अ़ज़ाब होता रहेगा और वोह बर्हना लोग ज़ानी थे और जो बदबू आ रही थी वोह उन की शर्मगाहों की थी, उन्हें भी जहन्नम में जाने तक येह अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा और जो पागल अफ़राद आप ने देखे वोह क़ौमे लूत़ का सा अ़मल करने और करवाने वाले थे वोह

भी जहन्नम में डाले जाने तक इस अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार रहेंगे और आग से भरा हुवा ज़मीन दोज़ क़ैदख़ाना जहन्नम था। फिर जो बाग़ आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया वोह जन्नतुल मावा है और जो बुज़ुर्ग आप ने देखे वोह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام थे और उन के गिर्द मुसलमानों के बच्चे थे और जिस दरख़्त पर आप चढ़े वोह सिद्रतुल मुन्तहा है और जो मह़ल्लात आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाए वोह आ'ला इ़ल्लिय्यीन या'नी अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा और सालिह़ीन की मनाज़िल व मक़ामात हैं और वोह ख़ूब सूरत नहर "नहरे कौसर" थी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप को अ़त़ा फ़रमाई है और येही आप और आप के अहले बैत के जन्नती ठिकाने हैं।(1)

दर्दनाक अ़ज़ाबात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी मे'राज शरीफ़ की ह़दीसे पाक में है कि फिर हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरा गुज़र एक ऐसे दस्तर ख़्वान के पास से हुवा जिस पर भुना हुवा गोश्त था लेकिन वहां कोई भी नहीं था और सामने दूसरे दस्तर ख़्वान पर गला सड़ा बदबूदार गोश्त था जिसे बहुत से लोग खा रहे थे, मैं ने पूछा : जिब्रील येह कौन लोग हैं ? उन्हों ने बताया कि येह आप की उम्मत के वोह लोग हैं जो ह़लाल छोड़ कर ह़राम की त़रफ़ बढ़ते थे। फिर मैं आगे बढ़ा तो ऐसे लोग देखे जिन के पेट कोठड़ियों की मानिन्द बड़े बड़े थे, इन में से कोई खड़ा होने की कोशिश करता तो मुंह के बल गिर पड़ता और कहता : ऐ मेरे रब ! क़ियामत क़ाइम न फ़रमा। येह लोग आले फ़िरऔ़न की गुज़र गाह पर पड़े हुवे थे, जब भी फ़िरऔ़नी जमाअ़त गुज़रती तो उन्हें रौंदती चली जाती। मैं ने बारगाहे इलाही में उन की चीख़ो पुकार सुनी तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा येह कौन लोग हैं ? कहा : येह आप की उम्मत के सूदख़ोर हैं। फिर कुछ आगे बढ़ा तो ऐसे लोग नज़र आए जिन के होंट ऊंट के होंटों की त़रह़ थे और उन के मुंह खोल कर उन्हें अंगारे खिलाए जा रहे थे और वोह अंगारे उन के नीचे से निकल जाते थे, मैं ने पूछा : येह कौन हैं ? उन्हों ने कहा : येह आप की उम्मत के वोह लोग हैं जो नाह़क़ यतीमों का माल खाते थे। फिर आगे चल कर कुछ औ़रतें देखीं जो पिस्तानों से लटकी हुई थीं, मेरे पूछने पर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने बताया कि येह ज़ानी औ़रतें हैं। फिर आगे बढ़ा तो ऐसे लोग देखे

(1)...تاریخ ابن عساکر، ۴۵۱/۱۹، رقم: ۲۳۴۴: زید بن علی بن الحسین بن علی، حدیث: ۴۵۴۸، بتغیر قلیل

जिन के पहलूओं से गोश्त काट कर उन्हें खिलाया जा रहा था और कहा जा रहा था : खाओ जिस त़रह़ अपने भाई का गोश्त खाते थे । मैं ने उन के बारे में पूछा तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने बताया : येह ग़ीबत करने, ऐ़ब लगाने वाले हैं ।[1]

ज़क़ूम, आग के कांटे और जहन्नम के गर्म पथ्थर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी मे'राज शरीफ़ की ह़दीसे पाक में येह भी है कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने मे'राज की रात कुछ लोग देखे जिन के सर पथ्थरों से कुचले जा रहे थे वोह ठीक होते और फिर कुचल दिये जाते, उन्हें पलक झपकने की मोहलत भी नहीं मिल रही थी, मैं ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : येह कौन लोग हैं ? उन्हों ने बताया कि इन के सर नमाज़ के वक़्त बोझल हो जाते थे । फिर ऐसे लोगों पर गुज़र हुवा जिन के आगे पीछे कुछ चीथड़े लिपटे हुवे थे और वोह मवेशियों की त़रह़ चर रहे थे, वोह ज़क़ूम, आग के कांटे और जहन्नम के गर्म पथ्थर खा रहे थे, ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने बताया कि येह लोग अपने मालों की ज़कात नहीं देते थे । फिर मैं ऐसे लोगों के पास आया जिन के सामने एक हांडी में साफ़ सुथरा पका हुवा गोश्त था और दूसरी त़रफ़ कच्चा बदबूदार गोश्त, वोह लोग पके हुवे साफ़ सुथरे गोश्त को छोड़ कर कच्चा बदबूदार गोश्त खा रहे थे, मेरे पूछने पर ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : इन में जो मर्द हैं वोह अपनी बीवियों को छोड़ कर बदकार औ़रतों के पास रात बसर करते थे और जो औ़रतें हैं वोह अपने ह़लाल पाकीज़ा शौहरों को छोड़ कर ग़ैर मर्दों के पास रात गुज़ारती थीं । फिर एक शख़्स को देखा जो लकड़ियों का गठ्ठा उठा रहा था लेकिन वोह उस से उठ नहीं रहा था बल्कि और बढ़ता जा रहा था, पूछने पर बताया गया : येह वोह शख़्स है जिस के पास लोगों की अमानतें थीं जिन्हें येह लौटा नहीं सका अब उन का बोझ उठाए हुवे है फिर ऐसे लोगों पर गुज़र हुवा जिन की ज़बानें और होंट आग की क़ैंचियों से काटे जा रहे थे जैसे ही काटे जाते दोबारा ठीक हो जाते और उन्हें थोड़ी सी भी मोहलत नहीं दी जा रही थी, पूछा : येह कौन लोग हैं ? बताया गया कि येह फ़ितना परवर ख़त़ीब हैं ।[2]

---

1 ...دلائل النبوۃ، باب الدلیل علی ان النبی عرج بہ الاسماء...الخ، ۲/۳۹۰تا۳۹۳، ملتقطًا

2 ...دلائل النبوۃ، باب الدلیل علی ان النبی عرج بہ الاسماء...الخ، ۲/۳۹۷تا۳۹۹

लोहे के नाखुनों वाले

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि बशीर व नज़ीर आक़ा, दो आलम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने मे'राज की रात ऐसे लोग देखे जो लोहे के नाखुनों से अपने सीने और चेहरे नोच रहे थे, मैं ने पूछा : जिब्रील येह कौन लोग हैं ? उन्हों ने बताया कि येह लोगों के गोश्त खाने (या'नी ग़ीबत करने) और आबरू रेज़ी करने वाले हैं।(1)

सह़ाबा को बुरा भला कहने का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "जो मेरे किसी सह़ाबी को बुरा भला कहते हुवे दुन्या से गया, उस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक जानवर मुसल्लत़ फ़रमाएगा जो उस शख़्स का गोश्त नोचेगा और वोह उस की तक्लीफ़ को क़ियामत के दिन तक मह़सूस करेगा।"(2)

ह़राम देखने और ह़राम सुनने का अ़ज़ाब

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक दिन बा'द नमाज़े फ़ज्र सरकारे नामदार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने एक ख़्वाब देखा है और वोह ह़क़ है लिहाज़ा उसे अच्छी त़रह़ समझ लो। एक आने वाला आया और मेरा हाथ पकड़ कर एक लम्बे चौड़े पहाड़ के पास ले गया और कहा : इस पर चढ़िये। मैं ने कहा : मुझ से नहीं चढ़ा जाएगा। वोह बोला : मैं आप का साथ देता हूं मैं ने चढ़ना शुरूअ़ किया, मैं जब भी क़दम उठाता एक दरजा त़ै हो जाता ह़त्ता कि हम पहाड़ के ऊपर पहुंच गए, फिर हम आगे चले तो कुछ मर्द और औ़रतें नज़र आईं जिन की बांछें चिरी हुई थीं, मेरे पूछने पर उस ने बताया : येह वोह लोग हैं जो ऐसी बात कहते थे जिस पर खुद अ़मल नहीं करते थे। हम और आगे चले तो ऐसे मर्द और औ़रतों को देखा जिन की आंखों और कानों में कील ठुकी हुई थीं, मेरे इस्तिफ़्सार पर बताया गया कि इन की आंखें वोह कुछ देखती थीं जो नहीं देखना चाहिये और कान वोह सुनते थे जो नहीं सुनना चाहिये। फिर कुछ

---

(1)...ابو داود، کتاب الادب، باب الغیبۃ، ۴/۳۵۳، حدیث:۴۸۷۸

(2)...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/۸۳، حدیث:۱۳۰

आगे गए तो ऐसी औ़रतें देखीं जिन्हें एड़ियों के पठ्ठों से बांध कर उल्टा लटकाया गया था और सांप उन के पिस्तानों को डस रहे थे, बताया गया कि येह अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती थीं। कुछ और आगे चले तो मर्दों और औ़रतों को उल्टा लटके देखा जो थोड़ा मगर गर्म पानी चाट रहे थे, मेरे पूछने पर साथ वाले ने बताया कि येह रोज़ा रख कर वक़्त से क़ब्ल इफ़्तार कर लेते थे। फिर आगे बढ़े तो ऐसी औ़रतें और मर्द नज़र आए जो इन्तिहाई बद सूरत, गन्दा लिबास और बदबूदार थे, ऐसा लगता था गोया हैज़ वालियों की बदबू है। मेरे पूछने पर बताया गया कि येह ज़ानी मर्द और ज़ानी औ़रतें हैं। फिर कुछ बहुत ज़ियादा फूले हुवे और इन्तिहाई बदबूदार मुर्दों के पास से गुज़र हुवा, पूछा : येह कौन हैं? बताया : येह काफ़िर मुर्दे हैं। मज़ीद आगे बढ़े तो कुछ लोगों को एक दरख़्त के साए में देखा, मैं ने पूछा : येह कौन लोग हैं? बताया गया कि येह मुसलमान मुर्दे हैं। फिर आगे बढ़े तो छोटे बच्चे और बच्चियां दो नहरों के माबैन खेलते दिखाई दिये, मैं ने कहा : येह कौन हैं? फ़िरिश्ते ने बताया कि येह मोमिनीन की औलाद हैं। फिर हम आगे गए तो हम ने ह़सीनो जमील चेहरों, उ़म्दा पोशाकों और बेहतरीन ख़ुश्बूओं वाले लोग देखे, गोया उन के चेहरे कोरे काग़ज़ हैं, मेरे पूछने पर बताया गया कि येह सिद्दीक़ीन और सालिह़ीन हैं।(1)

क़ौमे लूत़ के साथ ह़श्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है :

مَنْ مَاتَ مِنْ اُمَّتِیْ یَعْمَلُ عَمَلَ قَوْمِ لُوطٍ نَقَلَہُ اللّٰہُ اِلَیْہِمْ حَتّٰی یُحْشَرَ مَعَہُمْ या'नी मेरी उम्मत में से जो भी क़ौमे लूत़ का सा अ़मल करने वाला मरेगा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उन्ही की त़रफ़ फेर देगा ह़त्ता कि उस का ह़श्र उन्ही के साथ होगा।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अस्लम दिमश्क़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : हमारे हां सरह़द के पास एक बन्दा मर गया तो उस को वहीं दफ़्ना दिया गया फिर तीसरे दिन खोदा गया तो देखा कि क़ब्र की ईंटें तो इसी त़रह़ लगी हुई हैं मगर मुर्दा ग़ाइब है। ह़ज़रते सय्यिदुना वकीअ़ बिन जर्राह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो उन्हों ने फ़रमाया : हम ने येह ह़दीस सुनी है कि

❶...معجم کبیر،۸/۱۵۵،حدیث:۷۶۶۶
❷...تاریخ بغداد،۱۱/۱۶۱،رقم:۵۸۵۳:عیسی بن مسلم الصفار

"क़ौमे लूत़ का सा अ़मल करने वाला कोई शख़्स मरता है तो उसे उन्ही लोगों के साथ मिला दिया जाता है और क़ियामत के दिन उन्ही के साथ उठाया जाएगा।"(1)

हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : कोई भी चोर, ज़ानी या शराबी जब मरता है तो उस पर दो अज़्दहे मुसल्लत़ कर दिये जाते हैं जो क़ब्र में उसे डसते रहते हैं।(2)

हज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मुअ़ल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर फ़िर्क़ए क़दरया या मरजिआ का कोई शख़्स मर जाए और उस की क़ब्र तीन दिन बा'द खोदी जाए तो उस का मुंह ज़रूर क़िब्ले से फिरा हुवा होगा।(3)

गधा नुमा इन्सान

हज़रते सय्यिदुना अ़व्वाम बिन ह़ौशब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक दफ़्आ़ मैं एक बस्ती में गया, उस की एक त़रफ़ क़ब्रिस्तान भी था, अ़स्र के बा'द वहां एक क़ब्र फटी और उस में से एक शख़्स नुमूदार हुवा जिस का सर गधे का और धड़ इन्सान का था, वोह तीन मरतबा हेंका (या'नी गधे की आवाज़ में चिल्लाया) फिर क़ब्र में चला गया और क़ब्र बन्द हो गई। मैं ने उस के बारे में मा'लूमात कीं तो पता चला कि वोह शराब का आ़दी था, जब शाम को घर आता तो मां समझाती कि बेटा ख़ुदा का ख़ौफ़ कर। वोह मां से कहता : तू तो गधे की त़रह़ हेंकती रहती है। उस की मौत अ़स्र के बा'द हुई थी और अब हर रोज़ अ़स्र के बा'द उस की क़ब्र खुलती है और वोह तीन मरतबा गधे की त़रह़ हेंकता है फिर क़ब्र बन्द हो जाती है।(4)

दो सफ़ेद परन्दे

हज़रते सय्यिदुना मरसद बिन ह़ौशब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अ़म्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास बैठा था और उन के पहलू में एक और शख़्स भी था जिस के चेहरे का कुछ हि़स्सा लोहे का बना हुवा था, आप ने उस से कहा : तुम ने जो कुछ देखा है वोह मरसद को

1...تاریخ ابن عساکر، ۴۰۶/۴۵، رقم: ۵۳۱۱: عمرو بن اسلم العابد

2...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، بشری المؤمن وانذار الکافر، ۴۷۶/۵، حدیث: ۲۵۷

3...تاریخ ابن عساکر، ۵۶۲/۴۳، رقم: ۵۱۹۸: عمر بن حفص ابو حفص الخیاط، حدیث: ۹۴۱۳

4...شرح اصول اعتقاد اھل سنۃ، باب الشفاعۃ لاھل الکبائر، ۹۷۵/۲، رقم: ۲۱۵۷

भी बताओ। उस ने कहा : एक रात मैं ने एक शख़्स के लिये क़ब्र खोदी, जब उसे दफ़्न कर के मिट्टी बराबर कर दी गई और लोग चले गए तो ऊंट जितने बड़े दो सफ़ेद परन्दे आए, उन में एक सर की जानिब और दूसरा पाउं की जानिब आ कर क़ब्र खोदने लगा, फिर एक क़ब्र के अन्दर चला गया और दूसरा किनारे पर खड़ा रहा, मैं भी क़ब्र के किनारे जा खड़ा हुवा, मैं ने सुना कि वोह परन्दा क़ब्र वाले से कह रहा है : क्या तू वोही नहीं जो दो ज़र्क़ बर्क़ चादरों का लिबास पहनता और उसे तकब्बुर के साथ घसीटते हुवे इतराता हुवा अपने सुसराल जाता था ? उस ने (अ़ज़ाब देख कर) कहा : मैं इसे बरदाश्त करने से क़ासिर हूं। फिर उसे एक ऐसी ज़र्ब लगाई गई कि उस की क़ब्र पानी और तेल[1] से भर कर बहने लगी, फिर उसे अस्ली ह़ालत पर लाया गया और परन्दे ने वोही बात दोहराई ह़त्ता कि उसे तीन बार मार लगाई। फिर उस ने अपना सर उठा कर मेरी त़रफ़ देखा और कहा : इसे देखो ! येह कहां बैठा हुवा है ? ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ इसे रुस्वा करे। येह कह कर उस ने मेरे एक रुख़्सार पर चोट मारी तो मैं रात भर वहीं पड़ा रहा, जब सुब्ह़ उठा तो येह ह़ालत थी जो आप देख रहे हैं।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़रीश[3] رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी वालिदा के ह़वाले से बयान करते हैं कि जब ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र ने कूफ़ा की ख़न्दक़ खोदी तो लोगों ने अपने मुर्दों को वहां से मुन्तक़िल करना शुरूअ़ कर दिया, एक नौजवान को उस की क़ब्र में इस ह़ाल में देखा गया कि वोह अपने हाथ काट रहा था।[4]

गुस्ताख़े सह़ाबा का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे एक मय्यित को ग़ुस्ल देने के लिये बुलाया गया, जब मैं ने उस के मुंह से कपड़ा हटाया तो क्या देखा कि उस की

1.....येह देखने वाले की नज़र में पानी और तेल है जब कि ह़क़ीक़तन आग है जो मय्यित के लिये भड़काई गई है जैसा कि ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दज्जाल के बारे में ख़बर दी, वोह इस ह़ाल में आएगा कि उस के साथ पानी और आग होगी, आग ह़क़ीक़त में ठन्डा पानी और पानी भड़कती आग होगा।

(الروح، المسألة السابعة: في جواب الملاحدة والزنادقة، الامر الخامس والسادس، ص۱۲۱)

2...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب القبور، جامع ذكر القبور، ۲/۷۵، حديث: ۹۸

3.....मतन में इस मक़ाम पर "अबू जरीश" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "अबू ह़रीश" है लिहाज़ा वोही लिख दिया गया है।

4...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب القبور، جامع ذكر القبور، ۲/۷۷، حديث: ۱۰۲

गर्दन में एक सांप लिपटा हुवा था, लोगों ने बताया कि येह शख़्स सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को गालियां बका करता था।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ फ़ज़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : मेरे पास एक शख़्स आया और कहा : मैं क़ब्रें खोद कर कफ़न चुराया करता था और मैं ने एक ता'दाद ऐसी देखी है जिन के चेहरे क़िब्ले से फिरे हुवे होते थे। आप ने येह मस्अला हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को लिख कर भेजा तो उन्हों ने जवाब दिया : येह लोग ख़िलाफ़े सुन्नत काम करने वाले थे।(2)

कफ़न चोर के इन्किशाफ़ात

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मोमिन बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि एक कफ़न चोर ने तौबा कर ली तो उस से कहा गया : तू ने कोई हैरानगी वाली बात देखी हो तो बयान कर। उस ने कहा : मैं ने एक शख़्स की क़ब्र खोदी तो उस के पूरे जिस्म में कीलें ठुकी हुई थीं और एक बड़ी कील सर में और एक पैरों में ठुकी हुई थी।(3)

एक और कफ़न चोर से हैरान कुन चीज़ देखने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो उस ने कहा : एक इन्सानी खोपड़ी देखी जिस में पिघला हुवा सीसा भरा था।

हज़रते सय्यिदुना मुफ़ज़्ल बिन यूनुस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز ने मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक से पूछा : तुम्हारे बाप को किस ने दफ़्न किया ? कहा : मेरे फ़ुलां ग़ुलाम ने। पूछा : वलीद को किस ने दफ़्न किया ? कहा : मेरे फ़ुलां ग़ुलाम ने। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं तुम्हें वोह बताता हूं जो उस दफ़्न करने वाले ने मुझे बताया है और वोह येह है कि जब उस ने तेरे बाप और वलीद को क़ब्र में रखा और उन की कफ़न की गिरहें खोलने आगे बढ़ा तो उन के चेहरे उन की गुद्दियों की त़रफ़ फिरे हुवे थे।(4)

---

1 ...موسوعة ابن ابی الدنيا، کتاب القبور، جامع ذكر القبور، ٦/ ٨٣، حديث: ١٢٩

2 ...موسوعة ابن ابی الدنيا، کتاب القبور، جامع ذكر القبور، ٦/ ٧٢، حديث: ٩٩

3 ...موسوعة ابن ابی الدنيا، کتاب القبور، جامع ذكر القبور، ٦/ ٧٢، حديث: ١٠٠

4 ...موسوعة ابن ابی الدنيا، کتاب القبور، جامع ذكر القبور، ٦/ ٨١، حديث: ١٢٣

यज़ीद बिन मुहल्लब का बयान है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز ने मुझ से फ़रमाया : ऐ यज़ीद ! जब मैं ने वलीद को दफ़्नाया तो वोह अपने कफ़न में ह़रकत कर रहा था।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मैमून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز को फ़रमाते सुना कि वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक की क़ब्र में उतरने वालों में एक मैं भी था, मैं ने उस के घुटनों को गर्दन के साथ मिले हुवे देखा। इस के बा'द से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه अपनी इस्लाहे़ ह़ाल पर तवज्जोह देने लगे।(2)

मिलावट करने वाले का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ह़मीद बिन मह़मूद मा'वली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर था कि उन के पास कुछ लोग आए और कहने लगे : हम ह़ज के लिये निकले थे कि हमारा एक रफ़ीक़ मक़ामे ज़ातुस्सिफ़ाह़ पर फ़ौत हो गया तो हम ने उस के कफ़न दफ़्न का बन्दोबस्त कर दिया और जब क़ब्र खोद कर फ़ारिग़ हुवे तो वोह सांपों से भर गई, हम ने वोह क़ब्र छोड़ कर दूसरी जगह क़ब्र खोदी तो वोह भी इसी त़रह़ निकली अब हम आप के पास ह़ाज़िर हुवे हैं कि अब क्या करें ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : येह उस कीने की वज्ह से है जो उस के सीने में था। जब कि बैहक़ी के अल्फ़ाज़ हैं : "उस के आ'माल की सज़ा है जाओ उसे किसी एक क़ब्र में दफ़्न कर दो, क़सम उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम सारी ज़मीन भी खोद डालो फिर भी येही मुआ़मला देखोगे। वोह लोग कहते हैं : हम ने उस शख़्स को एक क़ब्र में दफ़्न कर दिया और जब हम वापस आए तो उस की बीवी से पूछा : तुम्हारा शौहर क्या करता था ? उस ने कहा : वोह गेहूं (गन्दुम) बेचता था और उस में से कुछ घरवालों के लिये निकाल कर उस की जगह भूसे की मिलावट कर देता था।(3)

---

(1)...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/ ۸۲، حدیث: ۱۲۶

(2)...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/ ۸۲، حدیث: ۱۲۷

(3)...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/ ۸۳، حدیث: ۱۲۸
شعب الایمان، باب فی الامانات وما یجب من ادائها الی اهلها، ۴/ ۳۳۴، حدیث: ۵۳۱۱

ज़ुल्मन किसी का माल लेने का अन्जाम

एक दिमश्क़ी बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम एक मरतबा ह़ज को जा रहे थे कि रास्ते में हमारा एक साथी चल बसा, हम ने वहां मक़ामी शख़्स से फावड़ा मांगा और क़ब्र खोद कर उसे दफ़्ना दिया मगर फावड़ा क़ब्र में ही भूल गए लिहाज़ा फावड़ा निकालने के लिये हम ने क़ब्र दोबारा खोदी, जब अन्दर देखा तो उस शख़्स के हाथ, पाउं और गर्दन फावड़े के ह़ल्क़े में बन्धे हुवे थे, हम ने फ़ौरन क़ब्र बन्द कर दी और फावड़े वाले को पैसे दे कर राज़ी कर लिया। सफ़र से वापस आ कर जब उस की बीवी से उस के आ'माल के बारे में पूछा तो उस ने बताया कि मेरे शौहर ने एक शख़्स के साथ सफ़र किया जिस के पास कुछ माल था तो इस ने उसे क़त्ल कर के उस का माल ले लिया और येह ह़ज और जिहाद भी किया करता था।(1)

क़ब्रे सहाबी की तौहीन करने वाले का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बिन अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की मुबारक क़ब्र पर पेशाब कर दिया तो वोह पागल हो गया और कुत्तों की त़रह़ भोंकने लगा, फिर वोह मर गया लेकिन उस की क़ब्र से चीख़ने और भोंकने की आवाज़ सुनी गई।(2)

इब्ने ज़ियाद की नाक में सांप

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू ज़ियाद और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्मारा बिन उ़मैर (رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا) फ़रमाते हैं : इब्ने ज़ियाद और उस के साथियों के क़त्ल होने के बा'द जब उन के सर ला कर ज़मीन पर रखे गए तो एक बहुत बड़ा सांप आया जिस से घबरा कर लोग इधर उधर हो गए, वोह सांप तमाम सरों से होता हुवा इब्ने ज़ियाद के नथनों में दाख़िल हुवा और मुंह से निकल गया फिर मुंह में दाख़िल हुवा और नथनों से निकला, उस ने कई मरतबा येह अ़मल दोहराया और चला गया, कुछ देर बा'द फिर आया और इसी त़रह़ कर के ग़ाइब हो गया। कोई नहीं जानता था कि वोह कहां से आया और कहां गया!(3)

---

1 ...شرح اصول اعتقاد اهل سنة، باب الشفاعة لاهل الكبائر، ۲/۹۷۳، حديث: ۲۱۵۴

2 ...تاريخ ابن عساكر، ۱۳/۳۰۵، رقم: ۱۳۸۳: الحسن بن علی بن ابی طالب

3 ...تاريخ ابن عساكر، ۳۷/۴۶۲، رقم: ۴۴۴۳: عبيد الله بن زياد بن عبيد

हज़रते सय्यिदुना इमाम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने इसे अपनी जामेअ़ में ज़िक्र किया है और हज़रते सय्यिदुना इमाम त़बरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى ने सिर्फ़ हज़रते सय्यिदुना अ़म्मारा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से नक़्ल किया है और येह ह़दीस सह़ीह़ है।(1)

हज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد फ़रमाते हैं : मुस्लिम बिन उ़क़्बा मुर्री मदीनए मुनव्वरा आया और लोगों से इस बात पर यज़ीदे पलीद के लिये बैअ़त ली कि तुम सब खुदा عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी व ना फ़रमानी में यज़ीद के गुलामे मह़ज़ हो। लोगों ने उस की बात क़बूल कर ली मगर उन में एक शख़्स जो क़ुरैशी था और उस की मां उम्मे वलद थी कहने लगा : मैं सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी में उस की बैअ़त करता हूं, लेकिन उस की येह बैअ़त न मानी गई और मुस्लिम ने उसे क़त्ल कर दिया। उस वक़्त उस की मां ने क़सम खाई कि अगर ज़िन्दा या मुर्दा मुस्लिम बिन उ़क़्बा पर मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़ुदरत दी तो वोह उसे जला देगी। जब मुस्लिम मदीनए मुनव्वरा से निकला तो शदीद बीमार हो कर मर गया, वोह औ़रत अपने गुलामों को ले कर उस की क़ब्र पर गई और उन से क़ब्र खुदवाई, अन्दर देखा तो एक अज़्दहा उस की गर्दन में लिपटा हुवा उस की नाक को चूस रहा था। येह ख़ौफ़नाक मन्ज़र देख कर सब डर के मारे पीछे हट गए।(2)

क़ातिले मौला अ़ली का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना इस्मा अ़ब्बादानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى फ़रमाते हैं : मैं एक जंगल में घूम रहा था कि मैं ने एक गिर्जा देखा उस के मेह़राब में एक राहिब मौजूद था, मैं ने उस से कहा : तुम ने यहां जो सब से अ़जीब चीज़ देखी हो वोह मुझे बताओ। उस ने कहा : सुनो ! एक दिन मैं ने शुतर मुर्ग़ जैसा एक सफ़ेद परन्दा देखा जो एक चट्टान पर बैठ गया, फिर उस ने कै की तो एक सर निकला फिर पैर निकले फिर पिन्डलियां निकलीं, वोह इसी त़रह़ कै करता रहा और इन्सानी आ'ज़ा निकलते रहे और बिजली की सी सुरअ़त से एक दूसरे से जुड़ते रहे यहां तक कि वोह मुकम्मल आदमी बन गया, अब जैसे ही वोह उठने लगा परन्दे ने उसे एक ठोंग मारी तो वोह टुकड़े टुकड़े हो गया और परन्दा उसे निगल गया। वोह कई दिनों तक इस अ़मल में मसरूफ़ रहा, मेरा तअ़ज्जुब तो कम हो गया मगर

❶...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی بن ابی طالب، ۵/۴۳۱، رقم: ۳۸۰۵

معجم کبیر، ۳/۱۱۲، حدیث: ۲۸۳۲

❷...تاریخ ابن عساکر، ۵۸/۱۱۴، رقم: ۷۴۲۵: مسلم بن عقبۃ بن رباح، معجم کبیر، ۱۳/۶۴، حدیث: ۲۲۷

ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की अ़ज़मत पर मेरा यक़ीन मज़ीद पुख़्ता हो गया और मैं जान गया कि इन जिस्मों को मरने के बा'द भी ज़िन्दा किया जाएगा। एक दिन मैं उस परन्दे की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और कहा : ऐ परन्दे ! तुझे उस ज़ात की क़सम जिस ने तुझे पैदा किया ! अब की बार जब वोह इन्सान मुकम्मल हो जाए तो उस को मोहलत देना ताकि मैं उस से कुछ पूछूं तो वोह मुझे अपना क़िस्सा बताए। परन्दे ने साफ़ अ़रबी ज़बान में मुझ से कहा : बादशाहत और बक़ा मेरे रब के लिये है जो चीज़ों को फ़ना भी करता है और बाक़ी भी रखता है, मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता हूं, मुझे इस पर मुसल्लत़ किया गया है ताकि इस के गुनाह की सज़ा देता रहूं, अब मैं उस शख़्स की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा और पूछा : ऐ अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाले ! तेरा क़िस्सा क्या है और तू कौन है ? उस ने कहा : मैं ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का क़ातिल अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुल्जम हूं, जब मैं मर गया तो मेरी रूह़ बारगाहे ख़ुदावन्दी में ह़ाज़िर हुई, उस ने मेरा आ'माल नामा मुझे अ़त़ा किया जिस में मेरी पैदाइश से क़त्ले अ़ली तक हर नेकी और हर बदी लिखी हुई थी, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस फ़िरिश्ते को मुझ पर क़ियामत तक अ़ज़ाब देने के लिये मुसल्लत़ कर दिया, अब येह फ़िरिश्ता वोही कर रहा है जैसा कि तुम देख रहे हो। इतना कह कर वोह चुप हो गया और परन्दे ने फिर उसे एक ठोंग मार कर टुकड़े टुकड़े किया और एक एक कर के सब टुकड़े निगल लिये और चला गया।(1)

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि इस ह़िकायत को बयान करने वालों में सिर्फ़ "अबू अ़ली शैख़ तमाम" ऐसे रावी हैं जिन के बारे में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने अपनी किताब "मीज़ानुल ए'तिदाल" में फ़रमाया : इन पर कलाम है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने रजब ह़म्बली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने इस ह़िकायत को एक और सनद से रिवायत किया है जिस में एक रावी इस्माईल बिन अह़मद भी हैं जो यूसुफ़ बिन अबू तय्याह़ के साथ वहां गए और राहिब से इस बात के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उस ने इस से मिलती जुलती बात बयान की।(2)

---

❶...تاریخ ابن عساکر، ۴۰/۳۵۲، رقم: ۴۷۰۰: عصمۃ بن ابی عصمۃ اسرائیل بن یحماک

❷...اهوال القبور، فصل مایمنع من دخول ارواح المؤمنین...الخ، ص ۱۹۸

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मुहम्मद बिन अहमद बिन अबू अस्बग़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि एक अजनबी बूढ़ा हमारे पास आ कर कहने लगा : मैं नसरानी था और अपने गिर्जा में इबादत करता था, एक दिन बैठा हुवा था कि गिध के मुशाबेह एक परन्दा आया। बाक़ी रिवायत मा क़ब्ल की मिस्ल है।[1]

सब से पहला क़ातिल

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब यमानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی अपनी क़ौम के अ़ब्दुल्लाह नामी एक शख़्स के ह़वाले से बयान करते हैं कि उस ने कहा : मैं अपनी क़ौम के चन्द अफ़राद के साथ समन्दरी सफ़र पर रवाना हुवा, इत्तिफ़ाक़ से चन्द रोज़ समन्दरी रास्ता तारीक रहा फिर जब रौशनी हुई तो एक बस्ती आ गई, मैं पानी की तलाश में रवाना हुवा तो देखा कि बस्ती के दरवाज़े बन्द थे और हवा आ रही थी, मैं ने बहुत आवाज़े दीं मगर कोई जवाब न आया, इसी अस्ना में दो घुड़ सुवार नज़र आए, उन में से हर एक के नीचे सफ़ेद चादर थी, उन्हों ने कहा : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! इस गली में दाख़िल हो जाओ, तुम्हें पानी का हौज़ मिलेगा, उस में से पानी ले लेना और वहां के मन्ज़र को देख कर ख़ौफ़ज़दा न होना। मैं ने उन दोनों से बन्द दरवाज़ों के बारे में पूछा जिन में हवाएं चल रही थीं तो उन्हों ने कहा : इन घरों में मरने वालों की रूहें हैं। मैं हौज़ की त़रफ़ चल दिया जब हौज़ पर पहुंचा तो देखा कि एक शख़्स उलटा लटका हुवा है और अपने हाथ से पानी लेना चाहता है लेकिन नाकाम हो जाता है वोह मुझे देख कर पुकारने लगा : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! मुझे पानी पिलाओ। मैं ने बरतन ले कर उस में डुबोया ताकि उसे पानी पिला सकूं लेकिन किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं ने उस से कहा : ऐ बन्दए ख़ुदा ! तू ने देख लिया कि मैं ने अपनी त़रफ़ से कोशिश की मगर मेरा हाथ पकड़ लिया गया है, मुझे बता तू कौन है ? उस ने कहा : मैं हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام का वोह बेटा हूं जिस ने सब से पहले ज़मीन पर ख़ून बहाया (या'नी क़त्ल किया)।[2]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : एक शख़्स कश्ती में जा रहा था कि अचानक कश्ती टूट गई तो वोह एक तख़्ते से चिमट कर किसी जज़ीरे में जा पहुंचा, उसे एक घाटी में पानी नज़र आया तो वोह उस त़रफ़ चल दिया वहां उसे एक शख़्स नज़र आया जिस के पाउं में बेड़ियां थीं और वोह उन के साथ उलटा लटका हुवा था, उस के और

---

1 ...مشیخۃ لابی عبد اللّٰہ محمد الرازی، حکایات ثلاث، ص ۳۲۳، رقم: ۱/ اھوال القبور، فصل ما یمنع من دخول ارواح المؤمنین...الخ، ص ۱۹۸

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۲۹۶/۲، حدیث: ۴۸

पानी के बीच एक बालिश्त का ही फ़ासिला था, वोह मुसाफ़िर कहता है : उस ने मुझे देख कर कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहम करे ! मुझे पानी पिलाओ। मैं ने पूछा : तुम्हारा माजरा क्या है ? कहने लगा : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! जब भी कोई नाहक़ क़त्ल किया जाता है तो उस का अ़ज़ाब मुझे भी होता है क्यूंकि मैं पहला शख़्स हूं जिस ने क़त्ल का त़रीक़ा जारी किया।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन हाशिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं एक मय्यित को गुस्ल देने गया, जब उस के चेहरे से कपड़ा हटाया तो उस के गले में सियाह सांप लिपटा था, मैं ने सांप से कहा : क्या तुझे इस का हुक्म दिया गया है ? क्यूंकि हमारी सुन्नत है कि हम मुर्दों को गुस्ल देते हैं, अगर तू मुनासिब जाने तो एक त़रफ़ चला जा ताकि हम इसे गुस्ल दे लें फिर तू वापस आ जाना। येह सुन कर वोह सांप उस से जुदा हुवा और घर के कोने में चला गया। जब मैं उस के गुस्ल से फ़ारिग़ हुवा तो वोह सांप अपनी जगह लौट आया, उस मय्यित का जुर्म येह था कि उस पर बे दीन होने का इल्ज़ाम था।(2)

मोमिन के अ़ज़ाबात दिखाए जाने की हिक्मत

एक नेक बुजु़र्ग हज़रते सय्यिदुना अबू सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मैं एक शख़्स के पास उस के भाई की ता'ज़ियत को गया तो देखा कि वोह बहुत ग़मगीन था। कहने लगा : जब मैं भाई को दफ़्न कर के फ़ारिग़ हुवा तो मैं ने क़ब्र से कराहने की आवाज़ सुनी, मैं ने कहा : ब खुदा ! येह तो मेरे भाई की आवाज़ है। मैं जल्दी जल्दी मिट्टी हटाने लगा तो एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी कि ऐ बन्दए खुदा ! क़ब्र मत खोद। लिहाज़ा मैं ने मिट्टी वापस क़ब्र पर डाल दी और जैसे ही जाने के लिये खड़ा हुवा फिर से वोही आवाज़ आई : मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। मैं ने कहा : वल्लाह ! येह तो मेरे भाई की आवाज़ है, मैं जल्दी जल्दी मिट्टी हटाने लगा तो एक ग़ैबी आवाज़ सुनाई दी कि ऐ खुदा के बन्दे ! क़ब्र मत खोद। लिहाज़ा मैं ने मिट्टी वापस क़ब्र पर डाल दी और जाने के लिये खड़ा हुवा तो वोही पुकार सुनाई दी कि मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। मैं ने कहा : ब खुदा ! अब तो मैं ज़रूर क़ब्र खोदूंगा, अब जो मैं ने क़ब्र खोद कर देखी तो उस की गर्दन में आग की ज़न्जीर थी और पूरी क़ब्र आग से भरी हुई थी, मुझ से रहा न गया तो मैं ने वोह ज़न्जीर हटाने के लिये उस पर अपना हाथ मारा

(1)... كتاب العظمة، باب صفة البحر والحوت وعجائب ما فيهما، ص ٣١٤، رقم: ٩٣٧

(2)... كرامات الاولياء لابي محمد الخلال، ص ٥٥، رقم: ٢٣

तो मेरी उंगलियां झड़ कर अलग हो गईं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सिनान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : उस ने अपना हाथ हमें दिखाया तो वाक़ेई उस की चार उंगलियां नहीं थीं, मैं वहां से ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के पास गया और सारी बात बयान करने के बा'द कहा : यहूदी, मजूसी और नसरानी मरते हैं तो उन का येह ह़ाल नहीं देखा जाता जब कि गुनाहगार मोमिन का येह ह़ाल है ? आप ने फ़रमाया : हां क्यूंकि उन के जहन्नमी होने में कोई शक नहीं अलबत्ता मोमिनीन की येह ह़ालत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस लिये ज़ाहिर फ़रमाता है ताकि तुम नसीह़त पकड़ो।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मदीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى के एक दोस्त बयान करते हैं : मैं अपनी ज़मीन पर गया तो एक क़ब्रिस्तान के पास मग़रिब हो गई, मैं ने वहां नमाज़े मग़रिब अदा की और अभी वहीं बैठा था कि एक क़ब्र से रोने की आवाज़ आई, मुर्दा कह रहा था "मुझे बचाओ, मैं नमाज़ पढ़ता था, मैं रोज़े रखता था।" मुझ पर कपकपी त़ारी हो गई और मैं अपने साथी के क़रीब हो गया, उस ने भी वोही आवाज़ सुनी, मैं अपनी ज़मीन पर वापस आ गया और अगले दिन फिर उसी जगह जा कर नमाज़ पढ़ी और मग़रिब तक ठहरा रहा ह़त्ता कि नमाज़े मग़रिब भी वहीं पढ़ी और उस क़ब्र की त़रफ़ कान लगा दिये मुझे फिर वोही आवाज़ सुनाई दी कि मुझे बचाओ, मैं नमाज़ पढ़ता था, मैं रोज़े रखता था। मैं वापस घर आ गया और दो माह तक बुख़ार में मुब्तला रहा।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना मक्हूल दिमश्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : एक शख़्स जिस का आधा सर और आधी दाढ़ी सफ़ेद थी, बारगाहे फ़ारूक़ी में ह़ाज़िर हुवा तो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने आने की वज्ह दरयाफ़्त फ़रमाई, उस ने कहा : मैं रात के वक़्त बनू फुलां के क़ब्रिस्तान से गुज़रा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स आग का कोड़ा लिये हुवे दूसरे शख़्स के पीछे पीछे था और जब उस तक पहुंच जाता उसे कोड़ा मारता तो उस के सर से पाउं तक आग भड़क उठती। मुझे देख कर वोह मार खाने वाला मुझ से लिपट गया और कहा : ऐ बन्दए ख़ुदा ! मेरी मदद कर। कोड़ा मारने वाले ने कहा : ऐ बन्दे ! इस की मदद मत करना येह बहुत बुरा काफ़िर है। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : येही वज्ह है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तुम्हारे लिये इस बात को ना पसन्द फ़रमाया है कि तुम में से कोई तन्हा सफ़र करे।(3)

---

❶...عیون الحکایات لابن الجوزی، الحکایۃ الرابعۃ والخمسون بعد المائۃ: حکایۃ رجل یعذب فی قبرہ، ص ۱۷۱

❷...عیون الحکایات لابن الجوزی، الحکایۃ التاسعۃ والثلاثون بعد الثلاثمائۃ: حکایۃ رجل یعذب فی قبرہ، ص ۳۰۴

❸...اھوال القبور لابن رجب، الباب السادس فی ذکر عذاب القبر ونعیمہ، ص ۱۱۲

क़ब्र में आग

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरा में एक शख़्स की बहन फ़ौत हुई तो उसे तजहीज़ो तक्फ़ीन के बा'द दफ़्न कर दिया गया, उस का भाई घर पहुंचा तो याद आया कि वोह दराहिम की थैली क़ब्र में भूल आया है, उस ने अपने साथ एक आदमी को लिया और जा कर क़ब्र की मिट्टी हटाई तो थैली मिल गई, फिर उस ने अपने साथ वाले से कहा : तुम ज़रा दूर हो जाओ ताकि मैं अपनी बहन का ह़ाल देखूं। चुनान्चे, उस ने एक ईंट हटाई तो क़ब्र में आग भड़क रही थी, वोह क़ब्र बन्द कर के अपनी मां के पास आया और अपनी बहन के अह़वाल पूछे तो मां ने कहा : तुम्हारी बहन नमाज़ वक़्त गुज़ार कर पढ़ती थी और मेरे ख़याल में बे वुज़ू भी पढ़ लेती थी और पड़ोसियों के आराम के वक़्त उन के दरवाज़ों पर कान लगा कर उन की राज़ की बातें सुनती थी।[1]

गुस्ले जनाबत न करने का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अबान बिन अ़ब्दुल्लाह बजली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : हमारा एक पड़ोसी मर गया तो हम उस के कफ़न दफ़्न में शरीक हुवे जब उस के लिये क़ब्र खोदी गई तो उस में बिल्ले से मुशाबेह एक जानवर नज़र आया, हम ने उसे भगाना चाहा मगर वोह न भागा, एक शख़्स ने उस के सर पर एक पथ्थर मारा मगर वोह फिर भी न हटा तो हम ने दूसरी जगह क़ब्र खोदी, देखा तो वोह जानवर यहां भी मौजूद था उसे हटाने की बहुत कोशिश की गई मगर नाकाम रही, फिर तीसरी जगह क़ब्र खोदी तो वोह वहां भी मौजूद था, फिर हटाने की कोशिश की मगर न हटा। लोगों ने कहा : ऐसा मुआ़मला हम ने पहले कभी नहीं देखा लिहाज़ा उस आदमी को यहीं दफ़्ना दो। जब हम उसे दफ़्न कर के वापस चले तो एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ सुनाई दी। हम उस की बीवी के पास गए और उस शख़्स के बारे में तफ़्तीश की तो मा'लूम हुवा कि वोह अक्सरो बेशतर गुस्ले जनाबत नहीं करता था।[2]

---

1 ...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب القبور، جامع ذكر القبور، ٦/٧٥، حديث: ٩٧

2 ...اهوال القبور لابن رجب، الباب السادس في ذكر عذاب القبر ونعيمه، ص ١١٤

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान बिन जौज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَلِى के मुसाहिब हज़रते सय्यिदुना इब्ने फ़ारिसी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه अपनी तारीख़ में रिवायत करते हैं कि उन्हों ने सिने 590 हिजरी में बग़दाद में एक पुरानी लाश देखी जो मह़ज़ ढांचा थी और उस के हाथ पाउं में लोहे की ज़न्जीरें थीं जब कि एक कील नाफ़ और दूसरी पेशानी में गढ़ी हुई थी, वोह निहायत ही बद सूरत और मोटी हड्डियों वाला था और "तल्ले अह़मर" के पास पानी के तेज़ बहाव की वज्ह से उस की लाश बाहर आ गई थी।(1)

न पिघलने वाली कीलें

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे और ताजिर हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन सिनान सलामी رَحۡمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : एक शख़्स बग़दाद के लोहारी बाज़ार में आया और दो मुंह वाली छोटी छोटी कीलें फ़रोख़्त करने लगा एक लोहार ने कीलें ख़रीद लीं और पिघलाने लगा मगर इन्तिहाई कोशिश के बा वुजूद वोह न पिघलीं, बिल आख़िर उस ने बेचने वाले को तलाश किया और उस से पूछा : तुम ने येह कीलें कहां से ली हैं ? पहले तो वोह टाल मटोल करता रहा मगर फिर उस ने बताया कि मैं ने एक क़ब्र खुली हुई देखी जिस में मुर्दे की हड्डियां इन कीलों से जड़ी हुई थीं, मैं इन्हें निकालने लगा मगर येह न निकलीं तो मैं ने एक पथ्थर ले कर हड्डियां तोड़ीं और कीलें निकाल कर जम्अ़ कर लीं।

ज़ुल्मन टेक्स वुसूल करने वाले का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : मैं बा'द नमाज़े अ़स्र अपने घर से बाग़ की त़रफ़ निकला, मग़रिब से पहले जब क़ब्रिस्तान से गुज़रा तो देखा कि एक क़ब्र लोहार की भट्टी की त़रह़ सुर्ख़ है और मुर्दा उस में पड़ा हुवा है, मैं ने लोगों से इस के बारे में पूछा तो मा'लूम हुवा येह ज़ालिमाना टेक्स वुसूल करने वाला था और आज ही मरा है।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल काफ़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡوَالِى ने बयान किया कि मैं एक जनाज़े में शरीक हुवा तो एक काला कलोटा शख़्स भी हमारे साथ था सब ने नमाज़ पढ़ी मगर उस ने न पढ़ी, जब हम मुर्दे को दफ़्न कर चुके तो उस काले ने मेरी त़रफ़ देखा और कहा : मैं इस मुर्दे का अ़मल हूं, इतना कह कर वोह क़ब्र में चला गया और मेरी आंखों से औझल हो गया।(2)

---

(1)...اھوال القبور لابن رجب، الباب السادس فی ذکر عذاب القبر ونعیمہ، ص ۱۱۷

(2)...اھوال القبور لابن رجب، الباب السادس فی ذکر عذاب القبر ونعیمہ، ص ۱۱۸

कफ़न चोर अन्धा हो गया

हज़रते सय्यिदुना अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन अ़ब्दुल्लाह सा'लबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : हमारे हां एक कफ़न चोर था जो नाबीना बन कर लोगों से भीक मांगता और कहता : जो मुझे कुछ देगा मैं उसे एक अ़जीब बात बताऊंगा और जो ज़ियादा देगा मैं उसे वोह अ़जीब चीज़ दिखा भी दूंगा। एक शख़्स ने उसे कुछ दिया, तो मैं एक त़रफ़ खड़ा हो कर देखने लगा, उस ने अपनी आंखों से कपड़ा हटाया तो गुद्दी तक दोनों आंखों की जगह ख़ाली थी गोया दो छोटे सूराख़ थे और उस के चेहरे से पीछे का मन्ज़र नज़र आता था। फिर उस ने बताया कि मैं एक मश्हूर कफ़न चोर था ह़त्ता कि लोग मुझ से डरते थे और मैं किसी की परवा न करता था, इत्तिफ़ाक़न क़ाज़िये शहर बीमार पड़ गया और उस के बचने की कोई उम्मीद न रही तो उस ने मुझे 100 दीनार दिये और पैग़ाम भेजा कि मैं अपनी क़ब्र की पर्दा दरी तुझ से इन 100 दीनारों के बदले ख़रीदना चाहता हूं। मैं ने वोह 100 दीनार ले लिये मगर इत्तिफ़ाक़ से क़ाज़ी साहिब तन्दुरुस्त हो गए और फिर बा'द में वफ़ात पा गए, मैं ने सोचा वोह 100 दीनार तो पहले मरज़ में मरने के थे। चुनान्चे, मैं ने जा कर उन की क़ब्र खोद डाली तो अ़ज़ाब के आसार देखे जब कि क़ाज़ी परागन्दा बाल सुर्ख़ आंखें लिये बैठा था, अचानक मैं ने अपने घुटने में शदीद दर्द मह़सूस किया और किसी ने मेरी आंखों में उंगलियां डाल कर मुझे अन्धा कर दिया और कहा : ऐ बन्दए ख़ुदा ! क्या तू ख़ुदाई राज़ों पर मुत्तलअ़ होना चाहता है ?[1]

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन शिख़्ख़ीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ القَدِيْر फ़रमाते हैं : एक शख़्स चलते चलते एक क़ब्र के पास गया अन्दर से आह आह की आवाज़ सुन कर वहीं रुक गया और कहा : तुम्हारे अ़मल ने तुम्हें रुस्वा किया तो तुम रुस्वा हुवे।[2]

तारीख़े मक़रीज़ी में सिने 697 हिजरी का वाक़िआ़ लिखा है कि एक क़ासिद ने बताया : साहि़ल पर रहने वाले एक शख़्स की बीवी मर गई, वोह उसे दफ़्न कर के वापस हुवा तो उसे याद आया कि एक रूमाल जिस में दिरहम बांधे हुवे थे वोह क़ब्र में भूल आया है, वोह अपनी बस्ती के

---

1 ...اھوال القبور لابن رجب، الباب السادس فی ذکر عذاب القبر ونعیمہ، ص۱۱۸

2 ...اثبات عذاب القبر، ص۱۳۶، حدیث:۲۴۰

आ़लिम साहि़ब को साथ ले कर क़ब्र खोदने गया ताकि अपना माल निकाल ले, आ़लिम साहि़ब एक किनारे खड़े हो गए और वोह क़ब्र खोदने लगा, अब जो उस ने क़ब्र खोदी तो देखा कि उस की बीवी की टांगें सर के बालों से बंधी हुई हैं, वोह आगे बढ़ कर गिरहें खोलने लगा मगर खोल न सका तो और ज़ियादा कोशिश करने लगा, इसी अस्ना में वोह अपनी बीवी के साथ ज़मीन में ऐसा धंसा दिया गया कि किसी को उन की ख़बर न हुई। इधर येह मन्ज़र देख कर वोह आ़लिम साहि़ब एक दिन और एक रात बेहोश रहे। बादशाहे वक़्त ने इस वाक़िए की रूदाद ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ तक़ियुद्दीन बिन दक़ीक़ुल ईद عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد को लिख भेजी और ख़ुद उस मक़ाम पर आया और लोगों को वोह जगह दिखाई ताकि वोह इ़ब्रत ह़ासिल करें।[(1)]

तम्बीह : अ़ज़ाब रूह़ और जिस्म दोनों को होता है

ह़ज़राते उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : अ़ज़ाबे क़ब्र ही बरज़ख़ का अ़ज़ाब है, उसे क़ब्र का अ़ज़ाब इस लिये कहते हैं क्यूंकि उ़मूमी तौर पर मुर्दे को क़ब्र में ही दफ़्नाया जाता है वरना ह़क़ीक़त तो येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस मुर्दे को भी अ़ज़ाब देना चाहे उसे अ़ज़ाब पहुंचता है चाहे वोह क़ब्र में दफ़्न हो या न हो। चाहे सूली पर लटका रहे, समन्दर में ग़र्क़ हो जाए, दरिन्दे खा जाएं या जल कर राख हो जाए ह़त्ता कि राख बन कर हवा में उड़ जाए तब भी अ़ज़ाब होता है और अह्ले सुन्नत व जमाअ़त का इत्तिफ़ाक़ है कि अ़ज़ाब रूह़ व जिस्म दोनों को होता है और येही मुआ़मला ने'मतों के बारे में भी है।

अ़ज़ाबे क़ब्र की अक़्साम

इब्ने क़य्यिम ने कहा : अ़ज़ाबे क़ब्र की दो क़िस्में हैं : एक दाइमी जो काफ़िरों और बा'ज़ गुनहगारों के लिये है और दूसरा मुन्क़त़अ़ (या'नी ख़त्म होने वाला) जो हल्के व मा'मूली गुनाह वालों के लिये उन के जुर्मों के मुत़ाबिक़ होता है और येह दुआ़ या सदक़ा वग़ैरा के सबब उठा लिया जाता है।

---

❶...السلوک لمعرفۃ دول الملوک، سنۃ سبع وتسعین وستمائۃ، ۲/۲۸۶

हज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى अपनी किताब "रौज़ुर्रियाहीन" में फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि शबे जुमुआ़ की अ़ज़मतो शराफ़त के पेशे नज़र इस रात मुर्दों को अ़ज़ाब नहीं दिया जाता, लेकिन येह बात काफ़िरों के लिये नहीं बल्कि गुनाहगार मुसलमानों के लिये है।[1] जब कि हज़रते सय्यिदुना इमाम नसफ़ी ह़नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى ने "बह़रुल कलाम" में इसे उ़मूमी क़रार देते हुवे फ़रमाया : शबे जुमुआ़, रोज़े जुमुआ़ और पूरा रमज़ान काफ़िरों से भी अ़ज़ाब उठा लिया जाता है और गुनाहगार मुसलमान को अ़ज़ाबे क़ब्र तो होता है मगर शबे जुमुआ़ उठा लिया जाता है और फिर क़ियामत तक दोबारा नहीं होता और अगर कोई गुनाहगार मुसलमान जुमुआ़ की रात या दिन में मर जाए तो उसे फ़क़त़ एक साअ़त अ़ज़ाब होता है और क़ब्र भी एक लम्ह़ा ही दबाती है फिर क़ियामत तक अ़ज़ाब उठा लिया जाता है।[2]

इन की इस बात से मा'लूम होता है कि गुनाहगार मुसलमानों को सिर्फ़ एक ही जुमुआ़ तक अ़ज़ाब होता है और जैसे ही जुमुआ़ आता है अ़ज़ाब उठा लिया जाता है और फिर कभी नहीं होता मगर येह सब दलील का मोह़ताज है।

इब्ने क़य्यिम ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू या'ला رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के ह़वाले से नक़्ल किया है कि अ़ज़ाबे क़ब्र मुन्क़त़अ़ होना लाज़िमी है, क्यूंकि येह दुन्यावी अ़ज़ाब है और दुन्या और जो कुछ इस में है सब मुन्क़त़अ़ या'नी ख़त्म होने वाला है, नतीजा येह निकला कि मुर्दों को बला व आज़माइश में डाला जाता है लेकिन इस के मुन्क़त़अ़ होने की मुद्दत मा'लूम नहीं है।

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि उस की ताईद इस रिवायत से होती है जो ह़ज़रते सय्यिदुना हन्नाद बिन सरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने अपनी किताब "अज़्ज़ोहद" में ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد से नक़्ल की है कि "कुफ़्फ़ार को ऐसी ऊंघ आएगी जिस में वोह क़ियामत तक नींद की कैफ़िय्यत पाएंगे और जब मुर्दों को निदा दी जाएगी तो कुफ़्फ़ार कहेंगे : يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا या'नी हाए हमारी ख़राबी किस ने हमें सोते से जगा दिया। और काफ़िर के क़रीब मौजूद मोमिन कहेगा : هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ या'नी येह है वोह जिस का रह़मान ने वा'दा दिया था और रसूलों ने ह़क़ फ़रमाया।[3]

---

1 ...روض الرياحين، الحكاية الثامنة والستون بعد المئة، ص ١٨٣

2 ...بحر الكلام للنسفى، الباب الخامس، الفصل الثالث، المبحث الاول: سوال القبر وعذابه، ص ٢٥٠

3 ...الزهد لهناد بن السرى، باب البرزخ، ص ١٩٦، حديث: ٣١٧

फ़ाएदा

इब्ने क़य्यिम ने "अल बदाएअ़" में ज़िक्र किया कि लोगों की एक जमाअ़त का कहना है : जब कोई नसरानिया मर जाए और उस के पेट में मुसलमान का बच्चा हो तो उस क़ब्र में बयक वक़्त अ़ज़ाब और ने'मत नाज़िल होते हैं। अ़ज़ाब मां के लिये और ने'मत बच्चे के लिये और येह कोई बईद भी नहीं क्यूंकि एक ही क़ब्र में मोमिन व काफ़िर जम्अ़ कर दिये जाएं तो उस क़ब्र में ने'मत और अ़ज़ाब दोनों जम्अ़ होते हैं।

बाब नम्बर 35 अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात दिलाने वाली चीज़ों का बयान

मख़्सूस आफ़ात से नजात दिलाने वाले आ'माल

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन समूरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि एक दिन हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : आज रात मैं ने एक अ़जीब ख़्वाब देखा कि मेरे एक उम्मती की रूह क़ब्ज़ करने के लिये हज़रते मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام तशरीफ़ लाए लेकिन उस का अपने वालिदैन से हुस्ने सुलूक करना सामने आ गया और उस ने मौत के फ़िरिश्ते को वापस कर दिया। एक उम्मती पर अ़ज़ाबे क़ब्र छा गया लेकिन उस के वुज़ू ने उसे बचा लिया, एक उम्मती को शैत़ानों ने घेर लिया लेकिन ज़िक्रुल्लाह ने उसे ख़लासी दिला दी, एक उम्मती को अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों ने घेर लिया मगर उस की नमाज़ ने उस की जान बख़्शी करवा दी, एक उम्मती को देखा कि प्यास की शिद्दत से ज़बान निकाले एक हौज़ पर पानी पीने जाता है मगर लौटा दिया जाता है, इतने में उस के रोज़े आ गए और उसे पानी पिला कर सैराब कर दिया, देखा कि हज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام हल्क़ा बनाए बैठे हैं और मेरा एक उम्मती उन के पास जाना चाहता है मगर दूर कर दिया जाता है, इतने में उस का जनाबत से ग़ुस्ल करना आता है और उस का हाथ पकड़ कर उसे उन के क़रीब बिठा देता है, एक उम्मती को देखा कि उस के दाएं बाएं, ऊपर नीचे और आगे पीछे अन्धेरा ही अन्धेरा है और वोह हैरान व परेशान खड़ा है इतने में उस का हज व उ़मरह आते हैं और उसे अन्धेरे से निकाल कर उजाले में ले जाते हैं। एक उम्मती को देखा कि वोह मुसलमानों से गुफ़्तगू करना चाहता है लेकिन कोई उस से बात नहीं करता इतने में उस का

सिलए रेह्मी करना आ कर मोमिनीन से कहता है : ऐ ईमान वालो ! इस से कलाम करो। तो लोग उस से गुफ़्तगू करने लगते हैं। एक उम्मती के जिस्म और चेहरे की त़रफ़ आग बढ़ रही है और वोह अपने हाथ से खुद को बचा रहा है इतने में उस का सदक़ा आ कर उस के चेहरे के सामने रुकावट और सर का साया बन गया। एक उम्मती को अ़ज़ाब के फ़िरिश्तों ने चारों त़रफ़ से घेर लिया लेकिन उस का नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ़ करना आया और उन से छुड़ा कर रह़मत के फ़िरिश्तों के ह़वाले कर दिया। एक शख़्स को देखा जो घुटनों के बल बैठा है और उस के और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के दरमियान ह़िजाब है इतने में उस का ह़ुस्ने अख़्लाक़ आया और उस का हाथ पकड़ कर दरबारे इलाही में पहुंचा दिया। एक उम्मती को उस का आ'माल नामा बाएं हाथ में दिया जा रहा है तो उस का ख़ौफ़े खुदा आया और आ'माल नामा पकड़ कर उस के सीधे हाथ में दे दिया। एक उम्मती का नेकियों का पलड़ा हल्का हुवा मगर उस की छोटी औलाद ने आ कर उसे भारी कर दिया, एक शख़्स जहन्नम के किनारे पर खड़ा था लेकिन उस का ख़ौफ़े खुदा से कांपना आया और उसे बचा लिया। एक उम्मती को जहन्नम में फैंका जा रहा है मगर उस के ख़ौफ़े खुदा से बहाए गए आंसू आए और उसे जहन्नम से बचा लिया। एक उम्मती पुल सिरात़ पर खड़ा सूखे पत्ते की त़रह़ लरज़ रहा था लेकिन उस का अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़ुस्ने ज़न रखना आया तो वोह पुर सुकून हो कर पुल सिरात़ पार कर गया। एक उम्मती को देखा कि पुल सिरात़ पर कभी सुरीन के बल घिसटता है कभी घुटनों के बल चलता है तो उस का मुझ पर दुरूद पढ़ना आया और उस का हाथ पकड़ कर सीधा खड़ा कर दिया तो वोह पुल सिरात़ पार कर गया। एक उम्मती को देखा कि जन्नत के दरवाज़ों पर आता है मगर उस के लिये बन्द कर दिये जाते हैं इतने में उस की "لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ" की गवाही देना आया और उस के लिये दरवाज़े खुलवा कर उसे दाख़िले जन्नत कर दिया। फिर मुझे ऐसे लोग नज़र आए जिन के होंट क़ैंचियों से काटे जा रहे थे मैं ने ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से पूछा : येह कौन लोग हैं ? उन्हों ने कहा : येह लोगों के दरमियान चुग़ुलख़ोरी करने वाले हैं। कुछ लोगों को ज़बानों से लटके हुवे देखा तो ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام से पूछा : येह कौन हैं ? उन्हों ने कहा : येह मोमिन मर्दों और मोमिना औ़रतों को बिला वज्ह ऐ़ब लगाने वाले हैं।(1)

---

(1)...نوادر الاصول، الاصل الثانی والخمسون المائتان، ۲/۱۰۲۳، حدیث: ۱۳۲۹
الترغیب والترھیب للاصبھانی، باب الترغیب فی الحج، ۲/۱۲، حدیث: ۱۰۴۹
الترغیب والترھیب للاصبھانی، باب فی الترغیب فی قول: لا الہ الا اللّٰہ، ۳/۲۷۳، حدیث: ۲۵۱۸
التذکرۃ للقرطبی، باب ماینجی من اھوال یوم القیامۃ ومن کربھا، ص ۲۳۲

हज़रते सय्यिदुना इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : येह बड़ी अज़ीमुश्शान हदीसे पाक है, इस में ऐसे मख़्सूस आ'माल का ज़िक्र हुवा है जो मख़्सूस आफ़ात से नजात दिलाने वाले हैं।

शहीद के लिये छे ख़ास इन्आमात

हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी करिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां शहीद के लिये छे ख़ास इन्आमात हैं : (1) ख़ून का पहला क़तरा निकलते ही उस की मग़फ़िरत हो जाती है और वोह जन्नत में अपना ठिकाना देख लेता है (2) अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ होता है (3) बड़ी घबराहट से अम्न में होता है (4) उस के सर पर इज़्ज़त का ताज रखा जाएगा जिस का एक मोती दुन्या व माफ़ीहा (दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर होगा (5) 72 हूरे ऐन (बड़ी आंखों वाली हूरों) से उस का निकाह होगा और (6) वोह अपने 70 रिश्तेदारों की शफ़ाअ़त करेगा।[1]

हज़रते सय्यिदुना सलमान बिन सुरद और हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उ़रफ़ुता رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ قَتَلَهٗ بَطْنُهٗ لَمْ يُعَذَّبْ فِىْ قَبْرِهٖ या'नी जो शख़्स पेट की बीमारी में मर जाए उसे क़ब्र में अज़ाब नहीं दिया जाता।[2]

तवील क़ियाम और लम्बे सजदों की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मुझे एक अहले किताब ने बताया कि हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : नमाज़ में ज़ियादा देर क़ियाम करने से पुल सिरात़ पर और लम्बे सजदों की बदौलत अज़ाबे क़ब्र से अम्न नसीब होगा।[3]

1...ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب فی ثواب الشهید، ۳/۲۵۰، حدیث:۱۶۶۹

2...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی الشهداء من هم، ۲/۳۳۴، حدیث:۱۰۶۵

3...تاریخ ابن عساکر، ۲۱/۳۸۴، رقم:۲۵۹۹: سلمان بن الاسلام ابو عبد الله الفارسی

تاریخ اصبهان لابی نعیم، ذکر سابق الفرس وصاحب الغرس، ۱/۷۷، رقم:۳: سلمان الفارسی

नजात दिलाने वाली सूरत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا ने एक शख़्स से फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें एक ऐसी बात का तोह़फ़ा न दूं जो तुम्हें ख़ुश करे ? उस ने कहा : क्यूं नहीं। फ़रमाया : तुम ख़ुद भी सूरए मुल्क की तिलावत किया करो और अपने घरवालों को, अपनी औलाद को, घर के बच्चों और पड़ोसियों को भी येह सिखाओ क्यूंकि येह नजात दिलाने और झगड़ने वाली है। येह अपने पढ़ने वाले के लिये बरोज़े क़ियामत रब عَزَّوَجَلَّ से झगड़ा करेगी और उस के लिये अ़ज़ाबे दोज़ख़ से नजात का मुत़ालबा करेगी और इस का पढ़ने वाला अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहेगा।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : सूरए मुल्क मानिआ़ (या'नी रोकने वाली) है येह अ़ज़ाबे क़ब्र को रोकती है, जब अ़ज़ाब सर की त़रफ़ से आता तो सर कहता है : यहां से तेरे लिये कोई रास्ता नहीं क्यूंकि मुझ में सूरए मुल्क मह़फ़ूज़ है और जब अ़ज़ाब क़दमों की त़रफ़ से आता है क़दम कहते हैं : यहां भी तेरे लिये कोई राह नहीं क्यूंकि येह बन्दा हम पर सहारा ले कर सूरए मुल्क की तिलावत किया करता था।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जो हर रात सूरए मुल्क की तिलावत करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के सबब उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखता है और हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी में इस सूरत को "मानिआ़" (या'नी अ़ज़ाब को रोकने वाली) कहा करते थे।(3)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक शख़्स फ़ौत हो गया, उसे सिर्फ़ सूरए मुल्क ही याद थी, जब उसे क़ब्र में उतारा गया और अ़ज़ाब का फ़िरिश्ता आया तो येह सूरत उस के सामने हो गई, फ़िरिश्ते ने कहा : तुम किताबुल्लाह से हो और मुझे तुम्हारे साथ बे अदबी हरगिज़ पसन्द नहीं, मैं तुम्हारे लिये, इस मरने वाले के लिये और अपने लिये किसी नफ़्अ़ और ज़रर का मालिक नहीं हूं, अगर तुम इसे अ़ज़ाब से बचाना चाहती हो तो मेरे साथ रब عَزَّوَجَلَّ की

---

1 ...مسند عبد بن حمید، مسند ابن عباس، ص۲۰۶، حدیث: ۶۰۳

2 ...مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ الملک، المانعۃ من عذاب القبر سورۃ الملک، ۳/۳۲۲، حدیث: ۳۸۹۲

3 ...سنن کبری للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیل، الفضل فی قراءۃ تبارک الذی بیدہ الملک، ۶/۱۷۹، حدیث: ۱۰۵۴۷

बारगाह में चल कर इस के लिये सिफ़ारिश करो। चुनान्चे, सूरए मुल्क बारगाहे इलाही में पहुंची और अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! तेरे फ़ुलां बन्दे ने मुझे तेरी किताब से मुन्तख़ब कर के सीखा और मेरी तिलावत की, क्या तू इसे आग से जलाएगा और अ़ज़ाब देगा ह़ालांकि मैं इस के पेट में हूं ? इलाही ! अगर तेरा येही इरादा है तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : मैं तुझे नाराज़ होता देख रहा हूं। सूरए मुल्क ने अ़र्ज़ की : नाराज़ होना मेरा ह़क़ है। रब तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : जा मैं ने इसे तेरे ह़वाले किया और इस के ह़क़ में तेरी सिफ़ारिश क़बूल की। चुनान्चे, वोह वापस गई और फ़िरिश्ता बोझल क़दमों के साथ ख़ाली हाथ वापस चला गया। फिर सूरए मुल्क ने उस मय्यित के मुंह पर अपना मुंह रख कर कहा : क्या ही ख़ूब है येह मुंह जो अक्सर मेरी तिलावत करता था, क्या ही ख़ूब है येह सीना जिस ने मुझे मह़फ़ूज़ किया और क्या ही ख़ूब हैं येह क़दम जिन का सहारा ले कर मुझे तिलावत किया जाता था। फिर वोह क़ब्र में उस का दिल बहलाती रहती है ताकि उसे वह़शत न हो। ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह बात बयान फ़रमाई तो हर छोटे बड़े, आज़ाद व ग़ुलाम ने इस सूरत को सीख लिया और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस का नाम मुन्जियह (नजात दिलाने वाली) रखा ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब कोई शख़्स मर जाता है तो उस के गिर्द आग जलाई जाती है, अगर आग और जिस्म के माबैन ह़ाइल होने के लिये कोई अ़मल न हो तो वोह आग अपनी त़रफ़ का ह़िस्सा जला देती है। एक शख़्स फ़ौत हो गया और वोह क़ुरआने करीम में से सिर्फ़ सूरए मुल्क ही पढ़ा करता था, उस पर जब अ़ज़ाब सर की त़रफ़ से आया तो उस सूरत ने सामने आ कर उसे रोक दिया और कहा : येह मेरी तिलावत करता था। क़दमों की त़रफ़ से आया तो उस सूरत ने कहा : येह इन पर खड़े हो कर मेरी तिलावत करता था। पेट की त़रफ़ से आया तो सूरए मुल्क ने कहा : इस ने मुझे मह़फ़ूज़ रखा था। यूं वोह सूरत उसे अ़ज़ाब से बचा लेती है।[2]

---

❶...تاریخ ابن عساکر، ۶/۴۶، رقم: ۲۸۳: احمد بن نصر بن زیاد، حدیث: ۱۴۰۲

❷...المجالسة وجواهر العلم، الجزء السابع، ۱/۳۸۲، رقم: ۹۹۷

فضائل القرآن لابی عبید القاسم، باب فضل تبارک الذی بیدہ الملک، ص ۲۶۰

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحمةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि बेशक "الم تنزیل" (या'नी सूरए सजदह) अपने पढ़ने वाले की त़रफ़ से क़ब्र में झगड़ेगी और कहेगी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर मैं तेरी किताब से हूं तो इस शख़्स के ह़क़ में मेरी शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा और तेरी किताब से नहीं हूं तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। फिर वोह परन्दे की त़रह़ बन्दे पर अपने पर फैला देगी, पस वोह उस की शफ़ाअ़त करेगी और उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाएगी। सूरए मुल्क के बारे में भी येही आया है। हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحمةُ الرَّحْمٰن हर रात येह दोनों सूरतें तिलावत किया करते थे।[1]

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सूरए सजदह और सूरए मुल्क पढ़े बिग़ैर न सोते थे।[2]

काला कुत्ता

हज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی अपनी किताब "रौज़ुर्रियाह़ीन" में एक यमनी बुज़ुर्ग से नक़्ल करते हैं कि लोग एक मुर्दा दफ़्न कर के वापस हुवे तो उन बुज़ुर्ग ने क़ब्र से मार कटाई की आवाज़ सुनी, फिर देखा कि क़ब्र से एक काला कुत्ता नुमूदार हुवा है, बुज़ुर्ग ने उस से पूछा : तेरा नास हो तू कौन है ? उस ने कहा : मैं मुर्दे का अ़मल हूं। बुज़ुर्ग ने पूछा : येह मार तुझे पड़ी थी या उस मुर्दे को ? उस ने कहा : येह मुझे ही पड़ी थी, मैं ने मुर्दे के पास सूरए यासीन और दीगर सूरतें देखीं वोह मेरे और इस मुर्दे के दरमियान ह़ाइल हो गईं और मुझे मार कर भगा दिया है।[3]

सूरए ज़िल ज़ाल की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स ने जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब दो रक्अ़तें इस त़रह़ अदा कीं कि हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द اِذَا زُلْزِلَت (सूरए ज़िल ज़ाल) 15 मरतबा पढ़ी

---

1 ...دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل سورۃ تنزیل السجدۃ وتبارک، ۲/۵۴۷، حدیث: ۳۴۱۰

2 ...دارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل سورۃ تنزیل السجدۃ وتبارک، ۲/۵۴۷، حدیث: ۳۴۱۱

ترمذی، کتاب الدعوات، باب: ۲۲، ۵/۲۵۸، حدیث: ۳۴۱۵

3 ...روض الریاحین، الحکایۃ الحادیۃ والخمسون بعد المئۃ، ص ۱۷۴

तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर मौत की सख़्तियां आसान फ़रमा देगा, उसे अ़ज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखेगा और ब रोज़े क़ियामत पुल सिरात़ से गुज़रना आसान फ़रमा देगा।[1]

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जुमुआ़ के दिन मरने वाले को अ़ज़ाबे क़ब्र नहीं होता।[2]

हज़रते सय्यिदुना इकरिमा बिन ख़ालिद मख़ज़ूमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जो रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ इन्तिक़ाल कर गया उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा और वोह अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लिया गया।[3]

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि माहे रमज़ान में मुर्दों से अ़ज़ाबे क़ब्र उठा लिया जाता है।[4]

अच्छे आ'माल के इवज़ मिलने वाले मक़ामात

हज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی नक़्ल करते हैं कि एक वलिय्युल्लाह ने फ़रमाया : मैं ने बारगाहे इलाही में दुआ़ की, कि ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मरने वालों के मक़ामात दिखा। पस एक रात मैं ने देखा कि क़ब्रें शक़ हो गईं, उन में कुछ मुर्दे बारीक रेशम पर और कुछ मोटे रेशम पर सो रहे हैं, कुछ के नीचे फूलों की सेज है और कुछ तख़्तों पर बिराजमान हैं, कुछ हंस रहे हैं और कुछ रो रहे हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू चाहता तो इन सब को एक जैसी इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमा देता। उसी वक़्त एक मुर्दे ने निदा दी : ऐ फ़ुलां ! येह मक़ामात आ'माल के बदले मिले हैं, बारीक रेशम पर हुस्ने अख़्लाक़ वाले हैं, मोटे रेशम पर शुहदा जल्वागर हैं, फूलों की सेज पर रोज़ादार और तख़्तों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करने वाले बिराजमान हैं जब कि रोने वाले गुनाहगार और हंसने वाले तौबा करने वाले हैं।[5]

---

1 ...الترغیب والترھیب للاصبھانی، باب فی الترھیب من ترک الجمعۃ، ۱/۵۲۲، حدیث: ۹۴۶

2 ...مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالک، ۳/۴۰۰، حدیث: ۴۰۹۹

3 ...اثبات عذاب القبر للبیھقی، ص ۱۰۴، حدیث: ۱۵۸

4 ...تفسیر ابن رجب الحنبلی، سورۃ الواقعۃ، تحت الآیۃ: ۸۸، ۲/۳۷۵

5 ...روض الریاحین، الحکایۃ الحادیۃ والستون بعد المئۃ، ص ۱۷۹

बाब नम्बर 36 क़ब्रों में मुर्दों के उन्स, नमाज़, तिलावत, इन्आ़मात व लिबास और दीगर अह़वाल का बयान

لَا اِلٰهَ اِلَّا الله कहने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا اِلٰهَ اِلَّا الله कहने वालों को मौत के वक़्त, क़ब्र में और रोज़े मह़शर घबराहट नहीं होगी।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا اِلٰهَ اِلَّا الله मौत के वक़्त, क़ब्र में और क़ब्र से उठते वक़्त मुसलमान का दिल बहलाएगा।(2)

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام ज़िन्दा हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْاَنْبِيَاءُ اَحْيَاءٌ فِيْ قُبُوْرِهِمْ يُصَلُّوْنَ या'नी अम्बियाए किराम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं नमाज़ पढ़ते हैं।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : फ़ख़्रे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मे'राज की शब ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को क़ब्र में नमाज़ पढ़ते देखा।(4)

क़ब्र में नमाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : शबे असरा के दुल्हा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शबे मे'राज ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र के पास से गुज़रे तो वोह क़ब्र में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे।(5)

---

1. ...معجم أوسط، ۶/۴۷۲، حدیث: ۹۴۴۵
2. ...التذکرۃ للقرطبی، باب یبعث کل عبد علی ما مات علیہ، ص ۱۷۹
3. ...مسند بزار، مسند انس بن مالک، ۱۳/۲۹۹، حدیث: ۶۸۸۸
4. ...مسلم، کتاب الفضائل، باب من فضائل موسی، ص ۱۲۹۳، حدیث: ۲۳۷۵
5. ...حلیۃ الاولیاء، عمرو بن دینار، ۳/۴۰۳، حدیث: ۴۴۲۴

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने दुआ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू किसी को क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ बख़्शता है तो मुझे भी क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाना।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़तिय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने सुना कि हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی हज़रते सय्यिदुना हुमैद त़वील عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَکِیْل से पूछ रहे थे : क्या आप को कोई ऐसी रिवायत पहुंची है कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام के इ़लावा भी कोई अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ता है ? उन्हों ने कहा : नहीं। तो हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی ने दुआ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू ने किसी को क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दी है तो साबित को भी अपनी क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त अ़ता फ़रमाना।(2)

हज़रते सय्यिदुना जुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! मैं ने और हज़रते सय्यिदुना हुमैद त़वील عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَکِیْل ने हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی को क़ब्र में उतारा और जब क़ब्र पर ईंटें रखीं तो एक ईंट अन्दर गिर गई, मैं ने देखा कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ क़ब्र में नमाज़ पढ़ रहे हैं। आप दुआ़ किया करते थे कि "ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अगर तू ने अपनी मख़्लूक़ में से किसी को क़ब्र में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दी है तो मुझे भी येह इजाज़त अ़ता फ़रमाना।" पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन की येह दुआ़ क़बूल फ़रमा ली।(3)

क़ब्र से तिलावते क़ुरआन की आवाज़

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन सिम्मा मुहल्लबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं कि "सह़री के वक़्त क़ब्रिस्तान से गुज़रने वालों ने मुझे बताया कि हम जब भी हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی की क़ब्र के पास से गुज़रते हैं तो हमें तिलावते क़ुरआन की आवाज़ आती है।"(4)

हज़रते सय्यिदुना सलमह बिन शा'ब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मुझे एक मुत्तक़ी परहेज़गार बा ए'तिमाद गोरकन हज़रते सय्यिदुना अबू ह़म्माद علیہ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد ने बताया कि मैं

1...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، ماقالوا فی البکاء من خشیۃ اللہ، ۸/۳۱۷، حدیث: ۱۵۶

2...حلیۃ الاولیاء، ثابت البنانی، ۲/۳۶۲، رقم: ۲۵۶۷

3...حلیۃ الاولیاء، ثابت البنانی، ۲/۳۶۲، رقم: ۲۵۶۸

4...تھذیب الآثار، مسند عمر بن الخطاب، السفر الاول، ۲/۵۱۴، رقم: ۷۳۸

जुमुआ के दिन दोपहर के वक़्त क़ब्रिस्तान गया तो जिस भी क़ब्र के पास से गुज़रा उस से तिलावते क़ुरआन की आवाज़ सुनी।[1]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बे ख़याली में किसी क़ब्र पर अपना ख़ैमा लगा लिया, अचानक उन्हों ने क़ब्र में से किसी इन्सान को सूरए मुल्क पढ़ते सुना ह़त्ता कि उस ने पूरी सूरत तिलावत की। वोह बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और सारा वाक़िआ़ बयान किया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह सूरत नजात दिलाने वाली है, (अ़ज़ाब को) रोकने वाली है, येह अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाती है।[2]

हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम सा'दी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَلِی "किताबुर्रूह" में इस ह़दीस शरीफ़ के तह़्त फ़रमाते हैं : येह हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जानिब से इस बात की तस्दीक़ है कि मय्यित अपनी क़ब्र में क़िराअत कर सकती है, क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने येह बयान किया है और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस की तस्दीक़ फ़रमाई है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम कमालुद्दीन बिन ज़मलकानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی अपनी किताब "اَلْعَمَلُ الْمَقْبُوْلُ فِیْ زِیَارَةِ الرَّسُوْل" में फ़रमाते हैं : येह ह़दीस शरीफ़ बिल्कुल वाज़ेह़ त़ौर पर दलालत कर रही है कि फ़ौत होने वाला अपनी क़ब्र में सूरए मुल्क की तिलावत कर रहा था नीज़ यहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अपने बा'ज़ औलिया को क़ब्र में तिलावत की तौफ़ीक़ दे कर इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी देना बयान हुवा और दूसरी जगह एक वली को नमाज़ की तौफ़ीक़ दे कर बुज़ुर्गी देने का ज़िक्र आया है क्यूंकि वोह ज़िन्दगी में इस की दुआ़ किया करते थे, पस जब औलिया को क़ब्रों में इ़बादत व इत़ाअ़त का इख़्तियार देना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी है तो ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام इस के बत़रीक़े औला ह़क़दार हैं।

हज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ ज़ैनुद्दीन इब्ने रजब رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "اَھْوَالُ اَھْلِ الْقُبُوْر" में रक़म त़राज़ हैं कि बा'ज़ औक़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने औलिया को क़ब्रों में आ'माले सालेह़ा का शरफ़ बख़्शता है लेकिन इन आ'माल पर सवाब नहीं मिलता क्यूंकि मौत की वज्ह से अ़मल ख़त्म हो चुका होता

---

1 ...اھوال القبور، الباب الرابع، ص ۷۰

2 ...ترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل سورة الملک، ۴/۴۰۷، حدیث: ۲۸۹۹

है और क़ब्रों में उन का आ'माले सालेहा करना इस लिये होता है कि वोह ज़िक्र व इबादते इलाही से लज़्ज़त हासिल करें जैसा कि फ़िरिश्ते करते हैं और जन्नती जन्नत में करेंगे अगर्चे इस पर सवाब नहीं मिलेगा, क्यूंकि अल्लाह वालों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद और उस की इबादत दुन्या और इस की लज़्ज़तों से बढ़ कर लज़ीज़ है बल्कि ज़िक्र व इबादते इलाही जैसा कैफ़ो सुरूर और लज़्ज़त किसी ने'मत में नहीं है।[1]

एक गोरकन इब्राहीम ने कहा : मैं एक क़ब्र तय्यार कर रहा था कि बराबर में दूसरी क़ब्र की ईंट गिर गई और एक क़िस्म की ख़ुश्बू फैल गई, मैं ने अन्दर झांक कर देखा तो एक बुज़ुर्ग क़ब्र में बैठे तिलावते क़ुरआन कर रहे थे।

हज़रते सय्यिदुना अबू हज्जाज यूसुफ़ बिन मुहम्मद सरैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : हमारे नेक व सालेह उस्ताद, सामिरह के ख़तीब हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन अली बिन हुसैन सामिरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى मुझे क़ब्रिस्तान ले गए और एक जगह दिखाते हुवे फ़रमाया : इस जगह से हमें हमेशा تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ (या'नी सूरए मुल्क) की तिलावत सुनाई देती है।

मरने के बा'द तिलावते क़ुरआन

हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मुहम्मद तूमारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : मैं ने एक रात ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन मुजाहिद मुक़री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को तिलावत करते देखा तो पूछा : आप इन्तिक़ाल के बा'द कैसे तिलावत कर रहे हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं हर नमाज़ और ख़त्मे क़ुरआन के बा'द दुआ किया करता था कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे उन में से कर दे जो क़ब्र में भी तिलावत करते हैं पस अब मैं भी अपनी क़ब्र में तिलावत करता हूं।[2]

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मोमिन को क़ब्र में क़ुरआने पाक दिया जाता है जिस में देख कर वोह तिलावत करता है।[3]

मरने के बा'द भी इल्म में मश्ग़ूल

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबुल अला हम्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में एक

---

1 ...اهوال القبور، الباب الرابع، ص٦٨

2 ...تاريخ بغداد، ٣٥٥/٥، رقم: ٢٨٩٢: احمد بن موسى بن العباس

3 ...اهوال القبور لابن رجب، الباب الرابع، ص٧٢

ऐसे शहर में देखा गया जिस के सब दरो दीवार किताबों के बने हुवे हैं, आप से इस के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ की थी कि जिस त़रह़ मैं दुन्या में इल्म में मश्ग़ूल हूं मुझे मरने के बा'द भी इल्म में मश्ग़ूल रखना पस अब मैं अपनी क़ब्र में भी इल्म में मश्ग़ूल हूं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं जंगल में अपना कुछ माल लेने गया तो मुझे वहां रात हो गई, (मैं घोड़े पर सुवार हो कर घर की त़रफ़ रवाना हुवा, रास्ते में शुहदा की क़ुबूर के पास पहुंच कर) मैं ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन ह़िराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र के क़रीब लेट गया, इतने में क़ब्र से ऐसी तिलावत की आवाज़ आई कि इतनी प्यारी तिलावत मैं ने कभी नहीं सुनी थी, जब मैं वापस आया तो बारगाहे रिसालत में येह वाक़िआ़ बयान किया। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह अ़ब्दुल्लाह थे क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन शुहदा की रूहें क़ब्ज़ फ़रमाने के बा'द उन्हें याक़ूत व ज़बरजद की क़िन्दीलों में रखा और फिर वोह क़िन्दीलें जन्नत के बीच में लटका दीं, जब रात होती है तो उन की रूहें जिस्मों में वापस लौटा दी जाती हैं और सुब्ह़ तक वहीं रहती हैं फिर जब सुब्ह़ होती है तो वापस जन्नत में अपने मक़ाम की त़रफ़ फेर दी जाती हैं।(2)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं कि मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं सोया तो अपने आप को जन्नत में पाया। एक रिवायत में है कि मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो एक क़ारी को क़ुरआन पढ़ते सुना, मैं ने पूछा : येह कौन है ? बताया गया : येह ह़ारिसा बिन नो'मान हैं। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया : फ़रमां बरदार का येही ह़ाल होता है और वोह अपनी मां का सब से ज़ियादा फ़रमां बरदार था।(3)

क़ब्र में ह़िफ़्ज़े क़ुरआन

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद रक़्क़ाशी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि जब मोमिन मर जाता है और क़ुरआन का कुछ ह़िस्सा याद करने से मह़रूम रह जाता है तो

---

1 ...اھوال القبور،لابن رجب، الباب الرابع، ص۷۲

2 ...اھوال القبور،لابن رجب، الباب الرابع، ص۶۹تا۷۰

3 ...سنن کبری للنسائی، کتاب المناقب، حارثۃ بن النعمان، ۵/۲۵، حدیث: ۸۲۳۳

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देता है जो उसे क़ुरआने मजीद याद करवाते हैं ह़त्ता कि कल बरोज़े क़ियामत वोह ह़ाफ़िज़ उठाया जाएगा ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि जब कोई ग़ैर ह़ाफ़िज़ मोमिन मरता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्तों को हुक्म देता है कि इसे क़ब्र में क़ुरआन सिखाएं ह़त्ता कि वोह बरोज़े क़ियामत हुफ़्फ़ाज़ के साथ उठाया जाएगा ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़तिय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि जब बन्दए मोमिन मरता है और उस ने किताबुल्लाह नहीं सीखी होती तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे क़ब्र में सिखाता है ह़त्ता कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस पर उसे सवाब भी अ़त़ा फ़रमाता है ।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो क़ुरआने पाक पढ़े और उसे मुकम्मल हिफ़्ज़ करने से पहले इन्तिक़ाल कर जाए तो एक फ़िरिश्ता उसे क़ब्र में क़ुरआन की ता'लीम देने आता है ह़त्ता कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मुलाक़ात करेगा कि उसे क़ुरआने पाक याद होगा ।[4]

क़ब्र में देख कर तिलावते क़ुरआन

ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मोमिन को क़ब्र में तिलावत करने के लिये क़ुरआने पाक दिया जाता है ।[5]

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम सक़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : हम बल्ख़ शहर में क़ब्र खोद रहे थे कि उस में एक शिगाफ़ पड़ गया, मैं ने उस में झांक कर देखा तो एक बुज़ुर्ग सब्ज़ लिबास पहने क़िब्ला रू बैठे हैं, उन के चारों त़रफ़ सब्ज़ा ही सब्ज़ा है और उन की गोद में क़ुरआने पाक रखा है जिस में वोह तिलावत कर रहे हैं ।

---

1 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، اتمام تعلیم المؤمن القرآن فی قبرہ، ۵/ ۴۹۰، حدیث: ۲۹۵

2 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، اتمام تعلیم المؤمن القرآن فی قبرہ، ۵/ ۴۹۰، حدیث: ۲۹۶

3 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، اتمام تعلیم المؤمن القرآن فی قبرہ، ۵/ ۴۹۰، حدیث: ۲۹۴

4 ...الترغیب فی فضائل الاعمال لابن شاھین، باب مختصر من کتابی الموسوم بفضائل القرآن... الخ، الجزء الثانی، ص۲۸، حدیث: ۱۹۲

5 ...اھوال القبور لابن رجب، الباب الرابع، ص ۴۷

एक मुत्तक़ी व परहेज़गार गोरकन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू नस्र नैशापुरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक क़ब्र खोदी लेकिन उस में दूसरी क़ब्र की त़रफ़ रास्ता निकल आया, मैं ने देखा कि साफ़ सुथरे ख़ुश्बूदार लिबास में मल्बूस एक ह़सीनो जमील नौजवान चार ज़ानू बैठा था और उस की गोद में सब्ज़ रंग का इन्तिहाई ख़ूब सूरत रस्मुल ख़त़ वाला क़ुरआने पाक था जिस में वोह तिलावत कर रहा है, इतने में उस ने मेरी त़रफ़ देख कर कहा : क्या क़ियामत बरपा हो गई है ? मैं ने कहा : नहीं। उस ने कहा : जहां से मिट्टी हटी है दोबारा वहीं लगा दो। चुनान्चे, मैं ने मिट्टी लगा कर वोह शिगाफ़ बन्द कर दिया।

ख़लीफ़ा राशिद बिल्लाह के ग़ुलाम ख़त़लअ़ का बयान है कि मैं ने मुस्अ़ब बिन अ़ब्दुल्लाह गोरकन से पूछा : क्या आप ने कभी कोई अनोखी चीज़ देखी है ? उन्हों ने कहा : मैं ने तो नहीं देखी अलबत्ता मेरे वालिद साहि़ब ने बताया कि एक दिन मैं ने क़ब्र खोदी और जब लह़द (या'नी बग़ली क़ब्र) बनाने के लिये एक पथ्थर हटाया तो मुझे एक नौजवान नज़र आया जो अपने हाथों में क़ुरआने पाक लिये तिलावत में मश्ग़ूल था। उस ने मुझे कहा : क्या क़ियामत क़ाइम हो गई ? मैं ने कहा : नहीं। फिर मैं ने वोह जगह बन्द कर दी।

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿۴۴﴾ (پ۲۱، الروم: ۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह अपने ही लिये तय्यारी कर रहे हैं।*

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : क़ब्र में तय्यारी कर रहे हैं।(1)

फ़रमां बरदार के लिये अच्छा ठिकाना

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन ह़ारिस ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : نِعْمَ الْمَنْزِلُ الْقَبْرُ لِمَنْ اَطَاعَ اللّٰه या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़रमां बरदार के लिये क़ब्र बहुत अच्छा ठिकाना है।(2)

---

1 ...حلية الأولياء، مجاهد بن جبر، ۳/۳۳۹، رقم: ۴۱۹۷

2 ...موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب القبور، جامع ذكر القبور، ۶/۸۷، حديث: ۱۴۲

मुर्दों को अच्छे कफ़न दो

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपने मुर्दों को अच्छे कफ़न दो क्यूंकि वोह अपनी क़ब्रों में बाहम मुलाक़ात करते और (अच्छे कफ़न पर) फ़ख़्र करते हैं।(1)

ह़दीस शरीफ़ में है कि ''जब तुम किसी के वली हो तो उसे अच्छा कफ़न दो।''(2)

उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं : अच्छे का मत़लब येह है कि वोह साफ़ सुथरा, सफ़ेद और मोटा हो, येह मत़लब नहीं कि वोह मेहंगा हो क्यूंकि ह़दीसे पाक में इस से मन्अ़ किया गया है।(3)

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن से मरवी है कि अच्छे कफ़न को पसन्द किया जाता था और कहा जाता था : मुर्दे अपने कफ़नों में बाहम मुलाक़ात करते हैं।(4)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : حَسِّنُوْا اَكْفَانَ مَوْتَاكُمْ فَاِنَّهُمْ يَتَزَاوَرُوْنَ فِيْ قُبُوْرِهِمْ या'नी अपने मुर्दों को अच्छे कफ़न दो क्यूंकि वोह अपनी क़ब्रों में बाहम मुलाक़ात करते हैं।(5)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से जब कोई किसी का वली हो तो उसे अच्छा कफ़न दे क्यूंकि मुर्दे अपने कफ़नों में आपस में मुलाक़ात करते हैं।(6)

---

1 ...فردوس الاخبار، ۱/۲۲، حدیث: ۳۱۶

2 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب فی تحسین کفن المیت، ص ۴۷۰، حدیث: ۹۴۳

3 .....कफ़न अच्छा होना चाहिये या'नी मर्द ई़दैन व जुमुआ़ के लिये जैसे कपड़े पहनता था और औ़रत जैसे कपड़े पहन कर मैके जाती थी उस क़ीमत का होना चाहिये। ह़दीस में है, ''मुर्दों को अच्छा कफ़न दो कि वोह बाहम मुलाक़ात करते और अच्छे कफ़न से तफ़ाख़ुर करते या'नी ख़ुश होते हैं।'' सफ़ेद कफ़न बेहतर है कि नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''अपने मुर्दे सफ़ेद कपड़ों में कफ़नाओ।'' (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा चहारुम, 1/818)

4 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، ما قالوا فی تحسین الکفن... الخ، ۳/۱۵۳، حدیث: ۳

5 ...الکامل لابن عدی، ۴/۲۳۷، رقم: ۷۳۴: سلیمان بن ارقم

6 ...کتاب الضعفاء، باب الراء، ۲/۴۰۸، رقم: ۴۹۱: راشد ابو میسرۃ العطار

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से जब कोई किसी का वली हो तो उसे अच्छा कफ़न दे क्यूंकि मुर्दे अपनी क़ब्रों में आपस में मुलाक़ात करते हैं।(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی इस हदीसे पाक को ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाते हैं : येह हदीस हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इस क़ौल के ख़िलाफ़ नहीं कि "कफ़न तो पीप के लिये है" क्यूंकि हमारी नज़र में ऐसा ही है लेकिन होता वैसा ही है जैसा रब عَزَّوَجَلَّ चाहे जैसा कि उस ने शुहदा के मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया :

اَحۡیَآءٌ عِنۡدَ رَبِّہِمۡ یُرۡزَقُوۡنَ ﴿۱۶۹﴾ (پ۴، اٰل عمرٰن: ۱۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।*

येह शुहदा जो हमें ख़ून में तड़प कर फ़ना होते नज़र आते हैं येह हमारे देखने के ए'तिबार से है वरना हक़ीक़त में वोह वैसे ही होते हैं जैसा रब तआ़ला ने फ़रमाया है, अगर वोह हमें भी वैसे ही नज़र आएं जैसा उन के बारे में फ़रमाया गया है तो फिर ईमान बिल ग़ैब न रहेगा।(2)

मरने वाले के हाथ उ़म्दा कफ़न का तोह़फ़ा

हज़रते सय्यिदुना राशिद बिन सा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد बयान करते हैं कि एक शख़्स की बीवी फ़ौत हो गई, वोह सोया तो उस ने ख़्वाब में बहुत सी ख़वातीन देखीं लेकिन उसे उन में अपनी बीवी नज़र न आई, उस ने अपनी बीवी के मुतअ़ल्लिक़ उन ख़वातीन से पूछा तो उन्हों ने कहा : तुम ने उसे हल्का कफ़न दिया है, इसी शर्म के मारे वोह हमारे साथ नहीं आई। उस शख़्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अपना ख़्वाब बयान किया तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : देखो कि क्या किसी मो'तबर आदमी का इन्तिक़ाल होने वाला है। वोह शख़्स एक अन्सारी के पास आया जिस का आख़िरी वक़्त चल रहा था, उस ने अन्सारी को येह बात बताई तो उस ने कहा : अगर कोई मुर्दों तक कुछ पहुंचा सकता है तो मैं पहुंचा दूंगा। चुनान्चे, अन्सारी का इन्तिक़ाल हुवा तो उस शख़्स ने

1 ...ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ما جاء فیما یستحب من الکفن، ۲/۲۰۷، حدیث: ۱۴۷۴
موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، باب ما روی من الشعر فی المنام، ۳/۹۲، حدیث: ۱۲۲
2 ...شعب الایمان، باب فی الصلاۃ علی من مات من اھل القبلۃ، ۷/۱۰، حدیث: ۹۲۶۹

ज़ा'फ़रान से रंगे दो कपड़े उस के कफ़न में रख दिये। जब रात को सोया तो उस ने ख़्वाब में उन ख़वातीन के साथ अपनी बीवी को वोही दो ज़ा'फ़रानी कपड़े पहने देखा।[1]

इस ह़दीस की सनद में कोई ह़रज नहीं है।

फ़ुलां दिन फ़ुलानी औ़रत इन्तिक़ाल कर जाएगी

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़िरयाबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : क़ैसारिय्या की एक औ़रत फ़ौत हुई तो अपनी बेटी के ख़्वाब में आ कर शिकायत करने लगी कि तुम लोगों ने मुझे तंग कफ़न दिया है, अब मुझे अपने साथ वालियों में शर्म मह़सूस हो रही है, सुनो ! मैं ने फ़ुलां जगह चार दीनार रखे हैं, फ़ुलां दिन फ़ुलां औ़रत हमारे पास आएगी लिहाज़ा उन दराहिम का कफ़न ख़रीद कर उस औ़रत के हाथ भिजवा देना। बेटी कहती है : मां ने जिस जगह की निशान देही की थी मेरे इ़ल्म में तो वहां कोई दीनार नहीं था फिर भी जब मैं ने उस जगह देखा तो वाक़ेई वहां चार दीनार रखे थे और वालिदा साह़िबा ने जिस औ़रत के मरने का कहा था उसे भी उस वक़्त कोई बीमारी नहीं थी लेकिन फिर वोह भी बीमार हो गई। ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़िरयाबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : लोगों ने मुझे आ कर येह बात बताई और पूछा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप इस मस्अले में क्या फ़रमाते हैं ? मुझे वोह ह़दीस याद आ गई कि "मुर्दे अपने कफ़नों में एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं" सो मैं ने कहा : उन दीनारों का कफ़न ख़रीद लो। इधर वोह बेटी उस औ़रत के पास गई और कहा : ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर आप इन्तिक़ाल कर जाएं तो मैं एक चीज़ अपनी मां के लिये भेजना चाहती हूं आप उन तक पहुंचा दीजियेगा। वोह औ़रत उसी दिन इन्तिक़ाल कर गई तो वोह कफ़न उस के कफ़न में रख दिया गया। इस के बा'द बेटी ने ख़्वाब में अपनी मां को देखा कि वोह कह रही है : बेटी ! फ़ुलां औ़रत हमारे पास आई थी और मुझे कफ़न भी दे गई है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे कफ़न बहुत अच्छा है।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अच्छी त़रह़ लिपटा हुवा क़ाबिले दीद कफ़न पसन्द फ़रमाते थे। मज़ीद फ़रमाया कि मुर्दे अपनी क़ब्रों में बाहम मुलाक़ात करते हैं।[3]

1...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، باب ما روی من الشعر فی المنام، ۳/۹۵، حدیث:۱۲۱

2...عیون الحکایات، الحکایة الاربعون بعد الاربعمائة: حکایة امراة تری امها فی المنام بعد وفاتها، ص ۳۷۶

3...المشیخة البغدادیة، الجزء الخامس والعشرون، ص ۲۹، حدیث:۲۰

हज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन अस्वद सकूनी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़ौजा के बारे में वसिय्यत कर के कहीं चले गए और वोह फ़ौत हो गईं, उन्हें दो पुराने कपड़ों में कफ़न दिया गया, जब हम उन्हें दफ़्न कर के फ़ारिग़ हुवे तो हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ भी आ गए और पूछा : कितने कपड़ों में कफ़न दिया है ? हम ने कहा : उन ही के दो पुराने कपड़ों में । आप ने क़ब्र दोबारा खोदी[1] और उन्हें नए कपड़ों का कफ़न दिया और फ़रमाया : अपने मुर्दों को अच्छा कफ़न दिया करो क्यूंकि वोह उसी में उठाए जाएंगे ।[2]

हज़रते सय्यिदुना इमाम शबई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی फ़रमाते हैं : जब मय्यित को क़ब्र में रख दिया जाता है तो उस के फ़ौतशुदा अह्लो इ़याल उस के पास आ कर पीछे रह जाने वालों का पूछते हैं कि फ़ुलां का क्या ह़ाल है और फ़ुलां क्या कर रहा था ?[3]

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : आदमी को क़ब्र में औलाद के नेक होने की ख़ुश ख़बरी दी जाती है ।[4]

1.....क़ब्र खोदना ममनूअ़ है सिवा बा'ज़ सूरतों के चुनान्चे, **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल, ह़िस्सा 4, सफ़ह़ा 847**" पर सदरुश्शरीअ़ा, बदरुत़्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : दूसरे की ज़मीन में बिला इजाज़ते मालिक दफ़्न कर दिया तो मालिक को इख़्तियार है ख़्वाह औलियाए मय्यित से कहे अपना मुर्दा निकाल लो या ज़मीन बराबर कर के उस में खेती करे । यूहीं अगर वोह ज़मीन शुफ़्आ़ में ले ली गई या ग़सब किये हुवे कपड़े का कफ़न दिया तो मालिक मुर्दे को निकलवा सकता है । औ़रत को किसी वारिस ने ज़ेवर समेत दफ़्न कर दिया और बा'ज़ वुरसा मौजूद न थे उन वुरसा को क़ब्र खोदने की इजाज़त है, किसी का कुछ माल क़ब्र में गिर गया मिट्टी देने के बा'द याद आया तो क़ब्र खोद कर निकाल सकते हैं अगर्चे वोह एक ही दिरहम हो ।

हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ चूंकि सह़ाबी हैं, लिहाज़ा इन्हों ने अपने इजतिहाद से ऐसा किया जब कि हमारे लिये हुक्मे शरई वोही है जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने क़ुरआनो ह़दीस की रौशनी में बयान फ़रमाया ।

2...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، ما قالوا فی تحسین الکفن...الخ، ۳/۱۵۳، حدیث:۴

3...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، ملاقاۃ الارواح، ۵/۴۸۱، حدیث:۲۷۲

4...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، معرفۃ الموتی عمل الاحیاء، ۵/۴۹۱، حدیث:۲۹۷

शहीद के दोस्तों की लिस्ट

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۷۰﴾ (پ۴،اٰل عمرٰن:۱۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ख़ुशियां मना रहे हैं अपने पिछलों की जो अभी उन से न मिले कि उन पर न कुछ अन्देशा है और न कुछ ग़म ।*

शैख़ सुद्दी ने इस आयत की तफ़्सीर में कहा : शहीद के पास एक किताब लाई जाती है जिस में उस के उस दोस्त का नाम होता है जो अ़न क़रीब उस से मिलने वाला है, वोह येह देख कर ऐसे ख़ुश होता है जैसे दुन्या में गुमशुदा के मिल जाने पर उस के अहले ख़ाना ख़ुश होते हैं ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि क़ब्र में मोमिन से कहा जाता है : اُرْقُدْ رُقْدَةَ الْمُتَّقِيْن या'नी परहेज़गारों की त़रह़ सो जा ।(2)

सफ़ेद परन्दा

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : त़ाइफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का विसाल हुवा तो मैं भी उन के जनाज़े में शरीक हुवा, मैं ने वहां एक सफ़ेद परन्दा देखा, उस जैसा परन्दा पहले कभी नहीं देखा गया, वोह ह़ज़रत के कफ़न में दाख़िल हुवा फिर उसे बाहर निकलते न देखा गया, जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को दफ़्न कर दिया गया तो क़ब्र के किनारे से एक ग़ैबी आवाज़ में येह आयाते मुबारका सुनी गईं :

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِيْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿۲۹﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿۳۰﴾ (پ۳۰،الفجر:۲۷تا۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ इत़्मीनान वाली जान अपने रब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ ।* (3)

---

❶...تفسیر الطبری،سورۃ آل عمران،تحت الآیۃ:۱۷۰، ۳/ ۵۱۷،حدیث:۸۲۳۱

❷...اثبات عذاب القبر للبیہقی،ص۴۱،حدیث:۲۸

❸...تاریخ ابن عساکر، ۲۳/ ۱۸۱،رقم: ۲۷۹۹:عبد اللہ بن عباس

مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ،باب دخل طیر فی نعش ابن عباس، ۴/ ۷۰۲،حدیث:۲۳۶۵

हज़रते सय्यिदुना इक्रिमा और हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुबैर (رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَيْهِما) नसरानिय्य फ़रमाते हैं : आस्मान से एक सफ़ेद परन्दा आ कर उन के कफ़न में दाख़िल हुवा मगर उस के बा'द नज़र नहीं आया, लोगों के ख़याल में वोह उन का अ़मल था।(1)

ग़ैबी ख़बर

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : मैं ने आप को हज़रते दहि़य्या कल्बी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से सरगोशी करते देखा तो दरमियान में दख़्ल देना मुनासिब न समझा। आप ने पूछा : क्या तुम ने वाक़ेई मेरे साथ वाले को देखा है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : वोह हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام थे, अ़न क़रीब तुम्हारी बसारत जाती रहेगी और ब वक़्ते मौत लौटा दी जाएगी। पस जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का विसाल हुवा तो एक इन्तिहाई सफ़ेद परन्दा आया और आप के कफ़न में दाख़िल हो गया, लोगों ने तलाश किया मगर न मिला तो हज़रते सय्यिदुना इक्रिमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ैरत से कहा : येह क्या हुवा ? फिर जब आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को क़ब्र में रखा गया तो क़ब्र के किनारे से ग़ैबी आवाज़ में इन आयाते मुबारका की तिलावत सुनी गई :

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِیْۤ اِلٰی رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ﴿۲۹﴾ وَادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ﴿۳۰﴾ (پ۳۰، الفجر: ۲۷تا۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ इत़्मीनान वाली जान अपने रब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ।* (2)

इसी त़रह़ की एक और रिवायत के आख़िर में रावी का बयान है : हम येह गुफ़्तगू किया करते थे कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के विसाल के वक़्त उन की बसारत लौटा दी गई थी।

1...مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، باب دخل طیر فی نعش ابن عباس، ۴/ ۷۰۲، حدیث: ۶۳۶۵
سیر اعلام النبلاء، ۴/ ۴۵۵، رقم: ۲۷۳، عبد اللہ عباس

2...تاریخ ابن عساکر، ۷۳/ ۱۸۱، رقم: ۹۹۷۲: عبد اللہ بن عباس

सहाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان की आजिज़ी

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ब वक़्ते वफ़ात फ़रमाया : मेरे कफ़न के लिये दो कपड़े ले लो मगर बहुत मेहंगे मत लेना क्यूंकि अगर मैं नेक हुवा तो इन से बेहतर लिबास पहना दिया जाएगा वरना येह भी बहुत जल्द उतार दिया जाएगा।(1)

एक रिवायत में है कि "मेरे लिये दो सफ़ेद कपड़े ख़रीद लो क्यूंकि वोह मुझ पर कुछ देर ही रहेंगे फिर या तो उन से बेहतर लिबास पहना दिया जाएगा या फिर उन से बुरा।"(2)

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन राशिद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَاحِد से मरवी है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वसिय्यत फ़रमाई : मुझे दरमियाना कफ़न ही देना क्यूंकि अगर बारगाहे इलाही में मेरे लिये कोई भलाई हुई तो मुझे इस से बेहतर लिबास मिल जाएगा और अगर मैं उस बारगाह में बुरा हुवा तो येह कफ़न भी बहुत जल्द छीन लिया जाएगा और मेरी क़ब्र भी दरमियानी ही रखना क्यूंकि अगर मैं बारगाहे इलाही में अच्छा हुवा तो इसे मेरे लिये ता ह़द्दे निगाह वसीअ़ कर दिया जाएगा और अगर मैं ऐसा न हुवा तो येह मुझ पर इतनी तंग कर दी जाएगी कि मेरी पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी।(3)

हज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन नुसय رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه बयान करते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते विसाल आया तो आप ने अपनी साहिबज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا से फ़रमाया : मेरे येह दो कपड़े धो कर मुझे इन्ही में कफ़न देना क्यूंकि तुम्हारा बाप उन दो में से कोई एक ही हो सकता है कि या तो उसे सब से अच्छा लिबास पहनाया जाएगा या फिर इन्तिहाई बे रह़मी से येह भी छीन लिया जाएगा।(4)

---

1 ...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، شدة الموت وكيفيته، ۵/۴۴۴، حديث: ۱۶۲

2 ...سنن كبرى للبيهقى، كتاب الجنائز، باب من كره ترك القصد فيه، ۳/۵۶۶، حديث: ۶۶۹۶

3 ...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب ذكر الموت، شهادات، ۵/۵۱۰، حديث: ۳۵۰

4 ...جمع الجوامع، مسند ابي بكر الصديق، ۱۱/۴۳، حديث: ۱۸۵

क़मीस की वापसी

हज़रते सय्यिदुना उहबान बिन सैफ़ी ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की साहिबज़ादी हज़रते उ़दैसा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا फ़रमाती हैं : वालिदे मोह़तरम ने मुझे वसिय्यत की, कि हम उन्हें क़मीस में कफ़न न दें (लेकिन हम ने कफ़न में क़मीस भी शामिल कर दी) उन की तदफ़ीन की अगली सुब्ह़ हम ने देखा तो वोह क़मीस खूंटी पर लटकी हुई थी।(1)

एक रिवायत में इस त़रह़ है कि "जब वालिदे मोह़तरम शदीद बीमार हो गए तो अपने अह्ले ख़ाना को क़रीब बुला कर फ़रमाया : मेरे कफ़न में क़मीस शामिल मत करना। लेकिन हम ने क़मीस भी पहना दी अगली सुब्ह़ देखा तो वोह खूंटी पर लटकी हुई थी।"(2)

हज़रते सय्यिदतुना उ़दैसा बिन्ते उहबान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا बयान करती हैं कि वालिदे मोह़तरम का वक़्ते वफ़ात आया तो फ़रमाने लगे : मुझे सिले हुवे कपड़े में कफ़न मत देना। जब आप विसाल फ़रमा चुके और ग़ुस्ल दे दिया गया तो मुझ से कफ़न मांगा गया, जब मैं ने कफ़न दिया तो लोगों ने कहा : क़मीस कहां है ? मैं ने कहा : वालिद साह़िब ने सिली हुई क़मीस में कफ़न देने से मन्अ़ फ़रमाया है। वालिद साह़िब की एक क़मीस कपड़े धोने वाले के पास थी लोगों ने वोह मंगवा कर कफ़न में शामिल कर दी और जनाज़ा ले कर चल पड़े, मैं भी अपना दरवाज़ा बन्द कर के पीछे पीछे हो ली।(3) जब वापस आई तो वोह क़मीस घर में मौजूद थी, मैं ने ग़ुस्ल व कफ़न देने वालों को बुला

---

❶... کرامات اولیاء ملحق شرح اصول اعتقاد اهل سنة، سیاق... کرامات اهبان بن صیفی، ۲/۱۳۶۴، رقم: ۱۱۴

مسند امام احمد، حدیث اهبان بن صیفی، ۷/۳۶۹، حدیث: ۲۰۶۹۶

❷... مسند امام احمد، حدیث اهبان بن صیفی، ۷/۳۶۹، حدیث: ۲۰۶۹۶، معجم کبیر، ۱/۲۹۴، حدیث: ۸۶۴

❸.....औ़रतों को जनाज़े के साथ जाना नाजाइज़ व ममनूअ़ है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1 / 823)

नीज़ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से मरवी है कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए तो औ़रतों को बैठे देख कर पूछा क्यूं बैठी हो ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : जनाज़े के इन्तिज़ार में। इरशाद फ़रमाया : क्या उसे ग़ुस्ल दोगी ? अ़र्ज़ की : नहीं। इरशाद फ़रमाया : क्या उसे उठाओगी ? अ़र्ज़ की : नहीं। इरशाद फ़रमाया : क्या क़ब्र में उतारोगी ? अ़र्ज़ की : नहीं। इरशाद फ़रमाया : गुनाहों का बोझ लिये किसी सवाब के बिग़ैर वापस लौट जाओ। (ابن ماجه، کتاب الجنائز، ماجاء فی اتباع النساء الجنائز، ۲/ ۲۵۵، حدیث: ۱۵۷۸)

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : औ़रत जनाज़े के साथ न जाए। हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان जब जनाज़ा ले कर निकलते तो औ़रतों पर दरवाज़े बन्द फ़रमा देते। (مصنف ابن ابی شیبه، باب فی خروج النساء مع الجنازہ من کرهه، ۳/۱۲۹، حدیث: ۲، ۳)

कर पूछा कि क्या आप लोगों ने कफ़न में क़मीस पहनाई थी ? उन्हों ने जवाब दिया : हां । फिर मैं ने वोह क़मीस दिखाते हुवे कहा : क्या येही क़मीस थी ? बोले : हां येही थी ।(1)

हज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बरदानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی बयान करते हैं कि एक शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो उस के लिये कफ़न ख़ाने से एक कफ़न लाया गया, कफ़न उस के क़द से कुछ बड़ा था तो मैं ने इज़ाफ़ी कफ़न काट दिया, मैं रात को सोया तो किसी ने ख़्वाब में आ कर मुझे कहा : तुम ने वलिय्युल्लाह के कफ़न की लम्बाई में कन्जूसी से काम लिया, हम ने तुम्हारा कफ़न तुम्हें वापस कर दिया है और उसे जन्नती कफ़न दे दिया है । मैं घबरा कर उठा और कफ़न ख़ाने में जा कर देखा तो वाक़ेई वोह कफ़न वहां पड़ा हुवा था ।(2)

क़ब्र ख़ाली थी

हज़रते सय्यिदुना ताऊस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने साहिबज़ादे को वसिय्यत की, कि जब मुझे दफ़्ना चुको तो मेरी क़ब्र में देखना अगर मुझे क़ब्र में न पाओ तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्द बजा लाना और अगर मैं क़ब्र में ही नज़र आऊं तो اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ पढ़ना (या'नी अफ़्सोस करना) । साहिबज़ादे का बयान है कि मैं ने ह़स्बे वसिय्यत देखा तो वालिदे माजिद नज़र न आए । येह बताते हुवे साहिबज़ादे के चेहरे से ख़ुशी झलक रही थी ।(3)

तुफ़ावा क़बीले के एक शख़्स का बयान है कि हम ने एक मुर्दे को दफ़्न किया, मैं बा'द में उस की क़ब्र पर गया ताकि उसे ठीक कर के बना दूं जब क़ब्र में देखा तो अन्दर मुर्दा ही न था ।(4)

पुरनूर क़ब्र

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक लश्कर तय्यार किया और उस पर हज़रते अ़ला बिन हज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को कमान्डर मुक़र्रर किया, मैं भी उस जंग में शरीक था, जब हम वापस हुवे तो रास्ते में हज़रते अ़ला बिन हज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़ौत हो गए । चुनान्चे, हम ने उन्हें दफ़्न कर दिया,

---

1 ...معجم کبیر، ۱/۲۹۳، حدیث: ۸۶۲

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب الصبر و الثواب علیہ، ۴/۵۱، حدیث: ۱۳۱

3 ...حلیۃ الاولیاء، طاوس بن کیسان، ۴/۹، رقم: ۴۵۷۵

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/۸۴، حدیث: ۱۳۱

जब हम उन की तदफ़ीन से फ़ारिग़ हुवे तो एक शख़्स ने आ कर कहा : येह कौन है ? हम ने कहा : येह बेहतरीन शख़्स ह़ज़रते अ़ला बिन ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं । उस ने कहा : येह ज़मीन मुर्दों को बाहर फेंक देती है बेहतर है कि आप ह़ज़रात इन्हें यहां से एक दो मील दूर मुन्तक़िल कर दें । चुनान्चे, हम ने क़ब्र खोदना शुरूअ़ कर दी जब हम लह़द (मय्यित के रखने की बग़ली जगह) तक पहुंचे तो वोह वहां मौजूद नहीं थे और क़ब्र ता ह़द्दे निगाह नूर से भरी हुई थी, हम ने क़ब्र पर दोबारा मिट्टी डाली और रवाना हो गए ।(1)

एक रिवायत में है कि "हम ने उन्हें रेत में दफ़्न किया फिर ख़ौफ़ हुवा कि कहीं दरिन्दे लाश निकाल कर खा न जाएं लिहाज़ा उन्हें निकालने के लिये मिट्टी हटाई तो वोह मौजूद नहीं थे ।"(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबू रव्वाद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : मक्कए मुकर्रमा में एक औ़रत थी जो रोज़ाना 12 हज़ार मरतबा तस्बीह़ करती थी, इन्तिक़ाल के बा'द उसे क़ब्रिस्तान ले जाया गया तो वोह लोगों के सामने से ग़ाइब हो गई ।(3)

वलिय्युल्लाह की आमद की ख़ुशी

जब ह़ज़रते सय्यिदुना कुर्ज़ बिन वबरह जुरजानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی का विसाल हुवा तो एक जुरजानी शख़्स ने ख़्वाब देखा कि मुर्दे नए लिबास पहने अपनी क़ब्रों पर बैठे हैं उस ने इस का सबब पूछा तो मुर्दों ने कहा : तमाम मुर्दों को ह़ज़रते कुर्ज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आमद की ख़ुशी में नए कपड़े पहनाए गए हैं ।(4)

क़ब्र में फूल ही फूल

ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्कीन बिन बुकैर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना वर्राद इ़जली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی को दफ़्न करने के लिये क़ब्र के पास लाया गया तो क़ब्र में फूल ही फूल थे बा'ज़ लोगों ने उन में से कुछ फूल उठा कर रख लिये तो वोह 70 दिन तक तरो ताज़ा रहे, लोग सुब्ह़ो शाम आ कर उन की ज़ियारत करते, जब लोगों की आमदो रफ़्त ज़ियादा हो गई तो फ़ितने के ख़ौफ़

---

1 ...دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ما جاء فی المھاجرۃ الی النبی ... الخ، ۲/۵۲

2 ...معجم کبیر، ۱۸/۹۵، حدیث: ۱۶۷

3 ...شعب الایمان، باب فی محبۃ اللّٰہ، ۱/۴۵۹، حدیث: ۷۲۰

4 ...حلیۃ الاولیاء، کرز بن وبرۃ الحارثی، ۵/۹۴، رقم: ۲۴۵۳

से हाकिम ने वोह फूल अपने क़ब्ज़े में ले लिये और लोगों को मुन्तशिर कर दिया, फिर वोह फूल हाकिम के घर से भी ग़ाइब हो गए और कुछ पता न चला कि कैसे ग़ाइब हुवे !(1)

चम्बेली का गुलदस्ता

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ मुहम्मद बिन मख़्लद दूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मेरी वालिदए माजिदा वफ़ात पा गईं तो मैं उन को क़ब्र में उतारने के लिये उतरा तो बराबर वाली क़ब्र का कुछ हिस्सा खुल गया, मुझे उस में एक शख़्स नज़र आया जिस पर नया कफ़न था और सीने पर चम्बेली के फूलों का गुलदस्ता रखा था, मैं ने उसे उठा कर सूंघा तो वोह मुश्क से भी ज़ियादा खुश्बूदार था, मेरे साथ मौजूद दूसरे लोगों ने भी सूंघा फिर मैं ने उसे वहीं रखा और खुला हुवा हिस्सा बन्द कर दिया।(2)

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل की क़ब्रे मुबारक के क़रीब एक क़ब्र खुल गई देखा गया तो मुर्दे के सीने पर फूल रखे थे जो हिल रहे थे।(3)

सात क़ब्रें

हाफ़िज़ुल हदीस हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى नक़्ल करते हैं कि सिने 276 हिजरी में बसरा शहर में सैलाबी पानी की शिद्दत से सात क़ब्रें खुल गईं और एक हौज़ सा बन गया उन क़ब्रों में सातों मुर्दों के जिस्म बिल्कुल सहीह सलामत थे और उन के कफ़नों से मुश्क की खुश्बू आ रही थी, उन में एक नौजवान था जिस के सर पर घने बाल थे, होंट तर थे गोया उस ने अभी पानी नोश किया है, आंखों में सुर्मा लगा हुवा था और कोख में तल्वार का निशान था, एक शख़्स ने उस के बाल लेने चाहे मगर वोह ऐसे मज़बूत थे जैसे ज़िन्दा इन्सान के होते हैं।(4)

सहाबिये रसूल की क़ब्र से खुश्बू

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : बक़ीए मुबारक में हज़रते

1...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب الرقة والبکاء، ۳/۲۲۲، حدیث:۲۷۱

2...تاریخ بغداد، ۴/۸۰، رقم:۱۷۲۲: محمد بن مخلد بن حفص

3...اھوال القبور لابن رجب، الباب السادس فی ذکر عذاب القبر ونعیمه، ص۱۲۱

4...المنتظم فی تاریخ الملوک والامم، سنة ست وسبعین ومائتین، ۱۲/۲۷۳، نحوہ

सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के लिये क़ब्र खोदने वालों में एक मैं भी था, हम जैसे जैसे मिट्टी निकालते ख़ुश्बू फैलती जाती हत्ता कि हम ने पूरी क़ब्र तय्यार कर ली।[1]

हज़रते सय्यिदुना शुरहबील बिन हसना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की क़ब्र से एक मुट्ठी मिट्टी ले गया, बा'द में उस ने देखा तो वोह मिट्टी मुश्क बन चुकी थी।[2]

आ'माल की ख़ुश्बूएं

हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन हबीब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُجِیْب फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने ख़्वाब में किसी फ़ौतशुदा को देख कर पूछा : येह तुम्हारी क़ब्र में ख़ुश्बूएं कैसी हैं ? उस ने कहा : येह तिलावत और रोज़ों की प्यास की ख़ुश्बूएं हैं।

एक आ'राबी का विसाल

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : हम हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ महवे सफ़र थे कि एक आ'राबी (देहाती) ने आ कर अर्ज़ की : मुझे इस्लाम की ता'लीम दीजिये। (इरशाद फ़रमाया : "येह गवाही दो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का रसूल हूं।" उस ने कहा : मैं ने इस का इक़रार किया। फिर इरशाद फ़रमाया : "तुम जन्नत, दोज़ख़, मरने के बा'द उठाए जाने और हिसाब पर ईमान लाओ।" उस ने कहा : मैं इस का भी इक़रार करता हूं।) अभी येह बातें हो ही रही थीं कि वोह अपनी सुवारी से सर के बल गिरा और इन्तिक़ाल कर गया। प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ने थोड़ी थकावट के बा'द हमेशा की ने'मतों को पा लिया, मेरा ख़याल है उस का इन्तिक़ाल भूक की हालत में हुवा है क्यूंकि मैं देख रहा हूं कि हूरे ऐन में से उस की दो जन्नती बीवियां इस के मुंह में जन्नती फल रख रही हैं।[3]

---

1 ...طبقات ابن سعد، ۳/۳۲۹، رقم: ۸۷: سعد بن معاذ

2 ...طبقات ابن سعد، ۳/۳۲۹، رقم: ۸۷: سعد بن معاذ

3 ...تاریخ بغداد، ۳/۱۴۳، رقم: ۱۱۲۱: محمد بن عبد الملک الانصاری
مسند امام احمد، حدیث جریر بن عبد اللہ، ۷/۵۹، حدیث: ۱۹۱۹۷، عن جریر بن عبد اللہ

फ़िरिश्तों के साथ उड़ान

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : رَاَیْتُ جَعْفَرًا یَطِیْرُ فِی الْجَنَّۃِ مَعَ الْمَلَائِکَۃِ या'नी मैं ने जा'फ़र बिन अबी ताृलिब को जन्नत में फ़िरिश्तों के साथ उड़ते देखा है।[(1)]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं गुज़श्ता शब जन्नत में दाख़िल हुवा तो वहां हज़रते जा'फ़र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को फ़िरिश्तों के साथ उड़ते और हज़रते हम्ज़ा को एक तख़्त पर टेक लगा कर बैठे देखा। इस के इ़लावा आप ने चन्द दीगर सहाबए किराम का भी ज़िक्र किया।[(2)]

(इन्ही बशारतों के सबब हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन अबी ताृलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को जा'फ़र तय्यार या'नी उड़ने वाले कहा जाता है।)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا क़ब्रिस्तान में पुरानी क़ब्रों की त़रफ़ गए तो वहां एक खोपड़ी देखी, आप के हुक्म पर एक शख़्स ने उसे दफ़्न कर दिया फिर आप ने फ़रमाया : इन जिस्मों को येह मिट्टी कोई तक्लीफ़ नहीं देती और क़ियामत तक सवाब या अ़ज़ाब का मुआ़मला अस्ल में रूहों पर ही होता है[(3)]।[(4)]

हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते शैबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जब हज्जाज बिन यूसुफ़ ने हज़रते अस्मा बिन्ते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के साहिबज़ादे हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सूली दी तो मैं हज़रते अस्मा के पास ही थी, हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا उन के पास ता'ज़ियत के लिये आए तो फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरती रहो और सब्र करो, येह जिस्म कुछ शै नहीं होता रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तो रूहें ह़ाज़िर होती हैं। हज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : मैं क्यूं न सब्र करूं जब कि हज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन

---

1 ...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب جعفر بن ابی طالب، ۵/۴۲۴، حدیث: ۳۷۸۸

2 ...مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر مناقب جعفر بن ابی طالب، ۴/۲۱۸، حدیث: ۴۹۸۶
الکامل لابن عدی، ۴/۳۶۲، رقم: ۷۸۹: سلمۃ بن وھرام

3 .....इस की वज़ाहत आगे आ रही है।

4 ...تفسیر ابن رجب الحنبلی، سورۃ فاطر، تحت الآیۃ: ۲۲، ۲/۱۰۲

ज़करिया (علیهما السلام) का सर मुबारक बनी इस्राईल के एक सरकश की त़रफ़ भेजा गया था।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : अजनादैन की जंग में जब रूमी मग़्लूब हुवे तो वोह पीछे हट कर ऐसी तंग जगह पहुंच गए जहां से एक एक कर के गुज़रा जा सकता था, रूमी वहां से गुज़रने लगे तो इतने में ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه आगे बढ़ कर लड़ने लगे और शहीद हो कर उसी तंग जगह में गिर गए जिस से रास्ता बन्द हो गया मगर रूमी वहां से गुज़र चुके थे जब मुसलमान वहां पहुंचे तो घबरा गए कि आगे बढ़े तो ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का जिस्म घोड़े रौंद देंगे मगर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : लोगो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें शहादत से सरफ़राज़ फ़रमा कर उन की रूह़ को बुलन्द फ़रमा दिया है येह तो बस जिस्म है लिहाज़ा इस के ऊपर से घोड़े ले चलो फिर सब से पहले ख़ुद उन के जिस्म पर से आगे बढ़े तो लोग भी आप के पीछे हो लिये ह़त्ता कि जिस्म के टुकड़े टुकड़े हो गए। (जब मुसलमान अपने लश्कर की त़रफ़ वापस हुवे तो उन की हड्डियों को जम्अ़ कर के दफ़्ना दिया)[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने रजब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : इन रिवायतों से येह साबित नहीं होता कि मरने के बा'द रूहों का जिस्म से तअ़ल्लुक़ नहीं रहता बल्कि येह रिवायात इस बात पर दलालत करती हैं कि लोगों की जानिब से पहुंचने वाली तकालीफ़ और मिट्टी का अज्साम को खा जाना जिस्मों को कोई तक्लीफ़ नहीं देता क्यूंकि क़ब्र का अ़ज़ाब दुन्यावी तकालीफ़ की जिन्स से नहीं बल्कि येह एक और ही क़िस्म का अ़ज़ाब है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत व मशिय्यत से मुर्दे को पहुंचता है।[3]

बेटा अ़त़ा हो

يَابَارِئُ 10 बार जो कोई हर जुमुआ़ को पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस को बेटा अ़त़ा होगा। (मदनी पंज सूरह, स. 248)

---

1. ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الامراء، ماذکر من حدیث الامراء والدخول علیھم، ٧/٢٧٢، حدیث:١٤١
2. ...طبقات ابن سعد، ٤/١٤٧، رقم:٤٠٦: ھشام بن العاص
3. ...اھوال القبور لابن رجب، الباب الثامن، ص١٣٩

बाब नम्बर 37

शहीद के फ़ज़ाइल का बयान

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सरकारे दो आलम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ज़मीन से शहीद का ख़ून ख़ुश्क होने से पहले ही उस की दो बीवियां आ कर इस त़रह़ उठाती हैं गोया वोह बच्चों की दाइयां हैं जिन्हों ने अपने शीर ख़्वार बच्चे को किसी जंगल में गुम कर दिया हो और हर एक बीबी के हाथ में एक एक जोड़ा होता है जो दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर होता है।(1)

तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन शजरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : शहीद के ख़ून का पहला क़त़रा ही उस के तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा बन जाता है और हूरे ऐन में से उस की दो बीवियां उस के पास आ कर उस के चेहरे से मिट्टी साफ़ करती हैं फिर उसे 100 जन्नती लिबास पहनाए जाते हैं जो किसी इन्सान के बनाए हुवे नहीं होते बल्कि जन्नत के बने होते हैं, अगर उन्हें दो उंगलियों के दरमियान रखा जाए तो उन में समा जाएं।(2)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक ह़बशी शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : अगर मैं जिहाद करते हुवे मारा जाऊं तो कहा जाऊंगा ? हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जन्नत में। चुनान्चे, वोह शख़्स जिहाद करते हुवे शहीद हो गया। आप उस के पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरा चेहरा रौशन फ़रमा दिया और तुझे ख़ुश्बूदार बना दिया। फिर उसी के मुतअ़ल्लिक़ या किसी और के बारे में इरशाद फ़रमाया : "मैं ने हूरे ऐन में से उस की बीवी को देखा है उस ने उस का ऊनी जुब्बा खींचा और उस के और जुब्बे के दरमियान दाख़िल हो गई।"(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक आ'राबी (या'नी देहात का रहने वाला) हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने शहीद हो गया तो आप उस

---

1 ...ابن ماجہ، کتاب الجهاد، باب فضل الشهادة فی سبیل اللّٰہ، ۳/۳۶۰، حدیث: ۲۷۹۸

2 ...مصنف عبد الرزاق، کتاب الجهاد، باب فضل الجهاد، ۵/۱۷۳، حدیث: ۹۶۰۱، معجم کبیر، ۲۲/۲۴۶، حدیث: ۶۴۱

3 ...مستدرک حاکم، کتاب الجهاد، باب من رضی باللّٰہ ربا...الخ، ۲/۴۱۷، حدیث: ۲۵۰۸

के सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा हो कर मुस्कुराए फिर रुख़े अन्वर फेर लिया। इस की वज्ह पूछी गई तो इरशाद फ़रमाया : उस की रूह पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नवाज़िशात देख कर मैं ख़ुश हुवा और जब हूरे ऐन में से उस की बीवी उस के सिरहाने आई तो मैं ने अपना रुख़ फेर लिया।(1)

शहादत से महरूमी की हसरत

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन उ़स्मान जौई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मैं एक शख़्स को तवाफ़े का'बा में मश्ग़ूल देख कर उस के क़रीब हुवा तो वोह येही कहे जा रहा था : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ने हाजत मन्दों की हाजात को पूरा किया मगर मेरी हाजत को पूरा नहीं किया। मैं ने कहा : तुम इस के इलावा कोई और बात क्यूं नहीं करते ? उस ने कहा : मैं आप को इस की वज्ह बताता हूं, बात येह है कि हम मुख़्तलिफ़ शहरों के रहने वाले सात दोस्त थे, हम ने दुश्मन के अ़लाक़े में जा कर उस से जंग की तो दुश्मनों ने हमें क़ैदी बना कर अ़लाहिदा अ़लाहिदा कर दिया ताकि हमें क़त्ल कर दें। मैं ने आस्मान की जानिब निगाह उठाई तो देखा कि सात दरवाज़े खुले हैं और हर दरवाज़े पर हूरे ऐन में से एक कनीज़ खड़ी है, जब हमारे एक दोस्त की गर्दन मारी गई तो वोह कनीज़ हाथ में एक रूमाल लिये नीचे उतर आई हत्ता कि बारी बारी छे दोस्तों की गर्दन मार दी गई, अब सिर्फ़ मैं और एक दरवाज़ा बचा था जिस पर कनीज़ खड़ी थी, जब मुझे क़त्ल करने के लिये आगे बढ़ाया गया तो किसी शख़्स ने मेरी सिफ़ारिश की और मुझे आज़ाद कर के उस के हवाले कर दिया गया, मैं ने हूर को येह कहते सुना : ऐ महरूम ! आख़िर किस चीज़ ने तुम्हें महरूम रखा ? इतना कह कर उस ने दरवाज़ा बन्द कर दिया। मेरे भाई ! अब मैं शहादत की सआदत मन्दी से महरूम होने की हसरत और शहादत की उम्मीद लिये हुवे हूं। हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : मेरे नज़दीक वोह तमाम दोस्तों में अफ़्ज़ल था क्यूंकि उस ने वोह कुछ देखा जो दूसरों ने नहीं देखा और शौक़ व रग़बत पर अ़मल करने के लिये उसे छोड़ दिया गया।(2)

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الثبات للعدو و ترک الفرار من الزحف، ۴/۵۳، حدیث: ۴۳۱۷

2 ...شعب الایمان، باب فی الثبات للعدو و ترک الفرار من الزحف، ۴/۵۷، حدیث: ۴۳۲۶

बाब नम्बर 38 जि़यारते कु़बूर और मुर्दों का ज़ाइरीन को देखने और पहचानने का बयान

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदां, रह़मते आ़लमिय्यां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब कोई अपने मुसलमान भाई की क़ब्र की ज़ियारत के लिये जाता और उस के पास बैठता है तो मुर्दा उस के उठ जाने तक उस से उन्सिय्यत ह़ासिल करता है और उस के सलाम का जवाब देता है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जब कोई शख़्स अपने जान पहचान वाले की क़ब्र के पास से गुज़रते हुवे सलाम करता है तो मुर्दा उस के सलाम का जवाब देता है और उसे पहचानता भी है और अगर किसी अन्जान क़ब्र के पास से गुज़रते हुवे सलाम करे तो मुर्दा सिर्फ़ सलाम का जवाब देता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो भी अपने ऐसे मुसलमान भाई की क़ब्र के पास से गुज़रे जिसे दुन्या में जानता था और सलाम करे तो मुर्दा भी उसे पहचानता और सलाम का जवाब देता है।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो भी दुन्या में जान पहचान रखने वाले किसी शख़्स की क़ब्र के पास से गुज़रते हुवे सलाम करे तो वोह मुर्दा भी उसे पहचानता और सलाम का जवाब देता है।(4)

क़ब्रिस्तान की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रज़ीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे रास्ते में

(1)...اهوال القبور، الباب الثامن، فصل معرفة الموتى بمن يزورهم...الخ، ص۲۱۱، فردوس الاخبار، ۳۱۶/۲، حديث: ۶۴۲۰

(2)...شعب الايمان، باب فی الصلاة على من مات من اهل القبلة، ۱۷/۷، حديث: ۹۲۹۶مكرر

(3)...الاستذكار، كتاب الطهارة، باب جامع الوضوء، ۲۲۶/۱، تحت الحديث: ۲۹

(4)...تاريخ بغداد، ۱۳۵/۶، رقم: ۳۱۷۵: ابراهيم بن عمران ابو اسحاق الكرمانى

क़ब्रिस्तान आता है क्या कोई ऐसा कलाम है जो वहां से गुज़रते हुवे मैं कर सकूं ? इरशाद फ़रमाया : यूं कहो : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُؤْمِنِيْنَ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّنَحْنُ لَكُمْ تَبَعٌ وَّاِنَّا اِنْ شَآءَ اللهُ بِكُمْ لَاحِقُوْن या'नी ऐ क़ब्र वाले मुसलमानो मोमिनो ! तुम पर सलाम हो तुम हम से आगे चले गए और हम तुम्हारे पीछे पीछे हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो हम भी तुम से मिलने वाले हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रज़ीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या वोह सुनते हैं ? इरशाद फ़रमाया : हां सुनते हैं मगर जवाब देने की त़ाक़त नहीं रखते। ऐ अबू रज़ीन ! क्या तुम इस पर खुश नहीं कि इन की ता'दाद के बराबर फ़िरिश्ते तुम्हें जवाब दें।[1]

आप का येह फ़रमाना कि "वोह जवाब देने की त़ाक़त नहीं रखते" इस का मत़लब येह है कि ऐसा जवाब नहीं दे सकते जिसे इन्सान और जिन्नात सुन सकें वरना वोह जवाब तो देते हैं।

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं हुजरए मुत़ह्हरा में ज़ियारत के लिये जाती तो निक़ाब व ह़िजाब का लिह़ाज़ न करती और दिल में कहती : वहां मेरे वालिद और मेरे शौहर ही तो हैं लेकिन जब ह़ज़रते फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वहां दफ़्न किया गया तो उन से ह़या की वज्ह से सर ता पा पर्दा कर के जाने लगी।[2]

क्या मुर्दे सुनते हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم गज़वए उहुद से वापसी पर ह़ज़रते मुस्अ़ब बिन उ़मैर और दीगर शुहदा की क़ब्रों पर खड़े हुवे और इरशाद फ़रमाया : मैं गवाही देता हूं कि तुम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां ज़िन्दा हो। (फिर हमें इरशाद फ़रमाया :) इन की ज़ियारत किया करो और इन्हें सलाम किया करो, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! क़ियामत तक जो भी इन्हें सलाम करेगा येह उस के सलाम का जवाब देंगे।[3]

---

1 ... كتاب الضعفاء، ۴/۱۱۹۱، رقم: ۱۵۷۲: لمحمد بن الاشعث

2 ... مستدرک حاکم، کتاب المغازی والسرایا، رؤیا عائشة ثلاثة اقمار... الخ، ۳/۲۰۹، حدیث: ۴۴۵۸
مسند امام احمد، مسند السیدة عائشة، ۱۰/۱۲، حدیث: ۲۵۷۱۸

3 ... معجم اوسط، ۳/۷، حدیث: ۳۷۰۰

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब मय्यित का महबूब शख़्स उस की ज़ियारत को जाए तो मय्यित अपनी क़ब्र में उस से उन्सिय्यत ह़ासिल करती है।"(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि बेशक मुर्दे रोज़े जुमुआ़ और उस से एक दिन पहले (जुमा'रात) और एक दिन बा'द (हफ़्ता) को अपने ज़ाइरीन को पहचानते हैं।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो हफ़्ते के दिन तुलूए़ आफ़्ताब से पहले किसी क़ब्र पर जाए तो मुर्दा उस के आने को जान लेता है। पूछा गया : वोह कैसे ? फ़रमाया : जुमुआ़ की अ़ज़मत व फ़ज़ीलत की वज्ह से।(3)

तम्बीह

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुबुकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : सह़ीह़ क़ौल के मुत़ाबिक़ क़ब्र में रूह़ का जिस्म की त़रफ़ लौटना तमाम मुर्दों के लिये साबित है। चेजाए कि शुहदाए किराम कि इन की शान दूसरों से अर्फ़अ़ व आ'ला है। इख़्तिलाफ़ इस में है कि रूह़ जिस्म में मुस्तक़िल रहती है या नहीं और जिस्म की बरज़ख़ी ज़िन्दगी दुन्यावी ज़िन्दगी की मिस्ल रूह़ के साथ होती है या इस के बिग़ैर और वोह जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे रहती है ? क्यूंकि ज़िन्दगी की रूह़ के साथ दाइमी वाबस्तगी एक अम्रे आ़दी है अ़क़्ली नहीं जब कि येह मुआ़मला कि जिस्म की बरज़ख़ी ज़िन्दगी दुन्यावी ज़िन्दगी की मिस्ल रूह़ के साथ होती है इसे अ़क़्ल जाइज़ क़रार देती है। पस अगर इस पर कोई दलील क़ाइम हो जाए तो इसे क़बूल किया जाएगा।

इसी बात को उ़लमा की एक जमाअ़त ने ज़िक्र किया है और ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का अपने मज़ार में नमाज़ पढ़ना भी इसी की गवाही देता है क्यूंकि नमाज़ के लिये जिस्म का ज़िन्दा होना ज़रूरी है, यूंही शबे मे'राज दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वाक़िआ़त भी इस पर शाहिद हैं और येह तमाम जिस्म की सिफ़ात हैं लेकिन इन तमाम वाक़िआ़त से येह लाज़िम नहीं आता कि इस ह़क़ीक़ी ज़िन्दगी के साथ अज्साम का वोही तअ़ल्लुक़ हो जो दुन्या

1... الاربعين الطائية، ص١٣٨، تحت الحديث العشرون

2... شعب الايمان، باب في الصلاة على من مات من اهل القبلة، ١٨/٧، حديث: ٩٣٠١

3... شعب الايمان، باب في الصلاة على من مات من اهل القبلة، ١٨/٧، حديث: ٩٣٠٢

में था कि खाने पीने वग़ैरा की ह़ाजत होती थी बल्कि इन के लिये एक अलग हुक्म है और जहां तक बात है सुनने और जानने वग़ैरा इदराकात की तो इस में कोई शक नहीं है कि येह बा'दे विसाल ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और दीगर फ़ौत होने वालों के लिये साबित हैं।(1)

बा'ज़ों ने ह़याते शुहदा में इख़्तिलाफ़ किया कि आया वोह सिर्फ़ रूह़ के लिये है या रूह़ और जिस्म दोनों के लिये इस त़रह़ कि दोनों सूरतों में जिस्म भी सलामत रहे ? ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى अपनी किताब "अल ए'तिक़ाद" में फ़रमाते हैं : ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की अरवाह़े मुबारका क़ब्ज़ होने के बा'द वापस लौटा दी गई हैं और वोह भी शुहदा की त़रह़ अपने रब عَزَّوَجَلَّ के हां ज़िन्दा हैं।(2)

रूहों की अक़्साम

इब्ने क़य्यिम ने अरवाह़ की बाहमी मुलाक़ात के मस्अले के मुतअ़ल्लिक़ कहा कि रूहों की दो क़िस्में हैं : एक वोह जो इन्आ़म में हैं और दूसरी वोह जो अ़ज़ाब में हैं, अ़ज़ाब में मुब्तला रूहें एक दूसरे को देखने और मुलाक़ात करने से रोक दी गई हैं जब कि इन्आ़म याफ़्ता अरवाह़ आज़ाद हैं, एक दूसरे को देखती, मुलाक़ात करती और आपस में दुन्यावी मुआ़मलात और अह्ले दुन्या के बारे में बातें करती हैं पस हर रूह़ अपने हम मिस्ल अ़मल करने वाले के साथ होती है और हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे मुक़द्दसा रफ़ीक़े आ'ला में है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ﴿٦٩﴾

(پ٥، النسآء:٦٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो अल्लाह और उस के रसूल का हुक्म माने तो उसे उन का साथ मिलेगा जिन पर अल्लाह ने फ़ज़्ल किया या'नी अम्बिया और सिद्दीक़ और शहीद और नेक लोग और येह क्या ही अच्छे साथी हैं।*

और येह "साथ" आ़लमे दुन्या, आ़लमे बरज़ख़ और आ़लमे मह़शर में क़ाइम रहेगा और आदमी इन तीनों ज़मानों में उसी के साथ होता है जिस से मह़ब्बत करता है।

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

---

1 ...مواھب اللدنیۃ، المقصد الرابع، الفصل الثانی: فیما خصہ اللہ...الخ، ۲/۳۱۴

2 ...الاعتقاد للبیھقی، باب القول فی اثبات نبوۃ محمد المصطفٰی، فصل والانبیاء...الخ، ص ۳۰۵

وَ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِیْنَ قُتِلُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًاؕ بَلْ اَحْیَآءٌ (پ۴،ال عمرٰن:۱۶۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह (अपने रब के पास) ज़िन्दा हैं।*

हज़रते सय्यिदुना शैज़ला[1] رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी किताब "अल बुरहान फ़ी उ़लूमिल कुरआन" में फ़रमाते हैं : अगर इस आयते त़य्यिबा के पेशे नज़र येह सुवाल किया जाए कि वोह मुर्दा होते हुवे कैसे ज़िन्दा हो सकते हैं ? तो हम कहेंगे : मुमकिन है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें उन की क़ब्रों में ज़िन्दा कर दिया हो और रूहें उन के अज्साम के किसी ख़ास हिस्से में रहते हुवे बदन पर होने वाली लज़्ज़ात को महसूस कर लेती हों जैसा कि दुन्या में ज़िन्दा शख़्स का तमाम बदन किसी ख़ास हिस्से पर असर अन्दाज़ होने वाली गर्मी या सर्दी को महसूस कर लेता है।

इस का येह मत़लब भी बयान किया गया है कि उन शुहदा के अज्साम क़ब्रों में ख़राब नहीं होंगे और न ही उन के जोड़ अलग होंगे पस वोह अपनी क़ब्रों में जिन्दों ही की त़रह़ हैं।[2]

हज़रते सय्यिदुना अबू ह़य्यान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَنَّان अपनी तफ़्सीर में मज़्कूरा आयते मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : इस में मज़्कूर "ह़यात" में लोगों ने इख़्तिलाफ़ किया है कुछ कहते हैं : शुहदा की रूहों की बक़ा मुराद है न कि अज्साम की क्यूंकि हम देखते हैं कि अज्साम ख़राब होते और ख़त्म हो जाते हैं। बा'ज़ कहते हैं : शहीद रूह़ व जिस्म के साथ ज़िन्दा होता है और हमारा उन की ज़िन्दगी को न समझना इस मुआ़मले में किसी ऐब का बाइ़स नहीं, वोह अगर्चे हमें मुर्दा नज़र आते हैं मगर होते ज़िन्दा हैं जैसा कि रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ تَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّ هِیَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِؕ (پ۲۰،النمل:۸۸)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *और तू देखेगा पहाड़ों को ख़याल करेगा कि वोह जमे हुवे हैं और वोह चलते होंगे बादल की चाल।*

और ऐसे ही सोने वाला सोता हुवा दिखाई देता है मगर वोह अपने ख़्वाब में लुत़्फ़ देने और तक्लीफ़ देने वाले उमूर को देख रहा होता है।[3]

(मुसन्निफ़ फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि इसी लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने येह बात इरशाद फ़रमाई :

---

1 ...मतन में इस मक़ाम पर "शैदला" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "शैज़ला" है लिहाज़ा वोही लिख दिया गया है।

2 ...الدیباج علی مسلم، کتاب الامارۃ، باب بیان ان ارواح الشھداء فی الجنۃ...الخ، ۴/۴۸۱، تحت الحدیث:۱۸۸۷

3 ...تفسیر البحر المحیط، سورۃ البقرۃ، تحت الآیۃ:۱۵۴، ۱/۶۲۲

بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बल्कि वोह ज़िन्दा हैं हां तुम्हें ख़बर नहीं।*

पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने इस क़ौल में मोमिनीन को मुख़ातब करते हुवे तम्बीह फ़रमा दी कि तुम किसी हि़स के ज़रीए़ इस हयात को नहीं जान सकते और शहीद और ग़ैरे शहीद में इसी से फ़र्क़ होता है वरना अगर फ़क़त रूह़ की हयात मानी जाए तो फिर शहीद व ग़ैरे शहीद में फ़र्क़ नहीं हो सकेगा क्यूंकि रूह़ की हयात तो तमाम मुर्दों को हासिल है और मोमिनीन इस बात को ब ख़ूबी जानते हैं कि रूहा़नी ज़िन्दगी तमाम ही मुर्दों की होती है, अगर येह फ़र्क़ न माना जाए तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान وَلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ का कोई मा'ना ही न होगा। बा'ज़ औक़ात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने किसी वली को ब ज़रीअ़ए कश्फ़ उन की ज़िन्दगी का मुशाहदा करा देता है। चुनान्चे,

शहीद ज़िन्दा होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुहैली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي ने "दलाइलुन्नुबुव्वह" में किसी सह़ाबी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से नक़्ल किया कि उन्हों ने उहु़द के मैदान में एक जगह क़ब्र खोदी तो उस में दूसरी जानिब एक शिगाफ़ पड़ गया देखा तो वहां एक शख़्स तख़्त पर बैठा अपने सामने रखे क़ुरआने पाक में तिलावत कर रहा था और उस के सामने एक सर सब्ज़ बाग़ भी था। वोह सह़ाबी समझ गए कि येह कोई शहीद सह़ाबी हैं क्यूंकि उन्हों ने उन के रुख़्सार पर एक ज़ख़्म देखा था।(1)

इस वाक़िए़ को ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़य्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ने भी ज़िक्र किया है और इसी के मुशाबेह एक वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي ने "रौज़ुर्रियाह़ीन" में एक नेक बन्दे से यूं रिवायत किया कि "मैं ने एक शख़्स की क़ब्र खोदी, जब उस में लह़द बनाने लगा तो साथ वाली क़ब्र की एक ईंट गिर गई, मैं ने देखा वहां एक बुज़ुर्ग तशरीफ़ फ़रमा थे जिन पर एक सफ़ेद लिबास था जो ह़रकत कर रहा था, इन के सामने सोने से लिखा और सोने का बना एक क़ुरआने मजीद रखा था जिस में वोह तिलावत कर रहे थे। उन्हों ने सर उठा कर मुझे देखा और पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए ! क्या क़ियामत क़ाइम हो गई है ? मैं ने कहा : नहीं। फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें आ़फ़िय्यत दे ! ईंट अपनी जगह रख दो। चुनान्चे, मैं ने ईंट लगा कर शिगाफ़ बन्द कर दिया।(2)

---

1 ...تفسیر البحر المحیط،سورۃ البقرۃ،تحت الآیۃ:۱۵۴، ۱/ ۶۲۲

2 ...روض الریاحین،الحکایۃ الثامنۃ عشرۃ بعد الاربعۃ مئۃ،ص ۳۳۵

क़ब्र का पुर कैफ़ मन्ज़र

एक और वाक़िआ़ नक़्ल करते हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : हमें एक बा ए'तिमाद गोरकन ने बताया कि उस ने एक क़ब्र खोदी तो उसे वहां तख़्त पर बैठा एक शख़्स नज़र आया, उस के सामने एक क़ुरआने करीम रखा था जिस में वोह तिलावत कर रहा था और उस के नीचे एक नहर भी बह रही थी। येह मन्ज़र देख कर गोरकन बेहोश हो गया, लोगों ने उसे बाहर निकाला मगर बेहोशी का सबब मा'लूम न हुवा फिर तीन दिन बा'द उसे होश आया।(1)

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ नजमुद्दीन अस्फ़हानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی एक मुर्दे की तदफ़ीन में शरीक हुवे और जब तल्क़ीन करने वाला बैठ कर तल्क़ीन करने लगा तो मय्यित की आवाज़ आई : क्या तुम्हें इस पर तअ़ज्जुब नहीं होता कि एक मुर्दा शख़्स ज़िन्दा को तल्क़ीन कर रहा है?(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुग़ीरा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़फ़ा बिन इमरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के फ़ज़ाइल बयान करते हुवे कहा : मैं ने इन जैसा आज तक नहीं देखा, मुझे एक दोस्त ने बताया कि इन की तदफ़ीन के बा'द एक शख़्स ने इन की क़ब्र पर तल्क़ीन करते हुवे لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहा तो इन्हों ने भी لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहा।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुहि़ब त़बरी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی ने फ़रमाया : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इस्माईल ह़ज़रमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی के साथ मक़बरए ज़ुबैद में था कि शैख़ ने पूछा : मुहि़ब्बुद्दीन ! क्या तुम मुर्दों के कलाम करने पर यक़ीन रखते हो ? मैं ने कहा : जी हां। फ़रमाया : फ़ुलां क़ब्र वाला मुझे कह रहा है मैं अहले जन्नत से हूं।(4)

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इस्माईल ह़ज़रमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی यमन के किसी क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो इन्तिहाई ग़मगीन हो कर बुलन्द आवाज़ से रोने लगे और फिर बहुत ख़ुश हो कर हंसने लगे, आप से इस का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : मेरे सामने से पर्दे हटाए गए

---

1 ...روض الرياحين، الحكاية الثانية والستون بعد المئة، ص ١٨٠

2 ...روض الرياحين، الحكاية الحادية والثمانون، ص ١٢٠

3 ...مجموع فيه عشرة أجزاء حديثية، الجزء السادس: فوائد المؤمل بن احمد الشيبانی، ص ٣٤٥، رقم: ٤٥٩(٥٤)

اهوال القبور لابن رجب، الباب الاول: فی ذكر حال الميت عند نزوله قبره، ص ٣٧

4 ...روض الرياحين، الحكاية السابعة والستون بعد المئة، ص ١٨٢

तो मैं ने देखा कि इन मुर्दों को अ़ज़ाब हो रहा है, सो मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में गिड़गिड़ाया तो मुझे निदा आई : हम ने इन मुर्दों के ह़क़ में तुम्हारी सिफ़ारिश क़बूल कर ली है। फिर उस क़ब्र से एक औ़रत बोली : ऐ इस्माईल ! क्या मैं भी उन में शामिल हूं ? ह़ालांकि मैं तो गाना गाने वाली फ़ुलानी औ़रत हूं। मैं ने कहा : हां तू भी उन के साथ है, उस की इस बात पर मुझे हंसी आ गई।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी बहाउद्दीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : हम ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अमीनुद्दीन जिब्रील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَكِيْل के साथ क़ाहिरा जा रहे थे कि रास्ते में शैख़ का इन्तिक़ाल हो गया, जब हम क़ाहिरा के दरवाज़े पर पहुंचे तो दरबान ने रोक दिया क्यूंकि मय्यित को शहर में ले जाने की इजाज़त नहीं थी। उस वक़्त शैख़ ने अपनी उंगली और हाथ ऊपर उठाया तो हम शहर में दाख़िल हो गए।

मन्क़ूल है कि एक शख़्स ने मक़ामे क़राफ़ा पर एक नौजवान के साथ बद फ़े'ली का इरादा किया तो उस नौजवान ने कहा : ब ख़ुदा ! मैं यहां हरगिज़ रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी नहीं करूंगा क्यूंकि मैं ने एक मरतबा यहां ऐसा किया तो एक क़ब्र फट गई और मुर्दे ने कहा : क्या तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ह़या नहीं आती ?

रब्बे का'बा की क़सम ! मैं ज़िन्दा हूं

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैनुद्दीन बौशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मन्सूरा में जब मुसलमानों को क़ैदी बना लिया गया तो उन में एक फ़क़ीह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान नुवैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى भी थे आप क़ुरआने पाक की तिलावत करते थे आप ने वहां येह आयते मुबारका भी तिलावत की :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

(پ۴،اٰل عمرٰن:۱۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो **अल्लाह** की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।*

फिर जब आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को शहीद कर दिया गया तो एक फ़रंगी आया और अपने नेज़े से आप के चेहरे को छू कर कहने लगा : ऐ मुसलमानों के इमाम ! तू कहता था कि तुम्हारे रब ने तुम्हें ज़िन्दा कहा है और तुम्हें रोज़ी दी जाती है तो बताओ कहां है वोह ज़िन्दगी ? आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने

---

1 ...روض الرياحين، الحكاية الخامسة والستون بعد المئة، ص ۱۸۲

अपना सर उठाया और दो मरतबा कहा : "रब्बे का'बा की क़सम ! मैं ज़िन्दा हूं।" येह देख कर फ़रंगी अपने घोड़े से उतरा, आप के मुबारक चेहरे को बोसा दिया और अपने नौकर को हुक्म दिया कि इन्हें उठा लो हम इन्हें अपने शहर ले जाएंगे।

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़र्राज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे मक्कए मुकर्रमा में बाबे बनू शैबा पर एक मुर्दा नौजवान दिखाई दिया जब मैं ने उसे ग़ौर से देखा तो वोह मुस्कुरा कर बोला : अबू सईद ! क्या आप नहीं जानते कि महबूब मर कर भी ज़िन्दा रहते हैं, वोह तो बस एक घर से दूसरे घर कूच करते हैं।[1]

मुहिब्बे इलाही मरता नहीं

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अ़ला रूज़बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : मैं ने एक फ़क़ीर को क़ब्र में उतारा और उस के कफ़न की गिरह खोल कर उसे मिट्टी पर लिटाया ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की ग़रीबुल वत़नी पर रह़म फ़रमाए तो उस ने अपनी आंखें खोल दीं और कहा : अबू अ़ली ! तू मुझे उस के सामने रुस्वा करता है जिस ने मुझे नाज़ की आ़दत डाली। मैं ने कहा : ऐ मेरे सरदार ! क्या मौत के बा'द ज़िन्दगी ? उस ने कहा : हां मैं ज़िन्दा ही हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करने वाला हर शख़्स ज़िन्दा होता है और मैं अपने मर्तबे के सबब कल बरोज़े क़ियामत तुम्हारी ज़रूर मदद करूंगा।[2]

कफ़न चोर की तौबा

मन्क़ूल है कि एक कफ़न चोर था, एक मरतबा एक ख़ातून फ़ौत हुई और लोगों ने जनाज़ा पढ़ा तो येह कफ़न चोर भी उस में शामिल हो गया ताकि उस की क़ब्र का पता लगा सके, जब रात हुई और उस ने जा कर क़ब्र खोदी तो वोह ख़ातून बोल पड़ी : سُبْحٰنَ الله ! क्या बख़्शा हुवा मर्द बख़्शी हुई औरत का कफ़न चुराता है ? कफ़न चोर ने कहा : तुम तो बख़्शी गई मगर मुझ गुनाहगार की बख़्शिश कैसे हो गई ? ख़ातून ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे और मेरा जनाज़ा पढ़ने वालों को बख़्श दिया है और तू ने भी मेरा जनाज़ा पढ़ा है। येह सुन कर कफ़न चोर उठा, मिट्टी वापस डाली और सच्ची पक्की तौबा कर ली।[3]

---

1 ...رسالہ قشیریہ، باب احوالھم عند الخروج من الدنیا، ص ۳۴۱

2 ...رسالہ قشیریہ، باب احوالھم عند الخروج من الدنیا، ص ۳۴۰

3 ...رسالہ قشیریہ، باب کرامات الأولیاء، ص ۴۱۱

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन शैबान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : एक नेक नौजवान मेरे साथ रहने लगा, उस का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं ग़मगीन हो गया, मैं ने उसे ग़ुस्ल देने का इरादा किया तो ग़म की वज्ह से बाईं जानिब से शुरूअ़ कर दिया अचानक उस ने मेरा हाथ पकड़ा और दाईं तरफ़ फेर दिया, मैं ने कहा : बेटा ! तुम ने ठीक किया, मुझ से ग़लती हो गई थी।[1]

हज़रते सय्यिदुना अबू या'क़ूब सूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मैं ने अपने एक मुरीद को ग़ुस्ल दिया तो उस ने तख़्तए ग़ुस्ल पर मेरा अंगूठा पकड़ लिया, मैं ने कहा : बेटा ! मेरा हाथ छोड़ दे, मैं जानता हूं कि तू मुर्दा नहीं है, येह तो एक घर से दूसरे घर मुन्तक़िल होना है। तो उस ने मेरा हाथ छोड़ दिया।[2]

हज़रते सय्यिदुना अबू या'क़ूब सूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मेरा एक मुरीद मेरे पास मक्कए मुकर्रमा आया और एक दीनार देते हुवे कहा : उस्तादे मोह़तरम ! कल ज़ोहर के वक़्त मेरा इन्तिक़ाल हो जाएगा, येह दीनार रख लीजिये आधे दीनार से मेरी क़ब्र और आधे से कफ़न का इन्तिज़ाम फ़रमा दीजियेगा। अगले दिन वोह ज़ोहर के वक़्त आ कर त़वाफ़ करने लगा और फिर कुछ पीछे हटा और इन्तिक़ाल कर गया, जब मैं ने उसे क़ब्र में उतारा तो उस ने अपनी आंखें खोल दीं, मैं ने कहा : क्या मौत के बा'द ज़िन्दगी है ? वोह बोला : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत करने वाला हूं और उस से मह़ब्बत करने वाला हर शख़्स ज़िन्दा होता है।[3]

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बीकन्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى एक दिन मक्कए मुकर्रमा की किसी गली से गुज़रे तो देखा कि लोग एक नौजवान को ख़राब किरदार की वज्ह से घसीट कर बाहर निकाल रहे हैं और उस की मां रोते हुवे लोगों से अपने बेटे की सिफ़ारिश कर रही है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने लोगों से फ़रमाया : मेरी ज़मानत पर इसे इस औ़रत के ह़वाले कर दो। चन्द दिन बा'द आप की मुलाक़ात उस की मां से हुई तो उस नौजवान का ह़ाल दरयाफ़्त किया। बोली : वोह तो मर गया है और उस ने वसिय्यत की थी कि मेरी मौत की ख़बर पड़ोसियों को भी न देना ताकि वोह मुझे बुरा भला न कहें और मुझे दफ़्न करने के बा'द मेरे रब तआ़ला के हुज़ूर मेरी सिफ़ारिश करना। लिहाज़ा मैं ने किसी को बताए बिग़ैर ही उसे दफ़्न कर

---

1 ...رسالہ قشیریہ، باب کرامات الأولیاء، ص ۴۰۴

2 ...رسالہ قشیریہ، باب کرامات الأولیاء، ص ۴۰۴

3 ...رسالہ قشیریہ، باب کرامات الأولیاء، ص ۴۰۴

दिया और जब वापस पलटने लगी तो मुझे उस की आवाज़ आई, वोह कह रहा था : ऐ मेरी मां ! अब तू चली जा, मुझे करम वाले रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश कर दिया गया है।[1]

हज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي एक नेक शख़्स के मुतअ़ल्लिक़ नक़्ल करते हैं कि वोह कभी कभी अपने वालिद की क़ब्र पर जा कर उन से बातें किया करता था।

नीज़ येह भी मश्हूर है कि बड़े फ़क़ीह और मश्हूर वली हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन मूसा बिन उ़जैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को बा'ज़ सालिह़ीन फ़ुक़हा ने क़ब्र में सूरए नूर की तिलावत करते सुना है।

नुक़्सान देह और नफ़्अ़ मन्द

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه एक मरतबा जन्नतुल बक़ीअ़ (या'नी मदीने के क़ब्रिस्तान) से गुज़रे तो कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْر या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलामती हो, हमारे पास तुम्हारे लिये चन्द ख़बरें हैं, तुम्हारी औ़रतों ने शादियां कर लीं, तुम्हारे घरों में नए लोग आबाद हो गए और तुम्हारे माल तक़्सीम हो गए। हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई : ऐ उ़मर बिन ख़त्ताब ! हम भी आप को अपने बारे में कुछ बताते हैं : हम ने जो आगे भेजा उसे पा लिया, जो राहे ख़ुदा में ख़र्च किया उस से नफ़्अ़ उठाया और जो पीछे छोड़ आए थे उस में नुक़्सान ही हाथ आया।[2]

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के साथ मदीनए मुनव्वरा के क़ब्रिस्तान गए तो आप ने कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ وَرَحْمَةُ الله या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलामती और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत हो, तुम हमें अपनी ख़बरें सुनाओगे या फिर हम तुम्हें बताएं ? इतने में एक क़ब्र से आवाज़ आई : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه ऐ अमीरुल मोमिनीन ! आप हमें बताइये कि हमारे बा'द क्या हुवा ? आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : तुम्हारी बेवाओं ने शादियां कर लीं, माल तक़्सीम कर दिये गए, औलाद यतीमों में शुमार हो गई और तुम्हारी पुख़्ता इमारतों में अब तुम्हारे

---

❶...رسالہ قشیریہ، باب الرجاء، ص ۱۷۳

❷...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب الھواتف، باب ھواتف الجن، ۲/۴۹۲، حدیث: ۱۰۰

दुश्मन रिहाइश पज़ीर हैं, येह ख़बरें तो हमारे पास थीं अब तुम अपना हाल सुनाओ। एक क़ब्र से आवाज़ आई : कफ़न फट गए, बाल बिखर गए, खालें झड़ गईं, आंखों के ह़ल्के़ रुख़्सारों पर बह निकले और नथनों से ख़ून और पीप जारी हो गया, जो हम ने आगे भेजा था वोह पा लिया और जो पीछे छोड़ आए उस में नुक़्सान उठाया और हम अपने आ'माल में गिरिफ़्तार हैं।(1)

क़ब्र से ठन्डी हवा

ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन अबू फ़ुरात رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने क़ब्र खोदी और धूप से बचने के लिये उस में बैठ गया इतने में उस की पीठ पर ठन्डी हवा लगी, उस ने मुड़ कर देखा तो वहां एक छोटा सूराख़ था, उस ने अपनी उंगली से उसे कुरेद कर बड़ा किया तो दूसरी जानिब ता ह़द्दे निगाह एक कुशादा क़ब्र थी जिस में एक बुज़ुर्ग ख़िज़ाब लगाए मौजूद थे और ऐसा लगता था कि कंगी करने वालियों ने अभी अभी कंगी की है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त्ताफ़ बिन ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : मेरी ख़ाला जान शुहदाए किराम के मज़ारात पर जाया करती थीं, उन्हों ने मुझे बताया कि एक दिन मैं गई तो क़ब्रिस्तान में कोई भी मौजूद न था, मैं ने सय्यिदुश्शुहदा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه के मज़ार के पास नमाज़ अदा कर के सलाम किया तो ज़मीन के नीचे से किसी ने मेरे सलाम का जवाब दिया, उसे मैं ने इतना वाज़ेह़ तौर पर पहचाना जैसे मैं दिन व रात को पहचानती हूं बल्कि जैसे मैं येह जानती हूं कि मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पैदा किया है उस वक़्त मेरे रोंगटे खड़े हो गए।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू फ़रवह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रिवायत करते हैं कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शुहदाए उह़ुद के मज़ारात की ज़ियारत के लिये तशरीफ़ ले गए तो बारगाहे इलाही में यूं गोया हुवे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरा बन्दा और तेरा नबी गवाही देता है कि येह शुहदा हैं, बेशक क़ियामत तक जो भी इन की ज़ियारत और इन्हें सलाम करेगा येह उसे जवाब देंगे।(4)

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، ۲۷/۳۹۵، رقم: ۳۲۴۶: عبد اللہ بن الحسن بن عبد الرحمن ابو القاسم البزاز

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، من ھتف من المقبرۃ بموعظۃ، ۶/۲۰، حدیث: ۲۳

3 ...دلائل النبوۃ للبیھقی، باب قول اللہ عزوجل: ولاتحسبن... الخ، ۳/۳۰۸

4 ...دلائل النبوۃ للبیھقی، باب قول اللہ عزوجل: ولاتحسبن... الخ، ۳/۳۰۷، عن ابی فروۃ

इस ह़दीस के एक रावी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त्ताफ़ बिन ख़ालिद मख़ज़ूमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَلِی फ़रमाते हैं : मेरी ख़ाला ने मुझे बताया कि मैं शुहदा के मज़ारात की ज़ियारत को ह़ाज़िर हुई तो उस वक़्त मेरे साथ सुवारी की ह़िफ़ाज़त के लिये दो लड़के थे, मैं ने शुहदा को सलाम किया तो मुझे सलाम के जवाब की आवाज़ आई और शुहदा ने फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! जैसे हम एक दूसरे को पहचानते हैं वैसे ही तुम आने वालों को भी पहचानते हैं। येह सुन कर मेरे रोंगटे खड़े हो गए, मैं ने अपना ख़च्चर क़रीब करवाया और फ़ौरन सुवार हो गई।(1)

मज़ारात पर ह़ाज़िरी का जवाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम वाक़िदी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡقَوِی बयान करते हैं : हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर साल शुहदाए उहुद की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते और जब घाटी पर पहुंचते तो बा आवाज़े बुलन्द फ़रमाते : سَلٰمٌ عَلَيۡكُمۡ بِمَا صَبَرۡتُمۡ فَنِعۡمَ عُقۡبَى الدَّارِ या'नी सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या ख़ूब मिला ! फिर ख़लीफ़तुर्रसूल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ भी हर साल ऐसा ही करते फिर अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا का भी हर साल येही मा'मूल रहा, यूंही ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا इन मज़ारात पर ह़ाज़िर हो कर दुआ़ किया करती थीं और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ह़ाज़िर हो कर सलाम करते और फिर अपने रुफ़क़ा की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाते : क्या तुम ऐसे लोगों को सलाम नहीं करोगे जो तुम्हारे सलाम का जवाब देते हैं ?(2)

नीज़ ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ख़ुज़ाइय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهَا फ़रमाती हैं : मैं ग़ुरूबे आफ़्ताब के वक़्त अपनी बहन के साथ क़ब्रिस्तान में थी, मैं ने उस से कहा : चलो ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ के मज़ार पर ह़ाज़िर हो कर सलाम करती हैं। उस ने कहा : ठीक है चलो। चुनान्चे, हम ने उन की क़ब्र पर पहुंच कर यूं सलाम अ़र्ज़ किया : اَلسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا عَمَّ رَسُوۡلِ اللّٰه या'नी ऐ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चचा ! आप पर सलाम हो। तो हम ने इन अल्फ़ाज़ के साथ सलाम का जवाब सुना : وَعَلَيۡكُمُ السَّلَامُ وَرَحۡمَةُ اللّٰه । ह़ालांकि उस वक़्त हमारे क़रीब कोई भी नहीं था।(3)

---

1 ...دلائل النبوة للبیھقی، باب قول اللہ عزوجل: ولا تحسبن...الخ، ۳/۳۰۷

2 ...دلائل النبوة للبیھقی، باب قول اللہ عزوجل: ولا تحسبن...الخ، ۳/۳۰۸

3 ...دلائل النبوة للبیھقی، باب قول اللہ عزوجل: ولا تحسبن...الخ، ۳/۳۰۹

हज़रते सय्यिदुना हाशिम बिन मुहम्मद उमरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मदीनए मुनव्वरा में मेरे वालिदे गिरामी बरोज़ जुमुआ फ़ज्र के वक़्त मुझे अपने साथ शुहदाए किराम के मज़ारात की हाज़िरी के लिये ले गए, मैं उन के पीछे पीछे चल रहा था, जब हम क़ब्रिस्तान पहुंचे तो वालिदे मोहतरम ने बुलन्द आवाज़ से कहा : سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ या'नी सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला तो पिछला घर क्या खूब मिला। जवाब दिया गया : وَعَلَيْكَ السَّلَامُ يَا اَبَا عَبْدِ اللّٰه या'नी ऐ अबू अब्दुल्लाह ! तुम पर भी सलाम हो। वालिदे गिरामी मेरी तरफ़ मुड़े और पूछा : बेटा ! क्या जवाब तुम ने दिया है ? मैं ने अर्ज़ की : नहीं। आप ने मेरा हाथ पकड़ कर अपने साथ दाईं जानिब खड़ा किया और शुहदा को दोबारा सलाम किया तो दोबारा जवाब पाया, तीसरी मरतबा भी ऐसा ही हुवा तो वालिदे मोहतरम सजदए शुक्र बजा लाए।(1)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हम जिहाद में शरीक हुवे जब वापस पलटे तो एक मुजाहिद कम था, हम ने उसे तलाश किया तो वोह दरख़्तों के झुन्ड में मक़्तूल पड़ा नज़र आया और उस के सर पर कुछ दोशीज़ाएं खड़ी दफ़ बजा रही थीं, जब उन्हों ने हमें देखा तो ऐसी ग़ाइब हुईं कि फिर नज़र न आईं।(2)

क़ब्रे अन्वर से अज़ान व इक़ामत की आवाज़

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه वाक़िअए हुर्रह(3) के दिनों में मस्जिदे नबवी शरीफ़ के अन्दर ही रहे जब कि लोग क़िताल में मसरूफ़ थे। फ़रमाते हैं : जब भी नमाज़ का वक़्त होता मैं प्यारे आक़ा, दो आलम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर से अज़ान की आवाज़ सुनता था।(4)

1...دلائل النبوة للبيهقي، باب قول الله عزوجل: ولا تحسبن... الخ، ۳/۳۰۹

2...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب من عاش بعد الموت، ۶/۲۹۲، حديث: ۴۰

3.....वाक़िअए हुर्रह यज़ीद मर्दूद के ज़माने में बा'दे वाक़िअए करबला हुवा कि यज़ीद ने मुस्लिम इब्ने उक़्बा की सरकर्दगी में एक लश्करे जर्रार से मदीनए मुनव्वरा पर हम्ला कर दिया, तीन दिन या पांच दिन मदीनए पाक में क़त्ले आम कराया, मस्जिदे नबवी शरीफ़ में कई दिन अज़ान न हो सकी, मदीनए मुनव्वरा की गली कूचों में हज़राते सहाबा व ताबेईन (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का खून पानी की तरह बहा। यहां से फिर इस लश्कर ने मक्कए मुअज़्ज़मा का रुख़ किया अभी येह लश्कर रास्ते में था कि मुस्लिम इब्ने उक़्बा हलाक हुवा इस के बा'द यज़ीद जहन्नम रसीद हुवा। (मिरआतुल मनाजीह, 7 / 209)

4...طبقات ابن سعد، ۵/۱۰۰، رقم: ۶۸۳: سعيد بن المسيب

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : वाक़िअ़ए हुर्रह के दिनों में तीन रोज़ तक मस्जिदे नबवी शरीफ़ में अज़ान न हो सकी, लोग तो लड़ाई के लिये निकल गए और हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मस्जिद शरीफ़ में ही रुक गए, आप फ़रमाते हैं : मुझे घबराहट हुई तो मैं रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर के क़रीब हो गया फिर जब ज़ोहर का वक़्त हुवा तो रौज़ए अन्वर से अज़ान की आवाज़ सुनी, मैं ने दो रक्अ़तें अदा कीं फिर मुझे इक़ामत की आवाज़ सुनाई दी तो मैं ने ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी और बैठा रहा यहां तक कि अ़स्र की नमाज़ अदा की, मैं ने क़ब्रे मुबारक से अज़ान और फिर इक़ामत की आवाज़ सुनी थी, यूंही तीन दिन तक मुसलसल मैं हर नमाज़ के वक़्त क़ब्रे अन्वर से अज़ान व इक़ामत की आवाज़ सुनता रहा, तीन दिन बा'द लोग मस्जिद में वापस आए और मुअज़्ज़िनों ने अज़ानें दीं तो मैं ने क़ब्रे मुबारक से अज़ान सुनना चाही मगर आवाज़ न आई।(1)

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं अय्यामे हुर्रह में मस्जिदे नबवी शरीफ़ में था और मेरे इलावा वहां कोई न था, जब भी नमाज़ का वक़्त होता मैं मज़ारे अक़्दस से अज़ान की आवाज़ सुनता फिर मैं आगे बढ़ता और इक़ामत कह कर नमाज़ पढ़ता और यज़ीदी फ़ौजी गुरौह दर गुरौह मस्जिद में दाख़िल होते और कहते : इस पागल बूढ़े को तो देखो।(2)

क़ब्र से अज़ान का जवाब

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मईन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن फ़रमाते हैं : एक गोरकन ने मुझे बताया कि मैं ने इन क़ब्रों में से जो सब से अ़जीब चीज़ देखी वोह येह थी कि मैं ने एक क़ब्र से कराहने की आवाज़ सुनी जैसे मरीज़ कराहता है और एक क़ब्र ऐसी देखी कि जब मुअज़्ज़िन अज़ान देता तो क़ब्र वाला क़ब्र से अज़ान का जवाब देता।(3)

हज़रते सय्यिदुना हारिस मुहासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं क़ब्रिस्तान में था, एक क़ब्र से मैं ने दो मरतबा येह आवाज़ सुनी : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से पनाह।(4)

---

1 ...شفاء الغرام باخبار البلد الحرام، الباب السادس عشر فی ذکر فضل زیارۃ النبی، ۲/۳۶۳

2 ...دلائل النبوۃ لابی نعیم، الفصل الثامن والعشرون، جزء ۲، ص ۳۳۷، رقم: ۵۱۰

3 ...شرح اصول اعتقاد اھل سنۃ، باب الشفاعۃ لاھل الکبائر، ۲/۹۷۳، رقم: ۲۱۵۳

4 ...شرح اصول اعتقاد اھل سنۃ، باب الشفاعۃ لاھل الکبائر، ۲/۹۷۴، رقم: ۲۱۵۵

सरे अन्वर की करामत

हज़रते सय्यिदुना मिन्हाल बिन अ़म्र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : खुदा की क़सम ! मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का सरे मुबारक देखा जब उसे उठा कर ले जाया जा रहा था उस वक़्त मैं दिमश्क़ में था, एक शख़्स आगे आगे सूरए कह्फ़ की तिलावत कर रहा था, जब वोह इस आयते मुबारका पर पहुंचा :

اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ﴿۹﴾ (پ۱۵، الکهف:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या तुम्हें मा'लूम हुवा कि पहाड़ की खोह और जंगल के किनारे वाले हमारी एक अ़जीब निशानी थे ।*

तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सरे मुबारक को कुव्वते गोयाई अ़ता फ़रमाई तो उस से येह आवाज़ आई : मेरा शहीद होना और उठाया जाना अस्ह़ाबे कह्फ़ से ज़ियादा अ़जीब है ।(1)

इमामुल ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन नस्र खुज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़लीफ़ए वासिक़ बिल्लाह ने मजबूर किया कि आप कुरआने पाक को मख़्लूक़ कहें मगर आप ने इन्कार कर दिया, ख़लीफ़ा ने आप की गर्दन उड़ा दी और आप का सर बग़दाद में लटका कर एक शख़्स को मुक़र्रर कर दिया कि वोह नेज़े के साथ आप के सर को क़िब्ले से फेरता रहे । उस शख़्स का बयान है : मैं ने रात के वक़्त देखा कि सर घूम कर चेहरा क़िब्ले की त़रफ़ हो जाता और रवानी के साथ सूरए यासीन की तिलावत करता ।(2)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन इस्माईल बिन ख़लफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन नस्र खुज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه मेरे दोस्त थे, जब उन्हें सख़्त आज़माइश में डाले जाने के बा'द सूली दी गई तो मुझे ख़बर मिली कि उन का सर तिलावते कुरआन कर रहा है । चुनान्चे, मैं ने सर के पास रात गुज़ारने का फ़ैसला किया, जब लोग सो गए तो मैं ने सर को येह आयते मुबारका पढ़ते सुना :

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿۲﴾ (پ۲۰، العنکبوت:۱، ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उन की आज़माइश न होगी ।*

येह देख कर मेरे रोंगटे खड़े हो गए ।(3)

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، ۶۰/۳۸۰، رقم:۷۶۸۸: منهال بن عمرو

2 ...تاریخ بغداد، ۵/۳۸۶تا۳۸۷، رقم:۲۹۳۹: احمد بن نصر بن مالک

3 ...تاریخ بغداد، ۵/۳۸۷، رقم:۲۹۳۹: احمد بن نصر بن مالک

मुझे दो जन्नतें अ़ता की गईं

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन अबू अय्यूब खुज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक शख़्स से सुना कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के ज़माने में एक आ़बिद नौजवान था जो हमा वक़्त मस्जिद शरीफ़ में रहता था, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه उसे बहुत पसन्द करते थे, उस नौजवान का बाप बूढ़ा था, नमाज़े इ़शा पढ़ कर वोह अपने बाप के पास चला जाता। मस्जिद और उस के घर के दरमियान एक औ़रत रहती थी, वोह उस नौजवान पर फ़रेफ़्ता हो गई और रोज़ाना उस के रास्ते में रुकावट बन कर खड़ी होने लगी यहां तक कि एक रात उस नौजवान को अपने दरवाज़े तक ले गई जब वोह अन्दर दाख़िल होने लगा तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद आई और ज़बान पर बे साख़्ता येह आयते मुबारका जारी हो गई :

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۚ﴿۲۰۱﴾

(پ۹، الاعراف:۲۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी ख़याल की ठेस लगती है होशयार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।*

वोह ग़श खा कर गिर पड़ा, उस औ़रत ने अपनी बांदी को बुलाया और दोनों ने नौजवान को घसीटते हुवे उस के बाप के दरवाज़े पर ले जा कर डाल दिया, बाप ताख़ीर महसूस करते हुवे जब बेटे को तलाश करने निकला तो देखा कि वोह दरवाज़े पर बेहोश पड़ा है, उस ने घर के दीगर अफ़राद को बुलाया और उसे उठा कर अन्दर ले गए, जब रात गए नौजवान को होश आया तो बाप ने पूछा : बेटा क्या हुवा ? नौजवान बोला : अब ख़ैरिय्यत है। बाप ने ख़ुदा का वासित़ा दे कर ह़क़ीक़ते ह़ाल दरयाफ़्त की तो नौजवान ने सारा मुआ़मला अ़र्ज़ कर दिया। बाप ने पूछा : बेटा ! तुम ने कौन सी आयत पढ़ी थी ? उस ने दोबारा वोही आयत तिलावत की तो फिर बेहोश हो गया, जब उसे हिला कर देखा तो रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। चुनान्चे, उसे ग़ुस्ल दे कर रात ही को दफ़्न कर दिया गया, सुब्ह़ को येह बात अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه तक पहुंची तो आप उस के वालिद के पास ता'ज़ियत के लिये तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : आप ने मुझे बताया क्यूं नहीं ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : अमीरुल मोमिनीन ! रात के वक़्त आप

को तक्लीफ़ देना गवारा नहीं समझा। आप ने फ़रमाया : मुझे उस की क़ब्र पर ले चलो। चुनान्चे, आप चन्द अफ़राद के साथ उस की क़ब्र पर पहुंचे और फ़रमाया : ऐ फ़ुलां وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ या'नी जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं। उस नौजवान ने क़ब्र के अन्दर से कहा : या उ़मर ! बेशक मुझे मेरे रब ने वोह दो जन्नतें दो मरतबा अ़ता फ़रमाई हैं।(1)

हम जानते हैं मगर अ़मल नहीं कर सकते

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मीनाअ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं एक दिन क़ब्रिस्तान गया और मुख़्तसर सी दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ कर एक क़ब्र के क़रीब लेट गया, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं अच्छी त़रह़ जाग रहा था कि क़ब्र से येह आवाज़ सुनी : उठो ! तुम ने मुझे तक्लीफ़ पहुंचाई है, तुम लोग अ़मल करते हो लेकिन जानते नहीं जब कि हम जानते हैं मगर अ़मल नहीं कर सकते, ब ख़ुदा ! मुझे तुम्हारी त़रह़ येह दो रक्अ़तें पढ़ना दुन्या व माफ़ीहा से ज़ियादा पसन्द है।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन वाक़िद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन मैसरह رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक दिन जुमुआ़ की सुब्ह़ दिमश्क़ के क़ब्रिस्तान से गुज़र रहे थे कि किसी को येह कहते सुना : येह यूनुस बिन ह़ल्बिस हैं जो सुब्ह़ सवेरे आए हैं, लोग ह़ज करते हैं, हर महीने उ़मरह करते हैं और रोज़ाना पांच नमाज़ें पढ़ते हैं, लोगो ! तुम अ़मल करते हो लेकिन जानते नहीं जब कि हम जानते हैं मगर अ़मल नहीं कर सकते। हज़रते सय्यिदुना यूनुस رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आवाज़ की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर सलाम किया : लेकिन किसी ने जवाब न दिया तो आप ने कहा : سُبْحَانَ اللہ मैं ने तुम्हारी बातें सुन ली हैं अब मैं सलाम करता हूं तो तुम जवाब नहीं देते। क़ब्र वालों ने कहा : हम ने आप का सलाम सुना है मगर जवाब एक नेकी है जब कि हमारे और नेकियों और बदियों के दरमियान आड़ कर दी गई है।(3)

महीने में चार ह़ज

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना मैसरह बिन

1...تاریخ ابن عساکر، ۴۵/۴۵۰، رقم: ۵۳۲۰: عمرو بن جامع بن عمرو

2...دلائل النبوۃ للبیھقی، باب ماجاء فی الرجل الذی سمع صاحب القبر...الخ، ۷/۴۰

3...حلیۃ الاولیاء، یونس بن میسرۃ، ۵/۲۸۵، رقم: ۷۱۳۸

ह़ल्बिस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ नाबीना थे एक मरतबा एक शख़्स की रहनुमाई में बाबे तूमा के क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो कहा : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ اَھْلَ الْقُبُوْرِ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَنَحْنُ لَکُمْ تَبَعٌ فَرَحِمَنَا اللّٰہُ وَاِیَّاکُمْ وَغَفَرَ لَنَا وَلَکُمْ فَکَاَنَّا وَقَدْ صِرْنَا اِلٰی مَا صِرْتُمْ اِلَیْہ या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, तुम हम से पहले चले गए और हम भी तुम्हारे पीछे आने वाले हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर और तुम पर रह़म फ़रमाए बस अब हम भी वहीं पहुंचने वाले हैं जहां तुम पहुंच चुके। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक मुर्दे की रूह़ लौटा दी तो उस ने जवाब दिया : ऐ दुन्या वालो ! तुम्हें ख़ुश ख़बरी हो कि तुम महीने में चार ह़ज करते हो। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ पर रह़म फ़रमाए ! चार कहां से हो गए ? उस ने कहा : नमाज़े जुमुआ़ अदा करने से, क्या तुम नहीं जानते कि नमाज़े जुमुआ़ एक मक़्बूल ह़ज है। आप ने पूछा : तुम ने अपने आ'माल में किस अ़मल को बेहतर पाया ? मुर्दे ने कहा : इस्तिग़्फ़ार को लेकिन अब दरवाज़ा बन्द हो चुका पस अब कोई नेकी बढ़ सकती है न कोई गुनाह कम हो सकता है।(1)

शुहदा से मुलाक़ात

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मैर बिन ह़ुबाब सुलमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : ख़िलाफ़ते बनू उमय्या में मुझे और मेरे आठ दोस्तों को रूमियों ने क़ैद कर के बादशाहे रूम के दरबार में पेश किया तो उस ने सब की गर्दन मारने का हुक्म जारी कर दिया। चुनान्चे, मेरे आठों दोस्त शहीद कर दिये गए, जब मुझे क़त्ल करने के लिये आगे बढ़ाया गया तो रूमी फ़ौज का एक सरदार उठा और बादशाह के सर और पाउं को चूमते हुवे मेरे लिये मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त की ह़त्ता कि बादशाह ने मुझे उस के ह़वाले कर दिया, वोह मुझे अपने घर ले गया और अपनी बहुत ही ख़ूब सूरत लड़की को मेरे सामने करते हुवे कहने लगा : येह मेरी बेटी है, मैं तुम्हारी शादी इस से करवा दूंगा और अपना मालो दौलत भी तुम पर निछावर कर दूंगा, तुम ने बादशाह के दरबार में मेरा मक़ाम भी देख लिया है बस शर्त़ येह है कि तुम मेरे दीन में दाख़िल हो जाओ। मैं ने कहा : मैं बीवी के ह़ुसूल और दुन्या के लिये अपना दीन नहीं छोड़ूंगा। वोह चन्द दिन तक मुझे येह पेशकश करता रहा बिल आख़िर एक रात उस की लड़की ने मुझे बाग़ में बुलाया और पूछा : तुम्हें मेरे बाप की पेशकश क़ुबूल करने से क्या बात रोक रही है ? मैं ने कहा : मैं औ़रत तो क्या किसी भी चीज़ की ख़ात़िर अपना दीन नहीं छोड़ूंगा। उस ने

1...تاریخ ابن عساکر، ۳۵/۳۰۸، رقم: ۳۹۱۳: عبد الرحمٰن بن عیسی ابو محمد

पूछा : हमारे साथ रहना चाहोगे या अपने मुल्क जाना चाहोगे ? मैं ने कहा : अपने मुल्क। उस ने मुझे आस्मान में एक सितारा दिखाते हुवे कहा : रात इस के निशान पर चलते रहो और दिन में छुपते रहो यूं तुम अपने मुल्क पहुंच जाओगे। फिर उस ने मुझे कुछ माल दिया और चली गई, मैं दिन को छुपता रात को चलता तीन दिन सफ़र करता रहा, चौथे दिन एक जगह ठहरा तो घोड़ों के टापों की आवाज़ें आना शुरूअ़ हो गईं, मैं समझा अब मैं पकड़ा गया, देखा तो वोह मेरे शहीद दोस्त थे और उन के साथ सफ़ेद घोड़ों पर कुछ और लोग भी थे, उन्हों ने मेरे पास आ कर कहा : क्या तुम उ़मैर हो ? मैं ने कहा : हां मैं उ़मैर ही हूं, लेकिन तुम लोग तो क़त्ल कर दिये गए थे ? उन्हों ने कहा : हां तुम ठीक कह रहे हो मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तमाम शुहदा को ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز के जनाज़े में शिर्कत के लिये भेजा है, उन में से एक ने कहा : उ़मैर ! मेरा हाथ पकड़ लो। मैं ने दोनों हाथ उस के हाथ में दिये तो उस ने मुझे अपने पीछे सुवार कर लिया फिर हम थोड़ा ही चले थे कि उस ने मुझे मेरे घर के क़रीब जज़ीरे पर गिरा दिया और मुझे कोई तक्लीफ़ भी न पहुंची।(1)

अल मदद या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली ज़रीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं : मुल्के शाम के रहने वाले तीन बहादुर भाई थे जो जिहाद किया करते थे, एक मरतबा रूमियों ने उन्हें क़ैद कर लिया, बादशाहे रूम ने कहा : अगर तुम नसरानी हो जाओ तो मैं अपनी बेटियों से तुम्हारी शादी कर दूंगा और तुम में से एक को बादशाहत दे दूंगा। उन्हों ने उस की बात मानने से इन्कार कर दिया और यूं पुकारा : يَا مُحَمَّدَاهُ (या'नी या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमारी मदद कीजिये)। बादशाह ने तेल से भरी तीन देगें रखवा कर उन के नीचे आग जलवाई, फिर वोह तीन दिन तक उन भाइयों को खोलती देगों के पास बुलवा कर नसरानी होने की दा'वत देता रहा लेकिन वोह इन्कारी ही रहे, बिल आख़िर बादशाह ने पहले सब से बड़े भाई को और फिर उस से छोटे को देगों में डलवा कर शहीद कर दिया और तीसरे को अपना दीन अपनाने पर हर त़रह से मजबूर करने लगा। एक सरदार बोला : बादशाह सलामत ! मैं इसे इस के दीन से फेर सकता हूं। बादशाह ने पूछा : वोह कैसे ? बोला ! जहां तक मैं जानता हूं अ़रब लोग औ़रतों के दिलदादह होते हैं और पूरे रूम में मेरी बेटी से बढ़ कर कोई ख़ूब

---

(1)...تاریخ ابن عساکر، ۳۶/۲۲۸، رقم: ۴۰۶۸: عبد الصمد بن اسماعیل بن علی السلمی

सूरत नहीं लिहाज़ा आप इसे मेरे ह़वाले कर दें ताकि मैं इसे अपनी बेटी के साथ तन्हा छोड़ दूं, वोह इसे बहका देगी। बादशाह ने 40 दिन के लिये उस शामी नौजवान को सरदार के ह़वाले कर दिया, वोह उसे अपने घर ले आया और अपनी बेटी को सारा मुआ़मला समझा दिया। बेटी ने कहा : अब आप जाएं आगे का काम मेरा है। वोह शामी नौजवान उस लड़की के साथ मुक़ीम हो गया मगर उस का दिन रोज़े में और रात नमाज़ पढ़ते हुवे गुज़रती, यूं मुक़र्ररा मुद्दत में से अक्सर दिन गुज़र गए। एक दिन सरदार ने बेटी से पूछा : अभी तक तू ने क्या किया ? बेटी बोली : मैं कुछ नहीं कर सकी क्यूंकि मेरे ख़याल में इसे इस शहर में अपने भाइयों की मौत ने ग़मगीन कर रखा है, आप बादशाह से कुछ और मोहलत ले कर मुझे और इसे किसी और शहर भेज दें। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा और उन्हें एक दूसरी बस्ती में भेज दिया गया वोह शामी जवान वहां भी रात नमाज़ में और दिन रोज़े में गुज़ारता रहा ह़त्ता कि जब मुक़र्ररा मुद्दत ख़त्म होने में चन्द दिन रह गए तो एक रात वोह लड़की बोली : मैं तुम्हें एक अ़ज़ीम रब की इ़बादत करते हुवे देखती रही लिहाज़ा अब मैं अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर तुम्हारे दीन में दाख़िल होती हूं। नौजवान ने कहा : यहां से भागेंगे कैसे ? वोह बोली : मैं कोई तदबीर करती हूं। चुनान्चे, उस ने एक सुवारी मंगवाई और दोनों उस पर सुवार हो कर चल पड़े, रात को सफ़र करते और दिन को छुप जाते, सफ़र यूं ही जारी था कि एक रात उन्हों ने घोड़ों के टापों की आवाज़ सुनी, जब घुड़ सुवार क़रीब हुवे तो देखा कि वोह उस नौजवान के भाई थे और उन के साथ फ़िरिश्ते भी थे। उस ने भाइयों को सलाम किया और उन से उन का ह़ाल पूछा तो उन्हों ने कहा : बस वोही एक ग़ोते की तक्लीफ़ थी जो तुम ने देखी थी उस के फ़ौरी बा'द हम जन्नतुल फ़िरदौस में जा पहुंचे, हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस लिये भेजा है ताकि इस लड़की के साथ तुम्हारे निकाह़ के गवाह बनें। चुनान्चे, उन्हों ने दोनों की शादी करवाई और वापस चले गए। वोह नौजवान अपनी बीवी को मुल्के शाम ले आया और दोनों वहीं रहने लगे। इन दोनों का येह वाक़िआ़ मुल्के शाम में मशहूर हो गया और एक शाइ़र ने इन के बारे में कुछ अश्आ़र भी कहे जिन में से एक येह भी था :

سَيُعْطَى الصَّادِقِيْنَ بِفَضْلِ صِدْقٍ نَجَاةٌ فِي الْحَيَاةِ وَفِي الْمَمَات

तर्जमा : सच्चों को अ़न क़रीब इन के सच के बदले ज़िन्दगी और मौत में कामयाबी दी जाएगी।[1]

---

1 ...عیون الحکایات لابن الجوزی، الحکایة التسعون بعد المائة: حکایة الاخوة الثلاثة مع ملک الروم، ص۱۹۷، عن یزیدی

हज़रते सय्यिदुना मुआविया बिन यहूया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : हिम्स शहर का एक शैख़ इस ख़याल से मस्जिद की तरफ़ चला कि सुब्ह़ हो गई है लेकिन अभी रात बाक़ी थी, जब वोह कुब्बे के नीचे पहुंचा तो उसे घोड़ों के घुंघरूओं की आवाज़ें आईं, अब जो उस ने देखा तो कुछ सुवार आपस में मुलाक़ात कर रहे थे और एक गुरौह दूसरे से पूछ रहा था : आप कहां से आए हैं ? दूसरे गुरौह ने कहा : क्या आप लोग हमारे साथ नहीं थे ? उन्हों ने कहा : नहीं। फिर दूसरे गुरौह ने बताया कि हम तो हज़रते ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के जनाज़े में शिर्कत कर के आ रहे हैं। पहले वालों ने पूछा : क्या उन का विसाल हो गया ? हमें तो ख़बर ही नहीं हुई। सुब्ह़ को उस शैख़ ने येह बात अपने साथियों को बता दी और जब दोपहर का वक़्त हुवा तो एक क़ासिद ने आ कर ख़बर दी कि हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان विसाल फ़रमा चुके हैं।(1)

हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه एक क़ब्र के पास बैठे थे कि एक जनाज़ा आया तो आप ने उस क़ब्र से ग़मगीन आवाज़ में येह शे'र सुना :

اَنْعَمَ اللّٰهُ بِالظَّعِيْنَةِ عَيْنًا وَّ بِمَسْرَاكِ يَاأَمِيْنَ اِلَيْنَا

جَزْعًا مَّاجَزَعْتِ مِنْ ظُلْمَةِ الْقَبْرِ وَ اِنْ مَّسَّكِ التُّرَابُ اَمِيْنَا

तर्जमा : ऐ अमीना ! रात के वक़्त तेरे पाल्की में सुवार हो कर हमारे पास आने से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी आंखों को ठन्डक अ़ता फ़रमाए। तू क़ब्र के अन्धेरे से ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा मत हो अगर्चे तुझ पर मिट्टी बराबर कर दी जाए।

आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने जब लोगों को इस की इत्तिलाअ़ दी तो वोह रोने लगे ह़त्ता कि आंसूओं से दाढ़ियां भीग गईं, फिर कहने लगे : क्या आप जानते हैं येह अमीना कौन है ? आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने कहा : नहीं। लोगों ने बताया कि जिस का जनाज़ा आ रहा है अमीना येही है और येह क़ब्र वाली उस की हमशीरा है जिस का इन्तिक़ाल एक साल पहले हो गया था। हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन उमय्या رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं समझता था कि मय्यित बोलती नहीं है तो फिर येह आवाज़ कहां से आई ?(2)

1...تاریخ ابن عساکر، ۱۶/۲۰۱، رقم: ۱۹۱۶: خالد بن معدان بن ابی کرب

2...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، من هتف من المقبرة بموعظة، ۶/۵۹، حدیث: ۲۰

रक़्सो सुरूद की महफ़िल और ख़ौफ़नाक आवाज़

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन हाशिम सुलमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : बस्ती के एक शख़्स ने अपनी बेटी की शादी के मौक़अ़ पर अपने घर में रक़्सो सुरूद की महफ़िल बरपा की, उस घर के साथ ही क़ब्रिस्तान था, रात को जब येह महफ़िल अपने जोबन पर थी तो अचानक लोगों ने क़ब्रिस्तान से एक ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनी जिस से उन के दिल दहल गए और वोह ऐसे ख़ामोश हो गए गोया उन्हें सांप सूंघ गया हो, फिर क़ब्रिस्तान से किसी ने येह अश्आ़र पढ़े :

يَااَهْلَ لَذَّةِ لَهْوٍ لَاتَدُوْمُ لَهُمْ ۝ اِنَّ الْمَنَايَا تُبِيْدُ اللَّهْوَ وَاللَّعِبَا

كَمْ قَدْ رَاَيْنَاهُ مَسْرُوْرًا بِلَذَّتِهِ ۝ اَمْسٰى فَرِيْدًا مِّنَ الْاَهْلِيْنَ مُغْتَرِبَا

तर्जमा : ऐ लह्वो ला'ब की नापाएदार लज़्ज़तों में मुन्हमिक लोगो ! बेशक मौत लह्वो ला'ब को ख़त्म कर देती है, कितने ही ऐसे थे जिन्हें हम ने इस लज़्ज़त में मस्त देखा मगर वोह अपने हमराहियों से जुदा हो कर दुन्या छोड़ गए।

ख़ुदा की क़सम ! अभी चन्द ही दिन गुज़रे थे कि दुल्हे का इन्तिक़ाल हो गया।(1)

हज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मैं एक दिन सख़्त गर्मी में क़ब्रिस्तान गया तो सूनी सूनी क़ब्रों को देख कर कहा : سُبْحٰنَ الله तुम्हारी रूहों और तुम्हारे जिस्मों को जुदा होने के बा'द, जम्अ़ करने और गल सड़ जाने के बा'द तुम्हें ज़िन्दा करने वाला कोई तो है। इतने में एक गढ़े से आवाज़ आई : ऐ सालेह़ ! उस की निशानियों में से है कि उस के हुक्म से आस्मान और ज़मीन क़ाइम हैं फिर जब तुम्हें ज़मीन से एक निदा फ़रमाएगा जभी तुम निकल पड़ोगे। येह सुन कर मारे दहशत के मैं मुंह के बल गिर पड़ा।(2)

ग़ैबी आवाज़

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى क़ब्रिस्तान में बैठे ख़ुद कलामी में मसरूफ़ थे कि एक ग़ैबी आवाज़ आई : ऐ साबित ! तुम इन मुर्दों को ख़ामोश देखते हो मगर इन में बहुत से परेशान हैं। फ़रमाते हैं : मैं ने इधर उधर देखा मगर कोई नज़र नहीं आया।(3)

---

(1)... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب القبور، من هتف من المقبرة بموعظة، ٦/٥٧، حديث: ١٢

(2)... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب القبور، من هتف من المقبرة بموعظة، ٦/٥٧، حديث: ١٣

(3)... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب القبور، من هتف من المقبرة بموعظة، ٦/٥٨، حديث: ١٤

موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب القبور، جامع ذكر القبور، ٦/٧٨، حديث: ١٠٧

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़ता अज़्रक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : जब तुम क़ब्रिस्तान जाओ तो तुम्हारा दिल भी उन लोगों जैसा होना चाहिये जिन के दरमियान तुम हो। एक मरतबा मैं क़ब्रिस्तान गया और अपने बारे में सोच रहा था कि एक ग़ैबी आवाज़ आई : ऐ ग़ाफ़िल ! तू उन लोगों के दरमियान है जो या तो अपनी ने'मतों में मज़े कर रहे हैं या फिर अ़ज़ाब की सख़्तियों में पलटे खा रहे हैं।(1)

नसीहतों पर मुश्तमिल अश्आर

हज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब हम्दानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मेरे पड़ोस में दो भाई रहते थे और दोनों आपस में बे मिसाल महब्बत करते थे, बड़ा भाई अस्फ़हान गया तो छोटे का इन्तिक़ाल हो गया, जब बड़ा वापस आया तो सात माह तक मुसलसल भाई की क़ब्र पर जाता रहा। एक दिन वोह क़ब्र पर गया तो अपने पीछे से एक ग़ैबी आवाज़ सुनी :

يَاأَيُّهَا الْبَاكِيْ عَلٰى غَيْرِهٖ   نَفْسُكَ اَصْلِحْهَا وَلَا تَبْكِهٖ
اِنَّ الَّذِیْ تَبْكِیْ عَلٰى اَثْرِهٖ   يُوْشِكُ اَنْ تُسْلَكَ فِیْ سِلْكِهٖ

तर्जमा : ऐ दूसरे पर रोने वाले ! अपनी इस्लाह़ कर और इस पर न रो, जिस पर तू रोए जा रहा है अ़न क़रीब तू भी इस की लड़ी में पिरो दिया जाएगा।

उस ने इधर उधर देखा मगर कोई नज़र न आया तो उस पर कपकपी त़ारी हो गई और घर लौट आया, तीन दिन बा'द उस का भी इन्तिक़ाल हो गया और भाई के पहलू में दफ़्न कर दिया गया।(2)

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन शुरैह़ हैसमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मैं ने एक क़ब्र से येह आवाज़ सुनी :

اِنْ تَزُوْرُوا الْيَوْمَ اَمْثَالَنَا فَقَدْ   كُنَّا اَمْثَالَكُمْ وَكُنَّا فِی الْحَيَاةِ كَشَكْلِكُمْ
فَتِلْكَ الْبَيْدَاءُ تُسْفِیْ رِيَاحُهَا   وَنَحْنُ فِیْ مَقْصُوْرَةٍ لَّا نَنَالُكُمْ
فَمَنْ يَّكُ مِنَّا فَلَيْسَ بِرَاجِعٍ   فَتِلْكَ دِيَارُنَا وَهِیَ مَصِيْرُكُمْ

---

1 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، من هتف من المقبرة بموعظة، ۲/۵۸، حدیث: ۱۵
موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب الهواتف، باب هواتف القبور، ۲/۴۵۸، حدیث: ۴۶

2 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب الهواتف، باب هواتف القبور، ۲/۴۵۷، حدیث: ۴۳

तर्जमा : अगर आज तुम हम जैसों की ज़ियारत को आते हो तो कभी हम भी तुम्हारे जैसे थे और ज़िन्दगी में तुम्हारी जैसी शक्लो सूरत वाले थे, अब इस वीराने की हवाएं ख़ाक उड़ा रही हैं और हम एक कोठड़ी में हैं तुम तक नहीं पहुंच सकते पस जो हम में से हो जाता है वोह वापस नहीं आ सकता, अब येही हमारे घर हैं और तुम्हारे लौटने की जगहें।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन यसार ह़ज़रमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی रिवायत करते हैं कि कुछ लोगों ने क़ब्रिस्तान से गुज़रते हुवे एक क़ब्र से किसी को येह अश्आ़र कहते सुना

يَا اَيُّهَا الرَّكْبُ سِيْرُوْا   مِنْ قَبْلِ اَنْ لَّا تَسِيْرُوْا
فَهٰذِهِ الدَّارُ حَقًّا   فِيْهَا اِلَيْنَا الْمَصِيْرُ
كَمْ مُنْعَمٍ فِيْ نَعِيْمٍ   وَّتُسَلِّبَنَّهُ الدُّهُوْرُ
وَاٰخَرُ فِيْ عَذَابٍ   لَّبِئْسَ ذَاكَ الْمَصِيْرُ
فَكَمَا كُنْتُمْ كُنَّا فَغَيَّرَنَا رَيْبُ الْمَنُوْنِ   وَسَوْفَ كَمَا كُنَّا تَكُوْنُوْنَ

तर्जमा : ऐ सुवारो ! चलो इस से पहले कि तुम चल न सको, येह घर यक़ीनी है इस में तुम हमारे पास आओगे, ने'मतों में रहने वाले कितनों ही की ने'मतें ज़माने ने छीन लीं और कितने ही अ़ज़ाब में मुब्तला हो गए, बेशक अ़ज़ाब का ठिकाना बहुत बुरा है, कभी हम भी वैसे थे जैसे तुम हो पस ह़वादिसे ज़माना ने हमें बदल दिया, अ़न क़रीब तुम भी वैसे हो जाओगे जैसे हम हैं।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्बास वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : एक शख़्स अपने बेटे के साथ सफ़र पर निकला मगर रास्ते में इन्तिक़ाल कर गया, बेटे ने (सेब की त़रह़ सुर्ख़ फल वाले) दौम के एक दरख़्त के नीचे बाप को दफ़्न किया और सफ़र जारी रखा, वापसी पर रात के वक़्त जब उसी जगह से गुज़रा तो बाप की क़ब्र पर न रुका, उसे एक ग़ैबी आवाज़ आई :

---

1 ... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب القبور، من هتف من المقبرة بموعظة، ٢/٥٩، حديث: ١٨

2 ... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب القبور، من هتف من المقبرة بموعظة، ٢/٥٩، حديث: ١٩

رَاَيْتُكَ تَطْوِى الدَّوْمَ لَيْلًا وَلَاتَرٰى عَلَيْكَ بِاَهْلِ الدَّوْمِ اَنْ تَتَكَلَّمَا

وَبِالدَّوْمِ ثَاوٍ لَّوْ ثَوَيْتَ مَكَانَهٗ فَمُرَّ بِاَهْلِ الدَّوْمِ عَاجٍ فَسَلَّمَا

तर्जमा : मैं ने तुझे रात के वक़्त दौम के (दरख़्त के) पास से गुज़रते देखा लेकिन तू ने येह ज़रूरी न समझा कि दौम वाले से गुफ़्तगू कर ले। दौम के पास वोह शख़्स मुक़ीम है कि अगर तू उस की जगह होता तो वोह लौट के आता और तुझे सलाम करता।(1)

तख़्तए ग़ुस्ल पर भी तस्बीह़ का विर्द

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان हर रोज़ 40 हज़ार तस्बीह़ात पढ़ते थे और इस के इ़लावा तिलावते क़ुरआने मजीद भी करते थे। विसाल के बा'द जब उन्हें ग़ुस्ल के लिये तख़्ते पर रखा गया तो उन्हों ने अपनी उंगली को इस त़रह़ हिलाना शुरूअ़ कर दिया गोया तस्बीह़ पढ़ रहे हों।(2)

येह ज़िन्दा हैं या मुर्दा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह बिन जला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे गिरामी वफ़ात पा गए तो हम ने उन्हें ग़ुस्ल देने के लिये तख़्ते पर रखा और जब उन का चेहरा खोला तो वोह मुस्कुरा रहे थे, येह देख कर लोगों को शक हुवा कि शायद वोह ज़िन्दा हैं। चुनान्चे, कुछ लोग त़बीब को बुलाने चले गए और हम ने उन का चेहरा ढांप दिया, त़बीब ने आ कर नब्ज़ देखी तो कहा : ह़ज़रत वफ़ात पा चुके हैं। हम ने चेहरे से कपड़ा हटाया तो त़बीब ने भी देख लिया कि वोह मुस्कुरा रहे हैं, वोह ह़ैरान हो कर कहने लगा : ख़ुदा की क़सम ! मुझे नहीं मा'लूम येह ज़िन्दा हैं या मुर्दा। अल ग़रज़ जब भी कोई ग़ुस्ल देने के लिये आगे आता तो हैबत में मुब्तला हो कर पीछे हट जाता बिल आख़िर आ़रिफ़े कामिल ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन ह़ुसैन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आगे बढ़ कर ग़ुस्ल दिया फिर नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और दफ़्न कर दिया गया।(3)

बा'द अज़ विसाल गुफ़्तगू

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन

1... عیون الحکایات لابن الجوزی، الحکایۃ السادسۃ والاربعون بعد الثلاثمائۃ: من حکایات اہل القبور، ص ۳۰۹

2... حلیۃ الاولیاء، خالد بن معدان، ۵/۲۳۸، رقم: ۶۹۵۶

3... تاریخ ابن عساکر، ۶۷/۳۴، رقم: ۸۶۴۳: ابو العباس الوراق

ख़ारिजा अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का विसाल अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में हुवा, आप को कफ़न पहनाया गया तो आप के सीने से एक गूंज सुनी गई, फिर आप ने येह गुफ़्त्गू की : अह़मद, अह़मद, पहली किताब में लिखा है। अबू बक्र सिद्दीक़ ने सच फ़रमाया, वोह अपनी ज़ात में कमज़ोर हैं मगर ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर के मुआ़मले में क़वी हैं, येह भी पहली किताब में लिखा है। उ़मर बिन ख़त्ताब ने सच फ़रमाया, वोह भी पहली किताब में क़वी व अमीन लिखे गए हैं। उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान ने सच कहा, वोह अपने से पहले बुज़ुर्गों के नक़्शे क़दम पर चले, चार साल गुज़र गए और दो बाक़ी हैं, फ़ितने रूनुमा हो गए, क़वी ने ज़ईफ़ को खा लिया और क़ियामत बपा हो गई, तुम्हारे लश्कर से तुम्हारे पास अरीस और बिअरे अरीस के मुआ़मले की ख़बर आएगी। ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : फिर एक ख़त़्मी शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो उसे भी कफ़न दिया गया और उस के सीने से भी एक गूंज सुनी गई और फिर वोह कहने लगा : बनू ह़ारिसा बिन ख़ज़रज के हम क़ौम ने सच कहा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : इस रिवायत की अस्नाद सह़ीह़ हैं और इस पर दीगर दलाइल भी हैं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अबू ख़ालिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साह़िबज़ादे यज़ीद अपने वालिद का मक्तूब ले कर हमारे पास आए। मक्तूब कुछ इस त़रह़ था :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला

नो'मान बिन बशीर की जानिब से उम्मे अ़ब्दुल्लाह बिन्ते अबू हाशिम की त़रफ़, आप पर सलामती हो, मैं ख़ुदाए وحدہ لاشریک की ह़म्द करता हूं, आप ने मुझे लिखा कि मैं आप को ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ारिजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के मुतअ़ल्लिक़ बताऊं तो सुनिये ! उन्हें गले में दर्द हुवा जिस से वोह ज़ोहर व अ़स्र के माबैन इन्तिक़ाल फ़रमा गए, चुनान्चे, हम ने उन्हें लिटा कर ऊपर कपड़ा डाल दिया, मैं अ़स्र के बा'द तस्बीह़ में मश्ग़ूल था कि मुझे नींद आ गई और किसी ने ख़्वाब में आ कर कहा : ज़ैद वफ़ात के बा'द कलाम कर रहे हैं, मैं जल्दी से उठा और उन की चारपाई की त़रफ़ चल दिया वहां कुछ अन्सारी ह़ज़रात मौजूद थे और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ येह कलाम कर रहे थे : लोगों में सब से ज़ियादा पुख़्ता, अह़कामे इलाहिया में मलामत करने वाले की

(1)... دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ما جاء فی شہادۃ المیت لرسول اللہ ... الخ، ۶/۵۵تا۵۶

मलामत से बे परवा और ताक़तवर को कमज़ोर का माल खाने से रोकने वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हैं, इन्हों ने सच फ़रमाया इन के मुतअ़ल्लिक़ पहली किताबों में ऐसा ही था। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों की ख़त़ाओं से बहुत दर गुज़र फ़रमाते हैं, इन की दो रातें गुज़र गईं और चार बाक़ी हैं, फिर लोगों में इख़्तिलाफ़ हो गया और वोह एक दूसरे के दुश्मन बन गए, कोई निज़ाम बाक़ी न रहा और लोग ह़राम को ह़लाल समझने लगे, फिर मोमिनीन ने रोकते हुवे कहा : लोगो ! किताबुल्लाह को थामो और अपने अमीर की त़रफ़ बढ़ो, उस की सुनो और इत़ाअ़त करो। पस जो ना फ़रमानी करे वोह अपने ख़ून को मह़फ़ूज़ तसव्वुर न करे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का काम मुक़र्रर तक़्दीर है, اَللّٰہُ اَکْبَر ! येह जन्नत है और येह दोज़ख़ है और येह अम्बिया व सिद्दीक़ीन हैं, ऐ इब्ने रवाह़ा ! आप पर सलाम हो, क्या आप के पास ग़ज़्वए उह़ुद में शहीद होने वाले मेरे वालिद ख़ारिजा और सा'द के लिये कोई ख़ुशी की ख़बर है ? फिर येह आयात तिलावत कीं :

كَلَّآ ؕ اِنَّهَا لَظٰى ﴿ۙ۱۵﴾ نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ﴿ۚۖ۱۶﴾ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَ تَوَلّٰى ﴿ۙ۱۷﴾ وَ جَمَعَ فَاَوْعٰى ﴿۱۸﴾

(پ۲۹، المعارج: ۱۵تا۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हरगिज़ नहीं वोह तो भड़कती आग है, खाल उतार लेने वाली बुला रही है उस को जिस ने पीठ दी और मुंह फेरा और जोड़ कर सैंत रखा (मह़फ़ूज़ रखा)।*

फिर वोह ख़ामोश हो गए। तो मैं ने वहां मौजूद लोगों से पूछा : उन्हों ने मेरे आने से पहले क्या गुफ़्तगू फ़रमाई थी ? उन्हों ने कहा : हम ने येह आवाज़ सुनी कि ख़ामोश हो जाओ ! ख़ामोश हो जाओ ! हम ने एक दूसरे की त़रफ़ देखा तो आवाज़ कपड़े के अन्दर से आ रही थी, हम ने उन के चेहरे से कपड़ा हटाया तो वोह फ़रमा रहे थे : येह अह़मद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, या रसूलल्लाह ! आप पर सलाम, अल्लाह की रह़मत और बरकत हो। फिर कहा : येह अबू बक्र सिद्दीक़ हैं जो अमीन हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हैं, इन का जिस्म कमज़ोर है मगर अह़कामे इलाही में बहुत मज़्बूत़ हैं, इन्हों ने हमेशा सच कहा और पहली किताबों में ऐसा ही था।(1)

(1)... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۲/۲۶۷، حدیث:۳
دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ما جاء فی شہادۃ المیت لرسول اللّٰہ...الخ، ۶/۵۶تا۵۷

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى की रिवायत में इतना ज़ाइद है कि हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अबू ख़ालिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : येह वाक़िआ़ अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ख़िलाफ़त के पूरे दो साल बा'द का है और दो रातों से येही दो साल मुराद हैं, मैं बाक़ी चार साल पूरे होने की मुद्दत और इन में वाक़ेअ़ होने वाले उमूर का इन्तिज़ार करने लगा। चुनान्चे, इन चार सालों में अह्ले इराक़ में इख़्तिलाफ़ात, झूट और अफ़्वाहें फैलीं और उन्हों ने अपने अमीर वलीद बिन उ़क़्बा पर भी ता'ना ज़नी की।(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ही की हज़रते सय्यिदुना ह़बीब बिन सालिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से रिवायत में बिअरे अरीस का भी ज़िक्र है।

बिअरे अरीस का वाक़िआ़ येह है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के हाथ में हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक अंगूठी होती थी, आप की ख़िलाफ़त के छे साल बा'द वोह अरीस के कुंवें में गिर गई, इस के बा'द से आप के गवर्नरों में तब्दीली पैदा होने लगी और उन फ़ितनों का ज़ुहूर हुवा जिन के बारे में हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ारिजा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बा'दे वफ़ात कलाम किया था।(2)

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : कसीर लोगों से ब रिवायाते सहीहा बा'द अज़ वफ़ात कलाम करना साबित है।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैद अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : मुसैलमा कज़्ज़ाब के साथ जंग में शहीद होने वालों में से एक शहीद ने शहादत के बा'द यूं गुफ़्तगू की : हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सच्चे हैं और हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه अमीन, नर्म और मेहरबान हैं। मुझे येह याद नहीं कि इस शहीद ने हज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मुतअ़ल्लिक़ क्या कहा ?(3)

---

❶...دلائل النبوة للبیهقی، باب ما جاء فی شهادة المیت لرسول الله...الخ، ۲/ ۵۷

❷...دلائل النبوة للبیهقی، باب ما جاء فی شهادة المیت لرسول الله...الخ، ۲/ ۵۷تا۵۸

❸...دلائل النبوة للبیهقی، باب ما جاء فی شهادة المیت لرسول الله...الخ، ۲/ ۵۸

इन ही से रिवायत है कि लोग जंगे जमल या सफ़्फ़ैन के शहीदों को दफ़्ना रहे थे कि एक अन्सारी शहीद बोल पड़ा : हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه सिद्दीक़ हैं, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه शहीद हैं और हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه मेहरबान हैं। फिर वोह ख़ामोश हो गया।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैदुल्लाह अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना साबित बिन क़ैस बिन शुमास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه जंगे यमामा में शहीद हुवे तो मैं भी उन की तदफ़ीन में शरीक हुवा, जब हम ने उन्हें क़ब्र में रखा तो वोह पुकार उठे : हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه सिद्दीक़ हैं, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه शहीद हैं और हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه अमीन और मेहरबान हैं। हम ने उन्हें ग़ौर से देखा तो वोह मुर्दा ह़ालत में थे।(2)

हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : हम में से एक शख़्स हज़रते ख़ारिजा बिन ज़ैद(3) رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه इन्तिक़ाल कर गए, हम ने उन्हें एक कपड़े में लपेट दिया और मैं नमाज़ के लिये खड़ा ही हुवा कि मुझे एक आवाज़ आई, मैं ने उन की त़रफ़ देखा तो वोह ह़रकत कर रहे थे और कह रहे थे : लोगों में ज़ियादा पुख़्ता और बेहतर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ईमानी व जिस्मानी दोनों लिह़ाज़ से मज़बूत़ हैं, अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه पाक दामन, नर्म मिज़ाज और कसीर ख़त़ाओं से दर गुज़र करने वाले हैं उन की दो रातें गुज़र गईं और चार बाक़ी हैं, लोगों में इख़्तिलाफ़ हो गया और कोई निज़ाम न रहा, ऐ लोगो ! अपने अमीर के पास जाओ उन की सुनो और इत़ाअ़त करो। येह रहे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه। फिर कहा : ज़ैद बिन ख़ारिजा (या'नी मेरे वालिद) के साथ क्या मुआ़मला पेश आया। फिर कहा : मेरे पीछे बिअरे अरीस छीन लिया गया। इतना कह कर वोह ख़ामोश हो गए।(4)

---

1 ...دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ما جاء فی شہادۃ المیت لرسول اللہ...الخ، ۶/۵۸

2 ...تاریخ کبیر، باب العین، ۵/۴۳، رقم: ۲۴۸۳/۴۱۳

3 ...हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इज़्ज़ुद्दीन इब्ने असीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَبِير फ़रमाते हैं : इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि इन का नाम ख़ारिजा बिन ज़ैद है या ज़ैद बिन ख़ारिजा। दुरुस्त येह है कि जिन्हों ने वफ़ात के बा'द कलाम किया उन का नाम ज़ैद बिन ख़ारिजा है। (اسد الغابۃ، ۲/۱۰۶)

4 ...معجم کبیر، ۴/۲۰۲، حدیث: ۴۱۳۹

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब हज़रते ज़ैद बिन ख़ारिजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात हुई तो हम उन्हें ग़ुस्ल देने गए और जैसे ही उन पर पानी डाला वोह बोल पड़े । दो गुज़र गए चार रह गए, मालदार ग़रीबों को खा गए और आपस में फूट पड़ गई है । हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ नर्म हैं मोमिनीन पर मेहरबान हैं, हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुफ़्फ़ार पर सख़्त हैं वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवा नहीं करते, हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी नर्म और मुसलमानों पर शफ़ीक़ हैं, अभी तुम लोग उन्ही के त़रीक़े पर हो लिहाज़ा उन की सुनो और इत़ाअ़त करो । फिर उन की आवाज़ बन्द हो गई मगर ज़बान ह़रकत कर रही थी और जिस्म मुर्दा था ।(1)

शहीद मदद के लिये आ पहुंचा

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی फ़रमाते हैं : हम रूमियों से जंग के लिये निकले तो चन्द अफ़राद दुश्मन की खोज में लग गए, दो आदमी बिछड़ गए थे, उन में से एक ने बताया कि हमें रूमियों का एक बूढ़ा मिला और उस ने हमें जंग की दा'वत दी, हम थोड़ी देर उस से लड़े मगर मेरा साथी शहीद हो गया, मैं ने इरादा किया कि वापस अपने साथियों में चला जाता हूं, वापस हो ही रहा था कि मैं ने दिल में कहा : तेरी मां तुझे रोए ! तेरा साथी तुझ से पहले जन्नत में चला गया और तू वापस साथियों में भाग रहा है । चुनान्चे, मैं ने मुड़ कर उस रूमी पर ह़म्ला कर दिया, लड़ते लड़ते वोह मुझे नीचे गिरा कर मेरे सीने पर बैठ गया और मुझे क़त्ल करने के लिये हथयार पकड़ा ही था कि इतने में मेरा शहीद साथी आ पहुंचा और उसे बालों से पकड़ कर मुझ से अलग कर दिया और हम दोनों ने मिल कर उस रूमी को क़त्ल कर दिया । इस के बा'द मेरा शहीद साथी मेरे साथ बातें करता हुवा चलने लगा और एक दरख़्त के पास पहुंच कर गिर पड़ा और पहले की त़रह़ मक़्तूल हो गया, मैं अपने साथियों में वापस पहुंचा और उन्हें सारे वाक़िए़ से आगाह किया ।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं : कुछ नौजवान रूमियों से जिहाद करने निकले तो तमाम क़ैद कर लिये गए, रूमी उन्हें अपने बादशाह के

❶...تاریخ ابن عساکر، ۳۹/۲۲۴، رقم: ۴۶۱۹: عثمان بن عفان امیر المؤمنین ذو النورین

❷...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۶/۲۸۵، حدیث: ۳۲

पास ले गए, उस ने उन्हें अपना दीन क़बूल करने की दा'वत दी मगर उन्हों ने इन्कार कर दिया, बादशाह नह्‌र के किनारे एक टीले पर बैठ गया और उन मुसलमान नौजवानों को क़त्ल करने का हुक्म जारी कर दिया। चुनान्चे, एक नौजवान को शहीद कर के नह्‌र में फेंका गया तो उस का चेहरा रूमियों की त़रफ़ घूमा और येह आयाते मुबारका तिलावत कीं :

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ﴿۲۹﴾ وَ ادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ﴿۳۰﴾ (پ۳۰، الفجر: ۲۷تا۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ इत़्मीनान वाली जान अपने रब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ।*[1]

हज़रते सय्यिदुना सईद अ़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : कुछ लोग समन्दर में जिहाद के लिये निकले तो एक नौजवान आया और उस ने दरख़्वास्त की, कि मुझे भी सुवार कर लिया जाए। पहले तो उन्हों ने मन्अ़ किया मगर फिर उसे सुवार कर लिया। जब जंग छिड़ी तो उस नौजवान ने अपनी जवां मर्दी के ख़ूब जोहर दिखाए बिल आख़िर शहीद हो गया, शहादत के बा'द उस का सर अपने सुवारों की जानिब सीधा हुवा और येह आयते मुबारका तिलावत की :

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِیْنَ لَا یُرِیْدُوْنَ عُلُوًّا فِی الْاَرْضِ وَ لَا فَسَادًا ؕ وَ الْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۸۳﴾ (پ۲۰، القصص: ۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह आख़िरत का घर हम उन के लिये करते हैं जो ज़मीन में तकब्बुर नहीं चाहते और न फ़साद और आ़क़िबत परहेज़गारों ही की है।*

इस के बा'द उस ने पानी में एक ग़ोत़ा खाया और नज़रों से ओझल हो गया।[2]

तीन बातों के सबब बख़्शिश

हज़रते सय्यिदुना अबू यूसुफ़ ग़सोली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم के पास मुल्के शाम गया तो उन्हों ने फ़रमाया : आज मैं ने एक अ़जीब चीज़ देखी है। मैं ने पूछा : वोह क्या ? फ़रमाया : मैं एक क़ब्र के क़रीब खड़ा था कि अचानक वोह शक़ हुई और उस में से ख़िज़ाब लगाए हुवे एक बुज़ुर्ग ज़ाहिर हुवे और फ़रमाया : ऐ इब्राहीम ! पूछो

---

1 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۲۹۲/۶، حدیث: ۳۹

2 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۳۰۸/۶، حدیث: ۶۲

क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे तुम्हारे लिये ज़िन्दा किया है। मैं ने कहा : مَافَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया है ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं बुरे आ'माल ले कर रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हुवा तो रब तआला ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने तुझे तीन बातों के सबब बख़्श दिया : तू मुझ से इस हाल में मिला के मुझ से महब्बत रखने वालों से महब्बत रखता था, तेरे सीने में ज़र्रा बराबर भी हराम घूंट नहीं उतरा था और तू मुझे ख़िज़ाब लगाए हुवे मिला और जिस ने ख़िज़ाब किया हो उसे आग का अ़ज़ाब देने में मुझे हया आती है। इस के बा'द क़ब्र बन्द हो गई। फिर फ़रमाया : ऐ ग़सोली ! तुझ पर अफ़्सोस है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अ़मल कर वोह तुझे अ़जाइबात दिखाएगा।(1)

नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों की बख़्शिश

नैशापुर के क़ाज़ी हज़रते सय्यिदुना अबू इब्राहीम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّحِيم के पास एक शख़्स आया और कहने लगा : मैं आप को एक अ़जीब बात बताना चाहता हूं। आप ने पूछा : वोह क्या ? कहने लगा : मैं पहले कफ़न चोर था एक दिन एक औ़रत का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं उस के जनाज़े में शरीक हो गया ताकि उस की क़ब्र का पता लगा सकूं, जब रात हुई तो मैं ने जा कर क़ब्र खोदी और कफ़न उतारने के लिये हाथ बढ़ाया तो वोह बोल उठी : سُبْحٰنَ اللّٰه जन्नती मर्द जन्नती औ़रत का कफ़न चुरा रहा है। फिर कहने लगी : क्या तू नहीं जानता कि तू ने मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी है, बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों को बख़्श दिया है।(2)

जनाज़े में शुहदा की शिर्कत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन सलमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स अपनी बीवी के हमराह शाम के शहर अन्दर में रहता था और उस का एक बेटा शहीद हो चुका था, एक दिन उस शख़्स ने अचानक एक घुड़ सुवार को आते देखा तो बीवी से कहने लगा : ऐ फ़ुलानी ! देख हमारा बेटा आ रहा है। उस ने कहा : शैत़ानी वस्वसे को ख़ुद से दूर कर, बेटे को शहीद हुवे तो इतना अ़र्सा हो चुका है, तेरे दिमाग़ पर असर हो गया है। चुनान्चे, वोह

❶... كرامات الاولياء لابي محمد الخلال، ص٥۴، رقم:٢١: ابو يوسف الغسولى

❷... شعب الايمان، باب فى الصلاة على من مات من اهل القبلة، ٧/٨، حديث: ٩٢٦١

इस्तिग़फ़ार करते हुवे दोबारा अपने काम में मश्ग़ूल हो गया फिर नज़र उठा कर देखा तो वोह घुड़ सुवार क़रीब आ चुका था, कहने लगा : अरे ! देख तो सही ख़ुदा की क़सम ! हमारा बेटा आया है। बीवी ने देखा तो कहा : वल्लाह ! येह तो वोही है। चुनान्चे, वोह मां बाप के पास खड़ा हो गया। बाप ने पूछा : बेटा क्या तुम शहीद नहीं हुवे थे ? अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं लेकिन अभी ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز का इन्तिक़ाल हुवा है और शुहदा ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उन के जनाज़े में शिर्कत की इजाज़त मांगी है, मैं भी उन में शामिल था लिहाज़ा मैं ने आप दोनों को सलाम करने की इजाज़त भी मांग ली, फिर वोह वालिदैन के लिये दुआ़ कर के रवाना हो गया और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز के बारे में पता चला कि उन का विसाल भी उसी साअ़त में हुवा था।(1)

येह तमाम वाक़िआ़त मुस्तनद हैं, मुह़द्दिसीन ने अपनी किताबों में अपनी असानीद के साथ इन्हें ज़िक्र किया है और इस की तस्दीक़ व तक़्विय्यत के लिये अब मैं वोह बात ज़िक्र करने लगा हूं जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی ने बयान फ़रमाई है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं : मुर्दों का अच्छी या बुरी ह़ालत में नज़र आना एक क़िस्म का कश्फ़ है, जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कभी बिशारत, कभी नसीह़त, कभी मय्यित की किसी मस्लह़त जैसे ईसाले सवाब या अदाए क़र्ज़ वग़ैरा के लिये ज़ाहिर फ़रमाता है। अक्सर त़ौर पर ऐसे वाक़िआ़त ख़्वाब में रू नुमा होते हैं लेकिन कभी बेदारी में भी होते हैं और येह अस्ह़ाबे ह़ाल औलिया के लिये बत़ौरे करामात होता है।(2)

एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं : अह्ले सुन्नत का अ़क़ीदा है कि बा'ज़ औक़ात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इरादे से रूहें इ़ल्लिय्यीन या सिज्जीन से वापस जिस्मों की त़रफ़ लौटाई जाती हैं बिलख़ुसूस जुमा'रात को और वोह बैठ कर आपस में गुफ़्त्गू करती हैं, इन्आ़म याफ़्ता रूहें राह़त पाती हैं और अ़ज़ाब की ह़क़दारों को अ़ज़ाब दिया जाता है। मज़ीद फ़रमाते हैं : जब तक अरवाह़ इ़ल्लिय्यीन या सिज्जीन में होती हैं तो सवाब व अ़ज़ाब अरवाह़ ही को होता है लेकिन जब वोह क़ब्रों में होती हैं सवाब व अ़ज़ाब जिस्म और रूह़ दोनों को होता है।(3)

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، ۲۵۸/۴۵، رقم: ۵۲۴۲: عمر بن عبد العزیز

2 ...روض الریاحین، الحکایۃ الخامسۃ والستون بعد المئۃ، ص۱۸۱

3 ...روض الریاحین، الحکایۃ الثامنۃ والستون بعد المئۃ، ص۱۸۳ تا ۱۸۴

इब्ने क़य्यिम ने कहा : अह़ादीस और वाक़िआ़त से साबित होता है कि मुर्दे अपने ज़ाइरीन के आने को जानते, उन की बात सुनते, उन से उन्सिय्यत ह़ासिल करते और उन के सलाम का जवाब देते हैं, येह शुहदा व ग़ैर शुहदा सब के लिये है और इस में कोई वक़्त भी ख़ास नहीं । येह क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह्ह़ाक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इस क़ौल से ज़ियादा सह़ीह़ है जो वक़्त के ख़ास होने पर दलालत करता है । फिर येह कि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी उम्मत के लिये येही मुक़र्रर किया है कि वोह मुर्दों को इस त़रह़ सलाम करें जैसे समाअ़त व अ़क़्ल रखने वाले को मुख़ात़ब कर के सलाम किया जाता है ।

मुर्दों को इन अल्फ़ाज़ से सलाम करो

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़ब्रिस्तान तशरीफ़ ले गए तो इरशाद फ़रमाया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللهُ بِكُمْ لَاحِقُوْن या'नी ऐ मोमिनीन क़ौम की जमाअ़त ! तुम पर सलाम हो اِنْ شَآءَ الله हम भी तुम से मिलने वाले हैं ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें सिखाया कि क़ब्रिस्तान जाएं तो यूं कहें :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ اَنْتُمْ لَنَا فَرَطٌ وَّنَحْنُ لَكُمْ تَبَعٌ اَسْئَلُ اللهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَة

या'नी ऐ क़ब्र वाले मुसलमानो ! तुम पर सलाम हो اِنْ شَآءَ الله हम भी तुम से मिलने वाले हैं, तुम हम से पहले चले गए और हम तुम्हारे पीछे हैं, हम अपने और तुम्हारे लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से आ़फ़िय्यत मांगते हैं ।(2)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : मैं क़ब्रिस्तान वालों से क्या कहूं ? इरशाद फ़रमाया : यूं कहो :

اَلسَّلَامُ عَلٰى اَهْلِ الدِّيَارِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ وَيَرْحَمُ اللهُ الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنَّا وَالْمُسْتَاْخِرِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللهُ بِكُمْ لَاحِقُوْن

---

1 ... مسلم، کتاب الطهارة، باب استحباب إطالة الغرة...الخ، ص ۱۵۰، حدیث: ۲۴۹

2 ... ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ما جاء فیما یقال إذا دخل المقابر، ۲/ ۲۴۰، حدیث: ۱۵۴۷
نسائی، کتاب الجنائز، الأمر بالاستغفار للمؤمنين، ص ۳۴۳، حديث: ۲۰۳۷

या'नी तुम कहो कि क़ब्र वाले मुसलमानों पर सलामती हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे अगलों और पिछलों पर रहम फ़रमाए, اِنْ شَآءَاللّٰه हम भी तुम से मिलने वाले हैं।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मदीना शरीफ़ के क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो क़ब्रों की तरफ़ रुख़ कर के कहा : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ الْقُبُوْرِ یَغْفِرُ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए तुम हम से पहले पहुंचे और हम तुम्हारे पीछे आने वाले हैं।(2)

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم क़ब्रिस्तान से क़रीब हुवे तो कहा :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ یَا اَھْلَ الدِّیَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُسْلِمِیْنَ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ فَارِطٌ وَّنَحْنُ لَکُمْ تَبَعٌ عَمَّا قَلِیْلٌ لَّاحِقٌ اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لَنَا وَلَھُمْ وَتَجَاوَزْ بِعَفْوِكَ عَنَّا وَعَنْھُمْ

या'नी ऐ क़ब्र वाले मुसलमानो ! तुम पर सलाम हो, तुम हम से पहले चले गए और हम भी कुछ अ़र्से बा'द तुम से मिलने वाले हैं, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हमारी और इन की मग़फ़िरत फ़रमा और अपने अ़फ़्वो करम के तुफ़ैल हम से और इन से दर गुज़र फ़रमा।(3)

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब अपनी ज़मीन से वापस होते तो शुहदा की क़ब्रों के पास से गुज़रते हुवे यूं कहते : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰہُ بِکُمْ لَاحِقُوْنَ या'नी तुम पर सलाम हो اِنْ شَآءَاللّٰه हम भी तुम से मिलने वाले हैं। फिर अपने मुसाहिबीन से फ़रमाते : क्या तुम शुहदा को सलाम नहीं करोगे कि वोह तुम्हें जवाब दें।(4)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जब भी किसी (मुसलमान की) क़ब्र के पास से गुज़रते तो उसे सलाम करते।(5)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जब तुम अपने पहचान वालों की क़ब्रों के पास से गुज़रो तो कहो : اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ اَصْحَابَ الْقُبُوْرِ या'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो और जब

---

1 ...مسلم، کتاب الجنائز، ما یقال عند دخول القبور والدعاء لاھلھا، ص ۴۸۴، حدیث: ۹۷۴

2 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب ما یقول الرجل اذا دخل المقابر، ۳۲۹/۲، حدیث: ۱۰۵۵

3 ...معجم کبیر، ۵۶/۴، حدیث: ۳۶۱۸

4 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، ماذکر فی التسلیم علی القبور...الخ، ۲۲۱/۳، حدیث: ۷، دون: ان شاء اللّٰہ

5 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، ماذکر فی التسلیم علی القبور...الخ، ۲۲۱/۳، حدیث: ۵، ابن عمر بدلہ سالم بن عبد اللّٰہ

अन्जान क़ब्रों के पास से गुज़र हो तो यूं कहो : اَلسَّلَامُ عَلَی الْمُسْلِمِیْنَ या'नी मुसलमानों पर सलाम हो ।[1]

मर्हूमीन से दुआए मग़्फ़िरत हासिल करने का विर्द

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : जो शख़्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह दुआ पढ़े तो हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर उस वक़्त तक जितने भी मुसलमान फ़ौत हुवे सब उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं (दुआ येह है) :

اَللّٰھُمَّ رَبَّ الْاَجْسَادِ الْبَالِیَۃِ وَالْعِظَامِ النَّخِرَۃِ الَّتِیْ خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْیَا وَھِیَ بِکَ مُؤْمِنَۃٌ اَدْخِلْ عَلَیْھَا رَوْحًا مِّنْ عِنْدِکَ وَسَلَامًا مِّنِّیْ

या'नी ऐ हमारे परवरदगार, ऐ उन बोसीदा जिस्मों और गली हुई हड्डियों के रब जो तुझ पर ईमान रखते हुवे दुन्या से गईं ! अपनी बारगाह से उन पर राहत और मेरी त़रफ़ से सलाम दाख़िल फ़रमा ।[2]

जब कि हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने येह मज़्मून रिवायत किया कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे हज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर क़ियामत तक वफ़ात पा जाने वाले मुसलमानों की ता'दाद के बराबर नेकियां अ़ता फ़रमाता है ।"[3]

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जिस ने क़ब्रिस्तान जा कर मुर्दों के लिये इस्तिग़फ़ार और दुआए रह़मत की गोया वोह उन के जनाज़ों में शरीक हुवा और उन की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी ।[4]

हज़रते सय्यिदुना अज़हर बिन मरवान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر का एक मख़्सूस कमरा था, आप अ़स्र की नमाज़ के बा'द उस में जाते और क़ब्रिस्तान की त़रफ़ दरवाज़ा खोल कर क़ब्रों की ज़ियारत करते ।[5]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا जब भी किसी जनाज़े में शरीक होते तो अपने फ़ौतशुदा रिश्तेदारों की क़ब्रों पर जा कर उन के लिये भी दुआ व इस्तिग़फ़ार करते ।[6]

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، ماذکر فی التسلیم علی القبور...الخ، ۳/۲۲۱، حدیث:۸

2 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام الحسن البصری، ۸/۲۵۷، حدیث:۲۲

3 ...ملحق کتاب القبور لابن ابی الدنیا، ص۲۲۷، حدیث:۷۰

4 ...التمھید، باب العین، العلاء بن عبد الرحمن، ۸/۳۱۴، تحت الحدیث:۸/۵۷۲

5 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/۷۴، حدیث:۹۴

6 ...شعب الایمان، باب فی الصلاۃ علی من مات من اھل القبلۃ، ۷/۱۷، حدیث:۹۲۹۶

हज़रते सय्यिदुना आ़सिम जह्दरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی के ख़ानदान के एक शख़्स का बयान है : मैं ने हज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को वफ़ात के कई साल बा'द ख़्वाब में देखा तो पूछा : क्या आप फ़ौत नहीं हो गए ? उन्हों ने फ़रमाया : क्यूं नहीं। मैं ने पूछा : अब आप कहां हैं ? फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम जन्नत के एक बाग़ में हूं, मैं और मेरे साथी हर शबे जुमुआ़ और जुमुआ़ की सुब्ह़ हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی के पास जम्अ़ होते हैं तो हमें तुम्हारी ख़बरें मिलती हैं। मैं ने पूछा : अज्साम के साथ जम्अ़ होते हैं या सिर्फ़ रूह़ों के साथ ! फ़रमाया : अफ़्सोस ! जिस्म तो बोसीदा हो गए अब सिर्फ़ रूहें मिलती हैं। मैं ने कहा : क्या आप हमारे क़ब्रों पर आने को जानते हैं ? फ़रमाया : शबे जुमुआ़, रोज़े जुमुआ़ और हफ़्ते को सूरज निकलने तक आने वालों को जानते हैं। मैं ने कहा : दीगर सारे अय्याम छोड़ कर येही औक़ात क्यूं ? फ़रमाया : जुमुअ़तुल मुबारका के फ़ज़्ल और अ़ज़मत की वज्ह से।(1)

मुर्दों के लिये तोह़्फ़ा

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر फ़रमाते हैं : एक शख़्स कसरत से क़ब्रिस्तान आता जाता रहता और जब भी कोई जनाज़ा आता तो उस की नमाज़ पढ़ता और शाम के वक़्त क़ब्रिस्तान के दरवाज़े पर खड़ा हो कर कहता : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी वह़्शत दूर फ़रमाए, तुम्हारी तन्हाई पर रह़्म फ़रमाए, तुम्हारे गुनाह बख़्शे और नेकियां क़बूल फ़रमाए। इस से ज़ियादा वोह कुछ न कहता था, उस का बयान है कि एक दिन मैं क़ब्रिस्तान न जा सका और घर आ कर सो गया, क्या देखता हूं कि कसीर लोग मेरे पास जम्अ़ हो गए हैं, मैं ने पूछा : तुम कौन हो ? कहने लगे : हम क़ब्रिस्तान वाले हैं। मैं ने पूछा : क्यूं आए हो ? कहा : तुम अपने घर जाने से पहले हमें जो तोह़्फ़ा देते थे आज वोह नहीं मिला। मैं ने पूछा : कौन सा तोह़्फ़ा ? वोह बोले : वोही दुआ़एं जो तुम हमारे लिये करते हो। मैं ने कहा : मैं ज़रूर आऊंगा। इस के बा'द मैं ने कभी भी क़ब्रिस्तान जाने का नाग़ा नहीं किया।(2)

जुमुआ़ के दिन परन्दे क्या कहते हैं ?

हज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ख़ाना बदोश थे। जब जुमुआ़ की शब आती तो

---

❶...شعب الایمان، باب فی الصلاة علی من مات من اھل القبلة، ۷/۱۸، حدیث: ۹۳۰۰

❷...شعب الایمان، باب فی الصلاة علی من مات من اھل القبلة، ۷/۱۷، حدیث: ۹۲۹۸

सफ़र शुरूअ़ कर देते और आप का चाबुक रौशन हो जाता, एक रात क़ब्रिस्तान गए तो घोड़े पर ही ऊंघ आई और सर झुक गया, देखा कि तमाम मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों पर बैठे कह रहे हैं : येह मुतर्रिफ़ हैं जो जुमुआ़ के दिन आए हैं। मैं ने कहा : क्या तुम भी जुमुआ़ की फ़ज़ीलत को जानते हो ? मुर्दे बोले : जी हां और हम येह भी जानते हैं कि इस दिन परन्दे क्या कहते हैं। मैं ने पूछा : क्या कहते हैं ? वोह बोले कि परन्दे कहते हैं : सलामती ही सलामती है नेक दिन आया।(1)

वालिदैन की क़ब्र पर हाज़िरी दिया करो

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे माजिद का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं ने बहुत ज़ियादा गिर्या व ज़ारी की और हर रोज़ उन की क़ब्र पर हाज़िरी देता फिर उस में कुछ कमी हो गई तो वालिद साहिब ख़्वाब में आए और फ़रमाया : बेटा ! मेरे पास आने में किस वज्ह से सुस्ती करने लगे हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : आप को मेरे आने का इ़ल्म हो जाता है ? फ़रमाया : बेटा ! तुम जब भी आते हो मुझे इ़ल्म हो जाता है और मैं तुम्हें देख कर खुश होता हूं और मेरे पड़ोसी भी तुम्हारी दुआ़ के सबब खुश होते हैं। पस इस के बा'द मैं ने कसरत से वालिदे माजिद की क़ब्र पर जाना शुरूअ़ कर दिया।(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा हाशिम बिन मुह़म्मद अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : मुझे एक आ़लिम साहिब ने बताया कि मैं अपने वालिदे माजिद की क़ब्र पर जाने का आ़दी था। कुछ अ़र्से बा'द दिल में वस्वसा पैदा हुवा कि मैं तो बस मिट्टी को देखने जाता हूं, जाने का क्या फ़ाएदा, येह सोच कर मैं ने जाना छोड़ दिया। एक रात वालिदे मर्हूम ख़्वाब में आए और फ़रमाया : बेटा ! तुम पहले की त़रह़ अब क्यूं नहीं आते ? मैं ने अ़र्ज़ की : मैं तो वहां मिट्टी का ढेर ही देखता हूं। तो उन्हों ने फ़रमाया : बेटा ! ऐसा न कहो, जब तुम आते थे तो मेरे पड़ोसी मुर्दे मुझे तुम्हारे आने की बिशारत देते थे और जब तुम वापस होते तो मैं तुम्हें कूफ़ा में दाख़िल होने तक देखता रहता था।(3)

हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन सौदह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا बहुत

❶...شعب الایمان، باب فی الصلاۃ علی من مات من اھل القبلۃ، ۷/۱۸، حدیث: ۹۳۰۳

❷...شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/۲۰۲، حدیث: ۷۹۰۳

❸...شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/۲۰۲، حدیث: ۷۹۰۴

बड़ी इबादत गुज़ार थीं और उन्हें राहिबा (या'नी दुन्या से किनारा कश) कहा जाता था। ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन सौदह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : वालिदए माजिदा के इन्तिक़ाल के बा'द मैं हर शबे जुमुआ़ उन की क़ब्र पर जा कर उन के और तमाम मुर्दों के लिये दुआ़ व इस्तिग़्फ़ार करता था, एक रात मैं ने ख़्वाब में वालिदए मर्हूमा को देख कर पूछा : अम्मी जान ! आप कैसी हैं ? फ़रमाया : बेटा ! बेशक मौत की तक्लीफ़ बहुत शदीद है, اَلْحَمْدُلِلّٰه मेरे लिये आ़लमे बरज़ख़ अच्छा है, मैं फूलों के बिस्तर और मोटे व बारीक रेशम के तक्यों पर आराम कर रही हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : आप को कोई ह़ाजत है ? फ़रमाया : हां। अ़र्ज़ की : वोह क्या ? फ़रमाया : हमारी ज़ियारत और हमारे लिये दुआ़ करने को तर्क मत करना क्यूंकि तुम्हारे जुमुआ़ के दिन आने से मुझे उन्सियत मिलती है और जब घर में से कोई ज़ियारत को आए तो मेरे पड़ोसी मुर्दे कहते हैं : ऐ नेक बन्दी ! तुम्हारे घर से ज़ियारत करने वाला आया है। चुनान्चे, मैं और मेरे पड़ोसी मुर्दे ख़ुश हो जाते हैं।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल बरकात अ़ब्दुल वाह़िद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन गुलाब सोसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं, मेरी वालिदा का बयान है : मैं ने अपनी मां को बा'द अज़् वफ़ात ख़्वाब में देखा, वोह फ़रमा रही थीं : बेटी ! जब तुम मेरी ज़ियारत[2] को आओ तो थोड़ी देर बैठ जाया करो ताकि मैं तुम्हें नज़र भर के देख सकूं इस के बा'द दुआ़ए रह़मत किया करो क्यूंकि जब तुम मेरे लिये दुआ़ए रह़मत करती हो तो वोह रह़मत मेरे और तुम्हारे बीच ह़िजाब बन कर मेरी तवज्जोह तुम से हटा देती है।[3]

---

1 ...شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۲۰۳/۶، حدیث: ۷۹۰۶

2 .....सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى औ़रतों के क़ब्रिस्तान जाने के मुतअ़ल्लिक़ फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 9, सफ़्ह़ा 538 के ह़वाले से तह़रीर फ़रमाते हैं : अस्लम (ज़ियादा सह़ीह़) येह है कि औ़रतें मुत़लक़न मन्अ़ की जाएं कि अपनों की क़ुबूर की ज़ियारत में तो वोही जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ है और सालिह़ीन की क़ुबूर पर या ता'ज़ीम में ह़द से गुज़र जाएंगी या बे अदबी करेंगी कि औ़रतों में येह दोनों बातें ब कसरत पाई जाती हैं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 4, 1 / 849)

(औ़रत को) सिवाए रौज़ए अन्वर (علٰی صاحِبِها الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام) के किसी मज़ार पर जाने की इजाज़त नहीं वहां की ह़ाज़िरी अलबत्ता सुन्नते जलीला अ़ज़ीमा क़रीब ब वाजिबात है और क़ुरआने अ़ज़ीम ने इसे मग़्फ़िरते ज़ुनूब (या'नी गुनाहों की बख़्शिश) का तिरयाक़ बताया। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, ह़िस्सए दुवुम, स. 315)

नोट : मज़ीद तफ़्सील के लिये "बहारे शरीअ़त" और "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" के मज़्कूरा मक़ाम का मुत़ालआ़ कीजिये।

3 ...معجم السفر، ص۱۸۶، رقم ۵۹۶

हज़रते सय्यिदुना असद बिन मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरा एक दोस्त था जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं ने उसे ख़्वाब में देखा वोह कह रहा था : سُبْحٰنَ الله तुम फ़ुलां दोस्त की क़ब्र पर गए, वहां बैठ कर तिलावत और दुआ़ए मग़्फ़िरत की जब कि मेरे पास नहीं आए। मैं ने कहा : तुम्हें कैसे मा'लूम हुवा ? उस ने कहा : जब तुम अपने फ़ुलां दोस्त की क़ब्र पर जा रहे थे तो मैं ने तुम्हें देख लिया था। मैं ने पूछा : कैसे देख लिया ह़ालांकि तुम्हारे ऊपर तो मिट्टी है ? कहने लगा : क्या तुम्हें शीशे के बरतन में पानी बिल्कुल वाज़ेह़ नज़र नहीं आता ? मैं ने कहा : क्यूं नहीं। वोह बोला : बस जो हमारी ज़ियारत को आता है हम भी उसे ऐसे ही देखते हैं।(1)

तम्बीह

हज़रते सय्यिदुना अबू जरी जाबिर बिन सुलैम हजीमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर कहा : عَلَيْكَ السَّلَامُ يَا رَسُوْلَ الله صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाया : عَلَيْكَ السَّلَام न कहो क्यूंकि येह मुर्दों का सलाम है।(2)

इस ह़दीस शरीफ़ से मा'लूम होता है कि मुर्दों को عَلَيْكُمُ السَّلَام कहा जाए या'नी "عَلَيْكُم" पहले लाया जाए जब कि पीछे एक ह़दीसे पाक गुज़री है जिस में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुर्दों को यूं सलाम किया : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْن(3) इस में लफ़्ज़ "اَلسَّلَام" मुक़द्दम है अब दोनों ह़दीसों में बा'ज़ उ़लमा ने यूं ततबीक़ दी कि عَلَيْكَ से सलाम करने वाली ह़दीस सह़ीह़ है और जिस में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कलाम करना आया है वोह असह़ (ज़ियादा सह़ीह़) है।

जब कि बा'ज़ उ़लमा इस त़रफ़ गए हैं कि सुन्नत येही है कि लफ़्ज़े "عَلَيْكُم" पहले कहा जाए, लिहाज़ा दोनों ह़दीसों में ततबीक़ की ज़रूरत है। चुनान्चे, बा'ज़ ने येह कहा कि "जिस ह़दीस में लफ़्ज़ "اَلسَّلَام" मुक़द्दम है वोह इस मुमानअ़त वाली ह़दीस से ज़ियादा सह़ीह़ है।" और बा'ज़ ह़ज़रात का कहना है कि "सुन्नत वोही है जिस पर मुमानअ़त वाली ह़दीस दलालत करती है।"

---

1 ... اهوال القبور لابن رجب، الباب الثامن، ص ۱۴۶

2 ... ابو داود، كتاب الادب، باب كراهية ان يقول عليك السلام، ۴/۴۵۲، حديث: ۵۲۰۹

3 ... مسلم، كتاب الطهارة، باب استحباب إطالة الغرة... الخ، حديث: ۲۴۹، ص ۱۵۰

लेकिन इब्ने क़य्यिम ने "बदाएउ़ल फ़वाइद" में कहा : दोनों गुरौह ह़दीस के मक़्सूद को न समझ सके, अस्ल येह है कि रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने इस फ़रमान عَلَيْكَ السَّلَامُ "मुर्दों का सलाम है" से कोई शरई ज़ाबित़ा बयान किया है न ही किसी शरई हुक्म की ख़बर दी है बल्कि आप ने इस फ़रमाने आ़ली से ज़मानए जाहिलिय्यत का एक त़र्ज़े अ़मल बताया है कि मय्यित के बारे में इस त़रह़ कहना लोगों में राइज था क्यूंकि वोह मय्यित का ज़िक्र दुआ़ पर मुक़द्दम करते थे, जैसा कि शाइ़र कहता है :

عَلَيْكَ سَلَامُ اللهِ قَيْسُ بْنُ عَاصِمٍ　　وَرَحْمَتُهٗ مَا شَآءَ اَنْ يَّتَرَحَّمَا(1)

तर्जमा : ऐ क़ैस बिन आ़सिम ! तुम पर सलाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सलाम और उस की रह़मत हो वोह तुम पर अपनी चाहत से मेहरबानियां करता रहे।

नीज़ अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का मर्सिया कहने वाले का येह शे'र है :

عَلَيْكَ السَّلَامُ مِنْ اَمِيْرٍ وَّبَارَكَتْ　　يَدُ اللهِ فِيْ ذَاكَ الْاَدِيْمِ الْمُمَزَّقِ

तर्जमा : अमीरुल मोमिनीन पर सलाम हो और अ़न क़रीब बोसीदा हो कर टूट फूट जाने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरकत अ़त़ा फ़रमाए। अश्आ़र में इस त़रह़ की कसीर मिसालें मौजूद हैं और किसी वाक़िए़ की ख़बर देने से जवाज़ भी साबित नहीं होता इस्तिह़बाब तो दूर की बात है, लिहाज़ा मस्अला वाज़ेह़ और मुअ़य्यन हो गया कि क़ब्र वालों को सलाम करने में लफ़्ज़ सलाम ही मुक़द्दम होगा जैसा कि ख़ुद आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है। अगर किसी के ज़ेह्न में येह ख़याल आए कि ज़िन्दों से तो जवाब की तवक़्क़ोअ़ होती है लिहाज़ा दुआ़ (या'नी सलाम) को मुक़द्दम किया जाए जब कि मुर्दे से जवाबे सलाम मुतवक़्क़ेअ़ नहीं होता तो हम कहेंगे : मुर्दे से भी जवाब का वुक़ूअ़ होता है और येह ह़दीस से साबित है।

ख़ूब सूरत नुक्ता

एक नया और ख़ूब सूरत नुक्ता सुनो ! जब भलाई की दुआ़ की जाए तो उस में बेहतर येह है कि दुआ़ को उस शख़्स से मुक़द्दम रखा जाए जिस के लिये दुआ़ की जा रही है जैसा कि क़ुरआने मजीद की इन आयात में वाज़ेह़ है :

1..... "शर्हुस्सुदूर" के दस्तयाब नुस्ख़ों में इस मक़ाम पर शे'र का दूसरा मिस्रअ़ नहीं था, अस्ल माख़ज़ "बदाएउ़ल फ़वाइद" से दर्ज किया गया है।

﴾1﴿...... سَلٰمٌ عَلٰۤى اِبْرٰهِیْمَ ﴿۱۰۹﴾ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۰۹) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *सलाम हो इब्राहीम पर।*

﴾2﴿...... سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ (پ۲۳، الصّٰفّٰت:۷۹) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *नूह़ पर सलाम हो।*

﴾3﴿...... سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ (پ۱۳، الرعد:۲۴) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला।*

और जब बुराई की दुआ़ हो तो जिस के लिये दुआ़ की जाए उसे मुक़द्दम करना बेहतर है जैसा कि इन फ़रामीने बारी तआ़ला में है :

﴾1﴿...... وَ اِنَّ عَلَیْكَ لَعْنَتِیْۤ (پ۲۳، ص:۷۸) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और बेशक तुझ पर मेरी ला'नत है।*

﴾2﴿...... عَلَیْهِمْ دَآىٕرَةُ السَّوْءِؕ (پ۲۶، الفتح:۶) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *उन्हीं पर है बुरी गर्दिश।*

﴾3﴿...... عَلَیْهِمْ غَضَبٌ (پ۲۵، الشورٰی:۱۶) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *उन पर ग़ज़ब है।*

इस के कुछ और भी राज़ हैं जो मैं ने अपनी किताब "असरारुत्तन्ज़ील" में ज़िक्र कर दिये हैं

...

थकन से हिफ़ाज़त

یَاقُدُّوْس का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ थकन से मह़फ़ूज़ रहेगा। (मदनी पंज सूरह, स. 246)

बाब नम्बर 39

अरवाह के ठिकानों का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ (پ۷، الانعام:۹۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया फिर कहीं तुम्हें ठहरना है और कहीं अमानत रहना।*

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَیَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ (پ۱۲، هود:۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जानता है कि कहां ठहरेगा और कहां सिपुर्द होगा।*

एक ठिकाना इन्सानी पुश्त है और दूसरा मौत के बा'द है।

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : शुहदा की रूहें सब्ज़ परन्दों के पोटों में होती हैं, उन के लिये अ़र्श के नीचे क़िन्दीलें लटकी हुई हैं वोह जन्नत में जहां चाहती हैं सैर करती हैं फिर उन क़िन्दीलों की त़रफ़ लौट आती हैं।(1)

सोने की क़िन्दीलें

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब उहुद के दिन तुम्हारे भाई शहीद किये गए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की रूहें सब्ज़ परन्दों के पोटों में रखीं, वोह जन्नती नहरों पर जाती और जन्नती मेवे खाती हैं और अ़र्श के नीचे लटकी सोने की क़िन्दीलों में क़ियाम करती हैं।(2)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : शुहदा की रूहें सब्ज़ परन्दों में उड़ती फिरती हैं और जन्नती फलों से खाती हैं।(3)

---

1 ...مسلم، کتاب الامارة، باب بیان ان ارواح الشهداء فی الجنة...الخ، ص۱۰۴۷، حدیث:۱۸۸۷

2 ... ابو داود، کتاب الجهاد، باب فی فضل الشهادة، ۳/۲۲، حدیث:۲۵۲۰

3 ...مصنف عبد الرزاق، کتاب الجهاد، باب اجر الشهادة، ۵/۱۷۸، حدیث:۹۲۲۰

शुहदा की ख़्वाहिश

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर ताजदारे अम्बिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : शुहदा की रूहें सुब्हो शाम सैर करती हैं और ज़ेरे अ़र्श लटकी हुई क़िन्दीलों में बसेरा करती हैं, रब तआ़ला उन से इरशाद फ़रमाता है : जो इ़ज़्ज़त मैं ने तुम्हें दी है क्या इस से बढ़ कर भी किसी इ़ज़्ज़त के बारे में जानते हो ? वोह अ़र्ज़ करते हैं : नहीं, मगर इलाही ! हम चाहते हैं तू हमारी रूहें हमारे जिस्मों में लौटा दे ताकि हम एक बार फिर तेरी राह में जिहाद करते हुवे क़त्ल कर दिये जाएं।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहतशम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : शुहदा की रूहें सब्ज़ परन्दों के पोटों में जन्नती बाग़ात के मेवे खाती हैं फिर उन क़िन्दीलों में आ कर बसेरा करती हैं जो अ़र्श के नीचे मुअ़ल्लक़ हैं। आगे ह़दीस मा क़ब्ल ह़दीस की मिस्ल है।(2)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शुहदा की रूहों को उन सफ़ेद परन्दों के पोटों में भेज देता है जो अ़र्श के नीचे मुअ़ल्लक़ हैं।(3)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से किसी ने मोमिनीन की रूहों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल किया तो आप ने फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि शुहदा की रूहें सब्ज़ परन्दों की मानिन्द अ़र्श के नीचे होती हैं, सुब्हो शाम जन्नती बाग़ात की सैर करती हैं और रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िर हो कर सलाम करती हैं।(4)

मुसलमानों के बच्चों की रूहों का ठिकाना

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : शुहदा की रूहें ज़ेरे अ़र्श क़िन्दीलों में रहने वाले सब्ज़ परन्दों के पोटों में होती हैं और जन्नत में जहां चाहती हैं सैर

---

1 ...التمھید، باب المیم، محمد بن شھاب الزھری، ۴/۴۵۹، تحت الحدیث: ۲۳۷

2 ...الزھد لھناد بن السری، باب منازل الشھداء، الجزء الاول، ص ۱۲۱، حدیث: ۱۵۶

3 ...اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۶۲

4 ...اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۶۳

करती हैं फिर वापस क़िन्दीलों में लौट आती हैं और मुसलमानों के बच्चों की रूहें चिड़यों के पोटों में जन्नत में जहां चाहें सैर करती हैं।[1]

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से शुहदा की रूहों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : वोह सब्ज़ परन्दे हैं जो ज़ेरे अ़र्श लटकी क़िन्दीलों में रहते हैं और जन्नत में जहां चाहें सैर करते हैं।[2]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : शुहदा जन्नत के दरवाज़े पर बहती नहर पर सब्ज़ कुब्बों में होते हैं और सुब्हो शाम जन्नत से उन का रिज़्क़ उन्हें दिया जाता है।[3]

बेल और मछली

हज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : शुहदा जन्नत के सेह़न में बने बाग़ात में सब्ज़ कुब्बों में होते हैं, उन के पास एक बेल और मछली को भेजा जाता है तो येह दोनों आपस में लड़ते हैं जिस से शुहदा मह़ज़ूज़ होते हैं पस जब उन्हें किसी चीज़ की ख़्वाहिश होती है तो (बेल और मछली) में से एक दूसरे को ज़ब्ह़ कर देता है फिर शुहदा उस से खाते हैं तो उस में जन्नत की हर चीज़ का ज़ाइक़ा पाते हैं।[4]

"ह़ारिसा" जन्नतुल फ़िरदौस में है

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जब हज़रते ह़ारिसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शहीद हुवे तो आप की वालिदए माजिदा बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! यक़ीनन आप जानते हैं ह़ारिसा मुझे कितना अ़ज़ीज़ था ! अगर वोह जन्नत में है तो मैं सब्र करूंगी और अगर मुआ़मला इस के इलावा है तो आप देखेंगे कि मैं क्या करती हूं ? इरशाद फ़रमाया : जन्नतें तो बहुत हैं और ह़ारिसा जन्नतुल फ़िरदौस (सब से आ'ला जन्नत) में है।[5]

1... تفسیر ابن ابی حاتم، سورۃ غافر (المؤمن)، تحت الآیۃ: ۴، ۱۰/ ۳۲۶۷، حدیث: ۱۸۴۳۵

2... اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص۱۲۷

3... مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن العباس، ۱/ ۵۷۱، حدیث: ۲۳۹۰

مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجھاد، ما ذکر فی فضل الجھاد، ۴/ ۵۲۳، حدیث: ۱۹

4... مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجھاد، ما ذکر فی فضل الجھاد، ۴/ ۵۲۸، حدیث: ۴۸

5... بخاری، کتاب الرقاق، باب صفۃ الجنۃ والنار، ۴/ ۲۶۰، ۲۶۳، حدیث: ۶۵۵۰، ۶۵۶۷

हज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन की रूह़ एक परन्दा है जो जन्नती दरख़्त पर रहता है ह़त्ता कि बरोज़े मह़शर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस के जिस्म की त़रफ़ लौटाएगा।(1)

जब कि तिरमिज़ी में कुछ इस त़रह़ है कि शुहदा की अरवाह़ सब्ज़ परन्दों में रहते हुवे जन्नती फलों या जन्नती दरख़्तों से खाती हैं।(2)

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या हम मरने के बा'द मुलाक़ात करेंगे और एक दूसरे को देख सकेंगे ? इरशाद फ़रमाया : रूह़ एक परन्दा हो जाती है और दरख़्त पर रहती है ह़त्ता कि बरोज़े क़ियामत हर रूह़ अपने जिस्म में चली जाएगी।(3)

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे बिशर बिन बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! क्या मुर्दे एक दूसरे को पहचानते हैं ? इरशाद फ़रमाया : (4)تَرِبَتْ یَدَاكِ या'नी तेरे हाथ ख़ाक आलूद हों, इत़मीनान वाली जान जन्नत में एक सब्ज़ परन्दा होती है, जब परन्दे दरख़्तों की चोटियों पर एक दूसरे को पहचानते हैं तो येह इत़मीनान वाली जानें भी पहचानती हैं।(5)

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे बिश्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जब हम मर जाएंगे तो क्या एक दूसरे से मुलाक़ात कर सकेंगे ? इरशाद फ़रमाया : रूह़ एक परन्दा हो जाती है और दरख़्त पर रहती है ह़त्ता कि बरोज़े क़ियामत वोह अपने जिस्म में चली जाएगी।(6)

1... موطا امام مالک، کتاب الجائز، باب جامع الجنائز، ۱/۲۲۲، حدیث: ۵۷۷

نسائی، کتاب الجنائز، ارواح المؤمنین، ص ۳۴۸، حدیث: ۲۰۷۰

2... ترمذی، کتاب فضائل الجهاد، باب ماجاء فی ثواب الشهداء، ۳/۲۴۰، حدیث: ۱۶۴۶

3... مسند امام احمد، حدیث: ام هانی بنت ابی طالب، ۱۰/۳۹۱، حدیث: ۲۷۴۵۶، معجم کبیر، ۲۴/۴۳۸، حدیث: ۱۰۷۲

4.....इस के लुग़वी मा'ना ख़ाइबो ख़ासिर होने के हैं लेकिन अहले अ़रब इसे दुआ़ के लिये इस्तिअ़्माल करते हैं और मुराद दुआ़ नहीं होती बल्कि किसी काम पर उभारना मुराद होता है। (فیض القدیر، ۲/۴۹۳، تحت الحدیث: ۲۱۱۴)

5... طبقات ابن سعد، ۸/۲۴۱، رقم: ۴۲۸۱: خلیدة بنت قیس

6... تاریخ ابن عساکر، ۵۳/۳۰۸، رقم: ۶۴۹۱: محمد بن العباس بن الولید، حدیث: ۱۱۲۶۴

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जब वालिदे माजिद की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो उम्मे बिश्र बिन्ते बरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا उन के पास आईं और कहा : ऐ अबू अ़ब्दुर्रहमान ! अगर आप की फुलां से मुलाक़ात हो तो उसे मेरा सलाम कहियेगा । वालिद साहि़ब ने फ़रमाया : उम्मे बिश्र ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी बख़्शिश करे हम तो इन चीज़ों से ज़ियादा मश्ग़ूल होंगे । उन्हों ने कहा : क्या आप ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते नहीं सुना कि "मोमिन की रूह़ जन्नत में जहां चाहे सैर करती है और काफ़िर की रूह़ सिज्जीन में होती है ।" वालिद साहि़ब ने फ़रमाया : हां सुना है । ह़ज़रते उम्मे बिश्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : तो येही बात है ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़मरह बिन ह़बीब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُجِیْب से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदां صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मोमिनीन की अरवाह़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल हुवा तो इरशाद फ़रमाया : सब्ज़ परन्दों में होती हैं, जन्नत में जहां चाहें सैर करती हैं । अ़र्ज़ की गई : और काफ़िरों की रूहें ? इरशाद फ़रमाया : सिज्जीन में क़ैद होती हैं ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की मुलाक़ात हुई तो एक ने दूसरे से कहा : अगर आप मुझ से पहले रब عَزَّوَجَلَّ से मिल गए तो मुझे बताइयेगा कि आप को क्या मिला । दूसरे ने पूछा : क्या मुर्दे ज़िन्दों से मुलाक़ात करते हैं । फ़रमाया : हां, मोमिनीन की अरवाह़ जन्नत में होती हैं और जहां चाहती हैं जाती हैं ।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : जन्नत सूरज के सींगों के माबैन लपेटी हुई है[4], हर साल दो मरतबा फैलाई जाती है और मोमिनीन की

---

1 ... ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ما جاء فيما يقال عن المريض اذا حضر، ۲/۱۹۵، حديث: ۱۴۴۹
البعث والنشور، باب ما يستدل به...الخ، ص ۱۵۳، حديث: ۲۰۵

2 ... اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذكر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۸۲

3 ... شعب الايمان، باب التوكل بالله و التسليم، ۲/۱۲۱، حديث: ۱۳۵۵، موسوعة ابن ابی الدنيا، كتاب المنامات، ۳/۳۰، حديث: ۲۱

4 .....एक रिवायत के अल्फ़ाज़ यूं हैं : اَلْجَنَّةُ مَطْوِيَّةٌ مُعَلَّقَةٌ بِقُرُوْنِ الشَّمْسِ या'नी जन्नत सूरज के सींगों के साथ लिपटी और लटकी हुई है । इस की शर्ह़ में अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : इस से मुराद मुख़्तलिफ़ अन्वाओ़ अक़्साम के वोह फल, फूल और नबातात हैं जो जन्नत की याद दिलाने और जन्नती ने'मतों पर निशानी के तौर पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सूरज के सबब हर साल पैदा फ़रमाता है जैसा कि उस ने आग को जहन्नम की याद दिलाने वाली बनाया । इस रिवायत का येही मत़लब है वरना जन्नत तो सूरज से ऊपर और उस से बड़ी है वोह सूरज के सींगों के साथ कैसे मुअ़ल्लक़ हो सकती है ? (فيض القدير، ۳/ ۴۷۵، تحت الحديث: ۳۶۳۸)

रूहें चिड़यों जैसे परन्दों की शक्ल में होती हैं और जन्नती फल खाती हैं।[1]

एक रिवायत में यूं है कि "मोमिनीन की अरवाह़ चिड़यों जैसे सब्ज़ परन्दों के पोटों में होती हैं, एक दूसरे को पहचानती हैं और जन्नती फलों से रिज़्क़ पाती हैं।"[2]

मुसलमानों के फ़ौतशुदा बच्चों के कफ़ील

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमानों के बच्चे जन्नत के एक पहाड़ में हैं जिन की कफ़ालत ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام और ह़ज़रते सारा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) करते हैं ह़त्ता कि क़ियामत के दिन उन्हें उन के वालिदैन के ह़वाले किया जाएगा।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमान घराने में पैदा होने वाला हर बच्चा जन्नत में शिकम सैर व सैराब होता है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अ़र्ज़ करता है : ऐ मेरे रब ! मेरे वालिदैन को मेरे पास भेज दे।[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : जन्नत में तूबा नामी एक दरख़्त है जो पूरा का पूरा दूध से भरे थन की त़रह़ है, जो भी शीरख़्वार बच्चा मरता है वोह उस दरख़्त से दूध पीता है और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام उन बच्चों की परवरिश करते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जन्नत में एक दरख़्त है और गाए के दूध से भरे थनों की त़रह़ उस के भी बहुत थन हैं जिन से जन्नतियों के बच्चे ग़िज़ा पाते हैं।[5]

---

1 ...البعث والنشور، باب ما یستدل به...الخ، ص ۱۵۴، حدیث: ۲۰۷

2 ...اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۸۲

3 ...مستدرک حاکم، کتاب الجنائز، اولاد المؤمنین یکفلھم ابراھیم وسارة، ۱/۷۲۱، حدیث: ۱۴۵۸

4 ...شرح الزرقانی علی المواھب، فی ذکر اولادہ الکرام، ۴/ ۳۵۴

5 ...التمھید، باب الزاء، زید بن اسلم مولی عمر بن الخطاب، ۲/۳۵۶، تحت الحدیث: ۸۸

हज़रते सय्यिदुना मक्हूल दिमश्क़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिनीन के छोटे बच्चों की रूहें चिड़यों की सूरत में जन्नती दरख़्त पर होती हैं और उन के जद्दे अमजद हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام उन की कफ़ालत करते हैं।(1)

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : जन्नत में तूबा नामी एक दरख़्त है जो मुकम्मल तौर पर दूध से भरे थनों की तरह है, जन्नतियों के बच्चे उन से दूध पीते हैं और जो ना तमाम बच्चा गिर जाए (या'नी हम्ल साक़ित हो तो) वोह जन्नती नहर में तैरता रहता है हत्ता कि बरोज़े क़ियामत 40 बरस का उठाया जाएगा।(2)

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : जन्नतुल मावा में सब्ज़ परन्दे हैं, शुहदा की रूहें उन में रहते हुवे जन्नत की सैर करती हैं और आले फ़िरऔन की रूहें सियाह परन्दों में दोज़ख़ पर सुब्हो शाम करती हैं जब कि मुसलमानों के बच्चों की रूहें जन्नत में चिड़यों की सूरत में हैं।(3)

जन्नती चिड़यां

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : आले फ़िरऔन की रूहें सियाह परन्दों के पोटों में दोज़ख़ पर सुब्हो शाम करती हैं और मोमिनीन की अरवाह सब्ज़ परन्दों के पोटों में होती हैं जब कि मुसलमानों के ना बालिग़ बच्चों की रूहें जन्नती चिड़ियां होती हैं जो जन्नती मेवे खाती और उड़ती फिरती हैं।(4)

हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस फ़रमाने बारी तआला :

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ یُّقْتَلُ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ (پ۲، البقرۃ:۱۵۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : शुहदा की रूहें जन्नत में बुलबुलों के जैसे सफ़ेद परन्दे होती हैं।(5)

---

1 ...سنن سعید بن منصور، باب ما جاء فی نکاح الابکار، ۱/۱۴۴، حدیث: ۵۱۴

2 ...اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۷۱

3 ...البعث والنشور، باب ما یستدل به...الخ، ص ۱۵۴، حدیث: ۲۰۶

4 ...الزھد لھناد بن السری، باب عرض الرجل علی مقعدہ، ص ۲۲۱، حدیث: ۳۶۶

5 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجھاد، ما ذکر فی فضل الجھاد، ۴/۵۹۰، حدیث: ۱۸۸

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमें येह बात पहुंची है कि शुहदा की रूहें सफ़ेद परन्दों की सूरत में अ़र्श के नीचे मुअ़ल्लक़ क़िन्दीलों में क़ियाम करती हैं।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : मुसलमानों की रूहें सफ़ेद परन्दों की सूरत में अ़र्श के साए में होती हैं और काफ़िरों की रूहें सातवीं ज़मीन में होती हैं।(2)

हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कब्शा बिन्ते मा'रूर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ लाए तो हम ने आप से मुर्दों की रूहों के बारे में पूछा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अभी उन की एक हालत ही बयान फ़रमाई थी कि उस ने घरवालों को रुला दिया। फिर इरशाद फ़रमाया : मुसलमानों की रूहें सब्ज़ परन्दों के पोटों में रहते हुवे जन्नत में सैर करती और उस के फल खाती और जन्नती पानी पीती हैं और ज़ेरे अ़र्श लटकी सोने की क़िन्दीलों में क़ियाम करती हैं और अ़र्ज़ करती हैं : ऐ हमारे रब ! हमारे भाइयों को हम से मिला और हमें वोह अ़ता फ़रमा जिस का तू ने हम से वा'दा किया है। जब कि कुफ़्फ़ार की रूहें सियाह परन्दों के पोटों में होती हैं, दोज़ख़ से खाती पीती और दोज़ख़ी पथ्थरों पर बसेरा करती हैं और कहती हैं : ऐ हमारे रब ! हमारे भाइयों को हम से न मिलाना और जिस (अ़ज़ाब) का तू ने हम से वा'दा किया है वोह भी न देना।(3)

हसीनो जमील सीढ़ी

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हम बे कसों के मौला, शबे असरा के दुल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मे'राज की रात मेरे पास एक ह़सीनो जमील सीढ़ी लाई गई, येह वोही सीढ़ी है जिस से औलादे आदम की रूहें ऊपर चढ़ती हैं, मख़्लूक़ ने इस से ख़ूब सूरत सीढ़ी कभी नहीं देखी होगी। तुम जो देखते हो कि मरने वाले की आंखें आस्मान की त़रफ़ टिक जाती हैं येह उस सीढ़ी की ख़ूब सूरती में खो जाने की वज्ह से होता है। पस मैं और ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ऊपर चढ़ कर आस्मान तक पहुंचे और आस्मान का दरवाज़ा खुलवाया तो सामने ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام मौजूद थे और उन की

1... مصنف عبد الرزاق، کتاب الجهاد، باب اجر الشهادة، ۵/۱۷۷، حدیث: ۹۶۱۶، عن الکلبی

2... الزهد لابن المبارك ما رواه نعیم بن حماد... الخ، باب فی ارواح المؤمنین، ص ۴۲، حدیث: ۱۶۴

3... اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۸۱ تا ۱۸۲

मोमिन औलाद की रूहें उन पर पेश की जा रही थीं और वोह फ़रमा रहे थे : पाकीज़ा रूह पाकीज़ा जान इसे इल्लिय्यीन में पहुंचा दो। फिर उन की गुनाहगार औलाद की रूहें पेश की गईं तो उन्हों ने फ़रमाया : गन्दी रूह, गन्दी जान इसे सिज्जीन में डाल दो।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुसलमानों की रूहें सातवें आस्मान में होती हैं और अपने जन्नती ठिकानों को देखती हैं।(2)

हज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सातवें आस्मान में एक घर बनाया है जिसे बैज़ा कहा जाता है मुसलमानों की रूहें वहां जम्अ़ होती हैं जब दुन्या वालों में से कोई मरता है तो अरवाह़ उस से मिल कर दुन्या वालों की ख़बरें ऐसे पूछती हैं जैसे किसी ग़ाइब के आने पर उस के घरवाले उस से ह़ाल अह़वाल पूछते हैं।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने हज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से उन के बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सूली चढ़ाए जाने की ता'ज़ियत करते हुवे फ़रमाया : ग़मगीन मत होना क्यूंकि अरवाह़ तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां आस्मान में होती हैं येह तो सिर्फ़ जिस्म है।(4)

मोमिनीन की रूहों के ज़िम्मेदार

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : मोमिनीन की रूहें हज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ ले जाई जाती हैं और उन्हें कहा जाता है : आप क़ियामत तक इन के ज़िम्मेदार हैं।

अफ़्ज़ल अ़मल

हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मिले तो

1... دلائل النبوۃ للبیہقی، باب الدلیل علی ان النبی عرج بہ الاسماء...الخ، ۲/۳۹۱تا ۳۹۲

2... تاریخ اصبہان لابی نعیم، باب الالف، ۱/۲۰۳، رقم: ۲۸۱، احمد بن ابراہیم الکیال، حدیث: ۲۸۱

3... حلیۃ الاولیاء، وہب بن منبہ، ۴/۶۲، رقم: ۴۷۵۸

4... مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الامراء، ماذکر من حدیث الامراء والدخول علیہم، ۷/۲۷۲، حدیث: ۱۴۱

फ़रमाया : अगर आप मुझ से पहले इन्तिक़ाल कर गए तो मुझे बताइयेगा कि आप ने क्या पाया और अगर मैं आप से क़ब्ल इन्तिक़ाल कर गया तो मैं आप को बताऊंगा कि मैं ने क्या पाया । उन्हों ने पूछा : जब मैं पहले मर चुका होऊंगा तो फिर येह कैसे हो सकता है ? फ़रमाया : जिस्म से रूह़ निकल कर आस्मानो ज़मीन के दरमियान रहती है ह़त्ता कि उसे जिस्म की त़रफ़ लौटाया जाता है । चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल हुवा तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें ख़्वाब में देखा और पूछा : बताइये आप ने किस अ़मल को अफ़्ज़ल पाया ? फ़रमाया : मैं ने तवक्कुल को बहुत उ़म्दा पाया है ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मुसलमानों की रूहें ज़मीनी बरज़ख़ में रहती हैं और जहां चाहती हैं जाती हैं और काफ़िरों की रूहें सिज्जीन में क़ैद होती हैं ।(2)

इब्ने क़य्यिम ने कहा : बरज़ख़ दो चीज़ों के दरमियान ह़ाइल रुकावट को कहते हैं, गोया कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने "ज़मीन में" फ़रमा कर दुन्या व आख़िरत का दरमियान मुराद लिया ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मोमिनीन की अरवाह़ ज़मीनी बरज़ख़ में जाती हैं और ज़मीनो आस्मान के माबैन जहां चाहती हैं सैर करती हैं ह़त्ता कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें उन के जिस्मों की त़रफ़ लौटाएगा ।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मोमिनों की अरवाह़ आज़ाद होती हैं जहां चाहती हैं जाती हैं ।(5)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से पूछा गया कि मरने के बा'द मोमिनों की रूहें कहां होती हैं ? फ़रमाया : सफ़ेद परन्दों की सूरत में अ़र्श के साए में होती हैं और काफ़िरों की रूहें सातवीं ज़मीन में होती हैं, जब कोई मुसलमान इन्तिक़ाल करता है तो उस की रूह़ मोमिनीन की अरवाह़ के पास से गुज़रती है जिन का ख़ानदान (दुन्या में) होता है, वोह उस से

---

1 ... حلیۃ الاولیاء، سلمان الفارسی، ۱/۲۶۴، رقم: ۶۵۵، طبقات ابن سعد، ۴/۷۰، رقم: ۳۵۹: سلمان الفارسی

2 ... الزھد لابن المبارک، باب ما جاء فی التوکل، ص ۱۴۳، حدیث: ۴۲۹

3 ... الروح لابن قیم، المسئالۃ الخامسۃ عشرۃ، فصل فی ان ارواح المؤمنین فی برزخ من الارض، ص ۱۷۸

4 ... نوادر الاصول، الاصل التاسع والستون والمائۃ، ۱/۶۷۰، حدیث: ۹۲۱

5 ... الاستذکار، کتاب الجنائز، باب جامع الجنائز، ۲/۶۱۷، تحت الحدیث: ۲۹۲

अपने दोस्त अह्बाब का पूछते हैं, अगर वोह कहे कि उस का इन्तिक़ाल हो चुका है तो वोह कहते हैं : उसे नीचे ले जाया गया और अगर वोह काफ़िर मरा तो उसे निचली ज़मीन में फैंक दिया गया। वोह अगर किसी और शख़्स के बारे में पूछते हैं और वोह रूह उस के मरने की ख़बर देती है तो वोह कहते हैं : उसे बुलन्द किया गया।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : कुफ़्फ़ार की रूहें (यमन में) हज़्रमौत के कुंवें में जम्अ़ की जाती हैं और मोमिनीन की अरवाह़ (मुल्के शाम में वाक़ेअ़) जाबिया के कुंवें में जम्अ़ की जाती हैं।(2)

हज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन रुवैम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हर पाकीज़ा रूह जाबिया में लाई जाती है।

बेहतरीन और बदतरीन वादी

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : लोगों की सब से बेहतरीन वादी मक्का है और लोगों की सब से बदतरीन वादी हज़्रमौत में वाक़ेअ़ अह्क़ाफ़ है जिसे बरहूत कहा जाता है और उस में कुफ़्फ़ार की रूहें हैं।(3)

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : मोमिनीन की रूहें ज़मज़म के कूंएं में होती हैं।(4)

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह्बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار ने किसी को हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से येह पूछने के लिये भेजा कि मोमिनीन की रूहें कहां जम्अ़ होती हैं और मुशरिकीन की रूहें कहां जम्अ़ होती हैं ? हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : मुसलमानों की रूहें अरीहा में और मुशरिकीन की सन्आ़ में जम्अ़ की जाती हैं। क़ासिद

---

1 ...الزھد لابن المبارک ما رواہ نعیم بن حماد...الخ، باب فی ارواح المؤمنین، ص ۴۲، حدیث:۱۲۴

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، شھادات، ۵/۵۲۸، حدیث:۵۴۴

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، شھادات، ۵/۵۲۸، حدیث:۵۴۲، دون: خیر وادی الناس

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، شھادات، ۵/۵۲۸، حدیث:۵۴۱

ने वापस आ कर ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को येह जवाब बताया तो आप ने कहा : उन्हों ने सच फ़रमाया ।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : मैं ने यमन में ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से पूछा : क्या मुसलमान रूहों के जम्अ़ होने की कोई जगह है ? फ़रमाया : हां ज़मीन है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ لَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

(پ۱۷، الانبیاء:۱۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक हम ने ज़बूर में नसीह़त के बा'द लिख दिया कि इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे ।*

येही ज़मीन है जिस में मोमिनीन की रूहें जम्अ़ की जाती हैं ह़त्ता कि क़ियामत बरपा हो जाएगी ।(2)

रिम्याईल और दौमह

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : वफ़ात के बा'द मोमिनीन की रूहें रिम्याईल नामी फ़िरिश्ते के ह़वाले की जाती हैं, वोह रूहों के ख़ाज़िन हैं ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन सा'लिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه रिवायत करते हैं कि अह्ले किताब में से एक शख़्स ने कहा : कुफ़्फ़ार की रूहों पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते का नाम "दौमह" है ।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام सब से निचले और सब से ऊपरी समन्दर के दरमियान नूर के मिम्बर पर जल्वा फ़रमा हैं, समन्दरी जानवरों को आप की इत़ाअ़त का हुक्म दिया गया है और आप पर सुब्ह़ शाम रूहें पेश की जाती हैं ।(5)

---

❶... مستدرک، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ذکر افتاء عبد اللہ بن عمرو بن العاص، ۶۲۸/۴، حدیث: ۶۳۰۴

❷... تفسیر طبری، سورۃ الانبیاء، تحت الآیۃ: ۱۰۵، ۹/ ۹۹، حدیث: ۲۴۸۸۳

❸... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، شھادات، ۵/ ۵۶۷، حدیث: ۵۴۰

❹... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، شھادات، ۵/ ۵۶۷، حدیث: ۵۳۹

❺... الاصابۃ، حرف الخاء المعجمۃ باب ما ورد فی تعمیرہ و السبب فی ذلک، ۲/ ۲۵۱

अरवाह के बारे में अहम तरीन बहूस

इब्ने क़य्यिम ने कहा : मौत के बा'द रूहों के ठिकाने का मस्अला बहुत अ़ज़ीम है जो नुसूसे शरइय्या ही से ह़ल किया जा सकता है (या'नी अ़क़्ल को कोई दख़्ल नहीं), कहा गया है कि शहीद व ग़ैरे शहीद तमाम मोमिनीन की रूहें जन्नत में होती हैं सिवाए गुनाहे कबीरा के मुर्तकिब के, ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे हानी, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे बिश्र और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की मरविय्यात का ज़ाहिर इसी पर दलालत करता है और इस फ़रमाने बारी तआ़ला से भी येही समझ आता है :

فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ ﴿۸۸﴾ فَرَوْحٌ وَّ رَیْحَانٌ ۙ۬ وَّ جَنَّتُ نَعِیْمٍ ﴿۸۹﴾ (پ۲۷،الواقعة:۸۸۔۸۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है तो राह़त है और फूल और चैन के बाग़।*

रूह़ की तीन अक़्साम

जिस्म से निकलने के बा'द रूह़ की तीन अक़्साम हैं : (1) मुक़र्रबीन, इन के लिये चैन के बाग़ात की ख़बर दी गई है (2) अस्ह़ाबे यमीन (दाईं त़रफ़ वाले) इन के लिये सलामती का फ़ैसला हुवा है, येह अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ होंगी और (3) झुटलाने वाली गुमराह रूहें, इन के लिये खौलते पानी की मेहमानी और भड़कती आग में धंसाए जाने की ख़बर दी गई है।

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

یٰۤاَیَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِیْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِیَةً مَّرْضِیَّةً ﴿۲۸﴾ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ﴿۲۹﴾ وَ ادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ﴿۳۰﴾ (پ۳۰،الفجر:۲۷تا۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ इत़मीनान वाली जान अपने रब की त़रफ़ वापस हो यूं कि तू उस से राज़ी वोह तुझ से राज़ी फिर मेरे ख़ास बन्दों में दाख़िल हो और मेरी जन्नत में आ।*

कसीर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने इस आयते मुबारका के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : रूह़ के निकलते वक़्त बत़ौरे ख़ुश ख़बरी फ़िरिश्ता उसे येह कहेगा और उस की ताईद आले यासीन के मोमिन के मुतअ़ल्लिक़ इस फ़रमाने बारी तआ़ला से भी होती है :

قِیْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ؕ قَالَ یٰلَیْتَ قَوْمِیْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ (پ۲۳،یٰس:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *उस से फ़रमाया गया कि जन्नत में दाख़िल हो कहा किसी त़रह़ मेरी क़ौम जानती।*

येह भी कहा गया है कि अहादीसे मुबारका सिर्फ़ शुहदा के साथ मख़्सूस हैं जैसा कि दीगर रिवायतों से वाज़ेह होता है जब कि ग़ैरे शुहदा के मुतअ़ल्लिक़ येह फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी इसी पर दलालत करता है कि "जब तुम में से कोई मरता है तो उस का ठिकाना सुब्ह़ शाम उस पर पेश किया जाता है"[1] नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी इस ह़दीसे पाक से भी इसी की ताईद होती है कि मोमिनीन की रूहें सातवें आस्मान में होती हैं और वोह जन्नत में अपने ठिकानों को देखती हैं।[2] ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की रिवायत भी इसी त़रह़ है।

इब्ने ह़ज़्म ने एक गुरौह के मुतअ़ल्लिक़ कहा कि इस का ठिकाना वोही होगा जो रूह़ का जिस्म में आने से पहले था या'नी जो ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام के दाएं था वोह दाएं और जो बाएं था वोह बाएं होगा और इस पर क़ुरआन व ह़दीस दलील हैं। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِیْنَ ۙ﴿۱۷۲﴾

(پ۹، الاعراف: ۱۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं सब बोले क्यूं नहीं हम गवाह हुवे कि कहीं क़ियामत के दिन कहो कि हमें इस की ख़बर न थी।*

एक और मक़ाम पर इरशाद होता है :

وَ لَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓىٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۗۖ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ لَمْ یَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِیْنَ ﴿۱۱﴾

(پ۸، الاعراف: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और बेशक हम ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक़्शे बनाए फिर हम ने मलाइका से फ़रमाया कि आदम को सजदा करो तो वोह सब सजदे में गिरे मगर इब्लीस येह सजदे वालों में न हुवा।*

---

1 ... بخاری، کتاب الجنائز، باب المیت یعرض علیہ مقعدہ بالغداۃ والعشی، ۱/۴۶۵، حدیث: ۱۳۷۹

2 ... تاریخ اصبھان لابی نعیم، باب الالف، ۱/۲۰۳، رقم: ۲۸۱، احمد بن ابراھیم الکیال، حدیث: ۲۸۱

येह दुरुस्त है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रूहों को एक साथ पैदा फ़रमाया है, हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान इस की वाज़ेह दलील है कि "रूहें मख़्लूत़ लश्कर थीं जो आपस में जान पहचान रखती थीं वोह महब्बत करती हैं और जो अजनबी रह चुकीं वोह अलग रहती हैं।"(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रूहों से अपनी रबूबिय्यत का अ़हद और शहादत ली है, फ़िरिश्तों को हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के लिये सजदा करने के हुक्म से पहले बल्कि जिस्मों में दाख़िल होने से भी पहले रूहें अ़क़्ल व सूरत के साथ मौजूद थीं जब कि अज्साम उस वक़्त पानी व मिट्टी थे, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जहां चाहा उन रूहों को ठहराया और वोह ठहरने की जगह बरज़ख़ है जहां मौत के बा'द उन्हें लौटना है, फिर वोह बरज़ख़ से गुरौह दर गुरौह उठाई जाएंगी और उन जिस्मों में फूंक दी जाएंगी जो नुत्फ़े से पैदा किये गए।

येह भी दुरुस्त है कि रूहें ऐसे अज्साम थीं जो अपनी सिफ़ात या'नी जान पहचान व अजनबिय्यत के साथ मौजूद थीं और अ़क़्ल रखती थीं, पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जितना चाहे उन्हें दुन्या में रखता है फिर वफ़ात देता है तो वोह उस बरज़ख़ की त़रफ़ लौट जाती हैं जिस में शबे मे'राज हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आस्माने दुन्या पर सआ़दत मन्द रूहों को हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام की दाईं जानिब और बद बख़्तों को बाईं जानिब इस त़रह देखा कि वहां मिट्टी और आबो हवा बिल्कुल न थी बल्कि आस्मान के नीचे आग थी, इस से येह साबित नहीं होता कि दाएं और बाएं वाले बराबर थे बल्कि दाएं वाले बुलन्दी और कुशादगी में थे जब कि बाएं वाले इन्तिहाई नीचे क़ैद में थे और अम्बिया व शुहदा की अरवाह जन्नत में होती हैं।

हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ बिन राहवया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बिऐनिही येही कलाम ज़िक्र करने के बा'द फ़रमाया : इस पर उ़लमा का इजमाअ़ है।

इब्ने हज़्म ने कहा : तमाम अइम्मए इस्लाम का येही क़ौल है और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान भी येही है :

فَاَصْحٰبُ الْمَیْمَنَةِ ﳔ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَیْمَنَةِ ؕ (۸)
وَ اَصْحٰبُ الْمَشْــٴَـمَةِ ﳔ مَاۤ اَصْحٰبُ الْمَشْــٴَـمَةِ ؕ (۹)
وَ السّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ۚۙ (۱۰) اُولٰٓىٕكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ (۱۱)
فِیْ جَنّٰتِ النَّعِیْمِ (۱۲) (پ۲۷، الواقعة:۸تا۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो दहनी त़रफ़ वाले कैसे दहनी त़रफ़ वाले और बाईं त़रफ़ वाले कैसे बाईं त़रफ़ वाले और जो सबक़त ले गए वोह तो सबक़त ही ले गए वोही मुक़र्रबे बारगाह हैं चैन के बाग़ों में।*

---

(1)...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ارواح جنود مجندة، ۲/۴۱۳، حدیث: ۳۳۳۶

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِیْنَ ﴿۸۸﴾ فَرَوْحٌ وَّ رَیْحَانٌ ۙ۬ وَّ جَنَّتُ نَعِیْمٍ ﴿۸۹﴾ وَ اَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْیَمِیْنِ ﴿۹۰﴾ فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْیَمِیْنِ ﴿۹۱﴾ وَ اَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِیْنَ الضَّآلِّیْنَ ﴿۹۲﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِیْمٍ ﴿۹۳﴾ وَّ تَصْلِیَةُ جَحِیْمٍ ﴿۹۴﴾ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْیَقِیْنِ ﴿۹۵﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِیْمِ ﴿۹۶﴾

(پ۲۷، الواقعة:۸۸تا۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है तो राह़त है और फूल और चैन के बाग़ और अगर दह्नी त़रफ़ वालों से हो तो ऐ मह़बूब तुम पर सलाम है दह्नी त़रफ़ वालों से और अगर झुटलाने वालों गुमराहों में से हो तो उस की मेहमानी खोलता पानी और भड़कती आग में धंसाना येह बेशक आ'ला दरजे की यक़ीनी बात है तो ऐ मह़बूब तुम अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की पाकी बोलो।*

पस रूहें वहीं रहती हैं ह़त्ता कि उन के जिस्मों में फूंकने का वक़्त आ जाता है फिर वोह बरज़ख़ की त़रफ़ लौटाई जाएंगी, फिर क़ियामत क़ाइम होगी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन्हें उन के जिस्मों में लौटा देगा येह ह़याते सानिया हो गई। येह तमाम कलाम इब्ने ह़ज़्म का है।

बा'ज़ ह़ज़रात कहते हैं कि अरवाह़ अपनी क़ब्रों के किनारों पर होती हैं। इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने इस क़ौल को असह़ क़रार दिया और कहा : सुवालाते क़ब्र, ठिकाना पेश किया जाना, सवाब व अ़ज़ाबे क़ब्र, ज़ियारते क़ुबूर और मुर्दों को अ़क़्ल मन्द ज़िन्दा शख़्स की त़रह़ मुख़ात़ब कर के सलाम करने वाली तमाम अह़ादीस इस क़ौल की दलील हैं।

इब्ने क़य्यिम ने कहा : अगर इस क़ौल से मुराद येह है कि अरवाह़ हमेशा क़ब्रों से मुतअ़ल्लिक़ रहती हैं उन से जुदा ही नहीं होतीं तो येह बात किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ और ग़लत़ है, ठिकाना पेश किये जाने से येह साबित नहीं होता कि रूह़ क़ब्र के अन्दर या इस के किनारे पर है बल्कि ठिकाना पेश किये जाने के लिये बदन के साथ रूह़ का अदना इत्तिसाल भी काफ़ी है, रूह़ का एक अलग मक़ाम है वोह रफ़ीक़े आ'ला में होती है फिर भी बदन के साथ इत्तिसाल होता है इस त़रह़ कि जब कोई मुसलमान किसी साह़िबे क़ब्र को सलाम करे तो वोह जवाब देता है, ह़ालांकि रूह़ रफ़ीक़े आ'ला में होती है और जनाबे जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام को हुज़ूर

नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस त़रह़ मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि इन के 600 बाज़ू थे[1] जिन में दो बाज़ूओं ने उफ़ुक़ को ढांप रखा था फिर वोह आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इतने क़रीब हुवे कि अपने घुटने आप के मुबारक घुटनों के साथ मिला दिये और अपने हाथ आप की मुक़द्दस रानों पर रख दिये।[2] मुख़्लिस मोमिनों के दिल इस पर ईमान रखते हैं कि इस क़ुर्ब के वक़्त भी जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام आस्मानों में अपने मक़ाम पर थे।

और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام को देखने वाली ह़दीस में है : मैं ने निगाह बुलन्द की तो ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام इस त़रह़ नज़र आए कि वोह ज़मीनो आस्मान के माबैन अपनी एक टांग मोड़ कर दूसरी पर रखे हुवे कह रहे थे : یَا مُحَمَّدُ! اَنْتَ رَسُوْلُ اللہِ وَاَنَا جِبْرِیْل या'नी ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं और मैं जिब्रील हूं। अब मैं जिस त़रफ़ भी निगाह उठाता जिब्रील ही नज़र आते।[3] येही तावील रब तआ़ला के आस्माने दुन्या की त़रफ़ नुज़ूल फ़रमाने और अ़रफ़ा की शब आस्माने दुन्या से क़रीब होने या इस जैसी दीगर रिवायात की भी है क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़रकत व इन्तिक़ाल से पाक है।

यहां ग़ाइब को ह़ाज़िर पर क़ियास करने की वज्ह से लोगों को मुग़ालत़ा हुवा और येह गुमान कर लिया कि रूह़ भी अज्साम की त़रह़ है कि एक वक़्त में दो जगह नहीं हो सकती। ह़ालांकि येह सरीह़ ग़लत़ी है, हमारे प्यारे आक़ा, शबे असरा के दुल्हा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शबे मे'राज ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام को उन की क़ब्र में नमाज़ पढ़ते देखा[4] और छटे आस्मान पर भी देखा।[5] मा'लूम हुवा कि रूह़ आस्मान पर भी थी मगर इस का जिस्म से भी तअ़ल्लुक़ था कि वोह क़ब्र में नमाज़ पढ़ें और जो सलाम करे उस को सलाम का जवाब दें ह़ालांकि रूह़ रफ़ीक़े आ'ला में थी, पस इस के दो जगह बयक वक़्त मौजूद होने में कोई तआ़रुज़ नहीं क्यूंकि अरवाह़ की

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب فی ذکر سدرۃ المنتھی، ص۱۰۷، حدیث:۱۷۴

2 ...مسلم، کتاب الایمان، باب بیان الایمان والاسلام والاحسان...الخ، ص۲۱، حدیث:۸

3 ... سیرۃ ابن ھشام، مبعث النبی، ص۹۵

4 ... مسلم، کتاب الفضائل، باب من فضائل موسی، ص۱۲۹۳، حدیث:۲۳۷۵

5 ... مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللہ...الخ، ص۹۷، حدیث:۱۲۲

हैसिय्यत अज्साम की त़रह़ नहीं है। बा'ज़ लोग इस की मिसाल यूं देते हैं कि सूरज आस्मान में होता है मगर इस की शुआ़एं ज़मीन पर होती हैं। येह मिसाल मुकम्मल मुत़ाबक़त नहीं रखती क्यूंकि शुआ़एं तो सूरज का अ़र्ज़ हैं जब कि रूह़ बि नफ़्सिही उतरती है। शबे मे'राज हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को आस्मानों में देखना भी इसी त़रह़ था[1] और येह सह़ीह़ है क्यूंकि आप ने आस्मानों में उन की अरवाह़ को अज्साम की सूरत में देखा बा वुजूद इस के कि वोह ज़िन्दा हैं अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ते हैं।

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ صَلَّى عَلَيَّ عِنْدَ قَبْرِيْ سَمِعْتُهُ وَمَنْ صَلَّى عَلَيَّ نَائِيًا اُبْلِغْتُهُ या'नी जो मेरी क़ब्र के पास मुझ पर दुरूद पढ़ता है उसे मैं ख़ुद सुनता हूं और जो दूर से पढ़ता है उसे मुझ तक पहुंचाया जाता है।[2] ।[3]

क़ब्रे अन्वर पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते का इ़ल्म

एक और मक़ाम पर येह फ़रमाने मुस्त़फ़ा भी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी क़ब्र पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर किया है और उसे मख़्लूक़ के नाम भी दे दिये हैं पस क़ियामत तक जो भी मुझ पर दुरूद पढ़ेगा वोह उस का और उस के बाप का नाम मुझे पेश करेगा[4] (और कहेगा : येह फ़ुलां बिन फ़ुलां है जिस ने आप पर दुरूदे पाक पढ़ा है) ।[5]

येह ह़दीस दलालत कर रही है कि आप की रूह़े मुबारक क़ब्रे अन्वर में है और येह भी क़त़ई यक़ीनी बात है कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक आ'ला इ़ल्लिय्यीन में दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की अरवाह़ के साथ है और आ'ला इ़ल्लिय्यीन रफ़ीक़े आ'ला में है लिहाज़ा साबित हो गया कि रूह़ का इ़ल्लिय्यीन, जन्नत या आस्मानों में हो कर बदन से ऐसा इत्तिसाल होना कि वोह सुने, देखे, समझे, नमाज़ पढ़े और तिलावत करे इस में कोई मनाफ़ी बात नहीं

---

1 ...مسلم، کتاب الایمان، باب الاسراء برسول اللہ...الخ، ص۹۷، حدیث:۱۶۲

2 .....या'नी रौज़ए अत़्हर पर दुरूद पढ़ने वाले का दुरूद बिला वासित़ा सुनता हूं और दूर से पढ़ने वाले का दुरूद सुनता भी हूं और पहुंचाया भी जाता हूं क्यूंकि यहां दूर का दुरूद सुनने की नफ़ी नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 106)

3 ...شعب الایمان، باب فی تعظیم النبی واجلالہ وتوقیرہ، ۲/۲۱۸، حدیث:۱۵۸۳

4 ...مسند بزار، مسند عمار بن یاسر، ۴/۲۵۴، حدیث:۱۴۲۵

5 ...مجمع الزوائد، کتاب الادعیۃ، باب فی الصلوۃ علی النبی فی الدعاء وغیرہ، ۱۰/۲۵۱، حدیث:۱۷۲۹۱

है। इस बात को समझना इस लिये मुश्किल है कि दुन्या में कोई ऐसी मिसाल नहीं जिस के ज़रीए इसे समझा जा सके और वैसे भी बरज़ख़ के मुआमलात दुन्यावी त़र्ज़ पर नहीं होते। इब्ने क़य्यिम का कलाम ख़त्म हुवा।

रूह़ का जिस्म से पांच मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर तअ़ल्लुक़

इब्ने क़य्यिम ने दूसरी जगह कहा : रूह़ का जिस्म से पांच मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर तअ़ल्लुक़ होता है : (1) मां के पेट में (2) पैदाइश के बा'द (3) नींद में, यहां एक त़रह़ का तअ़ल्लुक़ होता और एक त़रह़ की जुदाई (4) बरज़ख़ में, यहां अगर्चे मौत की वज्ह से वोह जिस्म से जुदा हो जाती है मगर मुकम्मल त़ौर पर तअ़ल्लुक़ ख़त्म नहीं होता कि जिस्म की त़रफ़ तवज्जोह ही न रहे और (5) बरोज़े क़ियामत उठाए जाने के वक़्त, यहां रूह़ को जिस्म के साथ तमाम तअ़ल्लुक़ात से बढ़ कर तअ़ल्लुक़ होगा मा क़ब्ल जितने भी तअ़ल्लुक़ थे उन को इस से कोई निस्बत नहीं क्यूंकि इस तअ़ल्लुक़ के बा'द न नींद है न मौत और न ही फ़ना।

इब्ने क़य्यिम ने मज़ीद कहा : रूह़ का ह़रकत करना और एक जगह से दूसरी जगह जाना पलक झपकने की त़रह़ है, येह एक लम्ह़े में क़ब्र से आस्मान तक बुलन्द हो जाती है इस की दलील सोने वाले की रूह़ है यक़ीनन सोने वाले की रूह़ सातों आस्मानों को चीरती हुई अ़र्श पर जा कर रब عَزَّوَجَلَّ को सजदा करती है और फिर लम्ह़ा भर में वापस जिस्म में लौट आती है।

कुफ़्फ़ार की रूहों पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते का नाम

फिर इब्ने क़य्यिम ने बा'ज़ अक़्वाल नक़्ल किये कि रूहें या तो जाबिया में होती हैं या बिअरे रूमा में जब कि कुफ़्फ़ार की अरवाह़ बरहूत में होती हैं, फिर येह रिवायत नक़्ल की, कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन सा'लिब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि एक शख़्स ने कहा : मैं ने बरहूत में एक रात गुज़ारी तो वहां बहुत से लोगों की आवाज़ें सुनीं जो "या दौमह, या दौमह" कह रहे थे। एक किताबी का कहना है कि दौमह उस फ़िरिश्ते का नाम है जो कुफ़्फ़ार की रूहों पर मुक़र्रर है।

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : मैं ने मुतअ़द्दिद लोगों से बरहूत के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने कहा : वहां रात गुज़ारने की त़ाक़त किसी में नहीं है।

हज़्रते सय्यिदुना उ़मर बिन सुलैमान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : एक यहूदी जिस के पास एक मुसलमान की अमानत थी वोह मर गया, उस यहूदी का लड़का मुसलमान था मगर उसे येह मा'लूम नहीं था कि अमानत कहां रखी है। चुनान्चे, उस ने हज़्रते सय्यिदुना शुऐ़ब जुबाई رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को ख़बर दी तो उन्हों ने कहा : तुम हफ़्ते के दिन बरहूत जाओ वहां तुम्हें एक कुंवां नज़र आएगा, जब वोह नज़र आ जाए तो अपने बाप को आवाज़ लगा कर पूछ लेना वोह तुम्हें जवाब देगा। वोह लड़का हफ़्ते को बरहूत गया और कुंवां नज़र आते ही अपने बाप को दो तीन आवाज़ें लगाईं तो उस ने जवाब दिया, लड़के ने पूछा : फ़ुलां की अमानत कहां रखी है ? बाप ने कहा : दरवाज़े की चौखट के नीचे है, येह अमानत उसे दे देना और जिस दीन (इस्लाम) पर हो उसी पर रहना ।[1]

इब्ने क़य्यिम ने कहा : इन अक़्वाल को न तो क़त़ई त़ौर पर सह़ीह़ कहा जा सकता है और न ही ग़लत़ बल्कि सह़ीह़ बात येह है कि अरवाह़ अपने अपने मक़ामात के लिह़ाज़ से बरज़ख़ में मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर रहती हैं लिहाज़ा दलाइल में कोई तआ़रुज़ नहीं क्यूंकि हर दलील ख़ुश बख़्ती या बद बख़्ती में लोगों के मरातिब के लिह़ाज़ से है, कुछ अरवाह़ मलाए आ'ला में आ'ला इ़ल्लिय्यीन में होती हैं वोह ह़ज़्राते अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام की अरवाह़े मुक़द्दसा हैं और उन के मरातिब भी जुदागाना हैं जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मे'राज की शब मुलाह़ज़ा फ़रमाया।

कुछ रूहें सब्ज़ रंग के परन्दों के पोटों में हैं येह जन्नत में जहां चाहती हैं सैर करती हैं और येह बा'ज़ शुहदा की रूहें हैं क्यूंकि बा'ज़ शुहदा क़र्ज़ वग़ैरा की वज्ह से फ़िलह़ाल जन्नत में जाने से रोक दिये जाते हैं,[2] जैसा कि ह़ज़्रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जह़्श رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने दरबारे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! अगर मैं राहे ख़ुदा में शहीद हो जाऊं तो मुझे क्या मिलेगा ? इरशाद फ़रमाया : जन्नत। जब वोह जाने के लिये मुड़ा तो आप ने इरशाद फ़रमाया : सिवाए येह कि उस पर क़र्ज़ हो और येह पैग़ाम ह़ज़्रते जिब्रील عَلَيۡهِ السَّلَام अभी अभी मेरे पास लाए हैं।[3]

---

❶... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، من هتف من المقبرة بموعظة، ۶/۲۰، حدیث: ۲۲

❷... الروح، المسئلة الخامسة عشرة، فصل فی بیان قول من قال ان للارواح... الخ، ص۱۸۷ تا ۱۸۸

❸... مسند امام احمد، مسند الکوفیین، حدیث عبد الله بن جحش، ۷/۳۱، حدیث: ۱۹۰۹۹

बा'ज़ रूहें जन्नत के दरवाज़े पर होती हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا की ह़दीस में है।[(1)] बा'ज़ क़ब्र में क़ैद होती हैं जैसा कि ह़दीस में है : एक शख़्स ने ख़ैबर के माले ग़नीमत में से एक चादर चुराई थी तो वोह क़ब्र में उस पर आग का शो'ला बन कर भड़क रही है।[(2)] बा'ज़ अरवाह़ को ज़मीन में रोक दिया जाता है वोह मलाए आ'ला की त़रफ़ बुलन्द नहीं हो सकतीं क्यूंकि येह ज़मीनी सिफ़्ली रूहें होती हैं जो समावी रूहों के साथ जम्अ़ नहीं हो सकतीं जैसा कि दुन्या में उन के साथ जम्अ़ नहीं होतीं। पस मौत के बा'द रूह़ अपने जैसा अ़मल करने वालों की रूहों के साथ होती है क्यूंकि اَلْمَرْءُ مَعَ مَنْ اَحَبَّ या'नी आदमी उसी के साथ होगा जिस से मह़ब्बत करता है।[(3)]

बा'ज़ रूहें ज़ानियों के तन्नूरों में होती हैं और कुछ ख़ून की नहर में होती हैं, पस हर ख़ुश बख़्त व बद बख़्त रूह़ का ठिकाना अलग अलग है, अपने मुख़्तलिफ़ ठिकानों के बा वुजूद वोह क़ब्रों में मौजूद अपने अज्साम से इत्तिसाल रखती हैं ताकि उन के लिये जो सवाब या अ़ज़ाब मुक़द्दर है उसे पा सकें।[(4)] इब्ने क़य्यिम का कलाम ख़त्म हुवा।

10 हज़ार मक़्तूलीन

(मुसन्निफ़े किताब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं : इस क़ौल कि "रूह़ जिस्म के साथ मुत्तसिल और सवाब या अ़ज़ाब में शरीक होती है" की ताईद इस रिवायत से होती है : ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना हिज़्क़ील عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : एक फ़िरिश्ते ने आ कर मुझे

---

❶... الروح، المسئلة الخامسة عشرة، فصل فی بیان قول من قال ان للارواح... الخ، ص ۱۸۸
مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن العباس، ۱/۵۷۱، حدیث: ۲۳۹۰

❷... الروح، المسئلة الخامسة عشرة، فصل فی بیان قول من قال ان للارواح... الخ، ص ۱۸۸
بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ خیبر، ۳/۸۹، حدیث: ۴۲۳۴

❸... الروح، المسئلة الخامسة عشرة، فصل فی بیان قول من قال ان للارواح... الخ، ص ۱۸۸
مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب المرء مع من احب، ص ۱۴۱۹، حدیث: ۲۶۴۰

❹... الروح، المسئلة الخامسة عشرة، فصل فی بیان قول من قال ان للارواح... الخ، ص ۱۸۸

उठाया और मैदाने जंग में जा उतारा मैं ने वहां 10 हज़ार मक़्तूलीन को देखा जिन के गोश्त झड़ चुके और जोड़ अ़लाहि़दा हो चुके थे, मैं ने उन्हें पुकारा तो हर हड्डी अपनी जगह जा कर मिल गई फिर उस पर गोश्त और फिर खाल चढ़ने लगी, मुझे कहा गया : इन की रूहों को बुलाएं। मैं ने रूहों को बुलाया तो हर रूह़ अपने जिस्म में दाख़िल हो गई, जब सब बैठ गए तो मैं ने उन से उन का मुआ़मला पूछा, वोह कहने लगे : जब हमें मौत आई और रूहें जिस्मों से जुदा हो गईं तो हमें एक फ़िरिश्ता मिला जिस का नाम मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام है उस ने कहा : अपने आ'माल लाओ और अपना अपना अज्र ले लो क्यूंकि तुम्हारे लिये और तुम्हारे अगलों पिछलों के लिये हमारा येही क़ानून है। जब उस ने हमारे आ'माल देखे तो हमें बुतों की पूजा में मुलव्विस पाया चुनान्चे, हमारे जिस्मों पर कीड़े मकोड़े मुसल्लत़ कर दिये गए तो रूहें अज़िय्यत उठाने लगीं और रूहों पर रंजो ग़म मुसल्लत़ किया गया तो अज्साम तक्लीफ़ में मुब्तला हो गए, हमें मुसलसल येह अ़ज़ाब हो रहा था कि आप ने बुला लिया।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने फ़रमाया : अह़ादीस इस बात पर दलालत करती हैं कि जन्नत में रहना शुहदा की अरवाह़ के साथ ख़ास है और ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ह़दीस और इस जैसी दूसरी रिवायात को शुहदा पर मह़मूल करेंगे अलबत्ता ग़ैरे शुहदा की अरवाह़ जन्नत में नहीं होतीं बल्कि कभी आस्मान और कभी क़ब्रों के किनारों पर होती हैं और येह भी कहा गया है कि वोह बिला नाग़ा हर जुमुआ़ अपनी क़ब्रों पर आती हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : ह़दीसे जरीदा (तर शाख़ वाली ह़दीस) इस बात पर दलालत करती है कि रूहें क़ब्र में सवाब या अ़ज़ाब पाती हैं।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : बा'ज़ शुहदा की रूहें जन्नत से बाहर बाबे जन्नत पर जारी नहर के किनारे होती हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की ह़दीस में है और येह इस वज्ह से है कि इन्हें क़र्ज़ या हुक़ूक़ुल इबाद में से किसी और ह़क़ के सबब जन्नत से रोका गया होता है।(3)

---

1 ... الزھد امام احمد، زھد یوسف، ص۱۱۷، حدیث: ۴۲۵

2 ... التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء ان ارواح الشھداء فی الجنۃ دون ارواح غیرھم، ص ۱۴۹

3 ... التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء ان ارواح الشھداء فی الجنۃ دون ارواح غیرھم، ص ۱۵۰
مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن العباس، ۱/۵۷۱، حدیث: ۲۳۹۰

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिन गुनाहों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मन्अ़ किया है उन में से उस के नज़दीक सब से बड़ा जुर्म येह है कि इन्सान क़र्ज़ ले कर मरे जिस की अदाएगी के लिये माल न छोड़े ।(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़लमा का मौक़िफ़ है कि तमाम मोमिनीन की रूहें जन्नतुल मावा में होती हैं और उसे जन्नतुल मावा इसी लिये कहते हैं क्यूंकि तमाम रूहें उस की त़रफ़ लौटती हैं, वोह अ़र्श के नीचे है, रूहें उस की ने'मतों और पाकीज़ा हवा से लुत़्फ़ अन्दोज़ होती हैं । पहला क़ौल ज़ियादा सह़ीह़ है ।(2)

हज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْبَر अपने फ़तावा में फ़रमाते हैं : मोमिनीन की रूहें इ़ल्लिय्यीन और कुफ़्फ़ार की सिज्जीन में होती हैं और हर रूह़ का अपने जिस्म से एक मा'नवी तअ़ल्लुक़ होता है, येह तअ़ल्लुक़ दुन्यावी तअ़ल्लुक़ जैसा नहीं होता अलबत्ता सोने वाले की कैफ़िय्यत इस के ज़ियादा मुशाबेह है उस की रूह़ अगर्चे परवाज़ करती है मगर जिस्म से मज़बूत़ तअ़ल्लुक़ क़ाइम रहता है । अब इ़ल्लिय्यीन, सिज्जीन या क़ब्र के किनारे होने के ह़वाले से जो तआ़रुज़ था वोह ख़त्म हो गया, रूहें जहां भी हों उन का जिस्म से तअ़ल्लुक़ रहता है और फिर वोह अपने ठिकाने इ़ल्लिय्यीन या सिज्जीन की त़रफ़ चली जाती हैं ह़त्ता कि अगर मय्यित को एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में मुन्तक़िल किया जाए तब भी येह तअ़ल्लुक़ बाक़ी रहता है चाहे आ'ज़ा बिखर ही क्यूं न जाएं !

सय्यिदुना जा'फ़र त़य्यार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की उड़ान

(मुसन्निफ़े किताब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि मोमिनीन की अरवाह़ के इ़ल्लिय्यीन में होने की ताईद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की इस रिवायत से भी होती है कि हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत के बा'द इरशाद फ़रमाया : आज रात मेरे पास से जा'फ़र गुज़रे वोह फ़िरिश्तों की एक जमाअ़त के पीछे उड़ रहे थे उन के दो पर थे जिन का अगला ह़िस्सा ख़ून से रंगीन था और वोह सब यमन के शहर बैशा की त़रफ़ जा रहे थे ।(3)

---

❶... ابو داود، کتاب البیوع، باب فی التشدید فی الدین، ۳/۳۳۴، حدیث: ۳۳۴۲

❷... التذکرۃ للقرطبی، باب ما جاء ان ارواح الشھداء فی الجنۃ دون ارواح غیرھم، ص ۱۵۱

❸... تاریخ ابن عساکر، ۷۲/۱۳۴، رقم: ۹۸۰۳: جعفر بن ابی طالب، حدیث: ۱۴۱۳۳

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब दान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने फ़िरिश्तों की जमाअ़त में जा'फ़र को पहचान लिया जो बैशा वालों को बारिश की ख़ुश ख़बरी सुनाने जा रहे थे।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा थे और ह़ज़रते अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا भी आप के क़रीब ही थीं कि अचानक आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब दिया और इरशाद फ़रमाया : ऐ अस्मा ! येह जा'फ़र थे जो ह़ज़रते जिब्रील और ह़ज़रते मीकाईल (عَلَيْهِمَا السَّلَام) के साथ यहां से गुज़रे तो उन्हों ने सलाम किया और मुझे बताया कि मैं फ़ुलां फ़ुलां दिन मुशरिकीन से लड़ा तो मेरे बदन के सिर्फ़ अगले हिस्से पर नेज़े और तल्वार के 73 ज़ख़्म लगे, फिर मैं ने झन्डा दाएं हाथ में पकड़ लिया वोह कट गया तो बाएं में पकड़ लिया फिर वोह भी काट दिया गया पस इन दोनों हाथों के बदले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे दो पर अ़ता फ़रमा दिये जिन के ज़रीए़ मैं ह़ज़रते जिब्रील और ह़ज़रते मीकाईल (عَلَيْهِمَا السَّلَام) के साथ परवाज़ करता हूं, मैं जन्नत में जहां चाहता हूं जाता हूं और उस का जो फल चाहता हूं खाता हूं। ह़ज़रते अस्मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا ने कहा : ह़ज़रते जा'फ़र के लिये ख़ुश ख़बरी है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बेहतरीन रिज़्क़ अ़ता फ़रमाया है, लेकिन मैं डरती हूं क्यूंकि लोग इस बात को नहीं मानेंगे, आप ख़ुद मिम्बर पर जल्वा फ़रमा हो कर लोगों को इस की ख़बर दे दीजिये। चुनान्चे, प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना की फिर इरशाद फ़रमाया : बेशक जा'फ़र बिन अबू त़ालिब ह़ज़रते जिब्रील और ह़ज़रते मीकाईल (عَلَيْهِمَا السَّلَام) के साथ गुज़रे हैं उन के दो पर थे जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन के दो हाथों के बदले अ़ता फ़रमाए हैं और उन्हों ने मुझे सलाम किया है। फिर आप ने पूरी बात बयान फ़रमाई।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी ह़दीस कि نَسَمَةُ الْمُؤْمِنِ طَائِرٌ या'नी मोमिन की जान (रूह़) परन्दा है[3] इस के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से साबित होता है कि मोमिन की रूह़ परन्दा होती है या'नी

1... الكامل لابن عدی، ۶/۴۲۶، رقم: ۱۳۸۹: عیسی بن عبد اللہ بن محمد بن عمر بن علی بن ابی طالب

2... مستدرک حاکم، کتاب معرفة الصحابة، ذکر قصة شهادة جعفر بلسانه بعد شهادته، ۴/۲۱۹، حدیث: ۴۹۹۰

3... نسائی، کتاب الجنائز، باب ارواح المؤمنين، ص ۳۴۸، حدیث: ۲۰۷۰

परन्दे की शक्ल में होती है, परन्दे के अन्दर नहीं होती, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत कि "शुहदा की रूहें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां सब्ज़ परन्दों की त़रह हैं"(1) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत कि "वोह सब्ज़ परन्दों में उड़ती फिरती हैं"(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत कि "सफ़ेद परन्दों की सूरत में होती हैं"(3) और ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की रिवायत कि "शुहदा की रूहें सब्ज़ परन्दे हैं।"(4) इन सब से साबित होता है कि इन की अरवाह़ परन्दे बन जाती हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम कुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : येह रिवायात उन रिवायतों से ज़ियादा सह़ीह़ हैं जिन में कहा गया है कि रूहें परन्दों के पोटों में होती हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली बिन मुह़म्मद क़ाबिसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं : येह जो रिवायत है कि فِیْ حَوَاصِلِ طَیْرٍ خُضْرٍ या'नी रूहें सब्ज़ परन्दों के पोटों में होती हैं। उ़लमा ने इस का इन्कार किया है, इस की वज्ह येह है कि यूं उन का मकान तंग हो जाएगा और वोह क़ैद हो जाएंगी। इस का रद करते हुवे कहा गया कि येह रिवायत साबित है अलबत्ता इस में तावील का एह़तिमाल है कि (अ़रबी मतन में मज़्कूर लफ़्ज़) "فِیْ" (या'नी "में") को "عَلٰی" (या'नी "पर") के मा'ना में ले लिया जाए इस सूरत में मा'ना होगा : इन की रूहें परन्दों के पोटों पर हैं जैसा कि इस फ़रमाने बारी तआ़ला में "فِیْ" का "लफ़्ज़" "عَلٰی" के मा'ना में है :

وَلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِیْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ۫

(پ۱۶، طٰهٰ:۷۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हें खजूर के डन्ड (सूखे तने) पर सूली चढ़ाऊंगा।*

और येह भी जाइज़ है कि परन्दे को पोटा कह दिया जाए क्यूंकि परन्दा इस का इह़ात़ा किये हुवे और इस पर मुश्तमिल होता है। येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ह़क़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क़ौल है।(5)

---

❶... ابن ماجہ، کتاب الجھاد، باب فضل الشھادۃ فی سبیل اللہ، ۳/۳۶۲، حدیث: ۲۸۰۱

❷... الاستذکار، کتاب الجنائز، باب جامع الجنائز، ۲/۲۱۵، تحت الحدیث: ۲۹۲

مصنف عبد الرزاق، کتاب الجھاد، باب اجر الشھادۃ، ۵/۱۷۸، حدیث: ۹۶۲۰

❸... الزھد لابن المبارک ما رواہ نعیم بن حماد...الخ، باب فی ارواح المؤمنین، ص ۴۲، حدیث: ۱۶۴

❹... ترمذی، کتاب فضائل الجھاد، باب ما جاء فی ثواب الشھداء، ۳/۲۴۰، حدیث: ۱۶۴۶

❺... التذکرۃ للقرطبی، باب ما جاء ان ارواح الشھداء فی الجنۃ دون ارواح غیرھم، ص ۱۵۲

जब कि इन के इलावा का कहना है : येह भी मुमकिन है कि वोह ह़क़ीक़तन परन्दों के पोटों में ही हों और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन पोटों को फ़ज़ा से भी ज़ियादा वसीअ़ फ़रमा दे।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने दिह़्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने "अत्तनवीर" में ज़िक्र किया कि मुतकल्लिमीन की एक जमाअ़त ने कहा : येह रिवायत मुन्कर है क्यूंकि दो रूहें एक जिस्म में नहीं हो सकतीं येह मुह़ाल है। मुतकल्लिमीन की येह बात ह़क़ाइक़ से अ़दम वाक़िफ़िय्यत की बिना पर है और अह्ले सुन्नत व जमाअ़त पर ए'तिराज़ है, क्यूंकि ह़दीस के मा'ना बिल्कुल वाज़ेह़ हैं कि शहीद की रूह़ जो दुन्या में उस के अपने जिस्म के अन्दर थी वोह बा'द में परन्दे जैसे एक दूसरे जिस्म के अन्दर रख दी जाती है और पहले जिस्म की त़रह़ अब येह दूसरे जिस्म में होती है, येह बरज़ख़ी मुद्दत होती है ह़त्ता कि बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस के अस्ल जिस्म में लौटा देगा जैसे पहले उसे पैदा फ़रमाया था। हां, अ़क़्ल में न आने वाली बात येह है कि दो जानें (रूहें) एक जिस्म में इस त़रह़ जम्अ़ हों कि वोह जिस्म इन दोनों की मदद से ज़िन्दा रहे। लेकिन एक ही जिस्म में रूहों का जम्अ़ होना मुह़ाल नहीं, क्यूंकि एक बच्चा अपनी मां के पेट में होता है मगर उस की रूह़ मां की रूह़ के इलावा होती है लेकिन दोनों को एक ही जिस्म घेरे हुवे होता है।

हां येह ए'तिराज़ बन सकता है कि शहीद की रूह़ के इलावा परन्दे की एक अपनी रूह़ भी होती है और दोनों एक ही जिस्म में जम्अ़ हो जाएं येह कैसे हो सकता है? इस का जवाब येह है कि रिवायत में "सब्ज़ परन्दों के क़ालिब में" होने का मत़लब है "सब्ज़ परन्दों की शक्ल में" होंगी जैसे हम कहते हैं : मैं ने फ़िरिश्ते को इन्सानी सूरत में देखा।[2] येह बिल्कुल वाज़ेह़ बयान है।

मौत का मा'ना व मफ़्हूम

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ (پ۴، اٰل عمران:۱۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह (अपने रब के पास) ज़िन्दा हैं।

---

1 ... سبل الھدی والرشاد، الباب الثالث عشر فی غزوۃ احد، ۲۵۵/۴

2 ... الروض الانف، الشھادۃ والشھداء، ۳۰۸/۳

हज़रते सय्यिदुना शैख़ इज़्ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी किताब "अमाली" में येह आयते त़य्यिबा नक़्ल करने के बा'द फ़रमाते हैं : अगर कहा जाए कि तमाम मुर्दों का येही ह़ाल (या'नी अरवाह़ का परन्दों में मुन्तक़िल होना) है तो फिर आयत में शुहदा को ख़ास क्यूं किया गया ? इस का जवाब येह है कि सब का येह ह़ाल नहीं होगा क्यूंकि मौत के मा'ना हैं : "जिस्म से रूह़ का निकाल लेना" जैसा कि फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اَللّٰہُ یَتَوَفَّی الْاَنْفُسَ حِیْنَ مَوْتِہَا

(پ۲۴، الزمر: ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त।

या'नी उन्हें जिस्मों से मुकम्मल त़ौर पर निकाल लेता है और शहीद की रूह़ सब्ज़ परन्दे की त़रफ़ मुन्तक़िल होती है यूं वोह एक जिस्म से दूसरे जिस्म में जाती है जब कि दीगर की अरवाह़ किसी दूसरे जिस्म में नहीं जातीं।

जहां तक ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ह़दीस "मोमिन की रूह़ परन्दा है"[1] का तअ़ल्लुक़ है तो इस उ़मूम से मुजाहिदीन मुराद हैं क्यूंकि ह़दीसे पाक में येह भी आया है कि क़ब्र में रूह़ पर इस का जन्नती या दोज़ख़ी ठिकाना पेश किया जाता है[2] और हमें भी हुक्म है कि हम क़ब्रिस्तान जाएं तो सलाम करें[3], अगर रूहें जान पहचान की सलाह़िय्यत न रखतीं तो इस हुक्म का कोई फ़ाएदा न होता।

(मुसन्निफ़े किताब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं :) मेरा मुख़्तार येह है कि शुहदा की रूहें परन्दों में होती हैं ख़ुद परन्दा नहीं होतीं इस की ताईद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا वाली ह़दीस से होती है कि येह अरवाह़ दूसरे जिस्म में सुवार होती हैं, येह रिवायत अगर्चे मौक़ूफ़ है मगर मरफ़ूअ़ के हुक्म में है क्यूंकि ऐसी बात कोई अपनी त़रफ़ से नहीं कह सकता और मैं ने इस जैसी एक मरफ़ूअ़ रिवायत भी देखी है।[4]

---

1 ... ابن ماجه، كتاب الزهد، باب ذكر القبر والبلى، ۴/۵۰۳، حديث: ۴۲۷۱

2 ... بخاری، كتاب الجنائز، باب الميت يعرض عليه مقعده بالغداة والعشى، ۱/۴۶۵، حديث: ۱۳۷۹

3 ... ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ما جاء فيما يقال إذا دخل المقابر، ۲/۲۴۰، حديث: ۱۵۴۷

4 ... اتحاف السادة المتقين، كتاب ذكر الموت وما بعده، الباب السابع، ۱۴/۳۲۱

सब से कम मर्तबा शहीद

हज़रते सय्यिदुना इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबू फ़रवा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है कि एक अहले इल्म से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : शुहदा की तीन क़िस्में हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां उन में सब से कम मर्तबा वोह है जो अपनी जानो माल के साथ मजबूरन निकला, उस का इरादा क़त्ल करने या शहीद होने का नहीं मगर अचानक उसे एक तीर आ लगा तो उस के ख़ून का पहला क़त्रा गिरते ही उस के पिछले तमाम गुनाह बख़्श दिये गए, फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये आस्मान से एक जिस्म उतारता है जिस में उस की रूह़ को रख कर बारगाहे इलाही में पेश किया जाता है, वोह जिस आस्मान से गुज़रता है फ़िरिश्ते गुरौह दर गुरौह उस के पीछे हो लेते हैं ह़त्ता कि वोह बारगाहे इलाही में पहुंच कर सजदे में गिर जाता है, हुक्म होता है : इसे रेशम के 70 लिबास पहनाए जाएं। फिर कहा जाता है : इसे इस के शहीद भाइयों में ले जाओ और उन के पास छोड़ दो, वोह शुहदा जन्नती दरवाज़े पर बने सब्ज़ गुम्बदों में होते हैं और जन्नत से उन का खाना आता है, जब वोह उन के पास जाता है तो वोह उस से ऐसे सुवालात करते हैं जैसे तुम अपने शहरों से वापस आने वाले मुसाफ़िर से करते हो, वोह पूछते हैं : फ़ुलां फ़ुलां क्या कर रहा था ? वोह कहता है : फ़ुलां तो मुफ़्लिस हो गया। वोह पूछते हैं : उस ने अपना माल कैसे ज़ाएअ़ किया ह़ालांकि वोह तो बड़ा होशयार मालदार ताजिर था ? जिसे तुम मुफ़्लिस समझते हो हम उसे मुफ़्लिस नहीं कहते बल्कि हमारे नज़्दीक मुफ़्लिस वोह है जिस के नेक आ'माल कम हों। फिर पूछते हैं : फ़ुलां शख़्स ने अपनी बीवी के साथ क्या बरताव किया ? वोह बताता है कि उस ने त़लाक़ दे दी। वोह कहते हैं : आख़िर ऐसा क्या हो गया कि त़लाक़ दे दी ख़ुदा की क़सम ! उन में तो बहुत मह़ब्बत थी। फिर पूछते हैं : फ़ुलां क्या कर रहा था ? वोह कहता है : वोह तो मुझ से पहले मर चुका है। वोह कहते हैं : ब ख़ुदा ! वोह हलाक हो गया, हम ने उस का कोई तज़्किरा नहीं सुना, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दो रास्ते बनाए हैं एक हमारी त़रफ़ आता है और एक हमारी मुख़ालिफ़ सम्त (जहन्नम) की त़रफ़ जाता है, जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उस बन्दे का गुज़र हमारे पास से होता है यूं हमें मा'लूम हो जाता है कि वोह कब मरा और जब किसी के साथ रब तआ़ला की त़रफ़ से भलाई का इरादा नहीं होता तो उसे हमारी मुख़ालिफ़ सम्त ले जाया जाता है यूं हम उस से बे ख़बर रहते हैं।(1)

1...الزھد لھناد بن السری، باب منازل الشھداء، الجزء الاول، ص۱۲۷، حدیث:۱۶۷

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़य्यान बिन जब्ला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : शहीद जब जामे शहादत नोश करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये बहुत ख़ूब सूरत जिस्म नाज़िल फ़रमाता है, फिर उस की रूह़ को हुक्म होता है उस में दाख़िल हो जा । वोह अपने पहले जिस्म की त़रफ़ देखती है कि उस के साथ क्या होगा, वोह कलाम करता है और समझता है लोग उसे सुन रहे हैं, लोगों को देखता है और समझता है लोग भी उसे देख रहे हैं ह़त्ता कि उस के पास उस की बीवियां या'नी ह़ूरे ऐ़न आती हैं और उसे अपने साथ ले जाती हैं ।(1)

साह़िबे इफ़्साह़ फ़रमाते हैं : ने'मत वाली रूहें मुख़्तलिफ़ ह़ालतों में हैं, कुछ जन्नती दरख़्तों पर परन्दों की त़रह़, कुछ सब्ज़ परन्दों के पोटों में, कुछ अ़र्श के नीचे क़िन्दीलों में, कुछ सफ़ेद परन्दों के पोटों में, कुछ चिड़यों के पोटों में, कुछ जन्नती लोगों की सूरतों में, कुछ अपने आ'माले सालेह़ा से पैदा की गई सूरतों में, कुछ अपनी ह़ालत पर रहती हैं, सैर करती हैं और अपने जिस्मों की मुलाक़ात को आती हैं और कुछ मरने वालों की रूह़ों से मुलाक़ात करती हैं और जो इन के इ़लावा हैं उन में से कुछ ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल कुछ ह़ज़रते सय्यिदुना आदम और कुछ ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की कफ़ालत में हैं ।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरत़ुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : साह़िबे इफ़्साह़ की बात बहुत अच्छी है क्यूंकि इस से तमाम अह़ादीसे मुबारका में तत़बीक़ हो जाती है ।(2)

शबे मे'राज अम्बिया से मुलाक़ात

(मुसन्निफ़े किताब ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि इस की ताईद मे'राज वाली रिवायत से होती है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : फिर मैं दूसरे आस्मान पर पहुंचा तो ह़ज़रते ईसा व ह़ज़रते यह़्या (عَلَیْہِمَا السَّلَام) को उन की उम्मत के चन्द लोगों के साथ देखा, तीसरे आस्मान पर ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام और उन के हमराह उन की उम्मत के

❶... اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۶۴

❷... التذکرۃ للقرطبی، باب ما جاء ان ارواح الشھداء فی الجنۃ دون ارواح غیرھم، ص ۱۵۲

कुछ लोग थे, चौथे आस्मान पर ह़ज़रते इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام और उन के हमराह उन की उम्मत के कुछ अफ़राद थे, पांचवें पर ह़ज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथ उन की उम्मत के कुछ अफ़राद थे, छटे आस्मान पर ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपनी उम्मत के कुछ लोगों के साथ मौजूद थे, जब मैं सातवें आस्मान पर पहुंचा तो वहां ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और उन के साथ उन की उम्मत के कुछ लोग थे, मुझे कहा गया : येह आप का और आप की उम्मत का मक़ाम है, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह आयते मुबारका तिलावत की :

اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ (پ۳،اٰلِ عمران:۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक सब लोगों से इब्राहीम के ज़ियादा ह़क़दार वोह थे जो उन के पैरू हुवे और येह नबी और ईमान वाले ।*

फिर इरशाद फ़रमाया : मैं ने अपनी उम्मत को दो हिस्सों पर देखा, एक हिस्से पर ऐसे सफ़ेद लिबास थे गोया कोरे काग़ज़ हों और दूसरे पर मटयाले लिबास थे ।(1)

येह ह़दीसे पाक अरवाह़ के मुख़्तलिफ़ मरातिब पर दलालत कर रही है नीज़ येह कि हर आस्मान में एक उम्मत है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : कुछ अरवाह़ बरज़ख़ में घूमती, दुन्या और फ़िरिश्तों के अह़वाल का मुशाहदा करती और आस्मान में लोगों के अह़वाल के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगू करती हैं, कुछ रूहें अ़र्श के नीचे होती हैं और कुछ रूहें अय्यामे ज़िन्दगी में इताअ़ते इलाही की मिक़्दार जन्नतों में जहां चाहती हैं उड़ती फिरती हैं ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی अपनी किताब "इस्बातु अ़ज़ाबिल क़ब्र" में अरवाहे़ शुहदा के बारे में ह़दीसे इब्ने मसऊ़द और ह़दीसे इब्ने अ़ब्बास(3) नक़्ल करने के बा'द बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीसे बरा बिन आ़ज़िब को लाए हैं कि "जब ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का विसाल हुवा तो आप ने इरशाद फ़रमाया : इस के लिये जन्नत में एक दूध पिलाने वाली है ।"(4)

---

1 ... دلائل النبوة للبیهقی، باب الدلیل علی ان النبی عرج به الی الاسماء...الخ، ۲/۳۹۳
تفسیر الطبری، سورۂ بنی اسرائیل، تحت الآیة:۱، ۸/۱۲، حدیث:۲۲۰۲۳

2 ... نوادر الاصول، الاصل التاسع والستون والمائة، ۱/۶۷۰، تحت الحدیث:۹۲۰

3 ... اثبات عذاب القبر، باب الدلیل علی ان الله تعالٰی یخلق علی من فارق الدنیا...الخ، ص۶۷، ۶۸، حدیث:۷۶، ۷۸

4 ... بخاری، کتاب الجنائز، باب ما قیل فی اولاد المسلمین، ۱/۴۶۶، حدیث:۱۳۸۲

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने शहज़ादे के लिये फ़ैसला फ़रमा दिया कि वोह जन्नत में दूध पियेंगे हालांकि वोह मदीने के क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हैं ।(1)

इब्ने क़य्यिम ने कहा : इस ह़दीसे पाक कि "रूह़ परन्दा बन कर जन्नत के दरख़्त पर रहती है" और इस ह़दीसे पाक कि "क़ब्र में मुर्दे पर उस का ठिकाना पेश किया जाता है बल्कि रूह़ जन्नत की नहरों में तैरती और जन्नती फल खाती है" इन में तआ़रुज़ नहीं क्यूंकि मय्यित यौमे जज़ा से पहले अपने ठिकाने में नहीं ठहरेगी इस की दलील येह है कि उस वक़्त शुहदा की रूहों का मक़ाम वोह नहीं होगा जो अभी बरज़ख़ में है क्यूंकि जन्नत में कामिल दाख़िला कामिल इन्सान के लिये होगा या'नी रूह़ और जिस्म का एक साथ दाख़िला जब कि फ़क़त़ रूह़ का जन्नत में दाख़िल होना येह एक अलग मुआ़मला है ।

रूह़ की चार अक़्साम

हज़रते सय्यिदुना इमाम नसफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی "बह़रुल कलाम" में फ़रमाते हैं कि रूह़ की चार क़िस्में हैं ।

(1) हज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की अरवाह़ कि वोह अपने अज्साम से जुदा होती हैं तो उन की सूरतों की मिसाल मुश्क व काफ़ूर जैसी हो जाती हैं और वोह जन्नत में खाती, पीती और लुत़्फ़ अन्दोज़ होती हैं और रात को अ़र्श के नीचे मुअ़ल्लक़ क़िन्दीलों में ठहरती हैं ।

(2) शुहदा की रूहें, येह जिस्म से निकल कर सब्ज़ परन्दों के पोटों में चली जाती हैं, जन्नत में खाती, पीती और लुत़्फ़ अन्दोज़ होती हैं और रात को ज़ेरे अ़र्श लटकी क़िन्दीलों में बसेरा करती हैं ।

(3) फ़रमां बरदार मुसलमानों की रूहें, येह जन्नत के सेह़न में होती हैं, वहां से न खाती पीती हैं न लुत़्फ़ अन्दोज़ होतीं हैं बस जन्नत का नज़ारा करती हैं ।

(4) ना फ़रमान मुसलमानों की रूहें, येह ज़मीनो आस्मान के दरमियान फ़ज़ा में रहती हैं । जब कि काफ़िरों की रूहें सियाह परन्दों के पोटों में सातवीं ज़मीन के नीचे सिज्जीन में होती हैं, इन को अपने जिस्म से तअ़ल्लुक़ होता है लिहाज़ा रूहों पर अ़ज़ाब होता है तो जिस्म इस से तक्लीफ़ उठाते हैं जैसा कि सूरज आस्मान में है और उस की रौशनी ज़मीन में ।(2)

---

1 ...اثبات عذاب القبر، باب الدلیل علی أن اللہ تعالی یخلق علی من فارق الدنیا . . . الخ، ص۲۹، حدیث: ۸۱

2 ... بحر الکلام للنسفی، الباب الخامس، الفصل الثالث، المبحث الثانی: مکان الارواح فی البرزخ، ص ۲۵۴

हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ इब्ने रजब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : اَمَّا الْاَنْبِیَاءُ عَلَیْھِمُ السَّلَامُ فَلَا شَكَّ اَنَّ اَرْوَاحَھُمْ عِنْدَ اللهِ فِیْ اَعْلٰی عِلِّیِّیْن या'नी हज़राते अम्बियाए किराम عَلَیْھِمُ السَّلَام की अरवाह़ के मुतअ़ल्लिक़ कोई शक नहीं कि वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास आ'ला इ़ल्लिय्यीन में होती हैं।[1]

येह बात ह़दीसे सह़ीह़ से साबित है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने वक़्ते विसाल जो आख़िरी कलाम फ़रमाया था वोह येह था : اَللّٰھُمَّ الرَّفِیْقَ الْاَعْلٰی या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रफ़ीक़े आ'ला अ़ता फ़रमा।[2]

एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से अ़र्ज़ की : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर्दा फ़रमा कर कहां आराम फ़रमा हैं ? फ़रमाया : जन्नत में।[3]

अक्सर उ़लमाए किराम के नज़्दीक शुहदा भी जन्नत में हैं और ब कसरत अह़ादीसे करीमा इसी को साबित करती हैं।[4] जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुस्लिम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه की ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू दावूद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْھِمَا की ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से मरवी अह़ादीसे करीमा और इन के इ़लावा दीगर रिवायात जो पीछे गुज़र चुकीं। इन के इ़लावा भी ऐसी रिवायात मौजूद हैं। चुनान्चे,

सच्चा ख़्वाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अच्छे ख़्वाबों से ख़ुश होते थे और इरशाद फ़रमाया करते थे : क्या तुम में से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है ? जब कोई अन्जान शख़्स आ कर ख़्वाब बयान करता तो उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछते, अगर उसे नेक बताया जाता तो उस के ख़्वाब पर ख़ुश होते। चुनान्चे, एक दिन एक ख़ातून ह़ाज़िरे बारगाह हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं ने ख़्वाब में ख़ुद को जन्नत में दाख़िल होते देखा, इतने में किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनी

❶... اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۲۰
❷... بخاری، کتاب المغازی، باب آخر ما تکلم بہ النبی، ۳/ ۱۲۰، حدیث: ۴۴۶۳
❸... مصنف عبد الرزاق، کتاب الجامع، باب اصحاب النبی، ۱۰/ ۲۲۴، حدیث: ۲۰۵۷۴
❹... اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۲۱

जिस से जन्नत हिल गई, देखा कि फ़ुलां बिन फ़ुलां जन्नत में आया है ह़त्ता कि मैं ने इसी त़रह़ बारह अफ़राद गिने, इस ख़्वाब के वाक़िए से क़ब्ल आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुजाहिदीन का एक गुरौह जिहाद पर रवाना किया था। वोह ख़ातून मज़ीद कहती हैं : उन अफ़राद को जन्नत में लाया गया, उन पर अत़्लस के कपड़े थे और उन की गर्दन की रगों से ख़ून निकल रहा था। हुक्म दिया गया कि उन्हें नहरे बैदख़ में ग़ौत़ा दो, जब ग़ौत़ा दे कर उन्हें निकाला गया तो उन के चेहरे चौधवीं के चांद की मानिन्द चमक रहे थे फिर उन के लिये सोने की कुरसियां लाई गईं, वोह उन पर बैठ गए फिर उन के सामने सोने के त़श्त में ताज़ा खजूरें रखीं गईं जो उन्हों ने ह़स्बे मन्शा तनावुल कीं, वोह उस त़श्त में जहां से चाहते अपनी पसन्द का फल खाते, मैं ने भी उन के साथ खाया। फिर जब क़ासिद ने आ कर ख़बर दी कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! जंग में ऐसा ऐसा हुवा और फ़ुलां फ़ुलां शहीद हो गया ह़त्ता कि उस ने बारह अफ़राद का ज़िक्र किया तो आप ने हुक्म दिया कि उस ख़ातून को मेरे पास बुला कर लाओ। वोह आई तो इरशाद फ़रमाया : इस क़ासिद को अपना ख़्वाब सुनाओ। जब वोह सुना चुकी तो क़ासिद ने कहा : जिन अश्ख़ास का उस ने बताया है बिल्कुल वोही शहीद हुवे हैं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : शुहदा जन्नत में नहीं होते बल्कि जन्नत से रिज़्क़ दिये जाते हैं।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد इस फ़रमाने बारी तआला :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًاؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَۙ (۱۶۹)

(پ۴، آلِ عمرٰن:۱۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : वोह अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास ज़िन्दा होते हैं जन्नती फलों से रोज़ी और जन्नती हवा पाते हैं लेकिन जन्नत में नहीं हैं, इस की दलील ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की येह ह़दीस है कि "शुहदा जन्नत के दरवाज़े पर जारी

---

❶...مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ۴/۵۱۱، حدیث: ۱۳۲۹۹

موسوعة ابن ابي الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۴۸، حدیث: ۳۱۱

❷... اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۶۷

नहर के किनारे होते हैं"[1] इस से साबित होता है कि वोह नहर जन्नत से बाहर है। इस का जवाब यूं दिया गया कि इस हदीस के एक रावी इब्ने इस्हाक़ मुदल्लिस हैं जो अपने शैख़ के नाम की सराहत नहीं करते।[2] येह भी मुमकिन है कि येह हदीसे पाक आम शुहदा के मुतअ़ल्लिक़ हो और जिन अहादीस में ज़ेरे अ़र्श क़िन्दीलों में होने का ज़िक्र है वोह ख़ास शुहदा हों। येह एह्तिमाल भी है कि इस हदीस शरीफ़ से जंग में शहीद होने वालों के सिवा दीगर शुहदा मसलन ताऊ़न या पेट की बीमारी में मरने वाला और हर वोह शख़्स मुराद हो जिसे हदीस में शहीद कहा गया है।

हर मोमिन सिद्दीक़ और शहीद है

येह भी हो सकता है कि हर मोमिन मुराद हो क्यूंकि जो ईमान क़बूल कर ले उसे भी शहीद बोल दिया जाता है और उस के दुरुस्त होने की दलील येह रिवायत है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : كُلُّ مُؤْمِنٍ صِدِّيْقٌ وَّشَهِيْدٌ या'नी हर मोमिन सिद्दीक़ और शहीद है। अ़र्ज़ की गई : हज़रत आप येह क्या फ़रमा रहे हैं ? फ़रमाया : अच्छा तो येह आयते मुबारका पढ़ो : وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖۤ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ[3]-[4]

हज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरी उम्मत के मोमिन शहीद हैं।

1.....مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن العباس، ۱/۵۷۱، حدیث: ۲۳۹۰

اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۲۷

2.....सय्यिदी आ'ला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हज़रते इब्ने अल बरती ने फ़रमाया : इल्मे हदीस वालों में मुहम्मद बिन इस्हाक़ के सिक़ह होने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं और इन की हदीस हसन है। और हाकिम ने बू शिन्जी शैख़ बुख़ारी से रिवायत की, कि इब्ने इस्हाक़ हमारे नज़्दीक सिक़ह हैं। मुहक़्क़िक़ अ़लल इत़्लाक़ ने फ़त्हुल क़दीर में फ़रमाया : इब्ने इस्हाक़ सिक़ह हैं सिक़ह हैं इस में न हमें शुबा है न मुहक़्क़िक़ीन को शुबा है।

(फ़तावा रज़विय्या, 28 / 72, 73)

3.....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और वोह जो अल्लाह और उस के सब रसूलों पर ईमान लाएं वोही हैं कामिल सच्चे और औरों पर गवाह अपने रब के यहां। (پ۲۷، الحدید: ۱۹)

4.....اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۲۹

फिर आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मज़्कूरा आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई।[1]

शुहदा के सिवा दीगर मोमिनीन की दो क़िस्में हैं : (1) मुकल्लफ़ (2) ग़ैरे मुकल्लफ़ जैसे मुसलमानों के ना बालिग़ बच्चे जमहूर का मौक़िफ़ येह है कि शुहदा के सिवा बक़िय्या मोमिनीन और उन के ना बालिग़ बच्चे भी जन्नत में हैं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل से इस बारे में इजमाअ़ नक़्ल है। हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुहम्मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الصَّمَد से मरवी हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل का क़ौल है कि उन के जन्नती होने में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं और इमाम अबुल हसन मैमूनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی से मरवी है कि उन के जन्नती होने में किसी ने शक नहीं किया, इसी तरह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی ने सराहत फ़रमाई है कि वोह जन्नत में हैं। अस्लाफ़ ने भी इस बात की तसरीह की है कि इन (आ़म मोमिनीन और इन की ना बालिग़ औलाद) की रूहें जन्नत में होती हैं।[2] उ़लमाए किराम के एक गुरौह का क़ौल है : उ़मूमी तौर पर मोमिनीन की औलाद के मुतअ़ल्लिक़ जन्नत में होने की गवाही दी जा सकती है मगर मुअ़य्यन बच्चों के लिये नहीं। इस की वज्ह शायद येह है कि चूंकि ख़ास बच्चे के बाप के ईमान (पर ख़ातिमा) की गवाही नहीं दी जा सकती तो उस के ईमान की भी गवाही नहीं दी जा सकती कि वोह मुसलमान बच्चों में से है लिहाज़ा बापों के ईमान में तवक़्क़ुफ़ के सबब मख़्सूस व मुतअ़य्यन बच्चों के जन्नत में होने में तवक़्क़ुफ़ किया जाएगा। येह क़ौल किसी भी इमाम से सराहत के साथ साबित नहीं बल्कि येह उन के बारे में उ़मूमी कलाम से लिया गया है और इस से उन की मुराद मुशरिकीन के बच्चे हैं।[3] जब कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل ने इस ह़दीस शरीफ़ कि "मोमिनीन के छोटे बच्चे जन्नत के कीड़े होंगे[4]" [5] से इस्तिदलाल फ़रमाया और आप ही फ़रमाते हैं : जब इस (फ़ौतशुदा छोटे बच्चे) के सबब वालिदैन के लिये

---

1 ...تفسیر الطبری، سورۃ الحدید، تحت الآیۃ:۱۹، ۱۱/ ۶۸۳، حدیث:۳۳۶۵۳

2 ... اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۷۰

3 ... اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۷۴

4 .....कीड़ों से सिर्फ़ तश्बीह दी गई है कि जिस तरह उन्हें कहीं आने जाने की रोक टोक नहीं होती उन बच्चों को भी जन्नत में कोई रोक टोक नहीं होगी। (فیض القدیر، ۴/ ۲۵۶، تحت الحدیث:۴۹۹۷)

5 ... مسلم، کتاب البر والصلۃ والآداب، باب فضل من یموت . . . الخ، ص ۱۴۱۲، حدیث:۲۶۳۵

जन्नत में दाख़िले की उम्मीद की जाती है तो इस के अपने बारे में कैसे शक किया जाए ![1]

शुहदा के इ़लावा दीगर मुकल्लफ़ मुसलमानों के मुतअ़ल्लिक़ साबिक़ा व मौजूदा उ़लमा का इख़्तिलाफ़ रहा है, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد फ़रमाते हैं : मोमिनीन की अरवाह़ जन्नत में होती हैं और कुफ़्फ़ार की दोज़ख़ में ।[2] आप ने ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे हानी, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे बिश्र और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) वग़ैरा की अह़ादीस को दलील बनाया है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ह़ज़रते का'ब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه से इ़ल्लिय्यीन और सिज्जीन के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो उन्हों ने कहा : इ़ल्लिय्यीन तो सातवें आस्मान में है उस में मोमिनीन की रूहें होती हैं और सिज्जीन सातवीं ज़मीन के नीचे है उस में कुफ़्फ़ार की रूहें शैत़ान के गाल के नीचे होती हैं ।[3]

जन्नती नह्र पर मोतियों से बने मह़ल में क़ियाम

दलाइल से साबित है कि जन्नत सातवें आस्मान से ऊपर और दोज़ख़ सातवीं ज़मीन से नीचे है । इस की दलील में येह ह़दीसे पाक पेश की गई कि ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है । हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہا के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने उन्हें जन्नती नह्रों में से एक नह्र पर मोतियों से बने मह़ल में देखा है जिस में न फ़ुज़ूलिय्यात हैं न थकावट ।[4]

ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : मेरी अम्मी जान ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا कहां हैं ? तो आप صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह बांस से बने मह़ल में ह़ज़रते मरयम और फ़िरऔ़न की बीवी ह़ज़रते आसिया के साथ हैं उस मह़ल में न फ़ुज़ूलिय्यात हैं न थकावट । अ़र्ज़ की : क्या

[1]... اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص ۱۷۶

[2]... اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، القسم الثانی اهل التکلیف...الخ، ص ۱۷۷

[3]... اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، القسم الثانی اهل التکلیف...الخ، ص ۱۸۳ تا ۱۸۴

[4]... معجم اوسط، ۶/۱۰۲، حدیث: ۸۱۵۳

उन (या'नी दुन्यावी) बांसों से बने महल में ? इरशाद फ़रमाया : नहीं बल्कि मोतियों और याक़ूत से जड़े बांसों से बने महल में ।[1]

जन्नती नहर का तैराक

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जब हज़रते माइज़ अस्लमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को इक़रारे जुर्म पर रजम किया गया तो मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है ! वोह अभी जन्नती नहरो में ग़ोता लगा रहे हैं ।[2]

तकब्बुर, ख़ियानत और क़र्ज़

हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस की रूह जिस्म से इस हाल में जुदा हो कि वोह तीन चीज़ों तकब्बुर, ख़ियानत और क़र्ज़ से आज़ाद हो तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा ।[3]

एक जमाअ़त का कहना है कि रूहें ज़मीन में होती हैं । फिर उन में भी इख़्तिलाफ़ हो गया और एक गुरौह ने कहा : अरवाह क़ब्रों के इर्द गिर्द रहती हैं । येह क़ौल इब्ने वज़्ज़ाह का है और इब्ने हिज़्म ने भी अक्सर मुहद्दिसीन से ऐसा ही नक़्ल किया है ।

लेकिन हज़रते सय्यिदुना अबू उ़मर यूसुफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अ़ब्दुल बर्र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْه ने इस क़ौल को तरजीह दी कि शुहदा की रूहें जन्नत में होती हैं और आ़म मोमिनों की रूहें क़ब्रों के इर्द गिर्द होती हैं और जहां चाहती हैं सैर करती हैं, इस क़ौल पर मुर्दों को सलाम करने और उन पर (जन्नती या जहन्नमी) ठिकाना पेश किये जाने वाली अहादीसे तृय्यिबा से दलील पकड़ी गई है जब कि रूहों के जन्नत में न होने पर कोई दलील नहीं है, ठिकाना जिस्म पर पेश किया जाता है और रूह का जिस्म से तअ़ल्लुक़ होता है अगर्चे रूह जन्नत में हो यूंही मुर्दों को सलाम करने से येह लाज़िम नहीं आता कि रूहें मुस्तक़िल तौर पर क़ब्रों के इर्द गिर्द ही रहें क्यूंकि सलाम तो

---

1 ... معجم اوسط، ١/١٣٧، حديث: ٤٤٠

2 ... ابو داود، كتاب الحدود، باب رجم ماعز بن مالك، ٤/١٩٧، حديث: ٤٤٢٨

3 ... ابن ماجه، كتاب الصدقات، باب التشديد فى الدين، ٣/١٤٤، حديث: ٢٤١٢

अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام व शुहदाए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के मज़ारात पर भी किया जाता है हालांकि उन की अरवाहे़ मुबारका आ'ला इ़ल्लिय्यीन में होती हैं, इस की ह़क़ीक़त और कैफ़िय्यत सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है और इस की गवाही उन अह़ादीस से मिलती है जिन में येह आया है कि सोने वाले की रूह़ अ़र्श की त़रफ़ बुलन्द होती है। ह़ालांकि इस का तअ़ल्लुक़ बदन से भी रहता है और बदन के जागते वक़्त वोह आन की आन में वापस लौट आती है, लिहाज़ा वोह रूहें जो जिस्मों से जुदा हो चुकी हैं वोह बदरजए औला येह त़ाक़त रखती हैं कि आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हों और आन की आन में क़ब्र की त़रफ़ लौट भी आएं।(1)

एक गुरोह का कहना है : रूहें ज़मीन में ही किसी जगह जम्अ़ होती हैं, मोमिनीन की जाबिया में और एक क़ौल के मुत़ाबिक़ ज़मज़म के कुंवें में जब कि कुफ़्फ़ार की बरहूत के कुंवें में जम्अ़ होती हैं।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी अबू या'ला ह़म्बली عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡوَلِی ने "अल मो'तमद" में इसी को तरजीह़ दी है और येह ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَوَّل की तसरीह़ के ख़िलाफ़ है कि कुफ़्फ़ार की रूहें दोज़ख़ में होती हैं। मुमकिन है बरहूत का कुंवां जहन्नम की तह से मुत्तसिल हो जैसे मरवी है कि जहन्नम समन्दर के नीचे है।(3)

बदन से क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ामिद बिन यह़्या बिन सुलैम رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه फ़रमाते हैं : मक्कए मुकर्रमा में हमारे साथ एक ख़ुरासानी शख़्स रहता था जिस के पास अमानतें रखवाई जातीं और वोह वापस भी कर देता था। एक शख़्स ने उस के पास 10 हज़ार दीनार रखवाए और कहीं चला गया, उसी दौरान उस ख़ुरासानी का वक़्ते वफ़ात आ गया मगर उस ने अपनी औलाद में किसी को इस का अह्ल न समझा कि अमानत उन के सिपुर्द की जाए। चुनान्चे, उस ने अमानत अपने घर में एक जगह दफ़्न कर दी और फ़ौत हो गया, उस शख़्स ने आ कर उस ख़ुरासानी की औलाद से अमानत त़लब की तो उन्हों ने ला इ़ल्मी का इज़्हार किया फिर उस ने इस मुआ़मले में कसीर उ़लमाए मक्का से रुजूअ़

---

1 ... اهوال القبور،لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح... الخ، ص ١٨٩

2 ... اهوال القبور،لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح... الخ، ص ١٩٣

3 ... اهوال القبور،لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح... الخ، ص ١٩٦

किया, उ़लमाए किराम ने फ़रमाया कि हम उस ख़ुरासानी को जन्नती ख़याल करते हैं और हमें येह बात पहुंची है कि जन्नतियों की रूहें ज़मज़म के कूंएं में होती हैं लिहाज़ा जब आधी या तिहाई शब गुज़र जाए तो ज़मज़म के कूंएं के किनारे खड़े हो कर उस ख़ुरासानी को निदा देना हमें उम्मीद है वोह जवाब देगा, अगर वोह जवाब दे तो उस से अपने माल के मुतअ़ल्लिक़ पूछना। चुनान्चे, वोह शख़्स गया और जैसा उ़लमाए किराम ने फ़रमाया था उस ने तीन रात तक ऐसा ही किया मगर उसे कोई जवाब न मिला तो वोह वापस उ़लमा के पास आया और कहा : मैं ने तीन शब आप के कहने के मुताबिक़ अ़मल किया मगर मुझे कोई जवाब नहीं मिला। उ़लमाए किराम ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ पढ़ा और फ़रमाया : हमारा ख़याल है वोह दोज़ख़ी है लिहाज़ा तुम यमन चले जाओ, वहां बरहूत नामी एक वादी है और उस में बरहूत नामी एक कुंवां भी है जिस में दोज़ख़ियों की रूहें जम्अ़ होती हैं, रात के उसी वक़्त तुम उस के किनारे खड़े हो कर उसे निदा देना।

चुनान्चे, वोह शख़्स वहां पहुंचा और कहा : ऐ फ़ुलां बिन फ़ुलां ! मैं फ़ुलां हूं। उस की पहली पुकार पर ही उसे जवाब मिल गया।(1) उस ने पूछा : वोह अमानत कहां है जो मैं ने तेरे पास रखवाई थी ? उस ने कहा : फ़ुलां जगह फ़ुलां ज़ीने के नीचे दफ़्न है। उस ने पूछा : किस गुनाह के सबब तुझे बद बख़्तों के मक़ाम पर लाया गया ? उस ने जवाब दिया : मेरी बहन के सबब, मेरी एक ग़रीब बहन थी जो मुझ से दूर सर ज़मीने अ़जम में कहीं रहती थी। मैं उस की परवा किये बिग़ैर मक्कए मुकर्रमा में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने लगा, न मुझे बहन की फ़िक्र हुई न मैं ने किसी से उस के बारे में पूछा। जब मैं मर गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इसी बात पर मेरी पकड़ फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया : तू उस को कैसे भूल गया ? उस के पास कपड़े नहीं थे और तू कपड़े पहने ज़िन्दगी गुज़ारता रहा, वोह भूकी रहती और तू सैर हो कर खाता था, वोह प्यासी रहती और तू पी कर ख़ूब सैराब होता था, मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं रिश्तेदारी काटने वाले पर रह़म नहीं करूंगा। इसे ले जाओ और बरहूत के कूंएं में डाल दो। पस ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने मुझे इस कूंएं में डाल दिया और अब मुझे अ़ज़ाब दिया जा रहा है। ऐ मेरे भाई ! तुम मेरी बहन के पास जा के उस से मेरे लिये मुआ़फ़ी की दरख़्वास्त करो और इस अ़ज़ाब से मेरे छुटकारे की कोई सूरत निकालो, हो सकता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ पर रह़म फ़रमा दे क्यूंकि उस के हां रिश्तेदारी काटने के इलावा मेरा कोई गुनाह नहीं है।

1.....शर्हुस्सुदूर में यहीं तक था इस से आगे का वाक़िआ़ "قُرَّةُ الْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن" से नक़्ल किया गया है।

उस शख़्स का बयान है : मैं उस की बताई हुई जगह गया और खोदा तो वहां से एक थैली निकली जिस में मेरी अमानत मौजूद थी[1] और उसी ह़ालत में थी जैसे मैं ने अपने हाथ से बांधी थी। मैं अपनी अमानत ले कर अ़जम की त़रफ़ चल पड़ा अ़जम पहुंच कर लोगों से उस की बहन के मुतअ़ल्लिक़ मा'लूमात ह़ासिल कीं। बिल आख़िर मेरी उस से मुलाक़ात हो गई और मैं ने उसे अव्वल ता आख़िर सारा माजरा कह सुनाया। वोह रोने लग गई। मैं ने उस से उस के भाई के छुटकारे की बात की तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मोह़ताजी की शिकायत करने लगी। मैं ने कुछ माल उसे दिया और वापस आ गया। पस हर मुसलमान को चाहिये कि रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक करे।

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन अ़म्र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अबू यमान ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा कि क्या मोमिनीन की अरवाह़ किसी जगह जम्अ़ होती हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : कहा जाता है कि वोह ज़मीन जिस के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाने बारी तआ़ला है :

اَنَّ الْاَرْضَ یَرِثُهَا عِبَادِیَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿۱۰۵﴾

(پ۱۷، الانبیاء:۱۰۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कि इस ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे।

येही वोह ज़मीन है जिस में मोमिनीन की रूहें क़ियामत तक के लिये जम्अ़ होती हैं। इस आयत की येह तफ़्सीर इन्तिहाई ग़ैर मा'रूफ़ है।[2]

जन्नतियों और जहन्नमियों की रूहों का मक़ाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه से ब ज़रीअ़ए मक्तूब पूछा कि अहले जन्नत और अहले जहन्नम की रूहें कहां जम्अ़ होती हैं ? तो उन्हों ने जवाब दिया : अहले जन्नत की रूहें जाबिया में और कुफ़्फ़ार की ह़ज़्रमौत में होती हैं।

ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की एक जमाअ़त का कहना है कि रूहें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां होती हैं। येह ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से साबित है।

---

1 ...اهوال القبور، لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح...الخ، ص ۱۹۵

2 ...اهوال القبور، لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح...الخ، ص ۱۹۶

हज़रते सय्यिदुना हुजै़फ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : रूहें रहमान عَزَّوَجَلَّ के पास अपने ठिकाने की मुन्तज़िर होती हैं ह़त्ता कि उन में रूह़ फूंकी जाएगी। आप का येह फ़रमान उन गुज़श्ता रिवायात के ख़िलाफ़ नहीं जिन में रूहों के ठिकाने का बयान है।(1)

उ़लमाए किराम की एक जमाअ़त का कहना है : इन्सानों की रूहें अपने बाप हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के दाएं बाएं होती हैं जैसा कि सह़ीहै़न (बुख़ारी व मुस्लिम) में मौजूद ह़दीसे मे'राज में है कि "जब दरवाज़ा खुला तो हम आस्मान पर गए वहां एक साहि़ब तशरीफ़ फ़रमा थे जिन के दाएं बाएं लोग मौजूद थे जब वोह अपनी दाईं जानिब देखते तो ख़ुश होते और जब बाईं जानिब नज़र करते तो रोते थे, मैं ने हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : येह कौन हैं ? उन्हों ने कहा : येह हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام हैं और इन के दाएं बाएं इन की औलाद की रूहें हैं, दाईं त़रफ़ वाले जन्नती हैं और बाईं जानिब वाले दोज़ख़ी, जब येह अपनी दाईं जानिब जन्नतियों को देखते हैं तो ख़ुश होते हैं और जब बाईं जानिब दोज़ख़ियों को देखते हैं तो रोते हैं।"(2)

इस ह़दीसे पाक का ज़ाहिर इस बात का तक़ाज़ा करता है कि कुफ़्फ़ार की रूहें भी आस्मान में हों और येह कुरआने करीम और इस ह़दीसे मुबारक के ख़िलाफ़ है कि "कुफ़्फ़ार की रूहों के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाते।"(3)

अलबत्ता बा'ज़ अहा़दीसे करीमा में इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ हैं जिन से येह तआ़रुज़ ख़त्म हो जाता है मसलन येह कि "जब हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर किसी मोमिन की रूह़ पेश की जाती है तो वोह फ़रमाते हैं : येह सुथरी जान है इसे इ़ल्लिय्यीन में दाख़िल कर दो और जब किसी काफ़िर की रूह़ पेश की जाती है तो फ़रमाते हैं : येह गन्दी जान है इसे सिज्जीन में डाल दो"(4) इस से मा'लूम हुवा कि उन की औलाद की रूहें आस्माने दुन्या में उन पर पेश की जाती हैं और वोह रूहों को उन के ठिकाने पर ले जाने का हुक्म फ़रमाते हैं। इस से येह साबित होता है कि आस्माने दुन्या रूहों के ठहरने की जगह नहीं है।(5)

---

1 ...اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح...الخ، ص ۱۹۹تا ۲۰۰

2 ...بخاری، کتاب الصلاة، باب کیف فرضت الصلوات فی الاسراء، ۱/۱۴۰، حدیث: ۳۴۹

3 ...ابن ماجه، کتاب الزهد، باب ذکر الموت والاستعداد له، ۴/۴۹۷، حدیث: ۴۲۶۲

4 ...دلائل النبوة للبیهقی، باب الدلیل علی ان النبی عرج به الاسماء...الخ، ۲/۳۹۲

5 ...اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح...الخ، ص ۲۰۳

इब्ने ह़ज़्म ने गुमान किया है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिस्मों से पहले तमाम रूह़ों को एक साथ पैदा फ़रमाया और उन्हें बरज़ख़ में रखा और बरज़ख़ वोह जगह है जहां अ़नासिरे अरबआ़ हवा, पानी, मिट्टी और आग का तअ़ल्लुक़ ख़त्म हो जाता है, जब जिस्मों को पैदा किया जाता है तो रूहें उन में दाख़िल कर दी जाती हैं और वफ़ात के बा'द दोबारा बरज़ख़ में लौटाई जाती हैं, जब कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और शुहदाए उ़ज़्ज़ाम की रूहें जन्नत की त़रफ़ फेर दी जाती हैं।(1)

जो बात इब्ने ह़ज़्म ने की है येह मुसलमानों में से किसी ने नहीं की न ही किसी के कलाम से ऐसा मा'लूम होता है, येह तो फ़लासफ़ा का कलाम है।(2)

मुतकल्लिमीन के एक गुरोह से मन्क़ूल है कि रूहें जिस्मों के मरने के साथ ही मर जाती हैं, येह क़ौल मो'तज़िला की त़रफ़ मन्सूब है। फ़ुक़हाए उन्दुलुस की एक जमाअ़त ने भी येही क़ौल किया है उन के मुतक़द्दिमीन में से अ़ब्दुल अ़ला बिन वह्ब और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन उ़मर बिन लुबाबा और मुतअख़्ख़िरीन में से ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान सुहैली और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू बक्र इब्ने अ़रबी رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی हैं।(3) लेकिन उ़लमाए किराम ने इस क़ौल का शदीद रद किया है ह़त्ता कि ह़ज़रते सय्यिदुना सह़नून बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَجِيْد वग़ैरा ने फ़रमाया : येह अह्ले बिदअ़त का क़ौल है और अज्साम से जुदा होने के बा'द रूहों के बाक़ी रहने पर दलालत करने वाली नुसूसे कसीरा इस क़ौल को रद व बात़िल कर रही हैं।(4)

शुहदा और आ़म मोमिनीन में फ़र्क़

शुहदा की ह़यात और आ़म मोमिनीन जिन की रूहें जन्नत में हैं उन की ह़यात में दो वज्ह से फ़र्क़ है :

पहली वज्ह : शुहदा की अरवाह़ के लिये जिस्म पैदा किये जाते हैं वोह परन्दे होते हैं जिन के पोटों में येह रूहें ठहरती हैं ताकि अज्साम के बिग़ैर रहने वाली रूहों के मुक़ाबले में येह ने'मतों से मुकम्मल सरफ़राज़ हों क्यूंकि शुहदा ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में अपने अज्साम को ख़र्च किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बरज़ख़ में उन अज्साम के बदले और अज्साम अ़त़ा फ़रमा दिये।

---

1 ... اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح... الخ، ص ٢٠٣

2 ... اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح... الخ، ص ٢٠٣

3 ... اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح... الخ، ص ٢٠٤

4 ... اهوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، فصل ما یمنع من دخول ارواح... الخ، ص ٢٠٦

दूसरी वज्ह : शुहदा को जन्नत से रिज़्क़ दिया जाता है जब कि ग़ैरे शुहदा के लिये येह बात साबित नहीं अगर्चे उन के मुतअ़ल्लिक़ आया है कि येह जन्नती दरख़्त से खाते हैं लेकिन ने'मतों को इस्ति'माल करने में येह किसी भी त़रह़ शुहदा के बराबर नहीं हो सकते । وَاللّٰہُ اَعْلَم[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ब्रिस्तान में दाख़िल होते तो यूं कहते : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान रखते हुवे दुन्या से जाने वाली फ़ानी रूहो ! बोसीदा जिस्मो ! और गली हुई हड्डियो ! तुम पर सलाम हो, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी बारगाह से इन पर राह़त और हमारी त़रफ़ से सलाम दाख़िल फ़रमा ।[2]

इस ह़दीस की सनद ज़ईफ़ होने के बा वुजूद इस की तावील की गई है कि इस में रूह़ों के फ़ना होने से मुराद उन का ज़ाहिरी अज्साम से चले जाना है ।[3]

फ़ाएदा : रूह़ के चार घर

इब्ने क़य्यिम ने कहा कि रूह़ के चार घर हैं और हर अगला घर पिछले घर से बड़ा है : (1) मां का पेट, येह क़ैद, तंगी, ग़म और तीन तारीकियों का घर है । (2) (दुन्या) इस घर में वोह नश्वो नुमा पाती है, जम्अ़ करती है और नेकी व बदी कमाती है । (3) आ़लमे बरज़ख़ येह घर दुन्या से बहुत बड़ा और कुशादा है, येह दुन्या के मुक़ाबले में ऐसा है जैसे मां के पेट के मुक़ाबले में दुन्या । (4) वोह घर जिस के बा'द और कोई घर नहीं या'नी हमेशा का घर जन्नत या दोज़ख़ । रूह़ का हुक्म और हैसिय्यत हर दूसरे घर में पहले से जुदा है ।

इब्ने क़य्यिम ने तीसरे और पहले का जो तक़ाबुल किया है इस पर दर्जे ज़ैल रिवायात दलालत करती हैं :

मरफ़ूअ़ रिवायत है कि "दुन्या में मोमिन ऐसा है जैसे मां के पेट में बच्चा कि जब वोह उस के पेट से निकलता है तो बाहर आने पर रोता है ह़त्ता कि जब वोह रोशनी देखता और दूध पीता है तो अपने ठिकाने (या'नी मां के पेट) में वापस जाने को पसन्द नहीं करता यूंही मोमिन भी मौत से डरता है मगर जब अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पहुंच जाता है तो दुन्या में वापस होना पसन्द नहीं

1 ...اھوال القبور،لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ،فصل ما یمنع من دخول ارواح...الخ، ص ۲۰۷

2 ...عمل الیوم واللیلۃ لابن السنی،باب ما یقول اذا خرج الی المقابر، ص ۳۵۸،حدیث: ۵۹۳

3 ...اھوال القبور،لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ،فصل ما یمنع من دخول ارواح...الخ، ص ۲۰۸

करता जैसे बच्चा अपनी मां के पेट में वापस जाना पसन्द नहीं करता।"[1]

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से मरवी है कि एक शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा तो प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह दुन्या को छोड़ कर चला गया पस अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इस से राज़ी हुवा तो येह दुन्या में वापस लौटने को ऐसे ही ना पसन्द करेगा जैसे तुम में से कोई अपनी मां के पेट में वापस होने को ना पसन्द करता है।[2]

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मोमिन का दुन्या से निकलना ऐसा ही है जैसे बच्चे का अपनी मां के पेट से, उस की तंगी और अन्धेरे से दुन्या की कुशादगी की त़रफ़ निकलना।[3]

फ़ाएदा

हज़रते सय्यिदुना इमाम याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى "किफ़ायतुल मो'तक़िद" में नक़्ल करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना शैख़ उ़मर बिन फ़ारिज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बयान फ़रमाया : हम एक वली के जनाज़े में शरीक हुवे और जब नमाज़े जनाज़ा पढ़ चुके तो फ़ज़ा सब्ज़ परन्दों से भर गई, उन में से एक बड़ा परन्दा आया और उस वली को निगल कर उड़ गया मुझे बहुत तअ़ज्जुब हुवा तो फ़ज़ा में से उतर कर जनाज़े में शरीक होने वाले एक शख़्स ने मुझे कहा : तअ़ज्जुब न करो क्यूंकि शुहदा की रूहें सब्ज़ परन्दों के पोटों में होती हैं और जन्नत में खाती पीती हैं, येह ह़ाल तल्वारों से शहीद होने वालों का होता है जब कि शहीदाने मह़ब्बत के तो अज्साम भी अरवाह़ होते हैं।

गोशा नशीन के वसीले से बारिश

इसी से मिलता जुलता एक वाक़िआ़ हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم बयान करते हैं कि बनी इस्राईल का एक शख़्स ग़ार में गोशा नशीन हो गया, उस ज़माने के लोगों पर जब क़ह़त़ आता तो वोह उस के वसीले से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ करते तो उन्हें बारिश से सैराब फ़रमा दिया जाता, जब वोह गोशा नशीन शख़्स वफ़ात पा गया तो लोग उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन की

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، کراھیۃ الموت...الخ، ۳۹۹/۵، حدیث:۱

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، حب الموت...الخ، ۴۰۵/۵، حدیث:۲۶

3 ...نوادر الاصول، الاصل الثالث والخمسون، ۲۲۲/۱، حدیث:۳۲۳

तय्यारी करने लगे, इतने में आस्मान की बुलन्दियों से एक तख़्त सीधा उस शख़्स के पास उतरा, एक आदमी खड़ा हुवा और उस ने उस गोशा नशीन को तख़्त पर रखा तो तख़्त बुलन्द हो गया, लोग उसे हवा में देखते रहे हृत्ता कि वोह उन की आंखों से ओझल हो गया और लोग उस के सबब जन्नत की त़रफ़ मुतवज्जेह हो गए।(1)

आस्मान पर उठाए जाने वाले शहीद

इस की ताईद इस वाक़िए से भी होती है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फुहैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बिअरे मऊ़ना के वाक़िए में जामे शहादत नोश कर गए थे और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उ़मय्या ज़मरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को क़ैद कर लिया गया था। आ़मिर बिन तुफ़ैल ने उन से पूछा : क्या तुम अपने साथियों को पहचान सकते हो ? उन्हों ने फ़रमाया : हां पहचान लूंगा। चुनान्चे, आप शुहदा को देखते जाते और आ़मिर बिन तुफ़ैल आप से उन के नसब के बारे में पूछता जाता। फिर वोह कहने लगा : क्या उन में से किसी साथी को कम पाते हो ? उन्हों ने फ़रमाया : हां ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के गुलाम ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फुहैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه नज़र नहीं आ रहे। उस ने पूछा : आ़मिर को तुम्हारे दरमियान क्या ह़ैसिय्यत ह़ासिल थी ? फ़रमाया : वोह हमारे अफ़्ज़ल आदमी थे। आ़मिर बिन तुफ़ैल ने कहा कि मैं तुम्हें उन का वाक़िआ़ सुनाता हूं : उन्हें नेज़ा मारा गया और जैसे ही नेज़ा बाहर निकाला गया तो उन्हें आस्मान की त़रफ़ बुलन्द कर दिया गया, ख़ुदा की क़सम ! वोह मेरी आंखों से औझल हो गए। उन्हें क़त्ल करने वाला शख़्स बनू किलाब का जब्बार बिन सुलमी था वोह (ह़ज़रते सय्यिदुना) ज़ह्ह़ाक बिन सुफ़्यान किलाबी (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) के पास जा कर मुसलमान हो गया और कहा : ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फुहैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शहादत और आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होने ने मुझे इस्लाम की त़रफ़ रागिब किया है। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह्ह़ाक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उस शख़्स के इस्लाम और ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फुहैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की शहादत का वाक़िआ़ बारगाहे रिसालत में लिख भेजा तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक फ़िरिश्तों ने उन के जिस्म को छुपा लिया और उन्हें इल्लिय्यीन में ले जाया गया है।(2)

---

❶... موسوعة ابن أبي الدنيا، كتاب ذكر الموت، الكرامات عند الموت، ٥/٥٠٠، رقم: ٣٢٠

❷... بخاری، كتاب المغازی، باب غزوة الرجيع ورعل وذكوان وبئر معونة، ٣/٤٩، حديث: ٤٠٩٣

دلائل النبوة لأبي نعيم الاصبهانی، قصة اهل بئر معونة، ص ٣٠٦، حديث: ٤٤١

एक रिवायत में यूं है कि "आ़मिर बिन तुफ़ैल ने कहा : मैं ने देखा कि वोह शहीद हुवे तो आस्मान की जानिब उठा लिये गए ह़त्ता कि मैं ने उन्हें आस्मानो ज़मीन के दरमियान देखा।" रिवायत के आख़िर में है कि "फिर उन्हें नीचे उतारा गया।" मुमकिन है ज़मीन पर उतारे जाने के बा'द वोह ग़ाइब हो गए हों।

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का जसदे ख़ाकी नहीं मिला और लोगों का ख़याल था कि उन्हें फ़िरिश्तों ने छुपा लिया है।(1)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ह़ज़रते आ़मिर बिन फ़ुहैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को आस्मान की जानिब उठा लिया गया था, उन का जिस्म ज़मीन पर नहीं मिला। लोगों का ख़याल है कि उन्हें फ़िरिश्तों ने छुपा लिया था।(2)

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि फ़िरिश्तों के छुपाने से मुराद है उन का आस्मान में ग़ाइब हो जाना जैसा कि पिछली रिवायत में है कि "उन का जिस्म छुपा लिया गया और इ़ल्लिय्यीन में ले जाया गया"(3) इसी तनाज़ुर में एक रिवायत येह भी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन उमय्या ज़मरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ अकेले को क़ुरैश की त़रफ़ जासूस बना कर भेजा, चुनान्चे, मैं उस दरख़्त के पास गया जिस पर ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه को सूली पर लटकाया हुवा था, मैं लोगों की निगाहों से बचता हुवा ऊपर चढ़ा और रस्सी खोली तो वोह ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए, मैं नीचे उतर कर एक त़रफ़ हो गया और जब उन के जिस्म की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा तो वोह मुझे नज़र न आया गोया उन्हें ज़मीन ने अपने अन्दर समो लिया था। उस वक़्त से ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه का कोई निशान नहीं मिला।(4)

येह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه उन लोगों में से एक थे जिन्हें फ़िरिश्तों ने छुपा लिया था इस त़रह़ कि या तो उन्हें आस्मानों में उठा लिया गया जैसा कि ज़ाहिर है या फिर ज़मीन में दफ़्न कर दिया।

---

(1)...بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ الرجیع ورعل وذکوان وبئر معونۃ، ۳/۴۹، حدیث: ۴۰۹۳
دلائل النبوۃ للبیہقی، باب ما وجد رسول اللہ علی من قتل ببئر معونۃ...الخ، ۳/۳۵۲تا۳۵۳
(2)...طبقات ابن سعد، ۳/۱۷۴، رقم: ۴۹: عامر بن فہیرۃ
(3)...دلائل النبوۃ لابی نعیم، قصۃ اھل بئر معونۃ، ص ۳۶۰، حدیث: ۴۴۱
(4)...مسند امام احمد، مسند الشامیین، حدیث عمرو بن امیۃ الضمری، ۶/۱۰۹، حدیث: ۱۷۲۵۲

येह ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ैज़ है

हज़रते सय्यिदुना शैख़ हाफ़िज़ अबू नुऐम अहमद बिन अ़ब्दुल्लाह अस्फ़हानी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي ने आस्मान पर उठाए जाने को ह़तमी क़रार दिया और फ़ख़्रे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मो'जिज़ात के साथ दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के मो'जिज़ात का मुवाज़ना करते हुवे फ़रमाया : अगर येह कहा जाए कि हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान पर उठाए गए थे तो हम कहते हैं कि जिस त़रह़ हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को आस्मान पर उठाया गया इसी त़रह़ हमारे प्यारे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्त़फ़ा, अहमदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कई उम्मती आस्मान पर उठाए गए हैं और येह ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ैज़ है। इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन फुहैरा, हज़रते सय्यिदुना ख़ुबैब बिन अ़दी और हज़रते सय्यिदुना अ़ला बिन ह़ज़्रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُم के वाक़िआ़त ज़िक्र किये हैं।(1)

आस्मान पर उठाए जाने वाली बात को इस ह़दीसे पाक से भी तक़विय्यत मिलती है कि हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : ग़ज़वए उहुद के मौक़अ़ पर जब हज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْه की उंगलियां कटीं तो उन्हों ने कहा : حَسَنٌ या'नी अच्छा है। रसूले अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर तुम बिस्मिल्लाह कहते तो फ़िरिश्ते तुम्हें आस्मान पर उठा ले जाते और लोग तुम्हें देख रहे होते ह़त्ता कि फ़िरिश्ते तुम्हें ले कर आस्मानी फ़ज़ा में दाख़िल हो जाते।(2)

ग़ैबी क़ब्र

ग़ाइब हो जाने का एक वाक़िआ़ येह भी है कि हज़रते सय्यिदुना अ़त़ा ख़ुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِي फ़रमाते हैं : एक सफ़र में हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي पेट की बीमारी में मुब्तला हुवे और इन्तिक़ाल फ़रमा गए, उन के थेले से दो ऐसे कपड़े निकले जो दुन्यावी कपड़ों में से न थे, दो आदमी क़ब्र खोदने के लिये गए मगर जल्दी वापस आ गए और बताया कि हमें पथरीली ज़मीन में एक क़ब्र खुदी हुई मिली है गोया अभी अभी उसे खोदा गया है। चुनान्चे, आप को कफ़न दे कर

---

(1)...دلائل النبوۃلابی نعیم الاصبھانی، الفصل الثلاثون فی ذکر مؤازاۃ الانبیاء...الخ، ص۳۷۰تا۳۷۱

(2)...نسائی، کتاب الجھاد، ما یقول من یطعنہ العدو، ص۵۱۲، حدیث:۳۱۴۶
دلائل النبوۃللبیھقی، باب تحریض النبی اصحابہ علی القتال یوم احد...الخ، ۳/۲۳۶

दफ़्न कर दिया गया, थोड़ी देर बा'द देखा तो वहां क़ब्र का कोई नामो निशान न था।(1)

येही वाक़िआ हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से भी मन्क़ूल है इस के आख़िर में येह भी है कि "हम ने एक दूसरे से कहा : अगर हम वापस लौटे तो उन की क़ब्र पहचान कर उन के लिये इस्तिग़्फ़ार करेंगे। पस जब हम लौटे तो वहां क़ब्र थी न क़ब्र का कोई निशान।"(2)

पुर असरार परन्दे

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन ज़य्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : मैं मिस्र की ग़ल्ला मन्डी में था कि इतने में लोग हज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی का जनाज़ा ले कर आए मैं ने सब्ज़ परन्दों को उन की चारपाई पर उड़ते देखा ह़त्ता कि वोह क़ब्र तक साथ गए और जब ह़ज़रत को दफ़्ना दिया गया तो वोह ग़ाइब हो गए।(3)

"अस्सिर्रुल मसून" में एक नेक बन्दे हज़रते सय्यिदुना सलामा किनानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی के मुतअ़ल्लिक़ लिखा है कि उन्हों ने अपनी वफ़ात का साल और वक़्त पहले ही बता दिया था और उन का इन्तिक़ाल भी उसी वक़्त में हुवा और वोह सफ़ेद परन्दे जो सालिह़ीन के जनाज़ों पर देखे जाते थे वोह आप की चारपाई पर भी मंडलाते रहे ह़त्ता कि उन के साथ ही क़ब्र में दाख़िल हो गए।

इस से मा'लूम होता है कि सालिह़ीन के जनाज़ों में ऐसा हुवा करता था येह कोई अनोखी बात नहीं है।

जनाज़े में शरीक ग़ैबी मख़्लूक़

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अ़ली क़लानिसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی के मुतअ़ल्लिक़ भी कुछ ऐसा ही है कि वफ़ात के बा'द जब आप को नमाज़े जनाज़ा के लिये चारपाई पर रखा गया तो लोगों ने मैदान व पहाड़ बल्कि जहां तक निगाह जाती थी हर जगह सफ़ेद लिबास में मलबूस लोग ही लोग देखे जो जनाज़ा पढ़ने वालों के साथ जनाज़े में शरीक हुवे।

1...تاریخ ابن عساکر، ۹/۴۳۰، رقم : ۸۴۰: اویس بن عامر القرنی

2...زھد امام احمد، زھد اویس القرنی، ص ۳۴۶، حدیث : ۲۰۱۶

3...تاریخ ابن عساکر، ۱۷/۴۴۲، رقم : ۲۱۱۱: ذو النون بن ابراھیم

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक रात मैं क़ब्रिस्तान में था कि अचानक एक ग़मगीन शख़्स की आवाज़ आई जो अपने रब عَزَّوَجَلَّ को यूं पुकार रहा था : मेरे आक़ा ! तेरा गुलाम तेरी बारगाह में हाज़िरी का पुख़्ता इरादा कर चुका, इस की रूह़ तेरे पास और लगाम भी तेरे हाथ है, येह तेरा मुश्ताक़ और तेरे फ़िराक़ पर ग़मगीन है, इस की रात बे ख़्वाबी और दिन बे चैनी में है, इस का रुवां रुवां जल रहा है और तेरी मुलाक़ात व दीदार के शौक़ में आंसूओं की झड़ी लगी हुई है, तू ही इस की राह़त और तू ही इस की उम्मीद है । फिर उस ने रोते रोते सर उठा कर एक सिस्की ली, जब मैं ने उसे ह़रकत दी तो वोह दारे फ़ानी से कूच कर चुका था, अभी मैं वहीं खड़ा था कि चन्द लोग उस के पास आए, उसे ग़ुस्ल व कफ़न दे कर ख़ुश्बू लगाई और जनाज़ा पढ़ कर दफ़्ना दिया और आस्मान की त़रफ़ परवाज़ कर गए ।(1)

कुत्तों में से एक कुत्ता

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मैं जंगल की त़रफ़ निकला तो एक ग़ार में एक नौजवान को नमाज़ में मश्ग़ूल देखा, वहीं ग़ार के दहाने पर एक दरिन्दा बैठा हुवा था । मैं ने कहा : ऐ नौजवान ! क्या तुझे येह दरिन्दा नज़र नहीं आ रहा ? उस ने कहा : अगर तुम इस दरिन्दे के बजाए इस के ख़ालिक़ से डरते तो तुम्हारे लिये अच्छा था । फिर उस ने दरिन्दे की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर कहा : तू अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के कुत्तों में से एक कुत्ता है अगर उस ने तुझे किसी चीज़ की इजाज़त दी है तो मैं तुझे तेरे रिज़्क़ से नहीं रोकता अगर ऐसा नहीं है तो चला जा । दरिन्दा येह सुनते ही भाग गया । फिर उस नौजवान ने एक सदा लगाई : मेरे आक़ा ! मैं तेरे अ़र्श की इ़ज़्ज़त के वसीले से तुझ से सुवाल करता हूं कि अगर मेरे लिये तेरे पास ख़ैर है तो मुझे अपनी त़रफ़ बुला ले । अभी उस की बात पूरी भी न हुई थी कि वोह दुन्या छोड़ गया (या'नी उस का इन्तिक़ाल हो गया) । मैं ने वापस आ कर अपने मुत्तक़ी व परहेज़गार दोस्तों को जम्अ़ किया ताकि उस की तजहीज़ो तक्फ़ीन करें मगर जब हम ग़ार के पास पहुंचे तो उस में कोई नहीं था, इतने में एक ग़ैबी आवाज़ आई : अबू सईद ! लोगों को वापस भेज दो क्यूंकि नौजवान को उठा लिया गया है ।(2)

---

❶...التبصرۃ لابن الجوزی، المجلس السادس عشر فی قصۃ موسی و الخضر، الکلام علی البسملۃ، ۱/۲۳۹تا۲۴۰

❷...عیون الحکایات لابن الجوزی، الحکایۃ الثمانون بعد المائۃ: حکایۃ للحسن البصری مع شاب فی مغارۃ، ص ۱۹۰

पुर असरार महल, घुड़ सुवार और बुज़ुर्ग

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अबू अ़रूबा[1] رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के पास बैठे थे कि सब्ज़ आंखों वाला एक शख़्स आया, आप ने पूछा : क्या तुम पैदाइशी त़ौर पर ऐसे हो या कोई बीमारी है ? उस ने कहा : ऐ अबू सईद ! क्या आप मुझे नहीं पहचानते ? पूछा : तुम कौन हो ? जब उस ने अपना तआ़रुफ़ करवाया तो वहां मौजूद हर शख़्स ने उसे पहचान लिया। हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی ने पूछा : तुम्हारा क़िस्सा क्या है ? उस ने बताया कि एक दिन मैं ने अपना तमाम माल जम्अ़ कर के कश्ती पर रखा और यमन की जानिब चल पड़ा, इतने में तेज़ आंधी चली और कश्ती डूब गई, मैं एक तख़्त पर बैठ कर किसी साहि़ल पर पहुंच गया और वहां चार महीने तक घास और पत्ते खा कर और चश्मों का पानी पी कर गुज़ारा करता रहा, फिर मैं ने तहिय्या किया कि कुछ भी हो जाए मैं अपना सफ़र जारी रखूंगा या तो मर जाऊंगा या कामयाब हो जाऊंगा। चुनान्चे, मैं चल पड़ा और थोड़ी ही देर बा'द मुझे एक ऐसा मह़ल नज़र आया गोया चांदी से बना हुवा है, मैं उस का दरवाज़ा खोल कर अन्दर दाख़िल हुवा तो देखा कि वहां हर त़ाक़ में ताला लगा मोतियों का एक सन्दूक़ रखा हुवा है और चाबियां भी सामने रखी हैं, मैं ने एक सन्दूक़ खोला तो उस में से बहुत ही प्यारी ख़ुश्बू महकने लगी, अन्दर देखा तो वहां रेशमी कपड़ों में चन्द अफ़राद लेटे हुवे थे, मैं ने एक को ह़रकत दी तो वोह बे जान था मगर ज़िन्दा की त़रह़ तरो ताज़ा था, मैं सन्दूक़ बन्द कर के बाहर निकल आया और मह़ल का दरवाज़ा बन्द कर के चल पड़ा, इतने में सफ़ेद पाउं वाले दो दिलकश घोड़ों पर दो ह़सीनो जमील घुड़ सुवार आते दिखाई दिये। उन्हों ने मुझ से मेरा वाक़िआ़ दरयाफ़्त किया तो मैं ने उन्हें सब ह़ाल कह सुनाया। उन्हों ने मुझ से कहा : सीधे चलते रहो आगे जा कर तुम्हें एक दरख़्त के नीचे बाग़ नज़र आएगा वहां एक बा वक़ार बुज़ुर्ग नमाज़ पढ़ रहे होंगे तुम उन से अपनी परेशानी बयान करना वोह तुम्हें रास्ता बता देंगे। मैं थोड़ा आगे चला तो वोह बुज़ुर्ग नज़र आ गए, मैं ने उन्हें सलाम किया तो उन्हों ने जवाब दे कर मेरा माजरा दरयाफ़्त किया। मैं ने तमाम माजरा उन के गोश गुज़ार किया, मह़ल वाली बात पर वोह कुछ घबरा गए फिर मुझ से पूछा : तुम ने वहां क्या किया ? मैं ने अ़र्ज़ की : मैं ने सन्दूक़ बन्द कर के मह़ल का दरवाज़ा भी

1.....मतन में इस मक़ाम पर "उ़बैद बिन सईद" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "सईद बिन अबू अ़रूबा" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया।

बन्द कर दिया था। वोह पुर सुकून हो गए और मुझे बैठने का हुक्म दिया। इतने में वहां से एक बादल गुज़रा और उस में से आवाज़ आई اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِیَّ الله या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के वली ! आप पर सलाम हो। बुज़ुर्ग ने बादल से पूछा : कहां जा रहे हो ? बादल ने अ़र्ज़ की : फ़ुलां फ़ुलां जगह। उन के पास से यूंही बादल गुज़रते रहे ह़त्ता कि एक से आप ने पूछा तो उस ने कहा : बसरा जा रहा हूं। बुज़ुर्ग ने उसे नीचे उतरने का हुक्म दिया तो वोह उन के सामने उतर गया। बुज़ुर्ग ने उस से फ़रमाया : इस शख़्स को उठा लो और सह़ीह़ सलामत इस की मन्ज़िल पर उतार देना। जब मैं बादल पर सुवार होने लगा तो मैं ने कहा : मैं आप को उस का वासित़ा दे कर पूछता हूं जिस ने आप को इ़ज़्ज़त बख़्शी ! आप मुझे इस मह़ल, घुड़ सुवार और अपने बारे में ज़रूर बताइये। तो उन्हों ने बताया : जहां तक मह़ल की बात है तो वहां समन्दर में शहीद होने वाले हैं जिन्हें फ़िरिश्ते समन्दर से उठा कर लाए और रेशमी कफ़न दे कर सन्दूक़ों में रख दिया। वोह दो घुड़ सुवार फ़िरिश्ते थे जो सुब्ह़ शाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सलाम ले कर उन शहीदों के पास आते हैं। रहा मेरा मुआ़मला तो मैं ख़िज़्र (عَلَيْهِ السَّلَام) हूं और मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की थी कि मुझे तुम्हारे नबी (ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की उम्मत के साथ उठाए। उस शख़्स ने बताया जब मैं उस बादल पर बैठा तो मुझे सख़्त घबराहट हुई ह़त्ता कि अब मैं आप के सामने हूं।

येह वाक़िआ़ शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی ने भी अपनी किताब "अल इसाबह फ़ी मा'रिफ़तिस्सह़ाबह" में ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के बाब में ज़िक्र किया है।(1)

दिल से ख़ौफ़ दूर हो

يَا وَاحِدُ 1001 बार, जिस को अकेले में डर लगता हो, तन्हाई में पढ़ ले اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ उस के दिल से ख़ौफ़ जाता रहेगा। (मदनी पंज सूरह, स. 255)

1... الاصابة، حرف الخاء المعجمة، ۲/۲۷۴، رقم:۲۲۷۵: الخضر صاحب موسی علیہ السلام

बाब नम्बर 40 मुर्दे पर रोज़ाना ठिकाना पेश किये जाने का बयान

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ (پ۲۴، المؤمن:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आग जिस पर सुब्हो शाम पेश किये जाते हैं।

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : आले फ़िरऔन की रूहें सियाह परन्दों के पोटों में सुब्हो शाम आग पर जाती हैं। पेश होने से येही मुराद है।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : आले फ़िरऔन की रूहें दिन में दो मरतबा आग पर पेश की जाती हैं और उन्हें कहा जाता है : येह तुम्हारा ठिकाना है, येह फ़रमाने बारी तआ़ला इसी के मुतअ़ल्लिक़ है :

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ (پ۲۴، المؤمن:۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आग जिस पर सुब्हो शाम पेश किये जाते हैं।(2)

इसी फ़रमाने इलाही की तफ़्सीर करते हुवे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ज़ैद बिन अस्लम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : वोह क़ियामत तक हर रोज़ सुब्हो शाम आग पर पेश किये जाते रहेंगे।(3)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई फ़ौत होता है तो उस पर सुब्हो शाम उस का ठिकाना पेश किया जाता है अगर जन्नती हो तो जन्नतियों का और अगर दोज़ख़ी हो तो दोज़ख़ियों का और उस से कहा जाता है : هٰذَا مَقْعَدُكَ حَتّٰى يَبْعَثَكَ اللهُ اِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَة या'नी येह तुम्हारा ठिकाना है ह़त्ता कि बरोज़े क़ियामत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें इस की त़रफ़ उठाएगा।(4)

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरत़ुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : येह भी कहा गया है कि "ठिकाना पेश किया जाना सिर्फ़ उन मोमिनों के साथ ख़ास है जिन्हें अ़ज़ाब नहीं होगा" और येह क़ौल भी है कि "ऐसा नहीं है।" मुमकिन है जिस मोमिन को अ़ज़ाब होना हो उसे बारी बारी या फिर

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب ذکر النار، ماذکر فیما اعدلاھل النار وشدته، ۹۸/۸، حدیث:۴۴

2 ...شرح اصول اعتقاد اھل السنة، باب الشفاعة لاھل الکبائر، ۹۷۹/۲، حدیث:۲۱۶۵

3 ...اھوال القبور لابن رجب، الباب التاسع فی ذکر محل ارواح الموتی فی البرزخ، ص۱۸۴

4 ...بخاری، کتاب الجنائز، باب المیت یعرض علیه مقعده بالغداة والعشی، ۴۶۵/۱، حدیث:۱۳۷۹

एक साथ दोनों ठिकाने दिखाए जाते हों। मज़ीद फ़रमाते हैं : येह भी कहा गया है कि "ठिकाना सिर्फ़ रूह़ पर पेश किया जाता है।" मुमकिन है इस के साथ बदन का कोई हिस्सा शरीक हो और येह भी हो सकता है कि रूह़ के साथ पूरा जिस्म भी शामिल हो या'नी रूह़ को जिस्म में लौटा दिया जाता हो जैसा कि सुवालाते क़ब्र के वक़्त लौटाई जाती है।(1)

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम हिबतुल्लाह बिन ह़सन त़बरी लालकाई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने "अस्सुन्नह" में येह ह़दीस यूं रिवायत फ़रमाई है : जो बन्दा भी फ़ौत होता है उस की रूह़ पेश की जाती है, अगर वोह अह्ले जन्नत से हो तो जन्नत पर और अगर अह्ले दोज़ख़ से हो तो दोज़ख़ पर पेश की जाती है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक आदमी पर क़ब्र में सुब्ह़ो शाम उस का जन्नती या दोज़ख़ी ठिकाना पेश किया जाता है।(3)

रात गई दिन आ गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ रोज़ाना दो मरतबा सुब्ह़ो शाम बुलन्द आवाज़ से पुकारते थे, दिन की इब्तिदा होती तो फ़रमाते : रात गई और दिन आ गया और आले फ़िरऔ़न को आग पर पेश किया गया पस जो भी इन की आवाज़ सुनता वोह आग से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता और जब शाम होती तो फ़रमाते : दिन गया और रात आ गई और आले फ़िरऔ़न को आग पर पेश किया गया पस जो भी इन की आवाज़ सुनता वोह आग से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता।(4)

अ़स्क़लान में एक शख़्स ने साहिल पर खड़े हुवे ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से पूछा : क्या बात है कि हम समन्दर से सियाह परन्दे निकलते देखते हैं और जब रात होती है तो सफ़ेद परन्दे निकलते हैं ? फ़रमाया : क्या तुम येह मुआ़मला समझना चाहते हो ? उस ने कहा : जी

---

1 ...التذكرة للقرطبی، باب ما جاء ان الميت يعرض عليه مقعده بالغداة والعشی، ص ١٤٧

2 ...شرح اصول اعتقاد اهل السنة، باب سياق ما روی عن النبی فی ان المسلمين اذا دلوا...الخ، ٢/ ٩٦٠، حديث: ٢١٢٥

3 ...كتاب الزهد لهناد بن السری، باب عرض الرجل علی مقعده، ص ٢٢٠، حديث: ٣٦٥

4 ...شعب الايمان، باب فی ان دار المؤمنين...الخ، ١/ ٣٦٠، حديث: ٤٠٠

हां। फ़रमाया : आले फ़िरऔन की रूहें इन परन्दों के पोटों में आग पर पेश की जाती हैं तो आग उन्हें जलाती है जिस से पर काले हो जाते हैं फिर येह अपने परों को गिरा देते हैं और अपने घोंसलों में वापस आ जाते हैं तो उन्हें भी आग जला देती है येह सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा फिर हुक्म होगा : फ़िरऔन वालों को सख़्त तर अ़ज़ाब में दाख़िल करो।(1)

बाब नम्बर 41 मुर्दों पर ज़िन्दों के आ'माल पेश होने का बयान

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारे आ'माल तुम्हारे कुम्बे के फ़ौतशुदा अफ़राद और रिश्तेदारों पर पेश किये जाते हैं अगर आ'माल अच्छे हों तो वोह उन से ख़ुश होते हैं और अगर इस के इ़लावा हों तो वोह अ़र्ज़ करते हैं : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन्हें मौत न देना जब तक कि तू इन्हें हिदायत अ़त़ा न फ़रमा दे जिस त़रह़ तू ने हमें हिदायत दी है।(2)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक तुम्हारे आ'माल तुम्हारे ख़ानदान और रिश्तेदारों पर उन की क़ब्रों में पेश किये जाते हैं अगर अच्छे हों तो वोह ख़ुश होते हैं और अगर इस के इ़लावा हों तो वोह अ़र्ज़ करते हैं : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इन्हें अपनी इत़ाअ़त वाले आ'माल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : तुम्हारे आ'माल मुर्दों पर पेश किये जाते हैं अगर अच्छे हों तो वोह ख़ुश होते हैं और अगर बुरे हों तो वोह अ़र्ज़ करते हैं : इलाही ! इन्हें नेक आ'माल की तौफ़ीक़ दे।(4)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन मैसरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुस्त़न्त़ीनिया (इस्तम्बूल) में जिहाद करने गए तो एक क़िस्सा गो के पास से गुज़र हुवा जो कह रहा था : जब कोई शख़्स सुब्ह़ अ़मल करता है तो शाम को वोह अ़मल

---

1 ... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب من عاش بعد الموت، ۶/۲۹۸، حدیث: ۴۹

2 ... مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ۴/۳۲۹، حدیث: ۱۲۶۸۳

3 ... مسند طیالسی، ص ۲۴۸، حدیث: ۱۷۹۴

4 ... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، ملاقاۃ الارواح، ۵/۴۸۲، حدیث: ۲۷۴

उस के जान पहचान वाले मुर्दों पर पेश किया जाता है और शाम को अ़मल करता है तो सुब्ह़ को वोह अ़मल उस के जान पहचान वाले मुर्दों पर पेश किया जाता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ग़ौर करो क्या कह रहे हो। उस ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं ठीक कह रहा हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ह़ज़रते उ़बादा बिन सामित और ह़ज़रते सा'द बिन उ़बादा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के सामने उन के बा'द किये जाने वाले अपने आ'माल पर रुस्वा होने से तेरी पनाह मांगता हूं। उस क़िस्सा गो ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने जिस बन्दे के लिये अपनी विलायत लिख देता है उस की पर्दापोशी करता और उस के अच्छे आ'माल पर उस की ता'रीफ़ फ़रमाता है।(1)

अपने मुर्दों को तक्लीफ़ मत दो

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ग़फ़ूर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْعَزِیْز अपने वालिद के वासित़े से अपने दादा से रिवायत करते हैं कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : पीर और जुमा'रात के दिन आ'माल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में पेश किये जाते हैं और जुमुआ़ के दिन अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام और वालिदैन पर पेश किये जाते हैं, नेक आ'माल पर वोह ख़ुश होते हैं और उन के चेहरों की चमक दमक बढ़ जाती है लिहाज़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो और अपने मुर्दों को तक्लीफ़ मत दो।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : मैं ने हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : अपने मुर्दा भाइयों के मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरो क्यूंकि तुम्हारे आ'माल उन पर पेश किये जाते हैं।(3)

मुर्दों को रुस्वा न करो

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَا تَفْضَحُوْا مَوْتَاکُمْ بِسَیِّئَاتِ اَعْمَالِکُمْ فَاِنَّھَا تُعْرَضُ عَلٰی اَوْلِیَائِکُمْ مِنْ اَھْلِ الْقُبُوْرِ

❶... مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، ماقالوا فی البکاء من خشیۃ اللہ، ۸/۳۱۴، حدیث: ۱۳۷

❷... نوادر الاصول، الاصل التاسع والستون والمائۃ، ۱/۶۷۱، حدیث: ۹۲۵

❸... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۳، حدیث: ۱

या'नी अपने बुरे आ'माल के सबब अपने मुर्दों को रुस्वा न करो क्यूंकि तुम्हारे आ'माल तुम्हारे फ़ौतशुदा दोस्तों पर पेश किये जाते हैं।(1)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अब्बाद ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़िलस्तीन के हुक्मरान इब्राहीम सालेह हाशिमी के पास गए तो उस ने कहा : मुझे नसीहत कीजिये। आप ने फ़रमाया : मुझे येह बात पहुंची है कि ज़िन्दों के आ'माल उन के फ़ौतशुदा रिश्तेदारों पर पेश किये जाते हैं लिहाज़ा तुम ग़ौर कर लो कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में तुम्हारे किस तरह के आ'माल पेश किये जाते हैं।(2)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه येह दुआ किया करते थे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं अपने मामूं हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुलाक़ात के वक़्त उन की नाराज़ी से तेरी पनाह मांगता हूं।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : बेशक तुम्हारे आ'माल तुम्हारे मुर्दों पर पेश किये जाते हैं वोह ख़ुश भी होते हैं और ग़मज़दा भी। आप दुआ किया करते थे कि "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ऐसे अमल से तेरी पनाह मांगता हूं जिस की वज्ह से हज़रते अब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को रुस्वा होना पड़े।"(4)

हज़रते सय्यिदुना उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन औस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ हमारे घर आए तो हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन औस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ की साहिबज़ादी और मेरी ज़ौजा के मुतअल्लिक़ मुझ से फ़रमाया : मैं ने अपनी भतीजी से बात करनी है। जब वोह अपनी भतीजी के पास गए तो पूछा : तुम्हारे शौहर का रवय्या तुम्हारे साथ कैसा है ? उस ने कहा : मुमकिना हद तक भलाई से पेश आते हैं। फिर मुझ से फ़रमाया : ऐ उस्मान ! इस के साथ भलाई किया करो क्यूंकि इस के साथ तुम्हारा जो भी बरताव होगा वोह (तुम्हारे सुसर) हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन औस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ को पहुंचेगा। मैं ने पूछा : क्या ज़िन्दों की ख़बरें मुर्दों को पहुंचती हैं ? फ़रमाया : हां, हर रिश्ते

1 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۴، حدیث: ۲

2 ...حلیة الاولیاء، احمد بن ابی الحواری، ۱۰/۱۹، رقم: ۱۴۳۴۵

3 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۷، حدیث: ۵

4 ...الزھد لابن المبارک ما رواہ نعیم بن حماد، باب فی عرض عمل الأحیاء علی الأموات، ص ۴۲، حدیث: ۱۶۵

वाले के पास उस के रिश्तेदारों की ख़बरें पहुंचती हैं अगर अच्छी हों तो वोह उस से बहुत खुश होते हैं और अगर बुरी हों तो वोह मायूस व ग़मगीन हो जाते हैं हत्ता कि जब वोह किसी ऐसे शख़्स के बारे में पूछते हैं जो मर चुका हो और उन से पूछा जाए कि क्या वोह तुम्हारे पास नहीं आया तो वोह कहते हैं : नहीं, बल्कि उसे नीचे दिखाने वाली गोद में ले जाया जा चुका।[(1)]

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र बिन अय्याश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه से मरवी है कि बनू असद के एक गोरकन का बयान है : एक रात मैं क़ब्रिस्तान में था कि मैं ने एक क़ब्र से किसी को येह कहते सुना : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! बराबर वाली क़ब्र से आवाज़ आई : जाबिर ! क्या हुवा ? उस ने कहा : कल अम्मी जान आई थीं लेकिन न तो उन से हमें कोई फ़ाएदा हुवा और न ही उन्हों ने हम से सिलए रेह्मी की क्यूंकि अब्बू जान ने उन से नाराज़ हो कर क़सम खाई थी कि मैं तुम्हारी नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ूंगा। गोरकन कहता है : दूसरे दिन एक शख़्स मेरे पास आया और जिन दो क़ब्रों से मैं ने कलाम सुना था उन के बारे में कहने लगा : इन के दरमियान मेरे लिये क़ब्र तय्यार करो। मैं ने उस से पूछा : इस का नाम अ़ब्दुल्लाह और इस का जाबिर है ? उस ने कहा : हां। फिर मैं ने जो कुछ सुना था उसे बताया तो उस ने कहा : हां मैं ने क़सम खाई थी कि मैं इस की नमाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ूंगा लेकिन अब मैं उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ूंगा और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा करूंगा।[(2)]

मर्हूम वालिदैन से भलाई

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : जिस से तुम्हारा बाप हुस्ने सुलूक करता था उस से हुस्ने सुलूक करो क्यूंकि क़ब्र में मुर्दे के साथ भलाई येह है कि तुम उस के साथ भलाई करो जिस से तुम्हारा बाप भलाई करता था।[(3)]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ اَحَبَّ اَنْ یَّصِلَ اَبَاهُ فِیْ قَبْرِهٖ فَلْیَصِلْ اِخْوَانَ اَبِیْهِ مِنْ بَعْدِهٖ या'नी जो अपने वालिद से उस की क़ब्र में भलाई करना चाहे वोह वालिद की वफ़ात के बा'द उस के दोस्तों से भलाई करे।[(4)]

---

❶... الزهد لابن المبارك، باب بشرى المؤمن عند الموت وغير ذلك، ص ۱۵۱، حديث: ۴۴۷

❷... موسوعة ابن ابی الدنیا، كتاب القبور، جامع ذكر القبور، ۸۲/۶، حديث: ۱۳۸

❸... حلية الاولياء، عون بن عبد الله بن عتبة، ۲۸۳/۴، رقم: ۵۵۸۹

❹... صحيح ابن حبان، كتاب البر والاحسان، باب حق الوالدين، ۳۲۹/۱، حديث: ۴۳۳

मर्हूम वालिदैन के साथ भलाई की चार सूरतें

हज़रते सय्यिदुना अबू उसैद साइदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! वालिदैन के इन्तिक़ाल के बा'द उन के साथ नेकी करने की कोई सूरत बाक़ी है ? इरशाद फ़रमाया : हां, चार सूरतें बाक़ी हैं : (1) उन के लिये दुआ व इस्तिग़फ़ार करना (2) उन के अ़हद को पूरा करना (3) उन के दोस्तों की इ़ज़्ज़त करना और (4) उस रिश्ते को जोड़ना जो उन की वज्ह से जुड़ता था ।(1)

बाब नम्बर 42 रूह़ को मक़ामे इ़ज़्ज़त से रोकने वाली चीज़ों का बयान

क़र्ज़ का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहतशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : نَفْسُ الْمُؤْمِنِ مُعَلَّقَةٌ بِدَيْنِهِ حَتّٰى يُقْضٰى عَنْهُ या'नी मोमिन की जान उस के क़र्ज़ के सबब मुअ़ल्लक़ (या'नी अपने इ़ज़्ज़त वाले मक़ाम तक जाने से रोक दी गई) होती है ह़त्ता कि उस का क़र्ज़ अदा कर दिया जाए ।(2)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं : हम बारगाहे रिसालत में हाज़िर थे कि एक जनाज़ा लाया गया ताकि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस का जनाज़ा पढ़ाएं, आप ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हारे दोस्त पर क़र्ज़ है ? लोगों ने अ़र्ज़ की : जी हां । इरशाद फ़रमाया : ऐसे आदमी पर मेरा नमाज़े जनाज़ा पढ़ना क्या फ़ाएदा देगा जिस की रूह़ क़र्ज़ के बदले उस की क़ब्र में गिरवी रखी हुई हो और आस्मान की त़रफ़ बुलन्द न हो, अगर तुम में से कोई इस के क़र्ज़ का ज़ामिन बनता है तो मैं इस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ लेता हूं क्यूंकि मेरा इस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ना इसे नफ़्अ़ देगा ।(3)

हज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक दिन नमाज़े फ़ज्र अदा की और पूछा : क्या यहां फ़ुलां क़बीले का कोई शख़्स मौजूद है ?

---

1 ...الادب المفرد، باب بر الوالدين بعد موتهما، ص٣٣، حديث: ٣٥
ابو داود، كتاب الادب، باب في بر الوالدين، ٤/٤٣٤، حديث: ٥١٤٢

2 ... ابن ماجه، كتاب الصدقات، باب التشديد في الدين، ٣/١٤٥، حديث: ٢٤١٣

3 ... معجم اوسط، ٤/٧٢، حديث: ٥٢٥٣

क्यूंकि तुम्हारा दोस्त क़र्ज़ की वज्ह से जन्नत के दरवाज़े पर रोक दिया गया है अगर तुम चाहो तो उसे छुड़ा लो और अगर चाहो तो अ़ज़ाबे इलाही के ह़वाले कर दो।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा जिस पर दो दीनार क़र्ज़ था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने से इन्कार फ़रमा दिया, फिर जब ह़ज़रते क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह दो दीनार अपने ज़िम्मे ले लिये तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। अगले दिन आप ने उन से पूछा : दो दीनारों का क्या हुवा ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : अभी कल ही तो उस शख़्स का इन्तिक़ाल हुवा है (या'नी मैं अदा कर दूंगा)। अगले दिन फिर पूछा तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं ने अदा कर दिये हैं। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अब उसे ठन्डक पहुंची है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि एक दिन नमाज़े फ़ज्र की अदाएगी के बा'द रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या यहां बनू हुज़ैल का कोई शख़्स मौजूद है क्यूंकि तुम्हारा साथी अपने क़र्ज़ के सबब जन्नत के दरवाज़े पर रोक दिया गया है।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अत़्वल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हमारे वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हो गया, उन्हों ने तर्के में 300 दिरहम छोड़े, उन पर क़र्ज़ भी था और अह्लो इ़याल भी थे, मैं ने सोचा येह दिरहम उन के अह्लो इ़याल पर ख़र्च कर दूं तो रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اَبَاكَ مَحْبُوْسٌ بِدَيْنِهٖ فَاقْضِ عَنْهُ या'नी तुम्हारा वालिद अपने क़र्ज़ की वज्ह से क़ैद है (जन्नत से रोक दिया गया है) लिहाज़ा उस का क़र्ज़ अदा करो।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मक़रूज़ शख़्स क़ैद में होगा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तन्हाई की शिकायत करेगा।(5)

---

1 ... معجم کبیر، ۱۷۸/۷، حدیث: ۶۷۵۰، ۶۷۵۲

2 ... مسند امام احمد، مسند جابر بن عبد اللہ، ۸۳/۵، حدیث: ۱۴۵۴۳

3 ... مسند بزار، مسند ابن عباس، ۳۳۱/۱۱، حدیث: ۵۱۴۴

4 ... ابن ماجہ، کتاب الصدقات، باب اداء الدین عن المیت، ۱۵۵/۳، حدیث: ۲۴۳۳، مات ابونا: بدلہ: اخاہ مات
مسند ابی یعلی، مسند سعد بن الاطول، ۵۰/۲، حدیث: ۱۵۰۹

5 ... معجم اوسط، ۲۵۹/۱، حدیث: ۸۹۳

पुर असरार कुंवां

हज़रते सय्यिदुना शैबान बिन ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه जिहाद के लिये निकले तो रास्ते में अचानक एक गहरा और कुशादा कुंवां आ गया जिस में से घुटी घुटी आवाज़ें आ रही थीं, दोनों में से एक कुंवें में उतरे तो अन्दर तख़्त पर एक शख़्स बैठा हुवा था और उस के नीचे पानी था, उतरने वाले ने उस से पूछा : तुम इन्सान हो या जिन्न ? उस ने कहा : इन्सान हूं। पूछा : कौन हो ? उस ने कहा : मैं इन्ताकिया का बाशिन्दा हूं और मर चुका हूं, मुझ पर क़र्ज़ था जिस की वज्ह से मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे यहां क़ैद कर दिया है, इन्ताकिया में मेरा बेटा है जो मुझे याद करता है न मेरा क़र्ज़ अदा करता है। कुंवें में जाने वाले बाहर निकले और अपने साथी से कहा : हम जिहाद बा'द में करेंगे चलो पहले इस का क़र्ज़ अदा करते हैं। चुनान्चें, दोनों ने जा कर क़र्ज़ अदा किया और फिर वापस उसी जगह आए तो वहां कूंएं का नामो निशान भी न था, शाम हो चुकी थी लिहाज़ा दोनों ने वहीं रात बसर की तो एक शख़्स उन के ख़्वाब में आया और कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरी त़रफ़ से तुम्हें जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए ! जब मेरा क़र्ज़ अदा हुवा तो मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे जन्नत के फ़ुलां मक़ाम की त़रफ़ मुन्तक़िल कर दिया।(1)

बाब नम्बर 43

वसिय्यत का बयान

हज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन क़बीसा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने वसिय्यत न की उसे मुर्दों के साथ कलाम करने की इजाज़त नहीं दी जाएगी। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मुर्दे भी कलाम करते हैं ? इरशाद फ़रमाया : हां और आपस में मुलाक़ात भी करते हैं।(2)

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो वसिय्यत किये बिग़ैर मर

1 ... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب من عاش بعد الموت، ٦/٢٩٨، حديث: ٥٠

2 ... فردوس الاخبار، ٢/٣٠٨، حديث: ٦٣٦٠

गया उसे क़ियामत के दिन तक कलाम करने की इजाज़त नहीं होगी।[1] अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या (मुर्दे) क़ियामत के दिन से पहले कलाम करते हैं ? इरशाद फ़रमाया : हां और एक दूसरे से मुलाक़ात भी करते हैं।[2]

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन ख़ालिद बिन यज़ीद अन्सारी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی रिवायत करते हैं कि बसरा के एक गोरकन का बयान है : मैं ने एक दिन क़ब्र खोदी और उस के पास ही सर रख कर सो गया, दो औ़रतें मेरे ख़्वाब में आईं तो उन में से एक ने कहा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! मैं तुझे ख़ुदा का वासित़ा देती हूं कि तू इस औ़रत को हम से दूर कर दे और इसे हमारा पड़ोसी मत बना। मैं घबरा कर जागा तो एक औ़रत का जनाज़ा लाया जा रहा था। मैं ने कहा : कहीं और क़ब्र बना लो। चुनान्चे, मैं ने उन्हें वहां से फेर दिया। जब रात हुई तो दो औ़रतें फिर मेरे ख़्वाब में आईं और उन में से एक ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारी त़रफ़ से तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे तुम ने हम से बड़ी आफ़त को दूर कर दिया। मैं ने कहा : तुम मुझ से बात कर रही हो मगर येह तुम्हारे साथ वाली क्यूं ख़ामोश है ? उस ने कहा : येह वसिय्यत किये बिग़ैर मर गई थी और जो वसिय्यत किये बिग़ैर मर जाए उस के लिये क़ियामत के दिन तक कलाम न करना लाज़िम होता है।[3]

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि सुल्त़ाने दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने ख़्वाब में दो औ़रतों को देखा उन में से एक कलाम करती थी और दूसरी नहीं करती थी, ह़ालांकि दोनों जन्नती हैं, मैं ने उस से कहा : तुम कलाम कर रही हो मगर येह नहीं कर रही ? उस ने बताया कि मैं ने वसिय्यत की थी जब कि येह वसिय्यत किये बिग़ैर मर गई लिहाज़ा येह रोज़े क़ियामत तक कलाम नहीं कर सकेगी[4]।[5]

• • • • • •

---

1 ...فردوس الاخبار، ۲/۲۷۵، حدیث: ۵۹۷۲

2 ...اھوال القبور لابن رجب، الباب الثامن، ص۱۵۹

3 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/۸۵، حدیث: ۱۳۷

4 ...वसिय्यत के तफ़्सीली अह़काम व मसाइल जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त हिस्सा 19, जिल्द 3, सफ़ह़ा 933 ता 1017" का मुत़ालआ़ कीजिये।

5 ...فردوس الاخبار، ۱/۴۰۷، حدیث: ۳۰۲۵

बाब नम्बर 44 ख़्वाब में ज़िन्दों और मुर्दों की रूहों की मुलाक़ात का बयान

इस ह़वाले से ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की रिवायत गुज़र चुकी है। इब्ने क़य्यिम ने कहा : इस मस्अले के बे शुमार दलाइल व शवाहिद हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही जानता है और "दुरुस्त ह़िस" इस की सब से आ़दिल गवाह है, पस ज़िन्दों और मुर्दों की रूह़ों का आपस में मिलना ऐसे ही है जैसे ज़िन्दों की रूह़ें एक दूसरे से मिलती हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَللّٰهُ یَتَوَفَّی الْاَنْفُسَ حِیْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا ۚ فَیُمْسِكُ الَّتِیْ قَضٰی عَلَیْهَا الْمَوْتَ وَ یُرْسِلُ الْاُخْرٰۤی اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ (پ۲۴، الزمر:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक रखता है और दूसरी एक मीआ़दे मुक़र्रर तक छोड़ देता है।*

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : मुझ तक येह बात पहुंची है कि मुर्दों और ज़िन्दों की रूह़ें सोते में मुलाक़ात करती और एक दूसरे से (अह़वाल) पूछती हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुर्दों की रूह़ों को रोक लेता है और ज़िन्दों की रूह़ों को उन के जिस्मों की त़रफ़ भेज देता है।[1]

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

وَ الَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا ۚ (پ۲۴، الزمر:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जो न मरें उन्हें उन के सोते में।*

सुद्दी ने इस की तफ़्सीर में कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें सोते में वफ़ात देता है तो ज़िन्दा और मुर्दा की रूह़ मुलाक़ात करती है और फिर दोनों बाहमी तआ़रुफ़ और बात चीत करती हैं फिर ज़िन्दा की रूह़ अपनी मौत तक दुन्या में मौजूद अपने जिस्म की त़रफ़ लौट आती है और मुर्दा की रूह़ भी अपने जिस्म की त़रफ़ लौटना चाहती है मगर रोक दी जाती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मज़्कूरा आयत की एक तफ़्सीर यूं मन्क़ूल है कि आस्मानो ज़मीन के दरमियान मशरिक़ से मग़रिब तक एक सबब फैला हुवा है,

❶...معجم اوسط، ۱/۴۸، حدیث:۱۲۲

ज़िन्दों और मुर्दों की रूहें उस की त़रफ़ जाती हैं, यूं ज़िन्दा की रूह़ मुर्दा की रूह़ से मुलाक़ात करती है और जब ज़िन्दा की रूह़ को जिस्म की त़रफ़ वापस जाने का हुक्म होता है ताकि अपना रिज़्क़ पूरा करे तो मुर्दा की रूह़ रोक दी जाती है और ज़िन्दा की रूह़ को भेज दिया जाता है।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि जब कोई फ़ौत होता है तो उस की रूह़ को एक माह तक उस के घर के इर्द गिर्द घुमाया जाता है और एक साल तक उस की क़ब्र के गिर्द घुमाया जाता है, फिर उस को उस सबब की त़रफ़ बुलन्द कर दिया जाता है जहां ज़िन्दों और मुर्दों की रूहें मुलाक़ात करती हैं।[2]

इब्ने क़य्यिम ने कहा : ज़िन्दा और मुर्दा की रूहों की मुलाक़ात की दलील येह है कि ज़िन्दा ख़्वाब में मुर्दा को देखता है तो मुर्दा उसे ग़ैबी उमूर की ख़बर देता है फिर वोह काम उसी त़रह़ होता है जैसी उस ने ख़बर दी थी।

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُبِیْن ने फ़रमाया : मुर्दा ख़्वाब में जो बात तुझे बताए वोह सच होती है क्यूंकि वोह सच के घर में है।[3]

बेटी की मौत की इत्तिलाअ़

ह़ज़रते सय्यिदुना शहर बिन हौशब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना सा'ब बिन जस्सामा और ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا के दरमियान रिश्तए उख़ुव्वत (भाईचारा) था। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : भाई ! हम में जो भी पहले फ़ौत हो वोह दूसरे को ख़्वाब में दिखाई दे। पूछा : क्या ऐसा भी हो सकता है ? फ़रमाया : हां। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इन्तिक़ाल पहले हो गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : مَافَعَلَ اللّٰہُ بِکَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : मशक़्क़त के बा'द मुझे बख़्श दिया गया। ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने उन की गर्दन में सियाह पट्टी

1... در منثور، سورۃ الزمر، تحت الآیۃ: ۴۲، ۷/ ۲۳۱

2... فردوس الاخبار، ۲/ ۳۶۴، حدیث: ۷۹۹۰

3... طبقات الحنابلۃ لابن ابی یعلی، الطبقۃ الخامسۃ، ۲/ ۱۸۸

देखी तो पूछा : येह क्या है ? उन्हों ने कहा : येह 10 दीनार हैं जो मैं ने एक यहूदी से क़र्ज़ लिये थे, वोह मेरे तरकश में रखे हुवे हैं लिहाज़ा आप वोह दीनार उस यहूदी को दे देना और हां ! मेरी वफ़ात के बा'द मेरे घर में जितने भी वाक़िआत होते हैं मुझे सब की ख़बर मिल जाती है हृत्ता कि चन्द दिन पहले बिल्ली के मरने की ख़बर भी है और अब छे दिन बा'द मेरी बच्ची इन्तिक़ाल कर जाएगी लिहाज़ा उस के साथ अच्छा बरताव करो ।

हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं उन के घर गया तो वहां एक तरकश लटका हुवा था मैं ने उसे उतारा तो उस में एक बटवा था जिस में 10 दीनार थे, मैं यहूदी के पास गया और उस से पूछा : क्या सा'ब पर तुम्हारा कुछ क़र्ज़ था ? उस ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सा'ब पर रह्म फ़रमाए ! वोह तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बेहतरीन सहाबी थे मैं ने उन्हें 10 दीनार क़र्ज़ दिया था । मैं ने वोह दीनार उस के हवाले किये तो उस ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! येह तो बिऐ़निही वोही हैं । फिर मैं ने हज़रते सा'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के घरवालों से पूछा : क्या सा'ब की वफ़ात के बा'द तुम्हारे हां कोई वाक़िआ़ पेश आया है ? उन्हों ने कहा : हां फ़ुलां फ़ुलां दिन येह काम हुवा वोह यूंही बताते रहे हृत्ता कि बिल्ली के मरने का भी बताया । मैं ने पूछा : मेरी भतीजी कहां है ? उन्हों ने बताया कि खेल रही है । मैं उस के पास गया और छू कर देखा तो उसे बुख़ार था । मैं ने कहा : इस बच्ची का ख़ूब ख़याल रखना फिर वोह छे दिन बा'द इन्तिक़ाल कर गई ।(1)

हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ बिन मालिक अशजई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और हज़रते सय्यिदुना मुहल्लिम बिन जस्सामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का आपस में भाईचारा था, हज़रते मुहल्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का वक़्ते वफ़ात आया तो हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन से फ़रमाया : मुहल्लिम ! वफ़ात के बा'द हमारे पास आ कर हमें बताना कि तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला हुवा । कहा : अगर वफ़ात याफ़्ता के लिये इजाज़त हुई तो मैं आ कर ख़बर दूंगा । फिर उन का इन्तिक़ाल हो गया और एक साल बा'द वोह हज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ख़्वाब में आए । आप ने पूछा : ऐ मुहल्लिम ! तुम्हारे साथ क्या बरताव हुवा ? उन्हों ने कहा : हमें हमारे आ'माल की पूरी पूरी जज़ा दी गई । पूछा : तुम सब को पूरी पूरी जज़ा दे दी गई है ? कहा : हां, सिवाए उन लोगों के जो बुराई में ऐसे मशहूर थे कि उन

1... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۳۵، حدیث: ۲۵

की त़रफ़ उंगलियों से इशारा किया जाता था। खुदा की क़सम ! मुझे पूरा पूरा अज्र दिया गया है ह़त्ता कि उस बिल्ली का भी अज्र मिला जो हमारे घर से मेरी वफ़ात से एक रात पहले गुम हो गई थी। अगली सुब्ह़ ह़ज़रते सय्यिदुना औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन की ज़ौजा के पास गए तो उन्हों ने कहा : मुह़ल्लिम के बा'द सा'ब की ज़ियारत करने वाले को खुश आमदीद ! आप ने पूछा : क्या तुम ने मुह़ल्लिम को वफ़ात के बा'द कभी ख़्वाब में देखा है ? उन्हों ने कहा : हां, रात ही वोह मेरे ख़्वाब में आए थे और अपनी बेटी को साथ ले जाने के लिये मुझ से झगड़ रहे थे। फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना ख़्वाब बयान किया और गुम होने वाली बिल्ली का तज़्किरा किया तो उन की ज़ौजा ने कहा : मुझे तो इस बात का इ़ल्म नहीं अलबत्ता खुद्दाम को बुला कर पूछती हूं वोह जानते होंगे। जब खुद्दाम से पूछा गया तो उन्हों ने कहा : हां, उन की बिल्ली ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़ल्लिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात से एक रात पहले गुम हो गई थी।(1)

वफ़ात के बा'द वसिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा खुरासानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : मुझे ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन क़ैस बिन शम्मास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की साह़िबज़ादी ने बताया कि जब वालिदे मोह़तरम जंगे यमामा में शहीद हुवे तो उस वक़्त उन पर एक क़ीमती ज़िरह थी जो वहां से गुज़रते हुवे एक मुसलमान ने उठा ली, वालिदे मर्ह़ूम एक और मुसलमान के ख़्वाब में आए और फ़रमाया : मैं तुम्हें एक वसिय्यत करने लगा हूं मगर येह मत कहना कि येह ख़्वाब है, सुनो ! कल जब मैं शहीद किया गया तो एक मुसलमान ने गुज़रते हुवे मेरी ज़िरह उठा ली, उस का ख़ैमा सब से आख़िर में है और उस के पास लम्बी रस्सी से एक घोड़ा बंधा हुवा है, उस ने ज़िरह पर पथ्थर की हांडी औंधी कर रखी है और उस पर कजावा डाला हुवा है, लिहाज़ा तुम ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर हो जाओ और उन्हें अ़र्ज़ करो कि वोह मेरी ज़िरह मंगवा लें और जब तुम मदीनए मुनव्वरा में ख़लिफ़तुर्रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाओ तो उन से कहना : मुझ पर इतना इतना क़र्ज़ है (वोह अदा कर दें) और मेरा फुलां गुलाम आज़ाद है। चुनान्चे, उस शख़्स ने येह वसिय्यत ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन वलीद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सुनाई तो उन्हों ने वोह ज़िरह मंगवा ली, जब येह ख़्वाब ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सामने बयान किया गया तो आप ने

1...الزہد لابن المبارک، باب فی الخلال المذمومۃ، ص۲۸۲، حدیث:۸۳۰

उन की वसिय्यत पूरी कर दी । ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के सिवा हमारे इ़ल्म में ऐसा कोई नहीं जिस की बा'द अज़ वफ़ात की गई वसिय्यत को पूरा किया गया हो ।(1)

सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का ख़्वाब

ह़ज़रते सय्यिदुना कसीर बिन सल्त رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर शहादत के दिन ग़ुनूदगी त़ारी हुई फिर जब जागे तो फ़रमाया : मैं ने अभी ख़्वाब में मोह़सिने काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तो आप ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّكَ شَاهِدٌ مَّعَنَا الْجُمُعَةَ या'नी बेशक तुम जुमुआ़ के दिन हमारे साथ होगे ।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ सुब्ह़ उठे तो फ़रमाया : मैं ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा से मुशर्रफ़ हुवा तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़स्मान ! इफ़्त़ार हमारे पास करना । उस दिन आप रोज़े से थे और उसी दिन आप को शहीद किया गया ।(3)

सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के दोस्त

ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन ख़ारिजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जब पहला फ़ितना रू नुमा हुवा तो मैं बहुत मुश्किल में मुब्तला हो गया, मैं ने दुआ़ मांगी कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कोई ऐसी ह़क़ बात दिखा जिसे मैं मज़बूत़ी से थाम लूं । चुनान्चे, मुझे ख़्वाब में दुन्या व आख़िरत इस त़रह़ दिखाई गई कि उन दोनों के दरमियान एक मुख़्तसर सी दीवार है और मैं उस के नीचे खड़ा हूं, मैं कहता हूं : काश ! किसी त़रह़ इस दीवार पर चढ़ जाऊं और अशजअ़ के शुहदा को देख लूं और वोह मुझे अपने ह़ालात बताएं । फिर मुझे ऐसी जगह उतारा गया जहां काफ़ी दरख़्त थे और कुछ लोग भी बैठे थे । मैं ने उन से पूछा : तुम शुहदा

1...مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، وصایا ثابت بن قیس فی الرؤیا بعدما استشھد وانفاذھا، ۴/۲۵۵، حدیث:۵۰۸۶
دلائل النبوۃ للبیھقی، باب ماجاء فی اخبارہ عن حال ثابت بن قیس...الخ، ۶/۳۵۶

2...مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، اخبار رسول اللہ عثمان فی الرؤیا یوم الشھادۃ، ۴/۵۶، حدیث:۴۵۹۸

3...مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، رؤیا عثمان ان النبی یقول لہ: افطر عندنا، ۴/۶۲، حدیث:۴۶۱۰

हो ? उन्हों ने कहा : हम फ़िरिश्ते हैं। मैं ने कहा : तो शुहदा कहां हैं ? उन्हों ने कहा : अगले दरजात में जाइये। मैं एक दरजा ऊपर चढ़ गया, उस की ख़ूब सूरती और कुशादगी को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है। वहां मैं ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام को देखा, आक़ाए दो जहां صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام से कहा : मेरी उम्मत के लिये बख़्शिश की दुआ़ कीजिये। उन्हों ने कहा : क्या आप नहीं जानते कि आप के बा'द उन्हों ने क्या किया, उन्हों ने आपस में ख़ून बहाए और अपने इमामों को शहीद किया, उन्हों ने ऐसा क्यूं नहीं किया जैसा मेरे दोस्त सा'द ने किया। (मेरी आंख खुली) तो मैं ने ख़ुद से कहा : ख़ुदा की क़सम ! मैं ने ऐसा ख़्वाब देखा है कि शायद अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस से मुझे फ़ाएदा दे। मैं हज़रते सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मकान देखने जाऊंगा और उन्ही के साथ रहूंगा। चुनान्चे, मैं उन के पास गया और उन्हें अपना ख़्वाब सुनाया तो वोह बहुत ख़ुश हुवे और फ़रमाया : यक़ीनन वोह शख़्स ख़सारे में है जिस के दोस्त हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام नहीं हैं। मैं ने पूछा : आप किस गुरौह के साथ हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं दोनों में से किसी के साथ नहीं हूं। मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे क्या हुक्म देते हैं ? फ़रमाया : तुम्हारे पास बकरियां हैं ? मैं ने कहा : नहीं। फ़रमाया : कुछ बकरियां ख़रीद लो और उन में मश्ग़ूल हो जाओ ह़त्ता कि मुआ़मला ख़त्म हो जाए।(1)

हज़रते सय्यिदतुना सलमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا फ़रमाती हैं : मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गई तो वोह रो रही थीं, मैं ने पूछा : क्यूं रो रही हैं ? फ़रमाया : मैं ने ख़्वाब में रसूले अकरम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रोते देखा, आप के सरे अक़्दस और दाढ़ी मुबारक पर मिट्टी लगी हुई थी। मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप को क्या हुवा ? इरशाद फ़रमाया : अभी मक़्तले हुसैन गया था।(2)

---

(1)...مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، مجیء سعد لیحرس النبی فی ظلمۃ اللیل، ۲۳۸/۴، حدیث:۶۱۸۱

(2)...ترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب ابی محمد الحسین بن علی، ۴۲۸/۵، حدیث: ۳۷۹۶

مستدرک حاکم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، رؤیۃ ام سلمۃ النبی بعد شہادۃ الحسین، ۲۴/۵، حدیث: ۶۸۳۰

बुख़्ल का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना मा'मर رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मुझे मेरे एक शैख़ (या'नी उस्ताद साहिब) ने बताया कि एक औ़रत हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की किसी ज़ौजए मोह़तरमा के पास ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : दुआ़ कीजिये कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे हाथ खोल दे ? उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : तुम्हारे हाथों को क्या हुवा ? उस ने कहा : मेरे मां बाप थे, बाप बहुत मालदार, नेक और बहुत सदक़ा करने वाला था और मेरी मां में ऐसी कोई ख़ूबी नहीं थी, मैं ने मां को कभी सदक़ा करते नहीं देखा हां एक मरतबा हम ने गाए ज़ब्ह़ की तो मां ने उस की थोड़ी सी चरबी और एक पुराना सा लिबास एक मिस्कीन को दिया था। मेरे वालिदैन का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं ने ख़्वाब में वालिद को देखा कि वोह एक नहर के किनारे लोगों को पानी पिला रहे हैं, मैं ने पूछा : अब्बा जान ! क्या आप ने मेरी मां को भी कहीं देखा है ? उन्हों ने कहा : नहीं। चुनान्चे, मैं मां की तलाश में निकली तो देखा कि वोह एक जगह वोही फटा पुराना लिबास पहने और हाथ में चरबी लिये खड़ी हैं, वोह चरबी को दूसरे हाथ पर मार कर उस का असर चाट रही हैं और कह रही हैं : हाए प्यास ! हाए प्यास ! मैं ने कहा : अम्मी जान ! मैं आप को पानी पिलाऊं ? कहा : हां पिलाओ। चुनान्चे, मैं अपने वालिद के पास गई और उन से एक बरतन पानी ला कर मां को पिला दिया। इतने में मां के पास खड़े हुवे एक शख़्स ने कहा : जिस ने इसे पानी पिलाया है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का हाथ शल (सुन) कर दे। जब मैं जागी तो मेरा हाथ शल हो चुका था।(1)

...

फ़स्ल नींद में ज़िन्दा की रूह़ निकलने, जहां रब तआ़ला चाहे सैर करने और रूहों वग़ैरा से मुलाक़ात करने का सुबूत

बा'ज़ ख़्वाब सच्चे और बा'ज़ झूटे क्यूं होते हैं ?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से मुलाक़ात की

(1) ...مستدرک حاکم، کتاب الفتن والملاحم، حکایۃ امرأۃ شلت یدھا فی المنام، ۵/۶۶۷، حدیث:۸۵۰۳

और फ़रमाया : ऐ अबुल ह़सन ! (क्या वज्ह है कि) आदमी ख़्वाब देखता है तो कुछ उन में से सच्चे हो जाते हैं और कुछ झूटे । उन्हों ने फ़रमाया : जी हां, मैं ने प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : कोई भी मर्द व औ़रत जब पक्की नींद सो जाए तो उस की रूह़ को अ़र्श की त़रफ़ बुलन्द किया जाता है, पस अगर बन्दा रूह़ के अ़र्श के पास पहुंचने पर बेदार होता है तो ख़्वाब सच्चे होते हैं और अगर वोह रूह़ के अ़र्श के पास पहुंचने से पहले ही जाग जाता है तो ख़्वाब झूटे होते हैं ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : रूह़ों को नींद की ह़ालत में आस्मान की त़रफ़ बुलन्द किया जाता है और उन्हें अ़र्श के पास सजदा करने का हुक्म दिया जाता है पस जो पाकी की ह़ालत में हो वोह अ़र्श के पास सजदा करती है और जो पाक न हो वोह अ़र्श से दूर सजदा करती है ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : जब आदमी सोता है तो उस की रूह़ को बुलन्द कर के अ़र्श तक ले जाया जाता है, अगर वोह पाक हो तो उसे सजदा करने की इजाज़त मिलती है और अगर जुनुबी (या'नी उस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़) हो तो उसे सजदे की इजाज़त नहीं मिलती ।[3]

रब عَزَّوَجَلَّ का बन्दे से कलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ كَلَامٌ يُّكَلِّمُ بِهِ الْعَبْدَ رَبُّهُ فِي الْمَنَامِ या'नी मोमिन का ख़्वाब ऐसा कलाम है जो रब عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे से उस के ख़्वाब में फ़रमाता है ।[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुज़ैमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानी पर सजदा कर रहा हूं, मैं ने उस की ख़बर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

1 ...معجم اوسط، ۴/۲۳، حدیث: ۵۲۲۰، مستدرک حاکم، کتاب تعبیر الرؤیا، بیان الرؤیا التی...الخ، ۵/۵۶۵، حدیث: ۸۲۶۰

2 ... شعب الایمان، باب فی الطہارات، ۳/۲۹، حدیث: ۲۷۸۱

3 ...الزہد لابن المبارک، باب فضل ذکر اللہ، ص ۴۴۱، حدیث: ۱۲۴۵

4 ... نوادر الاصول، الاصل السابع والسبعون: فی حقیقۃ الرؤیا...الخ، ۱/۳۹۰

को दी तो आप ने इरशाद फ़रमाया : रूह़ रूह़ से मुलाक़ात करती है।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इ़ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : रूह़ के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की येह आ़दत जारी है कि जब वोह जिस्म में हो तो इन्सान जागता है और जब जिस्म से निकल जाए तो इन्सान सो जाता है और जिस्म से जुदा हो कर रूह़ ख़्वाब देखती है। अगर वोह आस्मानों में ख़्वाब देखे तो वोह दुरुस्त होते हैं क्यूंकि शैत़ान को आस्मानों तक रसाई नहीं और अगर आस्मान से नीचे ख़्वाब देखे तो वोह शैत़ान की त़रफ़ से होते हैं और अगर जिस्म की त़रफ़ वापस लौट आए तो इन्सान पहले की त़रह़ जाग जाता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करिमा और ह़ज़रते सय्यिदुना मुजाहिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا फ़रमाते हैं : जब इन्सान सोता है तो उस के लिये एक रास्ता हो जाता है जिस में उस की रूह़ सफ़र करती है और रूह़ की बुन्याद जिस्म में ही होती है पस जहां तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे वोह पहुंचती है, जब तक वोह सफ़र में होती है आदमी सोया रहता है और जब जिस्म में लौटती है तो आदमी जाग जाता है, येह सूरज की किरनों की त़रह़ होती है कि वोह ज़मीन पर पड़ती हैं मगर उन की जड़ें सूरज से जुड़ी होती हैं।

इब्ने मन्दा ने बा'ज़ उ़लमा से नक़्ल किया कि रूह़ आदमी के नथने से फैलती है और उस की अस्ल आदमी के जिस्म में ही होती है अगर रूह़ मुकम्मल त़ौर पर जिस्म से निकल जाए तो आदमी मर जाए, मिसाल के त़ौर पर चराग़ और उस के फ़तीले (धागे) को जुदा कर दिया जाए तो चराग़ बुझ जाएगा, क्या आप देखते नहीं, कि आग का मर्कज़ फ़तीला होता है मगर उस की रौशनी घर में फैली होती है पस ब ह़ालते नींद आदमी की रूह़ भी उस के नथने से फैलती है और आस्मानों में घूमती है, रूह़ों पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते उसे उस की पसन्दीदा चीज़ें दिखाता है फिर उसे उस के बदन की त़रफ़ लौटा देता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करिमा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया : क्या वज्ह है कि आदमी ख़्वाब में अपने आप को कभी ख़ुरासान, कभी शाम और कभी ऐसी जगह में देखता है जहां कभी गया भी नहीं ? फ़रमाया : येह रूह़ होती है, तुम रूह़ को जिस्म के साथ जुड़ा हुवा देखोगे पस जब तुम जागना चाहते हो तो जिस्म रूह़ को खींच लेता है।[2]

---

1 ...سنن کبری للنسائی، کتاب التعبیر، من رأی النبی، ۴/۳۸۴، حدیث: ۷۶۳۱

2 ... العظمۃ لابی الشیخ الاصبھانی، صفۃ الروح، ص ۱۵۴، حدیث: ۴۳۰

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

هُوَ الَّذِیۡ یَتَوَفّٰىکُمۡ بِالَّیۡلِ وَ یَعۡلَمُ مَا جَرَحۡتُمۡ بِالنَّهَارِ ثُمَّ یَبۡعَثُکُمۡ فِیۡهِ لِیُقۡضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَیۡهِ مَرۡجِعُکُمۡ ثُمَّ یُنَبِّئُکُمۡ بِمَا کُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۶۰﴾

(پ۷، الانعام: ۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआ़द पूरी हो फिर उसी की त़रफ़ तुम्हें फिरना है फिर वोह बता देगा जो कुछ तुम करते थे।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : हर रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम अरवाह़ को क़ब्ज़ फ़रमा लेता है और उन के जिस्म ने दिन में जो कुछ अ़मल किया उस के बारे में पूछता है, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को बुला कर हुक्म फ़रमाता है : इस इस रूह़ को क़ब्ज़ कर लो।(1)

• • • • • •

बाब नम्बर 45 ख़्वाब में मुर्दों को देख कर उन का ह़ाल पूछने और मुर्दों का उन्हें ख़बर देने का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ज़ियादहानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन आइज़ सुमाली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ का जब वक़्ते वफ़ात आया तो ह़ज़रते ख़ुसैफ़ बिन ह़ारिस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उन से कहा : अगर आप हम से मुलाक़ात कर सकें तो हमें बताइयेगा कि मौत के बा'द आप ने क्या पाया। चुनान्चे, वफ़ात के कुछ अ़र्से बा'द वोह ख़्वाब में आए तो ह़ज़रते ख़ुसैफ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अ़र्ज़ की : क्या आप हमें कुछ बताएंगे ? उन्हों ने बताया कि अगर्चे हमें नजात की उम्मीद कम थी मगर मशक़्क़त के बा'द हमें नजात अ़त़ा की गई, हम ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को बहुत मेहरबान पाया, उस ने हमारी ख़त़ाओं से दर गुज़र फ़रमा कर हमारी बख़्शिश फ़रमा दी मगर अह़राज़ नहीं बख़्शे गए। पूछा : अह़राज़ कौन हैं ? उन्हों ने कहा : अह़राज़ वोह लोग हैं जो बुराई में इतने मश्हूर होते हैं कि हर त़रफ़ से उन पर उंगलियां उठाई जाती हैं।(2)

---

1 ... العظمة لابی الشیخ الاصبهانی، صفة ملک الموت وعظم خلقه وقوته، ص۱۵۵، حدیث: ۴۳۲

2 ... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۹۴، حدیث: ۱۵۹، طبقات ابن سعد، ۷/۲۹۱، رقم: ۳۷۸۱: عبد اللہ بن عائذ الثمالی

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ाहिरिय्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल आ'ला बिन अ़दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बिलाल खुज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की इयादत की तो कहा : प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मेरा सलाम अ़र्ज़ करना और अगर (बा'दे वफ़ात) हम से मिल सको तो हमें अपनी ख़बर भी देना। उन की वफ़ात के तीन दिन बा'द उन की ज़ौजा ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो वोह कह रहे थे : तीन दिन बा'द मेरी बेटी मुझ से मिलने वाली है। क्या तुम अ़ब्दुल आ'ला को जानती हो ? ज़ौजा ने कहा : नहीं। फ़रमाया : उन के बारे में मा'लूम कर के उन्हें येह बता देना कि मैं ने उन का सलाम बारगाहे रिसालत में पहुंचा दिया है और रहीमो करीम आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें जवाब भी दिया है। ज़ौजा ने येह बात अपने भाई अबू ज़ाहिरिय्या को (या'नी मुझे) बताई तो मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल आ'ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़बर कर दी।(1)

ख़ौफ़े ख़ुदा का समरा

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन अय्यूब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि दो आदमियों ने आपस में मुआ़हदा किया कि हम में से जिस का इन्तिक़ाल पहले होगा वोह अपने हालात से दूसरे को मुत्तलअ़ करेगा। फिर एक की वफ़ात हो गई तो दूसरे ने उसे ख़्वाब में देख कर पूछा : हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى के साथ क्या हुवा ? उस ने कहा : वोह जन्नत में बादशाह हैं, कोई भी उन की ना फ़रमानी नहीं करता। उस ने पूछा : हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن का क्या हाल है ? उस ने कहा : जहां चाहते हैं जाते हैं और जो ख़्वाहिश करते हैं पूरी होती है, मगर दोनों हज़रात के मर्तबे में बहुत फ़र्क़ है। उस ने पूछा : मेरे भाई हज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى को इतना बुलन्द रुतबा किस वज्ह से मिला ? उस ने कहा : ख़ौफ़े ख़ुदा की शिद्दत के सबब।(2)

नमाज़े तहज्जुद से अफ़्ज़ल अ़मल कोई नहीं

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अजलह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि मेरे वालिदे मोह़तरम ने हज़रते सय्यिदुना सलमह बिन कुहैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से फ़रमाया : अगर आप मुझ से पहले इन्तिक़ाल कर गए और आप को मेरे ख़्वाब में आने की त़ाक़त हुई तो मुझे अपने हालात से आगाह

1... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۹۵، حدیث: ۱۲۰

2... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۱۵، حدیث: ۲۱۸

कीजियेगा। ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह बिन कुहैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने भी उन से येही कहा कि अगर आप का इन्तिक़ाल पहले हो गया तो आप मेरे ख़्वाब में आ कर अपने ह़ालात बताइयेगा। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना सलमह बिन कुहैल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का इन्तिक़ाल पहले हो गया। फिर मेरे वालिद ने मुझे बताया : बेटा ! ह़ज़रते सलमह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मेरे ख़्वाब में आए थे, मैं ने उन से पूछा : क्या आप का इन्तिक़ाल नहीं हो गया ? उन्हों ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ज़िन्दा कर दिया है। मैं ने पूछा : आप ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को कैसा पाया ? उन्हों ने कहा : रह़ीम (या'नी मेहरबान)। मैं ने फिर पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब ह़ासिल करने के लिये किस अ़मल को अफ़्ज़ल पाया ? उन्हों ने बताया कि मैं ने नमाज़े तहज्जुद से अफ़्ज़ल अ़मल कोई नहीं देखा। मैं ने पूछा : मुआ़मला कैसा रहा ? कहा : आसान रहा मगर तुम (अ़मल पर) भरोसा मत करना।(1)

अगर रहमते इलाही शामिले हाल न होती तो......!

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ मेरे दोस्त थे, जब उन का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं एक साल तक दुआ़ करता रहा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में उन की ज़ियारत करा दे। चुनान्चे, साल के आख़िर में उन की ज़ियारत हुई तो वोह पेशानी से पसीना पोंछ रहे थे। मैं ने अ़र्ज़ की : अमीरुल मोमिनीन ! مَافَعَلَ بِكَ رَبُّكَ؟ आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : अभी अभी फ़ारिग़ हुवा हूं अगर मेरा रब عَزَّوَجَلَّ मेहरबानी व आसानी न फ़रमाता तो क़रीब था कि मेरी ख़िलाफ़त मुझे ले डूबती।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने एक अन्सारी शख़्स को कहते सुना : मैं ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ की थी कि वोह मुझे ख़्वाब में अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाए। चुनान्चे, मैं 20 साल बा'द उन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुवा तो वोह अपनी पेशानी से पसीना पोंछ रहे थे, मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! क्या मुआ़मला हुवा ? फ़रमाया : अभी फ़ारिग़ हुवा हूं, अगर मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की रहमत शामिले ह़ाल न होती तो मैं हलाक हो जाता।(3)

---

(1)... الكامل لابن عدى، ٢/١٣٦، رقم: ٢٣٨: الاجلح بن عبد الله بن معاوية ابو حجية الكندى
تاريخ ابن عساكر، ٢٢/١٣٢، رقم: ٢٦٢٤: سلمة بن كهيل ابو يحيى الحضرمى

(2)... طبقات ابن سعد، ٣/٢٨٦، رقم: ٥٦: عمر بن الخطاب

(3)... طبقات ابن سعد، ٣/٢٨٧، رقم: ٥٦: عمر بن الخطاب

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : मुझे अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के विसाल के बा'द उन का मुआ़मला जानने से बढ़ कर कोई भी चीज़ मह़बूब न थी । चुनान्चे, एक रात मैं ने ख़्वाब में एक मह़ल देखा तो पूछा : येह किस का है ? फ़िरिश्तों ने कहा : हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का । इतने में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ चादर ओढ़े महल से बाहर तशरीफ़ लाए ऐसा लग रहा था गोया अभी ग़ुस्ल किया हो । मैं ने पूछा : आप के साथ कैसा मुआ़मला हुवा ? फ़रमाया : भलाई का । अगर मेरे रब عَزَّوَجَلَّ की बख़्शिश न होती तो मेरी ख़िलाफ़त मुझे ले डूबती । मैं ने अ़र्ज़ की : क्या हुवा था ? पूछा : मैं तुम से कब जुदा हुवा था ? मैं ने कहा : तक़रीबन 12 साल हो गए हैं । फ़रमाया : अभी ह़िसाब किताब से फ़ारिग़ हुवा हूं(1)।(2)

हज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : मैं ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को ख़्वाब में देखा तो आप ने सब्ज़ लिबास ज़ेबे तन किया हुवा था, मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ कैसा मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मेरे साथ भलाई की । मैं ने पूछा : कौन सा दीन बेहतर है ? फ़रमाया : सीधा दीन जिस में नाह़क़ ख़ून न बहे ।(3)

हिदायत याफ़्ता इमामों का साथ

मस्लमा बिन अ़ब्दुल मलिक ने ख़लीफ़ए राशिद हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡعَزِیۡز को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देख कर कहा : अमीरुल मोमिनीन ! काश मुझे मा'लूम हो जाए कि वफ़ात के बा'द आप को क्या ह़ालात पेश आए । फ़रमाया : ऐ मस्लमा ! अभी ह़िसाब किताब से फ़ारिग़ हुवा हूं, ख़ुदा की क़सम ! अभी तक आराम नहीं किया । मस्लमा ने कहा : अब कहां हैं ? फ़रमाया : अब हिदायत याफ़्ता अइम्मा के साथ जन्नते अ़द्न में हूं ।(4)

---

1 .....इन रिवायतों में बयान कर्दा मुद्दत में इख़्तिलाफ़ है : पहली में एक साल, दूसरी में 20 साल और तीसरी में 12 साल है चूंकि येह मुआ़मला ख़्वाब का है, लिहाज़ा जिस ने जो देखा बयान कर दिया ।

2 ...حلية الاولياء، عمر بن الخطاب، ۱/۹۱، رقم: ۱۵۱، تاريخ ابن عساكر، ۴۴/۳۸۳، رقم: ۵۲۰۶: عمر بن الخطاب

3 ...تاريخ ابن عساكر، ۳۹/۵۳۳، رقم: ۴۶۱۹: عثمان بن عفان بن ابي العاص

4 ...موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب المنامات، ۳/۳۸، حديث: ۲۷

शुहदा के हमनशीं

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने फ़रमाया : अय्यामे हुर्रा में क़त्ल होने वाले अफ़्लह या फ़रमाया कसीर बिन अफ़्लह को मैं ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : क्या आप क़त्ल नहीं हो गए थे ? उन्हों ने कहा : हां हुवा हूं। मैं ने कहा : आप के साथ कैसा मुआमला हुवा ? फ़रमाया : भलाई वाला। मैं ने पूछा : क्या आप लोग शहीद हैं ? फ़रमाया : नहीं जब मुसलमान आपस में जंग करें तो उन में क़त्ल होने वाले शहीद नहीं होते, हम शुहदा के हमनशीं हैं[1]।[2]

हज़रते सय्यिदुना अबू मैसरह अ़म्र बिन शुरहूबील عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَكِيْل फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में देखा कि मैं जन्नत में दाख़िल हो रहा हूं और सामने कुछ क़ुबे हैं, मैं ने कहा : येह किस के हैं ? जवाब मिला : हज़रते कलाअ़ और हज़रते हौशब (رَحْمَةُ اللهِ تَعالٰى عَلَيْهِما) के। येह दोनों हज़रात अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की त़रफ़ से लड़ते हुवे जंग में शहीद हो गए थे। मैं ने कहा : हज़रते सय्यिदुना अ़म्मार رَضِيَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه और उन के साथी कहां हैं ? जवाब मिला : (उन के ख़ैमे भी) तुम्हारे सामने हैं। मैं ने पूछा : इन लोगों ने तो एक दूसरे को क़त्ल किया है ? कहा गया : येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिले तो उसे वसीअ़ मग़फ़िरत वाला पाया। मैं ने कहा : अहले नहर या'नी ख़वारिज के साथ क्या हुवा ? जवाब मिला : ख़ारिजियों को रंजो ग़म मिला है।[3]

कुछ लोग मर कर भी ज़िन्दा रहते हैं

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र ख़य्यात़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब देखा गोया मैं क़ब्रिस्तान में हूं और मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों पर बैठे हैं और उन के सामने फूल रखे इतने में हज़रते सय्यिदुना महफ़ूज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه उन मुर्दों के दरमियान आमदो रफ़्त करते हुवे नज़र आए तो मैं ने कहा : ऐ महफ़ूज़ ! आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? क्या

---

1 .....शहीद उस मुसलमान आ़क़िल बालिग़ त़ाहिर को कहते हैं जो बत़ौरे ज़ुल्म किसी आलए जारिह़ा से क़त्ल किया गया हो और नफ़्से क़त्ल से माल न वाजिब हुवा हो और दुन्या से नफ़्अ़ न उठाया हो। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा चहारुम, 1 / 860)

2 ... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب المنامات، ٣/٥٣، حديث: ٥٥

3 ... مصنف ابن ابي شيبة، كتاب الجمل، باب ماذكر في صفين، ٨/٧٢٢، حديث: ٨

طبقات كبرى لابن سعد، ٣/١٩٩، رقم: ٥٤: عمار بن ياسر

आप का इन्तिक़ाल नहीं हुवा ? फ़रमाया : हां हो गया है। फिर येह शे'र कहा :

مَوْتُ التَّقِيِّ حَيَاةٌ لَّا نَفَادَ لَهَا　　قَدْ مَاتَ قَوْمٌ وَّهُمْ فِي النَّاسِ اَحْيَاءُ

तर्जमा : मुत्तक़ी की मौत ऐसी ह़यात है जिस को फ़ना नहीं कुछ लोग मर कर भी लोगों में ज़िन्दा रहते हैं।(1)

क़ब्र का हाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ब्र वाला ही जानता है

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमा बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : कसरत से ज़िक्रुल्लाह करने, मौत को कसरत से याद करने और त़वील मुजाहदात करने वाले इबादत गुज़ार बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना बज़ीअ़ बिन मिस्वर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को मैं ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : आप अपनी जगह को कैसा देख रहे हैं ? उन्हों ने येह शे'र कहा :

وَلَيْسَ يَعْلَمُ مَا فِي الْقَبْرِ دَاخِلُهُ　　اِلَّا الْاِلٰهُ وَسَاكِنُ الْاَجْدَاثِ

तर्जमा : क़ब्र का ह़ाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ब्र वाला ही जानता है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर बिन मुफ़ज़्ज़ल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्र बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر को ख़्वाब में देख कर पूछा : ऐ अबू मुह़म्मद ! आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : मैं ख़ुद पर जितनी मशक़्क़त करता था मुआ़मला उस से आसान पाया।(3)

भलाई और भलाई करने वालों से महब्बत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़फ़्स मरहबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देख कर पूछा : ऐ अबू सुलैमान ! आप ने आख़िरत की भलाई को कैसा पाया ? उन्हों ने कहा : मैं ने आख़िरत की भलाई को बहुत ज़ियादा पाया। मैं ने पूछा : आप को किस त़रफ़ फेरा गया ? कहा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे भलाई की त़रफ़ फेरा गया। मैं ने पूछा : आप को ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन सईद सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى का कुछ मा'लूम है ? फ़रमाया : वोह ख़ैर

---

1 ... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب المنامات، ٣/٩٠، حديث: ١٢٨

2 ... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب المنامات، ٣/٩٣، حديث: ١٥٥

3 ... موسوعة ابن ابي الدنيا، كتاب المنامات، ٣/٩٤، حديث: ١٥٨

(भलाई) और अह्ले ख़ैर को पसन्द फ़रमाते थे । फिर मुस्कुराते हुवे फ़रमाया : ख़ैर ने उन्हें अह्ले ख़ैर के दरजे तक पहुंचा दिया ।(1)

हज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ज़मरह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि मेरे वालिदे माजिद फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी फूफी को ख़्वाब में देख कर पूछा : आप कैसी हैं ? कहा : ख़ैरिय्यत से हूं और अपने आ'माल का पूरा पूरा बदला पाया है यहां तक कि उस मालीदा का सवाब भी दिया गया जो मैं ने एक ग़रीब को खिलाया था ।(2)

कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल मलिक लैसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन अ़ब्दुल क़ैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़्वाब में देख कर पूछा : आप ने क्या पाया ? उन्हों ने फ़रमाया : मैं ने भलाई पाई । मैं ने दरयाफ़्त किया : किस अ़मल को अफ़्ज़ल पाया ? फ़रमाया : हर उस अ़मल को अफ़्ज़ल पाया जिस से रिज़ाए इलाही मक़्सूद हो ।(3)

वफ़ात के बा'द चचा की नसीहत

हज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह हजरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मैं ने अपने चचा को बा'द अज़् विसाल ख़्वाब में देखा तो वोह फ़रमा रहे थे : दुन्या धोका है और अ़मल करने वालों के लिये आख़िरत सुरूर है, हम ने यक़ीन को और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मुसलमानों के लिये ख़ैर ख़्वाही से बेहतर किसी चीज़ को नहीं पाया, तुम जो भी अ़मल करो तो येही समझो कि उस का हक़ अदा न हुवा ।(4)

तक़्वा व परहेज़गारी का इनआ़म

हज़रते सय्यिदुना अस्मई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی बयान करते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के साथियों में से एक मर्हूम बसरी बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को ख़्वाब में देखा तो

---

❶...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۵۸/۳، حدیث: ۶۴

موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۹۸/۳، حدیث: ۱۷۱

❷...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۱۰۱/۳، حدیث: ۱۷۷

❸...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۶۴/۳، حدیث: ۸۰

❹...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۱۰۴/۳، حدیث: ۱۸۹

पूछा : आप कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस त़बीब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُجِیْب के पास से। मैं ने पूछा : कौन यूनुस त़बीब ? फ़रमाया : इन्तिहाई अ़क़्ल मन्द फ़क़ीह। मैं ने कहा : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के बेटे ? फ़रमाया : हां। मैं ने पूछा : वोह कहां हैं ? फ़रमाया : वोह सुर्ख़ फूलों की सेजों (बिस्तरों) पर कुंवारी ह़ूरों के साथ हैं, उन के दुरुस्त तक़्वा की बदौलत उन की आंखें ठन्डी हो गईं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना मैमून कुर्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा बज़्ज़ार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار को बा'दे विसाल ख़्वाब में देखा तो उन्हों ने फ़रमाया : पानी फ़राहम करने वाले फ़ुलां शख़्स का मुझ पर एक दिरहम क़र्ज़ है और वोह दिरहम मेरे घर के त़ाक़ में रखा हुवा है, तुम वहां से उठा कर उसे दे देना। सुब्ह़ उठ कर मैं उस पानी वाले से मिला और पूछा : क्या ह़ज़रते सय्यिदुना उ़र्वा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पर तुम्हारा कुछ क़र्ज़ है ? उस ने कहा : हां एक दिरहम है। चुनान्चे, मैं ह़ज़रत के घर गया तो त़ाक़ में एक दिरहम रखा हुवा पाया, मैं ने वोह उठाया और ला कर पानी वाले को दे दिया।(2)

कलिमए त़य्यिबा की कसरत करो

कूफ़ा के रहने वाले एक शख़्स का बयान है : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुवैद बिन अ़म्र कल्बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی को बा'दे विसाल ख़्वाब में अच्छी ह़ालत में देखा तो पूछा : ऐ सुवैद ! इस अच्छी ह़ालत की वज्ह क्या है ? फ़रमाया : मैं لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ की कसरत करता था तुम भी इस की कसरत किया करो। फिर फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद त़ाई और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन नज़्र ह़ारिसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا ने एक चाहत की तो उसे पा लिया।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन मुन्ज़िर ह़र्रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक बिन उ़स्मान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان के इन्तिक़ाल के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? फ़रमाया : आस्मान में कबूतरों के घोंसलों की त़रह़ कुछ घर हैं, जिस ने لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहा वोह उन में ठहर गया और जिस ने नहीं कहा वोह गिर गया।(4)

---

1 ... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۰۵، حدیث: ۱۹۲
2 ... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۰۷، حدیث: ۱۹۶
3 ... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۰۷، حدیث: ۱۹۷
4 ... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۰۷، حدیث: ۱۹۸

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से महब्बत का इनआम

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى बयान करते हैं कि एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने आइशा तमीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى को विसाल के बा'द ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : उस ने मुझे अपने साथ महब्बत करने की वज्ह से बख़्श दिया।[1]

ख़त्म न होने वाली ने'मतें

हज़रते सय्यिदुना सरी बिन यह्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मर्दे सालेह हज़रते सय्यिदुना वालान बिन ईसा बिन मरयम क़ज़्वीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى ने मुझे बताया कि एक रात चांद की वज्ह से मुझे धोका हो गया। चुनान्चे, मैं मस्जिद गया और नमाज़ और तस्बीह पढ़ी फिर दुआ मांगी तो मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और मैं सो गया। मैं ने एक जमाअत देखी जो इन्सानों की नहीं थी, उन के हाथों में थाल थे और हर थाल में बर्फ़ की तरह सफ़ेद चार रोटियां थीं और हर रोटी पर अनार की मिस्ल मोती रखा हुवा था, उन्हों ने कहा : खाओ। मैं ने कहा : मेरा इरादा तो रोज़ा रखने का है। वोह बोले : इस घरवाले (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ) का हुक्म है कि तुम खाओ। मैं ने रोटियां खाईं और जब मोती उठाने लगा तो उन्हों ने कहा : रुक जाओ हम तुम्हारे लिये इस का दरख़्त लगा देते हैं जिस का फल तुम्हारे लिये इस से बेहतर होगा। मैं ने कहा : कहां ? उन्हों ने कहा : ऐसे घर में जो कभी वीरान न होगा, उस के फल कभी ख़राब न होंगे, उस की मिल्किय्यत ख़त्म न होगी, कपड़े पुराने न होंगे, उस में ख़ुशी का सामान, चश्मे और आंखों की ठन्डक होगी और हमेशा राज़ी रहने और राज़ी रखने वाली बीवियां होंगी, तुम अपने मुआमलात को समेट लो क्यूंकि येह तो हल्की सी नींद है फिर तुम ने कूच कर के अपने अस्ली घर में पहुंच जाना है। रावी फ़रमाते हैं : अभी दो हफ़्ते भी न गुज़रे थे कि आप का इन्तिक़ाल हो गया।

हज़रते सय्यिदुना सरी बिन यह्या رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : जिस रात उन का इन्तिक़ाल हुवा वोह मेरे ख़्वाब में आए और फ़रमाया : क्या तुम्हें तअज्जुब नहीं होता कि मैं ने तुम्हें फ़ुलां दिन

1... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۰۸، حدیث:۱۹۹

जिस दरख़्त के बारे में बताया था वोह फलदार हो गया है। मैं ने पूछा : कौन से फल आए हैं ? फ़रमाया : उस के बारे में न पूछो जिस की सिफ़ात बयान करने पर कोई क़ादिर नहीं, जब फ़रमां बरदार उस की बारगाह में हाज़िर होता है तो हम ने उस जैसा करीम नहीं देखा।(1)

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मैमून رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन इमरान बिन मुहम्मद बिन अबू लैला(2) رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : आप ने किस अ़मल को अफ़्ज़ल पाया ? फ़रमाया : मा'रिफ़त को। मैं ने पूछा : आप ऐसे शख़्स के बारे में क्या कहते हैं जो अहादीस बयान करते हुवे حَدَّثَنَا और اَخْبَرَنَا कहता है ? फ़रमाया : मैं फ़ख़्र व मुक़ाबले को ना पसन्द करता हूं।(3)

सब से अच्छी महफ़िल

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار के एक साथी ने उन्हें बा'द अज़ विसाल ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने फ़रमाया : भलाई का मुआ़मला फ़रमाया, हम ने नेक अ़मल जैसा कोई काम, हज़राते सहाबए किराम जैसी कोई जमाअ़त, सलफ़े सालिहीन जैसे लोग और नेकियों की मजलिस जैसी कोई महफ़िल नहीं देखी।(4)

सुन्नत और इ़ल्म

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब बिन यज़ीद किन्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू उ़मर जरीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : मुझे बख़्श दिया और मुझ पर रह्म किया। मैं ने पूछा : किस अ़मल को सब से अफ़्ज़ल पाया ? फ़रमाया : जिस पर तुम अ़मल

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۰۸، حدیث:۲۰۰

2 .....मतन में इस मक़ाम पर "अ़ली बिन मुहम्मद बिन इमरान बिन अबू लैला" मज़कूर है जब कि दीगर कुतुब में "मुहम्मद बिन इमरान बिन मुहम्मद बिन अबू लैला" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

3 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۱۲، حدیث:۲۰۷

4 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۱۲، حدیث:۲۰۸

पैरा हो या'नी सुन्नत और इल्म को। मैं ने पूछा : किस अ़मल को सब से बुरा पाया? फ़रमाया : नामों से बचो। मैं ने पूछा : नाम क्या हैं? फ़रमाया : क़दरया, मो'तज़िला, मुरजआ फिर आप दीगर ख़्वाहिश परस्तों के नाम बताने लगे।(1)

गुस्ताख़े सहाबा का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सैरफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى बयान करते हैं कि एक शख़्स हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को गालियां दिया करता था और फ़िर्क़ए जहमिय्या(2) के अ़क़ाइद रखता था। जब वोह मरा तो एक शख़्स ने उसे ख़्वाब में बरह्ना हालत में देखा कि उस के सर और शर्मगाह पर एक सियाह चीथड़ा था। उस ने पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया? उस ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बक्र बिन क़ैस और औ़न बिन आ'सर के साथ कर दिया है। येह दोनों नसरानी थे।(3)

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की शान में कमी करने वाला मेरा एक पड़ोसी मर गया तो मैं ने उसे ख़्वाब में देखा तो वोह काना था, मैं ने पूछा : ऐ फ़ुलां! येह मैं क्या देख रहा हूं? उस ने कहा : मैं ने हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्हाब की शान में कमी की तो मुझ में येह कमी कर दी गई फिर उस ने अपना हाथ अपनी ज़ाएअ़ होने वाली आंख पर रख लिया।(4)

हज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मदीनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना महमूद बिन हुमैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक बा अ़मल इन्सान थे, उन की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो उन पर दो सब्ज़ कपड़े थे, मैं ने पूछा : वफ़ात के बा'द आप को कहां ले जाया गया? उन्हों ने मेरी तरफ़ देखा फिर येह शे'र पढ़ा :

1... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۱۵، حدیث:۲۱۷

2.....जहमिय्या : जहम बिन सफ़्वान का पैरूकार बातिल फ़िरक़ा है। इन का अ़क़ीदा है कि बन्दे को किसी सूरत कोई इख़्तियार नहीं, बन्दा जमादात की तरह मजबूर महज़ है और अहले जन्नत के जन्नत में और अहले दोज़ख़ के दोज़ख़ में जाने के बा'द जन्नत व दोज़ख़ भी फ़ना हो जाएंगे और सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बाक़ी रहेगा। (التعریفات للجرجانی، ص۵۸)

3... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۱۷، حدیث:۲۲۱

4... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۱۷، حدیث:۲۲۲

نِعْمَ الْمُتَّقُوْنَ فِی الْخُلْدِ حَقًّا بِجِوَارِ نَوَاهِدِ اَبْکَارٍ

तर्जमा : बेशक मुत्तक़ी लोग जन्नत में ख़ूब रू कंवारी हूरों के क़ुर्ब में क्या ही अच्छे हैं।

हज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ख़ुदा की क़सम ! येह शे'र मैं ने उन से पहले कभी किसी से नहीं सुना।(1)

मसाइबो आलाम पर सब्र का इन्आ़म

हज़रते सय्यिदुना मुत़र्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा मैं ने क़ब्रिस्तान में दो मुख़्तसर रक्अ़तें अदा कीं मगर इत़्मीनान ह़ासिल न हुवा, इतने में मुझे ऊंघ आ गई, मैं ने देखा कि क़ब्र वाला मुझे कह रहा है : तुम ने दो रक्अ़तें पढ़ीं मगर तुम उन से मुत़्मइन नहीं हो। मैं ने कहा : हां बात तो येही है। उस ने कहा : तुम लोग अ़मल करते हो मगर उस की ह़क़ीक़त नहीं जानते और हम जानते हैं मगर अ़मल नहीं कर सकते, मुझे तुम्हारी त़रह़ दो रक्अ़तें पढ़ना दुन्या और इस के जमीअ़ साज़ो सामान से ज़ियादा मह़बूब हैं। मैं ने पूछा : यहां कौन लोग दफ़्न हैं ? उस ने कहा : येह सब मुसलमान हैं ! और इन सब को भलाई नसीब हुई है। मैं ने पूछा : इन में सब से अफ़्ज़ल कौन हैं ? उस ने एक क़ब्र की त़रफ़ इशारा किया तो मैं ने दिल में दुआ़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इसे ज़ाहिर फ़रमा दे ताकि मैं इस से बात चीत कर सकूं। इतने में उस क़ब्र से एक नौजवान निकला तो मैं ने पूछा : आप इन सब में अफ़्ज़ल हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : येह लोग तो येही कहते हैं। मैं ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! आप की उ़म्र तो इतनी नहीं लगती कि मैं कहूं आप बहुत ज़ियादा ह़ज व उ़मरे, जिहाद और आ'माले सालेह़ा से इस मक़ाम को पहुंचे होंगे लेकिन फिर आप को येह मक़ामो मर्तबा कैसे मिला ? उस नौजवान ने फ़रमाया : मुझे मसाइबो आलाम में मुब्तला कर के उन पर सब्र की तौफ़ीक़ दी गई थी बस इसी के सबब मैं इन सब से अफ़्ज़ल हो गया।(2)

राह़त, फूल और रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा

हज़रते सय्यिदुना इयास बिन दग़्फ़ल رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ला यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : आप ने मौत के ज़ाइक़े

---

❶... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۲۰، حدیث: ۲۳۳

❷... شعب الایمان، باب فی الصبر علی المصائب، ۷/۲۴۸، حدیث: ۱۰۱۸۹

को कैसा पाया ? उन्हों ने फ़रमाया : इन्तिहाई कड़वा । मैं ने पूछा : वफ़ात के बा'द आप को किस तरफ़ ले जाया गया ? फ़रमाया : राहत, फूलों और राज़ी रब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ । मैं ने पूछा : और आप के भाई मुतर्रिफ़ कहां हैं ? फ़रमाया : वोह अपने यक़ीने कामिल के साथ मेरे पास आए हैं ।(1)

मुर्दे को दुआ से फ़ाएदा पहुंचता है

एक शख़्स का बयान है कि मैं ने अपने भाई को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देखा तो पूछा : जब तुम्हें क़ब्र में रखा गया तो तुम्हारे साथ क्या मुआमला हुवा ? उस ने कहा : एक आने वाला मेरे पास भड़कती आग का कोड़ा लाया अगर दुआ करने वाला मेरे लिये दुआ न करता तो उस ने मुझे कोड़ा मार ही देना था ।(2)

मुर्दों की ख़बरें देने वाला

हज़रते सय्यिदुना मुन्कदिर बिन मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुवा हूं और फिर क्या देखता हूं कि एक बाग़ में एक शख़्स के पास लोगों का हुजूम लगा हुवा है । मैं ने पूछा : येह कौन है ? जवाब मिला : येह शख़्स दारे आख़िरत से आया है और लोगों को इन के फ़ौत शुदगान के बारे में बता रहा है । मैं ने आगे बढ़ कर देखा तो वोह हज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه थे, लोग उन से पूछ रहे थे और वोह बता रहे थे । इतने में उन्हों ने फ़रमाया : क्या यहां हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه के बारे में पूछने वाला भी कोई है ? लोगों ने कहा : हां येह उन के साहिबज़ादे मौजूद हैं । चुनान्चे, लोग सामने से हट गए और मैं ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए ! हमें उन के बारे में बताइये । फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें जन्नत में येह येह ने'मतें अ़ता फ़रमा कर ख़ुश कर दिया और उन्हें जन्नती महल्लात में बसाया है तो अब उन्हें वहां से निकलना है न मौत आएगी ।(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू करीमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं : एक शख़्स मेरे पास आया और कहा : मैं ख़्वाब में जन्नत में दाख़िल हुवा तो एक बाग़ तक पहुंचा जिस में हज़रते सय्यिदुना

1... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۳۹، حدیث:۲۹

2... التذکرة للقرطبی، باب ما جاء فی قراءة القرآن...الخ، ص۸۷

3... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۲۸، حدیث:۲۵۳

अय्यूब सख़्तियानी, ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन उ़बैद, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने औ़न और ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान तैमी رَحِمَهُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی थे । मैं ने पूछा : ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی कहां हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : हम उन्हें इतनी बुलन्दी पर देखते हैं गोया सितारे को देख रहे हों ।(1)

सिद्रतुल मुन्तहा के पास

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन सीरीन (رَحْمَةُ اللّٰهِ تعالٰی عَلَيْهِما) को जन्नत में देखा तो पूछा : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی कहां हैं ? उन्हों ने कहा : वोह सिद्रतुल मुन्तहा के पास हैं ।(2)

नेकों की दुआ़ पर आमीन कहने पर बख़्शिश

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन हारून رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यज़ीद वासिती عَلَيْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को ख़्वाब में देख कर पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या सुलूक किया ? उन्हों ने फ़रमाया : मुझे बख़्श दिया । मैं ने कहा : किस सबब से ? फ़रमाया : एक मरतबा जुमुआ़ के दिन बा'द नमाज़े अ़स्र ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने हमारे पास बैठ कर दुआ़ की तो हम ने आमीन कही थी । पस जब हम तुम से जुदा हुवे तो हमारी मग़्फ़िरत कर दी गई ।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन अबू सुबैत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुलैद बिन सा'द(4) عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَحَد को ख़्वाब में देखा तो पूछा : आप के साथ क्या सुलूक हुवा ? फ़रमाया : उम्मीद नहीं थी मगर छुटकारा मिल गया । मैं ने पूछा : आप लोगों से

1...تاریخ ابن عساکر، ۳۱/ ۳۷۳، رقم: ۳۴۴۸، عبد اللہ بن عون

2...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/ ۱۴۳، حدیث: ۳۰۰

3...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/ ۱۵۲، حدیث: ۳۳۷

4.....मतन में इस मक़ाम पर ''ख़ुलैद बिन सईद'' मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में ''ख़ुलैद बिन सा'द'' है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है ।

कुरआने पाक का अ़ह्द कब लिया गया ? फ़रमाया : तुम से जुदाई के बा'द हम से इस का कोई अ़ह्द नहीं लिया गया ।(1)

मुसलमान बूढ़ों के लिये ख़ुश ख़बरी

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन सलम ख़व्वास(2) رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का बयान है : मैं ने हज़रते सय्यिदुना क़ाज़ी यह्या बिन अक्सम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : रब तआ़ला ने मुझे अपने सामने खड़ा किया और इरशाद फ़रमाया : ऐ बद अ़मल बूढ़े ! अगर तेरी दाढ़ी सफ़ेद न होती तो मैं तुझे आग में जलाता । बस मेरा वोही ह़ाल हो गया जो एक ग़ुलाम का अपने आक़ा के सामने होता है (या'नी मैं ख़ौफ़ के मारे बे ह़ाल हो गया) जब मुझे कुछ इफ़ाक़ा हुवा तो रब तआ़ला ने फिर इरशाद फ़रमाया : ऐ बद अ़मल बूढ़े ! अगर तेरी दाढ़ी सफ़ेद न होती तो मैं तुझे आग में जलाता । मेरी फिर वोही ह़ालत हो गई, फिर जब इफ़ाक़ा हुवा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तीसरी मरतबा भी वोही इरशाद फ़रमाया । अब की बार जब मुझे इफ़ाक़ा हुवा तो मैं ने अ़र्ज़ की : इलाही ! तेरे बारे में मुझे ऐसा तो नहीं बताया गया था । इरशाद फ़रमाया : तुम्हें मेरे बारे में क्या बताया गया था ? ह़ालांकि वोह ब ख़ूबी जानता है । मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हुमाम ने बयान किया कि हमें हज़रते सय्यिदुना मा'मर बिन राशिद ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब ज़ोहरी رَحِمَهُمُ اللهُ تَعَالٰی से उन्हों ने हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से उन्हों ने तेरे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से और उन्हों ने हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام से बयान किया कि ऐ अ़ज़मत वाले तू ने इरशाद फ़रमाया है : مَا شَابَ لِیْ عَبْدٌ فِی الْاِسْلَامِ شَیْبَةً اِلَّا اسْتَحْیَیْتُ مِنْهُ اَنْ اُعَذِّبَهٗ بِالنَّارِ या'नी मेरा जो बन्दा ह़ालते इस्लाम में बूढ़ा हो जाए तो मैं उस से ह़या करता हूं कि उसे जहन्नम का अ़ज़ाब दूं । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने सच कहा, मा'मर ने सच कहा, ज़ोहरी ने सच कहा, अनस ने सच कहा, मेरे प्यारे नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने सच कहा, जिब्रील ने सच कहा, मैं ने येही फ़रमाया था । (फ़िरिश्तो !) इसे जन्नत की त़रफ़ ले जाओ ।(3)

1 ... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۵۷، حدیث:۲۲

2 .....मतन में इस मक़ाम पर "मुहम्मद बिन सालिम ख़व्वास" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "मुहम्मद बिन सलम ख़व्वास" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है ।

3 ... تاریخ بغداد، ۱۴/۲۰۲، رقم:۷۴۸۹: یحیی بن اکثم

सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَیْہِ الرَّحْمَہ पर करम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र फ़ज़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل को किसी ने ख़्वाब में देखा तो पूछा : یَااَحْمَد! مَافَعَلَ اللّٰہُ بِكَ या'नी ऐ अह़मद ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने सामने खड़ा कर के इरशाद फ़रमाया : ऐ अह़मद ! तू ने (कोड़ों की) मार पर सब्र किया और येही कहता रहा कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ का कलाम मख़्लूक़ नहीं है, मुझे अपनी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं कल क़ियामत तक तुझे अपना कलाम सुनाता रहूंगा । अब मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ का कलाम सुनता हूं ।(1)

रोज़ दो मरतबा दीदारे बारी तआ़ला

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन औ़फ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मसफ़ी ह़िम्सी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देख कर पूछा : आप को किस त़रफ़ फेरा गया ? फ़रमाया : भलाई की त़रफ़ और हम रोज़ दो मरतबा अपने रब عَزَّوَجَلَّ का दीदार करते हैं । मैं ने कहा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! आप तो दुन्या में भी "सुन्नत" वाले और आख़िरत में भी "सुन्नत" वाले हैं । येह बात सुन कर वोह मुस्कुरा दिये ।(2)

मख़्लूक़ को मह़ब्बते इलाही का दर्स देने का इनआ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन मुफ़ज़्ज़ल رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار को उन की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने बताया : मुझे रब तआ़ला की बारगाह में खड़ा किया गया तो उस ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : तू नेकियां और गुनाह दोनों करता था लेकिन मैं ने तेरी बख़्शिश कर दी क्यूंकि तू मेरी मख़्लूक़ को मेरी मह़ब्बत का दर्स देता था लिहाज़ा खड़ा हो जा और मेरे फ़िरिश्तों के सामने मेरी बुज़ुर्गी बयान कर जिस त़रह़ दुन्या में मेरी बुज़ुर्गी बयान करता था । पस मेरे लिये कुरसी रखी गई तो मैं ने फ़िरिश्तों के सामने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बुज़ुर्गी बयान की ।(3)

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، ۵۴/۳۸۳، رقم: ۲۸۱۱: محمد بن علی بن محمد ابو بکر الفزاری

2 ...الثقات لابن حبان، کتاب من روی عن اتباع التابعین، باب المیم، ۵/۴۵۹، رقم: ۳۳۹۱: محمد بن المصفی بن بہلول الحمصی

3 ...تاریخ ابن عساکر، ۶۰/۳۴۰، رقم: ۷۶۷۰، منصور بن عمار بن کثیر

हम्दो सना और दुरूदो सलाम की बरकत

हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन शा'रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی का बयान है : मैं ने हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को बा'द अज़ वफ़ात ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : तुम मन्सूर बिन अ़म्मार हो ? मैं ने अ़र्ज़ की : हां ! मेरे मालिक। इरशाद फ़रमाया : तुम ही लोगों को दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत का दर्स देते थे ? मैं ने अ़र्ज़ की : मौला ! ऐसा ही था, मगर मैं जब भी मजलिस क़ाइम करता था उस की इब्तिदा में तेरी ता'रीफ़ बयान करता और तेरे नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ता था फिर तेरे बन्दों को नसीहत करता था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : तुम ने सच कहा, (फ़िरिश्तो !) इस के लिये कुरसी रखो ताकि येह आस्मानों में मेरी बुज़ुर्गी बयान करे जिस त़रह़ ज़मीन में मेरे बन्दों के सामने करता था।(1)

ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने का इनआ़म

हज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار बयान करते हैं : मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन अ़म्मार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने बताया कि मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपने क़रीब किया और इरशाद फ़रमाया : ऐ बद अ़मल बूढ़े ! क्या तू जानता है कि मैं ने तुझे क्यूं बख़्शा ? मैं ने अ़र्ज़ की : इलाही ! मैं नहीं जानता। इरशाद फ़रमाया : इस लिये कि एक दिन तू ने लोगों के लिये मजलिस क़ाइम की तो उन्हें रुला दिया, उन में मेरा एक ऐसा बन्दा भी रो दिया जो कभी भी मेरे ख़ौफ़ से नहीं रोया था पस मैं ने उसे बख़्श दिया और उस के तुफ़ैल तुझे और तमाम अहले मजलिस को भी बख़्श दिया।(2)

जन्नत में दाख़िले का सबब

हज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अ़फ़्फ़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना वकीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَدِيْع की वफ़ात के बा'द उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप

---

❶...تاریخ ابن عساکر، ۶۰/۳۴۳، رقم: ۷۶۷۰، منصور بن عمار بن کثیر

❷...تاریخ بغداد، ۱۳/۷۹، رقم: ۷۰۵۲، منصور بن عمار بن کثیر

के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : उस ने मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया । मैं ने पूछा : किस सबब से ? फ़रमाया : इल्म के सबब ।[1]

दर्से ह़दीस का इनआ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू यह़्या मुस्तमली बिन हम्माम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हम्माम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देखा तो उन के सर पर क़िन्दीलें लटक रही थीं । मैं ने पूछा : ऐ अबू हम्माम ! इन क़िन्दीलों तक रसाई कैसे हुई ? फ़रमाया : येह क़िन्दील ह़दीसे ह़ौज़े कौसर, येह वाली ह़दीसे शफ़ाअ़त, येह क़िन्दील फ़ुलां ह़दीस बयान करने का इन्आ़म है ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی को विसाल के बा'द ख़्वाब में देखा तो अ़र्ज़ की : मुझे नसीह़त कीजिये । फ़रमाया : लोगों से कम मिला करो । मैं ने कहा : कुछ और फ़रमाइये । फ़रमाया : अ़न क़रीब यहां वारिद होगे तो जान जाओगे ।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रबीअ़ ज़हरानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی बयान करते हैं कि मुझे मेरे पड़ोसी ने बताया कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात के बा'द उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : अभी पीर के दिन का सूरज ग़ुरूब भी नहीं हुवा था कि मेरा आ'माल नामा मुझे दिखाया गया पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ पर रह़्म फ़रमाया और मुझे बख़्श दिया । आप का विसाल पीर के दिन हुवा था ।[4]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़म्र ख़फ़्फ़ाफ़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन यह़्या ज़ुह्ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی को वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा तो पूछा : आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी । मैं ने पूछा : आप के आ'माल का क्या हुवा ? कहा : सोने के पानी से लिख कर आ'ला इ़ल्लिय्यीन में बुलन्द कर दिये गए ।[5]

---

1 ...الکامل لابن عدی، مقدمۃ المصنف، وکیع بن الجراح، ۱/۱۹۷

2 ...تاریخ بغداد، ۱۳/۴۵۱، رقم: ۷۳۲۰: الولید بن شجاع بن الولید

3 ...تاریخ ابن عساکر، ۳۱/ ۳۹۹، رقم: ۳۴۵۴: عبد اللہ بن الفرج

4 ...تاریخ ابن عساکر، ۳۱/۳۷۳، رقم: ۳۴۴۸: عبد اللہ بن عون

5 ...تاریخ بغداد، ۴/ ۱۹۰، رقم: ۱۸۶۴: محمد بن یحیی بن عبد اللہ

हज़रते उस्ताद अबू वलीद عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡمَجِيۡد बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास असम عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡاَكۡرَم को ख़्वाब में देखा तो पूछा : या शैख़ ! अब आप कहां होते हैं ? फ़रमाया : मैं अबू या'क़ूब बुवैत़ी और रबीअ़ बिन सुलैमान के साथ हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡكَافِي के पड़ोस में हूं और हम रोज़ाना उन की दा'वत में हाज़िर होते हैं ।(1)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न रखने की बरकत

हज़रते सय्यिदुना सुहैल رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه बयान करते हैं : हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : आप बारगाहे इलाही में क्या ले कर हाज़िर हुवे ? फ़रमाया : मैं तो बहुत ज़ियादा गुनाह ले कर हाज़िर हुवा था मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न रखने ने सारे गुनाह मिटा दिये ।(2)

सय्यिदुना जर्राह़ बिन अ़ब्दुल्लाह عَلَيۡهِ الرَّحۡمَه का इस्तिक़्बाल

एक यमनी ख़ातून का बयान है : मैं ने हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه को ख़्वाब में देखा तो पूछा : क्या आप की वफ़ात नहीं हो गई ? उन्हों ने फ़रमाया : हां हो गई है लेकिन आज अहले जन्नत में ए'लान किया गया कि जर्राह़ बिन अ़ब्दुल्लाह का इस्तिक़्बाल करें । येह ख़्वाब हज़रते सय्यिदुना जर्राह़ رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه के विसाल की ख़बर आने से पहले देखा गया था, जब उन के विसाल की ख़बर आई तो अन्दाज़ा लगाने पर मा'लूम हुवा कि वोह इसी ख़्वाब वाले दिन आज़रबाईजान में शहीद हुवे थे ।(3)

बैतुल मुक़द्दस की एक ख़ातून का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحۡمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيۡه हमारे हम मजलिस थे और बहुत ही अच्छे थे । उन का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं ने उन्हें ख़्वाब में देख कर पूछा : आप ह़ज़रात को किस त़रफ़ फेरा गया ? फ़रमाया : भलाई की त़रफ़ । लेकिन तुम लोगों से जुदा होने के बा'द हमें ऐसी घबराहट हुई कि हम समझे क़ियामत क़ाइम हो गई है । मैं ने पूछा :

---

❶...تاریخ ابن عساکر، ۲۹۶/۵۶، رقم: ۷۱۲۴: محمد بن یعقوب بن یوسف

❷...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۴۱/۳، حدیث: ۳۲

❸...تاریخ ابن عساکر، ۶۰/۷۲، رقم: ۹۷۷۶: جراح بن عبد اللہ ابو عقبۃ الحکمی

येह किस वज्ह से हुवा ? फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना जर्राह़ رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ और उन के साथी अपने भारी आ'माल के साथ जन्नत में दाख़िल हुवे थे ह़त्ता कि जन्नत के दरवाज़े पर भीड़ लग गई थी।(1)

"اَللّٰہُ اَکْبَر" कहने का इन्आ़म और तोह्मत का वबाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अस्मई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی के वालिदे माजिद बयान करते हैं कि जरीर शाइ़र की वफ़ात के बा'द एक शख़्स ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : मुझे बख़्श दिया गया। पूछा : किस सबब से ? फ़रमाया : जंगल में पानी के किनारे एक तक्बीर (या'नी اَللّٰہُ اَکْبَر) कहने के सबब। पूछा : आप के भाई फ़रज़्दक़ का क्या हुवा ? फ़रमाया : पाक दामन औ़रतों पर तोह्मत लगाने के अ़मल ने उसे हलाकत में डाल दिया।(2)

अह्ले बैत की शान बयान करने पर इन्आ़म

सवर बिन यज़ीद शामी का बयान है कि ह़ज़रते सय्यिदुना कुमैत बिन ज़ैद رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَافَعَلَ اللّٰہُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : उस ने मुझे बख़्श दिया और मेरे लिये एक कुरसी रख कर मुझे उस पर बिठा दिया और मुझे ख़ुश कुन अश्आ़र पढ़ने का हुक्म दिया। जब मैं इस शे'र पर पहुंचा :

حَنَانَیْكَ رَبَّ النَّاسِ مِنْ اَنْ یَّغُرَّنِیْ كَمَا غَرَّهُمْ شُرْبُ الْحَیَاةِ الْمُصَرَّدِ

तर्जमा : ऐ लोगों के परवरदगार عَزَّوَجَلَّ ! तेरी रह़मत दर रह़मत है कि जिस त़रह़ दुन्या की ना मुकम्मल सैराबी ने लोगों को धोके में डाला वोह मुझे धोके में न डाल सकी।

तो रब तआ़ला ने इरशाद फ़रमाया : ऐ कुमैत ! तू ने सच कहा, यक़ीनन जिस ने उन्हें धोके में डाला उस ने तुझे धोका न दिया, तू ने मेरी मख़्लूक़ में मेरे मुन्तख़ब और बेहतरीन लोगों के बारे

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۴۳، رقم: ۳۷

2 ...تاریخ ابن عساکر، ۷۲/۹۵، رقم: ۹۷۸۴: جریر بن عطیۃ بن نزار البصری

में सच कहा पस मैं ने तुझे बख़्श दिया और आले मुहम्मद की शान में कहे गए तुम्हारे हर शे'र के बदले क़ियामत तक आख़िरत में तुम्हारा एक रुत्बा बुलन्द करूंगा।[1]

हज़रते सय्यिदुना इब्ने शा'शाअ मिस्री عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं कि बनू उ़बैद से लड़ी गई जंग के शहीदों में से हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र इब्ने नाबुलुसी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی को एक साल बा'द मैं ने ख़्वाब में बहुत अच्छी हालत में देखा तो पूछा : आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने येह अश्आ़र पढ़े :

حَبَانِیْ مَالِکِیْ بِدَوَامِ عِزٍّ وَوَاعَدَنِیْ بِقُرْبِ الْاِنْتِصَارِ
وَقَرَّبَنِیْ وَاَدْنَانِیْ اِلَیْهِ وَقَالَ اَنْعِمْ بِعَیْشٍ فِیْ جِوَارِیْ

तर्जमा : मेरे मालिक ने मुझे दाइमी इ़ज़्ज़त बख़्शी और अ़न क़रीब कामयाबी का वा'दा फ़रमाया, मुझे अपना कुर्ब अ़ता किया और इरशाद फ़रमाया : मेरे पड़ोस (सायए रह़मत) में मज़े से रहो।[2]

ख़्वाहिशात पर रब عَزَّوَجَلَّ को तरजीह देने का इनआ़म

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन महदी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के विसाल के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने फ़रमाया : क़ब्र में पहुंचते ही मुझे बारगाहे खुदावन्दी में ह़ाज़िर किया गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरा आसान तर ह़िसाब लिया और मुझे जन्नत में जाने का हुक्म इरशाद फ़रमा दिया, मैं जन्नती फूलों और दरख़्तों के दरमियान पहुंचा तो वहां कोई ह़रकत और कोई आवाज़ न थी फिर अचानक एक आवाज़ आई : ऐ सुफ़्यान बिन सईद ! क्या तुम जानते हो तुम ने एक दिन अपनी ख़्वाहिश पर अपने रब عَزَّوَجَلَّ को तरजीह़ दी ? मैं ने कहा : खुदा की क़सम ! येही बात है। पस हर त़रफ़ से मुझे मीठाई से भरे बरतनों ने घेर लिया।[3]

1...تاریخ ابن عساکر، ۵۰/۲۴۶، رقم: ۵۸۲۸: کمیت بن زید

2...تاریخ ابن عساکر، ۵۱/۵۱، رقم: ۵۹۰۶: محمد بن احمد بن سہل

3...تاریخ ابن عساکر، ۵۱/۱۸۴، رقم: ۶۰۲۶: محمد بن ابراھیم سوسی

फ़ख़्र व तकब्बुर से बचने का इनआ़म

हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : مَافَعَلَ اللّٰہُ بِکَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया, मेरी नाज़ बरदारी फ़रमाई और (हूरों से) मेरी शादी कर दी और इरशाद फ़रमाया : येह उस का बदला है कि तुम ने कभी मेरी ने'मतों पर फ़ख़्र व तकब्बुर नहीं किया ।(1)

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन सुलैमान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی को ख़्वाब में देख कर पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला किया ? फ़रमाया : उस ने मुझे सोने की कुरसी पर बिठाया और मुझ पर नर्म व नाज़ुक मोतियों की बारिश कर दी ।(2)

नजात याफ़्ता गुरौह

हज़रते सय्यिदुना इस्माईल बिन इब्राहीम फ़क़ीह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू अह़मद ह़ाकिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : आप के नज़्दीक ज़ियादा नजात पाने वाला गुरौह कौन सा है ? फ़रमाया : अह्ले सुन्नत व जमाअ़त ।(3)

हज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा बिन सुलैमान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना आ़सिम ग़ाज़ी त़राबुलुसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : ऐ अबू अ़ली ! आप का क्या ह़ाल है ? फ़रमाया : हम मौत के बा'द कुन्यत नहीं रखते और न इस से पुकारे जाते हैं । मैं ने कहा : ऐ आ़सिम ! आप कैसे हैं और आप को किस त़रफ़ ले जाया गया ? फ़रमाया : मुझे वसीअ़ रह़मत और बुलन्द जन्नत की त़रफ़ ले जाया गया है । मैं ने पूछा : किस सबब से ? फ़रमाया : समन्दर में ब कसरत जिहाद करने के सबब ।(4)

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، ۵۱/۳۳۵، رقم: ۶۰۷۱: محمد بن ادریس الشافعی

2 ...تاریخ بغداد، ۲/۶۸، رقم: ۴۵۴: محمد بن ادریس الشافعی

3 ...تاریخ ابن عساکر، ۵۵/۱۵۹، رقم: ۶۹۳۷: محمد بن محمد بن احمد ابو احمد نیسابوری، نحوہ

4 ...تاریخ ابن عساکر، ۲۵/۲۹۵، رقم: ۳۰۲۸: عاصم ابو علی الاطرابلسی، نحوہ

नेकियां क़बूल और ख़ताएं मुआफ़

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار का बयान है : मैं ने हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار को ख़्वाब में देखा तो पूछा : मौत के बा'द आप ने क्या पाया ? फ़रमाया : हौलनाकियों और बड़े शदीद ज़लज़लों से सामना हुवा । मैं ने कहा : इस के बा'द क्या हुवा ? फ़रमाया : करीम से जिस की तवक़्क़ोअ़ होती है वोही हुवा उस ने हमारी नेकियां क़बूल फ़रमा लीं, हमारी ख़ताओं को मुआफ़ फ़रमा दिया और हमारे अन्जाम का ज़ामिन हुवा ।[1]

बारगाहे रिसालत तक रसाई का वसीला

हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ हाशिमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मुहम्मद बिन जरीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَدِيْر को ख़्वाब में देखा तो पूछा : आप ने मौत को कैसा पाया ? फ़रमाया : भलाई ही भलाई । मैं ने कहा : क़ब्र की हौलनाकी को कैसा पाया ? फ़रमाया : भलाई ही भलाई । मैं ने पूछा : मुन्कर नकीर को कैसा पाया ? फ़रमाया : भलाई ही भलाई । मैं ने कहा : आप का रब عَزَّوَجَلَّ तो आप पर बहुत मेहरबान है उस की बारगाह में हमारा तज़्किरा भी कर लीजियेगा । फ़रमाया : ऐ अबू अ़ली ! तुम कहते हो कि हमारा तज़्किरा भी कर लेना हालांकि हम बारगाहे रिसालत तक रसाई के लिये तुम्हें अपना वसीला बनाते हैं ।[2]

ख़िदमते हदीस का सिला

हज़रते सय्यिदुना हुबैश बिन मुबश्शिर رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मईन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمُبِيْن को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे अपना क़ुर्ब बख़्शा और 300 हूरों से मेरा निकाह फ़रमाया और दो मरतबा अपने दीदार से शाद काम किया । मैं ने अ़र्ज़ की : किस सबब से ? उन्हों ने अपनी आस्तीन से कुछ निकाला और फ़रमाया : इस के सबब या'नी हदीस शरीफ़ की ख़िदमत के सबब ।[3]

---

1 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۴۰، رقم: ۳۰

2 ...تاریخ ابن عساکر، ۵۲/۲۰۷، رقم: ۶۱۲۰: محمد بن جریر ابو جعفر الطبری

3 ...تاریخ ابن عساکر، ۶۵/۴۱، رقم: ۸۲۱۴: یحیی بن معین بن عون، تاریخ بغداد، ۱۴/۱۹۱، رقم: ۷۴۸۴: یحیی بن معین بن عون

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान उ़मरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना क़ारी अबू जा'फ़र यज़ीद बिन क़ा'क़ाअ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाल के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो उन्हों ने मुझ से फ़रमाया : मेरे दोस्तों को मेरा सलाम कहना और उन्हें बताना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझे उन शुहदा का मक़ाम अ़ता फ़रमाया है जो ज़िन्दा हैं और रिज़्क़ दिये जाते हैं और हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ को भी मेरा सलाम देना और कहना : ख़ूब दानाई से काम लो क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते तुम्हारी रातों की मजलिस को देखते हैं।(1)

हज़रते सय्यिदुना ज़करिय्या बिन अ़दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : (जिहाद) के लिये सफ़र करने के सबब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी।(2)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : आप ने किस अ़मल को अफ़्ज़ल पाया ? फ़रमाया : जो अ़मल मैं किया करता था। मैं ने कहा : सरहदे इस्लाम पर जिहाद के लिये तय्यार रहना और जिहाद करना ? फ़रमाया : हां।(3)

बुलन्द दर्जे वाले

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन मज़ऊर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفُوْر बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाल के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़म्र ! मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस के ज़रीए मैं कुर्बे इलाही हासिल कर सकूं ? फ़रमाया : मैं ने यहां उ़लमा से बुलन्द दर्जा किसी का नहीं देखा और उन के बा'द ग़मज़दा लोगों का दर्जा है।(4)

अफ़्ज़ल अ़मल "इस्तिग़फ़ार"

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ الرَّحْمَة बयान करते हैं कि वालिदे माजिद के विसाल के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देख कर अ़र्ज़ की : आप ने किस अ़मल को अफ़्ज़ल पाया ? फ़रमाया : बेटा ! इस्तिग़फ़ार को अफ़्ज़ल पाया।(5)

1... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۵۳، حدیث: ۳۲۱

2... تاریخ ابن عساکر، ۳۲/۴۸۴، رقم: ۳۵۵۵: عبد اللہ بن المبارک بن واضح

3... تاریخ ابن عساکر، ۳۲/۴۸۲، رقم: ۳۵۵۵: عبد اللہ بن المبارک بن واضح

4... تاریخ ابن عساکر، ۳۵/۲۲۹، رقم: ۳۹۰۷: عبد الرحمن بن عمرو ابو عمرو الاوزاعی

5... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۳۷، حدیث: ۲۶

सुन्नते नबवी की ख़िदमत का सिला

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان बयान करते हैं कि ख़लीफ़ा मुतवक्किल की वफ़ात के बा'द मैं ने उसे ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : मुझे बख़्श दिया। मैं ने पूछा : किस सबब से ह़ालांकि तेरी तो बहुत सी बुराइयां थीं ? उस ने कहा : मैं ने थोड़ी बहुत सुन्नते नबवी की जो ख़िदमत की उस के सबब।(1)

एक जुम्ले के सबब बख़्शिश

हज़रते सय्यिदुना ह़ज्जाज बिन क़बीला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی और फ़रज़्दक़ के साथ एक क़ब्र पर गया तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने फ़रज़्दक़ से पूछा : तुम ने उस दिन के लिये क्या तय्यारी की है ? उस ने कहा : "70 साल से इस बात की गवाही दे रहा हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं।" येह सुन कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ख़ामोश हो गए।(2)

लबत़ा बिन फ़रज़्दक़ ने कहा : वालिद साह़िब की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो उन्हों ने कहा : बेटा ! मुझे उस जुम्ले ने नफ़्अ़ दिया जो मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى से कहा था।(3)

किताब में दुरूदे पाक लिखने की बरकत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह़ सूफ़ी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से मरवी है कि एक मुह़द्दिस को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा मुझे बख़्श दिया। पूछा : किस सबब से ? कहा : अपनी किताबों में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक लिखने के सबब।(4)

1...تاریخ بغداد، ۷/۱۸۰، رقم: ۳۶۱۲: جعفر امیر المؤمنین المتوکل علی اللہ بن محمد المعتصم باللہ

2...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب القبور، جامع ذکر القبور، ۶/۷۸، حدیث: ۱۰۹، عن سفیان بن حسین
تاریخ ابن عساکر، ۷۴/۶۴، رقم: ۱۰۰۷۳: ھمام بن غالب الفرزدق

3...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب حسن الظن باللہ، ۱/۱۰۲، حدیث: ۱۰۳
تاریخ ابن عساکر، ۷۴/۷۱، رقم: ۱۰۰۷۳: ھمام بن غالب الفرزدق

4...تاریخ ابن عساکر، ۵۴/۱۱۳، رقم: ۶۶۴۶: محمد بن عبد الرحمٰن ابو بکر النھاوندی

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन नआमा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक शख़्स ने किसी फ़ौतशुदा को ख़्वाब में देखा तो मुर्दे ने उस से कहा : ऐ फ़ुलां ! लोगों को बता दो कि हज़रते सय्यिदुना आमिर बिन क़ैस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का चेहरा बरोज़े क़ियामत चौधवीं रात के चांद की तरह चमकता होगा।(1)

इल्म को ज़ीनत देने का इन्आम

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन अस्लम عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْاَکْرَم बयान करते हैं कि वालिदे माजिद की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो उन के सर पर एक ऊंची टोपी रखी थी, मैं ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : इल्म को ज़ीनत देने के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे ज़ीनत बख़्शी। मैं ने पूछा : हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ कहां हैं ? फ़रमाया : वोह तो ऊपर, ऊपर, ऊपर......अपना सर उठा कर येही कहते रहे यहां तक कि उन के सर से टोपी गिर पड़ी।(2)

हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَافِی के भांजे हज़रते सय्यिदुना ख़ुश्नाम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने मामूं जान को ख़्वाब में देखा तो पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उन्हों ने फ़रमाया : रब तआला ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से मिलने वाली इ़ज़्ज़त का बताया तो मैं ने अ़र्ज़ की : क्या रब तआला ने आप से कुछ इरशाद भी फ़रमाया ? कहा : हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ बिशर ! क्या तुझे मुझ से ह़या नहीं आई कि तू इस क़दर मुझ से डरता था।(3)

हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन इस्माईल मुहामिली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना क़ाशानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی को ख़्वाब में देखा तो पूछा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उन्हों ने मुझे इशारे से बताया कि बड़ी मशक़्क़त के बा'द नजात मिली है। मैं ने कहा : आप हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُاللّٰہِ الْاَوَّل के बारे में क्या कहते हैं ? फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की मग़फ़िरत फ़रमा दी है। मैं ने कहा : हज़रते सय्यिदुना

---

❶...تاریخ ابن عساکر، ۴۲/۲۶، رقم: ۳۰۵۲: عامر بن عبد اللہ المعروف بابن عبد قیس

❷...تاریخ ابن عساکر، ۲۹۳/۱۹، رقم: ۲۳۲۹: زید ع بن اسلم ابو اسامة

❸...تاریخ ابن عساکر، ۲۲۲/۱۰، رقم: ۸۸۱: بشر بن الحارث ابو نصر المروزی

बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى के बारे में बताइये। फ़रमाया : उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की जानिब से रोज़ाना दो मरतबा करामत से नवाज़ा जाता है।(1)

ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे हैं

हज़रते सय्यिदुना आ़सिम जुहनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى बयान करते हैं : मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं हिशाम की खजूरें सुखाने की जगह में दाख़िल हुवा हूं। वहां हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से मेरी मुलाक़ात हो गई, मैं ने कहा : कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं ? फ़रमाया : इल्लिय्यीन से। मैं ने पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : मैं अभी हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब वर्राक़ (رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْهِمَا) को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सामने इस हाल में छोड़ कर आ रहा हूं कि वोह खा रहे, पी रहे और लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे थे। मैं ने पूछा : आप ने क्यूं नहीं खाया पिया ? फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ खाने से मेरी बे रग़बती को जानता है लिहाज़ा उस ने मुझे अपने दीदार की इजाज़त दे रखी है।(2)

सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत

हज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र सक़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी और हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी (رَحْمَةُ اللهِ تعالٰى عَلَيْهِمَا) को ख़्वाब में कहीं से आते हुवे देखा तो पूछा : कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं ? फ़रमाया : जन्नतुल फ़िरदौस से, हम ने वहां हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत की है।(3)

वली से महब्बत का इनआम

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से मेरी मुलाक़ात हुई तो मैं ने पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? जवाब दिया : उस ने मेरी बख़्शिश फ़रमा दी और इरशाद फ़रमाया : ऐ बिशर ! मैं ने तुझे और तेरा जनाज़ा पढ़ने वालों को बख़्श दिया है। मैं ने अ़र्ज़ की : या रब ! मुझ

---

(1)... تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۲۲۳، رقم: ۸۸۱: بشر بن الحارث ابو نصر المروزی

(2)... تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۲۲۳، رقم: ۸۸۱: بشر بن الحارث ابو نصر المروزی

(3)... تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۲۲۴، رقم: ۸۸۱: بشر بن الحارث ابو نصر المروزی

से महब्बत करने वाले हर शख़्स को भी बख़्श दे। इरशाद फ़रमाया : क़ियामत तक जो भी तुझ से महब्बत करे उस को भी बख़्श दिया।(1)

वली के क़ुर्ब की बरकतें

हज़रते सय्यिदुना अहमद दौरक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی बयान करते हैं : मेरे एक पड़ोसी का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं ने उसे ख़्वाब में देखा, उस पर दो हुल्ले थे। मैं ने कहा : अपना क़िस्सा सुनाओ ? उस ने कहा : हमारे क़ब्रिस्तान में हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی को दफ़्न किया गया तो हर क़ब्र वाले को दो दो हुल्ले पहनाए गए हैं।(2)

हज़रते सय्यिदुना हज्जाज बिन शाइर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? जवाब दिया : मुझे बख़्श दिया और इरशाद फ़रमाया : ऐ बिशर ! तू ने मेरी इबादत इतनी नहीं की जितना मैं ने तेरे नाम को बुलन्द किया है।(3)

एक शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی को ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : मुझे बख़्श दिया और इरशाद फ़रमाया : ऐ बिशर ! मैं ने अपने बन्दों के दिलों में तेरी जो इज़्ज़त व महब्बत डाली है अगर तू दहकते अंगारों पर भी मुझे सजदे करता तो फिर भी उस का हक़ अदा न होता।(4)

औलिया की शान

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन खुज़ैमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل के विसाल पर मैं ग़म में डूब गया। एक रात मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो वोह बड़े नाज़ से चल रहे थे, मैं ने कहा : ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह ! येह कैसी चाल है ? फ़रमाया : مِشْيَةُ الْخُدَّامِ فِي دَارِ السَّلَام या'नी सलामती वाले घर में ख़ादिमों की चाल है। मैं ने पूछा : مَافَعَلَ اللهُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : उस ने मेरी

1...تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۲۲۵، رقم: ۸۸۱: بشر بن الحارث ابو نصر المروزی
2...تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۲۲۶، رقم: ۸۸۱: بشر بن الحارث ابو نصر المروزی
3...تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۲۲۷، رقم: ۸۸۱: بشر بن الحارث ابو نصر المروزی
4...تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۲۲۷، رقم: ۸۸۱: بشر بن الحارث ابو نصر المروزی

बख़्शिश फ़रमा कर मुझे ताज और सोने की ना'लैन पहनाईं और इरशाद फ़रमाया : ऐ अह़मद ! येह उस का इन्आ़म है कि तू ने कहा था : "कुरआन अल्लाह का कलाम है।" फिर इरशाद फ़रमाया : ऐ अह़मद ! मांग जो कुछ तू दुन्या में मुझ से मांगता था। मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! सब कुछ। इरशाद फ़रमाया : और मांग। मैं ने अर्ज़ की : सब कुछ तेरी कुदरत में है। इरशाद फ़रमाया : صَدَقْتَ या'नी तू ने सच कहा। मैं ने अ़र्ज़ की : इलाही मुझ से किसी चीज़ की बाज़पुर्स न फ़रमा और सब कुछ मुआ़फ़ फ़रमा दे। इरशाद फ़रमाया : हम ने मुआ़फ़ किया। फिर फ़रमाया : ऐ अह़मद ! येह जन्नत है उठ और इस में दाख़िल हो जा। पस मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो सामने ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی दो सब्ज़ परों के साथ एक दरख़्त से दूसरे दरख़्त पर उड़ रहे थे और कह रहे थे : सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने अपना वा'दा हम से सच्चा किया और हमें जन्नत की ज़मीन का वारिस किया कि जहां चाहें रहें पस फ़रमां बरदारों का इन्आ़म बहुत ख़ूब है। मैं ने अ़र्ज़ की : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق का क्या ह़ाल है ? फ़रमाया : मैं उन्हें उन के बख़्शने वाले रब के सामने नूर के समन्दर में छोड़ कर आया हूं। मैं ने कहा : ह़ज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِی किस ह़ाल में हैं ? फ़रमाया : वाह ! वाह ! उन के जैसा कौन हो सकता है, वोह अपने रब्बे जलील के सामने थे, उन के सामने खाने का एक दस्तर ख़्वान सजा था और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की नाज़ बरदारी करते हुवे फ़रमा रहा था : ऐ दुन्या में खाना, पानी और ने'मतें छोड़ने वाले ! अब खा, पी और ने'मतों से लुत्फ़ उठा।(1)

दुलफ़ बिन अबू दुलफ़ इज्ली बयान करते हैं : मैं ने अपने वालिद को ख़्वाब में सियाह दीवारों वाले एक वह्शत नाक घर में देखा जिस की ज़मीन रेतीली लग रही थी और वालिद साहिब बिल्कुल बरह्ना अपने घुटने में सर रखे बैठे थे। मुझे देख कर पूछा : तुम दुलफ़ हो ? मैं ने कहा : जी हां, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हाकिम का भला करे। तो उन्हों ने येह अश्आ़र पढ़े :

اَبْلِغَنَّ اَهْلَنَا وَلَا تَخْفِ عَنْهُمْ ... مَا لَقِيْنَا فِي الْبَرْزَخِ الْخِنَاقِ
قَدْ سُئِلْنَا عَنْ كُلِّ مَا قَدْ فَعَلْنَا ... فَارْحَمُوْا وَحْشَتِيْ وَمَا قَدْ اُلَاقِيْ

1...تاریخ ابن عساکر، ۱۰/۲۲۸، رقم: ۸۸۱: بشر بن الحارث ابو نصر المروزی

तर्जमा : जो कुछ हमें इस तंग व दुश्वार बरज़ख़ में मिला है हमारे घरवालों को ज़रूर बताना उन से छुपाना नहीं, हम से हमारे हर किये के बारे में पूछा गया है लिहाज़ा मेरी वहूशत और जो कुछ मैं ने पाया उस पर रहूम करो।

पूछा : तुम समझ गए ? मैं ने कहा : जी हां। उन्हों ने फिर येह अश्आर पढ़े :

فَلَوْ اَنَّا اِذَا مُتْنَا تُرِكْنَا   لَكَانَ الْمَوْتُ رَاحَةَ كُلِّ حَيٍّ

وَّلٰكِنَّا اِذَا مُتْنَا بُعِثْنَا   فَنُسْئَلُ بَعْدَهٗ عَنْ كُلِّ شَيْءٍ

तर्जमा : अगर हमें मौत के बा'द छुटकारा मिल जाता तो मौत हर ज़िन्दा के लिये चैन होती लेकिन जब हम मरे तो हमें ज़िन्दा कर के हम से हर शै के बारे में पूछा गया।[1]

ज़ालिम हज्जाज बिन यूसुफ़ का हाल

हज़रते सय्यिदुना अस्मई عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی के वालिदे माजिद का बयान है : मैं ने हज्जाज को ख़्वाब में देख कर पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उस ने कहा : मैं ने जितने भी इन्सान क़त्ल किये थे हर एक के बदले मुझे 70 मरतबा क़त्ल किया गया। फ़रमाते हैं : एक साल बा'द मुझे वोह फिर ख़्वाब में दिखाई दिया तो मैं ने पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? उस ने कहा : क्या पहले साल आप मुझ से येह पूछ नहीं चुके ?"[2]

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِیْز बयान करते हैं : मैं ने ख़्वाब में एक मुर्दार देखा तो कहा : येह क्या है ? मुझे कहा गया : आप इस से बात करेंगे तो येह आप को जवाब देगा। मैं ने उसे अपने पैर से ठोकर मारी तो उस ने सर उठा कर मेरी तृरफ़ देखा। मैं ने कहा : तू कौन है ? बोला : मैं हृज्जाज हूं, मुझे बारगाहे इलाही में पेश किया गया तो मैं ने उसे सख़्त अ़ज़ाब देने वाला पाया, पस उस ने मुझे हर क़त्ल के बदले क़त्ल किया है, अब मैं उस की बारगाह में इस बात का मुन्तज़िर हूं जिस का इन्तिज़ार उसे एक मानने वालों को है कि वोह जन्नत का हुक्म देता है या जहन्नम का।[3]

1...تاریخ ابن عساکر، ۱۵۰/۴۹، رقم: ۵۶۷۲: القاسم بن عیسی بن ادریس

2...تاریخ ابن عساکر، ۲۰۱/۱۲، رقم: ۱۲۱۷: الحجاج بن یوسف بن الحکم

3...تاریخ ابن عساکر، ۱۲۹/۶۶، رقم: ۸۴۴۸: ابو حازم الاسدی بن الخاصری

हज़रते सय्यिदुना अश्अ़स رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने ख़्वाब में हज्जाज बिन यूसुफ़ को बुरी हालत में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उस ने कहा : मैं ने जितने भी क़त्ल किये हर क़त्ल के बदले मुझे क़त्ल किया गया। मैं ने पूछा : फिर छोड़ दिया गया ? बोला : जो उम्मीद لَاۤاِلٰہَ اِلَّا اللہ कहने वालों को है अब वोही उम्मीद लगाए बैठा हूं।(1)

अबू हुसैन का बयान है कि मैं ख़्वाब में एक कुशादा जगह गया तो वहां एक शख़्स चारपाई पर बैठा हुवा था और एक शख़्स उस के सामने कुछ भून रहा था। मैं ने पूछा : येह कौन बैठा हुवा है ? मुझे कहा गया : येह हज़रते सय्यिदुना यज़ीद नह़्वी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बैठे हुवे हैं और इन के सामने भूनने वाले अबू मुस्लिम ख़ुरासानी हैं। मैं ने पूछा : हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम साइग़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का क्या ह़ाल है ? कहा गया : भला उन तक कौन पहुंच सकता है वोह तो आ'ला इल्लिय्यीन में हैं।(2)

अबू हुसैन का बयान है : ख़्वाब ही में मुझ से कहा गया कि जो ख़्वाब तुम ने देखा है येही ख़्वाब ख़ुरासान के एक क़स्बे में एक नेक शख़्स ने देखा है। बा'द में वोह शख़्स हमारे पास आया तो उस ने कहा : येही ख़्वाब बल्ख़, समरक़न्द, जूरजान और ख़ुरासान के क़स्बे में भी देखा गया है।(3)

हज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान मुअ़ब्बिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं : मैं ने ख़्वाब में हज़रते सालेह़ बिन अ़ब्दुल क़ुद्दूस رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़ुश बाश हंसते हुवे देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया और आप को नजात कैसे मिली ह़ालांकि आप पर बे दीनी का इल्ज़ाम लगा था ? फ़रमाया : मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा जिस पर कुछ भी पोशीदा नहीं। उस ने अपनी रह़मत से मेरा इस्तिक़्बाल किया और इरशाद फ़रमाया : जो इल्ज़ाम तुम पर लगा है मैं जानता हूं तुम उस से बरी हो।(4)

हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद तै़फ़ूर बिस्ता़मी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی बयान करते हैं कि मुझे ख़्वाब में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ज़ियारत हुई तो मैं ने अ़र्ज़ की : या अमीरल मोमिनीन ! मुझे कोई ऐसी बात सिखाइये जो मुझे

1...تاریخ ابن عساکر، ۲۰۱/۱۲، رقم: ۱۲۱۷: الحجاج بن یوسف بن الحکم

2...تاریخ ابن عساکر، ۴۱۷/۳۵، رقم: ۳۹۶۱: عبد الرحمٰن بن مسلم ابو مسلم الخراسانی

3...تاریخ ابن عساکر، ۴۱۷/۳۵، رقم: ۳۹۶۱: عبد الرحمٰن بن مسلم ابو مسلم الخراسانی

4...تاریخ بغداد، ۳۰۵/۹، رقم: ۴۸۴۴: صالح بن عبد القدوس ابو الفضل البصری

नफ़्अ़ दे । फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सवाब की उम्मीद पर अग़्निया का फ़ुक़रा के लिये आ़जिज़ी करना बहुत ख़ूब है । मैं ने अ़र्ज़ की : और नसीहत कीजिये । फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पास जो कुछ है उस पर यक़ीन रखते हुवे फ़ुक़रा का अग़्निया पर फ़ख़्र करना इस से ज़ियादा ख़ूब है । मैं ने अ़र्ज़ की : और कीजिये । फ़रमाया : इस से भी बेहतर । (येह फ़रमा कर) अपनी हथेली खोली तो उस में सोने के पानी से लिखा था :

كُنْتَ مَيْتًا فَصِرْتَ حَيًّا ... وَعَنْ قَلِيْلٍ تَكُوْنُ مَيْتًا

فَابْنِ بِدَارِ الْبَقَاءِ بَيْتًا ... وَاهْدِمْ بِدَارِ الْفَنَاءِ بَيْتًا

तर्जमा : तू मुर्दा था फिर ज़िन्दा हुवा और अ़न क़रीब मुर्दा हो जाएगा लिहाज़ा बाक़ी रहने वाले जहां में घर बना और फ़ानी जहां का घर गिरा दे ।(1)

सब्र का इनआ़म

मक्कए मुकर्रमा के एक बुज़ुर्ग बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन सालिम क़द्दाह़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में देखा तो पूछा : इन क़ब्र वालों में अफ़्ज़ल कौन है ? फ़रमाया : इसी क़ब्र वाला । मैं ने पूछा : इसे किस सबब से फ़ज़ीलत मिली ? फ़रमाया : इस की आज़्माइश हुई तो इस ने सब्र किया । मैं ने पूछा : ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का क्या ह़ाल है ? फ़रमाया : उन्हें ऐसा ह़ुल्ला (लिबास) पहनाया गया है कि दुन्या अपने तमाम तर साज़ो सामान के साथ भी उस की बराबरी नहीं कर सकती ।(2)

सब से नफ़्अ़ मन्द अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू फ़रज ग़ैस बिन अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى का बयान है : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़सन आ़क़ूली رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को ख़्वाब में अच्छी ह़ालत में देखा तो उन से ह़ाल दरयाफ़्त किया । उन्हों ने कहा : ठीक हूं । मैं ने कहा : क्या आप का इन्तिक़ाल नहीं हो गया ? फ़रमाया : हां हो गया है । मैं ने कहा : आप ने मौत को कैसा पाया ? उन्हों ने ख़ुश होते

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، ۱۴/۱۰۵، رقم: ۱۵۶۱: الحسین بن علی بن جعفر البغدادی

2 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب المنامات، ۳/۱۳۴، حدیث: ۲۷۰

تاریخ ابن عساکر، ۴۸/۴۵۳، رقم: ۵۶۳۰: فضیل بن عیاض بن مسعود

हुवे फ़रमाया : अच्छा पाया है। मैं ने पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप की मग़फ़िरत फ़रमा कर जन्नत में दाख़िल कर दिया है ? फ़रमाया : हां। मैं ने कहा : कौन सा अ़मल ज़ियादा नफ़्अ़ मन्द है ? फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार से ज़ियादा नफ़्अ़ किसी में नहीं, तुम इस की कसरत किया करो।(1)

हज़रते सय्यिदुना हसन बिन कुरैश हिरानी(2) قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی बयान करते हैं : मैं ने अमीर इमाजूर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी। मैं ने पूछा : किस सबब से ? कहा : मुसलमानों और हाजियों के रास्तों की हिफ़ाज़त करने के सबब।(3)

हज़रते सय्यिदुना इमाम हाफ़िज़ इब्ने माकूला رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं किसी से हज़रते सय्यिदुना अबू हसन दारे कुत़्नी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی का हाल पूछ रहा हूं। मुझे कहा गया : उन्हें जन्नत में इमाम कह कर पुकारा जाता है।(4)

हज़रते सय्यिदुना अबू ख़लफ़ वज़्ज़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان का बयान है कि सूफ़ी बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन हुसैन राज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : مَافَعَلَ اللّٰہُ بِكَ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? कहा : मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी और मुझ पर रह़्म किया। पूछा गया : किस सबब से ? फ़रमाया : उन कलिमात के सबब जो मैं ने मौत के वक़्त कहे थे, मैं ने कहा था : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं ने लोगों को नसीह़त की मगर ख़ुद अ़मल न किया पस तू मेरे अ़मल की कोताही मेरे क़ौल की ख़ूबी की वज्ह से मुआ़फ़ फ़रमा दे।(5)

ईसाले सवाब की बरकत

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि किसी ने शाइ़र अबू नुवास को ख़्वाब में बहुत ही बड़ी ने'मत में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ

❶...تاریخ ابن عساکر، ۴۱/۳۲۴، رقم: ۴۸۴۰: علی بن الحسن بن طاوس ابو الحسن العاقولی

❷.....मतन में इस मक़ाम पर "हसन बिन यूनुस हिरानी" मज़कूर है जब कि दीगर कुतुब में "हसन बिन कुरैश हिरानी" है लिहाज़ा येही लिख दिया गया है।

❸...تاریخ ابن عساکر، ۹/۲۲۰، رقم: ۸۰۴: اماجور

❹...تاریخ ابن عساکر، ۴۳/۱۰۶، رقم: ۴۹۸۸: علی بن عمر ابو الحسن الدارقطنی

تاریخ بغداد، ۱۲/۳۹، رقم: ۶۴۰۴: علی بن عمر ابو الحسن الدارقطنی

❺...تاریخ بغداد، ۱۴/۳۲۰، رقم: ۷۶۳۸: یوسف بن الحسین بن علی

क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : उस ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा कर मुझे येह ने'मत अ़ता फ़रमाई है। पूछा गया : किस सबब से हालांकि आप के आ'माल तो मिले जुले थे ? फ़रमाया : एक रात एक नेक बन्दा क़ब्रिस्तान आया, उस ने चादर बिछाई और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी, उन दो रक्अ़तों में उस ने दो हज़ार मरतबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد (या'नी सूरए इख़्लास) पढ़ी और उस का सवाब क़ब्रिस्तान के तमाम मुर्दों को बख़्शा तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने सब की मग़्फ़िरत फ़रमा दी, उन सब में एक मैं भी था।(1)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन नाफ़ेअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاسِع बयान करते हैं : मैं ने शाइर अबू नुवास को ख़्वाब में देखा तो कहा : आप अबू नुवास हैं ? फ़रमाया : कुन्यत का वक़्त गुज़र गया। मैं ने कहा : ह़सन बिन हानी हैं ? फ़रमाया : हां। मैं ने पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : मैं अपने उन अश्आ़र के सबब बख़्श दिया गया जो मेरे तक्ये के नीचे रखे हैं। चुनान्चे, मैं उन के घर गया और तक्या उठाया तो वहां एक काग़ज़ रखा था जिस पर लिखा था :

يَا رَبِّ اِنْ عَظُمَتْ ذُنُوْبِیْ كَثْرَةً   فَلَقَدْ عَلِمْتُ بِاَنَّ عَفْوَكَ اَعْظَم
اِنْ كَانَ لَا يَرْجُوْكَ اِلَّا مُحْسِنٌ   فَبِمَنْ يَلُوْذُ وَيَسْتَجِيْرُ الْمُجْرِم
اَدْعُوْكَ رَبِّ كَمَا اَمَرْتَ تَضَرُّعًا   فَاِذَا رَدَدْتَّ يَدَیَّ فَمَنْ ذَا يَرْحَم
مَا لِیْ اِلَيْكَ وَسِيْلَةٌ اِلَّا الرَّجَا   وَجَمِيْلُ عَفْوِكَ ثُمَّ اِنِّیْ مُسْلِم

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! अगर्चे मेरे गुनाह बहुत ज़ियादा हैं मगर मुझे यक़ीन है तेरी मुआ़फ़ी इस से भी बड़ी है, अगर तू सिर्फ़ नेकों की उम्मीद गाह है तो मुजरिम किस की पनाह लें ? ऐ मेरे रब ! तेरे हुक्म के मुताबिक़ गिड़ गिड़ाते हुवे मैं तुझ से दुआ़ गो हूं अगर तू ने मेरे दस्ते सुवाल को रद कर दिया तो कौन रह़्म करेगा ? मेरे पास तुझ तक पहुंचने का वसीला सिर्फ़ उम्मीद और तेरा अ़फ़्वो करम ही है फिर येह कि मैं मुसलमान भी हूं।(2)

शाइर अबू नुवास को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : जो अश्आ़र मैं ने नरगिस के फूल के बारे में कहे थे उन के सबब मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी और वोह येह हैं :

1...تاریخ ابن عساکر، ۳۶۵/۱۳، رقم: ۱۴۷۶: الحسن بن ھانی ءبن صباح، دون ذکر: قل ھو اللہ احد

2...تاریخ ابن عساکر، ۳۶۵/۱۳، رقم: ۱۴۷۶: الحسن بن ھانی ءبن صباح

تَأَمَّلْ فِیْ نَبَاتِ الْاَرْضِ وَانْظُرْ   اِلٰی اٰثَارِ مَا صَنَعَ الْمَلِیْك
عُیُوْنٌ مِّنْ لُجَیْنٍ شَاخِصَاتٌ   بِاَحْدَاقٍ کَمَا الذَّھَبُ السَّبِیْك
عَلٰی قَضْبِ الزَّبَرْجَدِ شَاھِدَاتٌ   بِاَنَّ اللہَ لَیْسَ لَہٗ شَرِیْك
وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدٌ رَّسُوْلٌ   اِلَی الثَّقَلَیْنِ اَرْسَلَہُ الْمَلِیْك

तर्जमा : ज़मीनी पैदावार में ग़ौर कर और मालिके ह़क़ीक़ी की कारीगरी के मनाज़िर देख कि चांदी की सी आंखें (नरगिस के फूल) अपनी सोने की सी पुतलियां गाड़े ज़बरजद की शाख़ों पर गवाही दे रही हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कोई शरीक नहीं और ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं जिन्हें बादशाहे ह़क़ीक़ी ने जिन्नो इन्स की त़रफ़ मबऊ़स फ़रमाया है।(1)

चौथे आस्मान पर दर्से ह़दीस

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मरवज़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं : मैं ने ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना या'क़ूब बिन सुफ़्यान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان को ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : मुझे बख़्श दिया और हुक्म फ़रमाया कि जिस त़रह़ मैं ज़मीन में अह़ादीसे मुबारका बयान करता था उसी त़रह़ आस्मान में भी करूं। चुनान्चे, मैं ने चौथे आस्मान पर अह़ादीसे त़य्यिबा बयान करना शुरूअ़ कीं तो मेरे इर्द गिर्द फ़िरिश्ते जम्अ़ हो गए और ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझे अह़ादीसे करीमा इम्ला करवाने का हुक्म दिया तो फ़िरिश्तों ने सोने के क़लमों से उन्हें लिखा।(2)

वली का जनाज़ा पढ़ने वालों की बख़्शिश

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैद बिन ह़रबुवया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़त़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی के जनाज़े में शरीक हुवा, जब रात हुई तो उस ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उन्हों ने कहा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी और मेरा जनाज़ा पढ़ने वालों की मग़फ़िरत फ़रमा दी है। उस

---

1 ...تاریخ ابن عساکر، ۳۶۵/۱۳، رقم: ۱۳۷۶: الحسن بن ھانیء بن صباح

2 ...تاریخ ابن عساکر، ۱۶۵/۷۴، رقم: ۱۰۱۲۸: یعقوب بن سفیان بن ابی معاویۃ الفارسی

ने कहा : मैं भी आप के जनाज़े में शरीक होने और आप का जनाज़ा पढ़ने वालों में से हूं। आप رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक फ़ेहरिस्त निकाली तो उस में उस का नाम मुलाहज़ा न फ़रमाया तो उस ने कहा : ऐसा क्यूं ? हालांकि मैं ने जनाज़े में शिर्कत की है। फिर आप ने फ़ेहरिस्त दोबारा देखी तो एक कोने में उस का नाम भी लिखा हुवा था।(1)

जन्नत में एक घर

हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम साबित बिन अहमद बिन हुसैन बग़दादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम सा'द बिन मुहम्मद जुन्जानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی को ख़्वाब में देखा तो वोह बार बार मुझ से फ़रमा रहे थे : ऐ अबुल क़ासिम ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुहद्दिसीन की हर मजलिस के बदले जन्नत में एक घर बनाता है।(2)

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुस्लिम बिन वारह رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुरआ رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा : क्या हाल है ? उन्हों ने कहा : हर हाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है। मुझे बारगाहे इलाही में पेश किया गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़बैदुल्लाह ! तू ने मेरे बन्दों से दुरुश्त कलामी क्यूं की ? मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे रब ! उन्हों ने तेरे दीन की बे हुरमती का क़स्द कर लिया था। इरशाद फ़रमाया : तू ने सच कहा। फिर ताहिर ख़ुल्क़ानी को पेश किया गया, मैं ने उस पर बारगाहे रबूबिय्यत में दा'वा किया तो उस को 100 कोड़े मारे गए फिर क़ैदख़ाने में भेज दिया गया फिर हुक्म हुवा : उ़बैदुल्लाह को उस के साथियों समेत अबू अ़ब्दुल्लाह, अबू अ़ब्दुल्लाह, अबू अ़ब्दुल्लाह सुफ़्यान सौरी, मालिक बिन अनस और अहमद बिन हम्बल के साथ मिला दो।(3)

दुरूदे पाक की बरकत

हज़रते सय्यिदुना हफ़्स बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अबू

---

(1)...تاریخ ابن عساکر، ۲۰/۱۹۸، رقم: ۲۴۰۶: السری بن المغلس ابو الحسن السقطی

(2)...تاریخ ابن عساکر، ۲۰/۲۷۵، رقم: ۲۴۲۲: سعد بن علی بن محمد ابو القسم الزنجانی

(3)...تاریخ بغداد، ۱۰/۳۳۴، رقم: ۵۴۶۹: عبید اللہ بن عبد الکریم

سیر اعلام النبلاء، ۱۰/۴۸۲، رقم: ۲۲۶۶: ابو زرعۃ الرازی عبید اللہ بن عبد الکریم

जुरआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की वफ़ात के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो वोह आस्मान में फ़िरिश्तों के साथ नमाज़ पढ़ रहे थे, मैं ने कहा : इस मक़ाम तक रसाई कैसे हुई ? फ़रमाया : मैं ने अपने हाथ से एक लाख अहादीसे मुबारका लिखी हैं और मैं ने उन सब में दुरूदे पाक पढ़ा है और हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ صَلَاۃً صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ بِھَا عَشْرًا या'नी जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के बदले उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है ।[1]

फ़िरिश्तों के साथ नमाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन मख़्लद त़रसूसी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुरआ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के विसाल के बा'द मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो वोह सफ़ेद लिबास में मल्बूस दीगर लोगों के साथ आस्माने दुन्या में नमाज़ पढ़ रहे थे और उन पर सफ़ेद लिबास था और सब लोग नमाज़ में हाथ उठा रहे थे ।[2] मैं ने पूछा : ऐ अबू ज़ुरआ़ ! येह कौन लोग हैं ?

---

❶... تاریخ بغداد، ۱۰/۳۳۴، رقم: ۵۴۶۹: عبید اللہ بن عبد الکریم

تاریخ ابن عساکر، ۳۸/۳۸تا۳۹، رقم: ۴۴۶۴: عبید اللہ بن عبد الکریم

مسلم، کتاب الصلاۃ، باب استحباب القول... الخ، ص ۲۰۳، حدیث: ۳۸۴

❷.....चूंकि येह ख़्वाब का वाक़िआ़ है लिहाज़ा इस में दो एह़तिमाल हो सकते हैं : तक्बीरे तह़रीमा के लिये हाथ उठाना मुराद है या फिर रफ़्ए़ यदैन मुराद है । रफ़्ए़ यदैन के बारे में अह़नाफ़ का मौक़िफ़ येह है कि नमाज़ में तक्बीरे तह़रीमा और तक्बीरे क़ुनूत के सिवा कहीं भी रफ़्ए़ यदैन जाइज़ नहीं । चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی मिरआतुल मनाजीह़, जिल्द 2, सफ़ह़ा 16 पर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी इस ह़दीसे पाक कि "नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब नमाज़ शुरूअ़ करते तो अपने दोनों हाथ कंधों के मुक़ाबिल उठाते और जब रुकूअ़ की तक्बीर कहते और जब रुकूअ़ से सर उठाते तो भी यूंही हाथ उठाते और कहते سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ رَبَّنَا لَکَ الْحَمْد और सजदे में येह न करते" के तह़त फ़रमाते हैं : "(कंधों के मुक़ाबिल हाथ उठाने से मुराद येह है) कि गट्टे कंधों तक रहते और अंगूठे कानों तक । (नीज़) इस ह़दीस से येह तो मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने रुकूअ़ में जाते आते रफ़्ए़ यदैन किया मगर येह ज़िक्र नहीं किया कि आख़िर वक़्त तक किया । ह़क़ येह है कि रफ़्ए़ यदैन मन्सूख़ है । चुनान्चे, ऐ़नी शर्हे बुख़ारी में है कि सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने एक शख़्स को रुकूअ़ में जाते आते रफ़्ए़ यदैन करते देखा तो फ़रमाया ऐसा न किया करो येह वोह काम है जिसे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अव्वलन किया था फिर छोड़ दिया नीज़ सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द, उ़मर इब्ने ख़त़्त़ाब, अ़ली मुर्तज़ा, बरा बिन आ़ज़िब, ह़ज़रते अ़ल्क़मा वग़ैरा बहुत सह़ाबा से कि वोह रफ़्ए़ यदैन न करते थे और करने वालों को मन्अ़ करते थे नीज़ इब्ने अबी शैबा और त़ह़ावी ने ह़ज़रते मुजाहिद (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی) से रिवायत की, कि मैं ने ह़ज़रते इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا).....

फ़रमाया : फ़िरिश्ते हैं। मैं ने पूछा : आप इस मर्तबे तक कैसे पहुंचे ? फ़रमाया : नमाज़ में हाथ उठाने की बरकत से। मैं ने कहा : फ़िरक़ए जहमिय्या के लोगों ने हमारे "रै" के साथियों को तक्लीफ़ में मुब्तला कर रखा है। फ़रमाया : ख़ामोश रहो क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل ने इन पर ऊपर से पानी बन्द कर रखा है।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू अब्बास मुरादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى बयान करते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुरआ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को ख़्वाब में देखा तो पूछा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआमला फ़रमाया ? कहा : मैं बारगाहे ख़ुदावन्दी में हाज़िर हुवा तो मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़ुरआ ! एक छोटा बच्चा भी आता है तो मैं उसे दाख़िले जन्नत करता हूं तो फिर उस शख़्स का क्या हाल होगा जिस ने मेरे बन्दों पर सुन्नतों को जारी किया जाओ जन्नत में जहां चाहो अपना ठिकाना बना लो।(2)

नसीहत आमोज़ अश्आर

हज़रते सय्यिदुना सदक़ा बिन यज़ीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बयान करते हैं कि त़राबुलुस या अन्त़ाबुलुस के किनारे एक टीले पर मैं ने तीन क़ब्रें देखीं तो उन में से एक पर लिखा हुवा था :

..........के पीछे नमाज़ पढ़ी आप ने सिवा तक्बीरे ऊला के किसी वक़्त हाथ न उठाए मा'लूम हुवा कि सय्यिदुना इब्ने उ़मर (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के नज़्दीक भी रफ़्ए़ यदैन मन्सूख़ है नीज़ रिसाला आफ़्ताबे मुहम्मदी में है कि हज़रते इब्ने उ़मर की ह़दीस चन्द रिवायतों से मन्क़ूल है जिस में से एक रिवायत में यूनुस है जो सख़्त ज़ईफ़ है दूसरी असनाद में अबू क़िलाबा है जो ख़ारिजियुल मज़हब था (देखो तहज़ीब) तीसरी असनाद में उ़बैदुल्लाह है। येह पक्का राफ़िज़ी था, चौथी असनाद में शुऐ़ब बिन इस्ह़ाक़ है जो मुरजिय्या मज़हब का था ग़रज़ कि रफ़्ए़ यदैन की अह़ादीस की अक्सर असनादों में बद मज़हब ख़ुसूसन रवाफ़िज़ बहुत शामिल हैं क्यूंकि येह उन का अ़मल है हो सकता है कि रवाफ़िज़ के तक़िय्ये की वज्ह से इमाम बुख़ारी को भी पता न लगा हो। लिहाज़ा मज़हबे ह़नफ़ी निहायत ही क़वी है कि नमाज़ों में सिवा तक्बीरे तह़रीमा के और कहीं रफ़्ए़ यदैन न किया जाए।

नोट : रफ़्ए़ यदैन के मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى की माया नाज़ तस्नीफ़ "**जाअल ह़क़ बाब नम्बर 6, रफ़्ए़ यदैन न किया करो**" का मुत़ालआ़ मुफ़ीद रहेगा।

1...تاریخ ابن عساکر، ۳۸/۳۷، رقم: ۴۴۶۴: عبید اللہ بن عبد الکریم

2...تاریخ بغداد، ۱۰/۳۳۵، رقم: ۵۴۶۹: عبید اللہ بن عبد الکریم

وَكَيفَ يَلَذُّ الْعَيْشَ مَنْ هُوَ مُوْقِنٌ ۔۔۔ بِاَنَّ الْمَنَايَا بَغْتَةً سَتُعَاجِلُهْ
وَتَسْلُبُهُ مُلْكًا عَظِيْمًا وَنَخْوَةً ۔۔۔ وَتُسْكِنُهُ الْبَيْتَ الَّذِىْ هُوَ اَهْلُهْ

तर्जमा : वोह शख़्स ज़िन्दगी की लज़्ज़त कैसे पा सकता है जिसे यक़ीन हो कि अ़न क़रीब मौत अचानक आ दबोचेगी, उस से उस की अ़ज़ीम सल्त़नत वग़ैरा सब छीन लेगी और उसे उस घर का मकीन बना देगी जिस का वोह अह्ल है।

दूसरी पर लिखा था :

وَكَيفَ يَلَذُّ الْعَيْشَ مَنْ هُوَ عَالِمٌ ۔۔۔ بِاَنَّ اِلٰهَ الْخَلْقِ لَابُدَّ سَائِلُهْ
فَيَأْخُذُ مِنْهُ ظُلْمَهُ لِعِبَادِهٖ ۔۔۔ وَيَجْزِيْهِ بِالْخَيْرِ الَّذِىْ هُوَ فَاعِلُهْ

तर्जमा : वोह शख़्स ज़िन्दगी से कैसे लुत़्फ़ उठा सकता है जो जानता है कि मख़्लूक़ का मा'बूद ज़रूर उस से बाज़पुर्स फ़रमाएगा पस वोह उस से अपने बन्दों का ह़क़ लेगा और उसे उस की हर नेकी का पूरा पूरा बदला देगा जो उस ने की।

और तीसरी पर येह तह़रीर था :

وَكَيفَ يَلَذُّ الْعَيْشَ مَنْ هُوَ صَائِرٌ ۔۔۔ اِلٰى جَدَثٍ تُبْلَى الشَّبَابَ مَنَازِلُهْ
وَيَذْهَبُ حُسْنُ الْوَجْهِ مِنْ بَعْدِ ضَوْئِهٖ ۔۔۔ سَرِيْعًا وَّيُبْلٰى جِسْمُهٗ وَمَفَاصِلُهْ

तर्जमा : वोह शख़्स ज़िन्दगी के मज़े कैसे ले सकता है जो उस क़ब्र की त़रफ़ सफ़र करने वाला हो जिस की मन्ज़िलें जवानी को मलया मेट कर देंगी और आबो ताब के बा'द चेहरे का हुस्न जल्द ही मांद पड़ जाएगा और उस का जिस्म और हर जोड़ बोसीदा हो जाएगा।

बादशाह का मुसाहिब, मालदार ताजिर और गोशा नशीन

मैं वहीं क़रीबी एक बस्ती में गया और एक बूढ़े से कहा : मैं ने बड़ी अ़जीब बात देखी है। उस ने पूछा : क्या ? मैं ने कहा : मैं ने ऐसी क़ब्रें देखी हैं। उस ने कहा : उन क़ब्र वालों का वाक़िआ़ इस से ज़ियादा अ़जीब है। मैं ने कहा : उन के बारे में कुछ बताइये। उस ने कहा : येह तीन भाई थे, एक बादशाह का मुसाहिब था जो लश्करों और शहरों पर बत़ौरे अमीर मुक़र्रर किया जाता था। दूसरा मालदार व माहिर ताजिर था जब कि तीसरे भाई ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत के लिये गोशा नशीनी इख़्तियार कर रखी थी, जब उस का वक़्ते वफ़ात आया तो उस का भाई जिसे बादशाह अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने शहर का ह़ाकिम मुक़र्रर कर रखा था वोह आ गया और ताजिर भी पहुंच गया, दोनों ने क़रीबुल मर्ग भाई से पूछा : तुम कोई वसिय्यत करना चाहोगे ?

उस ने कहा : ख़ुदा की क़सम ! न तो मेरे पास माल है और न ही मुझ पर किसी का क़र्ज़ है कि मुझे वसिय्यत करनी पड़े और न ही अपने पीछे कोई सामान छोड़े जा रहा हूं लेकिन मैं तुम से एक वा'दा लेना चाहता हूं तुम इस की ख़िलाफ़ वर्ज़ी न करना, जब मैं मर जाऊं तो मुझे किसी बुलन्द जगह दफ़्न कर देना और मेरी क़ब्र पर येह दो शे'र लिख देना।

وَكَيْفَ يَلَذُّ الْعَيْشَ مَنْ هُوَ عَالِمٌ بِاَنَّ اِلٰهَ الْخَلْقِ لَابُدَّ سَائِلُهٗ

فَيَأْخُذُ مِنْهُ ظُلْمَهٗ لِعِبَادِهٖ وَيَجْزِيْهِ بِالْخَيْرِ الَّذِىْ هُوَ فَاعِلُهٗ

तर्जमा : वोह शख़्स ज़िन्दगी से कैसे लुत्फ़ उठा सकता है जो जानता है कि मख़्लूक़ का मा'बूद ज़रूर उस से बाज़पुर्स फ़रमाएगा पस वोह उस से अपने बन्दों का हक़ लेगा और उसे उस की हर नेकी का पूरा पूरा बदला देगा जो उस ने की।

फिर तीन दिन तक मेरी क़ब्र पर आते रहना शायद तुम्हें नसीहत हो। चुनान्चे, दोनों ने ऐसा ही किया, तीसरे दिन वोह हाकिम भाई क़ब्र पर आया और जब वापस होने लगा तो उसे क़ब्र से किसी भारी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनाई दी जिस से वोह घबरा गया और हांपता कांपता वापस घर आ गया। जब रात हुई तो उस ने अपने भाई को ख़्वाब में देखा तो पूछा : भाई ! मैं ने तुम्हारी क़ब्र से जो आवाज़ सुनी थी वोह क्या थी ? उस ने कहा : येह लोहे का गुर्ज़ लगाए जाने की आवाज़ थी, मुझ से कहा गया कि एक दिन तू ने एक मज़्लूम को देखा मगर उस की मदद नहीं की। वोह शख़्स जब सुब्ह को जागा तो उस ने अपने ताजिर भाई और दूसरे ख़ास लोगों को बुला कर कहा : मैं तुम्हें गवाह बनाता हूं कि आइन्दा मैं तुम्हारे दरमियान नहीं रहूंगा। चुनान्चे, वोह इमारत व हुक्मरानी छोड़ कर इबादत में मश्ग़ूल हो गया, अब वोह कभी सहराओं में कभी पहाड़ों में और कभी जंगलों में रहने लगा। फिर जब उस की वफ़ात का वक़्त आया तो उस का ताजिर भाई उस के पास आया और कहा : क्या तुम कोई वसिय्यत करना चाहते हो ? उस ने कहा : न मेरे पास माल है न मुझ पर क़र्ज़ है लेकिन मुझ से वा'दा करो कि जब मैं मर जाऊं तो भाई की क़ब्र के साथ मेरी क़ब्र बनाना और उस पर येह दो अश्आर लिख देना :

وَكَيْفَ يَلَذُّ الْعَيْشَ مَنْ هُوَ مُوْقِنٌ بِاَنَّ الْمَنَايَا بَغْتَةً سَتُعَاجِلُهٗ

وَتَسْلُبُهٗ مُلْكًا عَظِيْمًا وَنَخْوَةً وَتُسْكِنُهُ الْبَيْتَ الَّذِىْ هُوَ اَهْلُهٗ

तर्जमा : वोह शख़्स ज़िन्दगी की लज़्ज़त कैसे पा सकता है जिसे यक़ीन हो कि अ़न क़रीब मौत अचानक आ दबोचेगी, उस से उस की अ़ज़ीम सल्तनत वग़ैरा सब छीन लेगी और उसे उस घर का मकीन बना देगी जिस का वोह अह्ल है।

और तीन दिन तक मेरी क़ब्र पर आते रहना। जब उस का इन्तिक़ाल हुवा तो उस के भाई ने ह़स्बे वा'दा वैसा ही किया जब तीसरे दिन क़ब्र पर आ कर वापस जाने लगा तो क़ब्र से ऐसी दहशत नाक आवाज़ सुनी जिस ने उस के होश उड़ा दिये और वोह घबराया हुवा वापस चला गया। जब रात हुई तो उस ने अपने भाई को ख़्वाब में देखा तो पूछा : तुम कैसे हो ? उस ने कहा : बिल्कुल ख़ैरिय्यत से हूं और तौबा हर ख़ैर की जामेअ़ है। पूछा : पहले भाई कैसे हैं ? कहा : वोह तो नेक पेशवाओं के साथ है। उस ने पूछा : हमें क्या नसीह़त करते हो ? उस ने कहा : जिस ने जो कुछ आगे भेजा उसे पा लिया लिहाज़ा तुम भी मोह़ताजी से पहले मालदारी को ग़नीमत जानो। सुब्ह़ जब येह तीसरा भाई उठा तो अपना तमाम मालो अस्बाब तक़्सीम कर दिया और दुन्या से किनारा कश हो कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत में लग गया और उस का बेटा कारोबार करने लगा ह़त्ता कि जब उस की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो बेटे ने कहा : अब्बू जान ! आप कोई वसिय्यत करेंगे ? उस ने कहा : बेटा ! मेरे पास माल तो है नहीं कि मैं उस की वसिय्यत करूं अलबत्ता मुझ से वा'दा करो कि जब मैं मर जाऊं तो मुझे अपने चचाओं के साथ दफ़्नाना और मेरी क़ब्र पर येह अश्आ़र लिख देना :

وَكَيْفَ يَلَذُّ الْعَيْشَ مَنْ هُوَ صَائِرٌ   اِلٰى جَدَثٍ تُبْلَى الشَّبَابَ مَنَازِلُهُ

وَيَذْهَبُ حُسْنُ الْوَجْهِ مِنْ بَعْدِ ضَوْئِهِ   سَرِيْعًا وَيُبْلٰى جِسْمُهُ وَمَفَاصِلُهُ

तर्जमा : वोह शख़्स ज़िन्दगी के मज़े कैसे ले सकता है जो उस क़ब्र की त़रफ़ सफ़र करने वाला हो जिस की मन्ज़िलें जवानी को मलया मेट कर देंगी और आबो ताब के बा'द चेहरे का ह़ुस्न जल्द ही मांद पड़ जाएगा और उस का जिस्म और हर जोड़ बोसीदा हो जाएगा।

और तीन दिन तक मेरी क़ब्र पर आते रहना। चुनान्चे, बेटे ने वैसा ही किया और तीसरे दिन क़ब्र से एक आवाज़ सुनी जिस ने उसे ख़ौफ़ज़दा कर दिया, वोह ग़म में डूबा हुवा वापस हो लिया। जब रात हुई तो उस ने अपने वालिद को ख़्वाब में देखा तो उन्हों ने कहा : बेटा तुम जल्द ही हमारे पास आने वाले हो और मुआ़मला मुश्किल है लिहाज़ा अपने लम्बे सफ़र पर रवाना होने की तय्यारी कर लो और उस कूच कर जाने वाले घर से अपना ज़ादे राह उस घर की त़रफ़ मुन्तक़िल कर दो जहां तुम ने रहना है, सूरमाओं की त़रह़ उम्मीदें बांध कर धोके में मत पड़ना कि उन्हों ने अपनी आख़िरत के मुआ़मले में कोताही की फिर मौत के वक़्त शर्मिन्दा हुवे और उ़म्र ज़ाएअ़ करने पर अफ़्सोस करने लगे, पस मौत के वक़्त की नदामत उन्हें फ़ाएदा न देगी और न ही कोताही पर अफ़्सोस करना उन्हें बचाएगा, ऐ मेरे बेटे ! जल्दी कर, जल्दी कर, जल्दी कर !

बूढ़े शख़्स ने मज़ीद बताया कि जिस रात बेटे ने येह ख़्वाब देखा था उस की सुब्ह़ मैं उस के पास गया तो उस ने कहा : मेरे वालिद ने मुझे जो कुछ कहा है मेरे साथ ऐसा मुआ़मला कभी नहीं हुवा उस ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया है, मैं समझता हूं मेरी ज़िन्दगी तीन महीने या तीन दिन ही रह गई है क्यूंकि वालिद साहि़ब ने तीन मरतबा जल्दी करने का कह कर मुझे डराया है। जब तीसरा दिन हुवा तो उस ने अपने अह्लो इ़याल को बुला कर अल विदाअ़ कहा और फिर क़िब्ला रुख़ हो कर कलिमए शहादत पढ़ा और रात में ही इन्तिक़ाल कर गया।(1)

बाब नम्बर 46

ज़िन्दों की बातों से मय्यित को तक्लीफ़ पहुंचने और उसे बुरा कहने की मुमानअ़त का बयान

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रिवायत करती हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الْمَيِّتَ يُؤْذِيهِ فِي قَبْرِهِ مَا يُؤْذِيهِ فِي بَيْتِهِ या'नी जो चीज़ मय्यित को घर में तक्लीफ़ देती है वोह उसे क़ब्र में भी तक्लीफ़ देती है।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : मुमकिन है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कोई लत़ीफ़ शै जैसे फ़िरिश्ता या कोई अ़लामत या दलील या फिर अपनी मशिय्यत के मुत़ाबिक़ कुछ और पैदा फ़रमा देता हो जिस के ज़रीए़ ज़िन्दों की जानिब से मय्यित तक तक्लीफ़ देह अफ़्आ़ल व अक़्वाल पहुंचते हों पस यहां मुर्दों के बारे में बुरी बात कहने पर सख़्ती फ़रमाई गई है।(3) मज़ीद फ़रमाते हैं : इस रिवायत से मुराद फ़िरिश्ते का मुर्दे को तक्लीफ़ देना भी हो सकता है कि वोह उसे गुनाहों से पाको साफ़ करने के लिये धमकाता और सख़्ती करता है।

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुर्दों को बुरा मत कहो क्यूंकि जो उन्हों ने आगे भेजा था वोह उस तक पहुंच गए हैं।(4)

1...تاریخ ابن عساکر، ۲۴/۴۳تا۴۵، رقم: ۲۶۷۳: صدقۃ بن یزید

2...فردوس الاخبار، ۱/۱۲۰، حدیث: ۷۴۹، دون ذکر الراوی

3...التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی تلاقی الارواح...الخ، ص۵۹

4...بخاری، کتاب الجنائز، باب ماینھی من سب الاموات، ۱/۴۷۰، حدیث: ۱۳۹۳

हज़रते सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते शैबा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا बयान करती हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने एक फ़ौतशुदा शख़्स का बुराई के साथ तज़्किरा हुवा तो इरशाद फ़रमाया : अपने मुर्दों का ज़िक्र भलाई के साथ ही किया करो ।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اُذْكُرُوْا مَحَاسِنَ مَوْتَاكُمْ وَكُفُّوْا عَنْ مَسَاوِيْهِمْ या'नी अपने मुर्दों की ख़ूबियां बयान करो और उन की बुराइयों से बाज़ रहो ।(2)

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا बयान करती हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : अपने मुर्दों का तज़्किरा भलाई से ही किया करो(3) कि अगर वोह जन्नती हुवे तो तुम गुनहगार होगे और अगर दोज़ख़ी हुवे तो उन्हें वोही काफ़ी है जिस में वोह मुब्तला हैं ।

बाब नम्बर 47 मय्यित को नौहा से पहुंचने वाली तक्लीफ़ का बयान

उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से कहा गया कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से येह रिवायत करते हैं कि "मय्यित को ज़िन्दा के आहो बुका की वज्ह से अ़ज़ाब दिया जाता है ।" तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने फ़रमाया : अबू अ़ब्दुर्रह़मान से भूल हो गई है आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने यूं फ़रमाया था : मय्यित के घरवाले उस पर रो रहे होते हैं जब कि उसे अपने गुनाह के सबब अ़ज़ाब दिया जा रहा होता है ।(4)

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन माहक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا हज़रते सय्यिदुना राफ़ेअ़ बिन ख़ुदैज رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के जनाज़े

---

1 ...نسائی، کتاب الجنائز، النهی عن ذکر الهلکی الا بخیر، ص۳۲۸، حدیث: ۱۹۳۲، عن عائشة

2 ...ترمذی، کتاب الجنائز، باب رقم: ۳۴، ۲/۳۱۲، حدیث: ۱۰۲۱

3 ...موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت و آداب اللسان، باب ذم المداحین، ۷/۳۶۷، حدیث: ۷۱۴

4 ...مسلم، کتاب الجنائز، باب المیت یعذب ببکاء اهله، ص۴۶۴، حدیث: ۹۳۲
مسند امام احمد، مسند السیدة عائشة، ۹/۳۲۰، حدیث: ۲۴۳۵۲

में तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया : ज़िन्दा शख़्स के मय्यित पर रोने की वज्ह से मय्यित को अ़ज़ाब दिया जाता है।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : ज़िन्दा के रोने की वज्ह से मय्यित को अ़ज़ाब नहीं दिया जाता।[1]

ज़िन्दा के आहो बुका के सबब मय्यित को अ़ज़ाब दिये जाने की एक रिवायत अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से भी है कि "ज़िन्दा के रोने की वज्ह से मय्यित पर इन्तिहाई खोलता हुवा पानी डाला जाता है।"[2]

अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मय्यित पर होने वाले नौह़ा की वज्ह से उसे क़ब्र में अ़ज़ाब दिया जाता है।[3]

नौह़ा के सबब अ़ज़ाब के बारे में अक़्वाल

इस मस्अले में उ़लमाए किराम के चन्द मौक़िफ़ हैं :

पहला मौक़िफ़ : येह रिवायत मुत़लक़न अपने ज़ाहिर पर है, येह अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्त़ाब और आप के बेटे हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का मौक़िफ़ है।

दूसरा मौक़िफ़ : येह मुत़लक़ नहीं है।

तीसरा मौक़िफ़ : ह़दीस में वारिद लफ़्ज़ "بِبُكَاءِ" में "بِ" ह़ाल बयान करने के लिये है या'नी मय्यित को अ़ज़ाब हो रहा होता है इस ह़ाल में कि लोग उस पर रो रहे होते हैं और अ़ज़ाब उसे अपने किसी गुनाह की वज्ह से होता है न कि लोगों के रोने की वज्ह से।

चौथा मौक़िफ़ : येह अ़ज़ाब काफ़िर के साथ ख़ास है और इस बारे में दोनों अक़्वाल उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मरवी हैं।

पांचवां मौक़िफ़ : नौह़ा के सबब अ़ज़ाब होना उस के साथ ख़ास है जो ख़ुद नौह़ा करता हो। इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का भी येही मज़हब है।

छटा मौक़िफ़ : येह अ़ज़ाब उसे होता है जो नौह़ा करने की वसिय्यत कर गया हो जैसा कि शाइर ने कहा :

---

1 ...شرح صحیح البخاری لابن بطال، کتاب الجنائز، باب قول الرسول: یعذب المیت ببکاء اھلہ، ۲۷۴/۳

2 ...مسند ابی یعلی، مسند ابی بکر الصدیق، ۳۹/۱، حدیث: ۴۳

3 ...نسائی، کتاب الجنائز، النیاحۃ علی المیت، ص۳۱۶، حدیث: ۱۸۵۰، مسند طیالسی، ص۴، حدیث: ۱۵

إِذَا مِتُّ فَانْعِيْنِى بِمَا اَنَا اَهْلُهُ وَشُقِّى عَلَىَّ الْجَيْبَ يَا بْنَةَ مَعْبَد

तर्जमा : ऐ मा'बद की लड़की ! जब मैं मर जाऊं तो मुझ पर मेरे शायाने शान रोना और अपना गिरेबान चाक कर देना ।

सातवां मौक़िफ़ : उस मय्यित को अ़ज़ाब होगा जिस ने इस से मन्अ़ करने की वसिय्यत न की हो क्यूंकि जब उसे मा'लूम हो कि उस के ख़ानदान में येह राइज है तो उस पर मन्अ़ करने की वसिय्यत करना वाजिब था ।

आठवां मौक़िफ़ : मय्यित को अ़ज़ाब उन सिफ़ात को बयान कर के रोने की वज्ह से होता है जो शरीअ़त को ना पसन्द हों जैसा कि दौरे जाहिलिय्यत में लोग कहते थे : ऐ बीवी को बेवा करने वाले ! ऐ बच्चों को यतीम करने वाले ! ऐ घर को वीरान करने वाले ।

नवां मौक़िफ़ : इस से मुराद है फ़िरिश्तों का मय्यित को उस वक़्त झिड़कना जब घरवाले उस की ख़ूबियां बयान कर के रोते हैं क्यूंकि मरफ़ूअ़ हदीसे पाक है कि "जब कोई मरने वाला मरता है और उस पर रोने वाला खड़ा हो कर कहता है : ऐ मेरे पहाड़ ! ऐ मेरे सरदार ! या इसी क़िस्म के दूसरे अल्फ़ाज़ कहता है तो उस पर दो फ़िरिश्ते मुक़र्रर किये जाते हैं जो उस के सीने पर मुक्के मारते हुवे कहते हैं : क्या तू ऐसा था ?[1]

क्या तुम ऐसे थे ?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान करते हैं कि हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ पर ग़शी त़ारी हुई तो औ़रतों ने नौहा करना शुरूअ़ कर दिया, जब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم वहां तशरीफ़ लाए तो वोह होश में आ चुके थे, अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं बेहोश हुवा तो औ़रतों ने चिल्लाना शुरूअ़ कर दिया कि हाए हमारे प्यारे ! हाए हमारे पहाड़ ! मैं ने देखा उस वक़्त एक फ़िरिश्ता खड़ा हो गया उस के पास एक हथोड़ा भी था जिसे उस ने मेरे पैरों के दरमियान रख कर पूछा : क्या तुम ऐसे ही थे ? मैं ने कहा : नहीं । पस अगर मैं "हां" कहता तो वोह मुझे हथोड़े से मारता ।[2]

---

1 ... ترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی کراھیة البکاء علی المیت، ۲/۳۰۵، حدیث: ۱۰۰۵

2 ... بخاری، کتاب المغازی، باب غزوۃ مؤتة من ارض الشام، ۳/۹۷، حدیث: ۴۲۶۷
معجم کبیر، ۱۳/۲۱۴، حدیث: ۱۴۲۵۲، عن عبد اللہ بن عمرو

हज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन रवाह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहोश हुवे तो उन की हमशीरा अ़मरह रो रो कर "हाए मेरे भाई ! ऐ ऐसे ! वैसे ! वग़ैरा" कहने लगीं । जब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को होश आया तो फ़रमाया : तुम्हारी हर बात पर मुझ से पूछा गया कि क्या तुम ऐसे हो ?(1)

हज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बेहोश हुवे तो उन की हमशीरा कहने लगीं : हाए हमारे पहाड़ ! जब उन को होश आया तो फ़रमाया : आज तुम मुझे तक्लीफ़ देती रही हो । हमशीरा ने अ़र्ज़ की : आप को तक्लीफ़ देना मुझे हरगिज़ गवारा नहीं । फ़रमाया : जब जब तुम कहती थीं : हाए फ़ुलां ! तो एक फ़िरिश्ता सख़्ती के साथ झिड़क कर मुझ से पूछता था : क्या तुम ऐसे हो ? तो मैं कहता : नहीं ।(2)

हज़रते सय्यिदुना मिक़्दाम बिन मा'दी करिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ज़ख़्मी किया गया तो आप की साहिब ज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप के पास आईं और कहने लगीं : ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथी ! ऐ रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सुसर ! ऐ मुसलमानों के अमीर ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मैं तुम्हें अपने ह़क़ का वासित़ा देता हूं अब कभी मेरे मह़ासिन बयान कर के मुझ पर मत रोना क्यूंकि मय्यित में न पाए जाने वाली ख़ूबियां बयान कर के उस पर रोया जाए तो फ़िरिश्ते उस मय्यित पर सख़्त नाराज़ होते हैं ।(3)

दसवां मौक़िफ़ : इस से मुराद येह है कि मय्यित को उस के घरवालों के रोने से तक्लीफ़ होती है क्यूंकि ह़दीसे पाक है कि "हज़रते सय्यिदतुना क़ैला बिन्ते मख़रमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने अपने फ़ौतशुदा बेटे का तज़्किरा किया और रोने लगीं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम में से किसी से येह नहीं हो सकता कि दुन्या में अपने जिस साथी से भलाई करता था उस के मरने पर اِنَّا لِلّٰہ ही कह ले, उस की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मुह़म्मद की जान है ! तुम में से कोई रोता है तो इस की वज्ह से उस का साथी भी आंसू बहाता है

1...مستدرک حاکم، کتاب المغازی، کراھیة النیاحة علی الموتی، ۵۸۲/۳، حدیث:۴۳۱۰

2...معجم کبیر، ۳۵/۲۰، حدیث:۵۰

3...طبقات ابن سعد، ۲۷۵/۳، رقم:۵۶: عمر بن الخطاب

तो ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! अपने मुर्दों को तक्लीफ़ मत दो ।"(1) येह ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जरीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر का मौक़िफ़ है और अइम्मा की एक जमाअ़त ने इस को इख़्तियार किया है ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रबीअ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَدِيْع बयान करते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के साथ एक जनाज़े में शरीक हुवा तो आप ने एक आदमी के चीख़ने की आवाज़ सुनी तो किसी को भेज कर उसे चुप करवा दिया । मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान ! आप ने उसे चुप क्यूं करवाया ? फ़रमाया : क़ब्र में दाख़िल होने तक इस की वज्ह से मय्यित को तक्लीफ़ होती है ।(2)

फ़ितने और अज़िय्यत का बाइ़स

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने एक जनाज़े में औ़रतों को देखा तो फ़रमाया : तुम सवाब के बजाए गुनाहों का बोझ लिये लौट जाओ,(3) तुम ज़िन्दों को फ़ितनों और मुर्दों को अज़िय्यत में डालती हो ।(4)

मय्यित के लिये सब से बुरे

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی से मन्क़ूल है कि मय्यित के लिये सब से बुरे लोग उस के वोह घरवाले हैं जो उस पर रोते हैं मगर उस का क़र्ज़ अदा नहीं करते ।(5)

• • • • • •

किसी का मोह़ताज न हो

يَاحَكَمُ जो पांचों वक़्त हर नमाज़ के बा'द 80 बार पढ़ लिया करे किसी का मोह़ताज न होगा । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ (मदनी पंज सूरह, स. 250)

---

1 ...معجم كبير، ۱۰/۲۵، حديث:۱

2 ...مسند امام احمد، مسند عبد الله بن عمر، ۴۹۸/۲، حديث:۲۲۰۳

3 ... ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ماجاء فی اتباع النساء الجنائز، ۲۵۵/۲، حديث:۱۵۷۸

4 ...مصنف عبد الرزاق، كتاب الجنائز، باب منع النساء اتباع الجنائز، ۲۹۱/۳، رقم: ۶۳۲۵

تاريخ بغداد، ۱۹۸/۶، رقم: ۳۲۵۸: ابراهيم بن هدية ابو هدبة الفارسی

5 ...شعب الايمان، باب فی بر الوالدين، ۲۰۴/۶، حديث:۷۹۰۹

बाब नम्बर 48 हर तक्लीफ़ देह बात से मय्यित को अज़िय्यत पहुंचने का बयान

क़ब्र पर चलने से ज़ियादा महबूब

हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : किसी मुसलमान की क़ब्र पर चलने से ज़ियादा मुझे येह पसन्द है कि मैं अंगारों या तलवार की धार पर चलूं यहां तक कि मेरे पैर ज़ख़्मी हो जाएं और मेरे लिये क़ब्रिस्तान में रफ़्ए़ हाजत करना बाज़ार में लोगों के सामने क़ज़ाए हाजत करने के बराबर है ।[1]

हज़रते सय्यिदुना सुलैम बिन अ़तर[2] رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ एक मरतबा क़ब्रिस्तान से गुज़र रहे थे कि आप को इस्तिन्जा की हाजत पेश आई, किसी ने कहा : यहां क़ब्रिस्तान में ही कर लीजिये । फ़रमाया : سُبْحٰنَ اللّٰہ मैं जैसे ज़िन्दों से हया करता हूं वैसे ही मुर्दों से भी करता हूं ।[3]

न तक्लीफ़ दो न उठाओ

हज़रते सय्यिदुना उ़मारा बिन ह़ज़्म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे एक क़ब्र पर बैठे देखा तो इरशाद फ़रमाया : يَاصَاحِبَ الْقَبْرِ انْزِلْ مِنَ الْقَبْرِ لَا تُؤْذِیْ صَاحِبَ الْقَبْرِ وَلَا یُؤْذِیْكَ या'नी ऐ क़ब्र पर बैठने वाले ! क़ब्र से नीचे उतर न तू क़ब्र वाले को तक्लीफ़ पहुंचा न क़ब्र वाला तुझे तक्लीफ़ में डाले ।[4]

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़ब्र के ऊपर चढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : मैं जिस त़रह़ मुसलमान की ज़िन्दगी में उसे तक्लीफ़ देना ना पसन्द करता हूं यूंही उस की मौत के बा'द भी उसे तक्लीफ़ देना ना पसन्द करता हूं ।

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الجنائز، من کرہ ان یطا علی القبر، ۳/۲۱۹، حدیث:۴
ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ما جاء فی النھی عن المشی علی القبور، ۲/۲۴۹، حدیث:۱۵۶۷

2 .....मतन में इस मक़ाम पर "सुलैम बिन उ़मैर" मज़्कूर है जब कि दीगर कुतुब में "सुलैम बिन अ़तर" है लिहाज़ा वोही लिख दिया गया है ।

3 ...مختصر تاریخ دمشق، ۱۰/۲۰۲، رقم:۱۰۰: سُلیم بن عتر بن سلمة بن مالك

4 ...مستدرک، کتاب معرفة الصحابة، النھی عن الجلوس علی القبر، ۴/۷۷۱، حدیث:۲۵۶۱

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही का फ़रमान है : اَذَی الْمُؤْمِنِ فِیْ مَوْتِہٖ کَاَذَاہُ فِیْ حَیَاتِہٖ या'नी मुसलमान को मौत के बा'द तक्लीफ़ देना उसे ज़िन्दगी में तक्लीफ़ देने की त़रह़ है।[1]

क़ब्र को रौंदने से ज़ियादा महबूब

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मख़ैमिरह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मुझे क़ब्र को रौंदने से ज़ियादा पसन्द येह है कि मैं अपने नेज़े की नोक पर चलूं और वोह मेरे पैरों में पैवस्त हो जाए। एक शख़्स क़ब्र पर खड़ा था और पूरी त़रह़ होश में था कि इतने में उस ने क़ब्र से एक आवाज़ सुनी : ऐ शख़्स ! मुझ से दूर हट मुझे तक्लीफ़ न दे।

बाब नम्बर 49 किरामन कातिबीन का क़ब्रे मोमिन पर ठहरने का बयान

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने मोमिन बन्दे की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमाता है तो उस के दोनों मुह़ाफ़िज़ फ़िरिश्ते आस्मान की त़रफ़ बुलन्द हो जाते हैं और अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब ! तू ने हमें अपने मोमिन बन्दे पर मुक़र्रर किया कि हम उस का अ़मल लिखें अब तू ने उसे अपनी त़रफ़ उठा लिया है तू हमें इजाज़त दे कि हम आस्मान में रहें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरा आस्मान मेरी पाकी बयान करने वाले फ़िरिश्तों से भरा हुवा है। किरामन कातिबीन अ़र्ज़ करते हैं : फिर हमें इजाज़त दे कि हम ज़मीन में रहें। रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : मेरी ज़मीन मेरी पाकी बयान करने वाली मख़्लूक़ से भरी हुई है, तुम मेरे बन्दे की क़ब्र पर ठहर जाओ और क़ियामत तक मेरी तस्बीह़, तक्बीर और तहलील (لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ का विर्द) करते रहो और उसे मेरे बन्दे के लिये लिखते रहो।[2]

येही रिवायत अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी मरवी है मगर इस में इतना ज़ाइद है कि "जब काफ़िर मरता है और उस पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते आस्मान की त़रफ़ बुलन्द होते हैं तो उन्हें हुक्म होता है : उस काफ़िर की क़ब्र की त़रफ़ लौट जाओ और उस पर ला'नत करो।"[3]

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الجنائز، ماقالوا فی سب الموتی وما کرہ من ذلک، ۳/۲۴۵، حدیث: ۲

2 ...حلیۃ الاولیاء، مسعر بن کدام، ۷/۲۹۷، حدیث: ۱۰۵۸۷

3 ...الموضوعات لابن الجوزی، کتاب ذکر الموت، باب ما یصنع الملکان بعد موت المؤمن، ۳/۲۲۸

बाब नम्बर 50 मय्यित को क़ब्र में नफ़्अ़ देने वाली चीज़ों का बयान

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : जब मोमिन को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के नेक आ'माल उसे घेर लेते हैं, अब अ़ज़ाब का फ़िरिश्ता आता है तो एक नेक अ़मल उस से कहता है : इस से दूर हो जाओ ! अगर मैं तन्हा भी होता तब भी तुम इस तक न पहुंच पाते ।(1)

क़ब्र में मोमिन के ग़मगुसार

हज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : जब कोई नेक शख़्स इन्तिक़ाल करता है और उसे क़ब्र में रख दिया जाता है तो उस के लिये एक जन्नती बिछौना बिछा कर कहा जाता है : ठन्डी आंखें लिये ख़ुशी ख़ुशी सो जा, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुझ से राज़ी हो, फिर उस की क़ब्र ता हद्दे निगाह वसीअ़ कर दी जाती है और उस के लिये जन्नत की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है, वोह जन्नत की ख़ूब सूरती को देखता और उस की हवा महसूस करता है, उस के नेक आ'माल नमाज़, रोज़ा और भलाई वग़ैरा उसे घेर लेते हैं और कहते हैं : हम ने तुझे क़ियाम में खड़ा रखा, हम ने तुझे प्यासा रखा और हम ने तुझे रातों को जगाए रखा पस आज हम वैसे हैं जैसे तुझे पसन्द हो, हम तेरे जन्नती ठिकाने में पहुंचने तक तेरे ग़मगुसार हैं ।(2)

इन्सान के तीन दोस्त

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हर इन्सान के तीन दोस्त हैं, एक दोस्त उस से कहता है : जो तू ख़र्च करे वोह तेरा और जो रोके रखे वोह तेरा नहीं येह दोस्त उस का माल है । दूसरा दोस्त कहता है : मैं तेरे साथ हूं मगर जब तू बादशाह के दरवाज़े पर आ गया तो मैं तुझे छोड़ कर वापस लौट जाऊंगा येह दोस्त उस के घरवाले हैं । तीसरा दोस्त कहता है : जहां भी तू आए जाएगा मैं तेरे साथ ही रहूंगा येह दोस्त उस का

---

1 ...موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، شھادات، ۵/۵۴۶، حدیث: ۴۷۵

2 ...اھوال القبور، الباب الرابع، ص۵۸

अ़मल होता है । बन्दा कहेगा : तीनों में तू मुझ पर ज़ियादा आसान था ।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब इन्सान मरता है तो तीन चीज़ें उस के साथ जाती हैं, दो वापस आ जाती हैं और एक उस के साथ रहती है, उस के घरवाले, उस का माल और उस का अ़मल, घरवाले और माल वापस हो जाते हैं जब कि अ़मल उस के साथ रह जाता है ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन बशीर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि फ़ख्रे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन्सान और मौत की मिसाल उस आदमी की सी है जिस के तीन दोस्त हों, एक ने कहा : येह मेरा माल है इस में से जो चाहो ले लो और जो चाहो छोड़ दो । दूसरे ने कहा : मैं ज़िन्दगी भर तेरी ख़िदमत करूंगा और तेरे मरते ही तुझे छोड़ दूंगा । तीसरा बोला : मैं तेरे साथ हूं और तेरे साथ ही आऊंगा और जाऊंगा चाहे तू मरे या जिये । जिस ने कहा था : येह मेरा माल है इस में से जो चाहो ले लो और जो चाहो छोड़ दो वोह उस का माल है दूसरा उस का ख़ानदान है और तीसरा उस का अ़मल है बन्दा जहां भी हो वोह उस के साथ रहेगा ।[3]

आ'माले सालेहा की बरकत

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : जब नेक बन्दे को क़ब्र में रखा जाता है तो उस के आ'माले सालेहा नमाज़, रोज़ा, ह़ज, जिहाद, सदक़ा वग़ैरा उसे घेर लेते हैं, अब अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस के पाउं की त़रफ़ से आते हैं तो नमाज़ कहती है : पीछे हट जाओ, उस तक पहुंचने के लिये तुम्हें कोई रास्ता नहीं मिलने वाला, येह मेरे साथ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये त़वील क़ियाम करता था । अब वोह सर की जानिब से आते हैं तो रोज़ा कहता है : यहां भी तुम्हारे लिये कोई राह नहीं है, इस ने दुन्या में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये खुद को बहुत प्यासा रखा है । अब वोह धड़ की त़रफ़ से आते हैं तो ह़ज और जिहाद कहते हैं : इस से दूर हो जाओ, इस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये ह़ज और जिहाद कर के अपनी जान को कमज़ोर किया और बदन को थका दिया था तुम्हारे लिये यहां कोई राह नहीं है । अब वोह हाथों की जानिब से आते हैं तो सदक़ा कहता है : मेरे

---

❶...مسند طیالسی، ص۲۶۹، حدیث:۲۰۱۳

❷...مسلم، کتاب الزھد والرقائق، ص۱۵۸۳، حدیث:۲۹۶۰

❸...معجم اوسط، ۵/۲۹۹، حدیث:۷۳۹۶

साथी की त़रफ़ मत बढ़ना, उस ने इन हाथों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये बहुत सदक़ा किया है लिहाज़ा तुम्हारे लिये यहां कोई राह नहीं है। फिर उस मरने वाले से कहा जाता है : तुझे मुबारक हो तू ज़िन्दगी व मौत दोनों में पाकीज़ा रहा। अब रह़मत के फ़िरिश्ते उस के पास आते हैं और उस के लिये जन्नती बिस्तर लगाते हैं, क़ब्र को ह़द्दे निगाह तक वसीअ़ कर दिया जाता है और जन्नती क़िन्दील रौशन कर दी जाती है जिस की रौशनी में वोह क़ियामत तक रहेगा।(1)

क़ुरआने पाक का मस्कन

ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अबू मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر फ़रमाते हैं : एक गुनाहगार शख़्स कसरत से कुरआने मजीद की तिलावत करता था, जब उस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते उस की रूह़ लेने आए। कुरआने पाक निकल कर सामने आ गया और कहने लगा : ऐ मेरे रब ! मुझे इसी में रहने दे जिस में तू ने मुझे ठहराया था। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : कुरआन के लिये उस का मस्कन छोड़ दो।(2)

क़ुरआने पाक और फ़िरिश्ते का मुकालमा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन मुर्रह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जब इन्सान को क़ब्र में रखा जाता है तो उस की बाईं जानिब से (अ़ज़ाब का) फ़िरिश्ता आता है, कुरआने पाक उस के सामने आ कर उसे रोकता है तो फ़िरिश्ता कहता है : मेरा तेरा कोई मुआ़मला नहीं, ख़ुदा की क़सम ! येह तो तुझ पर अ़मल नहीं करता था। कुरआने मजीद कहता है : क्या मैं इस के सीने में मौजूद नहीं था ? बिल आख़िर कुरआने करीम उस मय्यित को नजात दिला कर ही छोड़ता है।(3)

क़ब्र का मह़बूब तरीन रफ़ीक़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मिन्हाल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : कसरते इस्तिग़फ़ार से बढ़ कर बन्दे को क़ब्र में कोई भी साथी मह़बूब नहीं होता।(4)

---

(1)... التبصرة لابن الجوزی، المجلس الثالث والثلاثون: فی فضل الصحابة، الکلام علی البسملة، ۱/ ۳۸۰تا۳۸۱
اھوال القبور، الباب الرابع، ص۵۸

(2)... ذیل تاریخ بغداد، ۱۸/ ۹۹، رقم: ۲۳۲، ابو الحسن علی بن احمد نفری

(3)... فضائل القرآن وتلاوته للرازی، باب منع القرآن صاحبه من عذاب القبر، ص۱۴۹، رقم: ۱۱۹

(4)... الترغیب والترھیب للاصبھانی، باب الالف، باب فی الترغیب فی الاستغفار، ۱/ ۱۷۲، رقم: ۲۲۲

सवाबे जारिया वाले आ'माल

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि आक़ाए दो जहां, रह़मते आलमिय्यां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِذَا مَاتَ الْاِنْسَانُ اِنْقَطَعَ عَمَلُهُ اِلَّا مِنْ ثَلَاثٍ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ اَوْ عِلْمٍ يُّنْتَفَعُ بِهٖ اَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَّدْعُوْلَهٗ या'नी जब आदमी मरता है तो उस का अ़मल ख़त्म हो जाता है सिवाए इन तीन आ'माल के : (1) सदक़ए जारिया या (2) वोह इ़ल्म जिस से नफ़्अ़ उठाया जाए या (3) नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करे ।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : चार लोगों का सवाब उन की मौत के बा'द भी जारी रहता है : (1) जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह की तय्यारी रखने वाला (2) इ़ल्मे दीन सिखाने वाला (3) वोह शख़्स जिस ने सदक़ा किया कि जब तक वोह जारी रहेगा उस का अज्र उसे मिलेगा और (4) वोह शख़्स जिस ने नेक औलाद छोड़ी जो उस के लिये दुआ़ करती है ।(2)

अच्छा और बुरा त़रीक़ा ईजाद करने का हुक्म

हज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

مَنْ سَنَّ سُنَّةً حَسَنَةً كَانَ لَهٗ اَجْرُهَا وَاَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ غَيْرِ اَنْ يُّنْقَصَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَيْءٌ وَّمَنْ سَنَّ سُنَّةً سَيِّئَةً كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهَا وَ وِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ غَيْرِ اَنْ يُّنْقَصَ مِنْ اَوْزَارِهِمْ شَيْءٌ

या'नी जो (इस्लाम में) अच्छा त़रीक़ा ईजाद करे उसे उस का सवाब मिलेगा और उस के बा'द उस पर अ़मल करने वालों का सवाब भी उसे मिलेगा और उन के सवाब में भी कोई कमी नहीं होगी और जो (इस्लाम में) बुरा त़रीक़ा ईजाद करे उस पर अपनी बद अ़मली का गुनाह है और उन की बद अ़मलियों का भी जो उस के बा'द उस पर कारबन्द हों बिग़ैर उस के कि उन के गुनाहों में से कुछ कम हो ।(3)

---

1 ...مسلم، کتاب الوصیۃ، باب ما یلحق الانسان من الثواب بعد وفاتہ، ص ۸۸۶، حدیث: ۱۶۳۱

2 ...مسند امام احمد، مسند الانصار، حدیث: ابی امامۃ الباھلی، ۸/۲۹۲، حدیث: ۲۲۳۱۰

3 ...مسلم، کتاب الزکاۃ، باب الحث علی الصدقۃ... الخ، ص ۵۰۸، حدیث: ۱۰۱۷

हज़रते सय्यिदुना रजा बिन हैवत رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने एक दिन ख़लीफ़ा सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक से फ़रमाया : ख़लीफ़ा को क़ब्र में मह़फ़ूज़ रखने वाला एक अ़मल येह भी है कि वोह किसी मर्दे सालेह़ को अपना जानशीन मुक़र्रर कर दे।(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि जिस ने किताबुल्लाह से एक आयत या इ़ल्म का एक बाब सिखाया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक उस के अज्र को बढ़ाता रहेगा।(2)

मौत के बा'द मिलने वाली नेकियां

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो नेकियां मोमिन को मौत के बा'द भी मिलती हैं उन में से एक इ़ल्म है जो उस ने सीखा और फैलाया हो या नेक औलाद है जो उस ने पीछे छोड़ी हो या विरासत में क़ुरआने पाक छोड़ा हो या मस्जिद बनाई हो या मुसाफ़िर ख़ाना बनाया हो या कोई नहर खुदवाई हो या फिर अपनी ह़यात में ब ह़ालते सिह़्ह़त अपने माल से सदक़ा निकाला हो तो येह उसे मौत के बा'द भी पहुंचता है।(3)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सात चीज़ें ऐसी हैं कि बन्दा मर कर क़ब्र में चला जाता है मगर उन का सवाब उसे मिलता रहता है : (1) उस ने इ़ल्म सिखाया हो (2)नहर खुदवाई हो (3) कुंवां खुदवाया हो (4) फल दार दरख़्त लगाया हो (5) मस्जिद बनाई हो (6) विरासत में क़ुरआने पाक छोड़ा हो या (7) ऐसी नेक औलाद छोड़ी हो जो उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करे।(4)

क़ब्रों की ज़ियारत किया करो

हज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : كُنْتُ نَهَيْتُكُمْ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُوْرِ فَزُوْرُوْهَا وَاجْعَلُوْا زِيَارَتَكُمْ لَهَا صَلَاةً عَلَيْهِمْ وَاسْتِغْفَارًا لَّهُمْ

---

1 ... طبقات ابن سعد، ۵/۲۵۸، رقم: ۹۹۵: عمر بن عبد العزيز

2 ... تاريخ ابن عساكر، ۵۹/۲۹۰، رقم: ۷۵۳۳، معاوية بن يحيى ابو مطيع الدمشقي، حديث: ۱۲۳۵۹

3 ... ابن ماجه، كتاب السنة، باب ثواب معلم الناس الخير، ۱/۱۵۷، حديث: ۲۴۲

4 ... حلية الاولياء، قتادة بن دعامة، ۲/۳۹۰، حديث: ۲۶۷۵

या'नी मैं तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ़ करता था पस अब तुम उन की ज़ियारत किया करो और ज़ियारत करने में उन के लिये दुआ़ए रह़मत और इस्तिग़फ़ार किया करो।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने त़ाऊस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने अपने वालिदे मोह़तरम से पूछा : मय्यित के पास क्या पढ़ना अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : इस्तिग़फ़ार करना।(2)

बेटे की बाप के लिये दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रिवायत करते हैं कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में नेक बन्दे का दरजा बुलन्द फ़रमाता है तो बन्दा अ़र्ज़ करता है : ऐ मेरे रब ! येह मुझे कैसे मिल गया ? रब तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : بِاسْتِغْفَارِ وَلَدِكَ لَكَ या'नी तेरे लिये तेरी औलाद के इस्तिग़फ़ार के सबब।(3)

एक रिवायत में अल्फ़ाज़ इस त़रह़ हैं : بِدُعَاءِ وَلَدِكَ لَكَ या'नी तेरे लिये तेरी औलाद की दुआ़ के सबब।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत आदमी अपनी नेकियों को पहाड़ों की मिस्ल देखेगा तो पूछेगा : येह कहां से आईं ? कहा जाएगा : तेरे लिये तेरी औलाद के इस्तिग़फ़ार के सबब।(5)

मुर्दों के लिये ज़िन्दों का तोह़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बयान करते हैं कि रसूले ख़ुदा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क़ब्र में मुर्दे का ह़ाल डूबते हुवे इन्सान की मानिन्द है जो शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ़ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ़ उसे पहुंचती है तो उस के नज़्दीक वोह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या

---

1 ...معجم کبیر، ۲/۹۴، حدیث: ۱۴۱۹

2 ...حلیۃ الاولیاء، طاوس بن کیسان، ۴/۱۵، رقم: ۴۶۱۳

3 ...مسند امام احمد، مسند ابی ہریرۃ، ۳/۵۸۴، حدیث: ۱۰۶۱۵، ابن ماجہ، کتاب الادب، باب بر الوالدین، ۴/۱۸۵، حدیث: ۳۶۶۰

4 ...سنن کبری للبیہقی، کتاب النکاح، باب الرغبۃ فی النکاح، ۷/۱۲۶، حدیث: ۱۳۴۵۹

5 ...معجم اوسط، ۱/۵۱۳، حدیث: ۱۸۹۴

और इस में जो कुछ है सब) से बेहतर होती है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअ़ल्लिक़ीन की त़रफ़ से हदया किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अ़त़ा फ़रमाता है, ज़िन्दों का तोह़्फ़ा मुर्दों के लिये "**दुआ़ए मग़्फ़िरत करना**" है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : कहा जाता था कि ज़िन्दों को जितनी खाने पीने की ह़ाजत होती है मुर्दों को उस से भी ज़ियादा दुआ़ओं की ह़ाजत होती है।(2)

कई उ़लमाए किराम ने इस बात पर इजमाअ़ नक़्ल किया है कि "दुआ़ मय्यित को फ़ाएदा देती है।" क़ुरआने मजीद से इस की दलील येह आयते मुबारका है :

وَالَّذِیْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ (پ۲۸،الحشر:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो उन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए।*

एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मन्क़ूल है कि मैं ने अपने भाई की वफ़ात के बा'द उसे ख़्वाब में देखा तो पूछा : क्या तुम्हें ज़िन्दों की दुआ़एं पहुंचती हैं ? उस ने कहा : हां, ख़ुदा की क़सम ! वोह नूर की त़रह़ लहलहाती हुई आती हैं फिर हम उन्हें पहन लेते हैं।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन जरीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَدِیْر फ़रमाते हैं : जब बन्दा अपने फ़ौतशुदा भाई के लिये दुआ़ करता है तो फ़िरिश्ता वोह दुआ़ उस की क़ब्र में लाता है और कहता है : ऐ तन्हाई के घर क़ब्र में रहने वाले ! येह तेरे मेहरबान भाई की त़रफ़ से तेरे लिये तोह़्फ़ा है।(4)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं शाम से बसरा आया तो एक ख़न्दक़ में उतरा और वुज़ू कर के रात की दो रक्अ़त (नफ़्ल) नमाज़ अदा की, फिर अपना सर एक क़ब्र पर रख कर सो गया। ख़्वाब में देखता हूं कि क़ब्र वाला मुझ से शिकायत करते हुवे कह रहा

---

1 ... فردوس الاخبار، ۲/۳۳۶، حدیث:۲۲۲۴، شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/۲۰۳، حدیث:۷۹۰۵

2 ... اھوال القبور، الباب العاشر، ص۲۱۸

3 ... موسوعۃ ابن ابی الدنیا، کتاب ذکر الموت، منامات الاموات، ۵/۴۹۶، حدیث:۳۱۰

4 ... اھوال القبور، الباب العاشر، ص۲۱۸

है : तुम रात से मुझे तक्लीफ़ दे रहे हो, तुम जानते नहीं हो जब कि हम जानते हैं मगर हम अ़मल नहीं कर सकते, तुम ने जो दो रक्अ़तें अदा की हैं वोह दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुन्या वालों को जज़ाए ख़ैर दे उन्हें मेरी त़रफ़ से सलाम कहना क्यूंकि उन की दुआ़ओं से हम पर पहाड़ों की मानिन्द नूर दाख़िल होता है।(1)

गुज़श्ता ज़माने के एक शख़्स का बयान है कि मैं क़ब्रिस्तान से गुज़रा तो मैं ने उन के लिये दुआ़ए रह़मत की इतने में एक ग़ैबी आवाज़ आई : हां, इन के लिये रह़मत की दुआ़ करो क्यूंकि इन में अफ़्सुर्दा व ग़मगीन भी हैं।(2)

अगर ज़िन्दा न होते तो मुर्दे बरबाद हो जाते

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन या'क़ूब बिन सालेह़ अम्बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی बयान करते हैं : मैं ने अपने वालिद से सुना कि एक नेक शख़्स ने अपने वालिद को ख़्वाब में देखा तो वालिद ने कहा : बेटा ! तुम लोगों ने हम से अपने तोह़्फ़े क्यूं रोक दिये ? बेटे ने कहा : अब्बा हुज़ूर ! क्या फ़ौतशुदा लोग ज़िन्दों के तोह़्फ़ों को पहचानते हैं ? फ़रमाया : बेटा ! لَوْلَا الْاَحْيَاءُ لَهَلَكَتِ الْاَمْوَاتُ या'नी अगर ज़िन्दा लोग न होते तो मुर्दे बरबाद हो जाते।(3)

नूर के तोह़्फ़े

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار बयान करते हैं कि मैं शबे जुमुआ़ क़ब्रिस्तान में गया तो देखा वहां एक नूर चमक रहा है, मैं ने कहा : لَآاِلٰهَ اِلَّا اللهُ ऐसा लगता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ब्रिस्तान वालों की मग़्फ़िरत फ़रमा दी है। इतने में मुझे दूर से एक ग़ैबी आवाज़ आई : ऐ मालिक बिन दीनार ! येह मुसलमानों का अपने फ़ौतशुदा भाइयों के लिये तोह़्फ़ा है। मैं ने कहा : तुम्हें उस का वासित़ा जिस ने तुम्हें क़ुव्वते गोयाई दी है ! क्या मुझे बताओगे नहीं येह क्या माजरा है ? उस ने कहा : आज रात एक मुसलमान ने उठ कर वुज़ू किया और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ी जिस में उस ने सूरए फ़ातिह़ा के बा'द قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ की तिलावत की फिर दुआ़ की : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मैं इस का सवाब मुसलमान मुर्दों को पेश करता हूं। पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

1... اهوال القبور، الباب الرابع، ص ٢٦

2... موسوعة ابن ابی الدنیا، کتاب الهواتف، هواتف القبور، ٢/ ٤٦٠، حدیث: ٤٩

3... اهوال القبور، الباب العاشر، ص ٢١٩

ने हम पर मशरिको मग़रिब में रौशनी व नूर और ख़ुशी व सुरूर दाख़िल फ़रमा दिया। हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : फिर मैं ने हर शबे जुमुआ इन की तिलावत की आदत बना ली, एक रात प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़्वाब में अपने दीदार से मुशर्रफ़ करते हुवे इरशाद फ़रमाया : ऐ मालिक बिन दीनार ! जिस क़दर नूर के तोहूफ़े तू ने मेरी उम्मत को दिये हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस के बदले तेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी है तुझे भी इस का सवाब अता फ़रमाया है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जन्नती महल में तेरे लिये एक घर बनाया जिसे मुनीफ़ कहा जाता है। मैं ने अर्ज़ की : येह मुनीफ़ क्या है ? इरशाद फ़रमाया : अहले जन्नत के सामने एक बुलन्द मक़ाम है।

हज़रते सय्यिदुना बश्शार बिन ग़ालिब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदतुना राबिआ बसरिया رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهَا के लिये बहुत दुआ किया करता था, एक रात मैं ने उन्हें ख़्वाब में देखा तो वोह फ़रमा रही थीं : ऐ बश्शार ! तुम्हारे तोहूफ़े मुझे नूर के थालों में रेशमी रूमालों से ढक कर पहुंचाए जाते हैं। मैं ने कहा : येह कैसे होता है ? फ़रमाया : जब ज़िन्दा लोग फ़ौत शुदा लोगों के लिये दुआ करते हैं तो उन के साथ ऐसा ही होता है, उन्हें क़बूल कर के नूर के थालों में रखा जाता है फिर रेशमी रूमालों से ढक कर उस मय्यित को पेश किया जाता है जिस के लिये दुआ की गई हो और कहा जाता है : फ़ुलां ने तेरी तरफ़ येह तोहूफ़ा भेजा है।(1)

मेरी उम्मत उम्मते मर्हूमा है

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से मरफ़ूअन रिवायत है कि "मेरी उम्मत उम्मते मर्हूमा (रहम की गई उम्मत) है येह अपनी क़ब्रों में गुनाहगार दाख़िल होगी और क़ब्रों से निकलेगी तो उस पर गुनाह नहीं होंगे, उस के लिये मुसलमानों के इस्तिग़फ़ार करने के सबब गुनाहों को मिटा दिया जाएगा।"(2)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि एक आस्मानी किताब में है : "ऐ इब्ने आदम ! मैं ने तुझे दो चीज़ें ऐसी दीं हैं जो तेरी नहीं थीं, अपने माल में दस्तूर के मुताबिक़ वसिय्यत करना हालांकि येह माल औरों का हो चुका होता है और

---

1 ...العاقبة فی ذکر الموت والآخرة، الباب التاسع فی زیارة القبور...الخ، ص۲۱۷
التذکرة للقرطبی باب ما یتبع المیت الی قبره...الخ، ص۸۶

2 ...معجم اوسط، ۱/۵۰۹، حدیث۱۸۷۹

मुसलमानों का तेरे लिये दुआ़ करना हालांकि तू ऐसी जगह में है जहां तू किसी बुराई का इर्तिकाब कर सकता है न ही नेकियों में इज़ाफ़ा कर सकता है।"[1]

इन्सान को मरने के बा'द मिलने वाली चीज़ें

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : चार चीज़ें इन्सान को मौत के बा'द भी अ़ता की जाती हैं : (1) उस के माल का तिहाई हिस्सा बशर्ते कि वोह मरने से पहले माल के मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमां बरदार हो (2) नेक औलाद जो उस की मौत के बा'द उस के लिये दुआ़ करे (3) वोह अच्छा त़रीक़ा जो उस ने जारी किया और उस के बा'द भी उस पर अ़मल होता रहा और (4) 100 मुसलमान कि वोह अगर किसी शख़्स के लिये सिफ़ारिश करें तो उस के ह़क़ में उन की सिफ़ारिश क़बूल की जाती है।[2]

क्या मर्हूमीन को सदक़े का सवाब पहुंचता है ?

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी वालिदा अचानक इन्तिक़ाल कर गईं और वसिय्यत न कर सकीं, मेरे ख़याल में अगर उन्हें बोलने की मोहलत मिलती तो वोह सदक़ा करतीं, अब अगर मैं उन की त़रफ़ से सदक़ा करूं तो उन्हें उस का सवाब मिलेगा ? इरशाद फ़रमाया : ज़रूर मिलेगा।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ग़ैर मौजूदगी में उन की वालिदा फ़ौत हो गईं, तो वोह प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी ग़ैर मौजूदगी में मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल हो गया है अगर मैं उन की त़रफ़ से सदक़ा करूं तो उन्हें सवाब मिलेगा ? इरशाद फ़रमाया : हां ! उन्हों ने अ़र्ज़ की : मैं आप को गवाह बना कर कहता हूं कि मेरा बाग़ मेरी मां की त़रफ़ से सदक़ा है।[4]

---

1 ... مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الزھد، کلام الحسن البصری، ۸/۲۵۶، رقم: ۲۰
2 ... دارمی، المقدمۃ، باب من سن سنۃ حسنۃ او سیئۃ، ۱/۱۴۲، حدیث: ۵۱۷
3 ... مسلم، کتاب الزکاۃ، باب وصول ثواب الصدقۃ عن المیت الیہ، ص۵۰۲، حدیث: ۱۰۰۴
4 ... بخاری، کتاب الوصایا، باب الاشھاد فی الوقف والصدقۃ، ۲/۲۴۱، حدیث: ۲۷۶۲

हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से पूछा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी वालिदा इन्तिक़ाल कर गई हैं कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है ? इरशाद फ़रमाया : पानी। चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कुंवां खुदवाया और फ़रमाया : هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ या'नी येह सा'द की मां के लिये है।(1)

सदक़ा क़ब्र की गर्मी दूर करता है

हज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِیءُ عَنْ اَهْلِهَا حَرَّ الْقُبُوْرِ या'नी सदक़ा, सदक़ा करने वाले से क़ब्र की गर्मी को ज़रूर दूर करता है।(2)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी मां का इन्तिक़ाल हो गया है और उन्हों ने कोई वसिय्यत भी नहीं की, अगर मैं उन की जानिब से सदक़ा करूं तो उन्हें नफ़्अ़ होगा ? इरशाद फ़रमाया : हां, तुम पानी सदक़ा करो।(3)

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं, मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी मां का इन्तिक़ाल हो गया है न वोह वसिय्यत कर सकी हैं और न सदक़ा तो अगर मैं उन की त़रफ़ से सदक़ा करूं तो उन्हें फ़ाएदा होगा ? इरशाद फ़रमाया : हां, चाहे बकरी का जला हुवा खुर ही क्यूं न हो।(4)

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम में से कोई नफ़्ली सदक़ा करे तो अपने वालिदैन की त़रफ़ से करे यूं उस के वालिदैन को उस का सवाब मिलेगा और उस (सदक़ा करने वाले) के सवाब में भी कुछ कमी नहीं की जाएगी।(5)

---

1 ... ابو داود، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، ۲/۱۸۰، حدیث: ۱۶۸۱

2 ... معجم کبیر، ۱۷/۲۸۶، حدیث: ۷۸۸

3 ... معجم اوسط، ۶/۷۷، حدیث: ۸۰۶۱

4 ... معجم اوسط، ۵/۳۲۷، حدیث: ۷۴۹۰

5 ... معجم اوسط، ۵/۳۹۴، حدیث: ۷۷۲۶

अपने मर्हूमीन को तोहूफ़े भेजा करो

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये रह्मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना : जब घरवाले अपने फ़ौतशुदा की त़रफ़ से सदक़ा करते हैं तो हज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام उसे नूर के थाल में तोहूफ़ा बना कर रखते हैं फिर क़ब्र के किनारे खड़े हो कर फ़रमाते हैं : ऐ गहरी क़ब्र वाले ! येह तोहूफ़ा है जो तेरे घरवालों ने तेरी त़रफ़ भेजा है इसे क़बूल कर। फिर वोह तोहूफ़ा उसे दे दिया जाता है तो वोह बहुत ख़ुश होता है और उस के वोह पड़ोसी (मुर्दे) ग़मगीन हो जाते हैं जिन्हें कोई तोहूफ़ा नहीं भेजा गया।(1)

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अबू सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد फ़रमाते हैं : अगर मय्यित की त़रफ़ से ख़ुर भी सदक़ा किया जाए तो उसे पहुंचता है।(2)

जहन्नम से आज़ादी

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अपने वालिदैन की वफ़ात के बा'द उन की त़रफ़ से हज करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख देता है और उस के वालिदैन को एक मुकम्मल हज का सवाब मिलता है और उन के सवाब में भी कुछ कमी नहीं की जाती। मुस्त़फ़ा जाने रह्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "फ़ौतशुदा रिश्तेदार के साथ सब से अफ़्ज़ल सिलए रेहमी उस की त़रफ़ से हज करना है जो उसे क़ब्र में पहुंचता है।"(3)

मर्हूमीन की त़रफ़ से हज करना

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस के वालिदैन ने हज न किया हो और वोह उन की त़रफ़ से हज करे तो येह वालिदैन को काफ़ी होता है और आस्मान में उन की रूह को ख़ुश ख़बरी

1 ...معجم اوسط، ۵/۳۷، حدیث: ۶۵۰۴

2 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الجنائز، ما یتبع المیت بعد موته، ۳/۲۶۱، حدیث: ۳

3 ...شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/۲۰۵، حدیث: ۷۹۱۲

दी जाती है और वोह (ह़ज करने वाला) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने वाला लिखा जाता है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे बाप का इन्तिक़ाल हो गया है लेकिन उन्हों ने इस्लाम में फ़र्ज़ ह़ज नहीं किया। तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस बारे में क्या कहते हो कि अगर तुम्हारे वालिद पर क़र्ज़ होता तो तुम उन की जानिब से क़र्ज़ अदा करते ? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : वोह ह़ज भी उन पर क़र्ज़ है, लिहाज़ा तुम अदा करो।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि एक औ़रत ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : क्या मैं अपनी वफ़ात याफ़्ता मां की त़रफ़ से ह़ज कर सकती हूं ? तो मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम्हारा क्या ख़याल है अगर तुम्हारी मां पर क़र्ज़ होता और वोह तुम अदा करतीं तो क्या तुम से क़बूल कर लिया जाता ? उस ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं। फिर आप ने उसे ह़ज करने का हुक्म दिया।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ حَجَّ عَنْ مَيِّتٍ فَلِلَّذِيْ حَجَّ عَنْهُ مِثْلُ اَجْرِهٖ या'नी जो मय्यित की त़रफ़ से ह़ज करे उस के लिये भी मय्यित जितना ही अज्र है।(4)

मर्हूमीन की त़रफ़ से गुलाम आज़ाद करना

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अस्लम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا से मरवी है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरे वालिद का इन्तिक़ाल हो गया है क्या मैं उन की त़रफ़ से गुलाम

---

1 ... اخبار مکۃ للفاکہی، ذکر الرجل یحج عن ابویہ وقرابتہ وفضل ذلک، ۱/۳۸۷، حدیث: ۸۲۱

2 ... مسند بزار، مسند انس بن مالک، ۱۳/۳۰۱، حدیث: ۶۸۹۱

3 ... معجم اوسط، ۳/۱۷۰، حدیث: ۴۲۱۹

4 ... معجم اوسط، ۴/۲۳۱، حدیث: ۵۸۱۸

आज़ाद कर सकता हूं ? इरशाद फ़रमाया : हां ।(1)

हज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : गुलाम आज़ाद करना, हज और सदक़ा मौत के बा'द भी मय्यित को पहुंचते हैं ।(2)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने जा'फ़र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान फ़रमाते हैं कि नौजवानाने जन्नत के सरदार हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन और हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के विसाल के बा'द उन की तरफ़ से गुलाम आज़ाद किया करते थे ।(3)

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد का बयान है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अपने भाई हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की तरफ़ से अपना एक बहुत पुराना गुलाम आज़ाद कर दिया येह उम्मीद करते हुवे कि इस से मेरे भाई को मौत के बा'द नफ़्अ़ पहुंचेगा ।(4)

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन आ़स رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरे बाप आ़स ने 100 गुलाम आज़ाद करने की वसिय्यत की थी जिन में से 50 गुलाम हिशाम ने आज़ाद कर दिये हैं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐसा न करो क्यूंकि सदक़ा, हज और गुलाम आज़ाद करना मुसलमान ही की तरफ़ से है, अगर वोह (या'नी आ़स) मुसलमान होता तो इस का सवाब उसे पहुंचता ।

हुस्ने सुलूक दर हुस्ने सुलूक

हज़रते सय्यिदुना हज्जाज बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

إِنَّ مِنَ الْبِرِّ بَعْدَ الْبِرِّ اَنْ تُصَلِّيَ عَلَيْهِمَا مَعَ صَلَاتِكَ وَاَنْ تَصُوْمَ عَنْهُمَا مَعَ صِيَامِكَ وَاَنْ تَصَدَّقَ عَنْهُمَا مَعَ صَدَقَتِكَ

❶...مصنف ابن ابي شيبة، كتاب الجنائز، ما يتبع الميت بعد موته، ٣/٢٦١، حديث: ٧

❷...مصنف ابن ابي شيبة، كتاب الجنائز، ما يتبع الميت بعد موته، ٣/٢٦١، حديث: ١٠

❸...مصنف ابن ابي شيبة، كتاب الجنائز، ما يتبع الميت بعد موته، ٣/٢٦٢، حديث: ١٢

❹...تاريخ ابن عساكر، ٣٥/٣٧، رقم: ٣٨٥٥: عبد الرحمن بن عبد الله

या'नी हुस्ने सुलूक दर हुस्ने सुलूक येह कि तू अपने साथ वालिदैन के लिये भी दुआ़ कर, अपने रोज़ों के साथ उन की त़रफ़ से भी रोज़ा रख और अपने सदक़े के साथ उन की त़रफ़ से भी सदक़ा कर।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि एक औ़रत ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मेरी मां पर दो महीने के रोज़े क़ज़ा हैं अगर मैं उन की त़रफ़ से रख लूं तो उन्हें किफ़ायत करेंगे ? इरशाद फ़रमाया : हां।[2] उस ने अ़र्ज़ की : मेरी मां ने कभी ह़ज नहीं किया अगर मैं उन की त़रफ़ से ह़ज कर लूं तो उन्हें किफ़ायत करेगा ? इरशाद फ़रमाया : हां।[3]

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ صِيَامٌ صَامَ عَنْهُ وَلِيُّهٗ या'नी जो इन्तिक़ाल कर जाए और उस पर रोज़े हों तो उस का वली उस की त़रफ़ से रोज़े अदा करे[4]।[5]

• • • ✿ • • •

---

1 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب الجنائز، ما یتبع المیت بعد موته، ۳/۲۶۱، حدیث:۸

2 .....यहां रोज़ों का कफ़्फ़ारा देना मुराद है या'नी तुम अपनी मां के रोज़ों का फ़िद्या दे दो जो हुक्मन रोज़ा है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 132)

3 ...مسلم، کتاب الصیام، باب قضاء الصیام عن المیت، ص۵۷۸، حدیث:۱۱۴۹، صوم شهرین بدله صوم شهر

ابو داود، کتاب الوصایا، باب فی الرجل یهب الهبة ثم یوصی له بها او یرثها، ۳/۱۶۰، حدیث:۲۸۷۷، صوم شهرین بدله صوم شهر

4 .....जिस शख़्स पर रमज़ान या नज़्र का रोज़ा क़ज़ा हो गया, फिर उसे क़ज़ा करने का मौक़अ़ मिला, मगर क़ज़ा न किया कि मर गया, तो उस का वली वारिस उस की त़रफ़ से रोज़ा अदा कर दे। मुराद येह है कि रोज़ों का फ़िद्या दे दे चन्द वज्हों से एक येह कि रब तआ़ला फ़रमाता है : وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ (پ۲، البقرة:۱۸۴) जो रोज़े की त़ाक़त न रखें उन पर फ़िद्या है और मय्यित भी अब त़ाक़त नहीं रखता, दूसरे येह कि ख़ुद ह़दीस शरीफ़ में सराह़तन वारिद हुवा कि "اَلَا لَا يَصُوْمَنَّ اَحَدٌ عَنْ اَحَدٍ وَّلَا يُصَلِّيَنَّ اَحَدٌ عَنْ اَحَدٍ" कोई किसी की त़रफ़ से न रोज़ा रखे न नमाज़ पढ़े। तीसरे येह कि ख़ुद सह़ाबए किराम का फ़तवा येह रहा कि मय्यित की त़रफ़ से रोज़ों का फ़िद्या दिया जावे रोज़ा रखा न जाए, देखो मिरक़ात। चौथे येह कि क़ियासे शरई भी येह ही चाहता है क्यूंकि नमाज़ ब मुक़ाबला रोज़ा ज़ियादा अहम व ज़रूरी है मगर मय्यित की त़रफ़ से कोई नमाज़ें नहीं पढ़ता तो रोज़े कैसे रख सकता है मह़ज़ बदनी इबादत ख़ुद ही करनी पड़ती है दूसरे से नहीं कराई जाती। (मिरआतुल मनाजीह़, 3 / 177 मुल्तक़त़न)

5 ...مسلم، کتاب الصیام، باب قضاء الصیام عن المیت، ص۵۷۷، حدیث:۱۱۴۷

बाब नम्बर 51 मय्यित या क़ब्र के पास तिलावते क़ुरआन करने का बयान

मय्यित को तिलावते क़ुरआन का सवाब मिलने या न मिलने में उ़लमाए किराम का इख़्तिलाफ़ है । अइम्मए सलासा (ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल) और जमहूर (उ़लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام) के नज़्दीक सवाब पहुंचता है जब कि हमारे इमाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى का इस में इख़्तिलाफ़ है, वोह येह आयते मुबारका बत़ौरे दलील पेश करते हैं :

وَاَنْ لَّیْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿۳۹﴾ (پ۲۷، النجم:۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि आदमी न पाएगा मगर अपनी कोशिश ।

जमहूर अइम्मा ने इस आयते मुबारका के जवाब में कई वुजूहात बयान फ़रमाई हैं :

पहली वज्ह : येह आयत मन्सूख़ है और इस की नासिख़ येह आयते मुक़द्दसा है :

وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّیَّتُهُمْ بِاِیْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَمَاۤ اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۭ بِمَا كَسَبَ رَهِیْنٌ ﴿۲۱﴾ (پ۲۷، الطور:۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की हम ने उन की औलाद उन से मिला दी और उन के अ़मल में उन्हें कुछ कमी न दी सब आदमी अपने किये में गिरिफ़्तार हैं ।

इस आयत से मा'लूम हुवा कि वालिदैन की नेकी के सबब औलाद जन्नत में दाख़िल होगी ।

दूसरी वज्ह : येह आयते मुबारका ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की क़ौम के लिये है जब कि इस उम्मते मर्ह़ूमा के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करिमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया कि "इस उम्मत के लिये वोह है जो इस ने कोशिश की और वोह भी जिस की इस के लिये कोशिश की गई ।"

तीसरी वज्ह : इस आयते त़य्यिबा में इन्सान से मुराद काफ़िर है जब कि मोमिन के लिये तो उस की अपनी कोशिश और उस के लिये की गई कोशिश भी है । येह ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन अनस رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया है ।

चौथी वज्ह : ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुसैन बिन फ़ज़्ल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : आदमी अपनी ही कोशिश पाएगा येह तो अ़द्ल की सूरत में है जब कि फ़ज़्ल की सूरत में जिस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जितना चाहे ज़ियादा फ़रमा दे ।

पांचवीं वज्ह : "لِلْاِنْسَانِ" में जो लाम है वोह "عَلٰی" के मा'ना में है या'नी इन्सान पर वोही गुनाह है जो उस ने किया ।

ईसाले सवाब की हक़ीक़त

सवाब पहुंचने के क़ाइल उ़लमाए किराम पिछले बाब में मज़्कूर इन अह़ादीसे मुबारका पर क़ियास करते हैं जो ह़ज, सदक़ा, दुआ़, रोज़ा और ग़ुलाम आज़ाद करने के मुतअ़ल्लिक़ आई हैं क्यूंकि सवाब के मुन्तक़िल होने में कोई फ़र्क़ नहीं चाहे वोह ह़ज व सदक़ा का हो या वक़्फ़ व दुआ़ का या फिर तिलावते क़ुरआन का। आगे आने वाली अह़ादीसे मुबारका अगर्चे ज़ईफ़ हैं मगर इन के मजमूए़ से भी येही साबित होता है कि ईसाले सवाब की अस्ल मौजूद है और हर ज़माने में मुसलमानों का जम्अ़ हो कर बिग़ैर किसी इन्कार के अपने मुर्दों के लिये तिलावते क़ुरआन करना भी इस की दलील है और येह इजमाअ़ है। येह तमाम गुफ़्तगू ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ाफ़िज़ शम्सुद्दीन बिन अ़ब्दुल वाह़िद मक़्दिसी ह़म्बली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने मस्अलए ईसाले सवाब के मुतअ़ल्लिक़ अपने एक रिसाले में फ़रमाई है।

मय्यित को सवाब पहुंचता है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इज़्ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़तवा दिया करते थे कि मय्यित को तिलावते क़ुरआन का सवाब नहीं पहुंचता। जब आप का विसाल हुवा तो किसी ने आप को ख़्वाब में देख कर पूछा : आप फ़रमाया करते थे कि मय्यित के लिये तिलावते क़ुरआन कर के उसे सवाब बख़्शा जाए तो उसे नहीं पहुंचता अब बताइये कि मुआ़मला क्या है ? फ़रमाया : येह बात मैं दुन्या में कहा करता था अब मैं इस से रुजूअ़ कर चुका हूं क्यूंकि मैं ने इस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का करम देखा है कि मय्यित को सवाब पहुंचता है।(1)

जहां तक मुआ़मला है क़ब्र पर तिलावते क़ुरआन करने का तो इस में हमारे ह़ज़राते शाफ़ेइय्या और दीगर तमाम ही जवाज़ के क़ाइल हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ा'फ़रानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِى फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से क़ब्र के पास तिलावते क़ुरआन करने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो इन्हों ने फ़रमाया : इस में कोई ह़रज नहीं है।(2)

---

1 ... التذکرۃ للقرطبی، باب ما جاء فی قراءۃ القرآن عند القبر...الخ، ص ۸۳

2 ... القراءۃ عند القبور لابی بکر الخلال، ص ۸۹

हज़रते सय्यिदुना इमाम शरफ़ुद्दीन नववी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने "अल मुहज़्ज़ब" की शर्ह में फ़रमाया कि क़ब्रिस्तान जाने वाले के लिये मुस्तहब है कि जितना हो सके तिलावते क़ुरआन करे और फिर दुआ करे। हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى से इस की तसरीह मौजूद है और इन के अस्हाब का भी इस पर इत्तिफ़ाक़ है।(1) एक मक़ाम पर फ़रमाया : अगर क़ब्र के पास पूरा क़ुरआने पाक पढ़ लिया जाए तो ज़ियादा बेहतर है।(2)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل को जब तक इस में कोई रिवायत नहीं मिली थी आप इस के क़ाइल नहीं थे लेकिन जब आप को हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन अला बिन लजलाज رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की वोह मरफ़ूअ रिवायात पहुंचीं जो हम ने "वक़्ते दफ़्न की जाने वाली तल्क़ीन के बयान" में ज़िक्र की हैं तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने रुजूअ फ़रमा लिया।

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : अन्सार का मा'मूल था कि जब उन में से किसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो वोह आते जाते उस की क़ब्र के पास तिलावते क़ुरआन करते थे।(3)

हर मुर्दे के बदले अज्र

हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद समरक़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى ने सूरए इख़्लास के फ़ज़ाइल में अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरफ़ूअन रिवायत किया कि "जो शख़्स क़ब्रिस्तान से गुज़रते हुवे ग्यारह मरतबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरए इख़्लास) पढ़े और इस का सवाब मुर्दों को बख़्श दे तो उसे हर मुर्दे के बदले अज्र मिलेगा।"(4)

मुर्दे सिफ़ारिशी बनेंगे

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه रिवायत करते हैं कि मुअल्लिमे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो क़ब्रिस्तान जाए फिर सूरए फ़ातिहा, قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरए इख़्लास) और اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ (पूरी सूरत) पढ़े फिर कहे : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तेरे कलाम

1... المجموع شرح المهذب، يستحب للرجال زيارة القبور، ٥/٣١١

2... المجموع شرح المهذب، يستحب ان يضع راس الميت عند رجل القبر، ٥/٢٩٤

3... القراءة عند القبور لابی بكر الخلال، ص٨٩

4... فضائل سورة الاخلاص للحسن الخلال، ص١٠١، حديث:٥٤

में से जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब क़ब्रिस्तान के मुसलमान मर्दों और औरतों को देता हूं। तो येह तमाम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में उस के सिफ़ारिशी बन जाएंगे।

हज़रते सय्यिदुना हम्माद علیہ رحمۃ اللہ الجواد फ़रमाते हैं : एक रात मैं मक्कए मुकर्रमा के क़ब्रिस्तान गया तो एक क़ब्र पर सर रख कर सो गया, मैं ने ख़्वाब में मुर्दों को हल्क़े बनाए देखा तो पूछा : क्या क़ियामत क़ाइम हो गई है ? उन्हों ने कहा : नहीं। लेकिन बात येह है कि हमारे एक मुसलमान भाई ने قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (या'नी सूरए इख़्लास) पढ़ कर इस का सवाब हमें भेजा है जिसे हम एक साल से आपस में तक़्सीम कर रहे हैं।(1)

तमाम मुर्दों के बराबर नेकियां

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो क़ब्रिस्तान गया और सूरए یٰسٓ पढ़ी तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ब्रिस्तान वालों के अ़ज़ाब में कमी फ़रमा देगा और पढ़ने वाले को तमाम मुर्दों के बराबर नेकियां मिलेंगी।(2)

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی इस ह़दीसे पाक कि "अपने मुर्दों पर یٰسٓ पढ़ो"(3) की शर्ह़ करते हुवे फ़रमाते हैं : हो सकता है इस से मुराद येह हो कि जब मय्यित का वक़्ते नज़्अ़ हो उस वक़्त उस के पास पढ़ो और येह भी मुमकिन है कि क़ब्र के पास पढ़ना मुराद हो।(4)

(हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि पहली बात तो जमहूर की है जैसा कि किताब के शुरूअ़ में गुज़र चुका है और दूसरी बात के क़ाइल हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुल वाहिद मक़्दिसी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی हैं जिन का मौक़िफ़ पीछे बयान हो चुका है और (वक़्ते नज़्अ़ और क़ब्र) दोनों भी मुराद हो सकती हैं।

हमारे मुतअख़्ख़िरीन उ़लमा में से हज़रते सय्यिदुना मुहि़ब त़बरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی "इह़याउल उ़लूम" में हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی और "अल आ़क़िबा" में हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल ह़क़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ह़म्बल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَوَّل से

1... مشیخۃ قاضی المارستان، ابو نصر سلمان بن الحسن، ۳/۱۳۶۳، رقم:۷۰۶
2... التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی قراءۃ القرآن عند القبر... الخ، ص۸۰
3... ابن ماجہ، کتاب الجنائز، باب ماجاء فیما یقال عند المریض اذا حضر، ۲/۱۹۵، حدیث:۱۴۴۸
4... التذکرۃ للقرطبی، باب ماجاء فی قراءۃ القرآن عند القبر... الخ، ص۸۰

नक़्ल करते हैं कि "जब तुम क़ब्रिस्तान जाओ तो सूरए फ़ातिहा, सूरए इख़्लास और मुअ़व्वज़तैन (सूरए फ़लक़ और सूरए नास) पढ़ कर इस का सवाब क़ब्रिस्तान वालों को बख़्श दिया करो क्यूंकि येह उन्हें पहुंचता है।"[1]

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : कहा गया है कि क़िराअत का सवाब क़ारी को मिलता है मय्यित को सुनने का सवाब मिलता है इसी वज्ह से उस पर रह़म किया जाता है जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है :

وَ اِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَ اَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿۲۰۴﴾ (پ۹، الاعراف: ۲۰۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो कि तुम पर रह़म हो।*

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से येह भी बईद नहीं है कि वोह उन्हें क़ुरआने करीम पढ़ने और सुनने दोनों का सवाब एक साथ अ़ता फ़रमा दे और उन्हें हदया किया जाने वाला तिलावत का सवाब भी अ़ता फ़रमा दे चाहे उन्हों ने उसे सुना भी न हो जैसा कि सदक़ा और दुआ़ का सवाब अ़ता फ़रमाता है।[2]

अह़नाफ़ की अ़ज़ीम किताब "फ़तावा क़ाज़ी ख़ान" में है कि जो क़ब्रिस्तान में तिलावते क़ुरआन से मुर्दों को उन्सिय्यत देने की निय्यत करे वोह वहां तिलावत करे और अगर येह निय्यत न हो तो जहां चाहे पढ़े कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो सुनता है।[3]

ज़िमनी फ़स्ल

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : हमारे बा'ज़ उ़लमाए किराम ने क़ब्र के पास तिलावत से मय्यित को नफ़्अ़ पहुंचने पर इस ह़दीसे पाक से इस्तिद्लाल किया कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शाख़ के दो टुकड़े किये और उन्हें दो क़ब्रों पर गाड़ दिया[4] फिर इरशाद फ़रमाया : "उम्मीद है जब तक येह ख़ुश्क न होंगे इन के अ़ज़ाब में कमी होती रहेगी।"[5]

---

1 ... احیاء علوم الدین، کتاب ذکر الموت وما بعدہ، الباب السادس، بیان زیارۃ القبور والدعاء للمیت وما یتعلق بہ، ۵/۲۴۵

2 ... التذکرۃ للقرطبی، باب ما جاء فی قراءۃ القرآن عند القبر...الخ، ص ۸۱

3 ... فتاوی قاضیخان، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی التسبیح والتسلیم والصلاۃ علی النبی، ۴/۳۷۲

4 ... التذکرۃ للقرطبی، باب ما جاء فی قراءۃ القرآن عند القبر...الخ، ص ۷۶

5 ... مسلم، کتاب الطہارۃ، باب الدلیل علی نجاسۃ البول ووجوب الاستبراء منہ، ص ۱۶۷، حدیث: ۲۹۲

हज़रते सय्यिदुना ख़त्ताबी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : अहले इल्म के नज़्दीक इस का येह मत्लब है कि चीज़ें जब तक अपनी हक़ीक़त पर या सर सब्ज़ो शादाब रहती हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह करती रहती हैं यहां तक कि उन की तरी ख़त्म हो जाए या फिर सर सब्ज़ न रहें या अपनी अस्ल से जुदा कर दी जाएं।

आप के इलावा दीगर उ़लमा ने फ़रमाया कि जब एक "शाख़" के सबब उन के अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो रही है तो फिर मुसलमान की तिलावते क़ुरआन से तख़्फ़ीफ़ का क्या आ़लम होगा। क़ब्रों के पास दरख़्त लगाने की अस्ल येही ह़दीसे पाक है।

हज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा अस्लमी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बयान किया करते थे कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक क़ब्र के पास से गुज़रे जिस में मय्यित को अ़ज़ाब हो रहा था तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक टहनी ले कर उस पर गाड़ दी और इरशाद फ़रमाया : जब तक येह तर रहेगी इस के अ़ज़ाब में कमी होती रहेगी। हज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने वसिय्यत की थी कि जब मेरा इन्तिक़ाल हो तो क़ब्र में मेरे साथ दो तर शाख़ें रख देना। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه का इन्तिक़ाल किरमान और क़ौसैन के दरमियान हुवा तो आप के साथियों ने कहा : इन्हों ने अपनी क़ब्र में दो शाख़ें रखने की वसिय्यत की थी मगर इस जगह तो शाख़ों का नामो निशान नहीं है, अभी वोह ह़ज़रात इसी शशो पंज में थे कि सिजिस्तान से चन्द सुवार आते दिखाई दिये जिन के पास तर शाख़ें थीं उन्हों ने उन से दो शाख़ें लीं और हज़रते सय्यिदुना अबू बरज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के साथ क़ब्र में रख दीं।(1)

हज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने भी वसिय्यत की थी कि मेरी क़ब्र में दो शाख़ें रखी जाएं।(2)

बोसीदा क़ब्र वालों पर रह़मते इलाही

हज़रते सय्यिदुना कसीर बिन सालिम हैती عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی ने बड़ी शिद्दत व ताकीद के साथ वसिय्यत की थी कि अगर मेरी क़ब्र बोसीदा हो जाए तो उसे दोबारा ता'मीर न किया जाए क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बोसीदा क़ब्र वालों की तरफ़ नज़र फ़रमाता है तो उन पर रह़म फ़रमाता है लिहाज़ा मेरी भी येही तमन्ना है कि मैं उन में से हो जाऊं।

हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه बयान करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के एक नबी हज़रते सय्यिदुना अरमिया عَلَیْهِ السَّلَام चन्द क़ब्रों के पास से गुज़रे जिन्हें अ़ज़ाब हो रहा था

1... تاریخ ابن عساکر، ۶۲/۱۰۰، رقم: ۷۸۹۱: نضلة بن عبید

2... طبقات ابن سعد، ۷/۲، رقم: ۲۸۲۶: بریدة بن الحصیب

और एक साल बा'द दोबारा वहां से गुज़र हुवा तो उन का अ़ज़ाब ख़त्म हो चुका था। बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : ऐ क़ुद्दूस ! ऐ पाक ज़ात ! मैं एक साल पहले इन क़ब्र वालों के पास से गुज़रा तो येह अ़ज़ाब में मुब्तला थे और अब देखता हूं कि इन का अ़ज़ाब ख़त्म हो चुका है ? आस्मान से एक आवाज़ आई : ऐ अरमिया ! ऐ अरमिया ! इन के कफ़न फट गए, बाल बिखर गए और क़ब्रें बोसीदा हो गईं तो मैं ने इन की इस ह़ालत पर रह़्म किया और जिन मुर्दों की क़ब्रें बोसीदा, कफ़न फटे हुवे और बाल बिखरे हुवे हों मैं उन के साथ ऐसा ही करता हूं।

बाब नम्बर 52 मौत के अच्छे औक़ात का बयान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिसे रमज़ान में मौत आई वोह जन्नत में दाख़िल होगा, जो अ़रफ़ा के दिन इन्तिक़ाल कर गया वोह जन्नत में दाख़िल होगा और जिसे सदक़ा देते हुवे मौत आई वोह भी जन्नत में जाएगा।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ कहते हुवे इन्तिक़ाल कर गया वोह जन्नत में दाख़िल होगा, जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये एक रोज़ा रखा और उसी में इन्तिक़ाल कर गया तो जन्नत में दाख़िल होगा और जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये सदक़ा देते हुवे वफ़ात पा गया वोह भी जन्नत में जाएगा।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ बयान करते हैं कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان पसन्द करते थे कि आदमी को कोई नेक काम मसलन ह़ज, उ़मरा, जिहाद या माहे रमज़ान के रोज़े रखते हुवे मौत आए।(3)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ مَاتَ صَائِمًا اَوْجَبَ اللّٰہُ لَہُ الصِّیَامَ اِلٰی یَوْمِ الْقِیَامَۃِ

1... حلیۃ الاولیاء، طلحۃ بن مصرف، ۲۶/۵، حدیث: ۶۱۸۷

2... مسند امام احمد، حدیث حذیفۃ بن الیمان، ۹۰/۹، حدیث: ۲۳۳۸۴

3... حلیۃ الاولیاء، خیثمۃ بن عبد الرحمٰن، ۱۲۳/۴، رقم: ۴۹۸۵

या'नी जो रोज़े की ह़ालत में इन्तिक़ाल करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन तक उसे रोज़ादार का सवाब अ़ता फ़रमाता है।[1]

अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स शबे जुमुआ़ या रोज़े जुमुआ़ इन्तिक़ाल कर जाए वोह अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़ रखा जाएगा और बरोज़े क़ियामत इस ह़ाल में आएगा कि उस पर शहीदों की मोहर होगी।[2]

अ़ज़ाबे क़ब्र से छुटकारा और दोज़ख़ से आज़ादी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : जुमुआ़ की रात चमकदार और दिन रौशन है[3] तो जो कोई शबे जुमुआ़ इन्तिक़ाल करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये अ़ज़ाबे क़ब्र से छुटकारा लिख देता है[4] और जो जुमुआ़ के दिन इन्तिक़ाल करता है उसे दोज़ख़ से आज़ाद फ़रमा देता है।

बाब नम्बर 53

मौत के बा'द बन्दे को जल्दी जन्नत में पहुंचाने वाले आ'माल का बयान

मरते ही जन्नत में दाख़िला

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द आयतुल कुरसी पढ़ी उसे जन्नत में जाने से सिवाए मौत के कोई चीज़ नहीं रोक सकती।[5]

1 ...فردوس الاخبار، ۲/۲۷۴، حدیث: ۵۹۶۷

2 ...حلیۃ الاولیاء، محمد بن المکندر، ۳/۱۸۱، حدیث: ۳۶۲۹

3 ...مسند امام احمد، مسند عبد اللہ بن العباس، ۱/۵۵۷، حدیث: ۲۳۴۶، عن انس بن مالک

4 ...مصنف عبد الرزاق، کتاب الجنائز، باب من مات یوم الجمعۃ، ۳/۱۴۹، حدیث: ۵۶۱۲، عن ابن شہاب

5 ...سنن کبری للنسائی، کتاب عمل الیوم و اللیلۃ، ثواب من قرأ آیۃ الکرسی دبر کل صلاۃ، ۶/۳۰، حدیث: ۹۹۲۸

हज़रते सय्यिदुना सल्साल बिन दलहमस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से येह हदीसे पाक इस तरह मरवी है कि "जिस ने हर नमाज़ के बा'द आयतुल कुरसी पढ़ी उस के और जन्नत में दाख़िल होने के दरमियान सिर्फ़ मौत है, वोह मरते ही जन्नत में चला जाएगा।"(1)

बाब नम्बर 54 अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام और उन से मुल्हिक़ अफ़राद के सिवा दीगर मय्यितों के बदबूदार होने और जिस्म ख़राब होने का बयान

हज़रते सय्यिदुना जुन्दुब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि "सब से पहले मुर्दे का पेट बदबूदार होता है।"(2)

हिक्मते इलाही

हज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने एक किताब में (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान) पढ़ा कि अगर मैं मय्यित का बदबूदार होना मुक़द्दर न फ़रमाता तो लोग उसे अपने घरों में ही रख लेते।(3)

हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मैं ने तीन चीज़ों से अपने बन्दों पर वुस्अ़त की : (1) ग़ल्ला में घुन पैदा कर दिया वरना बादशाह इसे सोने चांदी की तरह जम्अ़ कर लेते (2) मौत के बा'द जिस्म में तग़य्युर पैदा फ़रमा दिया वरना कोई भी अपने दोस्त को दफ़्न न करता और (3) ग़मगीन को उस का ग़म भुला दिया वरना उसे कभी चैन न आता।"(4)

सब से ज़ियादा ख़ुश्बूदार चीज़

हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रूह से ज़ियादा ख़ुश्बूदार कोई चीज़ पैदा नहीं फ़रमाई कि जब रूह किसी चीज़ से निकलती है तो

❶...شعب الایمان، باب فی تعظیم القرآن، ۲/۴۵۵، حدیث: ۲۳۸۵مکرر

❷...بخاری، کتاب الاحکام، باب من شاق شق اللہ علیہ، ۴/۴۵۶، حدیث: ۷۱۵۲

❸...حلیۃ الاولیاء، وھب بن منبہ، ۴/۴۰، رقم: ۴۶۸۰

❹...تاریخ ابن عساکر، ۶۴/۳۴۴، رقم: ۸۱۸۵: یحیی بن علی بن محمد بن ھاشم، حدیث: ۱۳۱۵۶

वोह चीज़ बदबूदार हो जाती है।[1]

जिस्म की हर चीज़ गल जाएगी सिवाए एक हड्डी के

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन्सान की हर चीज़ गल जाएगी सिवाए एक हड्डी के और वोह रीढ़ की एक हड्डी है[2] इस से क़ियामत के दिन मख़्लूक़ को मुरक्कब किया (या'नी दोबारा बनाया) जाएगा।[3]

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन्सान के पूरे जिस्म को मिट्टी खा लेगी सिवाए रीढ़ की एक हड्डी के कि इस से पैदा किया गया और इसी से दोबारा उठाया जाएगा।[4]

शारेहे मवाक़िफ़ हज़रते सय्यिद शरीफ़ अ़ली बिन मुह़म्मद जुरजानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बदन के अज्ज़ा को मा'दूम (या'नी बिल्कुल ख़त्म) कर के फिर पैदा फ़रमाएगा या उन्हें मुन्तशिर कर के दोबारा जम्अ़ फ़रमाएगा। ह़क़ येह है कि इन में से कोई बात साबित नहीं और यक़ीन के साथ इन्कार किया जा सकता है न इस्बात हो सकता है क्यूंकि दोनों में से किसी एक पर भी दलील नहीं है और इस फ़रमाने बारी तआ़ला كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ "या'नी हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के" में मा'दूम करने पर दलील नहीं है इस लिये कि जिस त़रह़ मा'दूम करना हलाक करना है इसी त़रह़ मुन्तशिर व तफ़रीक़ करना भी हलाक करना है क्यूंकि हर शै का हलाक होना येह है कि उस की वोह सिफ़ात ख़त्म हो जाएं जो उस से मत़लूब व मक़्सूद होती हैं और मुजतम्अ़ शै का ज़ाइल होना भी ऐसा ही है और इसी अ़मल को उ़र्फ़ी त़ौर पर फ़ना कहते हैं लिहाज़ा इस फ़रमाने बारी तआ़ला كُلُّ مَنْ عَلَیْهَا فَانٍ "या'नी ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है" से भी इस्तिद्लाल कामिल नहीं हो सकता है।[5]

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، عبد اللہ بن زید الجرمی، ۲/۳۲۵، حدیث: ۲۴۲۵

2 .....अगर यहां येह ही हड्डी मुराद है तो ह़दीस के मा'ना येह हैं कि येह हड्डी जल्द फ़ना नहीं होती इसे ख़ाक सौ बरस के बा'द गलाती है और अगर इस से मुराद हैं अज्ज़ाए असलिय्या जो इन्सान की जिस्म की अस्ल हैं तो वोह वाक़ेई कभी फ़ना नहीं होते येह ऐसे बारीक अज्ज़ा हैं जो ख़ुर्द बीन से भी देखने में नहीं आते। (मिरआतुल मनाजीह़, 7 / 355)

3 ...مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعۃ، باب ما بین النفختین، ص ۱۵۸۱، حدیث: ۲۹۵۵

4 ...مسلم، کتاب الفتن واشراط الساعۃ، باب ما بین النفختین، ص ۱۵۸۱، حدیث: ۱۴۲(۲۹۵۵)

5 ...شرح المواقف الشریف الجرجانی، المرصد الثانی فی المعاد، المقصد الثانی فی حشر الاجساد، ۸/۳۲۴

हयाते अम्बिया की दलील

हज़रते सय्यिदुना औस बिन औस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जुमुआ के दिन मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो क्यूंकि तुम्हारा दुरूद मुझे पेश किया जाता है। सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! हमारे दुरूद आप पर कैसे पेश होंगे आप तो रमीम (या'नी गली हड्डी) हो चुके होंगे।[1] इरशाद फ़रमाया : اِنَّ اللہَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاء या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अम्बिया के जिस्मों को ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है।[2]

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब कोई मुझ पर दुरूद पढ़ता है तो उस का दुरूद पढ़ते ही मुझ पर पेश कर दिया जाता है। मैं ने अ़र्ज़ की : और विसाल शरीफ़ के बा'द ? इरशाद फ़रमाया : وَبَعْدَ الْمَوْتِ اِنَّ اللہَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاء या'नी विसाल के बा'द भी क्यूंकि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अम्बिया के जिस्मों को ख़राब करना ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है।[3]

सालहा साल बा'द भी जिस्म सह़ीह़ व सलामत रहा

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू सा'सआ़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि एक ही क़ब्र में मदफ़ून ग़ज़्वए उहुद के दो शुहदा हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन जमूह़ अन्सारी और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र अन्सारी (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की क़ब्र को सैलाब ने उखाड़ दिया था क्यूंकि उन की क़ब्र सैलाबी ज़मीन के क़रीब थी। जब उन्हें दूसरी जगह मुन्तक़िल करने के लिये क़ब्र को खोदा गया तो उन दोनों के जिस्म ऐसे थे गोया कल ही वफ़ात हुई है, उन में से एक ज़ख़्मी हुवे

---

1 .....येह सुवाल इन्कार के लिये नहीं बल्कि कैफ़िय्यत पूछने के लिये है या'नी आप की वफ़ात के बा'द हमारे दुरूदों की पेशी फ़क़त आप की रूह़ पर होगी या रूह़ मअ़ जिस्म पर। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2 / 323)

2 ... ابوداود، كتاب الصلاة، باب فضل يوم الجمعة وليلة الجمعة، ۱/۳۹۱، حديث: ۱۰۴۷

3 ... ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته ودفنه، ۲/۲۹۱، حديث: ۱۶۳۷

थे और उन्हों ने अपना हाथ ज़ख़्म पर रखा हुवा था, जब हाथ को ज़ख़्म से हटा कर छोड़ा गया तो वोह दोबारा ज़ख़्म पर आ गया। उस वक़्त ग़ज़्वए उहुद को 46 साल गुज़र चुके थे।(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम बैहक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی की दलाइलुन्नुबुव्वह में कुछ इस तरह है कि "जब उन का हाथ हटाया गया तो ख़ून बहने लगा फिर हाथ दोबारा उसी जगह पर रखा गया तो ख़ून बन्द हो गया।"(2)

इसी में है कि "हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने नहर बनाने का इरादा किया तो ए'लान करवा दिया कि यहां जिस का कोई शहीद रिश्तेदार मदफ़ून है वोह हाज़िर हो जाए। चुनान्चे, लोग अपने शहीद रिश्तेदारों के पास आए तो उन्हें बिल्कुल तरो ताज़ा पाया यहां तक कि एक मदफ़ून शख़्स के पाउं पर फावड़ा लग गया तो ख़ून बह निकला, येह देख कर हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : अब कोई मुन्किर ह़याते शुहदा का इन्कार नहीं करेगा। लोग मिट्टी निकाल रहे थे और मुश्क की सी ख़ुश्बू फैलती जा रही थी।(3)

बनू सलमा के चन्द अफ़राद का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ ने जब शुहदा की क़ब्रों से गुज़रने वाली नहर का रुख़ मोड़ने का इरादा किया तो हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन ह़िराम और हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन जमूह़ (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) की क़ब्रें खुल गईं, हम ने उन्हें निकाला तो वोह ऐसे तरो ताज़ा थे गोया कल ही उन का इन्तिक़ाल हुवा हो, उन पर दो चादरें थीं जिन से उन के चेहरे ढके हुवे थे जब कि पैरों पर घास वग़ैरा डाली गई थी।(4)

दलाइलुन्नुबुव्वह में है कि "नहर की खुदाई के दौरान किसी का फावड़ा सय्यिदुश्शुहदा हज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهُ के क़दम पर लग गया तो उस से ख़ून जारी हो गया।"(5)

---

1 ...موطا امام مالک، کتاب الجھاد، باب الدفن فی قبر واحد...الخ، ۲/۲۷، حدیث: ۱۰۴۴

2 ...دلائل النبوة للبیهقی، باب ما جری بعد انقضاء الحرب...الخ، ۳/۲۹۳

3 ...دلائل النبوة للبیهقی، باب ما جری بعد انقضاء الحرب...الخ، ۳/۲۹۴

4 ...مصنف ابن ابی شیبة، کتاب المغازی، هذا ما حفظ ابو بکر فی احد وما جاء فیها، ۸/۴۸۸، حدیث: ۱۷

5 ...نوادر الاصول، الاصل الحادی والتسعون والمائة، ۲/۷۲۱، حدیث: ۹۹۷

सवाब की उम्मीद पर अज़ान देने का अज्र

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सवाब की उम्मीद पर अज़ान देने वाला मुअज़्ज़िन ख़ून में तड़पते शहीद की त़रह़ है जब उस का इन्तिक़ाल होगा तो उस की क़ब्र में कीड़े नहीं आएंगे।(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम क़ुरत़ुबी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने फ़रमाया : सवाब की उम्मीद पर अज़ान देने वाले मुअज़्ज़िन को भी ज़मीन नहीं खाएगी।(2)

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : बरोज़े क़ियामत मुअज़्ज़िनीन की गर्दनें लम्बी होंगी और उन की क़ब्रों में कीड़े भी नहीं पड़ेंगे।(3)

हाफ़िज़े क़ुरआन का मक़ामो मर्तबा

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब हाफ़िज़े क़ुरआन इन्तिक़ाल करता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ज़मीन को हुक्म देता है कि उस के गोश्त को मत खाना। ज़मीन अ़र्ज़ करती है : ऐ मेरे रब ! मैं इस के गोश्त को कैसे खा सकती हूं ह़ालांकि तेरा कलाम इस के सीने में है।(4)

ज़मीन किस जिस्म पर मुसल्लत़ नहीं होती ?

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि ज़मीन उस जिस्म पर मुसल्लत़ नहीं होती जिस ने कभी कोई गुनाह न किया हो।

...

(1)... معجم کبیر، ۱۲/ ۳۲۲، حدیث: ۱۳۵۵۴

(2)... التذکرۃ للقرطبی، باب لا تاکل الارض اجساد الانبیاء ولا الشهداء وانهم احیاء، ص ۱۵۸

(3)... مصنف عبد الرزاق، کتاب الصلاۃ، باب فضل الاذان، ۱/ ۳۵۹، حدیث: ۱۸۶۴

(4)... فردوس الاخبار، ۱/ ۱۲۸، حدیث: ۱۱۱۹

खातिमा

रूह से तअ़ल्लुक़ रखने वाले फ़वाइद

(हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं :) मैं ने इस का अक्सर हिस्सा इब्ने क़य्यिम की किताबुर्रूह़ से मुलख़्ख़स किया है।

पहला फ़ाएदा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ मदीना शरीफ़ के एक वीराने में था और आप खजूर के एक तने से टेक लगाए बैठे थे कि वहां से चन्द यहूदियों का गुज़र हुवा, उन में से कुछ ने कहा : इन (ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से रूह़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछते हैं। बा'ज़ ने कहा : तुम इन से मत पूछो। बहर ह़ाल उन्हों ने कहा : या मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ! रूह़ क्या है ? आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वैसे ही टेक लगाए रहे, मैं समझ गया कि आप पर वह़्य का नुज़ूल हो रहा है। फिर आप ने येह आयते मुबारका पढ़ी :

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ اَمْرِ رَبِّیْ وَمَاۤ اُوْتِیْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِیْلًا ﴿۸۵﴾

(پ۱۵،بنی اسرآئیل:۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से रूह़ को पूछते हैं तुम फ़रमाओ कि रूह़ मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है और तुम्हें इ़ल्म न मिला मगर थोड़ा। (1)

रूह़ के बारे में लोगों के दो गुरौह हो गए हैं, एक गुरौह इस के मुतअ़ल्लिक़ कलाम नहीं करता क्यूंकि येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के राज़ों में से एक राज़ है, इस का कामिल इ़ल्म इन्सान को नहीं दिया गया। इस मस्अले में बेहतर रास्ता ख़ामोशी ही है।

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : रूह़ का इ़ल्म अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ ख़ास है उस ने अपनी मख़्लूक़ में से किसी को इस पर मुत्त़लअ़ नहीं किया, लोगों के लिये इस में बह़्स करना जाइज़ नहीं बस समझ लें कि रूह़ मौजूद है, येही त़रीक़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और दीगर अस्लाफ़ का था बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا तो रूह़ की तफ़्सीर भी नहीं करते थे।

---

(1)... بخاری، کتاب العلم، باب قول اللہ تعالٰی: وما اوتیتم من العلم الا قلیلا، ۱/۶۲، حدیث: ۱۲۵

हज़रते सय्यिदुना इकरिमा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रूह़ के मुतअ़ल्लिक़ पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : रूह़ मेरे रब के हुक्म से एक चीज़ है। तुम इस मस्अले में न पड़ो और इतना ही कहो जितना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया और उस के नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सिखाया है क्यूंकि

وَمَاۤ اُوْتِیْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا قَلِیْلًا ۝۸۵

(پ۱۵، بنی اسرآءیل: ۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम्हें इ़ल्म न मिला मगर थोड़ा।*

जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो यहूद ने कहा : हमारी किताबों में भी यूंही है।

(हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی फ़रमाते हैं :) मैं कहता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद और तौरात शरीफ़ में इस मस्अले को पोशीदा रखा और अपनी मख़्लूक़ को इस का इ़ल्म अ़ता न फ़रमाया तो फिर इ़ल्म के समन्दर में ग़ोता़ज़न अफ़राद को भला इस की ह़क़ीक़त तक रसाई कैसे मुमकिन है। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबुल क़ासिम क़ुशैरी सा'दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने "ईज़ाह़" में फ़रमाया कि बड़े बड़े फ़लासफ़ा भी इस मस्अले में ख़ामोश हो गए और कहा कि येह मुआ़मला हम पर वाज़ेह़ नहीं है और न ही अ़क़्लों को उस तक रसाई है, जैसे हम तक़्दीर के राज़ पर वाक़िफ़ नहीं हैं यूंही रूह़ की ह़क़ीक़त तक भी हमारे इ़ल्म की रसाई नहीं है।

रूह़ का इ़ल्म मख़्फ़ी रखने की ह़िक्मत

इब्ने बत़्त़ाल ने कहा : रूह़ का इ़ल्म मख़्फ़ी रखने में ह़िक्मत येह है कि मख़्लूक़ को बताया जाए कि उन्हें जिस शै का इदराक नहीं वोह उसे जानने से आ़जिज़ व बेबस हैं ह़त्ता कि उन्हें इ़ल्म को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करने पर मजबूर कर दिया जाए।(1)

हज़रते सय्यिदुना इमाम कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : रूह़ के मुआ़मले से इन्सान को ला इ़ल्म रखने में ह़िक्मत येह है कि बन्दे के आ़जिज़ होने का इज़्हार हो जाए क्यूंकि बन्दा जब अपनी ह़क़ीक़त जानने से क़ासिर है ह़ालांकि इस का वुजूद ज़ाहिर है तो भला अल्लाह سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰی की ह़क़ीक़त को क्यूंकर जान सकता है? येह बिल्कुल ऐसा ही है जैसे आंख ख़ुद अपने आप को नहीं देख सकती।

(1)... شرح بخاری لابن بطال، کتاب العلم، باب قول اللہ تعالی: وما اوتیتم من العلم الا قلیلا، ۱/۲۰۴

एक गुरौह ने रूह़ की ह़क़ीक़त में बह़्सो मुबाह़सा किया है। जब कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम नववी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : इस मुआ़मले में सब से दुरुस्त क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना इमामुल ह़रमैन رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه का है कि "रूह़ एक लत़ीफ़ जिस्म है जो कसीफ़ जिस्मों में इस त़रह़ दाख़िल है जिस त़रह़ सर सब्ज़ टहनी में पानी।"

दूसरा फ़ाएदा

अह्ले त़रीक़त का पहला गुरौह इस बात में इख़्तिलाफ़ रखता है कि क्या हु़ज़ूर नबिय्ये ग़ैब दान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रूह़ का इ़ल्म था या नहीं ? चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो आप को रूह़ की ह़क़ीक़त का इ़ल्म न था।(1) दूसरा गुरौह कहता है : आप को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने रूह़ का इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया था मगर अपनी उम्मत को बताने की इजाज़त न थी। येह इख़्तिलाफ़ इ़ल्मे क़ियामत के इख़्तिलाफ़ की त़रह़ है।

तीसरा फ़ाएदा

अक्सर मुसलमानों का नज़रिया है कि रूह़ एक जिस्म है और किताब व सुन्नत और इजमाअ़ से भी येही साबित है क्यूंकि आयात व अह़ादीस में इस की वोह सिफ़ात बयान हुई हैं जो जिस्म की होती हैं मसलन : क़ब्ज़ करना, छोड़ना, लेना, निकालना, निकलना, आराम पाना, दुख उठाना, जाना, वापस आना, राज़ी होना, नाराज़ होना, मुन्तक़िल होना, खाना पीना, सैर करना, आराम करना, लटकना, बोलना और पहचानना न पहचानना वग़ैरा वग़ैरा। येह सब वोह सिफ़ात हैं जो किसी अ़र्ज़ को लाह़िक़ नहीं हो सकतीं और इस में भी कोई शक नहीं कि रूह़ ख़ुद को और अपने ख़ालिक़ عَزَّوَجَلَّ को पहचानती है और मा'क़ूलात को भी जानती है। येह सब बातें उ़लूम हैं और उ़लूम अ़र्ज़ होते हैं। अगर रूह़ को भी अ़र्ज़ मान लिया जाए तो अ़र्ज़ का अ़र्ज़ के साथ क़ियाम लाज़िम आएगा और येह फ़ासिद है।

ह़ज़रते सय्यिदुना उस्ताद अबुल क़ासिम क़ुशैरी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : रूह़ का सूरतन अज्सामे लत़ीफ़ा में से होना ऐसा ही है जैसे फ़िरिश्ते और जिन्नात लत़ाफ़त की सिफ़त से मुत्तसिफ़ हैं।(2)

1... تفسیر ابن ابی حاتم، سورۃ النبأ، تحت الآیۃ:۳۸، ۱۰/ ۳۳۹۲، حدیث:۱۹۱۰۷، عن الشعبی

2... رسالہ قشیریہ، النفس، ص۱۲۳

चौथा फ़ाएदा

दुरुस्त येह है कि रूह़ और नफ़्स एक ही चीज़ है। इरशादे बारी तआ़ला है :

يَاۤ اَیَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَىٕنَّةُ ﴿۲۷﴾ ارْجِعِیۡۤ اِلٰی رَبِّكِ (پ۳۰،الفجر:۲۷،۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ इत़मीनान वाली जान अपने रब की त़रफ़ वापस हो।*

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَ نَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰی ﴿۴۰﴾ (پ۳۰،النّٰزعٰت:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका।*

और कहा जाता है فَاضَتْ نَفْسُهٗ "या'नी इस की रूह़ परवाज़ कर गई" मत़लब येह कि रूह़ निकल गई।

बा'ज़ अह्ले सुन्नत का कहना है कि जो रूह़ क़ब्ज़ की जाती है वोह नफ़्स के इ़लावा है इस की ताईद दर्जे ज़ैल आयते मुबारका के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की तफ़्सीर से होती है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला है :

اَللّٰهُ یَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِیْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا ۚ فَیُمْسِكُ الَّتِیْ قَضٰی عَلَیْهَا الْمَوْتَ وَ یُرْسِلُ الْاُخْرٰۤی اِلٰۤی اَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ (پ۲۴،الزمر:۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक रखता है और दूसरी एक मीआ़दे मुक़र्रर तक छोड़ देता है।*

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने इस की तफ़्सीर में फ़रमाया : इन्सान के अन्दर रूह़ और नफ़्स का तअ़ल्लुक़ ऐसे है जैसे आफ़्ताब का अपनी शुआ़अ़ से, पस नींद में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नफ़्स को क़ब्ज़ फ़रमा लेता है और रूह़ को जिस्म में ही घूमने फिरने के लिये छोड़ देता है और जब वोह रूह़ क़ब्ज़ करने का इरादा फ़रमाता है तो इन्सान मर जाता है और अगर उस की ज़िन्दगी बाक़ी हो तो उस क़ब्ज़ शुदा नफ़्स को जिस्म में वापस उस की जगह लौटा देता है।(1)

---

(1)... تفسیر ابن ابی حاتم، سورۃ الزمر، تحت الآیۃ:۴۲، ۱۰/ ۳۲۵۲، حدیث:۱۸۳۹۷

हयात, नफ़्स और रूह़

मुक़ातिल का बयान है कि इन्सान के लिये ह़यात, नफ़्स और रूह़ तीन चीज़ें हैं, जब इन्सान सोता है तो चीज़ों का पहचानने वाला उस का नफ़्स निकल जाता है मगर पूरी त़रह़ नहीं निकलता बल्कि इस त़रह़ होता है जैसे किसी तनी हुई रस्सी के साथ इस का हल्का सा साया होता है पस बन्दा इसी नफ़्स के ज़रीए ख़्वाब देखता है जो निकल चुका होता है। अब जिस्म में ह़यात और रूह़ रह जाती हैं जिस्म इन ही दो में गर्दिश करता और सांस लेता है, जब बन्दा ह़रकत करता है तो नफ़्स पलक झपकने से भी जल्दी उस की त़रफ़ लौट आता है, अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बन्दे को हालते नींद में ही मौत देना चाहे तो नफ़्स को अपने पास रोक लेता है। आप मज़ीद फ़रमाते हैं : जब नफ़्स निकलता है तो ऊपर को बुलन्द होता है और जब ख़्वाब देख लेता है तो वापस आ जाता है और रूह़ को बताता है फिर रूह़ दिल को बताती है और जब बन्दा सुब्ह़ करता है तो उसे मा'लूम होता है कि मैं ने ऐसा ऐसा देखा।

नफ़्स और रूह़ का मस्कन

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : इन्सान का नफ़्स भी चौपाइयों के नफ़्स की त़रह़ बनाया गया है कि ख़्वाहिशात रखता और बुराई की त़रफ़ बुलाता है और इस की क़ियाम गाह पेट है, इन्सान को रूह़ के ज़रीए फ़ज़ीलत दी गई है और इस का मस्कन दिमाग़ है, पस इसी के ज़रीए इन्सान ज़िन्दा रहता है और येह इन्सान को भलाई की त़रफ़ बुलाती और इस का हुक्म देती है। इतना कहने के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने अपने हाथ पर फूंक मार कर फ़रमाया : तुम देखो कि येह ठन्डी है और येह रूह़ की त़रफ़ से है। फिर अपने हाथ पर लम्बा सांस ले कर फ़रमाया : येह गर्म है और येह नफ़्स की त़रफ़ से है। रूह़ और नफ़्स की मिसाल मियां बीवी की सी है कि जब रूह़ दौड़ कर नफ़्स की त़रफ़ जाती है और दोनों की मुलाक़ात होती है तो इन्सान सो जाता है और जब जागता है तो रूह़ अपनी जगह लौट आती है। इस की वज़ाह़त येह है कि जब तुम सो कर जागते हो तो ऐसा लगता है गोया कोई चीज़ तुम्हारे सर की त़रफ़ फैल रही है। दिल की मिसाल बादशाह की सी है और आ'ज़ा उस के ख़ादिम हैं, जब नफ़्स बुराई का हुक्म देता है तो ख़्वाहिश उभरती है और आ'ज़ा ह़रकत में आ जाते हैं, रूह़ इन्हें रोकती और भलाई की त़रफ़ बुलाती है, अब अगर दिल मोमिन हो तो वोह रूह़ की इत़ाअ़त करता है और अगर काफ़िर हो तो नफ़्स की मानता और रूह़ की ना फ़रमानी करता है पस आ'ज़ा पुरजोश हो जाते हैं।(1)

1... العظمة لابی الشیخ الاصبہانی، صفة الروح، ص ١٥٤، حديث: ٤٢٩

हज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान को मिट्टी और पानी से पैदा किया फिर उस में नफ़्स पैदा किया जिस के सबब वोह उठता बैठता और सुनता देखता है और जो कुछ चोपाए जानते हैं येह भी जानता है और जिन से वोह बचते हैं येह भी बचता है, फिर उस में रूह़ रखी गई तो उस के ज़रीए उस ने ह़क़ व बात़िल और हिदायत व गुमराही में फ़र्क़ को पहचाना, इसी के ज़रीए वोह डरा, आगे बढ़ा, पर्दा किया, इ़ल्म सीखा और तमाम कामों में ग़ौरो फ़िक्र करने लगा ।[1]

नफ़्स और रूह़ की मिसाल

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के शागिर्द हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : नफ़्स इन्सान की त़रह़ एक मुजस्सम जिस्म है और रूह़ बहते पानी की त़रह़ है । दलील येह आयते मुबारका है :

اَللّٰهُ یَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِیْنَ مَوْتِهَا وَ الَّتِیْ لَمْ تَمُتْ فِیْ مَنَامِهَا ۚ فَیُمْسِكُ الَّتِیْ قَضٰى عَلَیْهَا الْمَوْتَ وَ یُرْسِلُ الْاُخْرٰۤى اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ (پ۲۴، الزمر: ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक रखता है और दूसरी एक मीआ़द मुक़र्रर तक छोड़ देता है ।*

फ़रमाते हैं : क्या तुम सोने वाले को नहीं देखते कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के नफ़्स को क़ब्ज़ फ़रमा लेता है और रूह़ कभी ऊपर जाती और कभी नीचे आती है और उस की सांसें भी चल रही होती हैं । जब कि रूह़ मुख़्तलिफ़ जगहों पर सैर करती है और वोह देखती है जिसे तुम ख़्वाब कहते हो, जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे जिस्म की त़रफ़ लौटने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाता है तो वोह लौट आती है, उस के लौटते ही जिस्म के तमाम आ'ज़ा जाग जाते हैं । नफ़्स, रूह़ के इ़लावा है और रूह़ बाग़ात में बहते पानी की त़रह़ है कि जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किसी बाग़ को वीरान करने का इरादा फ़रमाता है तो बहते पानी को उस से रोक लेता है यूं उस के फल फूल वग़ैरा मर जाते हैं पस येही ह़ाल इन्सान का है ।[2]

---

1 ... طبقات ابن سعد، ذکر من ولد رسول اللہ من الانبیاء، ۱/۲۴

2 ... التمهيد، باب الزاء، زيد بن اسلم مولى عمر بن الخطاب، ۲/۵۸۸، تحت الحديث: ۱۱۳

हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अबू जा'फ़र رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मय्यित को जब चारपाई पर ले कर चलते हैं तो उस की रूह़ एक फ़िरिश्ते के हाथ में होती है जो उस के साथ चलता है फिर जब उस को नमाज़ के लिये रखते हैं तो वोह फ़िरिश्ता रुक जाता है और जब दफ़्न के लिये ले कर चलते हैं तो वोह फ़िरिश्ता भी साथ चलता है और जब उस को क़ब्र में रख कर मिट्टी डाल दी जाती है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की रूह़ को लौटा देता है ताकि मुन्कर नकीर उस से सुवालात करें, नकीरैन जब उस से फ़ारिग़ हो जाते हैं तो वोह फ़िरिश्ता उस की रूह़ को निकाल कर वहां पहुंचा देता है जहां का उसे हुक्म होता है। येह फ़िरिश्ता हज़रते सय्यिदुना मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के मुआ़विनीन में से होता है।(1)

रूहे़ यक़ज़ा और रूहे़ ह़यात

हज़रते सय्यिदुना शैख़ इ़ज़्ज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : हर इन्सान में दो रूहें हैं। **एक** रूहे़ यक़ज़ा (या'नी जागती रूह़) कि इस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ़दते जारिया है कि जब येह जिस्म में हो तो इन्सान बेदार रहता है और जब निकल जाए तो इन्सान सो जाता है और येह रूह़ ख़्वाब देखती है। **दूसरी** रूहे़ ह़यात (ज़िन्दगी की रूह़) है इस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की आ़दते जारिया है कि जब येह जिस्म में होगी तो वोह ज़िन्दा होगा और जब जिस्म से जुदा होगी तो मर जाएगा और जब दोबारा उस की त़रफ़ लौटाई जाएगी तो ज़िन्दा हो जाएगा। येह दोनों रूहें इन्सान के अन्दर होती हैं इन के ठिकाने की ख़बर उसी को होती है जिसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुत्त़लअ़ फ़रमा दे। येह ऐसे ही है जैसे एक औ़रत के पेट में दो बच्चे।

बा'ज़ मुतकल्लिमीन फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि रूह़ दिल के क़रीब होती है जब कि हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे नज़दीक येह भी बई़द नहीं है कि रूह़ दिल में हो। हो सकता है तमाम अरवाह़ नूरानी, लत़ीफ़ और शफ़्फ़ाफ़ हों और येह भी मुमकिन है कि येह सिफ़त सिर्फ़ मुसलमानों और फ़िरिश्तों की रूहों के साथ ख़ास हो न कि कुफ़्फ़ार व शयात़ीन की रूहों के साथ। रूहे़ ह़यात (या'नी ज़िन्दगी की रूह़) पर येह फ़रमाने बारी तआ़ला दलालत करता है :

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۱﴾ (پ۲۱، السجدۃ:۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ तुम्हें वफ़ात देता है मौत का फ़िरिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर है फिर अपने रब की त़रफ़ वापस जाओगे।*

1... التمهيد، باب الزاء، زيد بن اسلم مولى عمر بن الخطاب، ۲/۵۸۸، تحت الحديث: ۱۱۳

और रूहे ह़यात और रूहे यक़्ज़ा पर येह फ़रमाने बारी तआ़ला दलालत कर रहा है :

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰۤى اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ (پ۲۴، الزمر: ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में फिर जिस पर मौत का हुक्म फ़रमा दिया उसे रोक रखता है और दूसरी एक मीआ़दे मुक़र्रर तक छोड़ देता है ।

इस के मा'ना येह हैं कि नींद में जिन रूहों को क़ब्ज़ फ़रमाता है जिस से अज्साम मरते नहीं हैं । पस जिन के लिये मौत का फ़ैसला फ़रमा देता है उन रूहों को अपने पास रोक लेता है और उन्हें जिस्मों की त़रफ़ रवाना नहीं फ़रमाता और दूसरी रूहों को वापस लौटा देता है । येह लौटाई जाने वाली अरवाह़ यक़्ज़ा ही होती हैं जो वक़्ते मुक़र्ररा या'नी मौत के वक़्त तक जिस्मों की त़रफ़ लौटाई जाती हैं, पस जब मौत का वक़्त आता है तो अरवाहे ह़यात और अरवाहे यक़्ज़ा दोनों को क़ब्ज़ कर लिया जाता है । अरवाहे ह़यात मरती नहीं हैं बल्कि आस्मान की त़रफ़ ज़िन्दा ही बुलन्द हो जाती हैं, कुफ़्फ़ार की रूहों को धुतकार दिया जाता है और उन के लिये आस्मान का दरवाज़ा नहीं खोला जाता जब कि मुसलमानों की अरवाह़ के लिये आस्मान के दरवाज़े खुल जाते हैं यहां तक कि वोह बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर हो जाती हैं । वाह ! क्या ही अ़ज़्मत व शरफ़ वाली ह़ाज़िरी है । ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ इज़ुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का कलाम ख़त्म हुवा ।

(ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى फ़रमाते हैं :) येह जो बयान हुवा कि "रूह़ का मस्कन दिल है ।" ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى ने अपनी किताब "अल इन्तिसार" में इसी को ह़तमी त़ौर पर बयान फ़रमाया है और मैं इस के ह़क़ में एक ह़दीस शरीफ़ पाने में कामयाब हुवा हूं जिस की तख़रीज ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़ाकिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाई है । चुनान्चे,

जिस्म में रूह़ की क़ियामगाह

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى बयान करते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ुज़ैमा बिन ह़कीम सुलमी नुमैरी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़त्ह़े मक्का के दिन बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवे और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे रात के अंधेरे, दिन की रौशनी, सर्दियों में पानी के गर्म होने, गर्मियों में ठन्डा होने, बादलों के निकलने, मर्द व औ़रत के पानी के ठहरने और जिस्म में रूह़

के मक़ाम के मुतअ़ल्लिक़ ख़बर दीजिये। रावी ने पूरी ह़दीस बयान की जिस में हुज़ूर नबिय्ये ग़ैबदान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह जवाब भी था कि "रूह़ की जगह दिल में है और दिल एक बड़ी रग के साथ लटका हुवा है जो दूसरी रगों को सैराब करती है, जब दिल हलाक होता है तो वोह रग जुदा हो जाती है।"(1) येह ह़दीसे पाक त़वील है।

पांचवां फ़ाएदा

अह्ले सुन्नत व जमाअ़त का इजमाअ़ है कि रूह़ ह़ादिस और मख़्लूक़ है और इस में ज़िन्दीक़ों के इ़लावा किसी ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया। इस के ह़ादिस होने पर जिन ह़ज़रात ने इजमाअ़ नक़्ल किया है उन में ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन नस्र मरवज़ी और ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने क़ुतैबा رَحْمَةُ اللّٰهِ تعَالٰی عَلَیْهِمَا शामिल हैं और उस की एक दलील येह ह़दीसे पाक भी है कि "रूहें मख़्लूत़ लश्कर थीं"(2) और लश्कर मख़्लूक़ ही होता है। आने वाले "फ़ाएदे" में भी इस का बयान है।

छटा फ़ाएदा

इस में इख़्तिलाफ़ है कि अरवाह़ पहले पैदा हुईं या अज्साम? रूह़ के पहले पैदा होने का क़ौल ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन नस्र رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه और इब्ने ह़ज़्म का है और उन्हों ने इस पर इजमाअ़ का दा'वा किया है और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़म्बसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की इस मरफ़ूअ़ ह़दीस को दलील बनाया है कि "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों की रूहें बन्दों की तख़्लीक़ से दो हज़ार साल पहले पैदा फ़रमाई हैं पस जिन की आपस में जान पहचान थी वोह घुल मिल गईं और जो अजनबी रहीं वोह दूर हो गईं।"(3) इस के इ़लावा ह़ज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पुश्त से उन की औलाद के निकालने से मुतअ़ल्लिक़ जो अह़ादीसे मुबारका हैं उन्हें भी दलील के त़ौर पर पेश किया है। इन में से एक येह है कि "जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَیْهِ السَّلَام को तख़्लीक़ फ़रमाया तो उन की पुश्त पर मस्ह़ किया पस इस से ज़र्रों की मिस्ल उन की औलाद की वोह रूहें गिरीं जिन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ियामत तक पैदा फ़रमाना था।"(4)

---

(1)... معجم اوسط، ۳۹۵/۵، حدیث: ۷۷۳۱، تاریخ ابن عساکر، ۳۷۳/۱۲، رقم: ۱۹۵۹: خزیمۃ بن حکیم السلمی البھزی

(2)... بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ارواح جنود مجندۃ، ۴۱۳/۲، حدیث: ۳۳۳۶

(3)... الروح، المسألۃ الثامنۃ عشرۃ، ص ۲۵۰

(4)... ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ الاعراف، ۵۳/۵، حدیث: ۳۰۸۷
مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ الاعراف، عطاء آدم اربعین سنۃ من عمرہ لداود، ۵۵/۳، حدیث: ۳۳۱۰

एक दलील ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मन्क़ूल इस आयते मुबारका की तफ़्सीर है :

وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ شَهِدْنَا ۛۚ

(پ۹، الاعراف: ۱۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और ऐ मह़बूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और उन्हें ख़ुद उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं सब बोले क्यूं नहीं हम गवाह हुवे ।*

ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : क़ियामत तक जो भी पैदा होने वाला था **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे उस दिन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام के लिये जम्अ़ फ़रमाया, उन्हें अरवाह़ व अश्काल की सूरत बना कर बोलने की क़ुव्वत दी तो उन्हों ने कलाम किया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से पुख़्ता वा'दा लिया ।(1)

जिस्म के पहले पैदा होने का क़ौल करने वाले इस आयते मुक़द्दसा को दलील बनाते हैं :

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِیْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ یَكُنْ شَیْــٴًـا مَّذْكُوْرًا ①

(پ۲۹، الدھر: ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक आदमी पर एक वक़्त वोह गुज़रा कि कहीं उस का नाम भी न था ।*

मरवी है कि इन्सान में 40 साल गुज़रने के बा'द रूह़ फूंकी गई ।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इस ह़दीसे पाक को भी बत़ौरे दलील पेश करते हैं कि "तुम में से हर एक का माद्दए पैदाइश (नुत़्फ़ा) 40 दिन तक मां के पेट में जम्अ़ किया जाता है, फिर इतने ही दिन ख़ून की फटक की सूरत में रहता है फिर इतने ही दिन गोश्त का लोथड़ा रहता है फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की त़रफ़ एक फ़िरिश्ता भेजता है तो वोह उस में रूह़ फूंकता है ।"(2)

इस का जवाब येह दिया गया कि रूह़ फूंके और रूह़ के पैदा होने में फ़र्क़ है, रूह़ तो एक लम्बा अ़र्सा पहले पैदा कर दी गई थी अलबत्ता जब जिस्म की सूरत मुकम्मल हुई तो फ़िरिश्ते को दे कर भेज दिया गया कि वोह उसे बदन में फूंक दे ।

---

1 ...مستدرک حاکم، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ الاعراف، شرح معنی آیۃ: واذاخذ ربک...الخ، ۳/۵۴، حدیث: ۳۳۰۸

2 ...ترمذی، کتاب القدر، باب ماجاء ان الاعمال بالخواتیم، ۴/۵۳، حدیث: ۲۱۴۴

सातवां फ़ाएदा

मुसलमान और दीगर मिल्लतों के अफ़राद का नज़रिया है कि बदन की मौत के बा'द भी रूह बाक़ी रहती है जब कि फ़लासफ़ा ने इस में इख़्तिलाफ़ किया है। हमारी दलील येह आयते मुबारका है :

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ (پ۴،اٰلِ عمرٰن:۱۸۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *हर जान को मौत चखनी है।*

और चखी गई शै के बा'द चखने वाले का बाक़ी रहना ज़रूरी है।

इस के इलावा किताब के शुरूअ़ में भी बहुत सी आयाते मुबारका व अहादीसे त़य्यिबा ऐसी गुज़री हैं जिन में रूह़ का बाक़ी रहना, तसर्रुफ़ करना और सवाब व अ़ज़ाब पाना वग़ैरा बयान हुवा है।

इस इख़्तिलाफ़ की बिना पर एक सुवाल येह पैदा होता है कि क्या रूहें क़ियामत में फ़ना हो कर दोबारा पैदा की जाएंगी जैसा कि रब तआ़ला के फ़रमान से ज़ाहिर होता है :

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿ۚ۲۶﴾ (پ۲۷،الرحمٰن:۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है।*

या फिर अरवाह़ के साथ ऐसा नहीं होगा और येह इस आ़म हुक्म से दर्जे ज़ैल आयत के मुताबिक़ ख़ारिज हैं :

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ (پ۲۰،النمل:۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मगर जिसे ख़ुदा चाहे।*

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम सुबकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی ने अपनी तफ़्सीर "اَلدُّرُّ النَّظِيْم" में येह दोनों अक़्वाल ज़िक्र कर के फ़रमाया : समझ से क़रीब तर येह है कि रूहें फ़ना नहीं होंगी और येह इस हुक्मे फ़ना से ख़ारिज हैं जैसा कि हूरे ऐन के बारे में मन्क़ूल है।

इब्ने क़य्यिम ने अपनी किताब में कहा : इस मस्अले में इख़्तिलाफ़ है कि बदन के साथ रूह़ भी मर जाएगी या फिर सिर्फ़ बदन को मौत आएगी ? दुरुस्त येह है कि अगर ज़ाएक़ए मौत से मुराद रूह़ का बदन से जुदा होना है तब तो ठीक है क्यूंकि ज़ाएक़ए मौत के येही मा'ना हैं और अगर बदन के साथ रूह़ का भी ख़त्म हो जाना मुराद है तो येह क़ाबिले क़बूल नहीं बल्कि इस बात पर इजमाअ़ है कि रूह़ अपनी पैदाइश के बा'द सवाब या अ़ज़ाब में बाक़ी रहती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन वज़्ज़ाह़ मालिकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی बयान करते हैं कि

हज़रते सय्यिदुना सह़नून बिन सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَجِيد के सामने एक शख़्स का ज़िक्र हुवा कि वोह कहता है : "अज्साम के साथ अरवाह़ भी मर जाती हैं ।" तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने कहा : مَعَاذَ اللّٰه या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह ! येह तो बद मज़्हबों का अ़क़ीदा है ।(1)

आठवां फ़ाएदा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा है : اَلْاَرْوَاحُ جُنُوْدٌ مُّجَنَّدَةٌ فَمَا تَعَارَفَ مِنْهَا ائْتَلَفَ وَمَا تَنَاكَرَ مِنْهَا اخْتَلَفَ या'नी रूहें मख़्लूत़ लश्कर हैं तो इन में से जो जान पहचान रखती हैं वोह उल्फ़त करती हैं और जो अजनबी रह चुकीं वोह अलग रहती हैं ।(2)

आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान के मा'ना में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं :

एक क़ौल येह है कि इस में ख़ैर व शर और सलाह़ व फ़साद में मुशाबहत मुराद है क्यूंकि लोगों में जो भला होता है वोह भले की त़रफ़ झुकता है और जो शरीर होता है वोह शरीर की त़रफ़ माइल होता है । पस रूहों की आपस में जान पहचान उन की अच्छी या बुरी त़बीअ़तों के लिहाज़ से है, जब मिज़ाज एक जैसा हो तो जान पहचान रखती हैं और जब मिज़ाज मुख़्तलिफ़ हो तो जुदा रहती हैं ।

एक क़ौल येह है कि इस में मख़्लूक़ की इब्तिदा की ख़बर देना मुराद है जैसा कि ह़दीसे पाक में आया कि "रूहें जिस्मों से दो हज़ार साल पहले पैदा की गई हैं" पस वोह आपस में मिलती रहें फिर जब उन्हें जिस्मों में डाला जाता है तो उन में जान पहचान हो जाती है, लिहाज़ा उन की बाहम वाक़िफ़िय्यत और अ़दम वाक़िफ़िय्यत गुज़श्ता ज़माने के मुत़ाबिक़ ही है ।

रूहें अगर्चे रूह़ होने में एक जैसी हैं मगर मुख़्तलिफ़ उमूर में बट जाने के सबब अलग अलग गुरौह हो जाती हैं पस वोह एक दूसरे से यूं मुशाबेह हो जाती हैं कि हर क़िस्म की रूह़ अपनी क़िस्म की रूह़ से उल्फ़त और अपनी मुख़ालिफ़ से नफ़रत रखती है । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना हरिम बिन ह़य्यान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मैं ख़ैरुत्ताबिईन हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی के पास गया तो उन्हें सलाम किया, इस से पहले न मैं ने कभी उन्हें देखा था और न उन्हों ने मुझे, मगर उन्हों ने जवाब में कहा : ऐ हरिम बिन ह़य्यान ! وَعَلَيْكَ السَّلَام । मैं ने अ़र्ज़ की : आप को मेरा और मेरे वालिद का नाम कैसे मा'लूम हुवा हालांकि

❶...تاریخ ابن عساکر، ۵۶/۱۸۰، رقم: ۷۰۸۴: محمد بن وضاح بن بزیع ابو عبد اللہ

❷...بخاری، کتاب احادیث الانبیاء، باب ارواح جنود مجندۃ، ۲/۴۱۳، حدیث: ۳۳۳۶

इस से पहले न आप ने मुझे कभी देखा और न मैं ने आप को ? फ़रमाया : जब मेरे नफ़्स ने तुम्हारे नफ़्स से कलाम किया तो मेरी रूह ने तुम्हारी रूह को पहचान लिया क्यूंकि जिस त़रह़ अज्साम के लिये नफ़्स होते हैं यूंही रूहों के लिये भी नफ़्स होते हैं और मोमिन आपस में एक दूसरे को पहचानते हैं और रह़मते इलाही से एक दूसरे से मह़ब्बत करते हैं अगर्चे उन की मुलाक़ात न हुई हो।(1)

हंसाने वाली हंसाने वाली के पास

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बयान करती हैं कि "मक्कए मुकर्रमा में एक औ़रत थी जो क़ुरैश की औ़रतों के पास आ कर उन्हें हंसाती थी, जब वोह हिजरत कर के मदीनए मुनव्वरा आई तो मुझ से भी मुलाक़ात करने आई। मैं ने पूछा : कहां ठहरी हुई हो ? उस ने कहा : फ़ुलां औ़रत के पास जो मदीनए मुनव्वरा में हंसाने वाली है। इतने में ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले आए और इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या फ़ुलां हंसाने वाली औ़रत तुम्हारे पास है ? मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : वोह किस के यहां ठहरी हुई है ? मैं ने कहा : फ़ुलां हंसाने वाली के पास। तो मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहा और इरशाद फ़रमाया : اَلْاَرْوَاحُ جُنُوْدٌ مُّجَنَّدَۃٌ فَمَا تَعَارَفَ مِنْھَا ائْتَلَفَ وَمَا تَنَاکَرَ مِنْھَا اخْتَلَفَ या'नी रूहें मख़्लूत़ लश्कर हैं तो उन में सो जान पहचान रखती हैं वोह उल्फ़त करती हैं और जो अजनबी रह चुकीं वोह अलग रहती हैं।(2)

नवां फ़ाएदा

इब्ने क़य्यिम ने कहा : अगर कहा जाए कि "अज्साम से जुदा होने के बा'द रूहों के बाहमी तआ़रुफ़ के लिये किस चीज़ के ज़रीए़ पहचान होती है, क्या रूहें किसी शक्ल में ढल जाती हैं ?" तो इस का जवाब येह है कि अह्ले सुन्नत کَثَّرَھُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन की कसरत करे इन) के क़ानून पर अरवाह़ की अलग से एक ज़ात है जो उतरती चढ़ती, मिलती जुदा होती, आती जाती और मुतह़र्रिक व साकिन होती है। इस पर 100 से ज़ाइद दलीलें मौजूद हैं, इन में से एक येह फ़रमाने बारी तआ़ला है :

1...تاریخ ابن عساکر، ۹/۴۳۲، رقم: ۴۸۰: اویس بن عامر

2...مسند ابی یعلی، مسند عائشۃ، ۴/۱۸، حدیث: ۴۳۶۴

اعتلال القلوب للخرائطی، باب دلالۃ المحبۃ وشواھدھا، الجزء الخامس، ۱/۲۳۶، حدیث: ۴۵۸

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۙ﴿۷﴾

(پ۳۰، الشمس:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जान की (क़सम) और उस की जिस ने उसे ठीक बनाया।*

इस में बताया गया कि वोह ठीक बनाई गई है। जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बदन के बारे में इरशाद फ़रमाया :

اَلَّذِیْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۙ﴿۷﴾

(پ۳۰، الانفطار:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *जिस ने तुझे पैदा किया फिर ठीक बनाया फिर हमवार फ़रमाया।*

पस उस ने इन्सान के बदन को ठीक बनाया जिस त़रह़ उस की रूह़ को ठीक बनाया लिहाज़ा बदन का ठीक करना रूह़ के ठीक करने के ताबेअ़ है। यहां से मा'लूम हुवा कि रूह़ ने बदन से एक ऐसी सूरत ली जिस के सबब वोह दीगर अरवाह़ से मुमताज़ हो गई क्यूंकि रूह़ बदन का असर क़बूल करती है जिस त़रह़ बदन रूह़ का असर क़बूल करता है। पस जिस त़रह़ रूह़ बदन से अच्छाई या बुराई ह़ासिल करती है इसी त़रह़ बदन भी उस से अच्छाई या बुराई ह़ासिल करता है। बल्कि वुजूद से जुदाई के बा'द रूह़ों का मुमताज़ व नुमायां होना अज्साम के मुमताज़ व नुमायां होने से ज़ियादा वाज़ेह़ है और जिस त़रह़ अज्साम का एक जैसा होना बईद है इसी त़रह़ रूह़ों का एक जैसा होना इस से बईद तर है, रूह़ों का बाहम मुतशाबेह होना अज्साम के बाहम मुतशाबेह होने से ज़ियादा बईद है क्यूंकि अज्साम में कसीर मुशाबहत पाई जाती है जब कि अरवाह़ में मुशाबहत कम ही होती है।

इस की वज़ाह़त ये बात भी करती है कि हम ने ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और अइम्मए उ़ज़्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के अज्सामे मुक़द्दसा को नहीं देखा मगर वोह हमारे इ़ल्म में वाज़ेह़ त़ौर पर एक दूसरे से मुमताज़ व नुमायां हैं और येह इम्तियाज़ी खुसूसिय्यात सिर्फ़ उन अज्साम की वज्ह से नहीं बल्कि येह इम्तियाज़ उन की अरवाह़ की उन सिफ़ात से है जिन्हें हम पहचानते हैं। ग़ौर करो कि हम दो सगे भाइयों की शक्लो सूरत में बेह़द मुशाबहत पाते हैं मगर उन की रूह़ों में इन्तिहाई दरजे का तफ़ावुत होता है। तुम ऐसा बहुत कम देखोगे कि किसी का जिस्म भद्दा और शक्ल बद सूरत हो और उस की रूह़ में उस से मुशाबहत वाली कोई बात न पाई जाती हो। यूंही जब किसी का बदन आफ़त ज़दा होता है तो उस की रूह़ भी कुछ न कुछ आफ़त ज़दा होती है। येही वज्ह है कि साह़िबे फ़िरासत लोग अज्साम देख कर ही लोगों की त़बीअ़तों का अन्दाज़ा लगा

लेते हैं और जब तुम किसी को मुतनासिब जिस्म और अच्छी शक्लो सूरत वाला देखोगे तो उस की रूह में भी तुम्हें उस की झलक नज़र आएगी।

फिर येह कि जब फ़िरिश्ते और जिन्नात ऐसे अब्दान के न होने के बा वुजूद कि जो उन्हें उठाए हुवे हों एक दूसरे से मुमताज़ हैं तो इन्सानी रूहें बदरजए औला मुमताज़ हुईं। इब्ने क़य्यिम का कलाम ख़त्म हुवा।

"अद्दुर्रतुल फ़ाख़िरह" में हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي के कलाम में येह भी मिलता है कि मुसलमानों की रूहें शहद की मख्खी की सूरत पर और कुफ़्फ़ार की रूहें टिड्डी की शक्ल पर होती हैं। लेकिन येह ऐसी बात है जिस की कोई अस्ल नहीं बल्कि सूर फूंकने वाली ह़दीसे पाक में येह बयान हुवा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام रूहों को बुलाएंगे तो सब एक साथ उन के पास आ जाएंगी, मुसलमानों की रूहें चमकता हुवा नूर होंगी और दीगर अरवाह़ अंधेरा, ह़ज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام सब को जम्अ़ कर के सूर में रख देंगे फिर उस में फूंक मारेंगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! हर रूह़ अपने जिस्म में लौट जाए। चुनान्चे, रूहें सूर से शहद की मख्खियों की त़रह़ निकलेंगी जिस से ज़मीन ता आस्मान हर जगह भर जाएगी पस हर रूह़ अपने जिस्म की त़रफ़ आएगी और जिस्म में ऐसे दाख़िल हो जाएगी जैसे डसे हुवे में ज़ह्र सरायत करता है।

यहां रूह़ को शहद की मख्खियों के जिस्म व शक्ल से तश्बीह नहीं दी गई बल्कि मह़ज़ इन के निकलने से तश्बीह दी गई है। क़ुरआने मजीद में भी इस की एक मिसाल मिलती है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआ़ला :

يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۙ (پ۲۷، القمر:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क़ब्रों से निकलेंगे गोया वोह टीड़ी (टिड्डी) हैं फैली हुई।

तफ़्सीरे जुवैबर में है कि मुसलमानों की रूहें जाबिया से और कुफ़्फ़ार की बरहूत वादी से आएंगी और अपने जिस्मों की त़रफ़ ऐसे जाएंगी जैसे तुम अपनी सुवारी की त़रफ़ जाते हो। उस दिन रूहें सियाह और सफ़ेद होंगी मुसलमानों की सफ़ेद और कुफ़्फ़ार की सियाह।

दसवां फ़ाएदा : रूह़ और जिस्म की मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन लोगों

में झगड़ा होता रहेगा हत्ता कि रूह और जिस्म भी झगड़ेंगे। रूह जिस्म से कहेगी : येह तू ने किया है। जिस्म कहेगा : तू ने ही हुक्म दिया था और तुझ से ही पूछा जाएगा। पस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन में फ़ैसला करवाने के लिये एक फ़िरिश्ते को भेजेगा, वोह रूह व जिस्म से कहेगा : तुम्हारी मिसाल उस अन्धे और आंखों वाले लंगड़े की तरह है जो एक बाग़ में दाख़िल होते हैं तो आंखों वाला लंगड़ा अन्धे से कहता है : यहां मुझे फल नज़र आ रहे हैं मगर उन तक पहुंच नहीं सकता। अन्धा कहता है : मुझ पर सुवार हो जा। चुनान्चे, वोह अन्धे पर सुवार हो कर फल तोड़ता है और दोनों खाते हैं। अब तुम बताओ जुर्म किस का है ? वोह कहते हैं : दोनों का। फ़िरिश्ता कहता है : तुम ने खुद अपने ख़िलाफ़ फ़ैसला कर दिया है या'नी रूह सुवारी की तरह है और जिस्म उस का सुवार है।

रूह और जिस्म का झगड़ा

इस जैसी एक ह़दीसे पाक ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरफ़ूअ़न रिवायत है कि "रूह और जिस्म क़ियामत के दिन झगड़ा करेंगे, जिस्म रूह से कहेगा : अगर तू न होती तो मैं तो कटे हुवे तने की मानिन्द पड़ा था न हाथ हिला सकता था न पैर। रूह कहेगी : मैं तो एक हवा थी अगर जिस्म न होता तो मैं कुछ भी नहीं कर सकती थी।"

रूह और जिस्म के लिये अंखयारे लंगड़े और नाबीना की मिसाल दी गई कि अंखयारे लंगड़े ने अपनी बीनाई से उसे रास्ता दिखाया और नाबीना ने उसे अपनी टांगों की मदद से ऊपर उठाया।

अन्धा और लंगड़ा

इसी जैसी एक रिवायत ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से भी मरवी है कि "दिल और जिस्म की मिसाल अन्धे और लंगड़े की सी है।" लंगड़े ने अन्धे से कहा : मैं फल देख रहा हूं मगर खड़ा नहीं हो सकता कि उन तक पहुंचूं लिहाज़ा तू मुझे उठा ले। चुनान्चे, अन्धे ने उसे उठा लिया और उस ने फल तोड़ कर खाए और खिलाए।(1)

येह इस बात की ताईद करता है कि "दिल ही रूह के ठहरने की जगह है।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही बेहतर जानता है और उसी की त़रफ़ लौट कर जाना है।

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، سلمان الفارسی، ۱/۲۶۴، رقم: ۷۵۴

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़हा
इजमाली फ़ेहरिस्त	01
किताब को पढ़ने की निय्यतें	04
अल मदीनतुल इल्मिय्या का तआ़रुफ़ (अज़ अमीरे अहले सुन्नत مُدَّظِلُّہٗ)	05
अल मदीनतुल इल्मिय्या और शर्हुस्सुदूर	06
तआ़रुफ़े मुसन्निफ़	07
पहले इसे पढ़ लीजिये !	33
ख़ुत़बतुल किताब	39
बरज़ख़ क्या है ?	40
बाब नम्बर 1 : मौत की पैदाइश	40
बाब नम्बर 2 : माली या जिस्मानी मुसीबत की बिना पर मौत की तमन्ना और दुआ़ करने की मुमानअ़त का बयान	41
मोमिन की भलाई	41
ख़ुश बख़्ती की बात	41
ज़िन्दगी बेहतर है	42
बाब नम्बर 3 : इत़ाअ़ते इलाही में लम्बी ज़िन्दगी गुज़ारने की फ़ज़ीलत का बयान	43
बेहतरीन और बदतरीन	43
शहीद से पहले जन्नत में जाने वाला	44
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक अफ़्ज़ल कौन ?	44
मोमिन की ग़नीमत	45
बाब नम्बर 4 : दीन में फ़ितने के ख़ौफ़ से मौत की तमन्ना और दुआ़ के जवाज़ का बयान	45
दुआ़ए मुस्त़फ़ा	45
दुआ़ए फ़ारूक़ी	46
छे चीज़ें	46
मौत की तमन्ना कब जाइज़ है ?	47
ख़ुरूजे दज्जाल और मोमिन की पसन्दीदा चीज़	47
सुर्ख़ सोने से ज़ियादा मह़बूब	48
काश ! इस की जगह मैं होता	48
चिड़या के मर जाने से ज़ियादा मह़बूब	49
नफ़्स का शर	50
दुन्या और शैत़ान	50
भलाई से ख़ाली ज़माना	51
रफ़ाईल फ़िरिश्ता	52
बाब नम्बर 5 : मौत की फ़ज़ीलत का बयान	52
मौत की ह़क़ीक़त	52
मोमिन का तोह़फ़ा	53
ख़ुश्बूदार फूल	53
बदन की हलाकत	53
इब्ने आदम की दो ना पसन्दीदा चीज़ें	53
काफ़िर की जन्नत और मोमिन का क़ैदख़ाना	54
मोमिन का क़ैदख़ाना, जाए अम्न और ठिकाना	55
तीन ना पसन्दीदा मगर बेहतरीन चीज़ें	56
मोमिन के लिये सब से बड़ी राह़त	56
मौत मोमिन व काफ़िर हर एक के लिये बेहतर है	56
मौत, मोह़ताजी और बीमारी	57
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की तीन मह़बूब चीज़ें	58
दोस्त का सब से अच्छा तोह़फ़ा	58

मलकुल मौत बारगाहे ख़लील में	59	**बाब नम्बर 7 : मौत की याद में मददगार चीज़ों का बयान**	72
मौत एक पुल है	60		
अस्लाफ़ की चार उम्दा ख़स्लतें	60	क़ब्रों की ज़ियारत आख़िरत की याद	72
क्या आप जन्नत को पसन्द करते हैं ?	61	बेहतरीन नसीहत	73
मौत को इख़्तियार करूंगा	61	**बाब नम्बर 8 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ज़न और ख़ौफ़ रखने का बयान**	73
मोमिन के गुनाहों का कफ़्फ़ारा	62		
शर्हे हदीस	62	ख़ौफ़ और उम्मीद	74
क़ाबिले रश्क कौन ?	62	दो अम्न और दो ख़ौफ़	74
सब से बड़ी व अच्छी ने'मत	62	जन्नत की क़ीमत	74
सुर्ख़ ऊंटों से बेहतर	63	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अच्छा गुमान रखो	75
इबादत गुज़ार का चैन	64	रब तआला से हुस्ने ज़न का इन्आम	75
बाब नम्बर 6 : मौत की याद और इस की तय्यारी का बयान	64	मां से बढ़ कर मेहरबान	76
		बाब नम्बर 9 : मौत के डराने वाले क़ासिदों का बयान	77
फ़राख़ी की ज़िन्दगी गुज़ारना चाहो तो......	64		
ज़ियादा अक़्ल मन्द मोमिन कौन ?	64	**बाब नम्बर 10 : हुस्ने ख़ातिमा की अलामात का बयान**	78
आजिज़ व बेबस कौन ?	65		
लज़्ज़तों को गदला करने वाली	65	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बन्दे से महब्बत	78
सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की तरबिय्यत	65	तक़्दीर का लिखा हो कर रहता है	78
हर दिन रात मौत को 20 मरतबा याद करने की फ़ज़ीलत	66	**फ़ाएदा :** बुरे ख़ातिमे के अस्बाब	79
एक आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर	66	**बाब नम्बर 11 : हालते नज़्अ़ और इस की शिद्दत का बयान**	80
मौत को याद रखने की फ़ज़ीलत	67	हालते नज़्अ़ के मुतअ़ल्लिक़ चार फ़रामीने बारी तआला	80
दो चादरें और ख़ुश्बू	67		
मौत को ना पसन्द रखने की वज्ह	68	मोमिन के गुनाह का कफ़्फ़ारा और काफ़िर की नेकी का बदला	81
फ़ानी चीज़ बुरी और बाक़ी महबूब	69		
दिल की तवंगरी	70	रहमते इलाही और अज़ाबे इलाही की अलामात	83
क़सावते क़ल्बी कैसे दूर हो ?	70	मौत के वक़्त पसीना आने का सबब	83
आ'माल का सन्दूक़	71	मोमिन व काफ़िर की मौत	83
अफ़्ज़ल इबादत	71	मौत की गर्मी व तक्लीफ़	84
हर मरने वाला पछताता है	71	मौत की सख़्ती	85

बिस्तर पर मौत आने से ज़ियादा आसान	86	मरने वाले के पास सूरए रअ़्द पढ़ने की फ़ज़ीलत	96
मौत को कैसा पाया ?	86		
ज़िन्दा चिड़या की मानिन्द	87	बच्चों की तरबिय्यत	97
मौत की आसान तर तक्लीफ़	87	मां की ना फ़रमानी का वबाल	98
मौत का एक क़त्रा	87	बुरी सोहबत का वबाल	98
भारी भरकम पहाड़	88	नज़्ए रूह में आसानी	99
कसीर कांटों वाली शाख़	89	जहन्नम की आग कभी न जलाए	99
दुन्या व आख़िरत की शदीद तरीन हौलनाकी	89	इस्मे आ'ज़म	100
मोमिन की आख़िरी और काफ़िर की पहली तक्लीफ़	89	अ़ज़ाबे जहन्नम से नजात की दुआ़	100
हर बुर्दबार मर्द व औ़रत हैरत में मुब्तला है	90	मोमिन की रूह निकलने की हालत	101
तल्वार के हज़ार वार से ज़ियादा सख़्त	90	किसी की रूह निकल रही हो तो येह कहो	101
सवाब की उम्मीद और अ़ज़ाब का ख़ौफ़	91	नज़र रूह का तआ़क़ुब करती है	102
मोमिन की आख़िरी और सब से शदीद तक्लीफ़	91	मर्तबए शहादत	102
मरज़े मौत की दवा	91	मुर्दे की आंखें बन्द करते वक़्त की दुआ़	103
आ'ज़ाए बदन की गुफ़्त्गू	92	**बाब नम्बर 13 : मलकुल मौत और इन के मददगारों का बयान**	103
शहीद और मौत की तक्लीफ़	92		
मलकुल मौत की वफ़ात	92	दो फ़रामीने बारी तआ़ला	103
तम्बीह : अम्बिया पर मौत की सख़्ती के दो फ़ाएदे	93	अफ़्सर और मा तह्त	104
		तख़्लीक़े आदम और मलकुल मौत	104
फ़वाइद : नज़्अ़ में आसानी	93	चार मुक़र्रब फ़िरिश्ते और इन की ज़िम्मेदारियां	105
चितकब्रा मेंढा और घोड़ा	94		
चार बाज़ूओं वाला चितकब्रा मेंढा	94	मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की रफ़्तार	105
क्या मौत बुरी है ?	95	येह मोमिन है इस पर नर्मी कर	106
बाब नम्बर 12 : मरज़े मौत, ब वक़्ते मौत और बा'दे मौत मरने वाले के पास कहे जाने वाले कलिमात और पढ़ी जाने वाली दुआ़ओं और सूरतों का बयान	95	पाबन्दे नमाज़ और मलकुल मौत	107
		हर दिन हर घर में तीन मरतबा नज़र	107
		सख़ावत की फ़ज़ीलत	108
		सय्यिदुना इब्राहीम और मलकुल मौत عَلَيْهِمَا السَّلَام	108

येही काफ़ी है	109	मोमिन और काफ़िर का सफ़रे आख़िरत	126
मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का इल्म व मुशाहदा	110	हर शै की इन्तिहा का मक़ाम	135
मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की क़ुदरत व ताक़त	111	जन्नती कफ़न और ख़ुश्बू	136
मलकुल मौत और सुलैमान (عَلَيْهِمَا السَّلَام) का हमनशीं	113	पाक और ख़बीस रूह	136
सय्यिदुना इदरीस عَلَيْهِ السَّلَام का विसाल	113	शुहदा, मछली और बैल	138
बीमारियों की पैदाइश का सबब	115	मोमिन की मौत	139
मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे मूसा में	116	काफ़िर की मौत	139
सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का विसाल	116	सूरज की मिस्ल रौशन चेहरा	140
सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का विसाल	117	इल्लिय्यीन और सिज्जीन	141
मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में	118	100 क़त्ल करने वाले की तौबा	143
मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام की निगाह	118	बुरी गोद	144
अजल आके सर पे खड़ी है	119	क़ब्र फूलों से भर दी जाती है	144
जानवरों और कीड़े मकोड़ों की रूहें	120	ख़ुश आमदीद	145
मौत के चार फ़िरिश्ते	121	मरने के बा'द गुफ़्तगू	147
ख़ुश नसीब शुहदा	121	सूरए सजदह और सूरए मुल्क पढ़ने की फ़ज़ीलत	148
एक इबादत गुज़ार की मौत	121	वफ़ात के बा'द मुस्कुराते रहे	149
फ़ाएदा / जहन्नम से नजात का परवाना	122	जन्नत में दाख़िले से महरूम लोग	150
बाब नम्बर 14 : हर बरस उम्रें ख़त्म होने का बयान	124	सहाबा को बुरा भला कहने वालों पर फ़िरिश्तों की ला'नत	150
मरने वालों की फ़ेहरिस्त बनाने का महीना	124	अब्दुल मलिक बिन मरवान और हज्जाज बिन यूसुफ़	151
मरने वालों की फ़ेहरिस्त	124		
नाज़ुक रात	125	ने'मतों वाली सूरत	152
मुहाफ़िज़ फ़िरिश्ता और मौत का इल्म	125	बनी इस्राईल का एक क़ाज़ी	152
हर मख़्लूक़ का एक पत्ता है	125	नेकूकार आया	153
बाब नम्बर 15 : मय्यित के पास मलाइका वग़ैरा के आने, मरने वाले का मुख़्तलिफ़ चीज़ें देखने नीज़ ब वक़्ते मौत मोमिन को ख़ुश ख़बरी देने और काफ़िर को डराने वाली चीज़ों का बयान	126	तौबा से गुनाह मिट जाते हैं	153
		हक़ का प्रचार करने का इन्आम	154
		सहाबी का ख़्वाब	154
		वली का ख़्वाब	155
		ख़ुश्बू की अहम्मिय्यत	155

आ'माले सालेहा की खुश्बू	156	शाने सिद्दीके अक्बर	174
नेक आ'माल की अहम्मिय्यत	156	रोज़े जुमुआ दुरूद पढ़ने की फ़ज़ीलत	176
रब तआला की रहमत	157	नबी से नफ़रत की सज़ा	176
उम्मते मुहम्मदिया के ख़साइल	158	मौत के वक्त आंख खुली रहने की वज्ह	176
एक कलिमा काम आ गया	158	मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام का नेज़ा	178
एक मरतबा "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहने का इन्आम	159	**ज़िमनी फ़स्ल : तौबा के मुतअ़ल्लिक़**	179
जुनुबी के पास जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام नहीं आते	159	**बाब नम्बर 16 : अरवाह़ का नई रूह़ से मिलने और**	
तल्क़ीन क्यूं करते हैं ?	160	**उस के पास जम्अ़ हो कर सुवालात करने का बयान**	181
इन्आम याफ़्ता अफ़राद	161	फ़ौत शुदगान को सलाम	181
अ़मल करने वालों का सवाब	161	अरवाहे मोमिनीन की मुलाक़ात	182
अच्छों की सोहबत अपनाओ ताकि.....!	162	मुर्दे का इस्तिक़्बाल करने वाले	183
बुरे अ़मल का वबाल	162	अ़ज़ीम हस्तियां	185
अच्छे बुरे अ़मल की पेशी	163	अमीरुल मोमिनीन का इस्तिक़्बाल	186
दुआ़ए मुस्तफ़ा की बरकत	164	दो मोमिन और दो काफ़िर दोस्त	186
अ़मल की हिफ़ाज़त करने वाले फ़िरिश्ते	164	**बाब नम्बर 17 : मुर्दे का ग़ुस्साल को पहचानने**	
मौत को ना पसन्द करने का मतलब	165	**और लोगों की गुफ़्त्गू सुनने का बयान**	187
दुन्या में लौटने की तमन्ना	167	क्या मुर्दे सुनते हैं ?	189
रूहे मोमिन निकलने की कैफ़िय्यत	168	मुझे कहां लिये जाते हो ?	190
मोमिन और काफ़िर का उख़रवी ठिकाना	169	अहले ख़ाना पर मय्यित का एक हक़	191
शाने ज़ुन्नूरैन	170	मुर्दे की पुकार	191
मोमिन को क़ब्र में मिलने वाली पहली खुश ख़बरी	170	**बाब नम्बर 18 : जनाज़े में फ़िरिश्तों के**	
रूहे काफ़िर क़ब्ज़ करने की कैफ़िय्यत	171	**चलने और गुफ़्त्गू करने का बयान**	192
रब तआला का सलाम	171	जनाज़े में फ़िरिश्तों की शिर्कत	192
वक्ते मौत मोमिन के लिये बिशारत	172	नूरी और ख़ाकी मख़्लूक़ की सोच में फ़र्क़	192
दुन्या व आख़िरत में खुश ख़बरी से मुराद	173	**बाब नम्बर 19 : वफ़ाते मोमिन पर**	
तीन बिशारतें	173	**ज़मीनो आस्मान के रोने का बयान**	193

मोमिन की मौत पर रोने वाले दरवाज़े	193	क़ब्र पर ज़िक्रुल्लाह करने की बरकत	208
मोमिन पर रोने वाला ज़मीन का हिस्सा	193	अ़र्शे इलाही झूम उठा	209
आस्मान व ज़मीन क्यूं रोते हैं ?	194	अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ السَّلَام को क़ब्र नहीं दबाती	212
आस्मान के रोने की दलील	195	क़ब्र का मुसलमान और काफ़िर को दबाने में फ़र्क़	213
फ़िरिश्तों को रोने का हुक्म	195	क़ब्र का मोमिन को दबाना किसी ख़ता का बदला होता है	213
बाब नम्बर 20 : जिस मिट्टी से तख़्लीक़ हुई वहीं दफ़्न होने का बयान	196	क़ब्र का मुसलमान को दबाने का एक सबब	213
रेह़्म पर मुक़र्रर फ़िरिश्ता	197	क़ब्र मां की मिस्ल है	213
मौला ! येह तेरी अमानत है	197	क़ब्र का फ़रमां बरदार और ना फ़रमान को दबाना	214
नुत़्फ़े से गुफ़्तगू	198	गुनाह के अ़ज़ाब से छुटकारा	214
दुन्या व आख़िरत में नफ़्अ़ मन्द और नुक़्सान देह पड़ोसी	198	क़ब्र के फ़ितने से ह़िफ़ाज़त	215
		क़ब्र के मूनिस व ग़म ख़्वार	215
नेक पड़ोसी की बरकत	199	**बाब नम्बर 23 : क़ब्र का मुर्दों को ख़ित़ाब करने का बयान**	216
ज़मीन का बेहतरीन और बदतरीन हिस्सा	200		
क़ब्रिस्तान की रौशनी और तारीकी	200	क़ब्र रोज़ाना करती है पुकार	216
ज़ियादा मेहरबान फ़िरिश्ते	200	क़ब्र की मुर्दे से गुफ़्तगू	217
फ़ाएदा	201	मोमिन की वफ़ात	217
काले सांप का तौक़ या ज़न्जीरों की आवाज़	201	तू ने मेरे लिये क्या तय्यारी की ?	218
अपने मुर्दों को भूल जाओ	202	तुझे किस चीज़ ने धोके में डाले रखा ?	219
बाब नम्बर 21 : ब वक़्ते तदफ़ीन पढ़ी जाने वाली दुआ़ओं का बयान	203	वह़्शत व तंगी का घर	219
		कीड़े मकोड़ों का घर	219
तदफ़ीन के वक़्त और बा'द की दुआ़एं	204	ना फ़रमान के लिये अ़ज़ाब	219
दफ़्न के बा'द तल्क़ीन	205	तू ने मुझे कैसे भुला दिया ?	220
क़ब्र पर ज़िक्र के लिये ठहरना मुस्तह़ब है	206	अजनबिय्यत व तन्हाई का घर	220
तम्बीह	207	क़ब्र का मह़बूब और मबग़ूज़ बन्दा	220
मुर्दे के सिफ़ारिशी	207	अपनी ज़िन्दगी में ख़ुद पर रह़्म कर	221
बाब नम्बर 22 : क़ब्र के हर एक को दबाने का बयान	208	नसीह़त के लिये मौत ही काफ़ी है	221
		दो दिन और दो रातें	222

बाब नम्बर 24 : फ़ितनए क़ब्र और फ़िरिश्तों के सुवालात का बयान	223	ह़दीसे अबू क़तादा	242
		ह़दीसे अबू मूसा	243
ह़दीसे अनस	223	ह़दीसे अबू हुरैरा	243
हथोड़े की एक ज़र्ब	224	ज़मीन कभी कुछ न उगाए	243
एक कोड़ा	224	अ़ज़ाबे क़ब्र से कैसे बचा जाए ?	244
समाअ़ते मुस्तफ़ा का कमाल	225	अ़ज़ाब से बचने के ज़राएअ़	246
ह़दीसे सौबान	225	क़ब्र में फ़ाएदा पहुंचाने वाली चीज़ें	247
ह़दीसे जाबिर	225	नमाज़ के लिये मस्जिद की त़रफ़ चलने की फ़ज़ीलत	247
क़ब्र में मोमिन की ह़ालत	226	उस वक़्त तुम्हारा क्या ह़ाल होगा ?	249
मौत से ले कर क़ियामत तक	226	ह़दीसे अस्मा	250
ह़दीसे ज़मरह	228	बहरा चौपाया	250
ह़दीसे उ़बादा बिन सामित	228	ह़दीसे आ़इशा	251
ह़दीसे इब्ने अ़ब्बास	230	मय्यित की त़रफ़ से खाना खिलाने का फ़ाएदा	253
मुर्दा जूतियों की आवाज़ सुनता है	230	क़ब्र में शैत़ाने लईन का आना	254
क़ब्र ता ह़द्दे निगाह वसीअ़ कर दी जाती है	231	क़ब्र के इम्तिह़ान की तय्यारी	254
जन्नती तह़ाइफ़	231	क़ब्र के इम्तिह़ान में कामयाबी	255
ह़दीसे इब्ने उ़मर	233	सह़ाबा का वसीला क़ब्र में काम आ गया	256
ज़बान को इन कलिमात से तर रखो	234	अह्ले सुन्नत का है बेड़ा पार	256
ह़दीसे इब्ने मसऊ़द	234	वली की ख़िदमत क़ब्र में काम आ गई	257
ह़दीसे उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान	237	**चन्द फ़वाइद का बयान**	258
ह़दीसे उ़मर फ़ारूक़	237	मुबश्शिर और बशीर	261
ह़दीसे अ़म्र बिन आ़स	238	पांच के ज़रीए़ पांच से छुटकारा	264
ह़दीसे मुआ़ज़	238	**बाब नम्बर 25 : सुवालाते क़ब्र से मह़फ़ूज़ रहने वालों का बयान**	266
ह़दीसे अबू दरदा	240		
ह़दीसे अबू सईद ख़ुदरी	240	शहीद फ़ितनए क़ब्र से मह़फ़ूज़ होता है	266
ह़दीसे अबू राफ़ेअ़	241	बड़ी घबराहट से बे ख़ौफ़	267

सरहदे इस्लाम पर पेहरा देने की फ़ज़ीलत	267	**बाब नम्बर 27 : आख़िरत के पहले अ़द्ल का बयान**	283
रिबात़ का मा'ना व मफ़्हूम	267		
एक माह रोज़ा रख कर इबादत की मिस्ल	268	**बाब नम्बर 28 : बन्दे पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सब से ज़ियादा रह़्म का बयान**	283
हर रात सूरए मुल्क पढ़ने की फ़ज़ीलत	269		
सोने से क़ब्ल सूरए सजदह पढ़ने की फ़ज़ीलत	270	**बाब नम्बर 29 : मोमिन को क़ब्र में मिलने वाले पहले तोहफ़े का बयान**	283
रोज़े जुमुआ़ या शबे जुमुआ़ मरने की फ़ज़ीलत	270		
मोमिन की शान और मुनाफ़िक़ की निशानी	271	**बाब नम्बर 30 : मोमिन को मिलने वाली पहली जज़ा का बयान**	284
"सिद्दीक़" का मक़ामो मर्तबा	271		
मरज़े त़ाऊ़न में मरने वाले की फ़ज़ीलत	272	**बाब नम्बर 31 : मुख़्तलिफ़ उमूर के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीसे नबविय्या का बयान**	284
क़ब्र के इम्तिह़ान का मक़्सद	272		
इम्तिह़ाने क़ब्र और अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़	273	क़ब्र में कुशादगी और नूर की दुआ़	284
क्या क़ब्र में बच्चों से भी सुवाल होगा ?	274	दुआ़ए सरकार की बरकत	284
इस्लाम का नूर	275	मस्जिद में हंसने का वबाल	285
बाब नम्बर 26 : क़ब्र की घबराहट और मोमिन पर इस की आसानी व कुशादगी का बयान	276	क़ब्र की वह़्शत कैसे दूर हो ?	285
		मोह़ताजी से बचने का वज़ीफ़ा	285
आख़िरत की सब से पहली मन्ज़िल	276	इ़ल्म इन्सानी शक्ल में	285
जाए विलादत के इ़लावा में मौत आने की फ़ज़ीलत	276	ख़ैरो भलाई सीखने सिखाने की फ़ज़ीलत	286
मुसाफ़री की ह़ालत में मौत आने की फ़ज़ीलत	277	सुन्नते नबवी	286
सब्ज़ हरयाला बाग़	277	मुसलमान के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की फ़ज़ीलत	286
एक ह़दीस की वज़ाह़त	278	लोगों को तक्लीफ़ पहुंचाने से बचने की फ़ज़ीलत	287
रह़मते इलाही के उम्मीद वार पर इन्आ़मे इलाही	279	क़ब्र रौशन और ख़ुश्बूदार करने का नुस्ख़ा	287
एक नौजवान की बख़्शिश का सबब	279	मरीज़ की इ़यादत करने की फ़ज़ीलत	287
क़ब्र में त़वाफ़े का'बा	280	**बाब नम्बर 32 : क़ब्र में ह़िसाबो किताब का बयान**	288
तीन क़ब्रों के अह़वाल	280	**बाब नम्बर 33 : क़त्ले उ़स्माने ग़नी को मह़बूब रखने वाले का बयान**	288
मुनव्वर क़ब्र	282		
मुश्क बार क़ब्र	282	**बाब नम्बर 34 : अ़ज़ाबे क़ब्र का बयान**	289

अज़ाबे क़ब्र हक़ है	289	क़ब्रे सहाबी की तौहीन करने वाले का अन्जाम	310
अज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगो	290	इब्ने ज़ियाद की नाक में सांप	310
99 अज़्दहे	290	क़ातिले मौला अ़ली का अन्जाम	311
पेशाब के छींटों से न बचने का वबाल	291	सब से पहला क़ातिल	313
चुग़ली का वबाल	291	मोमिन के अ़ज़ाबात दिखाए जाने की हिक्मत	314
अज़ाबे क़ब्र के अस्बाब	292	क़ब्र में आग	316
अबू जह्ल का अन्जाम	294	ग़ुस्ले जनाबत न करने का वबाल	316
हिकायत : मश्कीज़ा और पेशाब	294	न पिघलने वाली कीलें	317
ख़ियानत का वबाल	296	ज़ुल्मन टेक्स वुसूल करने वाले का अन्जाम	317
एक कोड़ा मार ही दिया	296	कफ़न चोर अन्धा हो गया	318
अज़ाबे बरज़ख़ के चन्द मनाज़िर	297	**तम्बीह :** अ़ज़ाब रूह और जिस्म दोनों को होता है	319
क़ुरआन भुला देने का अ़ज़ाब	299	अ़ज़ाबे क़ब्र की अक़्साम	319
आग की क़ैंचियां	300	फ़ाएदा	321
गुनाहों के अ़ज़ाबात का नक़्शा	300	**बाब नम्बर 35 : अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात**	
दर्दनाक अ़ज़ाबात	302	**दिलाने वाली चीज़ों का बयान**	321
ज़क़्क़ूम, आग के कांटे और जहन्नम के गर्म पथ्थर	303	मख़्सूस आफ़ात से नजात दिलाने वाले आ'माल	321
लोहे के नाख़ुनों वाले	304	शहीद के लिये छे ख़ास इन्आ़मात	323
सहाबा को बुरा भला कहने का अन्जाम	304	त़वील क़ियाम और लम्बे सजदों की फ़ज़ीलत	323
ह़राम देखने और ह़राम सुनने का अ़ज़ाब	304	नजात दिलाने वाली सूरत	324
क़ौमे लूत़ के साथ ह़श्र	305	काला कुत्ता	326
गधा नुमा इन्सान	306	सूरए ज़िलज़ाल की फ़ज़ीलत	326
दो सफ़ेद परन्दे	306	अच्छे आ'माल के इवज़ मिलने वाले मक़ामात	327
गुस्ताख़े सहाबा का अन्जाम	307	**बाब नम्बर 36 : क़ब्रों में मुर्दों के उन्स, नमाज़, तिलावत,**	
कफ़न चोर के इन्किशाफ़ात	308	**इन्आ़मात व लिबास और दीगर अह़वाल का बयान**	328
मिलावट करने वाले का अन्जाम	309	"لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ" कहने की फ़ज़ीलत	328
ज़ुल्मन किसी का माल लेने का अन्जाम	310	अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام ज़िन्दा हैं	328

क़ब्र में नमाज़	328	तमाम गुनाहों का कफ़्फ़ारा	349
क़ब्र से तिलावते क़ुरआन की आवाज़	329	शहादत से महरूमी की हसरत	350
मरने के बा'द तिलावते क़ुरआन	331	**बाब नम्बर 38 : ज़ियारते क़ुबूर और मुर्दों का ज़ाइरीन को देखने और पहचानने का बयान**	351
मरने के बा'द भी इल्म में मश्ग़ूल	331		
क़ब्र में हिफ़्ज़े क़ुरआन	332	क़ब्रिस्तान की दुआ	351
क़ब्र में देख कर तिलावते क़ुरआन	333	क्या मुर्दे सुनते हैं ?	352
फ़रमां बरदार के लिये अच्छा ठिकाना	334	तम्बीह	353
मुर्दों को अच्छे कफ़न दो	335	रूहों की अक़्साम	354
मरने वाले के हाथ उ़म्दा कफ़न का तोह़फ़ा	336	शहीद ज़िन्दा होता है	356
फ़ुलां दिन फ़ुलानी औ़रत इन्तिक़ाल कर जाएगी	337	क़ब्र का पुर कैफ़ मन्ज़र	357
शहीद के दोस्तों की लिस्ट	339	रब्बे का'बा की क़सम ! मैं ज़िन्दा हूं	358
सफ़ेद परन्दा	339	मुह़िब्बे इलाही मरता नहीं	359
ग़ैबी ख़बर	340	कफ़न चोर की तौबा	359
सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की आ़जिज़ी	341	नुक़्सान देह और नफ़्अ़ मन्द	361
क़मीस की वापसी	342	क़ब्र से ठन्डी हवा	362
क़ब्र ख़ाली थी	343	मज़ारात पर ह़ाज़िरी का जवाज़	363
पुरनूर क़ब्र	343	क़ब्रे अन्वर से अज़ान व इक़ामत की आवाज़	364
वलिय्युल्लाह की आमद की ख़ुशी	344	क़ब्र से अज़ान का जवाब	365
क़ब्र में फूल ही फूल	344	सरे अन्वर की करामत	366
चम्बेली का गुलदस्ता	345	मुझे दो जन्नतें अ़त़ा की गईं	367
सात क़ब्रें	345	हम जानते हैं मगर अ़मल नहीं कर सकते	368
सह़ाबिये रसूल की क़ब्र से ख़ुश्बू	345	महीने में चार ह़ज	368
आ'माल की ख़ुश्बूएं	346	शुहदा से मुलाक़ात	369
एक आ'राबी का विसाल	346	अल मदद या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم !	370
फ़िरिश्तों के साथ उड़ान	347	रक़्सो सुरूद की मह़फ़िल और ख़ौफ़नाक आवाज़	373
बाब नम्बर 37 : शहीद के फ़ज़ाइल का बयान	349	ग़ैबी आवाज़	373

नसीहतों पर मुश्तमिल अश्आर	374	बेहतरीन और बदतरीन वादी	404
तख़्ताए गुस्ल पर भी तस्बीह का विर्द	376	रिम्याईल और दौमह	405
येह ज़िन्दा हैं या मुर्दा	376	अरवाह़ के बारे में अहम तरीन बह़स	406
बा'द अज़् विसाल गुफ़्तुगू	376	रूह़ की तीन अक़्साम	406
शहीद मदद के लिये आ पहुंचा	381	क़ब्रे अन्वर पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते का इल्म	411
तीन बातों के सबब बख़्शिश	382	रूह़ का जिस्म से पांच मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर तअ़ल्लुक़	412
नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों की बख़्शिश	383		
जनाज़े में शुहदा की शिर्कत	383	कुफ़्फ़ार की रूहों पर मुक़र्रर फ़िरिश्ते का नाम	412
मुर्दों को इन अल्फ़ाज़ से सलाम करो	385	10 हज़ार मक़्तूलीन	414
मर्हूमीन से दुआए मग़्फ़िरत ह़ासिल करने का विर्द	387	सय्यिदुना जा'फ़र त़य्यार رضی اللہ تعالٰی عنہ की उड़ान	416
मुर्दों के लिये तोह़फ़ा	388	मौत का मा'ना व मफ़्हूम	419
जुमुआ के दिन परन्द क्या कहते हैं ?	388	सब से कम मर्तबा शहीद	421
वालिदैन की क़ब्र पर ह़ाज़िरी दिया करो	389	शबे मे'राज अम्बिया से मुलाक़ात	422
तम्बीह	391	रूह़ की चार अक़्साम	424
ख़ूब सूरत नुक्ता	392	सच्चा ख़्वाब	425
बाब नम्बर 39 : अरवाह़ के ठिकानों का बयान	394	हर मोमिन सिद्दीक़ और शहीद है	427
सोने की क़िन्दीलें	394	जन्नती नहर पर मोतियों से बने मह़ल में क़ियाम	429
शुहदा की ख़्वाहिश	395	जन्नती नहर का तैराक	430
मुसलमानों के बच्चों की रूहों का ठिकाना	395	तकब्बुर, ख़ियानत और क़र्ज़	430
बेल और मछली	396	बहन से क़त़्ए तअ़ल्लुक़ी का अन्जाम	431
"ह़ारिसा" जन्नतुल फ़िरदौस में है	396	जन्नतियों और जहन्नमियों की रूहों का मक़ाम	433
मुसलमानों के फ़ौतशुदा बच्चों के कफ़ील	399	शुहदा और आ़म मोमिनीन में फ़र्क़	435
जन्नती चिड़यां	400	फ़ाएदा : रूह़ के चार घर	436
ह़सीनो जमील सीढ़ी	401	फ़ाएदा	437
मोमिनीन की रूहों के ज़िम्मेदार	402	गोशा नशीन के वसीले से बारिश	437
अफ़्ज़ल अ़मल	402	आस्मान पर उठाए जाने वाले शहीद	438

येह ज़ियादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ है	440	बुख़्ल का अन्जाम	461
ग़ैबी क़ब्र	440	**फ़स्ल : नींद में ज़िन्दा की रूह़ निकलने, जहां रब तआ़ला चाहे सैर करने और रूहों वग़ैरा से मुलाक़ात करने का सुबूत**	461
पुर असरार परन्दे	441		
जनाज़े में शरीक ग़ैबी मख़्लूक़	441		
कुत्तों में से एक कुत्ता	442	बा'ज़ ख़्वाब सच्चे और बा'ज़ झूटे क्यूं होते हैं ?	461
पुर असरार मह़ल, घुड़ सुवार और बुज़ुर्ग	443	रब عَزَّوَجَلَّ का बन्दे से कलाम	462
बाब नम्बर 40 : मुर्दे पर रोज़ाना ठिकाना पेश किये जाने का बयान	445	**बाब नम्बर 45 : ख़्वाब में मुर्दों को देख कर उन का ह़ाल पूछने और मुर्दों का उन्हें ख़बर देने का बयान**	464
रात गई दिन आ गया	446		
बाब नम्बर 41 : मुर्दों पर ज़िन्दों के आ'माल पेश होने का बयान	447	ख़ौफ़े ख़ुदा का समरा	465
		नमाज़े तहज्जुद से अफ़्ज़ल अ़मल कोई नहीं	465
अपने मुर्दों को तक्लीफ़ मत दो	448	अगर रह़मते इलाही शामिले ह़ाल न होती तो......!	466
मुर्दों को रुस्वा न करो	448	हिदायत याफ़्ता इमामों का साथ	467
मर्हूम वालिदैन से भलाई	450	शुहदा के हमनशीं	468
मर्हूम वालिदैन से भलाई की चार सूरतें	451	कुछ लोग मर कर भी ज़िन्दा रहते हैं	468
बाब नम्बर 42 : रूह़ को मक़ामे इ़ज़्ज़त से रोकने वाली चीज़ों का बयान	451	क़ब्र का ह़ाल अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और क़ब्र वाला ही जानता है	469
		भलाई और भलाई करने वालों से मह़ब्बत	469
क़र्ज़ का वबाल	451	कौन सा अ़मल अफ़्ज़ल है ?	470
पुर असरार कुंवां	453	वफ़ात के बा'द चचा की नसीह़त	470
बाब नम्बर 43 : वसिय्यत का बयान	453	तक़्वा व परहेज़गारी का इन्आ़म	470
बाब नम्बर 44 : ख़्वाब में ज़िन्दों और मुर्दों की रूहों की मुलाक़ात का बयान	455	कलिमए त़य्यिबा की कसरत करो	471
		अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मह़ब्बत का इन्आ़म	472
बेटी की मौत की इत्तिलाअ़	456	ख़त्म न होने वाली ने'मतें	472
वफ़ात के बा'द वसिय्यत	458	सब से अच्छी मह़फ़िल	473
सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़्वाब	459	सुन्नत और इ़ल्म	473
सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के दोस्त	459	गुस्ताख़े सह़ाबा का अन्जाम	474

मसाइबो आलाम पर सब्र का इन्आ़म	475	सुन्नते नबवी की ख़िदमत का सिला	488
राह़त, फूल और रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा	475	एक जुम्ले के सबब बख़्शिश	488
मुर्दे को दुआ़ से फ़ाएदा पहुंचता है	476	किताब में दुरूदे पाक लिखने की बरकत	488
मुर्दों की ख़बरें देने वाला	476	इल्म को ज़ीनत देने का इन्आ़म	489
सिद्रतुल मुन्तहा के पास	477	ने'मतों से लुत्फ़ अन्दोज़ हो रहे हैं	490
नेकों की दुआ़ पर आमीन कहने पर बख़्शिश	477	सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की ज़ियारत	490
मुसलमान बूढ़ों के लिये खुश ख़बरी	478	वली से मह़ब्बत का इन्आ़म	490
सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الصَّمَد पर करम	479	वली के क़ुर्ब की बरकतें	491
रोज़ दो मरतबा दीदारे बारी तआ़ला	479	औलिया की शान	491
मख़्लूक़ को मह़ब्बते इलाही का दर्स देने का इन्आ़म	479	ज़ालिम ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ का ह़ाल	493
ह़म्दो सना और दुरूदो सलाम की बरकत	480	सब्र का इन्आ़म	495
ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने का इन्आ़म	480	सब से नफ़्अ़ मन्द अ़मल	495
जन्नत में दाख़िले का सबब	480	ईसाले सवाब की बरकत	496
दर्से ह़दीस का इन्आ़म	481	चौथे आस्मान पर दर्से ह़दीस	498
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़ुस्ने ज़न रखने की बरकत	482	वली का जनाज़ा पढ़ने वालों की बख़्शिश	498
सय्यिदुना जर्राह़ बिन अ़ब्दुल्लाह عَلَيْهِ الرَّحْمَة का इस्तिक़्बाल	482	जन्नत में एक घर	499
اَللّٰهُ اَكْبَر कहने का इन्आ़म और तोहमत का वबाल	483	दुरूदे पाक की बरकत	499
अह्ले बैत की शान बयान करने पर इन्आ़म	483	फ़िरिश्तों के साथ नमाज़	500
ख़्वाहिशात पर रब عَزَّوَجَلَّ को तरजीह़ देने का इन्आ़म	484	नसीह़त आमोज़ अश्आ़र	501
फ़ख़्र व तकब्बुर से बचने का इन्आ़म	485	बादशाह का मुसाहिब, मालदार ताजिर और गोशा नशीन	502
नजात याफ़्ता गुरौह	485	**बाब नम्बर 46 : ज़िन्दों की बातों से मय्यित को तक्लीफ़ पहुंचने और उसे बुरा कहने की मुमानअ़त का बयान**	505
नेकियां क़बूल और ख़ताएं मुआ़फ़	486		
बारगाहे रिसालत तक रसाई का वसीला	486	**बाब नम्बर 47 : मय्यित को नौह़ा से पहुंचने वाली तक्लीफ़ का बयान**	506
ख़िदमते ह़दीस का वसीला	486		
बुलन्द दर्जे वाले	487	नौह़ा के सबब अ़ज़ाब के बारे में अक़्वाल	507
अफ़्ज़ल अ़मल "इस्तिग़फ़ार"	487	क्या तुम ऐसे थे ?	508

फ़ितने और अज़िय्यत का बाइस	510	इन्सान को मरने के बा'द मिलने वाली चीज़ें	522
मय्यित के लिये सब से बुरे	510	क्या मर्हूमीन को सदके का सवाब पहुंचता है ?	522
बाब नम्बर 48 : हर तक्लीफ़ देह बात से मय्यित को अज़िय्यत पहुंचने का बयान	511	सदक़ा क़ब्र की गर्मी दूर करता है	523
		अपने मर्हूमीन को तोहूफ़े भेजा करो	524
क़ब्र पर चलने से ज़ियादा महबूब	511	जहन्नम से आज़ादी	524
न तक्लीफ़ दो न तक्लीफ़ उठाओ	511	मर्हूमीन की त़रफ़ से ह़ज करना	524
क़ब्र को रौंदने से ज़ियादा महबूब	512	मर्हूमीन की त़रफ़ से ग़ुलाम आज़ाद करना	525
बाब नम्बर 49 : किरामन कातिबीन का क़ब्रे मोमिन पर ठहरने का बयान	512	हुस्ने सुलूक दर हुस्ने सुलूक	526
बाब नम्बर 50 : मय्यित को क़ब्र में नफ़्अ़ देने वाली चीज़ों का बयान	513	**बाब नम्बर 51 : मय्यित या क़ब्र के पास तिलावते कुरआन करने का बयान**	528
		ईसाले सवाब की ह़क़ीक़त	529
क़ब्र में मोमिन के ग़मगुसार	513	मय्यित को सवाब पहुंचता है	529
इन्सान के तीन दोस्त	513	हर मुर्दे के बदले अज्र	530
आ'माले सालेह़ा की बरकत	514	मुर्दे सिफ़ारिशी बनेंगे	530
कुरआने पाक का मस्कन	515	तमाम मुर्दों के बराबर नेकियां	531
कुरआने पाक और फ़िरिश्ते का मुकालमा	515	ज़िम्नी फ़स्ल	532
क़ब्र का महबूब तरीन रफ़ीक़	515	बोसीदा क़ब्र वालों पर रह़मते इलाही	533
सवाबे जारिया वाले आ'माल	516	**बाब नम्बर 52 : मौत के अच्छे औक़ात का बयान**	534
अच्छा और बुरा त़रीक़ा ईजाद करने का हुक्म	516	अ़ज़ाबे क़ब्र से मह़फ़ूज़	535
मौत के बा'द मिलने वाली नेकियां	517	अ़ज़ाबे क़ब्र से छुटकारा और दोज़ख़ से आज़ादी	535
क़ब्रों की ज़ियारत किया करो	517	**बाब नम्बर 53 : मौत के बा'द बन्दे को जल्दी जन्नत में पहुंचाने वाले आ'माल का बयान**	535
बेटे की बाप के लिये दुआ़	518		
मुर्दों के लिये ज़िन्दों का तोहूफ़ा	518	मरते ही जन्नत में दाख़िला	535
अगर ज़िन्दा न होते तो मुर्दे बरबाद हो जाते	520	**बाब नम्बर 54 : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और उन से मुल्ह़िक़ अफ़राद के सिवा दीगर मय्यितों के बदबूदार होने और जिस्म ख़राब होने का बयान**	536
नूर के तोहूफ़े	520		
मेरी उम्मत उम्मते मर्हूमा है	521		

हिक्मते इलाही	536	नफ़्स और रूह़ का मस्कन	545
सब से ज़ियादा ख़ुश्बूदार चीज़	536	नफ़्स और रूह़ की मिसाल	546
जिस्म की हर चीज़ गल जाएगी सिवाए एक हड्डी के	537	रूहे़ यक़ज़ा और रूहे़ ह़यात	547
		जिस्म में रूह़ की क़ियामगाह	548
ह़याते अम्बिया की दलील	538	पांचवां फ़ाएदा	549
सालहा साल बा'द भी जिस्म स़ह़ीह़ व सलामत रहा	538	छटा फ़ाएदा	549
सवाब की उम्मीद पर अज़ान देने का अज्र	540	सातवां फ़ाएदा	551
ह़ाफ़िज़े क़ुरआन का मक़ामो मर्तबा	540	आठवां फ़ाएदा	552
ज़मीन किस जिस्म पर मुसल्लत़ नहीं होती ?	540	हंसाने वाली हंसाने वाली के पास	553
ख़ातिमा : रूह़ से तअ़ल्लुक़ रखने वाले फ़वाइद	541	नवां फ़ाएदा	553
पहला फ़ाएदा	541	दसवां फ़ाएदा : रूह़ और जिस्म की मिसाल	555
रूह़ का इल्म मख़्फ़ी रखने की हिक्मत	542	रूह़ और जिस्म का झगड़ा	556
दूसरा फ़ाएदा	543	अन्धा और लंगड़ा	556
तीसरा फ़ाएदा	543	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	557
चौथा फ़ाएदा	544	माख़ज़ो मराजेअ़	572
ह़यात, नफ़्स और रूह़	545	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की कुतुब का तआ़रुफ़	579

सय्यिद और हाशिमी में फ़र्क़

हाशिमी से मुराद ह़ज़रते अ़ब्दुल मुत्त़लिब के बेटे ह़ज़रते अ़ब्बास व ह़ारिस और पोते ह़ज़रते अ़ली और ह़ज़रते जा'फ़र व अ़क़ील رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की औलादें हैं जब कि ह़ज़रते अ़ली (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) की जो औलाद ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हैं उन को और ह़सनैने करीमैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की औलाद को सय्यिद कहा जाता है। हर सय्यिद हाशिमी ज़रूर है मगर हर हाशिमी सय्यिद हो येह ज़रूरी नहीं। (फ़तावा अह्ले सुन्नत, अह़कामे ज़कात, स. 425)

ماخذومراجع

قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	
نام کتاب	**مصنف/مؤلف**	**مطبوعہ**
ترجمۂ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
خزائن العرفان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
تفسیر طبری	امام ابوجعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
تفسیر عبد الرزاق	امام حافظ ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
البحر المحیط	امام محمد بن یوسف ابوحیان اندلسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۴۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
تفسیر ابن رجب	امام عبد الرحمٰن بن شہاب الدین ابن رجب رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۹۵ھ	دار العاصمۃ ریاض ۱۴۲۲ھ
تفسیر بغوی	امام محیی السنۃ ابو محمد حسین بن مسعود بغوی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۱۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۴ھ
تفسیر قرطبی	علامہ ابوعبد اللہ بن احمد انصاری قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دار الفکر ۱۴۲۰ھ
الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
تفسیر ابن ابی حاتم	امام حافظ ابو محمد عبد الرحمٰن بن ابی حاتم رازی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۲۷ھ	مکتبۃ نزار مصطفٰی الباز ریاض
المحرر الوجیز	امام قاضی ابو محمد عبد الحق بن غالب ابن عطیہ اندلسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۴۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
زاد المسیر	عبد الرحمٰن بن علی بن محمد ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	المکتب الاسلامی ۱۴۰۴ھ
روح البیان	علامہ شیخ اسماعیل حقی بروسوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
احکام القرآن	امام ابوبکر احمد بن علی جصاص رازی حنفی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۷۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم ۱۴۱۹ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
سنن ابی داود	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن النسائی	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
السنۃ	امام حافظ ابوبکر احمد بن عمرو بن ابی عاصم رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۸۷ھ	دار ابن حزم ۱۴۲۴ھ
السنن	امام ابوعثمان سعید بن منصور خراسانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۲۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
السنن الکبریٰ	امام احمد بن شعیب نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۱ھ

السنن الکبریٰ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
سنن الدارمی	امام عبداللہ بن عبد الرحمٰن دارمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۵ھ	دار الکتاب العربی ۱۴۰۷ھ
سنن الدارقطنی	امام ابو الحسن علی بن عمر دارقطنی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۵ھ	ملتان پاکستان
الموطا	امام مالک بن انس اصبحی حمیری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۷۹ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
المستدرک	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
المسند	امام ابوعبداللہ احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المسند	امام حافظ سلیمان بن داود طیالسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۰۴ھ	دار المعرفۃ بیروت
المسند	امام ابویعلی احمد بن علی موصلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
المسند	امام ابوبکر احمد بن عمرو بزار رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم ۱۴۲۴ھ
المسند	امام حافظ حارث بن ابی اسامہ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۸۲ھ	المدینۃ المنورۃ ۱۴۱۳ھ
المسند	امام حافظ ابو محمد عبد بن حمید رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۹ھ	عالم الکتب بیروت ۱۴۱۸ھ
الزھد	امام ابوعبداللہ احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ
الزھد	امام ابوعبد الرحمٰن عبداللہ بن مبارک رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ
الزھد	امام ھناد بن سری کوفی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۴۳ھ	دار الخلفاء للکتاب الاسلامی
الزھد	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار المشکاۃ حلوان مصر ۱۴۱۴ھ
الزھد	امام وکیع بن جراح رؤاسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۹۷ھ	مکتبۃ الدار ۱۴۰۴ھ
المصنف	حافظ عبداللہ محمد بن ابی شیبۃ عبسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المصنف	امام حافظ ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
الجامع	امام حافظ معمر بن راشد ازدی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۵۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
المعجم الصغیر	امام حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۳ھ
المعجم الاوسط	امام حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
المعجم الکبیر	امام حافظ سلیمان بن احمد طبرانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۲ھ
المعجم	امام حافظ ابوبکر محمد بن ابراھیم اصبہانی ابن المقرئ رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
المعجم السفر	امام حافظ صدر الدین ابو طاہر احمد بن محمد سلفی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۷۶ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
تہذیب الآثار	امام ابوجعفر محمد بن جریر طبری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۰ھ	مطبعۃ المدنی قاہرہ
صحیح ابن حبان	امام حافظ ابوحاتم محمد بن حبان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ

الادب المفرد	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	ملتان پاکستان
فردوس الاخبار	حافظ شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۰۹ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۶ھ
حلیۃ الاولیاء	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
عمل الیوم واللیلۃ	امام ابوبکر احمد بن محمد دینوری ابن سنی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۴ھ	دار ارقم بیروت ۱۴۱۸ھ
نوادر الاصول	ابو عبد اللہ محمد بن علی بن حسین حکیم ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	مکتبۃ الامام بخاری
شرح السنہ	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
الترغیب والترہیب	امام ابو محمد عبد العظیم بن عبد القوی منذری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
الترغیب والترہیب	امام قوام السنہ حافظ ابو القاسم اسماعیل بن محمد اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۳۵ھ	دار الحدیث قاہرہ ۱۴۱۴ھ
الترغیب فی فضائل الاعمال	امام ابو حفص عمر بن احمد بن عثمان ابن شاہین رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۵ھ	دار ابن الجوزی ۱۴۱۵ھ
دلائل النبوۃ	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۳۰ھ
دلائل النبوۃ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۳ھ
ناسخ الحدیث ومنسوخہ	امام حافظ ابو حفص عمر بن احمد بن عثمان ابن شاہین رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
کنز العمال	علامہ علاء الدین علی بن حسام الدین متقی ہندی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین محمد بن عبد اللہ خطیب تبریزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
امالی	امام ابو الحسین محمد بن احمد بن اسماعیل ابن سمعون بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۷ھ	دار البشائر الاسلامیۃ ۱۴۲۳ھ
الفوائد (الغیلانیات)	امام حافظ ابوبکر محمد بن عبد اللہ بن ابراہیم شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار ابن الجوزی ۱۴۱۷ھ
البعث والنشور	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	مرکز الخدمات والابحاث الثقافیۃ
اثبات عذاب القبر	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الفرقان عمان ۱۴۰۳ھ
الاعتقاد	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الافاق الجدیدۃ ۱۴۰۱ھ
صفۃ الجنۃ	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دار المامون للتراث ۱۴۱۵ھ
اعتلال القلوب	امام ابوبکر محمد بن جعفر خرائطی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۲۷ھ	مکتبۃ نزار مصطفی الباز
فضائل القرآن	امام حافظ ابو عبید قاسم بن سلام ہروی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۲۴ھ	دار ابن کثیر بیروت ۱۴۱۵ھ
فضائل القرآن	امام حافظ ابو الفضل عبد الرحمٰن بن احمد بن حسن رازی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۵۴ھ	دار البشائر الاسلامیۃ ۱۴۱۵ھ
فضائل سورۃ الاخلاص	امام حافظ ابو محمد حسن بن محمد خلال رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۹ھ	مکتبۃ لینۃ دمنہور ۱۴۱۲ھ
القراءۃ عند القبور	امام ابوبکر احمد بن محمد بن ہارون خلال رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
التاریخ الکبیر	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ

فتح الباری	امام شہاب الدین احمد بن علی بن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۵ھ
شرح صحیح البخاری	امام ابو الحسن علی بن خلف ابن بطال رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۴۹ھ	مکتبۃ الرشد ۱۴۲۰ھ
شرح صحیح مسلم	امام محیی الدین ابو زکریا یحیی بن شرف نووی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۱ھ
الدیباج علی مسلم	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار ابن عفان ۱۴۱۶ھ
شرح النسائی	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الجیل بیروت
التمہید	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
الاستذکار	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
اتحاف الخیرۃ المہرۃ	امام احمد بن ابو بکر بن اسماعیل بوصیری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۴۰ھ	مکتبۃ الرشد ریاض ۱۴۱۹ھ
الاربعین الطائیۃ	امام ابو الفتوح محمد بن محمد بن علی طائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار البشائر الاسلامیۃ ۱۴۲۰ھ
الشریعۃ	امام ابو بکر محمد بن حسین الآجری شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دار الوطن ریاض ۱۴۱۸ھ
المشیخۃ	امام ابو عبد اللہ محمد بن احمد بن ابراہیم رازی ابن حطاب رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۲۵ھ	دار الہجرۃ ریاض ۱۴۱۵ھ
المشیخۃ قاضی المارستان	قاضی مارستان امام محمد بن عبد الباقی بن محمد انصاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۳۵ھ	دار العالم الفوائد
مجموع فیہ عشرۃ اجزاء حدیثیۃ (فوائد المؤمل)	امام ابو القاسم مؤمل بن احمد شیبانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۹۱ھ	دار البشائر الاسلامیۃ ۱۴۲۲ھ
الموسوعۃ	حافظ ابو بکر عبد اللہ بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۲۶ھ
ذکر الموت	حافظ ابو بکر عبد اللہ بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۸۱ھ	مکتبۃ الفرقان عجمان ۱۴۲۳ھ
العاقبۃ فی ذکر الموت	امام ابو محمد عبد الحق اشبیلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۸۱ھ	مکتبۃ دار الاقصی ۱۴۰۶ھ
القبور	حافظ ابو بکر عبد اللہ بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۸۱ھ	مکتبۃ الغرباء الاثریۃ ۱۴۲۰ھ
اہوال القبور	امام عبد الرحمٰن بن شہاب الدین ابن رجب رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۹۵ھ	دار الکتاب العربی ۱۴۱۴ھ
مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
تاریخ بغداد	حافظ احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
ذیل تاریخ بغداد	حافظ محب الدین ابو عبد اللہ محمد بن محمود ابن نجار بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۴۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
تاریخ مدینہ دمشق	حافظ ابو القاسم علی بن حسن ابن عساکر شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
الطبقات الکبری	امام محمد بن سعد بن منیع ہاشمی بصری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
طبقات المحدثین	امام ابو محمد عبد اللہ بن محمد المعروف بابی الشیخ اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۹ھ	مؤسسۃ الرسالۃ
طبقات الحنابلۃ	امام ابو حسین محمد بن محمد ابن ابو یعلی حنبلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۲۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
بغیۃ الوعاۃ	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	المکتبۃ العصریۃ صیدا

حسن المحاضرة	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
المشیخۃ البغدادیۃ	امام حافظ صدر الدین ابو طاہر احمد بن محمد سلفی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۷۶ھ	مخطوطہ
معرفۃ الصحابۃ	حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
سیر اعلام النبلاء	امام حافظ شمس الدین ابو عبد اللہ محمد بن احمد ذہبی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۴۸ھ	دار الفکر ۱۴۱۷ھ
صفۃ الصفوۃ	امام ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۳ھ
النہایۃ فی غریب الحدیث والاثر	امام مجد الدین مبارک بن محمد ابن اثیر جزری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۰۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۲۰۱۱ء
تاریخ اصبہان	امام حافظ ابو نعیم احمد بن عبد اللہ اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۰ھ
تاریخ الخلفاء	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	باب المدینہ کراچی
النور السافر	علامہ شیخ عبد القادر بن شیخ عبد اللہ عیدروس ہندی حسینی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۰۳۸ھ	دار صادر بیروت ۲۰۰۱ء
الکواکب السائرۃ	علامہ نجم الدین محمد بن محمد غزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۰۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
العظمۃ	ابو محمد عبد اللہ بن محمد المعروف بابی الشیخ اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۹ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۴ھ
المقاصد الحسنۃ	امام شمس الدین محمد بن عبد الرحمٰن سخاوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۰۲ھ	دار الکتاب العربی ۱۴۲۵ھ
کشف الخفاء	اسماعیل بن محمد بن عبد الہادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	امام احمد بن علی بن محمد ابن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۵ھ
الکامل فی ضعفاء الرجال	امام ابو احمد عبد اللہ بن عدی جرجانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۶۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
شذرات الذہب	علامہ شہاب الدین عبد الحی بن احمد ابن عماد حنبلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۰۸۹ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
کتاب الضعفاء	امام ابو جعفر محمد بن عمرو بن موسی عقیلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۲۲ھ	دار الصمیعی ریاض ۱۴۲۰ھ
المطالب العالیۃ	امام شہاب الدین احمد بن علی بن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
تلخیص الحبیر	امام شہاب الدین احمد بن علی بن حجر عسقلانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
التذکرۃ	علامہ ابو عبد اللہ بن احمد انصاری قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دار السلام قاہرہ ۱۴۲۹ھ
الرسالۃ القشیریۃ	ابو القاسم عبد الکریم ہوازن قشیری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
الثقات	امام حافظ ابو حاتم محمد بن حبان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
القول البدیع	امام شمس الدین محمد بن عبد الرحمٰن سخاوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۰۲ھ	مؤسسۃ الریان ۱۴۲۲ھ
جامع العلوم والحکم	عبد الرحمٰن بن شہاب الدین ابن رجب رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۹۵ھ	المکتبۃ الفیصلیۃ مکۃ المکرمۃ
جامع بیان العلم وفضلہ	امام ابو عمر یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
المجالسۃ وجواہر العلم	علامہ ابو بکر احمد بن مروان دینوری مالکی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۳۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ

شرح اصول اعتقاد......	امام ہبۃ اللہ بن الحسن البصری لالکائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۱۸ھ	دار البصیرۃ الاسکندریۃ مصر
شرح المواقف	سید شریف محمد بن علی جرجانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۱۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
ذم الھوی	امام عبد الرحمٰن بن علی بن محمد ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	پشاور پاکستان
التبصرۃ	امام عبد الرحمٰن بن علی بن محمد ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۳ھ
المنتظم	امام عبد الرحمٰن بن علی بن محمد ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۵ھ
السلوک لمعرفۃ دول الملوک	امام احمد بن علی بن عبد القادر مقریزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۴۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
اتحاف السادۃ المتقین	علامہ سید محمد بن محمد مرتضی زبیدی حسینی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۲۰۰۹ء
میزان الکبری	امام عبد الوھاب بن احمد شعرانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۲۰۰۹ء
لواقح الانوار القدسیۃ...	امام عبد الوھاب بن احمد شعرانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۳ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
عیون الحکایات	امام عبد الرحمٰن بن علی بن محمد ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
لطائف المعارف	امام عبد الرحمٰن بن شہاب الدین ابن رجب رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۹۵ھ	دار ابن کثیر بیروت ۱۴۲۰ھ
کرامات الاولیاء	امام حافظ ابو محمد حسن بن محمد خلال رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۳۹ھ	شرکۃ دار المشاریع ۱۴۲۸ھ
کرامات الاولیاء	امام ہبۃ اللہ بن الحسن البصری لالکائی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۱۸ھ	دار البصیرۃ الاسکندریۃ مصر
جامع کرامات الاولیاء	علامہ شیخ یوسف بن اسماعیل نبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۵۰ھ	مرکز اہل سنت برکات رضا ھند
شرح العقیدۃ الطحاویۃ	علی بن علی بن محمد ابن ابی العزحنفی متوفّٰی ۷۹۲ھ	المکتب الاسلامی ۱۴۰۸ھ
لوامع الانوار	علامہ شیخ محمد بن احمد سفارینی حنبلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۱۱۴ھ	مؤسسۃ الخافقین ومکتبتھا دمشق ۱۴۰۲ھ
بحر الکلام	امام میمون بن محمد نسفی حنفی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۰۸ھ	مکتبۃ دار الفرفور ۱۴۲۱ھ
الموضوعات	امام ابو الفرج عبد الرحمٰن بن علی بن محمد ابن جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دار الفکر ۱۴۲۱ھ
تنزیہ الشریعۃ	امام ابو الحسن علی بن محمد بن علی ابن عراق کنانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۱ھ
وفیات الاعیان	علامہ ابو العباس احمد بن محمد بن ابراھیم ابن خلکان شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
الحبائک فی اخبار الملائک	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۸ھ
تعزیۃ المسلم عن اخیہ	حافظ ابو القاسم علی بن حسن ابن عساکر شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۷۱ھ	مکتبۃ الصحابۃ جدۃ ۱۴۱۱ھ
المتفق والمفترق	حافظ احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار القادری ۱۴۱۷ھ
السیرۃ النبویۃ	امام عبد الملک بن ہشام بن ایوب حمیری معافری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۲۱۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
المواھب اللدنیۃ	امام شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۶ھ

سبل الھدی والرشاد	امام محمد بن یوسف صالحی شامی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۴۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۸ھ
الروض الانف	امام عبد الرحمن بن عبد اللہ سہیلی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
شرح الزرقانی علی المواھب	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد الباقی زرقانی مالکی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
روض الریاحین	امام عبد اللہ بن اسعد بن علی یافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۷۶۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
اخبار مکۃ	علامہ ابو عبد اللہ محمد بن اسحاق فاکھی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی بعد ۲۷۲ھ	دار خضر بیروت ۱۴۱۹ھ
شفاء الغرام باخبار....	امام تقی الدین محمد بن احمد مکی فاسی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۳۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
احیاء علوم الدین	حجۃ الاسلام امام ابو حامد محمد بن محمد غزالی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار صادر بیروت
قوت القلوب	امام ابو طالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۳۸۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
التحدث بنعمۃ اللہ	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۱۱ھ	المطبعۃ العربیۃ الحدیثیۃ
فھرس الفھارس	علامہ عبد الحی بن عبد الکبیر الکتانی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۸۲ھ	دار الغرب الاسلامی ۱۴۰۲ھ
الامام جلال الدین سیوطی وجھودہ.....	دکتور سید بدیع اللحام	دار قتیبۃ دمشق ۱۴۱۵ھ
التعلیق الممجد....	علامہ محمد عبد الحی لکھنوی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۰۴ھ	دار القلم دمشق ۱۴۲۶ھ
المجموع شرح المھذب	امام ابو زکریا محی الدین بن شرف نووی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۷۶ھ	دار الفکر بیروت
فتاوی حدیثیۃ	امام احمد بن محمد بن علی ھیتمی مکی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۹۷۴ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۱۹ھ
فتاوی خانیہ	علامہ قاضی حسن بن منصور بن محمود اوزجندی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۵۹۲ھ	پشاور پاکستان
روضۃ الطالبین	امام محیی الدین ابو زکریا یحیی بن شرف نووی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۶۳۱ھ	المکتب الاسلامی بیرت ۱۴۱۲ھ
الفتاوی البزازیۃ	امام محمد بن محمد ابن بزاز کردری حنفی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۸۲۷ھ	دار الفکر بیرت ۱۴۱۱ھ
فتاوٰی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاھور پاکستان
بہار شریعت	صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی قاری رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت
محدثین عظام...	مولانا ڈاکٹر محمد عاصم اعظمی	النوریہ الرضویہ پبلشنگ کمپنی
مراۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی رحمۃ اللہ علیہ متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاھور

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से पेशकर्दा कुतुबो रसाइल शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत

(उर्दू कुतुब)

01....राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (رَادُّ الْقَحْطِ وَالْوَبَاء بِدَعْوَةِ الْجِيْرَانِ وَمُوَاسَاةِ الْفُقَرَاء) (कुल सफ़ह़ात : 40)

02....करन्सी नोट के शरई अह़कामात (كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم فِيْ اَحْكَامِ قِرْطَاسِ الدَّرَاهِم) (कुल सफ़ह़ात : 199)

03....फ़ज़ाइले दुआ (اَحْسَنُ الْوِعَاء لِآدَابِ الدُّعَاء مَعَهٗ ذَيْلُ الْمُدَّعَاء لِاَحْسَنِ الْوِعَاء) (कुल सफ़ह़ात : 326)

04....ईदैन में गले मिलना कैसा ? (وِشَاحُ الْجِيْدِفِيْ تَحْلِيْلِ مُعَانَقَةِ الْعِيْد) (कुल सफ़ह़ात : 55)

05....वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़ (اَلْحُقُوق لِطَرْحِ الْعُقُوق) (कुल सफ़ह़ात : 125)

06....अल मल्फ़ूज़ अल मा'रूफ़ बिह मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल चार ह़िस्से) (कुल सफ़ह़ात : 561)

07....शरीअ़तो त़रीक़त (مَقَالُ الْعُرَفَاء بِإِعْزَازِ شَرْعٍ وَّعُلَمَاء) (कुल सफ़ह़ात : 57)

08....विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़) (اَلْيَاقُوْتَةُ الْوَاسِطَة) (कुल सफ़ह़ात : 60)

09....मआ़शी तरक़्क़ी का राज़ (ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ व नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

10....आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (إِظْهَارُ الْحَقِّ الْجَلِي) (कुल सफ़ह़ात : 100)

11....हुक़ूक़ुल इबाद कैसे मुआ़फ़ हों (اَعْجَبُ الْاِمْدَاد) (कुल सफ़ह़ात : 47)

12....सुबूते हिलाल के त़रीक़े (طُرُقُ إِثْبَاتِ هِلَال) (कुल सफ़ह़ात : 63)

13....अवलाद के हुक़ूक़ (مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد) (कुल सफ़ह़ात : 31)

14....ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदुल ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

15....अल वज़ीफ़तुल करीमा (कुल सफ़ह़ात : 46)

16....कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान (कुल सफ़ह़ात : 1185)

(अ़रबी कुतुब)

17, 18, 19, 20, 21.....جَدُّ الْمُمْتَارِ عَلٰی رَدِّ الْمُحْتَار (المجلد الاول و الثانی و الثالث و الرابع و الخامس)
(कुल सफ़ह़ात : 570, 672, 713, 650, 483)

22.... اَلتَّعْلِيْقُ الرَّضَوِی عَلٰی صَحِيْحِ الْبُخَارِی (कुल सफ़ह़ात : 458)

23.... كِفْلُ الْفَقِيْهِ الْفَاهِم (कुल सफ़ह़ात : 74)

24..... اَلْاِجَازَاتُ الْمَتِيْنَة (कुल सफ़ह़ात : 62)

25... اَلزَّمْزَمَةُ الْقَمَرِيَّة (कुल सफ़ह़ात : 93)

26.....اَلْفَضْلُ الْمَوْهَبِی (कुल सफ़ह़ात : 46)

27.....تَمْهِيْدُ الْإِيْمَان (कुल सफ़्हात : 77) 28.....اَجْلَى الْإِعْلَام (कुल सफ़्हात : 70)
29.....اِقَامَةُ الْقِيَامَة (कुल सफ़्हात : 60) 30..... जद्दुल मुमतार जिल्द 6, 7 (कुल सफ़्हात : 722, 723)

शो'बए तराजिमे कुतुब

01..... अल्लाह वालों की बातें (حِلْيَةُالْاَوْلِيَاء وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِيَاء) पहली जिल्द (कुल सफ़्हात : 896)
02.....मदनी आक़ा के रोशन फ़ैसले (اَلْبَاهِرفِی حُکْمِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ بِالْبَاطِنِ وَالظَّاہِر) (कुल सफ़्हात : 112)
03.....सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा....? (تَمْهِيدُ الْفَرْش فِی الْخِصَالِ الْمُوْجِبَةِ لِظِلِّ الْعَرْش) (कुल सफ़्हात : 28)
04.....नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (قُرَّةُالْعُيُوْن وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن) (कुल सफ़्हात : 142)
05.....नसीह़तों के मदनी फूल ब वसीलए अह़ादीसे रसूल (اَلْمَوَاعِظ فِی الْاَحَادِيْثِ الْقُدْسِيَّة) (कुल सफ़्हात : 54)
06.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (اَلْمَتْجَرُ الرَّابِح فِی ثَوَابِ الْعَمَلِ الصَّالِح) (कुल सफ़्हात : 743)
07.....इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की वसिय्यतें (وَصَايَااِمَام اَعْظَم عَلَيْهِ الرَّحْمَة) (कुल सफ़्हात : 46)
08.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अव्वल) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़्हात : 853)
09.....जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द दुवुम) (اَلزَّوَاجِرعَنْ اِقْتِرَافِ الْكَبَائِر) (कुल सफ़्हात : 1012)
10.....फ़ैज़ाने मज़ाराते औलिया (كَشْفُ النُّوْرعَنْ اَصْحَابِ الْقُبُوْر) (कुल सफ़्हात : 144)
11.....दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी (اَلزُّهْدوَقَصْرُالْاَمَل) (कुल सफ़्हात : 85)
12.....राहे इ़ल्म (تَعْلِيْمُ الْمُتَعَلِّم طَرِيْقَ التَّعَلُّم) (कुल सफ़्हात : 102)
13.....उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम हि़स्सए अव्वल) (कुल सफ़्हात : 412)
14.....उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम, हि़स्सए दुवुम)(कुल सफ़्हात : 413)
15.....इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा (لُبَابُ الْاِحْيَاء) (कुल सफ़्हात : 641)
16.....हि़कायतें और नसीह़तें (اَلرَّوْضُ الْفَائِق) (कुल सफ़्हात : 649)
17.....अच्छे बुरे अ़मल (رِسَالَةُالْمُذَاكَرَة) (कुल सफ़्हात : 122)
18.....शुक्र के फ़ज़ाइल (اَلشُّكْرُلِلّٰه عَزَّوَجَلّ) (कुल सफ़्हात : 122)
19.....हुस्ने अख़्लाक़ (مَكَارِمُ الْاَخْلَاق) (कुल सफ़्हात : 102)
20.....आंसूओं का दरया (بَحْرُالدُّمُوْع) (कुल सफ़्हात : 300)
21.....आदाबे दीन (اَلْاَدَبُ فِی الدِّيْن) (कुल सफ़्हात : 63)

22....शाहराए औलिया (مِنۡهَاجُ الۡعَارِفِيۡن) (कुल सफ़ह़ात : 36)

23....बेटे को नसीह़त (اَيُّهَاالۡوَلَد) (कुल सफ़ह़ात : 64)

24....اَلدَّعۡوَةُ اِلَى الۡفِكۡر (कुल सफ़ह़ात : 148)

25....नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल (اَلۡاَمۡرُبِالۡمَعۡرُوۡف وَالنَّهۡى عَنِ الۡمُنۡكَر) (कुल सफ़ह़ात : 98)

26....इस्लाहे़ आ'माल जिल्द अव्वल (اَلۡحَدِيۡقَةُالنَّدِيَّة شَرۡحُ طَرِيۡقَةِ الۡمُحَمَّدِيَّة) (कुल सफ़ह़ात : 866)

27....आ़शिक़ाने ह़दीस की ह़िकायात (اَلرِّحۡلَة فِى طَلَبِ الۡحَدِيۡث) (कुल सफ़ह़ात : 105)

28....इह़याउल उ़लूम जिल्द अव्वल (احياء علوم الدين) (कुल सफ़ह़ात : 1124)

29..... अल्लाह वालों की बातें जिल्द 2 (कुल सफ़ह़ात : 217)

30..... क़ूतुल क़ुलूब जिल्द अव्वल (कुल सफ़ह़ात : 826)

शो'बए दर्सी कुतुब

01....مراح الارواح مع حاشيةضياء الاصباح (कुल सफ़ह़ात : 241)

02....الاربعين النووية فى الأحاديث النبوية (कुल सफ़ह़ात : 155)

03....اتقان الفراسة شرح ديوان الحماسه (कुल सफ़ह़ात : 325)

04....اصول الشاشى مع احسن الحواشى (कुल सफ़ह़ात : 299)

05....نورالايضاح مع حاشيةالنوروالضياء (कुल सफ़ह़ात : 392)

06....شرح العقائدمع حاشيةجمع الفرائد (कुल सफ़ह़ात : 384)

07....الفرح الكامل على شرح مئة عامل (कुल सफ़ह़ात : 158)

08....عناية النحو فى شرح هداية النحو (कुल सफ़ह़ात : 280)

09....صرف بهائى مع حاشية صرف بنائى (कुल सफ़ह़ात : 55)

10....دروس البلاغة مع شموس البراعة (कुल सफ़ह़ात : 241)

11....مقدمةالشيخ مع التحفةالمرضية (कुल सफ़ह़ात : 119)

12....نزهة النظر شرح نخبة الفكر (कुल सफ़ह़ात : 175)

13....نحو ميرمع حاشية نحو منير (कुल सफ़ह़ात : 203)

14....تلخيص اصول الشاشى (कुल सफ़ह़ात : 144)

15....نصاب النحو (कुल सफ़ह़ात : 288)

16....نصاب اصولِ حديث (कुल सफ़ह़ात : 95)

17....نصاب التجويد (कुल सफ़ह़ात : 79)

18....المحادثة العربية (कुल सफ़हात : 101)
19....تعریفاتِ نحویة (कुल सफ़हात : 45)
20....خاصیات ابواب (कुल सफ़हात : 141)
21....شرح مئة عامل (कुल सफ़हात : 44)
22....نصاب الصرف (कुल सफ़हात : 343)
23....نصاب المنطق (कुल सफ़हात : 168)
24....انوارالحدیث (कुल सफ़हात : 466)
25....نصاب الادب (कुल सफ़हात : 184)
26....تفسیر الجلالین مع حاشیةانوار الحرمین (कुल सफ़हात : 364)

शो'बए तख़्रीज

01....सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का इश्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)
02....बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 ता 6, कुल सफ़हात : 1360)
03....बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 ता 13) (कुल सफ़हात : 1304)
04....बहारे शरीअ़त जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 ता 20) (कुल सफ़हात : 1332)
05....अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 422)
06....गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 244)
07....बहारे शरीअ़त, (सोलहवां हिस्सा, कुल सफ़हात 312)
08....तह़क़ीक़ात (कुल सफ़हात : 142)
09....अच्छे माहोल की बरकतें (कुल सफ़हात : 56)
10....जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
11....इल्मुल क़ुरआन (कुल सफ़हात : 244)
12....सवानहे करबला (कुल सफ़हात : 192)
13....अरबईने ह़नफ़िय्या (कुल सफ़हात : 112)
14....किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)
15....मुन्तख़ब ह़दीसें (कुल सफ़हात : 246)
16....इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
17....आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
18 ता 24....फ़तावा अह्ले सुन्नत (सात हिस्से)
25.... ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
26....बिहिश्त की कुन्जियां (कुल सफ़हात : 249)
27....जहन्नम के ख़त़रात (कुल सफ़हात : 207)
28....करामाते सह़ाबा (कुल सफ़हात : 346)
29....अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन (कुल सफ़हात : 78)
30....सीरते मुस्त़फ़ा (कुल सफ़हात : 875)
31....आईनए इ़ब्रत (कुल सफ़हात : 133)
32....उम्महातुल मोमिनीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ (कुल सफ़हात : 59)
33....जन्नत के त़लबगारों के लिये मदनी गुलदस्ता (कुल सफ़हात : 470)
34....फ़ैज़ाने नमाज़ (कुल सफ़हात : 49)
35....19 दुरूदो सलाम (कुल सफ़हात : 16)

36...फ़ैज़ाने यासीन शरीफ़ मअ़ दुआ़ए निस्फ़ शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म (कुल सफ़्हात : 20)

शो'बए फ़ैज़ाने सहाबा

01....हज़रते त़लहा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़्हात : 56)
02....हज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़्हात : 72)
03....हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़्हात : 89)
04....हज़रते अबू उ़बैदा बिन जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़्हात : 60)
05....हज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़्हात : 132)
06....फ़ैज़ाने सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ (कुल सफ़्हात : 720)
07....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिल्द अव्वल (कुल सफ़्हात : 864)
08....फ़ैज़ाने फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जिल्द दुवुम (कुल सफ़्हात : 855)

शो'बए इस्लाही कुतुब

01....ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ह़ालात (कुल सफ़्हात : 106)
02....तकब्बुर (कुल सफ़्हात : 97)
03....40 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़्हात : 87)
04....बद गुमानी (कुल सफ़्हात : 57)
05....क़ब्र में आने वाला दोस्त (कुल सफ़्हात : 115)
06....नूर का खिलोना (कुल सफ़्हात : 32)
07....आ'ला ह़ज़रत की इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़्हात : 49)
08.... फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़्हात : 164)
09....इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़्हात : 32)
10....रियाकारी (कुल सफ़्हात : 170)
11....क़ौमे जिन्नात और अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 262)
12....उ़श्र के अह़काम (कुल सफ़्हात : 48)
13....तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़्हात : 124)
14....फ़ैज़ाने ज़कात (कुल सफ़्हात : 150)
15....अह़ादीसे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़्हात : 66)
16....तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़्हात : 187)
17....कामयाब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़्हात : 63)
18....टी वी और मूवी (कुल सफ़्हात : 32)
19....त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात : 30)
20....मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्हात : 96)
21....फ़ैज़ाने चहल अह़ादीस (कुल सफ़्हात : 120)
22....शर्हे शजरए क़ादिरिय्या (कुल सफ़्हात : 215)
23....नमाज़ में लुक़्मा देने के मसाइल (कुल सफ़्हात : 39)
24....ख़ौफ़े ख़ुदा (कुल सफ़्हात : 160)
25....तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 100)

26....इनफ़िरादी कोशिश(कुल सफ़्हात : 200) 27....आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्हात : 62)
28....नेक बनने और बनाने के तरीक़े (कुल सफ़्हात : 696) 29....फ़ैज़ाने इह्याउल उलूम (कुल सफ़्हात : 325)
30.... ज़ियाए सदक़ात (कुल सफ़्हात : 408) 31....जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़्हात : 152)
32....कामयाब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़्हात : 43)
33....तंगदस्ती के अस्बाब (कुल सफ़्हात : 33)
34....हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की 425 हिकायात (कुल सफ़्हात : 590)
35....हज व उमरह का मुख़्तसर तरीक़ा (कुल सफ़्हात : 48)
36....जल्दबाज़ी के नुक़्सानात (कुल सफ़्हात : 168)
37....हसद (कुल सफ़्हात : 97)

अन क़रीब आने वाली कुतुब

01....क़सम के अहकाम 02....जल्द बाज़ी 03....फ़ैज़ाने इस्लाम
04....फ़ैज़ाने दुआ (ग़ार के क़ैदी) 05....बुख़्ल

﴾शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴿

01....सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अत्तार के नाम (कुल सफ़्हात : 49)
02....मुक़द्दस तहरीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्हात : 48)
03....इस्लाह का राज़ (मदनी चैनल की बहारें, हिस्सा दुवुम) (कुल सफ़्हात : 32)
04....25 क्रिस्चैन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्हात : 33)
05....दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 24)
06....वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़्हात : 48)
07....कफ़न की सलामती (कुल सफ़्हात : 33)
08....आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़्हात : 275)
09....बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिक्मत (कुल सफ़्हात : 48)
10....क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात : 48)
11....पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़्हात : 48)
12....गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़्हात : 55)

13....दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
14....गुमशुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
15....मैं ने मदनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)
16....जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)
17....मैं ह़यादार कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
18....ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़हात : 36)
19....मुख़ालफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)
20....मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
21....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ (1) (कुल सफ़हात : 49)
22....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ (2) (कुल सफ़हात : 48)
23....तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़) (कुल सफ़हात : 86)
24...तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत (क़िस्त़ 4) (कुल सफ़हात : 49)
25....इल्मो ह़िक्मत के 125 मदनी फूल (तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ 5) (कुल सफ़हात : 102)
26...हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें (तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ 6) (कुल सफ़हात : 47)
27....मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
28....बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
29....अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
30....हैरोइंची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
31....नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
32....मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)
33....ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
34....फ़िल्मी अदाकार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
35....सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
36....क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)
37....फ़ैज़ाने अमीरे अह्ले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
38....हैरत अंगेज़ ह़ादिसा (कुल सफ़हात : 32)
39....मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
40....क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
41....सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़हात : 33)
42....क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
43....म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)
44....नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
45....आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)

46....वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़्हात : 32) 47....बा बरकत रोटी (कुल सफ़्हात : 32)
48....इग़्वाशुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़्हात : 32) 49....मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़्हात : 32)
50....शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़्हात : 32) 51....बद किरदार की तौबा (कुल सफ़्हात : 32)
52....खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़्हात : 32) 53....नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़्हात : 32)
54...मैं ने वीडियो सेन्टर क्यूं बन्द किया ? (कुल सफ़्हात : 32) 55....चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़्हात : 32)
56....इल्मो हिक्मत के 125 मदनी फूल (तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ 5) (कुल सफ़्हात : 102)
57....हुक़ूक़ुल इबाद की एह्तियातें (तज़्किरए अमीरे अह्ले सुन्नत क़िस्त़ 6) (कुल सफ़्हात : 47)
58....नादान आ़शिक़ (कुल सफ़्हात : 32) 59....सीनेमा घर का शैदाई (कुल सफ़्हात : 32)
60....गूंगे बहरों के बारे में सुवाल जवाब, क़िस्त़ पन्जुम (कुल सफ़्हात : 23) 61....डान्सर ना'त ख़्वान बन गया (कुल सफ़्हात : 32)
62....गुलूकार कैसे सुधरा ? (कुल सफ़्हात : 32) 63....नशे बाज़ की इस्लाह़ का राज़ (कुल सफ़्हात : 32)
64....काले बिच्छू का ख़ौफ़ (कुल सफ़्हात : 32) 65...ब्रेक डान्सर कैसे सुधरा ? (कुल सफ़्हात : 32)
66....अ़जीबुल ख़ल्क़त बच्ची (कुल सफ़्हात : 32) 67....बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्हात : 32)
68....चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़्हात : 32)

अ़न क़रीब आने वाली कुतुब

01....अजनबी का तोह़फ़ा 02....जेल का गवय्या

निफ़ाक़ और नार से नजात

फ़रमाने मुस्त़फ़ा : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक भेजा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर 10 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर 10 बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर 100 रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है और जो मुझ पर 100 बार दुरूदे पाक भेजे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह बन्दा निफ़ाक़ और दोज़ख़ की आग से बरी है और क़ियामत के दिन उसे शहीदों के साथ रखेगा । (القول البديع،ص ٢٣٣)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा 'रात बा 'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133013

MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

❁ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net